8:28 AM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण
(सरल भाषा)

पहला खण्ड

पहला अध्याय

एक समय महर्षि श्री वेदव्यास जी के प्रधान शिष्य श्री सूत जी, जिन्होंने अपने गुरु की सेवा द्वारा बड़प्पन प्राप्त किया था, नैमिषारण्य नामक वन में भगवान् सदाशिव की तपस्या कर रहे थे। वे सदैव शंकर जी के ध्यान में मग्न रहकर उन्हीं के गुणों का कीर्तन किया करते थे। उन्हीं दिनों संयोग से शौनक ऋषि अपने साथ अन्य बहुत-से ऋषियों को लेकर श्री सूत जी के पास आये तथा उनसे इस प्रकार बोले—''हे सूत जी ! हम लोग संसार रूपी अथाह सागर में डूबे हुए हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि आज हमें आपके दर्शन प्राप्त हुए। कुछ समय पश्चात् वह युग आने वाला है, जिसमें पुराने धर्म नष्ट हो जायेंगे तथा पापाचार में वृद्धि होगी। सब लोग उस धर्म को त्याग कर कुमार्ग पर चलने लगेंगे। चारों वर्ण इस प्रकार अपने कर्मों से पतित हो जायेंगे कि ब्राह्मण वर्ण खेती करने लगेगा। ब्राह्मण छल-कपट में अत्यन्त चतुर होंगे और अपने धर्म को भुला बैठेंगे। क्षत्रिय भी अपने जाति-धर्म को त्याग कर, युद्ध-क्षेत्र से विमुख हो, पलायनवादी बन जायेंगे तथा चोरी करने में अत्यन्त चातुरी का प्रदर्शन करेंगे। वे शूद्रों के समान कर्म कर बैठेंगे और उसी अवस्था में रह कर प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। गौ की रक्षा करना वे छोड़ देंगे। इस प्रकार क्षत्रिय जाति अत्यन्त अन्यायी एवं दुखदायी हो जायेगी।

इसी प्रकार वैश्य भी अपने श्रेष्ठ धर्म को त्याग कर, पाप कर्मों द्वारा धन का संचय करेंगे एवं उत्तम मार्ग को ठुकरा देंगे। इसी प्रकार शूद्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:28 AM

भी अपने धर्म को त्याग कर ब्राह्मणों का कर्म करने की चेष्टा करेंगे। शूद्रों द्वारा इस प्रकार विपरीत कर्म किये जाने पर ब्राह्मणों का तेज नष्ट हो जायेगा। ऐसी दशा में सम्पूर्ण प्राणियों में आयु भी कम रह जाएगी।

संसार में जब इस प्रकार अधर्म बढ़ जाएगा और जाति बन्धन नष्ट प्राय हो जाएगा, उस समय भिक्षुकों द्वारा भिक्षा माँगे जाने पर भी उन्हें कोई कुछ दान नहीं देगा। वर्णसंकर मनुष्य अपने को उच्च कुलीन समझ कर और लोगों को हेय दृष्टि से देखेंगे। स्त्रियाँ भी दुष्ट प्रकृति वाली बन कर अपने पति की सेवा से विमुख हो जायेंगी। ऐसी अवस्था में सन्तान भी अपने माता-पिता से प्रीति रखना त्याग देगी। मनुष्यों में संयम, जप, तप तथा शील नष्ट हो जाएगा। ऐसी अवस्था में प्रतिदिन सत्य और शौच का अभाव होता जाएगा।

हे सूत जी ! ऐसे घोर कलिकाल में लोग तपस्वियों को केवल इसीलिए सम्मान देंगे कि वे उनके पुत्र आदि उत्पन्न होने की कामना को पूर्ण करने में सहायता प्रदान करेंगे। इस युग में केवल बालों को सम्भाल लेना ही सुन्दरता का लक्षण होगा और अपने पेट को भर लेना ही सबसे श्रेष्ठ कार्य समझा जायेगा। भला, आप ही बताइए कि ऐसे घोर समय में कलियुग वासी जीव किस प्रकार मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे? वे अपने पापों तथा सहस्त्रों दुष्कर्मों को भस्म कर सत्य पथ को अपनाने में किस प्रकार समर्थ हो सकेंगे? आप सब प्रकार की चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करने वाले हैं। हम लोग इसी चिन्ता में डूबे हुए थे कि तब तक हमें आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो गया। अब कृपा करके कोई ऐसा उपाय बताइए जिससे हमारी यह चिन्ता नष्ट हो जाए और हम प्रसन्नता को प्राप्त करें। संसारी जीवों का हित चाहने वाला आपके समान और कोई नहीं है। आप ने भगवान् वेदव्यास जी की अत्यन्त सेवा की है और अनेक पापियों को पाप रूपी समुद्र से पार उतारा है। भगवान् कृष्णद्वैपायन ने अत्यन्त कृपा करके आपको सम्पूर्ण पुराण पढ़ाये हैं, अतः आप हम पर भी अवश्य कृपा करें।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:28 AM

शौनक ऋषि के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर सूत जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त अपने नेत्रों से प्रेमाश्रुओं की वर्षा करते हुए इस प्रकार बोले—"हे शौनक जी तथा अन्य ऋषि महानुभावो ! आप लोग परम ज्ञानी एवं सम्पूर्ण संसार का हित चाहने वाले हैं। यद्यपि संसारी लोगों की वह बुद्धि नष्ट हो गयी है, जिसमें सब के मंगल का ध्यान रहता है, परन्तु आप सब लोग उसके अपवाद स्वरूप हैं। क्योंकि आपने अन्य लोगों के उपकार के लिए ही मुझसे यह प्रश्न किया है। अतः अब मैं आपकी इस प्रीति के वशीभूत होकर भगवान् सदाशिव की उस परम स्तुति का वर्णन करूँगा, जिसे सुनकर कलिकाल के दुःख नष्ट हो जाते हैं तथा अज्ञानी जीवों को भी मुक्ति प्राप्त होती है। यही कारण है कि जो लोग बुद्धिमान् होते हैं, वे भगवान् सदाशिव की तपस्या द्वारा सम्पूर्ण पदार्थों को अनायास ही प्राप्त कर लेते हैं। शिवलोक में किसी भी प्रकार शोक और दुःख कभी भी नहीं व्यापता। जो लोग शिवजी का नमन करते हैं, वे बहुत संतान प्राप्त करते हैं। अतः हे ऋषियो ! उचित यही है कि इस संसार को दुःख रूप समझ कर शिवजी के चरणों में ही प्रीति लगायी जाए। हे शौनक ! शिवजी की स्तुति करने में वेद भी असमर्थ हैं, अतः शिवजी का क्षण भर के लिए भी ध्यान करना नहीं भूलना चाहिए।

सूत जी के मुख से यह वचन सुन कर शौनक ऋषि अपने दोनों हाथ जोड़ कर उनके सम्मुख बैठ गये। तदुपरान्त सब ऋषियों ने परस्पर विचार-विनिमय करके सूत जी से यह कहा—"हे सूत जी ! शिवजी तो निर्गुण कहलाते हैं, उन्होंने सगुण रूप किस प्रकार धारण किया? उन्होंने संसार को किस प्रकार उत्पन्न किया तथा स्वयं किस प्रकार स्थित रहते हैं? वे किस कार्य से प्रसन्न होते हैं और प्रसन्न होकर क्या वरदान देते हैं? हे सूत जी ! यह सब वृत्तान्त तथा इसके अतिरिक्त भी, भगवान् सदाशिव के सम्बन्ध में और जो कुछ भी जानने योग्य हो, आप उसे हमें बताइए क्योंकि आप श्री वेदव्यास जी की कृपा से भूत, भविष्य एवं वर्तमान—इन तीनों कालों की गति को जानने में समर्थ हैं। तभी तो व्यास जी ने कृपा करके अपने श्रीमुख से आपको इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

ब्रह्माण्ड का सम्पूर्ण रहस्य समझा दिया है। यह बात निश्चित है कि जब तक श्रेष्ठ ब्रह्म-ज्ञानी से भेंट नहीं होती, तब तक शोक तथा मोह नष्ट नहीं होता है। हम तो उसी को बड़ा भाग्यवान् मानते हैं, जो शिवजी की कथा कीर्तन से अपना सम्बन्ध सदैव बनाये रहता है।''

दूसरा अध्याय

शौनक आदि ऋषियों के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुन कर सूत जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त उनको प्रसन्न करते हुए इस प्रकार कहने लगे—''हे शौनकादि ऋषियो ! आपने जो प्रश्न मुझसे किया है, वही प्रश्न एक समय नारद जी ने श्री ब्रह्मा जी से किया था। उस समय श्री ब्रह्मा जी ने उन्हें समुचित उत्तर देकर प्रसन्नता प्रदान की थी। मैं आपसे वही प्रसंग कहता हूँ।

एक बार देवर्षि नारद जी तपस्या करने के निमित्त हिमालय पर्वत पर जा पहुँचे और वहाँ श्री गंगा जी के तट पर बैठ कर अत्यन्त कठिन तपस्या करने लगे। उन्होंने निश्चल भाव से सहस्त्रों वर्षों तक घोर तपस्या की। उनकी उस उग्र तपस्या को देख कर देवताओं के राजा इन्द्र अत्यन्त भयभीत हुए। उन्होंने यह समझा कि नारद जी मेरे इन्द्रासन पद की प्राप्ति के लिए ही सम्भवतः ऐसी कठिन तपस्या कर रहे हैं। अस्तु, इन्द्र ने भयभीत होकर यह विचार कि मुझे किसी प्रकार नारद जी की तपस्या में विघ्न डाल देना चाहिए। यह निश्चय करके उन्होंने अपने मित्र कामदेव को अपने पास बुलाया। जब कामदेव उनके पास आ गया, तब उन्होंने उसे सम्बोधित करते हुए यह कहा—''हे मित्र ! तुम्हारी सहायता से मैंने अनेक अहंकारियों के अहंकार को नष्ट किया है। इस समय नारद जी हिमालय पर्वत पर बैठे हुए शिवजी की तपस्या कर रहे हैं। मुझे भय है कि कहीं वे अपनी तपस्या द्वारा मेरे इन्द्रासन को न छीन लें, अतः तुम कोई ऐसा उपाय करो, जिससे नारद जी की तपस्या भंग हो जाए।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

सूत जी बोले—"हे ऋषियो ! इन्द्र के मुख से निकले हुए उन शब्दों को सुन कर कामदेव ने उन्हें मनोकामना सिद्धि का विश्वास दिलाते हुए, नारद जी पर विजय पाने के हेतु अपनी संपूर्ण सेना को तैयार किया। तदुपरान्त उसने नारद जी के समीप पहुँच कर वहाँ चारों ओर अपनी माया फैला दी। कामदेव के प्रभाव के कारण उस निर्जन स्थान में भी अनेक प्रकार के पुष्प खिल उठे एवं कोकिल आदि पक्षी अपनी मीठी बोली से सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने लगे। हृदय में कामदेव को जगाने वाली तीनों प्रकार की शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु बहने लगी। अपनी इस विजयिनी सेना को देख कर कामदेव के हृदय में अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वह अपनी शक्ति भर जो कुछ भी कर सकता था, उसे कर चुका; परन्तु उसके कृत्यों से नारद जी का मन तनिक भी विचलित नहीं हुआ।

हे ऋषियो ! नारद जी का मन विचलित न होने का जो कारण था; उसे मैं आपको सुनाता हूँ। कारण केवल यही था कि जिस स्थान पर नारद जी बैठे हुए तपस्या कर रहे थे, उसी स्थान पर एक बार पहले सदाशिव ने कामदेव को जला कर भस्म कर दिया था। तदुपरान्त उसे जीवित होने का वर देकर यह कहा था कि अन्य स्थानों पर तेरा प्रभाव भले ही हो, परन्तु इस स्थान पर कभी प्रभाव नहीं हो सकेगा। यही कारण था, जिससे कामदेव निराश एवं लज्जित होकर इंद्र के पास लौट गया और उन्हें अपने निष्फल मनोरथ होने का सब वृत्तान्त कह सुनाया। कामदेव की बात सुन कर देवराज इन्द्र की सभा के सम्पूर्ण सभासद नारद जी की स्तुति एवं प्रशंसा करने लगे।

हे ऋषियो ! इधर अपनी तपस्या के पूर्ण हो जाने पर नारद जी को योग-दृष्टि द्वारा जब यह ज्ञात हुआ कि उन पर विजय प्राप्त करने के लिए यहाँ कामदेव आया था, परन्तु वह असफल मनोरथ होकर लौट गया है तो उनके हृदय में कुछ अहंकार उत्पन्न हो गया। उन्होंने यह समझा कि वे कामदेव से अधिक शक्तिशाली हैं। इस रहस्य को वे नहीं जान सके कि यह मेरा नहीं अपितु इस तपोभूमि का प्रताप है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अस्तु, नारद जी अपने तपोबल पर अत्यन्त गर्व करते हुए वहाँ से उठ कर शिवजी के पास जा पहुँचे और अत्यन्त प्रसन्न होकर उन्हें अपनी तपस्या का सब हाल सुनाने लगे। नारद जी की बात सुन कर शिव जी ने उन्हें समझाते हुए कहा—"हे देवर्षि ! कामदेव पर विजय पाने की सामर्थ्य तीनों लोकों में किसी के पास नहीं है। तुमने मुझसे तो यह बात कही, परन्तु मैं तुम्हें समझाता हूँ कि तुम विष्णुलोक में जा कर इस बात को मत कह बैठना। तुम इस बात को अपने मन में गुप्त ही रखना।

हे ऋषियो ! अहंकार में डूबे हुए नारद जी को शिवजी की यह बात अच्छी नहीं लगी। अस्तु, वे उनसे विदा लेकर, ब्रह्मा जी के समीप जा पहुँचे। वहाँ भी उन्होंने अपनी प्रशंसा करते हुए तपस्या तथा कामदेव पर विजय पाने का वृत्तान्त कह सुनाया। अपने पुत्र नारद के उस अहंकार को देख कर ब्रह्मा जी ने भी भगवान् सदाशिव की भाँति उन्हें बहुत कुछ समझाया, परन्तु नारद जी के हृदय में अहंकार अपना घर कर बैठा था, इसलिए पिता का समझाना भी उन्हें अच्छा नहीं लगा और वे वहाँ से उठ कर विष्णुलोक में जा पहुँचे। नारद जी को आया हुआ देख कर भगवान् विष्णु ने अपने आसन से उठ कर, उन्हें अपनी छाती से लगाते हुए कहा—"हे देवर्षि ! अब तक आप कहाँ रहे?" यह सुन कर नारद जी ने अपनी तपस्या तथा कामदेव पर विजय प्राप्त करने का सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे भी कह दिया। उस समाचार को सुन कर भगवान् विष्णु शिवजी की इच्छा समझ कर मन-ही-मन हँसते हुए बोले—"हे नारद जी ! जो मनुष्य ब्रह्मज्ञानी नहीं है और परब्रह्म की आराधना से रहित है, उन्हीं के हृदय में मोह की उत्पत्ति होती है। आप तो ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करने वाले हैं, तब भला कामदेव आपका अनिष्ट कैसे कर सकता है? भगवान् विष्णु के मुख से इन शब्दों को सुन कर नारद जी और भी अहंकार में भर गये तथा इस प्रकार अभिमानपूर्ण वचन बोले—"हे प्रभो ! मुझे यह शक्ति आपकी कृपा से ही प्राप्त हुई है।"

हे ऋषियो ! इतना कह कर नारद जी भगवान् विष्णु से विदा ले कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

चल दिये। उस समय भगवान् सदाशिव ने अपने हृदय में यह इच्छा की कि मुझे नारद का अहंकार दूर कर देना चाहिए। अस्तु, उनकी इच्छा से जिस मार्ग से नारद जी चले जा रहे थे, उस मार्ग में स्वर्ग के समान सुन्दर एक श्रेष्ठ नगर शीघ्र ही बस गया। उस नगर में शीलनिधि नामक राजा राज्य करता था। जिस समय नारद जी उस नगर से हो कर जा रहे थे, उस समय उस राजा की कन्या के स्वयम्वर का आयोजन हो रहा था। उस राजकन्या की सुन्दरता पर सम्पूर्ण संसार मुग्ध था। नगर-निवासियों द्वारा जब नारद जी को यह वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो वे भी उस स्वयंवर सभा में जा पहुँचे। अब राजा शीलनिधि ने अपनी सभा में नारद जी को पधारते हुए देखा तो उसने आगे बढ़कर उनका अत्यन्त सम्मान किया। फिर उन्हें ले जा कर अपने आसन पर बैठ दिया। इसके उपरान्त उस राजा ने अपनी परम सुन्दर कन्या को भी बुला कर नारद जी के सम्मुख उपस्थित कर दिया। बहुत समय तक नारद जी उस कन्या के अनुपम स्वरूप को अपलक दृष्टि से देखते रहे। तदुपरान्त जब उन्होंने उस कन्या के लक्षणों का विचार किया तो यह पाया कि जो भी मनुष्य इस कन्या का पति होगा, वह संसार में अमर हो कर अक्षय कीर्ति को प्राप्त करेगा और युद्ध में कभी किसी से भी परास्त न हो सकेगा। कन्या के इन लक्षणों को विचार कर नारद जी वहाँ से उठ कर अपने मार्ग पर फिर चल दिये; परन्तु इस समय उनका मन काम के वशीभूत हो कर उस कन्या को स्वयं प्राप्त करने को लालायित हो रहा था। इस प्रकार वे अपनी बुद्धि के विपरीत कामदेव के जाल में फँस गये। उन्होंने यह भी विचार किया कि जब तक मैं सुन्दर नहीं हूँ तब तक मुझे उस कन्या का मिलना असम्भव है; क्योंकि स्त्रियाँ सुन्दरता को ही अधिक प्यार करती हैं। अस्तु मुझे यह उचित है कि मैं भगवान् विष्णु से उनकी सुन्दरता माँग लूँ और राजकुमारी को मोहित कर, अपने साथ विवाह करने के लिए उसे तैयार कर लूँ।

हे ऋषियो ! इस प्रकार निश्चय करके नारद जी वहीं मार्ग में एक स्थान पर बैठ कर श्री विष्णु का ध्यान करते हुए प्रार्थना करने लगे कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

हे प्रभो ! संसार में आपके समान मेरा हितचिंतक अन्य कोई नहीं है। अस्तु आप यहीं प्रकट हो कर मेरा मनोरथ पूर्ण करें। नारद जी की प्रार्थना को सुन कर श्रीविष्णु उसी स्थान पर प्रकट हो गये। जब नारद जी ने उन्हें अपना मन्तव्य सुनाया तो उन्होंने उत्तर दिया—"हे नारद ! जिस प्रकार वैद्य रोगी की इच्छा के प्रतिकूल भोजन देता है, उसी प्रकार मैं भी आपकी सेवा करूँगा।" इतना कह कर श्रीविष्णु अन्तर्धान हो गये। नारद जी उनके गूढ़ वचनों का भावार्थ नहीं समझ सके। अस्तु, नारद जी का सम्पूर्ण शरीर श्रीविष्णु जैसा हो गया, परन्तु उनका मुख बन्दर जैसा बना रहा। नारद जी वहाँ से उठ कर शीघ्रतापूर्वक पुनः राज सभा में जा पहुँचे। नारद जी बारम्बार उचकते हुए, मन-ही-मन यह विचार करके प्रसन्न होने लगे कि अब राजकन्या मुझे छोड़ कर अन्य किसी को वरण नहीं करेगी। उस सभा में नारद जी के इस नये स्वरूप को कोई देख नहीं सका, अतः सब ने उन्हें नारद समझ कर ही प्रणाम किया। भगवान् सदाशिव के दो गण भी ब्राह्मण का रूप धारण किये हुए बैठे थे। उन दोनों से यह रहस्य छिपा न रह सका। अस्तु, वे दोनों नारद जी के पास जा कर बैठ गये। उन्होंने मुस्काते हुए नारद जी से कहा—"हे मुनिश्रेष्ठ ! आपको तो भगवान् विष्णु ने अत्यन्त सुन्दर रूप प्रदान कर दिया है। अब भला, राजकन्या आपको छोड़कर अन्य किसी को क्यों स्वीकार करेगी?"

सूत जी ने कहा—हे शौनकादि ऋषियो ! इसी बीच वह राजकन्या भी स्वयम्वर सभा में आ पहुँची। जब उसने नारद जी के उस भयानक स्वरूप को देखा तो वह अपने मन में अत्यन्त अप्रसन्न हुई और मुँह फेर कर दूसरी पंक्ति में अपने योग्य पति को ढूँढ़ने लगी। इधर नारद जी की यह दशा थी कि वे बारम्बार उचक-उचक कर, चारों ओर से उस राजकन्या के समीप पहुँचने का प्रयत्न करते थे। शिवजी के वे दोनों गण नारद जी की इस दशा को देख कर परस्पर और अधिक हास्य कर उठे। ठीक उसी समय भगवान् विष्णु उस सभा में आ पहुँचे। उन्हें देखते ही राजकन्या ने प्रसन्न हो कर, गले में वर माला डाल दी। यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देख कर अन्य सब राजा तो निराश हुए ही, देवर्षि नारद जी अत्यन्त विह्वल हो गये। उस समय उन दोनों शिवगणों ने नारद जी से यह कहा—"हे मुनिराज ! आप इतने दु:खी क्यों होते हैं? कृपा कर अपने मुख को किसी दर्पण में तो देख लीजिए।

तीसरा अध्याय

शिवगणों की बात सुन कर नारद जी वहाँ से उठ कर एक पानी से भरे तालाब के पास जा पहुँचे। वहाँ जल के भीतर जब उन्होंने अपने मुख का प्रतिबिम्ब देखा तो उन्हें अत्यन्त आश्चर्य हुआ। अपने उस विकृत रूप को देख कर उन्हें अत्यन्त क्रोध हो आया और उसी क्रोध में उन्होंने उन दोनों शिवगणों को यह शाप दिया "अरे मूर्खो तुमने हमारी बहुत अप्रतिष्ठा की है, अतः तुम दोनों भी छली तथा पापी हो जाओ। तुम अपने किये का फल पाओ कि जिससे फिर ऐसा नीच-कर्म करने की तुम्हें हिम्मत न पड़े।" नारद जी के मुख से इस शाप को सुन कर वे दोनों गण अत्यन्त चिन्तातुर हो वहाँ से लौट कर अपने लोक में जा पहुँचे और शिव जी की स्तुति करने लगे। इधर नारद जी भी कुछ देर बाद अपनी यथार्थ दशा में आ गये। परन्तु उनके मन में यह विचार निरंतर चक्कर काटता रहा कि विष्णु द्वारा छल किये जाने के कारण ही मेरा यह अपमान हुआ है, अतः या तो मैं विष्णु को शाप दूँगा अन्यथा अपने प्राण त्याग दूँगा।

हे ऋषियो ! यह निश्चयकर नारद जी भगवान् विष्णु के वैकुण्ठधाम को चल दिए। उस समय नारद जी की इच्छा जान कर विष्णु भगवान् उन्हें मार्ग में ही मिल गये। विष्णु भगवान् के साथ वह कन्या भी थी, जिसको उन्होंने स्वयम्वर में प्राप्त किया था। अस्तु, विष्णु भगवान् ने नारद को प्रणाम करके हास्यपूर्ण शब्द में कहा—"हे नारद जी ! आप इस प्रकार चिंतित हो कर कहाँ जा रहे हैं?" विष्णु के ऐसे वचन सुन कर नारद जी अत्यन्त क्रोधित हुए, उसी क्रोधावस्था में नारद जी के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

मुँह से यह शब्द निकले—"हे विष्णु ! तुम इस समय हम को अच्छे मिले ! तुम बड़े छली हो। तुम्हारा वह छल जो तुमने दिति के पुत्रों के साथ मोहनी रूप धारण करके, अमृत को बाँटने में किया था, प्रसिद्ध है ही। तुम्हीं ने छल से जलन्धर की स्त्री से उसका पतिव्रत धर्म छुड़ाया। सदाशिव ने भी तुम को वरदान देकर सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी बना कर उचित नहीं किया है। अब सदाशिव भी तुम को ऐसा स्वाधीन एवं सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी बना कर अपने मन में चिन्तित हैं। अब हम सदाशिव की आज्ञानुसार ही, तुम को तुम्हारे कर्मों का फल देते हैं जिससे कि तुम भविष्य में फिर ऐसा कोई काम न करो। यद्यपि तुम को सदाशिव ने वरदान दिया है, तो भी हम तुमको केवल शिक्षा देने के लिए ही शाप देते हैं।"

नारद जी ने इतना कह कर, विष्णु को यह शाप दिया—"हे विष्णु ! तुम ने जिनके समान हमारा मुख कर दिया था, वही बानर तुम्हारी सहायता करेंगे। जिस स्त्री के लिए तुमने हमारा अपमान किया, तुम भी उसी स्त्री के वियोग में अत्यन्त दुखी हो कर वन-वन में घूमते फिरोगे।" विष्णु जी ने यह सुनकर नारद जी के चरणों पर अपना मस्तक रख दिया; परन्तु नारद जी ने उन्हें क्षमा नहीं किया। भगवान् सदाशिव ने यह देख कर नारद जी के मन से अपनी माया हटा ली। उस समय न तो नारद जी की ही वह दशा रही और न वहाँ कोई स्त्री ही दिखाई दी। तब नारद जी ने आश्चर्यचकित हो कर, खेद प्रकट करते हुए कहा—"कहा नहीं जा सकता कि यह सब वृत्तान्त सत्य है या मैंने इसे स्वप्न में देखा है।" फिर "आपकी माया अपरम्पार है, जिससे हम जैसे बुद्धिमान् भी भ्रमित हो जाते हैं" कहते हुए नारद जी विष्णु जी के चरणों पर गिरते हुए बोले—हे नारायण ! आप मेरे शाप का खण्डन कर दीजिये तथा जो कठोर शब्द मैंने कहा है, उस महापाप के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए।"

यह सुन कर विष्णु जी ने कहा—"हे नारद ! तुमने सदाशिव के वचनों की जो अवज्ञा की है, यह सब उसी का फल मिला है। अब भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:29 AM

उचित है कि तुम चैतन्य हो कर सदाशिव को महान् समझो। वे ही तीन स्वरूप धारण करके तीनों कार्यों द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करते हैं। वे स्वयं प्रलय के स्वामी हैं। मैं केवल सदाशिव के तप के कारण ही सबसे बड़ा गिना जाता हूँ। हे नारद ! तुम उन्हीं सदाशिव की तपस्या करो; क्योंकि उनकी आराधना और तपस्या के बिना कोई भी परमपद प्राप्त नहीं कर सकता है। अब तुम्हें उचित है कि सब कुछ त्याग कर, सदाशिव का भजन करो एवं उनके शतनाम का जप करो। वे ही मेरी शक्ति हैं। तुम हृदय में शिव जी के चरणों का ध्यान रख कर, देशाटन करो जिससे तुम्हें दुःख न होगा। तुम्हारे लिए यही उचित है कि समस्त भूमण्डल पर भगवान् सदाशिव की महिमा देखते हुए, काशी जी को सिधारो। उसे रुद्र क्षेत्र, वाराणसी, मुक्ति क्षेत्र तथा महाश्मशानभूमि भी कहते हैं।

इतना कह कर विष्णु भी अन्तर्धान हो गये और नारद जी सदाशिव जी के पास चल दिए। मार्ग में वे दोनों गण मिले और वे भी नारद के चरणों पर गिर कर क्षमा याचना करते हुए बोले—"हे ऋषिराज ! हम ब्राह्मण नहीं, अपितु सदाशिव के गण हैं। हमने आपका बड़ा अपमान किया है। इसलिए, हमें अपना दास समझ कर कृपा करें, क्योंकि हम अपने कर्मों का फल प्राप्त कर चुके हैं।" नारद जी ने यह सुन कर खेद प्रकट करते हुए कहा—मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी थी। सदाशिव की माया अपरम्पार है। मैंने जो कुछ कहा है, हे शिवगणो ! वह हो कर ही रहेगा, परन्तु मैं तुम्हें यह वर देता हूँ कि तुम दोनों भाई मुनि के वीर्य एवं राक्षसी के गर्भ से उत्पन्न होगे तथा बहुत प्रतापी होगे। सम्पूर्ण सृष्टि पर विजय प्राप्त करोगे तथा अनेक प्रकार के भोग भोगकर भी सदाशिव की भक्ति से अचेत न होगे। अन्त में, बानर और मनुष्य द्वारा तुम मुक्ति प्राप्त करोगे।

इतना कह कर नारद जी पहले सदाशिव के पास तथा फिर ब्रह्मा के पास गये और वहाँ दोनों हाथ जोड़, स्तुति करते हुए बोले—"हे पिता ! आप ने विष्णु की जो कथा मुझसे कही थी—जिसमें भक्ति, वैराग्य, तप, दान की रीति एवं तीर्थ आदि का वर्णन है, वह तो मैंने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

सुनी; परन्तु मैं सदाशिव जी की भक्ति से अभी अनभिज्ञ हूँ। इसलिए कृपा कर मुझे क्रम से बताइए कि सदाशिव आदि, मध्य तथा अन्त में क्यों रहते हैं और कैसे प्रसन्न होते हैं? वे निर्गुण हो कर भी सगुण कैसे हो जाते हैं? आप अपनी तथा विष्णु जी की उत्पत्ति के ऊपर भी प्रकाश डालिए। शिव और पार्वती के जितने भी चरित्र हों, कृपा करके उन पर भी प्रकाश डालिए, जिससे मुझे और आपको भी प्रसन्नता प्राप्त हो।''

चौथा अध्याय

इतनी कथा सुना कर सूत जी ने कहा—''हे शौनकादि ऋषियो ! नारद जी का यह प्रश्न सुन कर, ब्रह्मा जी ऐसे प्रेम मग्न हुए कि उनकी आँखों से अश्रुधारा बह निकली। उन्हें तन, मन, स्त्री, पुत्र, घर द्वार आदि किसी का भी कुछ ध्यान न रहा। बहुत देर बाद जब वे प्रकृतिस्थ हुए तब 'शिव, शिव' कहते तथा शिवजी का ध्यान करते हुए हँस कर बोले—''हे नारद ! तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद है। तुमने मेरे सम्पूर्ण कुल को मुक्त कर दिया है, क्योंकि तुम्हारे हृदय में भगवान् सदाशिव की भक्ति उत्पन्न हुई है।'' इस प्रकार प्रशंसा करने के उपरान्त पितामह ब्रह्मा जी ने नारद जी से कहा—''हे पुत्र ! मैं सर्वप्रथम अपनी बुद्धि के अनुसार भगवान् सदाशिव के निर्गुण चरित्र का वर्णन करूँगा, तदुपरान्त उनकी सगुण महिमा को कहूँगा। तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि जिस समय सृष्टि का कहीं चिह्न भी न था, उस समय भगवान् सदाशिव ही निर्गुण रूप से सर्वत्र व्याप्त सच्चिदानन्द स्वरूप, एकमात्र परब्रह्म थे। वे भगवान् सदाशिव सत्य एवं परमानन्द रूप हैं। वे मन तथा वचन के स्वामी हैं और नाम रूप से हीन हैं। वे किसी के वशीभूत न तो देखने में आते हैं और न कोई उनका आदि-अन्त ही जानता है। वे किसी के वशीभूत न हो कर सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी बने हुए हैं। वे ही मनुष्यों के कर्मों के साक्षी हैं तथा सर्वव्यापक होते हुए भी, सबसे भिन्न रहते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

हे नारद ! उन शिवजी की स्तुति करने में सहस्त्र फणधारी शेषनाग भी हार गये हैं। योगी लोग उनका भजन करते हैं, परन्तु उनके आदि और अन्त को नहीं जान पाते। वे निर्गुणस्वरूप वाले प्रभु बिना कान के ही सब कुछ सुन सकते हैं, बिना आँख के ही सब कुछ देख सकते हैं, बिना नाक के ही सम्पूर्ण सुगन्धियों को सूंघ लेते हैं, बिना मुख के ही सम्पूर्ण पदार्थों का भोजन करते हैं, बिना जिह्वा के सम्पूर्ण विद्या को पढ़ते हैं, जिन स्वामी की ऐसी विचित्र महिमा है, उनकी स्तुति भला किस प्रकार की जा सकती है?

हे नारद ! ऐसे निर्गुण स्वरूप भगवान् सदाशिव ने जब अपने मन में यह इच्छा की कि हम एक से अनेक हो जाएँ, उस समय वे सगुणरूप हो गये। उनके निर्गुण एवं सगुण रूप में कोई अन्तर नहीं है। उन्होंने विष्णु और ब्रह्मा को उत्पन्न किया है एवं वे ही सम्पूर्ण प्राणियों में प्रतिष्ठत विराट् स्वरूप हैं। उनके सहस्त्रों नाम हैं, जिनमें—शिव, शंकर, हर, नाथ, महेश, परमदेव, वामदेव, जगदीश्वर, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, गिरीश, शम्भु, सदाशिव, अनीश, विवुध, पार्वतीपति, चक्री, त्रिशुलपाणि, ईश्वर, सुखदाता, अनादि, अनन्त, सर्व आदि संसार में अधिक प्रसिद्ध हैं। वे भगवान् सदाशिव ब्रह्मा एवं विष्णु द्वारा मान प्राप्त करते हैं। संपूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करने वाले तथा भक्तों को आनन्द प्राप्त कराने वाले वे भगवान् उमापति ही सूर्य, चन्द्रमा आदि सहस्त्रों गुणों से भरी हुई संपूर्ण सृष्टि एवं ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र के उत्पन्नकर्त्ता हैं। इस प्रकार भगवान् सदाशिव अपने सहस्त्रों नामों से सम्पूर्ण लोकों में प्रसिद्ध हैं।

हे नारद ! अब तुम उन त्रिशूलपाणि भगवान् शिव के उस सगुण स्वरूप का वर्णन सुनो जिसको स्मरण करने से ही सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। अपने सगुण स्वरूप में वे मस्तक पर जटाजूट एवं गंगा जी को धारण किये हैं। उनके भाल पर चन्द्रमा की कला एवं धनुषाकार त्रिपुण्ड विराजमान हैं। वे कानों में कुण्डल पहने हैं और सूर्य, चन्द्रमा तथा अग्नि के समान तीन लाल नेत्रों को धारण किये हैं। उनका

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

प्रभातकालीन सूर्य के समान पहिला मुख पूर्व दिशा की ओर रहता है तथा उनका दूसरा मुख दक्षिण दिशा की ओर, उनके कंठ में तीन लकीरें हैं। उस कंठ में विराजित हलाहल की श्यामता भक्तों के मन को अनायास ही हर लेती है। वे अपने गले में मुण्डों की माला धारण किये रहते हैं और हाथ में त्रिशूल लिये रहते हैं। उन्हें कोई चतुर्भुज और कोई पंचमुख कहता है। बहुतों ने उन्हें दशभुजाधारी भी कहा है। वे अपने उन हाथों में भिन्न-भिन्न प्रकार के शस्त्र लिये रहते हैं। उँगलियाँ भी सुकोमल एवं अरुण प्रभायुक्त हैं। ऐसे सम्पूर्ण कलाधारी भगवान् सदाशिव के पवित्र स्वरूप का स्मरण बड़े-बड़े तपस्वी तथा मुनिजन निश्छल भाव से किया करते हैं।

हे नारद ! जिस प्रकार शिवजी के अनेक स्वरूप हैं, उसी प्रकार उनका ध्यान धरने की क्रियाएँ भी असंख्य हैं; परन्तु उन्हें जानने वाले बहुत कम लोग ही पाये जाते हैं। भगवान् सदाशिव की महिमा, स्वरूप तथा नामों की कोई गिनती नहीं हो सकती। वेदों का नाम भी न जानने वाले गज और गणिका जैसे असंख्य महापापी मूर्खों ने जो मुक्ति प्राप्त की, उसका एक मात्र कारण यही है कि उन पर भगवान् श्री त्रिशूलपाणि ने स्वयं ही कृपा कर दी थी। ऐसे दयालु गिरिजापति की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है?

हे नारद ! भगवान् सदाशिव ने ही अपने आनन्द के निमित्त शक्ति को प्रकट किया था अर्थात् भगवान् त्रिशूलपाणि के तेज द्वारा ही महाशक्ति का जन्म हुआ है। उस महाशक्ति का जो स्वरूप है वह मैं तुम्हें बताता हूँ। वे देवी सोलह शृंगार किये हुए हैं। उनका शरीर श्याम कमल के समान कोमल है। उनके केश घुँघराले तथा कृष्ण वर्ण हैं। उन शक्ति स्वरूपा देवी के ऐसे अनुपम स्वरूप का ध्यान धर कर भक्तों को अत्यन्त प्रसन्नता की प्राप्ति होती है।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव ने उस परमशक्ति को श्यामरूप में उत्पन्न किया, परन्तु अनेक भक्त उन्हें गौरवर्ण अथवा सोने के समान रंग वाली कह कर उनका स्मरण एवं ध्यान करते हैं। इस संसार में जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

कुछ भी दिखाई देता है और जहाँ तक वचन तथा मन की गति है, उन सब को इन आदि शक्ति की कृपा से ही उत्पन्न समझना चाहिए। अब हम तुमसे भगवान् सदाशिव के सगुण स्वरूप के गूढ़ चरित्रों का वर्णन करते हैं।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव को परब्रह्म एवं भगवती उमा को परमशक्ति समझना चाहिए। सर्वप्रथम भगवान् सदाशिव ने उमा नामधारिणी उस परमशक्ति के साथ विहार करने के निमित्त एक लोक की रचना की, जिसमें दुःख, चिन्ता, शोक तथा दारिद्रय का कोई स्थान नहीं है। वह लोक अत्यन्त रमणीक, परम विचित्र एवं मनोहर है। उस स्थान को भगवान् सदाशिव किसी भी समय नहीं छोड़ते, इसीलिए वह 'अविमुक्त' कहा जाता है। वह स्थान सृष्टि के सम्पूर्ण जीवों को आनन्द देने वाला होने के कारण 'आन्नद वन' के नाम से भी प्रसिद्ध है। वह स्थान सिद्धरूप, तेजस्वरूप तथा अद्वितीय होने के कारण 'काशी' भी कहलाता है। उस नगर में भगवान् सदाशिव ने अपनी इच्छा से एक ऐसे भवन का निर्माण किया, जो अनेक प्रकार के रत्नों से अलंकृत है जिसमें मोतियों की झालरें लटका करती हैं। और जहाँ छत्र, विमान आदि असीमित संख्या में रखे हुए हैं। उस लोक अथवा नगर में कल्पवृक्ष के समान मनोभिलाषा पूर्ण करने वाले सहस्त्रों वृक्ष विद्यमान हैं। उस भवन को भगवान् सदाशिव ने अपनी आदिशक्ति सहित सुशोभित किया। उन्होंने परम शक्ति को सम्बोधित करते हुए कहा—'हे प्रिय ! यह लोक अत्यन्त उत्तम, परम पवित्र एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला है, अतः यह मुझे तथा तुझे अत्यन्त प्रिय है। यहाँ किसी भी प्रकार के दुःख का कभी प्रवेश न हो सकेगा। जो मनुष्य यहाँ पहुँच जाएगा; वह नरक के दुःखों से मुक्त हो जाएगा। हम इस काशी की जो प्रशंसा करते हैं, सो कोई आश्चर्य की बात नहीं है; क्योंकि इसकी स्तुति का वर्णन करने में वेद भी असमर्थ हैं।'' इतना कह कर भगवान् सदाशिव भगवती उमा के साथ वहीं विहार करने लगे। जब उनके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि हम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

कोई रचनात्मक कार्य करें, उस समय उन्होंने भगवती उमा से इस प्रकार कहा—"हे प्रिये ! अब हम कोई ऐसा काम करना चाहते हैं, जिससे हम दोनों को प्रसन्नता की प्राप्ति हो।"

पाँचवाँ अध्याय

भगवान् सदाशिव ने कहा—"हे प्रिये ! हमें एक ऐसा मनुष्य उत्पन्न करना चाहिए, जो सब विद्याओं में पारंगत हो और जिसके ऊपर हम सम्पूर्ण सांसारिक भार को छोड़कर, आनन्दपूर्वक विहार कर सकें। भगवान् त्रिशूलपाणि के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुन कर भगवती जगदम्बा जी ने अपने बाईं ओर देखा तो उनकी इच्छा से तुरन्त ही एक मनुष्य की उत्पत्ति हुई। वह मनुष्य अत्यन्त स्वरूपवान्, कलावान्, बुद्धिमान् तथा शीलवान् था। उसका सम्पूर्ण शरीर श्यामवर्ण चन्द्रमा जैसा था। वह अपने भाल पर त्रिपुण्ड धारण किये हुए था। वह पीतवस्त्र धारण किये हुए था। उसका प्रत्येक अंग सुडौल एवं परम सुन्दर था। वह सम्पूर्ण विद्याओं का निधान, महाप्रतापी, सिद्धरूप तथा पवित्र था। वह उत्पन्न होते ही बारम्बार दंडवत् करता हुआ भगवान् सदाशिव एवं भगवती उमा के सम्मुख आ, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उस सुन्दर मनुष्य को देख कर उमा सहित उमापति शिवजी अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए। वह भी इन दोनों को देख कर बहुत हर्षित हुआ। तदुपरान्त उसने हाथ जोड़ कर इन दोनों की स्तुति तथा प्रशंसा करते हुए प्रार्थना की—"हे पिता एवं हे मातेश्वरी ! आप मेरा नाम रख कर, मेरे योग्य जो कार्य हो उसे बताइए।" यह सुन कर श्री शिवजी बोले—"तुम्हारा नाम विष्णु होगा। सम्पूर्ण सृष्टि में तुम्हारे समान तेजस्वी तथा प्रतापी अन्य कोई भी प्राणी प्रकट न होगा। तुम्हारा यश सम्पूर्ण संसार में निरन्तर फैला रहेगा। संसारी मनुष्य तुम्हें हरि, चतुर्भुज, भगवान्, अच्युत आदि अनेक नाम से पुकारेंगे। तुम भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिए उत्पन्न किये गये हो। अब तुम्हें यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

उचित है कि तुम तपस्या करो, जिससे तुम्हें अधिक तेज एवं सामर्थ्य की प्राप्ति हो।'' इतना कह कर भगवान् सदाशिव ने विष्णु को योग विद्या का उपदेश किया। तब विष्णु एक स्थान पर बैठ कर तपस्या करने में संलग्न हो गये।

हे नारद ! वे द्वादश दिव्य सहस्त्र वर्ष पर्यन्त एक ही आसन पर बैठे हुए योग साधन द्वारा भगवान् सदाशिव का ध्यान करते रहे, परन्तु जब उन्हें तपस्या का कुछ भी फल प्राप्त नहीं हुआ तो उनके हृदय में अत्यन्त शोक हुआ। उसी समय, जिस प्रकार वर्षा में बादल गरजते हैं, ठीक उसी प्रकार यह आकाशवाणी हुई—''हे विष्णु ! तुम मन लगा कर फिर से तप करो; क्योंकि हम सुगमता से किसी को दिखाई नहीं देते हैं।'' इस आकाशवाणी को सुन कर उन्होंने पुनः अत्यन्त कठिन तप करना आरम्भ कर दिया। उस कठिन तपस्या के कारण विष्णु के पवित्र शरीर से इतना पसीना निकला कि उससे एक नदी बह चली। उस अवस्था में बैठे हुए विष्णु जब मूर्च्छित हो गये, तब उनका नाम तीनों लोकों में 'हरनारायण' प्रसिद्ध हुआ। वे इस प्रकार मूर्च्छित हो गये कि जैसे कोई निद्रा में शयन कर रहा हो। उसी दशा में भगवान् सदाशिव की इच्छा से विष्णु की नाभि से एक कमल की उत्पत्ति हुई। उस कमल में बहुत-सी पंखुड़ियाँ थीं। वह देखने में बहुत ऊँचा, अत्यन्त मनोहर तथा लम्बा था।

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद ! विष्णु को उत्पन्न करने के पश्चात् भगवान् सदाशिव ने मुझे अपनी दाहिनी भुजा से उत्पन्न किया और उसी कमल में बैठा दिया। मेरा रंग लाल था। मेरे चार मस्तक थे, जो चारों दिशाओं की ओर खुल रहे थे। मेरे अन्य सभी अंग विष्णु के समान ही थे। मैं भी अत्यन्त सामर्थ्यवान् एवं तेजस्वी था। उसी समय मैंने यह आकाशवाणी सुनी—'हे पुत्र ! तुम्हारे अज, ब्रह्मा, धाता, विधाता, प्रजेश, परमेष्ठी, बहुगर्भ आदि अनेक नाम होंगे।'' परन्तु मैं उस समय यह नहीं जान सका कि मुझे उत्पन्न करने वाला कौन है? हे नारद ! भगवान् सदाशिव की माया तीनों भुवनों को घेरे हुये है। वे जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:30 AM

चाहते हैं, वही होता है। अस्तु, जब मैं यह नहीं जान सका कि मैं किसके द्वारा उत्पन्न हुआ हूँ और किसका पुत्र हूँ तथा उस कमल के पुष्प की जड़ कहाँ है? तब मैंने अपने मन में यह विचार किया कि जिसके मूल से यह कमल का पुष्प उत्पन्न हुआ है, वही मेरा पिता होगा। ऐसा निश्चय करके उस कमल की जड़ को जन्म देने वाले अपने पिता का पता लगाने के लिए मैं उस कमल की डण्डी के मार्ग से, उस जल के भीतर जा पहुँचा, जिसमें हो कर वह कमलनाल ऊपर को निकली हुई थी। यद्यपि मैं उस कमलनाल के सहारे सैंकड़ों कोसों तक पानी के भीतर चला गया, परन्तु मुझे उसके उद्गम स्थान का कोई भी पता नहीं चल सका। तब मैं निरन्तर सौ वर्षों तक प्रयत्न करने के बाद निराश हो जाने के शोक से व्याकुल हो कर उसी स्थान पर पुनः लौट आया, जहाँ से नीचे की ओर गया था। जब मैं पुनः ऊपर लौट कर आया तो यह देख कर मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही कि वहाँ वह कमल पुष्प कहीं भी दिखाई नहीं देता था जिस पर मैं पहले बैठा हुआ था। इस अद्भुत दृश्य को देख कर मुझे अत्यन्त चिन्ता हुई। तब मैंने इस सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी से अपनी रक्षा करने की प्रार्थना की।

हे नारद ! उस समय मुझे चिन्तायुक्त देख कर आकाशवाणी हुई, जिसके द्वारा दो अक्षर प्रकट हुए। उन अक्षरों के सहारे सोलह तथा इक्कीस अक्षरों का और ज्ञान हुआ जिनसे मैं बहुत-सी बातों को जान सका। ठीक उसी समय भगवान् सदाशिव की इच्छा से उस जल में अचेत हो कर पड़े हुए विष्णु सचेत हो कर मेरे समीप आये। वे रत्नजटित किरीट आदि को धारण किये हुए थे। उनके शरीर का रंग मेघ के समान श्यामल था। उनके उस मनोहारी प्रकाशवान् स्वरूप को देख कर मैं आशचर्यचकित रह गया।

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए; क्योंकि भगवान् सदाशिव जो चाहते हैं वही होता है। अस्तु, मैंने विष्णु के उस स्वरूप को देखकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पूछा—"आप कौन हैं?" विष्णु ने उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! हम ब्रह्म, अलख, निरंजन, हरि, भूपति, निर्विकार अचिन्त्य तथा सतचित् आनन्दस्वरूप हैं। हम तुम्हारे पिता हैं और हमारे ही नाभि-कमल द्वारा तुम्हारी उत्पत्ति हुई है। अब तुम निर्भय हो जाओ, क्योंकि हम तुम्हारे रक्षक हैं। हम से ऊपर, हमारे समान अथवा हम से उत्तम अन्य कोई नहीं है। हमी सभी के स्वामी हैं।" हे नारद ! विष्णु जी ने यह बात अज्ञानावस्था में ही कही थी कि हम हीं उत्तम हैं और हम हीं ब्रह्म हैं, क्योंकि वे उस समय शिवजी की माया से अचेत थे। भला इस संसार में ऐसा कौन है, जिसे भगवान् सदाशिव की माया भुलावे में नहीं डाल देती?

हे नारद ! विष्णु के मुख से यह वचन सुनकर मुझे अत्यन्त क्रोध आया। तब मैंने उनसे कहा—हे विष्णु ! तुम ऐसी असत्य बात मत कहो और कैवल्य-भाव का निश्चय रखो। यदि तुम हमें उत्पन्न करने वाले होते तो वेद हमें ब्रह्मा, पितामह, विधाता, परमेष्ठी आदि नामों से नहीं पुकारते। हम स्वयं ही तीनों गुणों को धारण करके सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करने वाले हैं। अतः तुम्हें हमारे प्रति ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिए।" मेरी बात सुनकर विष्णु बोले—"हे ब्रह्मा ! तुम्हें ऐसे अज्ञान में पड़ना उचित नहीं है। इस सृष्टि को उत्पन्न करने वाले तुम नहीं हो, बल्कि हम हीं हैं। हम हीं सब जीवों को उत्पन्न करके उनका पालन करते हैं और प्रलयकाल में सब को नष्ट कर देते हैं। हमारे हरि, ईश, अच्युत आदि सर्वोत्तम नाम हैं। हमारी माया के वशीभूत हो कर सब लोग अपना ज्ञान भुला बैठते हैं, इसीलिए तुम भी ऐसा कह रहे हो। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। यह सम्पूर्ण संसार हमारे द्वारा ही उत्पन्न हुआ है और हमारे ही आधीन बना रहता है। हम हीं ने वेदों को बनाया है और तुम्हें नाभि-कमल द्वारा उत्पन्न किया है। हमसे अधिक श्रेष्ठ अन्य कोई नहीं है। तुम अपने नामों पर अहंकार मत करो तथा क्रोध को त्याग कर जो वचन कहने योग्य तथा उचित हैं, उन्हीं का प्रयोग करो। जिस प्रकार अन्धा मनुष्य आँखों की महिमा का, निर्धन मनुष्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

धनवान् की अवस्था का वर्णन करे, उसी प्रकार वेद ने भी तुम्हारे नामों का वर्णन किया है। यदि तुम हमारा पूजन करोगे तो वह शुभ होगा अन्यथा हम तुम्हें अपनी शक्ति द्वारा नष्ट कर देंगे।

हे नारद ! विष्णु के ऐसे अहंकार पूर्ण शब्द सुनकर पहले तो मुझे बहुत हँसी आई, फिर हृदय में इतना क्रोध उत्पन्न हुआ कि मैं उनका शत्रु बन गया और उनसे इस प्रकार कहने लगा—''हे विष्णु ! जिस प्रकार गुरु अपने शिष्य को झिड़क कर बुलाता है, उसी प्रकार तुम हमें उपदेश क्यों दे रहो हो?'' हे नारद ! परस्पर इस प्रकार कहते हुए हम तथा विष्णु आपस में युद्ध करने लगे। शिवजी की माया से मोहित हो कर हम दोनों ने बहुत समय तक खूब युद्ध किया, क्योंकि हम दोनों ही अपने को सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी समझते थे।''

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! हमें तथा विष्णु को परस्पर लड़ते हुए देख कर, प्रलयकालीन प्रज्वलित बड़वाग्नि के समान शिवजी अचानक ही उस स्थान पर प्रकट हो गये। मैं उनकी उपमा किससे दूँ? उनके उस परम तेजस्वी स्वरूप को देख कर हम दोनों ने परस्पर युद्ध करना बन्द कर दिया। उस समय विष्णु अत्यन्त भयभीत तथा आश्चर्य चकित हो कर मुझ से यह कहने लगे—''हे ब्रह्मन् ! यह निस्सीम तेज यहाँ कहाँ से आ पहुँचा? अब हम दोनों को उचित है कि हम इस तेज के आदि और अन्त को देख आवें। हम दोनों में से जो भी इसके आदि और अन्त को देख लेगा, उसी को सबसे बड़ा और सब का स्वामी स्वीकार कर लिया जाएगा। हमें तो यह तेज आदि और अन्त से रहित जान पड़ता है। अच्छा, तुम इस तेज के ऊपर की ओर जाओ और हम नीचे की ओर जाते हैं।''

हे नारद ! विष्णु की यह बात मैंने स्वीकार कर ली। तब हम दोनों अहंकारी उस तेज के आदि और अन्त को देखने के लिए एक-दूसरे से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भिन्न दिशाओं में चल दिये। हे पुत्र ! जो कार्य अहंकार की अवस्था में किया जाता है, वह कभी पूर्ण नहीं होता और उसका फल भी अच्छा नहीं मिलता। जब तक मनुष्य अहंकार को नहीं त्याग देता, तब तक उनका कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। हमारे और विष्णु के इस चरित्र को जो मनुष्य प्रातःकाल हाथ-पाँव धो कर ध्यान में लाता है, उसे इस लोग में सुख, आरोग्य तथा परलोक में श्रेष्ठ गति की प्राप्ति होती है।''

हे नारद ! हम और विष्णु एक दिव्य सहस्त्र वर्ष पर्यन्त उस दिव्यज्योति के आदि और अन्त को ढूँढ़ते रहे, परन्तु हम दोनों में से किसी को भी उसका कुछ पता न चला। अस्तु, हम निराश हो कर अपने स्थान को लौट पड़े; परन्तु तभी एक आश्चर्य की बात हुई कि जिस स्थान से हम चले थे, वह हमें बहुत ढूँढ़ने पर भी कहीं दिखाई नहीं दिया। अतः हमें एक सहस्त्र दिव्य वर्षों का समय अपने पहले स्थान पर ढूँढ़ने में लग गया। उस समय हमें इस बात का भली प्रकार ज्ञान हो गया कि हम से ऊपर भी कोई बड़ी शक्ति है जो सबसे उत्तम और पुरातन है। यह बात ध्यान में आते ही हम दोनों उस पवित्र, निर्विकार स्वरूप की शरण में गये और परस्पर शत्रुता को त्याग कर, भक्ति भाव से उस परम स्वामी की स्तुति करने लगे। हम दोनों की उस प्रार्थना को सुनकर यह आकाशवाणी हुई ''हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! तुम दोनों योग साधन करो।''

हे नारद ! उस आकाशवाणी को सुनकर हम दोनों ने योगाभ्यास करते हुए उस अलक्षित स्वामी की स्तुति में इस प्रकार कहना आरंभ किया—''हे स्वामी ! हम दोनों ने आपकी माया के वशीभूत हो कर अपने को सृष्टि का उत्पन्न कर्त्ता समझ लिया था। अब हम अभिमान को त्याग कर आपको दण्डवत् करते हैं। आप हमें अपना सेवक जान कर कृपा कीजिए और प्रकट हो कर हमें अपना दर्शन दीजिए।'' जिस समय हम लोग इस प्रकार स्तुति कर रहे थे, उसी समय हम दोनों को गूढ़ शब्दों में किसी ने कुछ प्रेरणा दी; परन्तु हम उसके तात्पर्य को नहीं समझ पाये। अब हमने दंडवत् करते हुए पुनः यह प्रार्थना की कि हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:31 AM

प्रभो ! हमारे सम्मुख साकार रूप में प्रकट हो कर आप दर्शन दें; क्योंकि आपकी गूढ़ प्रेरणा को समझने में हम दोनों ही असमर्थ हैं। हमारे इस प्रकार कहते ही भगवान् सदाशिव ने साक्षात् प्रकट हो कर हमें अपना वह स्वरूप दिखाया, जिसके दर्शन पाकर सम्पूर्ण संसार मोहित हो जाता है। तदुपरान्त प्रणव अर्थात् ॐकार प्रकट हुआ। भगवान् सदाशिव की माया जानने में असमर्थ होने के कारण हम उसे भी समझने में असमर्थ रहे। कुछ देर पश्चात् जब उस प्रणव के चार भाग हुए और उसके भीतर से सगुणरूप भगवान् त्रिशूलपाणि प्रकट हुए, उस समय हमने यह समझा कि इस प्रणव के जो अकार, उकार तथा मकार अक्षर हैं, उसके नाद तथा बिन्दु का यह अर्थ है कि पहला अक्षर अर्थात् अकार लिंग की ज्योति है; दूसरा अक्षर उकार उस ज्योति का मध्य है; जो आधी मात्रा नाद स्वरूप है, वह उस लिंग ज्योति का मस्तक है जो बिन्दु है, वह सम्पूर्ण लिंग का ज्योति स्वरूप है। उसका वर्णन अन्य प्रकार से इस प्रकार किया जा सकता है कि अकार से ऋग्वेद, उकार से यजुर्वेद, मकार से सामवेद, नाद से अथर्ववेद तथा बिन्दु से ब्रह्म विद्या का स्वरूप बना है।

वह इस सम्पूर्ण सृष्टि में सर्वोत्तम है। उसी को 'वृषातन' कहा जाता है। उसी प्रणव में तीनों लोकों की स्थिति है। वह कभी नष्ट नहीं होता। ब्रह्म से लेकर तृण पर्यन्त सभी जीव तथा वस्तुएँ उसमें स्थित रहती हैं। ढूँढ़ने पर भी प्रणव के लिंग को प्राप्त नहीं किया जा सकता। चारों वेद तथा अठारहों पुराण भी उसके भीतर विद्यमान हैं।

हे नारद ! वेद भगवान् सदाशिव को प्रणवरूप कहते हैं। वे शिवजी अपने दाहिने अंग अकार द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं एवं बाएँ अंग उकार द्वारा उसका पालन करते हैं। प्रणवरूप शिव के हृदय में जो मकार है, उससे प्रलय का प्रादुर्भाव होता है। वर्णमाला के सम्पूर्ण अक्षरों से भगवान् सदाशिव का शरीर अलंकृत है। इन अक्षरों से अलंकृत श्री शिवजी का जो शरीर है, उसका स्मरण करने से अत्यन्त प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। मैंने और विष्णु ने सदाशिव का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जब यह प्रणवरूप देखा तो अत्यन्त प्रसन्न हो कर हाथ जोड़ उन्हें दंडवत् की तथा हम दोनों ही उनकी बहुत प्रकार से स्तुति करने लगे।

❂❂❂

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इस प्रकार निर्विकार एवं निराकार परब्रह्म की बहुत प्रकार से स्तुति करने के उपरान्त हमने उनसे यह प्रार्थना की "हे प्रभो ! आप हमारे समक्ष अपने स्वरूप को प्रकट कीजिए।" मेरी तथा विष्णु जी की यह प्रार्थना सुन कर, भगवान् सदाशिव अपनी परमशक्ति सहित उसी क्षण प्रकट हो गये। उनका शरीर श्वेत पत्थर के समान गौर था। वे उस पर भस्म मले हुए थे। उनके वामांग में आदिशक्ति महामाया उत्तमोत्तम वस्त्रालंकारों को धारण किये हुए विराजमान थीं। इस प्रकार जब उन्होंने अपना दर्शन दिया तो उनके स्वरूप को देखकर हम दोनों को इतना अधिक आनन्द हुआ कि उस प्रसन्नता में हमारे नेत्रों से आँसू बह निकले और वाणी गद्‌गद हो गयी। कुछ देर पश्चात् जब हमें चैतन्यता प्राप्त हुई, तो हम हाथ जोड़ कर उनकी स्तुति करते हुए बोले—"हे प्रभो ! हमारा यह पारस्परिक विवाद शुभ ही हुआ, जो हमें आप परमप्रभु के दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। निश्चय ही हमारे शुभ कर्मों का उदय हुआ है जो हम आपको देखकर लोक-परलोक का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। हे प्रभो ! हम से जो कुछ अपराध हुआ, उसे आप कृपापूर्वक क्षमा कर दीजिए।" हम दोनों ने भगवान् सदाशिव को अपना स्वामी स्वीकार किया और अत्यन्त नम्रतापूर्वक अपने हाथ जोड़ते हुए उनकी महान् महिमा का वर्णन किया। तत्पश्चात् हम अपने मस्तक को नीचे झुकाए हुए उनके चरणारविंदों की ओर देखने लगे।"

❂❂❂

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:31 AM

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! मेरे तथा विष्णु द्वारा की गई स्तुति को सुनकर भगवान् सदाशिव ने मुस्कुराये हुये इस प्रकार कहा—"हे ब्रह्मन् तथा हे विष्णो ! तुमने हमारी माया के मोह में पड़कर युद्ध किया और अन्त में हमने तुम दोनों को अपना भक्त जान कर, अपना लिंग स्वरूप प्रकट किया, जिसे तुम दोनों में कोई नहीं पहिचान सका। अब तुम्हें यह उचित है कि पारस्परिक विरोध भाव को त्याग कर, तुम दोनों ही अहंकार को नष्ट कर दो और वह कार्य करो, जिसकी हम तुम्हें आज्ञा देते हैं।"

हे नारद ! इतना कह कर भगवान् सदाशिव ने श्वास के मार्ग द्वारा मुझे सम्पूर्ण वेद पढ़ा दिये। तदुपरान्त वे पाँच मन्त्र भी बताये, जिनमें संपूर्ण विद्याएँ अन्तर्निहित हैं। उन्होंने सर्व प्रथम प्रणव की शिक्षा दी, जिसके अक्षर वेद कहलाते हैं। शिवजी का सर्वप्रथम वाक्य वही है। तदुपरान्त उन्होंने चौबीस अक्षरों से युक्त वेदों की माता गायत्री का उपदेश दिया। फिर महामृत्युञ्जय मंत्र की शिक्षा देने के उपरान्त उस चिन्तामणि मंत्र को सिखाया, जो भक्तों को महान् सुख देता है। उस वेद तथा मन्त्रों को पढ़कर हमें अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस समय मैं तथा विष्णु जी कृतज्ञता भरी दृष्टि से उन महेश्वर भगवान् की ओर देखने लगे और दर्शन के उस आनन्द में आचूड़ निमग्न हो गये। उन परमप्रभु के दर्शन से हमें जो सुख प्राप्त हुआ, उसका वर्णन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता। हमारे उन अनन्य प्रेम को देखकर भगवान् महेश्वर को भी बहुत प्रसन्नता हुई। तब उन्होंने मुझसे यह कहा—"हे ब्रह्मा ! तुम धन्य हो, जो तुम्हें मेरी कृपा से सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अब तुम मेरी आज्ञा स्वीकार कर, सृष्टि करो।" मुझसे यह कह कर फिर वे विष्णु की ओर देखते हुए बोले—"हे विष्णु ! तुम सृष्टि का पालन करने के अधिकारी हो। तुम हमें वेद का स्वरूप जानो और वेद में जो कुछ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:31 AM

लिखा है, उसे हमारी आज्ञा मान कर स्वीकार करो।''

हे नारद ! भगवान् त्रिशूलपाणि की आज्ञा सुन कर हम दोनों ने उनसे प्रार्थना करते हुए कहा—''हे प्रभो ! हमें आपकी आज्ञा स्वीकार है, परन्तु हम यह चाहते हैं कि आप स्वयं भी कोई अवतार ग्रहण कर हमारी सहायता करते रहें। तीनों लोकों का पालन करने के पश्चात् अंत अर्थात् प्रलय का अधिकार आप अपने पास रखें। हमारा यही मनोरथ है।'' इतना कह कर हम दोनों मौन हो गये। तदुपरांत उनकी मौन स्वीकृति पाकर हमने यह बात कही—''हे प्रभो ! अब आप सर्वप्रथम हमें यह बताइए कि हम किस रीति के अनुसार आपका पूजन करें?'' यह सुनकर भगवान् भूतभावन ने उत्तर दिया—''हे ब्रह्मा तथा विष्णु ! हमें संसार में तुमसे अधिक प्रिय अन्य कोई न होगा। अब तुम दोनों सम्पूर्ण चिन्ता तथा शोक को त्याग कर, सुखपूर्वक अपना कार्य करो तथा उस कार्य द्वारा अन्य लोगों को भी सुख पहुँचाओ। हमने तुम्हें कुछ देर पूर्व जो अपना लिंग स्वरूप दिखाया था, उसका पूजन करना सर्वथा योग्य है। उसी के पूजन से सुख की प्राप्ति होगी। उस लिंग की उत्पत्ति का भेद यह है कि सम्पूर्ण संसार जिस क्षेत्र में लीन हुआ है, उसी को लिंग कहते हैं। अस्तु, ऐसे लिंग के पूजन से इस लोक तथा परलोक में सुख प्राप्त होता है। लिंग के पूजन की महिमा अनंत है। तुमने जो हमसे अवतार ग्रहण करने की प्रार्थना की है, उसके सम्बन्ध में यह जान लो कि समय आने पर हम स्वयं ही प्रकट हो कर आवेंगे। हमारे उस अवतार का नाम रुद्र होगा। हम चारों अर्थात् ब्रह्मा विष्णु, शिव और शक्ति एक ही स्वरूप हैं। जो व्यक्ति हम में किसी प्रकार का भेद समझेगा, उसे बहुत दुःख उठाना पड़ेगा।''

इतना कहकर भगवान् सदाशिव ने एक बड़े गुप्त भेद को प्रकट करते हुए मुझ से यह कहा—''यह भेद वेद में भी अधिक गुप्त है अर्थात् हम सगुण रूप में शिव और शक्ति दो नामों से प्रकट होते हैं, तथा तीनों गुणों द्वारा ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव नामक देवताओं के रूप में अलग-अलग प्रकट होते हैं। किसी कल्प में पहिले, विष्णु, फिर ब्रह्मा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

तदुपरान्त रुद्र की उत्पत्ति होती है तो किसी कल्प में पहले शिव, फिर विष्णु और तत्पश्चात् ब्रह्मा की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार तुम दोनों शक्ति के चिह्न से रजोगुण एवं सतोगुण को ग्रहण करते हो। हर अर्थात् महादेव हमारे ही अंश से उत्पन्न हो कर, हमारे ही तमोगुणी स्वरूप हैं। उनके आधीन प्रलय कार्य रहता है। अस्तु, जिस प्रकार हम तमोगुणी रुद्र का स्वरूप धारण कर प्रकट होंगे, वह सब हमने तुम्हें बता दिया। तुम दोनों श्याम एवं लाल वर्ण का स्वरूप धारण किये हुए हो, अतः हम श्वेत रूप धारण करेंगे। तुम दोनों पर तमोगुण का प्रभाव न होगा, परन्तु हमारे रुद्र स्वरूप की यह स्थिति होगी कि वह तमोगुण से संयुक्त होने पर भी दिन-रात पवित्र योग में निमग्न रहेगा।''

हे नारद ! मुझे यह आज्ञा देकर भगवान् सदाशिव ने विष्णु जी की ओर देखते हुए यह कहा—''हे विष्णु ! तुम सम्पूर्ण जीवों का भली प्रकार पालन करना। हमारे दाहिने ओर से ब्रह्मा, बाएँ ओर से विष्णु तथा हृदय से रुद्र की उत्पत्ति होगी। हमारी शक्ति जो उमा हैं—वह भी दो अंशों में प्रकट होंगी, जिससे तुम अलग-अलग नहीं समझे जाओगे। पहले अंश से वे लक्ष्मीस्वरूपा हो कर तुम्हें प्राप्त होंगी और दूसरे अंश से सरा हो कर ब्रह्मा को प्राप्त होंगी। उनके उमा स्वरूप को हर स्वीकार करेंगे। उस समय संसार में उनका नाम सती प्रसिद्ध होगा। इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा हर—यह तीनों देवता अपनी शक्तियों के साथ रह कर वेद का पूजन करेंगे। अस्तु, तुम दोनों को उचित है कि तुम हमारी उस आज्ञा का अनुसरण करो। ब्रह्मा का एक दिन सहस्त्र चतुर्युगी का होगा। इस प्रकार की एक सौ वर्ष की आयु ब्रह्मा की होगी। ब्रह्मा की सम्पूर्ण आयु का समय विष्णु के आधे दिन के बराबर होगा और विष्णु की सम्पूर्ण आयु का समय हर का एक दिन होगा। ऐसा एक दिन व्यतीत हो जाने पर हमारा सगुण स्वरूप निर्गुण हो कर प्रलय कर दिया करेगा।''

इतना कह कर भगवान् सदाशिव ने हम दोनों के मस्तक पर अपने दोनों हाथ रखे। इस प्रकार उपदेश तथा शिक्षा दे कर जब भगवान्

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिव अन्तर्धान हो गये, तब हम दोनों शोक से व्याकुल हो, हाथ जोड़ कर 'शिव-शिव' कहते हुए जिस ओर वे गुप्त हुए थे, उसी ओर मुँह किये बारम्बार दंडवत् करते रहे।

❁❁❁

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! भगवान् सदाशिव की आज्ञा पा कर विष्णु भी कुछ देर पश्चात् अन्तर्धान हो गये और उन्होंने सम्पूर्ण लोक को ब्रह्माण्ड से पृथक् कर दिया। अस्तु, उन्हीं सदाशिव की कृपा से शक्ति को प्राप्त कर, मैंने ब्रह्माण्ड अर्थात् सर्वोत्तम सृष्टि को उत्पन्न किया। अब मैं तुमसे जीवों की उत्पत्ति का वर्णन करता हूँ कि वे प्रकृति और पुरुष द्वारा किस प्रकार उत्पन्न होते हैं। जब भगवान् सदाशिव तथा उनकी परमशक्ति प्रकृति ने इच्छा की तो उनकी इच्छा द्वारा सर्वप्रथम बुद्धि की उत्पत्ति हुई। उस महत्त्व से अहंकार एवं अहंकार से सतोगुण, रजोगुण तथा तमोगुण की उत्पत्ति हुई। इन तीन गुणों द्वारा पृथ्वी एवं आकाश उत्पन्न हुए। इसी प्रकार क्रमानुसार देवता, मनुष्य आदि योनियों की उत्पत्ति हुई। फिर मैंने भगवान् सदाशिव के चरणों का ध्यान धर कर सर्वप्रथम सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार एवं ऋभु—इन पाँच मनुष्यों को उत्पन्न किया। ये सब भगवान् सदाशिव का ध्यान धरने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते थे। इन्होंने मुझ से यह कहा कि हम लोग सृष्टि उत्पन्न करने का काम नहीं करेंगे। इस अवज्ञा को देखकर मुझे उनके ऊपर बहुत क्रोध आया, परन्तु विष्णु जी के समझाने पर मैंने उस क्रोध को शान्त कर लिया। तत्पश्चात् मैंने परिश्रमपूर्वक बहुत समय तक तपस्या की, परन्तु जब उस तपस्या का कोई फल न निकला तो मुझे अपने मन में बहुत आश्चर्य हुआ। उस समय मैं भगवान् सदाशिव की माया से ऐसा भयभीत हुआ कि मेरे नेत्रों से आँसुओं की बूँदें टपकने लगीं। इस समय भगवान् सदाशिव ने दयालु हो कर मुझे सद्बुद्धि प्रदान की,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

जिससे मेरे हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि यदि भगवान् त्रिशूलपाणि ही मेरे पुत्र हो कर जन्म लें तो सम्पूर्ण कार्य स्वयं ही सिद्ध हो जायेंगे। इस बात को मन में रख कर मैं फिर बहुत समय तक योगसमाधि में लीन हो गया। मेरी उस तपस्या से भगवान् सदाशिव अत्यन्त प्रसन्न हुए और सृष्टि की वृद्धि करने के लिए उन्होंने मेरी भौंह के निचले भाग से अवतार ग्रहण किया। उन्होंने अपने उस अवतारी शरीर में वे चिह्न प्रकट कर दिये, जिन्हें मैंने सर्वप्रथम विष्णु जी के साथ, उनका दर्शन प्राप्त करते समय देखा था। इस प्रकार उन्होंने मेरी सहायता करने के हेतु अवतार ग्रहण किया।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! भगवान् सदाशिव इस रूप में प्रकट हो कर मुझसे कहने लगे—''हे ब्रह्मन् ! यदि आप हमें आज्ञा दें तो हम वेदानुकूल कार्य करें।'' मैं ऐसे सुपुत्र को पा कर अपने मन में फूला नहीं समा रहा था। अस्तु, मैंने उनसे कहा—''जब तुम जैसे मेरे पुत्र उत्पन्न हुए हैं, तो मेरे सम्पूर्ण मनोरथ निश्चय ही पूर्ण हो जाएंगे। मैं वेद के अनुसार तुम्हारे जो ग्यारह नाम हैं उन्हें बताता हूँ—मन्युमनु, महर्निष, महान, शिव, कृतुध्वज, उग्ररेता, भव, काल, वामदेव तथा धृतव्रत। तुम्हारी ग्यारह रुद्राणियों के नाम इस प्रकार होंगे—धी, वृत्ति, उशना, उमा, नियृत्सर, इला, अम्बिका, इरावती, सुधा, दीक्षा तथा रुद्राणी। इसके अतिरिक्त रुद्र, महेश्वर, हर तथा जगदीश आदि तुम्हारे अनेक नाम और भी होंगे। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु—ये पाँचों तत्त्व तथा सूर्य, चन्द्रमा, जीव और हृदय ये योग स्थान तुम्हारे निवास स्थान होंगे। तुम अपनी पत्नियों को भी इन्हीं स्थानों में अपने साथ रखो और सन्तान की उत्पत्ति करो, जिससे सृष्टि की वृद्धि हो।

हे नारद ! मेरी बात सुन कर उन सगुणस्वरूप शिवजी ने भूत, प्रेत,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

पिशाच आदि सहस्त्रों प्रकार के भयानक जीव उत्पन्न किये, जिन्हें देखकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। तब मैंने भयभीत होकर उनसे कहा—"तुम इस सन्तान को इसी समय नष्ट कर दो तथा श्रेष्ठ पुत्र उत्पन्न करो।" यह सुनकर उन्होंने उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! जिन जीवों को बार-बार जन्म लेना और मरना पड़े, उन्हें हम उत्पन्न नहीं करेंगे, उन्हें तो आप ही उत्पन्न कीजिये। आप हमें भूलियेगा नहीं।" यह कहकर शिवजी ने अपनी माया को मेरे ऊपर से हटा लिया। उस समय मैंने चैतन्य होकर अपना मस्तक दण्डवत् करने के हेतु उनके चरणों में झुका दिया। यह देखकर शिवजी ने मुझे ऊपर उठाते हुए, मेरे मस्तक पर अपना हाथ फेरा। उस समय सनकादिक भी आ कर शिवजी के चरणों में गिर पड़े और उन्हें दण्डवत् करते हुए, स्तुति करने लगे। भगवान् सदाशिव ने सब पर दयालु हो कर उन्हें उत्तम बुद्धि प्रदान की। तदुपरान्त वे मेरे ललाट के मार्ग से गुप्त हो कर अपने लोक को चले गये। हे नारद ! हम तीनों देवताओं में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। अब मैं तुमसे सृष्टि का वर्णन पुनः करता हूँ।"

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! भगवान् सदाशिव की आज्ञा पाकर मैंने सर्वप्रथम पृथ्वी, आकाश आदि पंच तत्त्व, पर्वत, मूल एवं कला आदि को उत्पन्न किया। तदुपरान्त अपनी इच्छा से विरचि, अग्निरस, शातातप, भृगु, पुलस्त्य, पुलह तथा वशिष्ठ—इन सप्त ऋषियों को जन्म दिया। फिर मैंने अपने प्रत्येक अंग से तुम अर्थात् नारद, कद्रम एवं दक्ष आदि दस पुत्रों को उत्पन्न किया। फिर स्तन से मनुष्य, पीठ से पाप और अन्य अंगों से प्रीति, तृष्णा आदि को प्रकट किया, तदुपरान्त क्रमानुसार नक्षत्र, दिशा, दिक्पाल, एवं चन्द्रमा आदि को उत्पन्न किया। परन्तु अपने द्वारा उत्पन्न की हुई, उस तामसी सृष्टि को देखकर मुझे अत्यन्त चिन्ता हुई। रात्रि के कारण अब मुझे भूख लगी और मैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

राक्षस-यक्षादि को खाने के लिए दौड़ा, उस समय मैंने अपने शरीर को भयंकर बनाकर, काल कों उत्पन्न किया।

हे नारद ! इसके उपरान्त मैंने उस शरीर को त्याग कर स्त्री का स्वरूप धारण किया। उस समय मेरे उस रूप को देखकर सब ऋषि-मुनि आसक्त हो कर मुझे पकड़ने के लिए दौड़े। तब मैंने उस शरीर को बदल कर एक दूसरा शरीर ग्रहण कर लिया और अपने घुटनों द्वारा असुरों की उत्पत्ति की। वे मुझे पहचान नहीं सके, अतः निर्लज्ज बन कर काम के वशीभूत हो, मेरे पास दौड़े चले आये। उनके भय से भयभीत हो कर मैंने अपनी रक्षा के लिए भगवान् सदाशिव से प्रार्थना की और यह कहा कि हे प्रभो ! आप इन दुष्टों को शीघ्र ही नष्ट कर डालें। मेरी प्रार्थना सुन कर भगवान् भूतभावन् ने अप्रकट रूप से मुझे यह आज्ञा दी कि तुम अपने इस शरीर को बदल डालो। तब मैंने उनकी आज्ञानुसार अपने शरीर को फिर बदल दिया। जिस समय मैंने शरीर को बदला, वह समय सायंकाल कहलाया। उसमें सम्पूर्ण असुर अचेत हो कर गिर पड़े। तदुपरान्त मैंने मनुष्यों की सृष्टि की। अस्तु, मैंने दूसरा स्वरूप धारण कर राक्षस, गन्धर्व, यक्ष, गुह्य, किन्नर, किम्पुरुष, विद्याधर, ईश्वर, भूत, प्रेत आदि तथा स्त्री को उत्पन्न किया, परन्तु इन जीवों की उत्पत्ति से भी मेरे हृदय को प्रसन्नता प्राप्त नहीं हुई।

हे नारद ! इसके उपरान्त मैंने शिवजी की इच्छा से हाथी, सिंह, बैल आदि बुद्धिहीन जीवों को उत्पन्न किया। इस सृष्टि को उत्पन्न करने के पश्चात् मैंने यह विचार किया कि यह लोग क्या काम करेंगे। यह सोच कर जैसे ही मैंने श्री शिवजी का ध्यान किया तो चारों वेद उसी समय मेरे द्वारा उत्पन्न हो गये। उनसे मैंने धनुर्विद्या, गानविद्या एवं सम्पूर्ण कथाओं से युक्त पुराणों को, जिन्हें पंचम वेद कहा जाता है, उत्पन्न किया। इसके बाद मैंने संपूर्ण आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, संन्यास एवं व्रत, धर्मशास्त्र, नीति, मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम तथा वैद्यक शास्त्र को उत्पन्न किया। इस प्रकार मैं जब सम्पूर्ण सृष्टि कर चुका तब विष्णु उसका पालन करने लगे एवं शिवजी पृथ्वी को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थिर रखने के कार्य में संलग्न हुए। हे नारद ! सृष्टि की उत्पत्ति का यह वर्णन अत्यन्त सुख प्रदान करने वाला है।''

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—हे नारद ! अब मैं तुमसे उस सृष्टि का वर्णन करता हूँ, जो समागम से उत्पन्न होती है। यद्यपि मैंने अनेक प्रयत्न किये, परन्तु मुझे दृढ़ शक्ति की प्राप्ति नहीं हुई। यह देखकर मैंने अपनी संपूर्ण इन्द्रियों को वश में करके भगवान् सदाशिव की पुनः पूजा की, क्योंकि उनकी प्रसन्नता के बिना कोई भी कार्य पूरा नहीं होता है। शिवजी ने इस पूजा से प्रसन्न होकर पुनः दर्शन दिया। उस समय उनका शरीर अर्धाङ्गी था अर्थात् उनके दाहिने ओर आधे भाग में तो सदाशिव का पुरुष शरीर था और बाईं ओर आधे भाग में महारानी जगदम्बा का स्त्री रूप था। आधे मस्तक पर जटाएँ थीं और आधे पर घुंघराले सुन्दर केश थे। एक ओर ललाट पर त्रिपुण्ड लगा हुआ था और दूसरी ओर बिंदी चमक रही थी। एक ओर डमरू की ध्वनि थी और दूसरी ओर घुँघरू का मधुर-स्वर।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव के इस अर्धाङ्गी स्वरूप को देखकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और मैंने उन्हें दण्डवत् करते हुए प्रार्थना की—''हे प्रभो ! मेरा धन्यभाग है, जो आप ने कृपा कर मुझे अपने दर्शन दिये।'' मेरी स्तुति को सुनकर भगवान् सदाशिव हँसते हुए बोले—''हे ब्रह्मन् तुमने जिस मनोरथ की प्राप्ति के लिए इतना कष्ट भोगा है, उसे हम जानते हैं। तुम्हारी अभिलाषा अधिक सन्तान उत्पन्न करने की है।'' इतना कह कर भगवान् सदाशिव शक्ति से अलग हो गये। उस समय मैंने शक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कहा—''हे महारानी ! मैंने आपकी आज्ञा से सृष्टि उत्पन्न करने की चेष्टा की, परन्तु वह अधिक नहीं बढ़ी। हे अंबे ! अब मैं कामदेव के आश्रय से सृष्टि उत्पन्न करना चाहता हूँ और आप से यह वरदान माँगता हूँ कि मेरा मनोरथ पूर्ण हो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

हे जगदम्बे ! आप दक्ष की पुत्री के रूप में अवतार ग्रहण करें।'' मेरे मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर भगवती महामाया ने पहले तो भगवान् सदाशिव की ओर देखा, फिर मुझ से यह कहा—''हे ब्रह्मन् ! मैं तुम्हारी पौत्री के रूप में जन्म लूँगी और मेरा नाम सती होगा। जिस समय राजा रक्ष भगवान् सदाशिव का अपमान करेगा, उस समय मैं अन्तर्धान हो जाऊँगी।'' इतना कहकर वे शक्तिस्वरूपा जगदंबा पुनः श्री सदाशिव के शरीर से संयुक्त हो गयीं। तब भगवान् भूतभावन् भी अन्तर्धान हो गये।''

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें वह वृत्तान्त सुनाता हूँ, जिस प्रकार इस मैथुनी सृष्टि की उत्पत्ति हुई। भगवान् सदाशिव से शक्ति प्राप्त कर मैंने एक पुरुष तथा एक स्त्री को अपने आधे-आधे शरीर से उत्पन्न किया। उस पुरुष का नाम 'स्वयंभू मनु' तथा स्त्री का नाम 'शतरूपा' हुआ। शतरूपा ने तपस्या द्वारा मनु को पति रूप में प्राप्त किया। फिर उन दोनों—पुरुष तथा स्त्री ने मेरे पास आकर कहा—'हे पिता ! आप हमें कुछ आज्ञा दीजिए।'' तब मैंने अत्यन्त प्रसन्न हो कर उन्हें यह आज्ञा दी थी कि तुम सर्वप्रथम भगवान् सदाशिव का पूजन करो, तदुपरान्त उनसे आज्ञा पा कर, सृष्टि उत्पन्न करने का कार्य करो।

मेरी आज्ञा को स्वीकार कर उन्होंने ऐसी तपस्या की कि भगवान् सदाशिव ने प्रसन्न हो कर उन्हें अपना दर्शन दिया तथा वरदान माँगने के लिए कहा। उस समय मनु ने उनकी स्तुति करते हुए यह कहा—''हे प्रभो ! अपने मन की इच्छा को आपके सामने प्रगट करना मूर्खता होगी, अतः आप हमारे लिए जो उचित समझें वह करें।'' यह सुनकर भगवान् त्रिशूलपाणि प्रसन्न होकर बोले—''हे मनु ! तुम मनुष्य सृष्टि को उत्पन्न करो। उस सृष्टि कार्य में तुम्हें कोई कष्ट न होगा। तुम्हें तीन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:32 AM

प्रकार के ऋण चुकाने होंगे जिन्हें देवऋण, पितृऋण तथा ऋषिऋण कहते हैं। इन तीनों ऋणों से उऋण होने का उपाय विद्या पढ़ना, संतान उत्पन्न करना तथा यज्ञ करना है। इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव से इस प्रकार वरदान प्राप्त कर मनु तथा शतरूपा मेरे समीप लौट आये और मुझे सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर मैंने भी उनसे कहा—"तुम दोनों सन्तान की उत्पत्ति करो।" मेरी आज्ञा पा कर वे दोनों सृष्टि उत्पन्न करने लगे। सर्वप्रथम उन्होंने दो पुत्र तथा तीन पुत्रियों को उत्पन्न दिया। उनमें एक पुत्र प्रियव्रत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने गृहस्थ आश्रम में प्रवेश कर श्रेष्ठ धर्म का पालन किया। उसकी सन्तान भी अत्यन्त शीलवान् हुई। आगे चलकर उसी के वंश में भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र ने अवतार लिया। मनु के दूसरे पुत्र का नाम उत्तानपाद था। उसके वंश में ध्रुव के समान योगी भक्त का जन्म हुआ। मनु की पहली पुत्री का नाम अनुमति था। उसका विवाह मेरे पुत्र रुचि नामक मुनि के साथ हुआ था। वह पुत्र मुझे अत्यन्त प्रिय था। उसके द्वारा यज्ञ और दीक्षा नामक दो संतानों की उत्पत्ति हुई। मनु की दूसरी पुत्री का नाम देवहूति था। उसका विवाह कद्रम मुनि के साथ हुआ था। उसके गर्भ से भगवान् कपिल देव ने जन्म लिया। कद्रम मुनि के कला, अनुसूया, श्रद्धा, निवर्चा, कर्मागति, शान्ति, अरुन्धती, ख्याति, वर्हती तथा वृहती नामक दस कन्याएँ भी हुईं। इनमें से नौ कन्याएँ मरीच, अत्रि, अंगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, कृतु, भृगु, वशिष्ठ तथा अथर्वण नामक सौ ऋषियों को ब्याही गईं।

मनु की तीसरी पुत्री का नाम प्रसूति था। उसका विवाह दक्ष के साथ हुआ। उन दोनों से आठ कन्याएँ उत्पन्न हुईं। उनमें से दक्ष ने दस कन्याओं का विवाह धर्मराज के साथ कर दिया। सत्ताईस कन्याएँ चन्द्रमा को दीं तथा तेरह कन्याएँ कश्यप को, चार कन्याएँ ताक्ष्र्य को एवं, भूत, अंगिरस् तथा कृशाश्व को दो-दो कन्याएँ ब्याह दीं। उन सबसे बहुत अधिक सन्तानों की उत्पत्ति हुई। उसी के कुल में हम,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

विष्णु जी तथा शिवजी ने जन्म लिया। इस प्रकार अपनी साठों पुत्रियों का विवाह करने के उपरान्त दक्ष ने मेरे पास आकर सब हाल कह सुनाया और यह पूछा कि अब आप मुझे क्या आज्ञा देते हैं। दक्ष की बात सुनकर मैंने उसकी प्रशंसा करते हुए कहा—"हे पुत्र ! अब तुम कोई ऐसा उपाय करो, जिससे तुम्हारी एक पुत्री का विवाह शिवजी के साथ हो सके। ऐसा करने से तुम्हारा जन्म सफल हो जाएगा और हमारी सृष्टि पवित्र हो जाएगी।" मेरी यह आज्ञा सुनकर दक्ष कठिन तपस्या करने के लिए चला गया। उस तपस्या के प्रभाव से आदि शक्ति जगदम्बा ने दक्ष के घर में अवतार ग्रहण किया।"

चौदहवाँ अध्याय

नारद जी ने हँस कर कहा—"हे पिता ! अब आप अपने, विष्णु जी एवं शिवजी के लोकों का वर्णन कीजिए।" यह सुनकर ब्रह्मा जी भगवान् सदाशिव का ध्यान धर कर बोले—"हे पुत्र ! मेरे लोक का नाम सत्यलोक है। इससे ऊपर विष्णु जी तथा शिवजी के लोक हैं, जिन्हें वेद तथा पुराण परमधाम कह कर पुकारते हैं। सत्यलोक के ऊपर वैकुंठलोक है। यह सोलह करोड़ योजन की परिधि में चौकोर बसा हुआ है। उसमें रत्नों से भरे हुए स्वर्ण-मन्दिर, बाग, उपवन, तथा कुएँ आदि सर्वत्र सुशोभित हैं। इसको स्वर्ग भी कहा जाता है।

हे नारद ! अब मैं तुमसे उस लोक का वर्णन करता हूँ, जो स्वर्ग से ऊपर है और जिसे स्वामिकार्तिकेय लोक कहते हैं। वह लोक चौंसठ योजन की परिधि में चौकोर बसा हुआ है। उस लोक के सभी घर रत्नों से भरे हुए हैं। उस लोक के स्वामी स्वामिकार्तिकेय हैं, जिन्होंने तारकासुर का वध कर देवताओं को आनन्द प्रदान किया था। वे भगवान् सदाशिव के पुत्र हो कर, उन्हीं के पद पर विराजमान हैं।

हे नारद ! उस लोक के ऊपर शक्ति लोक है। वहाँ सम्पूर्ण सृष्टि की माता जगदम्बा आदिशक्ति निवास करती हैं। वहाँ इन्द्र आदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

देवता जगन्माता की सेवा करते हुए उनके चरणों का ध्यान धरते रहते हैं। हे पुत्र ! तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि इस सृष्टि के सम्पूर्ण प्राणी उन आदिशक्ति की कृपा से ही ठहरे हुए हैं। वे जगदम्बा भगवान् सदाशिव की अर्द्धाङ्गिनी हैं। उन्हीं के अंश द्वारा मेरी पत्नी ब्रह्माणी, विष्णु जी की अर्द्धाङ्गिनी लक्ष्मी एवं स्वाहा, स्वधा, सिद्धा, विश्वा तथा इन्द्राणी की उत्पत्ति हुई है। वह शक्ति लोक भली-भाँति सजा हुआ है।

हे नारद ! शक्ति लोक के ऊपर शिव लोक है। वहाँ किसी को चिन्ता और मोह नहीं व्यापते हैं। जिस स्थान पर भगवान् सदाशिव का सिंहासन है, वह स्थान परम मनोहर है। शिवजी के बैठने का सिंहासन रत्नों से जड़ा हुआ है। उसके पास ही शिवजी के तथा भगवती आदि शक्ति के अनेक निवास एवं विहार स्थल बने हुए हैं। उस शिव लोक का विस्तार दो सौ छप्पन करोड़ योजन है। उस लोक के बीचों-बीच अत्यन्त सुन्दर, पवित्र तथा सब प्रकार की चिन्ताओं को नष्ट करने वाला भूतभावन् का मुख्य निवास स्थल बना हुआ है। उन त्रिशूलपाणि शिवजी द्वारा ही मेरी, विष्णु जी की तथा रुद्र की उत्पत्ति हुई है। वे सबके स्वामी, स्वाधीन तथा एकरूप हैं। उसी शिव लोक में शिवजी की श्रेष्ठ गोशाला बनी हुई है, जिसे गोलोक कह कर पुकारा जाता है। उसके स्वामी श्रीकृष्ण जी तथा श्रीराधिका जी हैं।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

सूत जी ने कहा—''हे ऋषियो ! ब्रह्मा जी के वचन सुनकर, नारद जी अत्यन्त प्रसन्न हो, प्रेम एवं सुखरूपी समुद्र में गोते लगाने लगे। फिर प्रेमपूर्वक इस प्रकार बोले—''हे ब्रह्मा जी ! आपने जो शिव लोक को सर्वोच्च स्थान देकर उसका वर्णन किया, उसे सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है, परन्तु मेरे मन में एक सन्देह उत्पन्न हुआ है। मैंने सुना था कि शिवजी का स्थान कैलाश पर्वत पर है तथा जो शिवपुरी में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

जाता है उस कैलाश की प्राप्ति होती है, न किसी अन्य स्थान की। इसलिए आप मुझे यह बताइए कि जो शिवजी कैलाश में निवास करते हैं क्या वे वही शिवजी हैं, जिनका कि आप वर्णन करते हैं अथवा कोई दूसरे हैं?"

नारद जी का यह प्रश्न सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुम्हें सब हाल विस्तारपूर्वक बताता हूँ। जो परमब्रह्म सगुणरूप शंकर हैं और उनकी इच्छा से शक्ति द्वारा शिवानी हुई, वे ही ब्रह्मशिव अपनी शक्ति द्वारा संसार की सृष्टि करते हैं। मैं उनके लोक काशी, ब्रह्मपुर तथा आनन्दवन का वर्णन कर चुका हूँ। अब अपनी शंका का समाधान सुनो। जब मैं शिवजी की आज्ञानुसार सृष्टि उत्पन्न कर चुका तब मैंने उन महाप्रभु से प्रार्थना की कि, "हे प्रभु अब आप भी सगुणरूप अंगीकार करके आइए।" यह सुनकर शिवजी बोले "हे ब्रह्मा ! हम नियत समय पर अवश्य ही आयेंगे। जिस प्रकार तुम हमारे नाम आदि देखते हो तथा जैसे हम हैं वह सब अपने अवतार में प्रकट करेंगे।" शिवजी यह कह कर अन्तर्धान हो गये। इसके पश्चात् शिवजी निश्चित समय पर प्रकट हो कर मेरी इच्छा की पूर्ति के लिए कैलाश पर्वत पर उपस्थित हुए तथा गौरी जी को अपने से पृथक करके स्वयं कठिन तपस्या करते हुए त्रैलोक्य का पालन करने लगे। अब मैं उस कथा का विस्तार से वर्णन करता हूँ, जिस कारण शिवजी कैलाश पर्वत पर आये। जिस कथा का अब मैं वर्णन करता हूँ, वह कल्पभेद के कारण दूसरे प्रकार से है, अर्थात् मैंने शिवजी की आज्ञानुसार संसार को उपजाया और चौदह लोक उपलोक, द्रुपदपुरी एवं कपिला को, जिन्हें देखने से मन प्रसन्न होता है तथा जहाँ काली मृत्यु रूप से बैठी है, प्रकट किया। पापनाशिनी गंगा के तट पर पापों को हरने वाला कपिल मुनी का पवित्र आश्रम था। उसी स्थान पर यज्ञदत्त नाम के दो ब्राह्मणों का जन्म हुआ। यज्ञदत्त यज्ञशास्त्र में बहुत ही योग्य था। उसको वहाँ के राजा ने बहुत-सा धन दिया। वह वाग्मी, शुद्ध हृदय, शीलवान् वेदों में निपुण, परम उपकारी, उदार तथा शिवजी का परम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

भक्त था। उसकी स्त्री अत्यन्त पवित्र, पतिव्रता, गृहकार्य में निपुण तथा अच्छे कार्यों को करने वाली थी। कुछ समय पश्चात् उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम उन्होंने गुणनिधि रखा। गुणनिधि ने थोड़े ही दिन में अनेक विद्याएँ सीख लीं; परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् वह कुल की रीति छोड़ कर, बुरी नीति पर चलने लगा। उसने बुरे मनुष्यों की संगति की। उसी के फलस्वरूप उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी, क्योंकि अच्छे और बुरे कर्मों पर संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

गुणनिधि उस अज्ञान-अवस्था में बुरे लोगों के सम्पर्क में आया-जाया करता था। धीरे-धीरे उसके सब धर्म नष्ट होने लगे। वह वेदों के विपरीत कर्म करने लगा। वह बड़ा छली तथा जुआरी हो गया। उसकी माता उसको नित्य भले-भले उपदेश देती, परन्तु वह पिता के निकट कभी न जाता। जिस समय उसकी माता गृह-कार्य में संलग्न रहती, वह घर की चीजें चुरा कर ले जाता। एक बार उसके पिता ने पूछा कि गुणनिधि कहाँ गया? तब माता ने उत्तर दिया कि वह स्नान, पूजन तथा भोजन आदि से निवृत्त हो कर, अपने मित्र विद्यार्थियों के साथ पाठशाला चला गया है। इस प्रकार उसकी माता ने उसके पिता से उसके अवगुण को छिपाया।''

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब भी गुणनिधि का पिता अपनी पत्नी से पुत्र के विषय में पूछता वह इसी प्रकार टाल दिया करती थी। इस प्रकार यज्ञदत्त अपने पुत्र के अवगुणों को न जान सका और वह बहुत दिनों तक इसी प्रकार दुष्कर्म करता रहा। जब उसकी अवस्था सोलह वर्ष की हुई तब उसका विवाह कर दिया गया। पत्नी भी पतिव्रता, शीलवती एवं सर्वगुणसंपन्न मिली।

गुणनिधि को ऐसी पवित्र पतिव्रता पत्नी प्राप्त हुई, फिर भी वह अपनी कुसंगति एवं दुष्कर्मों को न त्याग सका। उसकी माता सदैव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

सदुपदेश देती तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की कथाओं द्वारा उत्तमोत्तम दृष्टान्त देती हुई कहती 'हे गुणनिधि तुम्हीं हमारे एक मात्र पुत्र हो, इसलिए इन दुष्कर्मों को त्याग दो। तुम्हारे पिता अत्यन्त क्रोधी प्रकृति के हैं। वह अभी तुम्हारे अवगुणों को नहीं जानते हैं, क्योंकि मैंने बहुत पूछने पर भी उन्हें नहीं बताया है। इसीलिए तुम अभी तक उनसे निर्भय हो। यदि किसी दिन उन्हें इन कर्मों का पता लग गया तो वे मुझे और तुम्हें दोनों को दंड देंगे। इससे यही उत्तम है कि उन्हें पता लगने से पहले ही तुम कुसंगति को त्याग कर, सत्कर्म करो। हे पुत्र ! तुम्हारी पत्नी बुद्धिमान् महारूपवती तथा उच्च कुल की है। उसी प्रकार तुम भी गुणवान् तथा उच्च कुल के हो। ऐसी पत्नी के साथ सुख से अपना जीवन व्यतीत करो। अपनी स्त्री का त्याग करना महापाप है। तुम पिता के धर्म पर चलो, नहीं तो सारा संसार तुमको बुरी दृष्टि से देखेगा। तुम मुझको तथा अपने पिता को क्यों लज्जित करते हो? तुम अन्य घरों के लड़कों को देखो, वे नित्य वेदपाठ करते हैं। जब यहाँ के राजा को तुम्हारे अवगुणों के विषय में ज्ञात होगा तो वह तुम्हारे पिता से अप्रसन्न हो कर उनका मासिक शुल्क देना बन्द कर देगा। अभी तो लोग यह कह कर टाल देते हैं कि तुम यह अवगुण के कर्म लड़कपन के कारण करते हो, परन्तु अवस्था बढ़ जाने पर सब लोग तुम पर हँसेंगे तथा व्यंग्यपूर्ण तानों से कहेंगे कि अब तुम्हारा कुल अति अपवित्र हुआ। वे तुम्हारे पिता की निन्दा करेंगे और इन्हीं सब कारणों से तुम्हारे पिता नरकगामी होंगे। सब लोग इसका दोषी मुझी को ठहरावेंगे। वे कहेंगे कि इसी ने पाप-कर्म से गर्भ धारण कर ऐसा पुत्र उत्पन्न किया है, क्योंकि तुम्हारें पिता निष्पाप हैं। वे वेद एवं धर्मशास्त्र के ज्ञाता हैं। मैं भी अपने पति के सिवाय और किसी पुरुष को नहीं जानती तथा निष्पाप हो कर गृह कार्य में संलग्न रहती हूँ। परन्तु यह सब भगवान् की इच्छा है कि मेरे गर्भ से तुम जैसा दुख देने वाला कुपुत्र उत्पन्न हुआ है?'' इस प्रकार गुणनिधि की माता अनेक उपदेश देती, भिन्न-भिन्न प्रकार से समझाती, परन्तु गुणनिधि पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! गुणनिधि को यदि मेरे समान भी कोई गुरु मिलता तो भी उस मूर्ख के मन में बुद्धि उत्पन्न न होती। गुणनिधि की माता उपदेश करते-करते थक गयी। परन्तु गुणनिधि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह सदैव जुआ खेलता, चोरी करता, मद्यपान करता, और वेश्याओं के साथ भोग करने में अपना समय व्यतीत करता था। इस प्रकार उसने कुछ ही दिनों में पिता का धन चुरा कर जुआ, भोग तथा वेश्याओं पर खर्च कर डाला। इस प्रकार वह निर्धन हो गया। उसके पिता ने जितने बहुमूल्य रत्न एवं उत्तम वस्त्र, अपनी विद्या के प्रभाव से राजा के यहाँ से प्राप्त किये थे, उनमें से कुछ भी शेष न बचा। तब एक दिन गुणनिधि ने अपनी माता को पूरी तरह निद्रा में लिप्त देख कर, उसके हाथ में से अँगूठी उतार ली और उसको जुआरियों के साथ दाँव पर लगा दिया। जुआरियों ने उस अँगूठी को भी जीत लिया। एक दिन अकस्मात् उसके पिता यज्ञदत्त ने उस अँगूठी को एक जुआरी के पास देख कर पहचान लिया। उन्होंने उस जुआरी को एकान्त में ले जा कर पूछा कि तुमने यह अँगूठी कहाँ से प्राप्त की है? उस जुआरी ने उत्तर दिया "यह अँगूठी तथा इसी प्रकार की अनेक अँगूठियाँ मेरे पिता के घर में हैं। जान पड़ता है, पराया धन देख कर तुम ललचाते हो। भला, तुमने ऐसी चतुराई किससे सीखी है?" तब यज्ञदत्त ने क्रोधित हो कर उससे कहा—"अब तुम हँसी छोड़ कर तथा छल आदि को त्याग कर इस अँगूठी के विषय में सत्य-सत्य बता दो कि यह तुमने कहाँ से प्राप्त की है? मैंने इसे राजा से प्राप्त किया है अतः तुम इसे नहीं ले सकते। इस प्रकार जब उन्होंने दृढ़ता से जुआरी से पूछा तो उसने सब सत्य-बात उनको बता दी और कहा—"तुम मुझको डराते-धमकाते क्यों हो, मैंने कोई चोरी नहीं की है। यही क्या, और भी बहुत-सी वस्तुएँ मैंने तुम्हारे लड़के से जुए में जीती हैं। अनेक रत्न, सोने-चाँदी के आभूषण, पीतल-ताँबे आदि के बर्तन जो तुम्हारे घर में थे, हम लोगों ने वे सब तुम्हारे लड़के से जीत लिये हैं। वह केल जुआ ही नहीं खेलता, अपितु, चोरी तथा वेश्या-गमन भी करता है।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

जुआरी के ऐसे वचन सुन कर यज्ञदत्त को बहुत आश्चर्य हुआ। वे कपड़े से अपना मुँह लपेटे शोक से रुदन करते हुए, अपने घर आये तथा स्त्री से बोले—"गुणनिधि कहाँ है तथा मेरी अँगूठी कहाँ है?" उनकी स्त्री ने यह सुन कर भयभीत हो, बड़ी चतुराई से उत्तर दिया" इस समय मैं अनेक कार्यों में व्यस्त हूँ। तुम्हारा भी पूजा-पाठ का समय है। मुझे तुम्हारे प्रेमी अतिथियों का भोजन बनाना है। मैंने अँगूठी को किसी स्थान पर रख दिया है, परन्तु इस समय स्मरण नहीं है। जिस समय इन कार्यों से अवकाश पाऊँगी, उस समय तुम्हारी अँगूठी खोज कर दे दूँगी।" यज्ञदत्त यह सुन क्रोधित हो कर बोले—"हे कपूत की माँ ! छल वार्ता में चतुर ! मैंने जिस दिन भी तुम से यह पूछा कि गुणनिधि कहाँ है, तभी तुमने यह उत्तर दिया है कि यह अपने साथियों सहित विद्याध्ययन के लिए पाठशाला गया है। अच्छा, यदि अँगूठी नहीं मिलती तो अन्य वस्तुएँ मुझे ला कर दिखाओ। अब तुम पुत्र-मोह को त्याग दो, क्योंकि कुपुत्र किसी प्रकार का सुख नहीं पहुँचा सकता। अब मेरी इच्छा बिना पुत्र के रहने की है। मुझे ऐसी सन्तान की आवश्यकता नहीं है। अब तुमको यही उचित है कि हाथ में कुश एवं जल-लेकर लड़के के नाम तिलाजंलि छोड़ो। जब तक मैं यह न कर लूँगा, तब तक भोजन ग्रहण न करूँगा।" गुणनिधि की माता अपने स्वामी के ऐसे वचन सुनकर, उनके चरणों पर गिर पड़ी तथा क्षमा प्रार्थना करने लगी। कुछ देर के पश्चात् यज्ञदत्त का क्रोध भी कम हो गया।"

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद जब गुणनिधि ने यह बात सुनी तब वह चिन्ता और शोकयुक्त हो कर अपने को भाग्यहीन समझने लगा। वह रो-रो कर कहने लगा—"हाय-हाय, हे मेरी सहायक माता ! अब मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ? इस समय मुझको कुछ नहीं सूझ पड़ता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:33 AM

मुझे धिक्कार है। गुणनिधि यह कह कर पिता के भय से भयभीत हो, रोता हुआ घर से भाग गया। वह कुछ समय में ही मार्ग के परिश्रम से थक कर तथा शोक-सागर में डूब कर, हाय-हाय करता हुआ रुदन करने लगा। रोते-रोते वह कहा—"हे मेरी माता ! मैं अब कहाँ जाऊँ और क्या करूँ? मुझे कोई उपाय नहीं सूझता। मैं विद्या से हीन हूँ, जो मुझको इस समय में लाभदायक होती। मैंने धन का संग्रह भी तो नहीं किया, जिससे विद्वान् एवं बुद्धिमान् लोग सुख से जीवन व्यतीत करते हैं। अब तो मैं भिक्षा माँगने के योग्य भी नहीं रहा हूँ। प्रातःकाल जब मैं सोकर उठता था तो मेरी माँ मुझे बड़े स्नेह से भोजन देती थी, परन्तु अब उस माता को मैं कहाँ पाऊँ? क्या करूँ तथा कहाँ जाऊँ?"

गुणनिधि इस प्रकार भयभीत हो रुदन करते-करते अचेत हो कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। सूर्यास्त का समय हो गया। कुछ समय पश्चात् वह सचेत हो कर पुनः इसी चिन्ता में डूबा हुआ था कि इतने में एक शिव भक्त पुरुष शिवजी की पूजा के लिए उधर से निकला। उसके पास पूजन के लिए अनेक प्रकार की सामग्री तथा शिवजी के लिए भाँति-भाँति के नैवेद्य थे। उसके साथ कुछ अन्य शिव भक्त भी थे। उस दिन शिवरात्रि थी, जिसमें मनुष्य व्रत करके मुक्ति प्राप्त करते हैं। यह शिवरात्रि सब व्रतों में श्रेष्ठ, अत्यन्त सुखदायक स्वयं शिवजी को अतिप्रिय है। मूर्ख भी इस व्रत को करके अपने मनोरथ सिद्ध कर चुके हैं। जिस प्रकार शिवजी समस्त देवताओं को सुख प्रदान करते हैं, उसी प्रकार यह व्रत भी मनुष्यों को सुख प्रदान कर इस अपार संसार के ऋणों तथा बन्धनों से मुक्त कर देता है। ऐसे परम शिवरात्रि व्रत को रखे हुए वे मनुष्य शिवालय में चले गये। जो पुरुष अनेक प्रकार के नैवेद्य एवं व्यंजन अपने साथ लाया था, उसकी सुगन्धि पा कर गुणनिधि जो बहुत भूखा था विचार करने लगा कि रात्रि के समय जब ये लोग शिवजी को अप्रण करेंगे तथा सो जावेंगे, उस समय मैं इस सुगन्धित भोजन को वहाँ से उठा लूँगा। गुणनिधि अपने मन में यह विचार कर, उन्हीं लोगों के साथ चल दिया तथा शिवालय के ऊपर जा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कर ठहर गया। शिव भक्त ने सच्चे हृदय से अनेक प्रकार से शिवजी की पूजा की। फिर वह भक्ति में खो कर नृत्य करने लगा। गुणनिधि ऊपर से यह सब देखता रहा। वह अपने मन में कहता था कि यदि इनकी दृष्टि क्षीण हो जाए तो मैं अपना काम करूँ। कुछ समय पश्चात् वे सब शिव भक्त, ऊँघ गये। तब गुणनिधि सबको निद्रावस्था में देख कर शीघ्र ही शिवालय में जा कर धीरे-धीरे दबे पाँव नैवेद्य के पास जा पहुँचा। अँधेरा होने के कारण उसने प्रकाश करने के निमित्त धीरे से अपना वस्त्र फाड़ कर बत्ती बनायी और उसको जलाया। उसके प्रकाश में सब व्यंजन उठा लिये तथा उन्हें लेकर वहाँ से वह प्रसन्नतापूर्वक शीघ्र ही बाहर निकल गया, परन्तु चलते समय उसका एक पैर लेटे हुए किसी शिव भक्त के लग गया, जिससे वह उसी क्षण उठ कर चिल्लाया तथा कहने लगा कि यह कौन चोर भागा जाता है, इसे पकड़ो। नगर के रक्षक उस आवाज को सुनकर आ गये तथा गुणनिधि को लक्ष्य कर, उन्होंने बाण छोड़ दिया, जिससे आहत हो कर वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। क्षण भर में वहीं उसकी मृत्यु भी हो गयी। अस्तु, तब यमदूत पहुँच कर मुगदर आदि भयंकर शस्त्र गुणनिधि को दिखाते हुए उसे पापी जान कर बाँधने लगे, परन्तु उसी समय शिवजी ने अपने गणों से कहा—''यद्यपि गुणनिधि ने अनेक पाप किया है; परन्तु वह शिवरात्रि का व्रत रख कर न तो रात्रि भर सोया है और न उसने हमारा निर्माल्य ही खाया है। नगर के रक्षकों द्वारा उसकी मृत्यु हुई है। इस समय उसको यमदूत बाँध रहे हैं, अतः मेरा आदेश है कि तुम यमदूतों से गुणनिधि को मुक्त करके मेरे लोक में ले आओ; क्योंकि मैंने उसको अपना लिया है। अब वह नरकगामी न होगा। मुझको शिवरात्रि व्रत अत्यन्त प्रिय है। अस्तु, अब गुणनिधि कलिंग देश का राजा हो कर मेरा परम भक्त होगा।''

शिवजी के आदेशानुसार उनके गण गुणनिधि के पास जा पहुँचे। उनके हाथों में त्रिशूल थे। यमराज के गण उन्हें देख कर बहुत भयभीत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:34 AM

हो गये। शिवगणों ने उनसे कहा—''तुम कौन हो, जो इस निष्पाप व्यक्ति को बाँध रहे हो?'' यमदूत यह सुन कर आश्चर्य के साथ कहने लगे—''तुम कौन हो, जो यम की अवज्ञा करके ऐसे पापी को छुड़ाते हो? भला तुम किसकी शक्ति पर इतने प्रबल हो रहे हो?'' तब शिवगणों ने यह उत्तर दिया कि हम उन शिवजी के गण हैं, जिनका ध्यान ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी देवता करते हैं। तुम इसको छोड़ दो।'' यमगणों ने कहा—तुम्हारी आज्ञा उचित है, परन्तु इसके पापों का विचार न कर तुम इसे क्यों छुड़ा रहे हो? इसने अपने कुल की रीति को त्यागा है तथा वेद का अपमान किया है। हम इसकी मूर्खता को कहाँ तक कहें? यह सब पापियों का सिरमौर है। सबसे बड़ा पाप जो इसने किया, वह यह है कि शिव-निर्माल्य चोरी करके ले भागा और खाने लगा। यह तो तुम भी देखे होगे। तुम यह भी भली-भांति जानते होगे कि जो कोई शिव-निर्माल्य ग्रहण करता है, उसको ऊपर से लाँघ जाता है अथवा किसी को देता है वह नरकगामी होता है। शिवजी पर चढ़ी वस्तु खाने की अपेक्षा, विष पीना कहीं अच्छा है, परन्तु इस संसार में तो धर्म रखना ही बहुत कठिन हो गया है।

शिवगणों ने यमगणों के मुख से यह शब्द सुन कर उत्तर दिया—''हे यमदूतो ! यह ब्राह्मण पुत्र निष्पाप हो चुका है। इसने सबसे बड़ा धर्म यह किया है कि इसने शिव-मन्दिर में जा कर अपना वस्त्र फाड़ा तथा उससे दिया जला कर प्रकाश किया। दूसरा बड़ा धर्म यह किया है कि शिवरात्रि को रात्रि दिन व्रत कर रात्रि भर जागरण किया, शिवजी का पूजन देखता रहा और उनके नाम श्रवण करता रहा। यद्यपि यह धर्म इससे अचानक ही हुआ, परन्तु इसको पुण्य लाभ हुआ है। अब यह भविष्य में कलिंग देश का राजा हो कर शिवजी का पूजन करेगा। ''यह कह कर शिवजी के गण गुणनिधि को मुक्त कर, अदृश्य हो गये।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:34 AM

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शिवगणों के ऐसे वचन सुन कर यमदूत लज्जित हो कर यम के पास गये तथा उन्हें सब हाल विस्तारपूर्वक कह सुनाया। यम को भी यह सुन कर आश्चर्य हुआ। फिर यम ने शिवजी को दंडवत् कर, अपने गणों को तीनों लोकों में फिरने का आदेश देते हुए यह कहा कि जो मनुष्य देह में भस्म लगाये हो, रुद्राक्ष धारण किये हो, शिवलिंग का पूजन करता हो, एवं आराधन में डूबा हो अथवा छल से भी शिवजी का बान तथा वस्त्र धारण किये हो, तथा उसका शिवजी से किसी प्रकार भी संबन्ध हो तो तुम उसको मुक्त कर देना, और कोई कष्ट मत देना। यमराज ने शिवजी की स्तुति करते हुए कहा—"हे सदाशिव ! आप मेरे पापों को क्षमा कीजिए, क्योंकि यह अपराध मुझसे अज्ञान में ही हुआ है।" इस प्रकार बहुत स्तुति करने के पश्चात् यमराज चुप हो गये।

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! गुणनिधि यमगणों से मुक्ति पा कर, विमान पर आरूढ़ हो, शिवलोक को चला गया। बहुत समय तक स्वर्ग में अनेक प्रकार के सुख भोग कर, वह कलिंग देश का राजा हुआ। वहाँ के पहले राजा का नाम इन्द्रमुनि था। गुणनिधि ने उसी के यहाँ जन्म लिया तथा कद्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह शिवजी का अनन्य भक्त था। इन्द्रमुनि अपने पुत्र में राजा के समस्त लक्षण देख, अपना सम्पूर्ण राज्य उसको सौंप रानी सहित वन में जा कर, शिवजी की कठिन तपस्या करके, शिवलोक को प्राप्त हुआ। कद्रम को पूर्व जन्म का स्मरण था, इसलिए वह समस्त शिवालयों में दीपदान करने लगा। उसने प्रत्येक मंडलेश्वर को आदेश दिया कि जितने भी शिवालय हों, वहाँ दीपक जलाये जाएँ और जो इस आज्ञा का उल्लंघन करे, उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाए। गाँव के स्वामी इस भय से दीपदान करने लगे। वह स्वयं भी बड़े हर्ष के साथ इस कार्य को करता रहा। उसने अपनी नीति द्वारा जनता को प्रसन्न रखा। वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:34 AM

जीवन भर शिवजी के दीपदान से अचेत न रहा। जब उसकी मृत्यु हुई, तब उस पुण्य से वह शिवलोक को प्राप्त हुआ। उसने शिवलोक में अनेक प्रकार के आनन्द एवं सुख भोगे तथा शिव चरणों का ध्यान धरता रहा। इसके पश्चात् उसने मृत्युलोक में जन्म लिया।''

ब्रह्मा जी कहते हैं—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें अपने लड़के पुलस्त्य के पुत्र का हाल सुनाता हूँ। मेरे पुत्र पुलस्त्य के विश्रवा नाम का एक पुत्र हुआ। विश्रवा के तीन स्त्रियाँ थीं। वे तीनों ही विष्णु तथा शिव की भक्त थीं। विश्रवा की सबसे छोटी पत्नी से विभीषण नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। विभीषण विष्णु का ऐसा भक्त हुआ कि वह इस अथाह संसार सागर से पार हो गया। विश्रवा की मँझली पत्नी से दो पुत्र रावण तथा कुम्भकर्ण, तुम्हारे शाप के फलस्वरूप उत्पन्न हुए। वे दोनों ही शिव के भक्त बन कर, अनेक प्रकार के संसारी भोग-विलासों में लिप्त हो गये। उनमें से रावण ने शिवजी की कठिन तपस्या कर, उनसे वरदान प्राप्त किया। उसने तेज एवं प्रताप से संसार भर में राज्य किया। विष्णु भगवान् ने उसका नाश करने के लिए स्वयं द्विभुज मानव अवतार लिया था, जिनका नाम राम हुआ, परन्तु वे रावण का नाश न कर सके। तब उन्होंने शिवजी की आराधना कर, अपने कठिन तप से उनको प्रसन्न किया और शिव के अवतार अर्थात् श्री हनुमान जी को साथ लेकर बानरों की सहायता से रावण-वध किया तथा उसके वंश को ही मिटा डाला। विश्रवा की सबसे बड़ी पत्नी का नाम षटतिला था। उसके उदर से गुणनिधि का जन्म हुआ था, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। विश्रवा ने पहले लंका में रह कर जो उचित था, वह किया; फिर काशी में आ कर घोर तपस्या की, जिससे शिवजी उस पर अत्यन्त प्रसन्न हुए। शिवजी का वरदान पा कर वह अलकापुरी का राजा हुआ तथा दिक्पति के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसे राज्य करते हुए एक कल्प व्यतीत हुआ। जब धनवान् कल्प का आरंभ हुआ उस समय विश्रवा ने तपस्या आरंभ की। उसने दीपदान की सम्पूर्ण विधि कठंस्थ करके, उसमें बहुत ध्यान लगाया। अस्तु, वह काशी में कठिन तपस्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:34 AM

करने लगा और हृदय के नेत्र खोल कर उसने शिवजी के दर्शन प्राप्त किए। अपने हृदय को ब्रह्मज्ञान से पूर्ण कर, उसने मन को शान्त कर लिया और उसी स्थान पर शिवलिंग की स्थापना करके षोडशोपचार द्वारा उसकी पूजा की। पूजा करते-करते विश्रवा के शरीर का रक्त एवं माँस सूख गया, केवल चर्म तथा हड्डियाँ ही शेष रह गयीं। ऐसी कठोर तपस्या करते-करते सौ करोड़ वर्ष समाप्त हो गये। उसकी ऐसी कठिन तपस्या को देख कर शिवजी पार्वती सहित विश्रवा के पास पहुँचे और वर माँगने के लिए कहने लगे।''

उन्नीसवाँ अध्याय

शिवजी ने विश्रवा से कहा—''अब इस तपस्या को छोड़ कर अपनी इच्छानुसार वर माँग लो।'' यद्यपि यह शब्द सदाशिव ने उच्च स्वर से कहे थे, परन्तु विश्रवा ध्यान मग्न होने के कारण, शिवजी के शब्दों को नहीं सुन सका। तब शिवजी ने उसके हृदय से अपनी मूर्ति हटा ली। दिक्पति ने उस समय आश्चर्यचकित हो कर जब अपने नेत्र खोले तो देखा कि शिवजी अपने पूर्व रूप से, जैसा कि वह सुन चुका था, सम्मुख खड़े हुए हैं। उनके वामांग में पार्वती खड़ी थीं। यह देख कर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ, परन्तु अत्यन्त प्रकाशवान् तेज को देखने की शक्ति न होने के कारण उसने अपने नेत्र बन्द कर लिये। फिर इस प्रकार कहा—''हे नाथ ! मुझे आप अपने चरण दिखा दीजिए तथा ऐसी शक्ति दीजिए जिससे मैं आपके दर्शन कर सकूँ। मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता; क्योंकि संसार में इससे अधिक और कोई पदार्थ नहीं है।'' दिक्पति यह कह कर चुप हो गया। शिवजी उसके वचनों को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने दिक्पति को अपने स्वरूप का दर्शन प्राप्त करने की शक्ति प्रदान की तथा अपने हाथों से उसके हाथ पकड़ लिये। सर्वप्रथम दिक्पति ने नेत्र खोलते ही शिवरानी को देखा और कहा—ये देवी कौन हैं? इनका बड़ा सौभाग्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है जो ये शिवजी के इतने निकट रहती हैं। इनके पुण्य, प्रेम, और, तथा माता-पिता को धन्य है। उसने यह बात बारम्बार कही, तथा शिवरानी को प्रत्यक्ष कुदृष्टि से देखा। इससे उसकी आँखें तुरन्त फूट गयीं। उस समय देवी ने क्रोधित हो कर कहा—"यह तपस्वी कुदृष्टि रखने वाला है इसी से इसे कष्ट मिला है। यह ऐसे व्यंग्य वचन कह कर, मुझे अपनी स्त्री के समान देखता है।"

शिवरानी बोलीं—"हे शिव ! यह आपका कैसा भक्त है?" यह वचन सुन कर शिव जी हँसते हुए बोले—"हे देवी ! इसने छल का त्याग कर ऐसा तप किया है, जो प्रत्यक्ष है। तुमको मेरे साथ देख कर, तुम्हारे भाग्य को अपने से अधिक जान कर इसने सराहना की है, यह कुदृष्टि से नहीं देखता।" इसके पश्चात् शिवजी दिक्पति से बोले—"तुम्हारी जो इच्छा हो; माँग लो। हमारे आशीर्वाद से तुम समस्त निधियों एवं सम्पूर्ण राजाओं के स्वामी होंगे। तुम्हारे अधीन विद्याधर, यज्ञ तथा किन्नर रहेंगे। तुम्हारी जो गुप्त इच्छा है, हम उसे भी जानते हैं। अस्तु, हम मित्र हो कर तुम्हारे ही निकट रहेंगे अर्थात् कैलाश पर्वत पर निवास कर, तुमसे अत्यन्त प्रेम रखेंगे और तुम्हारी हर कठिनाई को दूर करते रहेंगे। अब तुम शिवरानी के चरणों पर गिर कर इनसे क्षमा माँगो; क्योंकि ये तुम्हारी माता हैं। इस प्रकार ये प्रसन्न हो कर अपना क्रोध शान्त कर लेंगी। शिवजी की आज्ञा सुन कर विश्रवा शिवरानी के चरणों पर गिर पड़ा। तब शिवजी शिवरानी से बोले—"हे देवि ! यह तुम्हारा परम भक्त है। तुम इसके ऊपर कृपा करो और इसको अपना सेवक समझो।" शिवजी की ऐसी बातें सुन कर शिवरानी ने अपना क्रोध शान्त कर लिया तथा दिक्पाल से कहा—"अब तुम हमारे पुत्र हुए, इसलिए तुम्हारे मन में शिव जी की भक्ति सदैव बनी रहेगी। तुमको शिवजी ने जो वरदान दिया है, वह सत्य है। तुम मेरे स्वरूप की इच्छा करके, अपने मन में भय नहीं लाये इससे तुम्हारा नाम कुबेर होगा। तुमने जिस शिवलिंग की स्थापना की है वह सिद्धि प्रदान करने वाला हो कर तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगा। वह सम्पूर्ण पापों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

को नष्ट करके मुक्ति देगा। जो कुबेरेश्वर महादेव के दर्शन करेगा, वह थोड़ी-सी भक्ति में भी तपस्या का फल प्राप्त कर लेगा।'' यह कुबेरेश्वर महादेव विश्वेश्वर के दाहिने ओर हैं, जिनकी पूजा करके लोग अत्यन्त आनन्द प्राप्त करते हैं।

शिव और शिवरानी दिक्पति को यह वर देकर तथा यह कह कर कि 'हमारे आने की प्रतिक्षा करना' अन्तर्धान हो गये। दिक्पति भी अपने घर को लौट आया। शिवजी की कृपा से उसने बहुत धन प्राप्त किया। फिर वह अलकापुरी का राजा हो कर तथा शिवमित्र उपनाम पा कर, शिव का कोषाध्यक्ष हुआ। तब से वह सदैव शिव की भक्ति में सलंग्न रहता है। अलकापुरी इतनी सुन्दर है, जिसको देख कर मनुष्य का मन मोहित हो जाता है। हे नारद ! मैंने तुम्हें यह विश्रवा की कथा यह सुनायी कि इसने किस प्रकार शिवजी से वरदान प्राप्त किया। तीनों लोकों में शिव के समान दयालु कोई नहीं है।''

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—'हे नारद ! दिक्पति को वरदान देकर जब शिवजी अन्तर्धान हो गये, तब उन्होंने मन में सोचा कि हमने दिक्पति को अपना मित्र बनाया है, सो अब किस प्रकार उसके यहाँ जा कर, मनुष्य की भलाई के लिए कोई उपाय करें? हमने पहले भी यह विचार किया था कि अब हम कुबेर के मित्र हो कर उसके पास निवास करेंगे। हमारा मुख्य स्वरूप तो परब्रह्म रूप है, इसलिए उस स्वरूप तथा इस स्वरूप में जो हम अब उसके यहाँ धारण करके जाएँगे, कोई अन्तर नहीं होगा। जो व्यक्ति इनमें अन्तर या द्वैतभाव समझेगा, वह दुःख प्राप्त करेगा। ब्रह्मा, विष्णु आदि द्वारा जो स्वरूप पूजा जाता है उसी रूप एवं नाम से हम वहाँ वास कर कुबेर के साथ मित्रता स्थापित करेंगे। शिवरानी ने अब तक अवतार नहीं लिया है। अकेले हमने अवतार लिया है, इसलिए अब पहले अकेले हम हीं लोग कठिन तप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:34 AM

करके वहाँ निवास करते हुए भक्तों को मुक्त तथा कुमार्गियों को नष्ट करेंगे। कुछ समय इसी प्रकार अपना रूप देखने के पश्चात् शक्ति भी अवतरित होंगी तथा संसार की रीति के अनुसार वे हमारी पत्नी होंगी, तब उस दशा में हम गृहस्थ हो कर अनेक प्रकार के भोग-विहार भी करेंगे।

ऐसा विचार कर शिवजी ने आगे चलने का प्रयत्न कर अपना डमरू बजा दिया। उसके शब्द से तीनों लोक पूरित हो गये। तब सब लोग उसी शब्द की ओर चल दिये। विष्णु गरुड़ पर तथा मैं हँस पर चढ़ चला। सनकादिक मुनि, सिद्ध देवता, वेद, धर्म शास्त्र, पुराण, तुम, अन्य मुनि तथा सर्पों के यूथप उस शब्द को लक्ष्य करके चल दिये। शिव के गण प्रथम भी उसी ओर चले। सब लोग परस्पर यह कह रहे थे कि क्या कारण है जो आज डमरू बजाया गया है? आज किसके भाग्य उदय हुए? हमारा भी सौभाग्य है कि हम शिवजी के शुभ चरणों के दर्शन प्राप्त करेंगे। सब लोग इसी प्रकार की बातें करते हुए शिवजी के पास जा पहुँचे और उन्हें दण्डवत् प्रणाम करने के पश्चात् हाथ जोड़ कर स्तुति करने लगे। शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न हो, विष्णु का हाथ पकड़ कर उन्हें अपनी बायीं ओर बैठा लिया तथा दाहिनी ओर मुझे स्थान दिया। इसके पश्चात् कुशलक्षेम पूछ कर मुझे अति प्रतिष्ठित किया। उन्होंने हाथ के संकेत से सूर्य का आदर किया तथा उन मुनियों को, जो अमर हैं देख कर अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की।

शिवगण शिवजी की इच्छा समझ कर स्वयं ही अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। इस प्रकार वहाँ बहुत-से लोग एकत्र हो गये तथा एक वृहत् उत्सव का आयोजन हुआ। फिर शिवजी ने कुबेर का मनोरथ पूरा करने के लिए कैलाश जाने का उद्योग किया। उस समय जब देवता तथा गण भी उनके साथ चलने की इच्छा से उठ खड़े हुए। विष्णु जी, नन्द एवं सुनन्द नामक दोनों गणों सहित उठ खड़े हुए। इसी प्रकार वेद तथा सनकादिक भी उद्यत हुए। इन्द्र तैंतीस कोटि अमर देवताओं के साथ खड़े हुए। इस प्रकार उस स्थान पर ग्यारहों रुद्र, अपने गणों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:35 AM

सहित बारहों सूर्य, आठों वसु, तेरह विश्वेदेवा, सत्ताईस नक्षत्र, बारह भक्त, चौंसठ आभासुर, उनचास पवन तथा अनेक देवता उनके साथ हुए। दस प्रकार के देवता अर्थात् विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, ऋच, सिद्ध, भूत, पिचाश आदि भी चल पड़े। दिशापति, अपने-अपने गणों सहित वासुकि, तक्षक आदि सप्र तथा नागपति शेष जी भी साथ गए। जगज्जननी श्री गायत्री, गरुड़, पर्वत, सातों समुद्र, दोनों अयन अर्थात् उत्तरायण और दक्षिणायन तथा सम्पूर्ण ऋतुएँ, काल, यम, यक्ष, समस्त सरिताएँ तथा बड़े नद और वनवासी, ये सब एक साथ उठ खड़े हुए तथा शिवजी के साथ चलने की तैयारी करने लगे।

हे नारद ! समस्त रुद्रगणों को चलने के लिए उद्यत देख कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। उस समय चारों ओर से जय-जयकार का शब्द होने लगा। तदुपरान्त शिवजी अपने स्वरूप को प्रणाम एवं नमस्कार कर, बैल पर सवार हो गये। उनके दाहिने तथा बाएँ ओर मैं तथा विष्णु हंस एवं गरुड़ पर चढ़कर साथ-साथ चले। इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़े थे तथा समस्त देवता मुनि अपने-अपने वाहनों पर बैठ कर चल रहे थे। सब के हृदय में शिव की मूर्ति स्थिर थी। प्रत्येक व्यक्ति अत्यन्त हर्ष में भर कर अपने-अपने वाहन पर चल रहे था। शिवजी बहुत धीरे-धीरे चलते थे जिससे कि किसी को कष्ट न हो। जिस-जिस देश में शिवजी आते थे वहाँ उनको भेंट दी जाती थी, जिसे वे सहज स्वीकार करते थे। इसी प्रकार चलते-चलते शिवजी अलकापुरी के निकट जा पहुँचे तब अलकापुरी के अधिपति शिवजी से विदा लेकर, जेवनार की सामग्री का प्रबन्ध करने के लिए आगे चले गये। उन्होंने अपने घर पहुँच कर विधिपूर्वक पूजन एवं जेवनार की सामग्री एकत्रित कीं। इसके पश्चात् वे अपनी समस्त सेना सहित शिवजी की शुभ अगवानी को आगे आकर, उनके चरणों पर गिर पड़े और प्रेम में मग्न हो गये। फिर भेंट देकर उन्होंने पूजन किया। वे प्रेमानन्द में मग्न हो कर सब कुछ भूल गये। उन्होंने शिव को प्रणाम कर विष्णु तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:35 AM

मेरा भी आदर किया। शिवजी ने उन्हें हृदय से लगा लिया। फिर उन्हें अपने साथ लेकर आगे बढ़े।''

❁❁❁

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इस प्रकार शिव जी समस्त देवताओं सहित अलकापुरी में पहुँचे तथा निधिनाथ की विनती मान कर वहीं वास करने लगे। अलकापुरी के अधिपति निधिनाथ ने शिवजी की पूजा करके मेरा भी आदर सत्कार किया। यही बात हर व्यक्ति के लिए उचित है कि जो कोई अपने घर आये, उसका सत्कार करें तथा वेद-शास्त्र को जान कर, अच्छे कर्मों से संसार में प्रसिद्धि प्राप्त करे।

फिर शिवजी ने सिंहासन पर विराजमान हो तुरन्त ही विश्वकर्मा को कैलाश पर्वत को अत्यन्त सुन्दर बनाने का आदेश दिया। उन्होंने आज्ञा दी कि प्रत्येक गण तथा सुर-मुनि लोगों के लिए भी सुन्दर-सुन्दर, मन्दिरों की स्थापना की जाए। विश्वकर्मा शिवजी का यह आदेश, सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हो, कैलाश पर्वत पर मन्दिरों के बनाने में प्रवृत्त हुए। उन्होंने एक बहुत सुन्दर तथा विचित्र स्थल का निर्माण किया, जो भिन्न-भिन्न प्रकार की सामग्री तथा रत्नों से अलंकृत बहुमूल्य स्वर्णपत्रों से सजा हुआ था। बीच में एक मुख्य स्थान शिवजी के लिए निर्मित किया गया। अन्तःपुर अलग बनाया गया। इसके पश्चात् उसने शिवजी से आकर प्रार्थना की कि मन्दिर बन कर तैयार है, अब और जो कुछ आज्ञा हो, उसका पालन करूँ। यह सुनकर शिवजी अत्यंत प्रसन्न हुए। तब सब की यह इच्छा हुई कि शिवजी कैलाश को चलें तो अत्यन्त उत्तम हो। अन्तर्यामी शिवजी अपने भक्तों के मन की इच्छा समझ गये तथा अपने चरण कमलों से कैलाश पर्वत को सुशोभित किया।''

इतनी कथा कह कर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उसी समय मैं और विष्णु दोनों ब्राह्मणों को साथ ले कर शिवजी के पास पहुँचे। तब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:35 AM

निधि पति ने हम सबकी ओर से प्रार्थना की कि हे स्वामी ! सब की प्रबल आकांक्षा है कि आपका अभिषेक एवं पूजन किया जाए। हम आपको सिंहासन पर बिठाकर पूजा करें, जिसमें हमारा मनोरथ सफल हो।'' शिवजी ने प्रसन्न हो कर यह बात स्वीकार कर ली। तब सब लोग आनन्द से तैयारी में लगे। मुनियों ने ज्योतिषियों से शुभ मुहूर्त्त जान कर प्रसन्न हो विष्णु ने यह कहा कि शिवजी के अभिषेक का मुहूर्त्त निश्चिय हो गया है, अब विलम्ब न कीजिये। तब मैंने तथा विष्णु ने शिवजी से कहा—''हे प्रभो ! अब आप स्नान कर, इस समय योग्य वस्त्र धारण कीजिये। शिवजी ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार किया और स्नान कर वस्त्र धारण किये। यह देख कर सब उपस्थित जन प्रसन्न हुए और शिवजी के स्नान के लिए समस्त तीर्थों का जल लाया गया। उसी जल में उन्होंने स्नान किया। मैंने तथा विष्णु जी ने उनके शरीर को अपने हाथों से अच्छी तरह मल कर धोया। उसके पश्चात् शिवजी दिव्य वस्त्र धारण करके सिंहासन पर सुशोभित हुए। मैंने वेद ध्वनि प्रारंभ की। सर्वप्रथम विष्णु जी ने मन्त्र पढ़ कर शिवजी की पूजा की तथा लक्ष्मी जी सहित बड़ी भक्ति के साथ बार-बार आरती उतारी।

समस्त गन्धर्व अपने प्रिय स्वर एवं मधुर वाणी में मनोहर गीत गाने लगे। मैंने भी समस्त देवताओं के साथ पूजा की। उसके पश्चात् सनकादिक, मरीचि ब्रह्मर्षि तथा अन्य मुनि आदि ने शिवजी की पूजा की। हम सब लोगों ने इस आनन्द में बहुत द्रव्य लुटाया। उस समय चारों ओर से 'धन्य-धन्य' का शब्द सुनायी देता था। सब लोगों ने अत्यन्त आनन्द के साथ वह उत्सव मनाया।

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सबसे पहले विष्णु जी ने दोनों हाथ जोड़ कर स्तुति करते हुए कहा—''हे ईश्वर ! आपकी स्तुति वेद भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:35 AM

नहीं कर सकते। मैंने भी आपकी स्तुति की है, पर आपका यदि अन्त नहीं जान पाया।" फिर इसी प्रकार देवता, उपदेवता, गण आदि सब ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार अत्यन्त विस्तारपूर्वक स्तुति की। सब ने खड़े हो कर एक स्वर से प्रसन्नता प्रकट की। तब शिवजी सब की प्रीत देख कर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

शंकर जी यह देख कर अति प्रसन्न हो कर बोले—"तुम सब लोगों की जो भी इच्छा हो, उसे प्रकट करो। मैं उसकी पूर्ति करूँगा।" यह सुन सब हाथ जोड़ कर बोले—"हे प्रभो ! आपके वचनों से ही हम तृप्त हो गये। हमारे सब क्लेश दूर हो गये हैं। इसके अतिरिक्त अब और कौन-सी वस्तु है, जिसको हम आप से माँगें? आप से क्या छिपा है? फिर भी हम सबकी एक इच्छा है कि हम सब सदा आपकी भक्ति में लिप्त रहें तथा आपके चरणों की इच्छा किया करें। हम को कोई भय नहीं हो और आप हमारे सब अपराध क्षमा करें। जब दानव हमारा अपमान करें, उस समय हमारे दुःखों को दूर करें। सब लोग इतना कह कर चुप हो गये। तब शिवजी सब को अभयदान देकर, स्वयं सगुण रूप से वहीं स्थित हुए। फिर सब को समझा कर वहाँ से विदा कर दिया। केवल मुझको तथा विष्णु को पास बुला कर उन्होंने यह कहा कि तुम दोनों ही हमारे शरीर हो तथा संसार की उत्पत्ति कर, तुम्हीं पालन करते हो; अस्तु जब तुमको कोई दुःख होगा, तब हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। अब तुम दोनों अपने लोक को, सुखपूर्वक चले जाओ। यह सुन कर हम दोनों उनसे भक्ति माँग और विदा हो कर चले आये। फिर शिवजी ने निधिपति का हाथ पकड़ कर कहा—"हे मित्र ! तुम्हारी प्रीति जान कर हमने तुम्हारे निकट ही वास किया है। हमारी तुम्हारी मित्रता तीनों लोकों में प्रसिद्ध हो गयी। तुम्हारा कैसा सौभाग्य है कि तुम हम को अति प्रिय हुये हो। तुम प्रसन्न रहो। अस्तु, अब तुम भी अपने लोक को जाओ।" निधिपति कुबेर शिवजी की ऐसी कृपा देख कर प्रेम मग्न हो गये और उन्होंने यह निवेदन किया—"हे प्रभो ! मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ।" यह कह कर निधिपति बारम्बार शिवजी को प्रणाम करके अति प्रसन्न हो, अपने घर तक पहुँचे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

इसके पश्चात् शिवजी उसी कैलाश पर्वत पर आनन्दपूर्वक वास करने लगे। वे कभी-कभी इस लोक में आ कर भ्रमण करते, तथा कभी-कभी अपने भक्तों के लिए कुछ लीलाएँ रचा करते। फिर उमा ने अवतार लिया और वे दक्ष के घर में उत्पन्न हुईं। दक्ष ने उमा का विवाह शिवजी के साथ कर दिया। शिवजी उमा के साथ भक्तों के हित के लिए लीलाएँ करने लगे।

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मैंने तुम्हें शिव अवतार तथा शिवजी के कैलाश जाने तक का वर्णन सुनाया। इसके अतिरिक्त और भी शिवजी की सहस्त्रों लीलाएँ हैं। यह लीला मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार ही कही है। शिवजी की कथा अत्यन्त पवित्र है; जिसके सुनने से बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। जो इसका स्मरण करता है, इसके समस्त शोक तथा दुःख नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य शिव प्रीति से युक्त हो कर इस कथा का पाठ करेगा, उसको धन तथा सन्तान की प्राप्ति होगी।"

इति श्री शिवपुराणे श्री शिवविलासे उत्तरखण्ड भाषायां
ब्रह्मा-नारद सम्वादे प्रथम खण्ड समाप्त।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

दूसरा खण्ड

पहला अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब मैं तुमको शिवजी के अनादि चरित्र के विषय में बताता हूँ। जिस प्रकार सती ने दक्ष के घर में अवतार लेकर पुनः शिवजी से विवाह किया तथा उन्होंने शिवजी के घर जो-जो कार्य किये, उन सबका विस्तारपूर्वक वर्णन करता हूँ। मैंने पहले दस पुत्र उत्पन्न करके उनको आदेश दिया कि तुम सृष्टि की रचना करो। मेरे वे पुत्र मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, भृगु, वशिष्ठ, नारद तथा दक्ष हैं। मैंने इनको मानसी सृष्टि की रीति पर उत्पन्न किया, परन्तु जब मैंने नारीस्वरूपा परम सुन्दरी सरस्वती को उत्पन्न किया तो उसके मनमोहक सुन्दर स्वरूप को देखकर मेरा हृदय काम के वशीभूत हो गया। अस्तु, उसे देखकर मेरे हृदय में भी उसके साथ मैथुन करने की इच्छा उत्पन्न हुई, क्योंकि उस समय मेरे हृदय में कामदेव प्रवेश किये हुए था। मुझे सरस्वती के साथ मैथुन करने के लिए उद्यत देखकर, मेरे सभी पुत्र हाहाकार करने लगे और वे सब मुझे उस भारी पाप से बचाने के लिए, भगवान् सदाशिव की स्तुति करने लगे। उस समय शिवजी ने प्रकट हो कर मुझे उस नरक देने वाले महाभयानक पाप से बचा लिया।"

सूत जी बोले—"हे ऋषियो ! ब्रह्मा जी के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर नारद जी ने कुछ देर तक विचार करने के उपरान्त उनसे इस प्रकार कहा—"हे पिता ! आप सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी तथा सब को उत्पन्न करने वाले हैं। इस समय मेरा हृदय अत्यन्त चिन्तित है, अतः

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

आप सम्पूर्ण संशय को नष्ट करने के लिए इस कथा को विस्तारपूर्वक कहिए। आपका मन इस प्रकार क्यों अधीर हुआ? आपकी सेवा करने वाले मनुष्यों को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है, अतः आपके द्वारा ऐसा कर्म होना अत्यन्त आश्चर्य की बात है।''

ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—''हे नारद ! तुम ध्यान देकर सुनो, मैं तुमसे मुख्य वृत्तान्त भली-भाँति समझा कर कहता हूँ। भगवान् सदाशिव की माया धन्य एवं अपरम्पार है। उन श्री शिवजी की माया ने मुझे जिस प्रकार नचाया, वह कथा मैं तुमसे कहता हूँ। सृष्टि की वृद्धि के हेतु मैंने अपने मुख से एक कन्या को उत्पन्न किया। उसे उत्पन्न कर मेरे हृदय में कुछ अहंकार उपजा। अहंकार प्रत्येक प्राणी को दुःख देता है। अस्तु, उस समय शिवजी ने यह लीला दिखायी कि मेरे मुख से एक ऐसी परम सुन्दरी स्त्री उत्पन्न हुई जिसके देखने मात्र से सम्पूर्ण दुःख दूर हो जाएं। उस स्त्री का नाम 'सन्ध्या' रखा गया। वैसी अपूर्व सुन्दरी मनुष्य लोक में तो क्या, देव लोक में भी नहीं थी। उस नख से शिखा तक नवीन पूर्ण चन्द्र के समान प्रभावशालिनी, गजगामिनी तथा चम्पक वर्ण कामिनी को देखकर मेरे हृदय में काम वासना जाग ही उठी और मैं उसके साथ रमण करने की इच्छा से, अपने स्थान से उठकर खड़ा हो गया। परन्तु दक्ष आदि ने उस समय मुझे ऐसा करने से रोक दिया। तदुपरान्त वे सब दक्ष आदि मेरे पुत्र स्वयं उसकी ओर पाप भरी दृष्टि से देखने लगे। जिस समय मैं अपने मन में उसी स्त्री के प्रति अनेक प्रकार का विचार कर रहा था, उसी समय अचानक ही एक अत्यन्त सुन्दर पुरुष भी वहीं उत्पन्न हो गया। वह मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया और मुझसे इस प्रकार कहने लगा कि, ''हे पिता ! आप मुझे मेरा नाम और काम बता दें। आप मुझे जहाँ रहने की आज्ञा देंगे, मैं यहीं रहूँगा। अस्तु, आप कृपा करके मेरी इस इच्छा को पूर्ण करें।''

हे नारद ! उस पुरुष की बात सुनकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। फिर कुछ देर विचार करने के बाद मैंने उससे कहा—''हे पुत्र ! तेरे उत्पन्न होते ही मेरा हृदय और शरीर के सब अंग काँप उठे थे, अतः मैं तेरा नाम मन्मथ रखता हूँ। इसके अतिरिक्त मनसिज, मदन आदि तेरे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

अनेक नाम होंगे। तू अपने इन पाँच बाणों द्वारा तथा अपने सौंदर्य द्वारा सबको अपने वशीभूत कर लेगा। सम्पूर्ण सृष्टि का हृदय तेरे अधीन रहेगा। इस प्रकार मैंने अपने पुत्र को बहुत-से अधिकार प्रदान किये। अपने कार्य को इस प्रकार सम्पन्न हुआ देख कर मेरे हृदय में प्रसन्नता भर गयी तथा अत्यन्त अहंकार भी उत्पन्न हुआ। तत्पश्चात् सिंहासन पर बैठे हुए अपने सभी पुत्रों को देख कर मुझे बहुत हर्ष हुआ। मैंने उस पुरुष का जो मन्मथ नाम रखा था, उसे सभी ने बहुत पसन्द किया और यह स्वीकार किया कि कामदेव का पद सबसे बड़ा तथा ऊँचा होगा।

इस घटना के उपरान्त जब कि हम सब लोग अपने मन में प्रसन्नता का अनुभव कर रहे थे, कामदेव ने अपने उस धनुष को सीधा किया, जिसके चढ़ते ही तीनों लोकों की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वह धनुष को चढ़ाये हुए मेरे पास आकर खड़ा हो गया और मन में यह विचार करने लगा कि मैंने उसे जो वरदान दिया है, उसकी परीक्षा करके देख ली जाए। अस्तु, उसने मेरी पुत्री संध्या को मेरे समीप खड़े देख कर, मेरे ही ऊपर अपना मोहन नामक बाण चला दिया। तदुपरान्त उसने मेरे अन्य पुत्रों को भी अपने उस बाण द्वारा मूर्च्छित कर दिये। उस प्रकार हम सब उसके वशीभूत हो गये। जब उसने यह देखा कि संध्या के ऊपर उसके बाण का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है तो उसने संध्या के हृदय पर भी एक ऐसा बाण मारा कि जिसके कारण वह भी कामदेव के वश में हो कर चंचल और वक्र दृष्टि से सब की ओर देखने लगी। हम सब लोग बुद्धि भ्रष्ट हो जाने के कारण उसे पकड़ने की इच्छा करने लगे, क्योंकि काम के वशीभूत हो जाने के कारण हमें किसी प्रकार के कुकर्म तथा पाप का विचार नहीं रहा था।''

❁❁❁

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! मुझे इस प्रकार मोहित देख कर, धर्म के पुत्र सत्य को बहुत चिन्ता हुई। वह दोनों हाथ जोड़ कर शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

के निकट जा पहुँचा और स्तुति प्रणाम करने के उपरान्त उन्हें सब हाल कह सुनाया। उसकी प्रार्थना पर हम लोगों को विरुद्ध व्यवहार से बचाने के निमित्त भगवान् शिव शीघ्र ही हम लोगों के बीच प्रकट हो गये। उन्हें देख कर मैं तथा मेरे पुत्र अत्यन्त लज्जित हुए और कामदेव भी बहुत लज्जित हुआ। उस समय शिवजी ने मेरी ओर क्रोध पूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा—"हे ब्रह्मन् ! तुम ऐसे कुमार्गगामी क्योंकर हो गये? तुमने श्रेष्ठ बुद्धि को भुला कर अपनी पुत्री से भोग करना चाहा। तुम वेदपाठी होते हुए भी उस ज्ञान को भुला बैठे और लज्जा त्याग कर अधर्म कार्य की ओर प्रवृत्त हुए, यह उचित नहीं है। हमने संसार में बहुत-से पापियों को देखा है, परन्तु तीनों लोकों में ऐसा पाप करने वाला किसी को नहीं देखा।"

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी ने मेरी बहुत निन्दा की। तदुपरान्त वे मेरे पुत्रों की ओर अत्यन्त क्रोधपूर्ण दृष्टि से देखते हुए बोले—"हे मरीचि आदि तुम लोग ऐसे अधीर और कामी क्यों हो गये। तुम सब ब्रह्मा के पुत्र हो और तुमने वेद का अध्ययन किया है, फिर भी तुम इस प्रकार मोहित हुए, इसलिए तुम्हें सहस्त्रों बार धिक्कार है।"

हे नारद ! भगवान् सदाशिव के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर मैं तथा मेरे पुत्र अत्यन्त लज्जित हुए। उस समय सब को ऐसा खेद हुआ कि किसी के मुँह से कोई भी शब्द नहीं निकला। तदुपरान्त मैंने इन्द्रियों एवं वीर्य को मस्तक पर चढ़ा कर, सन्ध्या के प्रति जो आसक्ति मेरे हृदय में उत्पन्न हुई थी, उसका त्याग कर दिया। भगवान् सदाशिव के भय से मैं पाप कर्म में प्रवृत्त होने से बच गया और मेरे पुत्र भी उस निन्दनीय कर्म की ओर से विमुख हो गये। उस समय भय के कारण मेरे शरीर से जो पसीना टपका, उससे चौंसठ, योगिनियाँ उत्पन्न हुईं, जो संसार से विमुख हो कर तपस्या के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं करती हैं। तदुपरान्त छियासी पुत्र और उत्पन्न हुए, दक्ष प्रजापति के शरीर से पसीना निकल कर पृथ्वी पर गिरा, उससे एक स्त्री की उत्पत्ति हुई। अत्रि, मरीचि, पुलह, भृगु तथा तुम अर्थात् नारद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के शरीर से पसीना नहीं निकला। वशिष्ठ, विश्रवा, अंगिरस तथा क्रतु के शरीर से जो पसीना निकल पृथ्वी पर गिरा, उससे सम्पूर्ण अंगों सहित पितरों की उत्पत्ति हुई, जो सबसे प्रतिष्ठा, प्राप्त करने योग्य एवं प्रसन्नता प्राप्त कराने वाले हैं। उन्हें उसी समय वेद और धर्म-शास्त्रों का ज्ञान हो गया। वे सब परम धार्मिक, धर्म का उपदेश करने वाले एवं सम्पूर्ण कार्यों को करने की क्षमता रखने वाले थे।

हे नारद ! क्रतु से सोमपा, वशिष्ठ से अहिर्बुघ्न, पुलस्त्य से आज्यप तथा अङ्गिरस से बर्हिपद हुए। इस प्रकार पितर चार प्रकार के हैं। पर वे छः प्रकार के प्रसिद्ध हैं। तत्पश्चात् मेरी आत्रा से संध्या ने उन पितरों द्वारा गर्भ धारण किया। इस प्रकार मेरे धर्म की रक्षा करके भगवान् सदाशिव अन्तर्धान हो गये। उनके चले जाने के पश्चात् मैंने अत्यन्त क्रोधपूर्वक कामदेव की ओर देखा और उसे शाप देने की इच्छा प्रकट की। उस समय मेरे सब पुत्रों ने मुझे बहुत समझाया, परन्तु मैंने माया के वशीभूत हो कर उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उस समय मैंने मन्मथ से कहा—"अरे मूर्ख ! तूने यह क्या दुखदायीपन किया जो मेरे हृदय को ऐसा घोर पापकर्म करने की ओर प्रवृत्त कर दिया? तूने अपने पिता की यह खूब सेवा की। अस्तु, तूने जैसा काम किया है, वैसा ही अब तू फल भी प्राप्त करेगा। तेरे कारण शिवजी ने मेरी अत्यन्त निन्दा की है, अत: मैं तुझे यह शाप देता हूँ कि तू जल कर भस्म हो जाये। भगवान् सदाशिव के नेत्रों की अग्नि में पड़ कर तुझे अपना शरीर त्याग देना पड़े और तेरी उस दशा को देख कर मेरा हृदय शीतल हो।"

हे नारद ! इस शाप को सुन कर कामदेव अत्यन्त भयभीत हो थर-थर काँपने लगा और इस प्रकार कहने लगा—"हे पिता ! आप संसार को उत्पन्न करने वाले तथा न्याय और अन्याय की स्थापना करने वाले हैं। मैंने आपका कोई अपराध नहीं किया है, फिर भी आपने मुझे यह शाप क्यों दे डाला? मैंने तो आपकी आज्ञा की केवल परीक्षा ही ली थी। मेरे भाग्य से आपने मेरे लिए अब जो नयी आज्ञा दी है, वह तो अवश्य होगी ही, परन्तु आप कृपा करके मुझे ऐसा वरदान भी दीजिए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जिससे मैं शिवजी की नेत्र-ज्वाला में भस्म होने के उपरान्त पुनः उत्पन्न हो सकूँ। इस प्रकार कृपा करके मेरा दुःख नष्ट कर दीजिए।

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! कामदेव की यह प्रार्थना सुन कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई तब मैंने कहा—"हे कामदेव ! मैंने तेरे सम्बंध में जो कुछ कहा है, वह तो निश्चित रूप से होगा ही, परन्तु अब मैं तुझे यह वरदान देता हूँ कि तुझे भस्म करने के उपरान्त कुछ दिनों बाद जब शिवजी अपना विवाह करेंगे, उस समय तुझे यही शरीर पुनः प्राप्त हो जाएगा और शिवजी तेरे सहायक हो उठेंगे।" इस बात को सुन कर सभा में फिर से नवीन आनन्द भर गया।

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! इस प्रकार मैंने शिवजी की माया के अधीन हो कर तथा अहंकार के वशीभूत हो कर, पहले तो अपने प्रभु के साथ वैर किया, तदुपरान्त कामदेव पर कृपा करके दक्ष प्रजापति से यह कहा—"हे पुत्र ! तुम अपनी स्वेदका नामक पुत्री का विवाह कामदेव के साथ कर दो तो हमारा हृदय प्रसन्न होगा। मेरी इस आज्ञा को सुन कर दक्ष ने कामदेव से कहा—"हे अनंग ! मेरी पुत्री को, जो रति नाम से भी प्रसिद्ध है, स्वीकार करो और प्रसन्नतापूर्वक तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करते रहो।" कामदेव ने भी दक्ष की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। तब रति के साथ कामदेव का बड़ी धूमधाम के साथ विवाह हुआ। उस समय मैंने अत्यन्त प्रसन्न हो कर दक्ष को अपनी बायीं ओर बिठाया। फिर पिता के समान उपदेश करते हुए भगवान् सदाशिव ने मुझसे जो शब्द कहे थे, उन पर विचार करते हुए दक्ष से बोला—"हे दक्ष ! शिवजी योगी स्वरूप धारण कर तीनों लोकों को जीत, भोग-विलास को त्याग, स्त्रीहीन हो, सदैव स्वच्छन्द विचरण किया करते हैं। अपनी दशों इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, वे स्वाधीन बने हुए हैं। अतः तुम ऐसा कोई उपाय करो, जिससे शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:36 AM

सांसारिक रीति के अनुसार अपना विवाह कर लें। ऐसा हो जाने पर हम निश्चिंत हो जायेंगे। शिवजी ने तुम्हें भी बहुत धिक्कार दिया है और अपने बड़प्पन के अहंकार में भर कर, किसी को कुछ नहीं समझा है। यदि विष्णु ने हम से ऐसा कहा होता तो हम कुछ भी बुरा नहीं मानते। शिवजी हमारे पुत्र होते हुए भी हमारे प्रति ऐसे कटु वचनों का प्रयोग करते हैं और तुमसे भी, जब कि तुम उनके भाई होते हो इस प्रकार अनादर वचन कहते हैं, सो यह किसी भी हालत में उचित नहीं है। अस्तु, जब तक शिवजी किसी स्त्री से विवाह नहीं कर लेते हैं, तब तक हमारा शोक दूर नहीं होगा। अब सोचने की यह बात है कि संसार में ऐसी कौन-सी स्त्री है जिसके ऊपर शिवजी मोहित हो जाएं और उससे अपना विवाह कर लें तथा वह स्त्री शिवजी की सारी चतुराई को दूर कर दे। यहाँ यह बात ध्यान में रखने की है कि जब कामदेव भी शिवजी को वश में नहीं कर सका तो अन्य देवता उनके समक्ष किस प्रकार ठहर सकते हैं, फिर भी यदि कामदेव कुछ प्रयत्न करे तो शायद काम बने।''

''हे नारद ! इतना कह कर मैं हँसता हुआ कामदेव के पास जा पहुँचा। उसके सुन्दर स्वरूप को देख कर मुझे यह निश्चय हो गया कि कामदेव द्वारा हमारा यह काम अवश्य सिद्ध हो जाएगा। कामदेव ने मुझे अत्यन्त आदरपूर्वक अपने पास बैठाया। उसी समय मेरे स्वांस से एक अत्यन्त सुन्दर पुरुष उत्पन्न हुआ। उसका नाम मैंने वसन्त रखा। वसन्त के जन्म से कामदेव की शक्ति में वृद्धि हुई। उस समय तीनों प्रकार की वायु चलने लगी तथा पक्षीगण मधुर-स्वरों में चहचहाने लगे। कोकिला भी मीठे स्वरों में कूक उठी। कामदेव की उस शक्तिशालिनी सेना को देख कर मैंने कहा—''हे मन्मथ ! यदि तुम अपने पराक्रम से शिवजी को वश में कर लो तो तीनों भुवनों में तुम्हारी अत्यन्त प्रसिद्धि होगी। अस्तु, तुम मेरी आज्ञा मान कर इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न करो।'' मेरी इस आज्ञा को सुन कर कामदेव ने उसे अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

मस्तक पर धारण किया। तदुपरान्त वह मुझे प्रणाम कर एवं अपनी सेना को साथ ले कर शिवजी के समीप चल दिया।''

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जिस समय कामदेव अपनी सेना को ले कर शिवजी के पास चला, उस समय सम्पूर्ण संसार पर कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि सृष्टि के समस्त प्राणी बुद्धिहीन हो, उसके वशीभूत हो गये। शिवजी के गणों पर भी उसका प्रभाव पड़े बिना न रहा। तब शिवजी ने यह जाना कि कामदेव उन पर विजय प्राप्त करने के निमित्त अपनी सेना को साथ लिये हुए आ रहा है तो उनके ऊपर उसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वे अपनी इन्द्रियों को जीत कर अपने स्थान पर ध्यान मग्न बैठे रहे। उनके ऊपर कामदेव का कोई वश नहीं चला। तब कामदेव अत्यन्त दुखी एवं चिन्तित हो कर वहाँ से लौट आया और कायरों की भाँति मेरे सामने आ कर पृथ्वी पर गिर पड़ा। तदुपरान्त स्तुति करते हुए इस प्रकार बोला—''हे पिता ! मैंने अपनी सेना द्वारा सम्पूर्ण देवता, मुनि एवं अन्य जीवधारियों को तो वश में कर लिया, परन्तु शिवजी के ऊपर मेरा कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अब मुझे यह भय लग रहा है कि कहीं वे मेरे ऊपर क्रुद्ध न हो जाएं। प्रज्ज्वलित अग्नि के समान उनके स्वरूप का स्मरण कर, मैं मन ही मन अत्यन्त भयभीत हो रहा हूँ। मुझ में इतना बल नहीं है कि मैं उन्हें परास्त कर सकूँ; क्योंकि इस बात की मैंने भली-भांति परीक्षा कर ली है।''

हे नारद ! कामदेव की बात सुन कर मुझे अत्यन्त चिन्ता हुई और मेरे मुख पर उदासी के लक्षण स्पष्ट हो गये। उस समय मैंने शोकाकुल हो कर जो बहुत से स्वांस छोड़े, उनसे अनेक प्रकार के गणों की उत्पत्ति हुई। वह अपने हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र धारण किये हुए थे। वे बड़े ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते, नाचते-गाते हुए मार-मार की पुकार करते थे। उनका कोलाहल सम्पूर्ण दिशाओं में भर गया। वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

अनेक प्रकार से उपद्रव करते थे। उनकी संख्या का वर्णन नहीं किया जा सकता।

हे नारद ! जब उन गणों को कामदेव ने देखा तो मुझसे पूछा—"हे पिता ! ये लोग कौन हैं और इनका नाम क्या है?" मैंने उत्तर दिया—"यह सब लोक मार-मार शब्द का उच्चारण कर रहे हैं, अतः इनका नाम मार होगा। हे अनंग ! तुम इस सेना को अपने साथ ले कर एक बार शिवजी के पास फिर जाओ और ऐसा उपाय करो, जिससे शिवजी किसी स्त्री के साथ विवाह करना स्वीकार कर लें।" यह सुन कर कामदेव ने उत्तर दिया—"हे पिता ! पहले तो मेरा कुछ वश नहीं चला और अब भी कोई आशा नहीं है, फिर भी मैं एक बार पुनः आपकी आज्ञा से उनके पास जाता हूँ; परन्तु आप यह निश्चय रखें कि यदि शिवजी का ध्यान भटक भी गया तो मैं जीवित कदापि नहीं बचूँगा।" इतना कह कर कामदेव अपनी उस नयी सेना को साथ ले कर वहाँ से चल दिया और उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ शिवजी ध्यान मग्न बैठे थे। सर्वप्रथम उसने पृथ्वी पर मस्तक रख कर शिवजी को प्रणाम किया, तदुपरान्त उनकी प्रसन्नता के निमित्त अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। उसने प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! मैं अपने पिता की आज्ञानुसार यह कार्य करने के लिए आया हूँ। अतः आप मेरे ऊपर कृपा बनाए रहें।" इतना कह कर कामदेव ने अपने साथी वसन्त को चारों ओर फैला दिया। उस समय संसार के किसी भी प्राणी का धैर्य स्थिर न रह सका। परन्तु इतने पर भी शिवजी का ध्यान विचलित न हुआ। कामदेव का उस समय भी यह बड़ा सौभाग्य रहा कि शिवजी ने उसे निरभिमान अनुमान कर भस्म नहीं कर दिया। तत्पश्चात् कामदेव लज्जित हो कर पुनः मेरे पास लौट आया और बोला—"हे पिता ! शिवजी पर मेरा इस बार भी कोई वश नहीं चला। यदि आप चाहते हैं कि शिवजी विवाह अवश्य करें तो किसी अन्य उपाय का आश्रय लीजिए।" इतना कह कर कामदेव अपने घर को चला गया। उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

समय मुझे अत्यन्त निराशा तथा चिन्ता हुई। जब कोई उपाय न सूझा तो मैंने विष्णु जी का ध्यान किया और बहुत प्रकार से उनकी स्तुति की।''

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! मैंने भगवान् विष्णु की विनती करते हुए कहा—'हे प्रभो ! आप अपना सेवक जान कर मेरा दुःख दूर कीजिए। हे दीनबन्धु ! आप अनेक सेवकों के हित के लिए अवतार लेते हैं, अतः इस समय आप प्रकट हो गये।' जिस समय मैंने उन्हें प्रणाम किया, उस समय वे हँस कर कहने लगे—''हे ब्रह्मन् ! आप ने हमें किस लिए स्मरण किया है? आपको कौन-सा कष्ट है?'' तब मैंने उन्हें कामदेव जी का शिवजी के पास जाने और निराश हो कर लौट आने का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुन कर विष्णु जी बोले—''हे ब्रह्मन् ! आप शिवजी को पत्नी सहित क्यों देखना चाहते हैं? उन्हें अकेला क्यों नहीं रहने देते? आपकी मनोभिलाषा को जान कर ही हम कुछ उपाय बतायेंगे।'' श्री विष्णु के मुख से यह वचन सुन कर मैंने उन्हें वह वृत्तान्त कह सुनाया कि मैंने अपनी पुत्री संध्या के साथ मैथुन करना चाहा था और शिवजी ने प्रकट हो कर मुझे धिक्कारा था। मैंने कहा था कि जब तक मैं शिवजी को सपत्नीक नहीं देख लूँगा, तब तक मेरे हृदय का क्षोभ नहीं जायेगा।

हे नारद ! मेरी बात सुन कर विष्णु जी ने कहा—''हे ब्रह्मन् ! आप अपनी इस मूर्खता को दूर कर दें। आप जो शिवजी को अपना पुत्र समझ कर बुद्धि के विरुद्ध बातें कह रहे हैं वे उचित नहीं है। हम और आप दोनों ही उनके सेवक हैं। वे सर्वथा स्वाधीन एवं भक्तों पर अनुग्रह करने वाले हैं। यदि आपकी यही इच्छा है कि वे अपना विवाह कर लें तो आपको उनकी शरण में जाना उचित है। सर्वप्रथम आप कठिन तपस्या द्वारा उन्हें प्रसन्न करें, तदुपरान्त उमा का स्मरण करते हुए, दक्ष प्रजापति से भी उसी प्रकार करायें। उस तप के प्रभाव से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

भगवती उमा दक्ष प्रजापति के घर पुत्री रूप में जन्म लेंगी और उनका विवाह शिवजी के साथ होगा। ऐसा करने से सम्पूर्ण लोकों का कल्याण भी होगा और आपकी इच्छा भी पूर्ण हो जायेगी।'' इतनी कह श्री विष्णु जी भगवान् सदाशिव के चरणों का ध्यान धरते हुए, अपने लोक को चले गये।''

❁❁❁

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! भगवान् विष्णु की आज्ञा शिरोधार्य कर मैंने भगवान् सदाशिव के प्रति उस द्वेष का त्याग कर दिया, जिसे मैंने उनकी माया से मोहित हो कर अपना रखा था। तदुपरान्त दक्ष को बुला कर उसे वह सब हाल कह सुनाया, जो कुछ श्री विष्णु जी ने मुझ से कहा था। मैंने उससे कहा—''हे पुत्र ! अब तुम एक कन्या को जन्म दो, जो भगवान् सदाशिव की पत्नी हो सके। ऐसा होने पर हम और तुम संसार में धन्य हो जाएंगे। तुम भगवान् सदाशिव की तपस्या करके उनका दर्शन प्राप्त करो और यह वरदान माँगो कि हे प्रभो ! आप मेरी सन्तान बन कर जन्म लें। मैं भी तपस्या करके उस से यही माँगूंगा। वे भगवान् त्रिशूलपाणि आदिशक्ति सम्पन्न तथा सगुण-निर्गुण दोनों रूप वाले हैं। उनकी महिमा का पार वेद ने भी नहीं पाया है। वे तपस्या के वशीभूत हो कर निश्चय ही दर्शन देते हैं। जब उन कृपालु शिवजी ने मुझे उत्पन्न किया था, उस समय मेरी तथा विष्णु जी की प्रार्थना को सुन कर हमें यह वरदान भी दिया था कि वे स्वयं भी हर नामक अवतार ग्रहण करेंगे और हमारे सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करेंगे। उन्होंने यह बताया था कि उनकी आदिशक्ति, जिनके अंश से लक्ष्मी की उत्पत्ति हुई है, भी एक कला से उमा के रूप में जन्म ले कर हर अवतार की पत्नी होंगी। भगवान् सदाशिव ने बताया था कि हमारे स्वरूप की आदिशक्ति द्वारा ही इस सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति होती है और वह आदिशक्ति समस्त संसार की माता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

अस्तु, हे दक्ष ! वे आदिशक्ति तुम्हारे घर में सती नाम से जन्म लेंगी। तुम मुझे तथा विष्णु को तो पत्नी सहित देखते हो परन्तु भगवान् सदाशिव के हर अवतार ने अब तक किसी स्त्री को स्वीकार नहीं किया है और न अब तक सती का अवतार ही हुआ है। अतः तुम ऐसा उपाय करो, जिससे सती का अवतार हो। इस प्रकार समझा कर मैंने दक्ष को विदा किया। तदुपरान्त घर जा कर, सम्पूर्ण इन्द्रियों को वशीभूत कर, वेद के अनुसार तपस्या करने लगा। मैंने अपने मन में श्री जगदम्बा का ध्यान कर श्वास को मस्तक पर चढ़ा लिया और मन के वेग को जीत कर उनकी स्तुति की। तब मेरी उस तपस्या से प्रसन्न हो कर जगदम्बा ने मुझे सेवक जान कर दर्शन दिया।''

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! ऐसा कौन-सा प्राणी है, जो भगवती महामाया के उस अनुपम, सुन्दर शरीर को देख कर मोहित न हो जाए? उनके दर्शन प्राप्त कर देवता तथा ऋषि-मुनि भी मोहित हो जाते हैं। वे अपने मुख्य चिह्नों से अलंकृत तथा वस्त्राभूषण को धारण किये हुए थीं। वे सिंह पर आरूढ़ थीं। उनके उस स्वरूप को देख कर मैं अपना मस्तक नीचे झुका कर, उनकी स्तुति करने लगा। उस समय भगवती भवानी ने मुझ पर दया करते हुए कहा—''हे ब्रह्मन् ! तुम जो चाहते हो, वर माँग लो।'' यह सुन कर मैंने पिछली बातों को स्मरण करते हुए कहा—''हे मातेश्वरी ! रुद्र नामक शिवावतार ने मुझ से बहुत ही कटु-वचन कहे हैं और व्यर्थ ही धिक्कारा है। अतः आप अवतार लेकर उन्हें वश में कर लें, जिससे वे भी हमारे ही समान गृहस्थ हो जाएं। कृपा कर आप यही वरदान दक्ष प्रजाप्रति को भी दीजिए, क्योंकि इसी अभिलाषा को लिये वह भी आपकी आराधना कर रहा है। तीनों लोकों में आपके अतिरिक्त कोई ऐसा नहीं, जो शिवजी को मोहित कर सके।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

हे नारद ! मेरी बात सुन कर भगवती भवानी ने कहा—"हे ब्रह्मन् ! तुम धोखा दे कर मुझसे यह क्या माँग रहे हो? इससे तुम्हें क्या लाभ होगा? इस समय तुमने मेरे सामने यह संकट भी उपस्थित कर दिया है कि मैं तुम्हें वरदान न दूँ तो वेद का मार्ग नष्ट हो जायेगा।" इतना कह कर उन भगवती ने योग धारण द्वारा उन परब्रह्म परमेश्वर का ध्यान किया, जो अपने भक्तों को प्रसन्नता प्रदान करते हैं और सब के अन्तःकरण का हाल जानते हैं। भगवान् सदाशिव ने उन्हें ध्यानावस्था में यह आज्ञा दी कि ब्रह्मा जिस वरदान को माँगते हैं, उन्हें दे दो और तुम अवतार ग्रहण करना स्वीकार करो। हम तुम्हें अत्यंत स्नेहपूर्वक अंगीकार करेंगे तथा ब्रह्मा को इस प्रकार मोहित करेंगे कि उनका सम्पूर्ण गर्व नष्ट हो जाएगा। परब्रह्म की ऐसी आज्ञा पा कर भगवती जगदम्बा ने मुझसे कहा—"हे ब्रह्मन् हर रूपी भगवान् सदाशिव योगिराज हैं। उन्हें मोहित नहीं किया जा सकता, परन्तु तुम्हारी प्रार्थना के अनुसार युक्तिपूर्वक तुम्हारा मनोरथ सिद्ध कर दिया जाएगा। जब तक हर स्त्री को स्वीकार नहीं करेंगे तब तक न तो उन्हें परलोक का फल मिलेगा और न संसार में आनन्द ही प्राप्त होगा। अतः मैं उनके निमित्त दक्ष प्रजापति की पुत्री के रूप में स्वयं ही अवतार ग्रहण करूँगी। उस समय शिवजी मुझ पर मोहित हो कर, मेरे साथ विवाह कर लेंगे।" इतना कह कर भगवती महामाया अन्तर्धान हो गयीं और मुझे अत्यंत प्रसन्नता प्राप्त हुई।"

आठवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर सूत जी बोले—"हे ऋषियो ! पितामह ब्रह्मा जी द्वारा इस वृत्तान्त को सुन कर नारद जी ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर कहा—"हे पिता ! भगवान् सदाशिव की आदिशक्ति ने जब आपको यह वरदान दे दिया, उसके उपरान्त क्या घटना घटी, यह आप मुझे बताने की कृपा करें?" ब्रह्मा जी बोले—"हे आत्मज ! जब भगवती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:37 AM

महामाया ने प्रकट हो कर मुझे यह वरदान दिया तब दक्ष प्रजापति ने मेरी आज्ञानुसार घोर तपस्या करनी आरम्भ की। उसने तीनों प्रकार का प्राणायाम करते हुए, शिवरानी के चरण-कमलों में अपने हृदय को स्थित किया। दक्ष के उग्र तप को देख कर श्री जगदम्बा ने अपने उसी शुद्ध, मनोहर एवं पवित्र स्वरूप में प्रकट हो कर दर्शन दिया, जिसका वर्णन मैं पहले कर चुका हूँ। दक्ष ने उन्हें प्रणाम-स्तुति करते हुए कहा—"हे भगवती ! मैं आपकी शरण में आया हूँ। आप मुझे अपना सेवक जान कर मेरे ऊपर कृपा करें।" उसकी स्तुति को सुन कर भगवती बोलीं—"हे दक्ष ! तुम्हारी जो इच्छा हो वह मुझ से माँग लो। मेरे लिये कोई भी वस्तु अदेय नहीं है।" यह सुन कर दक्ष ने कहा—"हे मातेश्वरी ! आप मेरी पुत्री बन कर मेरे घर में अवतार लें और हर के मन को मोहित करें। इस कार्य में मेरा ही कोई प्रयोजन नहीं है, अपितु तीनों लोकों का उपकार भी सन्निहित है। मैंने मोक्ष का वरदान न माँग कर आपसे जो यह प्रार्थना की है वह पूर्ण होनी चाहिए।"

दक्ष की प्रार्थना सुन कर भगवती महामाया ने कहा—"हे दक्ष ! तुम जो चाहते हो, वही होगा। मैं तुम्हारी पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हो कर शिवजी की अर्धांगिनी बनूँगी; परन्तु तुम अपने मन में किसी प्रकार अहंकार नहीं करना, अन्यथा तुम्हारा सम्पूर्ण गर्व नष्ट हो जाएगा।" इतना कह कर श्री जगदम्बा अन्तर्धान हो गयीं और दक्ष अत्यन्त प्रसन्न हो कर अपने घर को लौट आया। तदुपरान्त दक्ष ने दस सहस्त्र मानस पुत्रों की उत्पत्ति की। वे सब तुम्हारी प्रेरणा से घर छोड़ कर तपस्या करने के लिए वन में चले गये और परमपद को प्राप्त हुए। तत्पश्चात्, दक्ष ने दस सहस्त्र पुत्र और उत्पन्न किये परन्तु वे भी तुम्हारा उपदेश सुन कर संसार से विरक्त हो कर वहीं चले गये; जहाँ उनके भाई गये। उस समय दक्ष ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर तुम्हें शाप दिया कि, हे नारद ! "तुम अत्यन्त अधम हो, क्योंकि तुमने मेरे सब पुत्रों को मेरे विरुद्ध कर दिया है। अब मैं तुम्हारे कर्म के अनुसार तुम्हें यह शाप देता हूँ कि तुम किसी एक स्थान पर न ठहर कर सदैव भ्रमण किया करो।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

"हे नारद ! तुम्हें यह शाप देने के उपरान्त दक्ष को अपने मन में कुछ संतोष हुआ। तब उसने अपने मन में यह निश्चय किया कि अब कुछ मैथुनी सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए। यह विचार करके दक्ष ने वीर प्रजापति की पुत्री वीरनी के साथ विवाह किया। विवाह के उपरान्त दक्ष ने अपने हृदय में भगवती जगदम्बा का ध्यान किया। उस समय श्री जगदम्बा जी ने भी अपने मन में यह विचार किया कि अब मुझे दक्ष के घर जन्म ले कर, उसका मनोरथ पूर्ण करना चाहिए। यह निश्चय कर, वे दक्ष के हृदय में प्रवेश कर गयीं। उस समय दक्ष प्रजापति को अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई और भगवती के तेज से उनका शरीर प्रदीप्त हो उठा। तदुपरान्त शुभ अवसर पा कर दक्ष ने उस तेज को अपनी पत्नी में स्थिर कर दिया।"

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब दक्ष की पत्नी गर्भवती हुई, उस समय बहुत धूमधाम से उत्सव मनाया गया। दक्ष ने रीति के अनुसार पूजा की। मैंने तथा विष्णु ने भी उस उत्सव में सम्मिलित हो कर दक्ष की पत्नी की सेवा एवं स्तुति करने के पश्चात् दक्ष की प्रशंसा की। सभा समाप्त होने के पश्चात् हम सब लोग अपने-अपने लोक को लौट आए। नौ महीने बीतने के पश्चात् जब दसवाँ महीना आरम्भ हुआ, तब चारों ओर अपने आप आनन्द के दृश्य प्रकट हुए। सभी मन में हर्षित थे। आकाश में बाजे बजने लगे। ऐसे परमोत्तम समय में श्री महारानी जगदम्बा अवतरित हुईं। तीनों लोकों में प्रसन्नता भर गयी। उस समय कोई मनुष्य दुःखी दिखायी नहीं देता था। तब मैं, विष्णु तथा समस्त ऋषि-मुनि एकत्र हो कर दक्ष प्रजापति के घर गये। अत्यन्त प्रसन्नता के साथ बाजे बजने लगे। सब लोग देवी की स्तुति करके कहने लगे "हे शिवा, शिवरानी ! तुम सम्पूर्ण संसार की राजरानी हो। तुम्हारी महिमा अपरम्पार है, जिसका पार वेद भी नहीं पा सके। तुम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

सब की माता तथा सब को प्रसन्नता प्राप्त कराने वाली हो।'' इस प्रकार हम सब विनय करके अपने-अपने स्थान को चले गये। जब दक्ष की पत्नी ने अपनी पुत्री का मुख देखा तो उसको हृदय के ज्ञान से आभास हुआ कि यह आदिशक्ति है तथा इसने हमारे यहाँ अवतार लिया है। माता उस कन्या का अद्वितीय सौन्दर्य देख कर पहचान गयी। तब उस देवी ने अपनी माता को अष्टभुजा महातेजस्वी, मेघसदृश श्याम वर्ण, नख झलकते हुए अंग अत्यन्त सुडौल, परम सुन्दरी, सब प्रकार के आभूषणों तथा वस्त्रों से सुशोभित तथा कानों में कुंडल, हाथों में कंकण, कण्ठ में हार, माथे पर बिन्दी से सज्जित शशिमुख का दर्शन दिया।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! देवी स्वरूपा अपनी पुत्री का ऐसा रूप देख कर माता करबद्ध हो कर उसकी स्तुति करने लगी और कहने लगी—''मैं जानती हूँ कि तुम आदिशक्ति तथा सृष्टि की माता हो। तुमने हमारे ऊपर कृपा करके हमारे घर में अवतार लिया है, अस्तु तुम हम पर अनुग्रह करो और मेरे मन में अपने स्वरूप को स्थिर करो। इस समय तुम मुझे अपना स्वरूप बालरूप में ही दिखाओ। मैंने तुम्हें पहचान लिया है। मैं जानती हूँ कि तुमने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया है। वैसे मैं तुमको क्या पहचान सकती हूँ क्योंकि अन्त में वेद भी तुम्हारी स्तुति करके हार मान कर चुप हो जाते हैं।'' उसी समय दक्ष प्रजापति ने आ कर बड़े प्रेम से स्तुति की और कहा—''तुमने अपने वचन का पालन कर मेरे घर में अवतार लिया है। मैं तथा मेरे भाई वेद सब जीवन मुक्त हो गये। तुम्हारी महिमा अपरम्पार है। तुम केवल पूजा और तप के वश में हो, जैसा कि राजा सुरथ का तप साक्षी है। वह अपने तप से ही परमपद प्राप्त कर सका था। तुम्हारा शुम्भ और निशुम्भ ने भी क्रोध एवं वैमनस्य से मन लगाया तो भी वे ध्यान करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

से परमगति को प्राप्त हुए।" इसी प्रकार दक्ष ने महामाया की अत्यन्त स्तुति करके अन्त में यह प्रार्थना की कि अपना यह मनमोहक रूप हमारे हृदय में बसा कर, अब जो रूप, समय के योग्य हो, उसे आप धारण कीजिए, जिससे प्रसन्नता प्रकट हो।

इस प्रकार दक्ष तथा उसकी पत्नी अर्थात् अपने माता-पिता की बातें सुन कर, श्री देवी जी बोलीं—कि, हे दक्ष तथा हे दक्षपत्नी ! तुम दोनों ही ने हमारी बड़ी उपासना की है। हमने भी वरदान के अनुसार तुम्हारे घर अवतार लिया है। अब तुमको यही उचित है कि तुम जिस प्रकार मुझे शक्ति समझते हो, उसी प्रकार का विश्वास रखते हुए, कभी गर्व न करना।" देवी जी इतना कह कर कन्या का रूप धारण कर संसार की रीति के अनुसार रोने लगीं। तब वह रोदन सुन कर कुल की असंख्य नारियाँ, समस्त बाँदियाँ एकत्र हो गयीं। उन सब ने पुत्री को देख कर प्रसन्नता प्रकट की। उस दिन नगर में सर्वत्र प्रसन्नता छायी हुई थी। चारों ओर से जय-जय नाद गूँज रहा था। दक्ष तथा उसकी पत्नी ने वेद एवं कुल के नियमानुसार सब रीति की तथा बहुत-सा धन दान स्वरूप बाँटा। उस समय मैं तथा विष्णु जी देवताओं और मुनियों को साथ ले कर वहाँ जा उपस्थित हुए तथा दक्ष के निवेदन के अनुसार हमने उस कन्या का नाम सती रखा।

दक्ष के यहाँ पुत्री उत्पन्न होने से, इस आनन्दोत्सव की तीनों लोकों में चर्चा हुई। दक्ष प्रजापति तथा दक्षपत्नी ने पुरुषों एवं स्त्रियों का समुचित आदर सत्कार किया। इसके पश्चात् सब लोग अपने-अपने घर को चले गये। दक्ष अपनी पत्नी सहित सती के प्रेम में निमग्न हो कर सब कुछ भूल गये। सती चन्द्रकला की भाँति दिन-दिन बढ़ने लगीं। वे प्रतिदिन शिव पत्नी का पाठ करतीं तथा सदाशिव का ध्यान करतीं। वह पार्थिव पूजन करतीं तथा माता-पिता की प्रसन्नता की ओर से अधिक ध्यान देतीं। यद्यपि उनका शिव में अधिक ध्यान रहता, परन्तु इस बात को वे किसी पर प्रकट न होने देतीं। सती इसी प्रकार के विचित्र खेलों में मग्न रहतीं। जब कुछ बड़ी हुईं तो उनके मुख की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

कान्ति दूनी हो गयी। उनकी सुन्दरता की समानता तीनों लोकों में कोई भी नहीं कर सकता था। लक्ष्मी मोहिनी भी उनकी सुन्दरता की समानता न करके अन्त में पराजय माना गयीं। हे नारद ! इस प्रकार मैंने दक्ष की कन्या का यह संक्षेप में वर्णन किया है।''

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! एक समय सती ने दक्ष के सम्मुख एक विचित्र चरित्र किया था। उस समय मैं और तुम वहाँ पहुँचे। सती ने हम दोनों को बैठने के लिए स्वर्ण की चौकी दे कर हमारी स्तुति की। हम दोनों ने सती की नम्रता तथा सेवा देख कर यह वरदान दिया कि जिसकी महिमा अपार है तथा जिसकी हम और विष्णु सेवा करते हैं, जो किसी दूसरी स्त्री को न चाहे, ऐसा परम पुरुष तुम्हारा पति हो। सती से ऐसा कह कर फिर दक्ष से कहा—''हे दक्ष ! तुम धन्य हो, तुम्हारे घर में आदिशक्ति जगदम्बा अवतरित हुई हैं। अब तुमको यही उचित है कि मोह रहित हो कर कन्या का विवाह शिव के साथ सम्पन्न कर दो।'' ऐसा कह कर मैं और तुम अपने-अपने स्थान को लौट आये। उस समय दक्ष ने प्रसन्न हो कर सोचा कि अब सती युवा हुई तथा घर से बाहर पैर नहीं रखती है। अस्तु अब मुझे यही उचित है कि जिस प्रकार शिवजी उसको स्वीकार करें, वही उपाय करना चाहिए। इसी प्रकार विचार करते-करते बहुत समय व्यतीत हो गया, परन्तु दक्ष के हृदय में कोई बात स्थिर न हुई। तब सती ने सोचा कि मैं शिव का तप करके शिवशक्ति हो जाऊँ, परन्तु लज्जावश माता-पिता की आज्ञा के बिना वे इस बात को प्रकट नहीं कर सकती थीं। अन्त में एक दिन उन्होंने अपनी माता से अपनी यह आकांक्षा प्रकट करते हुए कहा—''यदि आज्ञा हो तो मैं वन में जा कर शिवजी की तपस्या करूँ, क्योंकि वे बिना तपस्या किए मुझसे विवाह नहीं करेंगे और बिना विवाह के तुम्हारा मनोरथ पूर्ण न होगा। इसलिए हे माता ! यही उचित है कि तुम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

मुझे इसके लिए पिता से आज्ञा दिला दो।''

माता ने सती की बात सुन कर दक्ष को बुलाया तथा सती की मनोकामना कह सुनायी। उसे सुन कर दक्ष अत्यन्त प्रसन्न हुए। इस प्रकार सती जी अपने माता-पिता की आज्ञा ले कर अपनी सखियों के साथ हाटकेश वन में पहुँच कर, कठिन तपस्या करने लगीं। उन्होंने तीनों ऋतुओं में उसी वन में रह कर व्रत का शुभारम्भ किया और पूरी तरह शिवजी की पूजा की। वे कार्तिक में नित्य प्रातः स्नान कर, शिव पूजन करके रात-दिन शिव के चरणों में ध्यान लगाये रहीं। माघ में स्नान कर, शिवजी की पूजा की तथा भीगे हुए वस्त्रों से नदी के तट पर तप करती रहीं और रात्रि को सखियों सहित जाग कर अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने फागुन मास की चौदस को शिवजी की पूजा की तथा उन पर अनेक प्रकार के पुष्प चढ़ाये और रात्रि को जागरण कर चारों प्रहर उनकी पूजा की। चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को टेसू के पुष्प अप्रित किये। उन्हीं पुष्पों से शिवजी का पूजन किया। वैसाख सुदी तृतीया को शिवजी का पूजन किया तथा उनके सम्मुख नाना प्रकार के पुष्पों से नैवेद्य समप्रित किये। ज्येष्ठ मास के अन्त में व्रत रख कर सहस्त्रों भटकटियों के पुष्पों से शिवजी की पूजा की। अत्यन्त पवित्र आषाढ़ मास में पूरे माह व्रत रख कर, नाना प्रकार के पुष्पों से शिवजी का पूजन किया। श्रावण की अष्टमी को वस्त्रादिक दान किये। भादों के कृष्ण पक्ष को काम तिथि में सुन्दर-सुन्दर पुष्प एवं फलों से अच्छी प्रकार शिवजी की पूजा की। इसी प्रकार चतुर्दशी को पुनः शिवजी का पूजन किया। इसी प्रकार सती का नन्दा व्रत आनन्दपूर्वक सम्पन्न हुआ।

नन्दा व्रत पूर्ण हो जाने के पश्चात् सती ने प्रसन्न हो कर लोगों को बहुत दान दिया और वेद के अनुसार अनेक प्रकार की सर्वोत्तम वस्तुएं एकत्र कर उनसे शिवजी का पूजन किया। ब्राह्मणों को शिव स्वरूप जान कर उनकी भी पूजा की। इस प्रकार शिव के प्रेम में मग्न हो कर योग धारण से तप किया और श्वास चढ़ा कर जल में बैठ गयीं। उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

समय मैंने तथा विष्णु ने जा कर देखा कि सती सिद्धों एवं अमरगण की भाँति बैठी हैं और वहाँ के सम्पूर्ण जीवों में कोई भी द्वेषभाव नहीं है। यहाँ तक कि सिंह तथा गौ एक साथ रहते हैं। इसी प्रकार समस्त जीवधारी शत्रुता त्याग कर, वहाँ प्रेम पूर्वक क्रीड़ा करते थे। मैं और विष्णु जी वहाँ की ऐसी दशा देख कर सती की स्तुति करने लगे। फिर कैलाश पर्वत की ओर यह कहते हुए कि सती को शिवजी अंगीकार करें, चल दिये।

❀❀❀

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मैंने स्वयं एवं विष्णु जी, देवता, मुनि, नाग, सिद्ध सब ने शिवजी के निकट जा कर देखा कि शिवजी शक्ति सहित विराजमान हैं। हम सब ने उसकी स्तुति की तथा विनती करते हुए कहा—"हे महाराज ! जब हम को आप ने उत्पन्न किया था, तब आप ने प्रण किया था कि हम तुम्हारे उपकार के लिए रुद्र नाम से अवतरित होंगे, सो ऐसा ही हुआ। आप ने अपनी प्रतिज्ञानुसार अवतार लिया। अब आप हम पर कृपा करें।" मैं और विष्णु यह कह कर चुप हो गये।

यह सुन कर सदाशिव बोले—हे ब्रह्मा तथा विष्णो ! "मुझे तुम दोनों ही अत्यन्त प्रिय हो। तुम यहाँ मुनियों के साथ किस लिए आये हो सो मुझे सब ठीक-ठीक बताओ?" शिवजी के ऐसे वचन सुन कर हमने यह समझा कि अब मनोकामना अवश्य सिद्ध होगी। तब विष्णु और मैंने हाथ जोड़ कर उनसे निवेदन किया—हे प्रभो ! "पहले आप ने कहा था कि हम विवाह करके लोक कार्य सिद्ध करेंगे, सो अब वह समय आ गया है। अब आप अपने वचन का पालन कीजिए।" शिवजी यह सुन हँस कर बोले—"हम तो योगी हैं। हमें विवाह-भोग से क्या संबंध? हमारा शरीर अवधूत है और हमारी सामग्री भी अशुभ है। हम इसी दशा में बहुत प्रसन्न हैं। देखो, लोग विवाह से अधिक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

दूसरा कोई आनन्द नहीं मानते, परन्तु वह एक कारागृह के समान है, जैसा कि वेद भी कहते हैं। जो बात मुझे अच्छी नहीं लगती, तुम उसी के करने के लिए मुझ से कहते हो। अच्छा, फिर भी मैं अपना वचन पूरा करूँगा और विवाह करूँगा परन्तु इसके साथ एक बात अवश्य है कि मैं जिस प्रकार की स्त्री कहूँगा, तुम को मेरे लिए उसी प्रकार की स्त्री ढूँढ़नी होगी। वह स्त्री ऐसी हो जो हमारे तेज को सह सके। वह परम सुन्दरी तथा कीर्तियुक्त हो और वह मेरी बात माने तथा पूरी तरह से मेरी सेवा करे।''

शिवजी के ऐसे वचन सुन कर मैंने तथा विष्णु ने हाथ जोड़ कर उनसे निवेदन किया—''हे प्रभो ! आपके योग्य सर्व गुण सम्पन्न दक्ष प्रजापति की पुत्री हैं। जो आपके लिए ही महा कठिन तप कर रही हैं। आप वहाँ चल कर उनको वरदान दीजिए तथा उनसे विवाह कीजिए।'' इतना कह कर हम लोग शान्त हो गए। तब शिवजी ने हँस कर कहा—''तथास्तु।'' शिवजी के मुख से यह सुन कर देवता तथा मुनि आदि जय जयकार करने लगे। इसके पश्चात् सब विदा हो गये। उधर शिवजी अपने गणों सहित सती को वर देने के लिए उसी स्वरूप में, जिसका सती ध्यान करती थीं, सती के पास जा पहुँचे। सती के मन से उस समय वह स्वरूप जिसका कि सती ध्यान कर रही थीं, लुप्त हो गया। तब चिंतित हो कर सती ने अपने नेत्र खोले और अपने सम्मुख उसी स्वरूप को देखा। सती ने उन्हें पहले तो प्रणाम किया, फिर अपने हृदय में उस स्वरूप का ध्यान धर, लज्जा से मस्तक, नत कर लिया तथा आनन्द में मग्न हो वे शान्त बैठी रहीं। उन्होंने कुछ न कहा। उस समय सती को जो आनन्द हुआ, उसका वर्णन करना कठिन है।

शिवजी सती को शान्त देख कर बोले—''हे दक्ष प्रजापति की पुत्री ! हम तुम्हारे तप से बहुत प्रसन्न हुए हैं। तुम्हारी जो इच्छा हो, वह माँगो।'' यद्यपि शिवजी सती की मनोकांक्षा जानते थे, परन्तु सती का वचन सुनने को यह आज्ञा दी, फिर भी सती कुछ न कह कर शान्त ही रहीं। सती का यह भाव शिवजी को बहुत भला लगा। वे फिर बोले—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:38 AM

''माँगो, माँगो, विलम्ब न करो। तुम्हारी प्रत्येक मनोकांक्षा पूर्ण होगी।'' इतनी कथा कह कर ब्रह्मा जी बोले—हे नारद !''इस प्रकार जब शिवजी ने बार-बार कहा, तब सती बोलीं—हे महाराज ! आप अन्तर्यामी हैं। आप मेरे मुख से अपनी प्रीति सुनना चाहते हैं तथा सांसारिक जीवों की भांति पूछते हैं तो मेरा मनोरथ सुनिए। मैं चाहती हूँ कि आप मेरे पति हों और मेरे साथ विवाह करके मुझको अपने घर की दासी बनायें।'' शिवजी ने सती के ऐसे वचन सुन, प्रसन्न हो कर 'तथास्तु' कहा तथा अन्तर्धान हो गये।''

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! शिवजी से ऐसा वरदान प्राप्त कर सती अत्यन्त प्रसन्न हो कर अपने घर पहुँचीं। सती की सखियों ने उनके माता-पिता को सती का सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया, उसे सुन कर उनके माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए।''

इतना कह कर सूत जी बोले—''हे मुनियो ! जब देवर्षि नारद ने ब्रह्मा जी से यह कथा सुनी, तो वे बोले—''हे ब्रह्मा जी ! आपके द्वारा वर्णित यह चरित्र सुन कर मेरे सम्पूर्ण दुःख नष्ट हो गये हैं तथा मुझे बहुत आनन्द प्राप्त हुआ है। अब इसके आगे और जो कुछ घटना हुई, उस पर भी प्रकाश डालिए। हे पिता ! आपके समान शिवजी की पूजा करने वाला संसार में और कोई नहीं है।''

नारद जी के यह वचन सुन कर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब मुझ को यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो मैं प्रसन्न हो कर शिवजी के पास गया। वहाँ हाथ जोड़ कर उनकी बहुत स्तुति की तथा निवेदन किया कि मुझे क्या आज्ञा है? शिवजी ने उत्तर दिया—हे ब्रह्मा !''सती ने हमारी बहुत आराधना की है तथा हमने उनको वर दिया है, सो तुम दक्ष प्रजापति के पास जा कर कहो कि वह हमारे विवाह की तैयारी करें।'' यह कह कर शिवजी ने मुझे विदा किया। मैं उनकी आज्ञा पा कर दक्ष

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

के पास पहुँचा तथा शिवजी की आज्ञा उन्हें कह सुनायी। यह सुन कर दक्ष, शुभ लग्न का विचार कर विवाह की सामग्री एकत्र करने लगे। उन्होंने रत्नों सहित शिवजी के पास लग्न भेजा और यह समाचार सब को कहला भेजा। यह देख कर गण अत्यंत प्रसन्न हो कर इधर-उधर दौड़ने लगे। दोनों ही ओर से पूरी-पूरी तैयारी हुई तदुपरान्त शिवजी बारात सजा कर, दक्ष प्रजापति के नगर की ओर चले।

बारात जब दक्ष प्रजापति के नगर के निकट पहुँची, तब शिवजी ने सप्त ऋषियों को दक्ष के पास भेजा। दक्ष प्रजापति बारात को नगर के निकट आया जान कर, अगवानी के लिए चले। वे सब से भेंट कर, हाथ जोड़, बारात को अपने मन्दिर ले चले। उस समय मैं, विष्णु, अष्टवसु, ग्यारह रुद्र, बारहों सूर्य, सिद्ध, भूतप्रेत, गन्धर्व, किन्नर, विद्याधर, देवता, मुनि तथा अप्सराएँ शिवजी सहित दक्ष के द्वार पर जा पहुँचीं। चारों ओर से जय-जयकार होने लगा। वेद एवं कुल की रीति के अनुसार सब कार्य हुए। गायन होने लगा। दक्ष प्रजापति ने ब्राह्मणों को बहुत-सा दान दे कर बारात के ठहरने के लिए अति उत्तम स्थान की व्यवस्था की जहाँ सब बारात ठहरी। फिर दक्ष ने मुझ को बुला कर कहा कि विवाह वेद के अनुसार कराओ, जिससे मेरी पुत्री सुखी तथा पति की प्यारी हो और उसके अनेक सन्तानें हों। इसके पश्चात् बारातियों को अनेक प्रकार के उत्तम भोजन खिलाये। उनमें चारों प्रकार के भोजन तथा छः रसों के स्वाद थे। बाराती इस प्रकार के स्वादिष्ट भोजन पा कर तथा अनेक प्रकार के व्यंग सुन कर अत्यंत प्रसन्न हुए। उस समय वहाँ सभी प्रसन्न दिखाई देते थे। भोजन के उपरान्त पान बाँटे गये। सब लोग शिवजी की स्तुति करने लगे। भोजन आदि से निवृत्त हो कर, लग्न ठहरा कर शिवजी के आगमन के लिए सूचना भेजी। शिवजी तुरन्त आये। तब दक्ष प्रजापति शिवजी को अन्दर ले गये। उन्होंने प्रसन्न हो कर सर्वप्रथम शिवजी के चरणों को स्वयं धोया तथा सोने की चौकी पर बिठाया। मैंने सब कार्य समयोचित किया तथा सती को बुलाया। उन्हें देख कर सब ने प्रणाम किया। तब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

मैंने तथा विष्णु ने दक्ष को कन्यादान का जो समय बताया, उस समय दक्ष ने कुश, जल तथा पुत्री का हाथ शिव के हाथ में दिया। हे नारद ! लोक में यही सर्वप्रथम कन्यादान हुआ तथा तब से विवाह की यही रीति संसार में फैल गयी।''

❁❁❁

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जिस समय शिवजी ने सती का हाथ अपने हाथ में लिया, उस समय मुनि प्रसन्न हो कर शिव तथा सती का जय घोष करने लगे तथा पुष्पवृष्टि हुई। अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। दक्ष प्रजापति ने दहेज स्वरूप बहुत-सी उत्तम वस्तुएं अमूल्य रत्न आदि दिये। अन्य रीतियों के पूर्ण होने के पश्चात् मैंने हवन का आयोजन किया। दोनों की गाँठें बाँध कर भाँवरें फिरने लगीं उस समय एक महाभयानक काण्ड हुआ। मेरी इच्छा शिवजी को मोहित करने की थी, परन्तु मैं स्वयं ही उस रोग में ग्रस्त हो गया अर्थात् भाँवरें फिरते समय सती का चरण कपड़े से बाहर निकल गया। जब मेरी कामुक दृष्टि उस पर पड़ी, तो मैं मोहित और मुग्ध हो कर बुद्धिहीन हो गया। ऐसी दशा में मेरे हृदय में सती का अनुपम रूप देखने की अभिलाषा जाग्रत हुई। मैंने उस समय यह उपाय किया कि एक भीगी लकड़ी आग में डाल दी, जिससे बड़ा धुआँ उठा। शिवजी के नेत्रों में वह धुआँ लगने से ऐसे आँसू बहने लगे कि शिवजी उन्हें दोनों हाथों से पोंछने लगे। ऐसे सुअवसर से लाभ उठा कर मैंने सती के मुख से घूँघट उठा कर, उनका सुन्दर स्वरूप देखा तथा कामदेव के प्रचण्ड वेग से दुखित हो, सब धर्म-कर्म को भूल गया। उस समय मेरा वीर्य धरती पर गिर पड़ा। मैंने उसको इस प्रकार से छिपाया कि किसी पर यह बात प्रकट न हो सके, परन्तु शिवजी ने अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा इस भेद को जान लिया तब वे मुझ पर अत्यन्त क्रोधित हो कर, धिक्कारते हुए बोले—''हे ब्रह्मा ! तुमने यह निन्दनीय कर्म क्यों किया? तुम बड़े कामी हो।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यह कह कर शिवजी ने बड़े क्रोध से त्रिशूल हाथ में ले लिया।''

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद ! शिवजी का यह स्वरूप देख कर मैं थर-थर काँपने लगा तथा मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह दशा देख कर सब लोग शिवजी द्वारा मेरी मृत्यु का निश्चय कर शिव की स्तुति करने लगे, परन्तु शिवजी का क्रोध कम न हुआ। दक्ष प्रजापति भी हाथ उठा कर 'शिव-शिव' कहने लगे तथा मेरे मारने की मना ही करते हुए शिवजी से बोले—''हे प्रभो ! आप इस समय रंग में भंग न करें।'' शिवजी ने कहा—''हे दक्ष ! तुम अब मुझ से कुछ न कहो। मैं ब्रह्मा को किसी प्रकार क्षमा नहीं कर सकता। इसने वेद के पथ को भुला कर सती को पाप दृष्टि से देखा है।'' शिवजी के ऐसे क्रोध पूर्ण वचन सुन कर उनके कोप से समस्त सभा काँप उठी। तब विष्णु ने शिवजी की बहुत स्तुति करते हुए कहा—''हे प्रभो ! आप अप्रमेय हैं। आपका आदि-अन्त कोई भी नहीं जानता। मैं तथा ब्रह्मा आप से ही उत्पन्न हैं। आप अपने क्रोध को शान्त कर तथा मुझे अपना सेवक समझ मेरी प्रार्थना स्वीकार करें अर्थात् ब्रह्मा को क्षमा दान दें। आप ही ने ब्रह्मा को सृष्टि की रचना के लिए उत्पन्न किया है। ब्रह्मा के सिवाय सृष्टि की और कौन रचना करेगा? यह स्पष्ट है कि बिना सृष्टि से सब लीला व्यर्थ है। फिर आप ही ने तो ब्रह्मा जी को उत्पन्न किया, इसलिए आप उनका वध न कीजिए।'' यह सुन कर शिवजी ने फिर बड़े क्रोध से कहा—''नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। हम ब्रह्मा का अवश्य वध करेंगे। हम स्वयं सृष्टि की रचना करेंगे अथवा दूसरा ब्रह्मा उत्पन्न कर सब लोकों में इस बात को प्रकट कर देंगे। हम को अब मत रोको। हमारा क्रोध कभी व्यर्थ नहीं जाता।'' शिवजी ने यह कह अपना समस्त शरीर जलती हुई अग्नि के समान कर दिया। देवता तथा मुनि आदि कोई भी ऐसा न था जो उस स्वरूप को देख सकता। मैं तो जैसे शिव रूप में ही समा गया। दक्ष को भी अति खेद से सब आनन्द विस्मरण हो गया। उसने अत्यन्त दुखी हो कर शिवजी के चरण-कमलों का ध्यान करके बहुत प्रार्थना की। विष्णु ने मुझे शिवजी के चरणों के नीचे डाल दिया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

तथा मुझसे बहुत स्तुति करायी तथा स्वयं भी स्तुति की। वे बोले— ''मैं और ब्रह्मा दोनों आपके सेवक हैं। आप अपनी कृपा दृष्टि से हम दोनों की ओर देखिए। ऐसे आनन्दोत्सव में किसी प्रकार का शोक उत्पन्न नहीं होना चाहिए। केवल आप ही हमारे रक्षक हैं। अब जो आप उचित समझें वही वर दीजिए। आप ब्रह्मा के दोनों हाथ पकड़ कर उन्हें अभयदान दीजिए।'' यह कह कर हम दोनों शिवजी के चरणों पर गिर पड़े। दक्ष भी अत्यन्त दीन बन कर 'त्राहिमाम्, त्राहिमाम्' कह उठे।

हे नारद ! उस समय शिवजी ने सती को अत्यन्त दुखी जान कर अत्यन्त कृपापूर्वक मेरे मस्तक पर अपना हाथ रखा और मुझे अभयदान दिया। उस समय मैं तथा विष्णु अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए। दक्ष तथा अन्य सभासद भी आनन्द मग्न हो गये। उस हर्ष में भर कर मैंने भगवान् सदाशिव की अनेक प्रकार से स्तुति की और यह कहा—''हे प्रभो ! आप ने मुझे पाप रूपी समुद्र में डूबते हुए की रक्षा की है और नरक की अग्नि में पड़ने से बचाया है। अब आप कृपा करके वह उपाय बताइए, जिससे मेरा यह महान् पाप नष्ट हो जाए। यह सुन कर श्री शिवजी ने कहा—''हे ब्रह्मन् ! तुम अपनी स्त्री सहित तपस्या करो। तुम्हारे पाप का यही प्रायश्चित्त है। जब तुम तपस्या द्वारा निष्पाप हो जाओगे, उस समय तुम्हारा नाम 'रुद्रशिरा' होगा और तभी तुम अपने सम्पूर्ण मनोरथ को प्राप्त होगे। तुमने देवताओं का अधिपति होते हुए भी जो मनुष्य के समान निकृष्ट कर्म किया है, उसके कारण तुम्हें मनुष्य योनि में जन्म ले कर लज्जा उठानी पड़ेगी। इस उपाय से तुम्हारा पाप नष्ट हो जायेगा। भगवान् सदाशिव के श्री मुख से निकले हुए इन वचनों को सुन कर मुझे तथा दक्ष को अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुना कर नारद जी ने पूछा—''हे पिता ! जब भगवान् सदाशिव का क्रोध शान्त हो गया और वे प्रसन्नता को प्राप्त हो गये,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

तदुपरान्त क्या हुआ, वह मुझे बताने की कृपा करें?'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब भगवान् सदाशिव मुझ पर प्रसन्न हुए और मेरे वीर्य को पृथ्वी पर चमकता हुआ पड़ा देखा तो मुझसे कहा—''हे ब्रह्मन् ! यह वीर्य अत्यन्त तेजस्वी दिखाई देता है, अतः इसे नष्ट नहीं करना चाहिए। जिस समय तुम्हारा वीर्य पृथ्वी पर गिरा था, उसी समय मेरे नेत्रों से कुछ आँसू भी गिरे थे। अस्तु उन दोनों के सम्मेलन से चार मेघों की उत्पत्ति होगी। शिवजी ने इतना कहते ही चार मेघ उत्पन्न हो कर आकाश में छा गये और गरजते हुए पानी बरसाने लगे, परन्तु उस समय शिवजी के भय के कारण यह वर्षा धीमी फुहारों के रूप में हो रही थी। उस वर्षा को देख कर शिवजी तथा अन्य सभी सभासद अत्यन्त प्रसन्न हुए और सर्वत्र आनन्द भर गया। तदुपरान्त शिवजी की आज्ञानुसार विवाह की अन्य रीतियाँ पूरी करायी गयीं।

हे नारद ! यह सब हो जाने के पश्चात् विवाह के बाजे फिर पहले की भांति बज उठे। उस समय हमने शिवजी की स्तुति करते हुए कहा—''हे प्रभो ! जिस प्रकार शब्द और अर्थ में भेद नहीं है, उसी प्रकार आप तथा शक्ति में कोई अन्तर नहीं है। आपकी महिमा अप्रेमय है। आपके चरणारविन्द की कृपा से इस संसार में किसने क्या नहीं पाया? आप सम्पूर्ण जीवधारियों के पिता हैं और भगवती शक्ति संसार की माता हैं।'' इस स्तुति को सुन कर शिव तथा शक्ति अत्यन्त प्रसन्न हो, हम लोगों पर कृपा दृष्टि की वर्षा करते हुए, कैलाश पर्वत को चल दिये।''

हे नारद ! उस समय की शोभा यह थी कि शिवजी के सिर पर छत्र शोभित था और देवतागण दोनों ओर खड़े हुए उनकी स्तुति कर रहे थे। शिवजी ने कुछ दूर आगे जा कर दक्ष तथा अन्य सब देवताओं को विदा कर दिया और स्वयं शक्ति एवं अपने गणों सहित कैलाश पर्वत पर जा विराजे। जब शुभ लग्न में शिवजी और सती ने अपने भवन में प्रवेश किया, उस समय चारों ओर से जय-जयकार की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। मैंने तथा विष्णु जी ने शिवजी एवं सती को एक ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

सिंहासन पर बैठाया। उस समय नृत्य, गायन एवं मंगलाचरण होने लगे। शिवजी ने सब की मनोकामना पूर्ण करते हुए जिसने जो-जो माँगा, उसे वही वस्तु प्रदान की। तदुपरान्त सब लोग उनका यश वर्णन करके अपने-अपने घर को लौट गये। मैं तथा विष्णु जी भी उनकी आज्ञा प्राप्त कर अपने लोक को लौट आये। हे पुत्र ! इस प्रकार मैंने शिवजी के विवाह के लिए अनेक उपाय किये, परन्तु मेरा कोई वश नहीं चला। जब साक्षात् आदिशक्ति ने प्रकट हो कर उनके लिए तप किया, तभी शिवजी ने उन्हें स्वीकार किया। भगवान् सदाशिव का यह चरित्र प्राणियों को मुक्ति देने वाला है। शिवजी का विवाह हो जाने पर मेरे हृदय का दुःख दूर हो गया। इस प्रकार श्री त्रिशूलपाणि सती के साथ विहार करते हुए, कैलाश पर्वत पर रहते थे और सृष्टि के उपकार के निमित्त अनेक प्रकार की कथाएँ कहते थे। जो मनुष्य शिव तथा सती के विवाह की इस पवित्र कथा का पाठ करता है, वह संसार में इच्छित आनन्द को प्राप्त कर, अन्त में मुक्ति पाता है।''

सोलहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर शौनकादिक ऋषियों ने कहा—''हे सूत जी ! सती के विवाह का वृत्तान्त सुनने के उपरान्त नारद जी ने ब्रह्मा जी से क्या बातें पूछीं वह आप हमें बताने की कृपा करें?'' पौराणिक सूत जी बोले—''हे ऋषियों ! जब देवर्षि नारद जी इतनी कथा सुन चुके तो उन्होंने ब्रह्मा जी से कहा—''हे पिता ! विवाह के उपरान्त शिव तथा सती ने जो चरित्र किये, उन्हें आप मुझसे कहने की कृपा करें।'' यह सुन कर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! एक दिन शिवजी को एकान्त में बैठे हुए देख कर सती उनके पास पहुँची और स्तुति प्रशंसा करने के उपरान्त बोलीं—''हे प्रभो ! आपने तीनों लोकों का कल्याण करने के निमित्त अवतार ग्रहण किया है। यह मेरा परम सौभाग्य है जो आपने मुझे अपनी पत्नी के रूप में अंगीकार किया है। हे भक्तवत्सल ! मैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

आपकी शरणागत हूँ। अब मैं आप से अपनी उस अभिलाषा को प्रकट करती हूँ जिसे मैंने आज तक गुप्त रखा है। हे स्वामी ! इस समय आपको अपने ऊपर प्रसन्न देख कर ही मैं यह बात कह रही हूँ। मेरी अभिलाषा यह है कि मैंने वर्षों तक आप के साथ विहार आदि का आनन्द प्राप्त किया, परन्तु परमतत्त्व का विचार कभी नहीं किया है। अब मेरे हृदय में वैराग्य उत्पन्न होने के कारण परमतत्त्व जानने की अभिलाषा जागृत हुई है। अतः आप मुझे श्रेष्ठ प्रकार से ब्रह्मज्ञान की युक्ति एवं मुक्ति का मार्ग बताने की कृपा करें। हे प्रभो ! तीनों लोकों में आपके समान ज्ञानी अन्य कोई नहीं है। आप वेदों के उत्पन्न कर्त्ता, परब्रह्म, अनादि, सम्पूर्ण विद्याओं के समुद्र एवं तीनों लोकों के स्वामी विष्णु तथा ब्रह्मा को भी श्रेष्ठ पद प्रदान करने वाले हैं। शेष जी दिन-रात आपकी महिमा का वर्णन करते हुए भी उसका पार नहीं पाते। अस्तु, आप कृपा करके मेरी मनोभिलाषा को पूर्ण करें।"

सती के इन वचनों को सुन कर भगवान् सदाशिव बोले—"हे प्रिये ! ज्ञान को सर्वोत्तम वस्तु समझना चाहिए। उसके पास तक किसी अन्य पदार्थ की गति नहीं है। इस प्रकार वह परम अलभ्य कहा जाता है। उसी को मेरा स्वरूप ब्रह्म जानना चाहिए। जिस तपस्या तथा आराधना का आश्रय ले कर जीवधारी पवित्र हो जाते हैं, उसे ज्ञान की पदवी समझना चाहिए। भक्ति तथा ज्ञान में कोई अन्तर नहीं है। जो मनुष्य इन दोनों में अन्तर देखते हैं, उन्हें दुःख उठाना पड़ता है। जो लोग भक्ति के विरुद्ध वचन कह कर ज्ञान को प्राधनता देते है, उन्हें महान् कष्ट उठाना पड़ता है। अत्रि मुनि को उस बात का निश्चय हो चुका है, जो संसार भर में विद्वान् माने जाते हैं। भक्ति को परमतत्त्व का ज्ञान प्रदान करने वाली समझना चाहिए। वह मुझे अत्यन्त प्रिय भी है। भक्ति के समान सीधा तथा भयहीन मार्ग अन्य कोई नहीं है, क्योंकि उसके द्वारा परब्रह्म की प्राप्ति होती है। इस रीति को पिपीलिका कहा जाता है, क्योंकि इसमें बिना किसी आधार के भी ब्रह्म पर चढ़ कर फल प्राप्त किया जा सकता है। इसके विपरीत निर्गुण के मार्ग को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:39 AM

भीष्म कहते हैं, क्योंकि उसमें किसी वस्तु का आधार न होने के कारण अत्यन्त परिश्रम तथा कष्ट भोगने के पश्चात् ही फल की प्राप्ति होती है। भक्ति मन को प्रसन्नता प्रदान करने वाली है और मैं सदैव उसके अधीन रहता हूँ। जो प्राणी मेरी भक्ति करता है, उसे मैं इह लोक में आनन्द तथा परलोक में मुक्ति प्रदान करता हूँ। मुझे कुल तथा जाति से कोई प्रयोजन नहीं है। चारों युगों में मुझे भक्त प्रिय हैं, परन्तु कलियुग में तो अपने भक्तों को अत्यन्त स्नेह करता हूँ। मैं अपने भक्तों की सदैव सहायता करता हूँ और उनकी प्रसन्नता के निमित्त अनेक प्रकार के श्रेष्ठ चरित्र दिखाता हूँ। अतः हे देवि ! भक्ति की महिमा सबसे बड़ी जान कर तुम उसी को अपनाओ।''

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! भक्ति की ऐसी प्रशंसा सुन कर सती अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने दोनों हाथ जोड़ कर सदाशिव से कहा—''हे प्रभो ! आप ने मेरे ऊपर कृपा करके भक्ति की प्रशंसा की है, परन्तु मेरी इच्छा है कि आप उसके सम्पूर्ण अंगों का वर्णन करें।'' शिवजी ने हँसते हुए कहा—''हे सती। मैं भक्ति का सम्पूर्ण वृत्तान्त, जिसको सुन कर प्रेम उत्पन्न होता है तथा तीनों लोकों के दुःख शोक नष्ट हो जाते हैं, सुनाता हूँ। भक्ति को परम तत्त्व कह कर उसका सर्वोत्तम वर्णन किया गया है। वह दो प्रकार की है। एक स्वाभाविक, जो प्रकृति से उत्पन्न होती है, दूसरी वैदेही, जो प्रारब्ध से प्राप्त होती है। जिसमें तीनों गुण पाये जाएं उसको सगुण भक्ति कहते हैं। जो गुणरहित हो, उसे अगुणा भक्ति कहते हैं। उसके दो भाग हैं, भक्त लोग जिनमें बड़ी श्रद्धा में मन लगाते हैं। इन दोनों खण्डों के दो-दो भाग हैं। जब उनको सावधानी से धारण किया जाता है, तब वे पूर्ण होते हैं। वे इस प्रकार हैं—अपने स्वामी को कीर्ति सुनना, कीर्तन अथवा उसका वर्णन करना, स्मरण करना, सेवन अर्थात् सेवा करना,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

दासत्व अर्थात् दास्य भाव से पूजन करना, वन्दना अर्थात् वन्दना करना, सख्य अर्थात् मित्रों की भाँति रहना एवं आत्म समप्रण अर्थात् स्वयं को अप्रण कर देना। भक्ति के इन्हीं नौ भागों को मुनि भी बताते हैं। इस नवधा भक्ति के अतिरिक्त और भी बहुत-से प्रकार हैं, जिनको धारण करने से मन अत्यन्त प्रसन्न होता, जैसे—बरगद, बेल, तुलसी तथा गंगा आदि की सेवा, अतिथियों की सेवा, ब्राह्मणों की अधीनता तथा तीर्थों की स्थिति आदि।"

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इतना कह कर शिवजी बोले—"अब मैं अलग-अलग नौ प्रकार के अर्थ वर्णन करता हूँ। जब मन वचन कर्म से मेरी प्रशंसा सुन भक्त बड़ाई का विचार कर तथा मन को दृढ़ करें तो इसको श्रवण कहते हैं। जब कुल, धन, व्यवहार तथा स्वयं के गर्व को छोड़ कर हमारी कथा को सुने, जिस स्थान पर कथा होती हो उसको नित्य प्रति सजा कर शुद्ध करता रहे, उस शास्त्र की भली प्रकार पूजा कर अनेक प्रकार की वस्तुएँ उस पर चढ़ावे, इसी प्रकार उसको पाठ करने वाले की पूजा करके अच्छे वस्त्र, द्रव्य, पदार्थ, फल-फूल आदि से स्तुति करे, तब उसका उचित फल मिलता है। यही श्रवण की प्रशंसा है। हे नारद ! अब मैं तुम्हें कीर्तन के विषय में बताता हूँ। जो अपने मन को निर्लोभ करके मेरे जन्म, कर्म तथा गुण को देखे, उनका उच्च स्वर से पाठ करे, उसी को कीर्तन कहते हैं। कर्म, काल तथा काम रहित हो कर संसार की लज्जा तथा इच्छा का त्याग कर, हृदय से हमारा गुण-गान करे तो ऐसा कीर्तन करने से अच्छे फल की प्राप्ति होती है। जो सृष्टि, जड़, चैतन्य, जीवित, निर्जीव, चलने वाले तथा एक ही स्थान पर स्थित रहने वाले सब जीवों में शिव को देखे, मुझको सर्वात्मा समझ कर निस्पृह रहा करे, उसे स्मरणी कहते हैं। ऐसे स्मरण से अत्यन्त आनन्द मिलता है। सेवन के अर्थ हैं कि नित्य प्रातःकाल उठ कर सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान करे। फिर नियमानुसार नित्य नैमित्यिक आदि से सुचित्त हो, रेशमी वस्त्र धारण कर मस्तक पर त्रिपुण्ड लगावे, रुद्राक्ष की माला पहने, धरती को शुद्ध कर बैठने का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

उत्तम स्थान बनावे तथा हृदय रूपी कमल में मेरा, अपने स्वामी के स्वरूप का प्रेम से ध्यान लगावे, पूजन की सामग्री तैयार होने के पश्चात् उससे क्रम पूर्वक षोडशोपचार से पूजा करे। नैवेद्य लगा कर आरती करके दण्डवत् करे। अच्छे सुगन्धित पुष्प बिछा कर उनके ऊपर अपने स्वामी को सुलावे तथा सदैव मेरे गुणों का गान कर जीवन व्यतीत करे। सन्ध्या समय फिर मुझे, अपने स्वामी को, जगावे तथा सन्ध्या आदि से मेरी आरती करे। नाम एवं स्तुति वर्णन कर, कुछ रात व्यतीत हो जाने पर गाने-बजाने का समान एकत्र करे। आनन्दपूर्वक बाजे बजवा कर भोग लगावे। पुनः आरती करे। इसके पश्चात् उत्तम शैय्या बिछा कर मुझ, स्वामी को उस पर सुलावे। इस प्रकार की सेवा करने वाला भक्त लोक-परलोक में आनन्द प्राप्त करता है और तीनों लोक उसके चरणों में नमस्कार करते हैं।

शिवजी बोले—"हे सती ! अब मैं अर्चन का वर्णन करता हूँ। इसे ध्यानपूर्वक सुनो। जो बेल पत्र, पुष्प तथा चन्दन को पवित्रता एवं विचार के साथ, लोगों से पूछ कर लगावे, धर्म की रीति के अनुसार जिसने धन संग्रह किया हो, उससे पूजा के बर्तन तथा सामग्री एकत्र करे, अपने स्वामी इष्ट देव की षोडशोपचार पूर्वक निःस्वार्थ पूजा करे, समय तथा नियम में कोई कमी न होने पावे, इसी को अर्चन कहते हैं। जो मेरे मन्दिर में फुलवाड़ी लगावे अथवा मेरे लिंग की स्थापना करे तथा मेरे लिए उत्सव करे, यह सब अर्चन के भाग हैं। जो इस प्रकार मेरा अर्चन करता है, वह दोनों लोकों में सिद्धि प्राप्त करता है। अब मैं वन्दन की व्याख्या करता हूँ। सती ! मन्त्र का जप करे तो बार-बार उसका ध्यान करना चाहिए और मन को एकाग्र करके प्रणाम करना चाहिए। यही वन्दन है। वन्दना का फल तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। इसी के प्रताप से सनकादिक निर्भर रहते हैं।"

शिवजी बोले—"हे सती ! अब मैं तुम्हें दास्य भाव के विषय में बताता हूँ। जो इन्द्रियों को वश में करके मुझे प्रसन्न करता रहे, जो मेरी प्रसन्नता से मन तथा शरीर की काम वासना को जड़ से नष्ट करे तो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

वह दोनों लोकों का सुख प्राप्त करता है। जिस मनुष्य के विचार में दुःख-सुख, बुरा-भला, राग-द्वेष, जय-पराजय, लाभ तथा हानि बराबर हो तथा जो इस बात पर पूर्ण विश्वास रखता हो कि जो कुछ भी परब्रह्म हमारे लिए करता है, वह सब हमारी भलाई के लिए ही है ऐसे दृढ़ विचार को सख्य कहते हैं। ऐसे मनुष्य को तीनों लोकों में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं होती। जो मनुष्य अपनी देह, सेवक, पशु, धन तथा कोष आदि समस्त वस्तुओं को त्याग कर तथा उनका मोह दूर कर, मेरे लिए संकल्प कर दे और उनके लिए फिर कोई प्रयत्न न करे, उनकी प्रीति तथा ध्यान न करे, उसे आत्मसमर्पण कहते हैं। इससे गर्व दूर हो जाता है। जब तक मनुष्य इसको मन, वाणी तथा कर्म से नहीं करता, तब तक वह अपने स्वामी मुझको प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसे मनुष्य को सब वस्तुएँ सुलभ हैं कोई वस्तु दुर्लभ नहीं। मैं सदैव रात-दिन उसकी रक्षा करता हूँ तथा उसके निकट ही निवास करता हूँ। भक्ति के केवल यही नौ अंग हैं।''

शिवजी ने कहा—हे सती ! अब मैं भक्ति के उपांग का वर्णन करता हूँ। उपांग दस हैं। उनमें से प्रत्येक दुःख को नष्ट करने वाला है। इसलिए वट तथा पीपल की सदैव पूजा करनी चाहिए और उनका जल से सिञ्चन करना चाहिए। उनका अनादर करना, मेरा अपमान करना है। उनकी परिक्रमा दायीं ओर से करनी चाहिए। इन दोनों वृक्षों की सेवा से ही निर्भय परमपद प्राप्त होता है। दूसरे विल्व वृक्ष की सेवा करनी चाहिए और उसको मेरा ही शरीर समझना चाहिए। उसके पूजन से कोई कष्ट नहीं रहता। उसको जल से सींच कर, उसका पूजन करना तथा उसकी आरती उतारना उचित है। जो लोग नित्य ऐसा करते हैं, उन्हीं को हमारी पूजा का फल प्राप्त होता है। तीसरा उपांग रेवा अर्थात् नर्मदा, सुरसरी अर्थात् गंगा आदि का पूजन कहलाता है। उनमें पवित्रता के साथ स्नान करने से बड़ा पुण्य मिलता है जैसा कि व्यास जी आदि ने कहा है। चौथा उपांग गुरु-सेवा है, जिसकी स्तुति वेद करते हैं। इसके बराबर और कुछ नहीं। पाँचवें हमारे चौदस आदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

जितने व्रत हैं, उनमें हमारा पूजन कर व्रत रखे, रात्रि भर जागरण करे। उनसे जिस पुण्य की प्राप्ति होती है, वह वेदों में प्रकट है। इसी प्रकार शिवरात्रि मास के दोनों प्रदोष तथा हर महीने की अष्टमी के व्रत बड़ी महिमा रखते हैं तथा उत्तम गति प्राप्त कराते हैं। इन व्रतों से व्याध, किरात आदि ने बहुत आनन्द प्राप्त किया है। छठा शैवाराधन अर्थात् शैव लोगों की आराधना करना है। इसके अन्तर्गत जब किसी शिव भक्त को अपने यहाँ आता हुआ देखे, तब उसका समुचित आदर करे। उसको अपने यहाँ देख कर सकुटुम्ब प्रसन्न हो कर, सब प्रकार से उसकी सेवा में तत्पर रहे तथा उसकी पूजा आदि करे। शुद्ध भोजन द्वारा उसका स्वागत करे। यह शैवाराधन अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त कराने वाला है। उसी के प्रताप से अधिकतर लोग तीनों लोकों के अधिपति हुए हैं। सातवाँ अतिथि-सम्मान है अर्थात् जो कोई भी द्वार पर भिक्षा हेतु आवे, उसको यथाशक्ति कुछ अवश्य देना चाहिए। इसमें लोक-परलोक दोनों ही बनते हैं। यह कभी भी भुला देने के योग्य नहीं है। आठवाँ उपांग ब्राह्मण का सम्मान है। इसके द्वारा बहुत-से मनुष्यों ने परमपद प्राप्त किया है।''

सदाशिव जी बोले—''हे देवि ! मैं ब्रह्म शरीर हूँ, इसलिए ब्राह्मण की पूजा, उसको मेरे समान समझ कर करनी चाहिए। नौवाँ उपांग तीर्थ तथा क्षेत्र में भ्रमण आदि है। समस्त तीर्थों में से सात पुरियों का बृहद् वर्णन किया गया है। उनमें आनन्द-वन अर्थात् श्री काशीजी का बहुत मान है। इसलिए नियमित रीति के अनुसार प्रेमपूर्वक काशी जी की परिक्रमा करनी चाहिए तथा धर्म शास्त्र के कथनानुसार सब बातें करनी चाहिए। सब तीर्थों का फल उसको प्राप्त होता है, जिसकी मृत्यु काशी में होती है। यही बात वेदों में भी कही गयी है। दसवाँ बड़ा धर्म अहिंसा अर्थात् किसी जीव को कष्ट न पहुँचाना है। जिसने हिंसा को त्याग कर अहिंसा व्रत को अपनाया वह मानो संसार के समस्त धर्मों को प्राप्त कर सका है। यह अहिंसा व्रत अति प्रसन्नता देने वाला है। हे देवि ! जिसके हृदय में तुम वास करती हो वही मुझे अत्यन्त प्रिय है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

लोग कलियुग में ज्ञान-वैराग्य को कम चाहेंगे। उस युग में केवल भक्ति को ही प्रमुख समझना चाहिए। हे पार्वती ! तुमने मुझसे जो कुछ पूछा, मैंने उसका तुम्हें पूरी तरह से उत्तर दिया। इस वृत्तान्त को जो सुनेगा अथवा पाठ करेगा वह भी आनन्द-पद प्राप्त करेगा।''

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सती ने सदाशिव के ऐसे वचन सुन कर अपने को भाग्यवान् समझा। उन्होंने प्रेमपूर्वक उनसे भक्ति के अंग पूछे तथा उपासना के प्रकार, जिसके पाँच अंग हैं, पूछे। शिवजी ने तंत्र शास्त्र का स्तोत्र, कवच, सहस्त्र नाम, पटल तथा पद्धति सहित और अनेक प्रकार यन्त्र, मन्त्र, चेटक आदि गुणों सहित वर्णन किया। उन्होंने प्रेम में वृद्धि करने वाली कथाएँ तथा आनन्द उत्पन्न करने वाले वृत्तान्त, अपने भक्तों की महिमा, जिससे भक्ति में वृद्धि होती है तथा उनके धर्म जैसे नृपधर्म अर्थात् राजनीति, स्त्री धर्म, वर्णाश्रम धर्म, पुत्र धर्म तथा शंकर धर्म आदि का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। सामुद्रिक शास्त्र तथा ज्योतिष आदि शास्त्र भी सती को बताये। इसी प्रकार शिव तथा सती कैलाश में निवास करते रहे और बहुत वर्षों तक विहार करते रहे। इसके पश्चात् सती ने अपने पिता के यज्ञ में शिव का अपमान देख, क्रोध से शरीर को प्राण रहित कर दिया। वही सती फिर हिमाचल के घर उत्पन्न हो कर शिवजी की सेवा में पहुँची।''

नारद जी इतनी कथा सुन कर बोले—''हे ब्रह्मा जी ! सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी सदाशिव, जो किसी के भी शत्रु नहीं हैं, उनके साथ दक्ष ने इस प्रकार से वैर क्यों किया? उनकी बुद्धि क्यों और कैसे भ्रष्ट हो गयी? शिवजी ने अपनी शक्ति को किस प्रकार त्यागा तथा सती ने शिवजी का क्या अपराध किया था जो उन्हें अपना शरीर त्यागने को विवश होना पड़ा? सती का अनादर किस प्रकार हुआ तथा जिन लोगों ने उनका अनादर किया था, उन्हें सती ने भस्म क्यों नहीं कर दिया। वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:40 AM

स्वयं क्यों अपनी देह छोड़ बैठीं? आदिशक्ति होते हुए भी वे इस प्रकार क्यों अन्तर्धान हुईं—यह चरित्र मेरे हृदय में संदेह बढ़ा रहा है। सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि सती दक्ष प्रजापति को अत्यन्त प्रिय थीं, फिर दक्ष ने उनके प्रति अप्रिय व्यवहार कैसे किया?"

नारद की यह बात सुन कर पितामह ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! यह सब उन्हीं शिवजी की महिमा है। इसमें और किसी को दोष कैसे दिया जाए। अस्तु, अब हम तुम्हें वह वृत्तान्त सुनाते हैं, जिस प्रकार श्री शिवजी ने दक्ष प्रजापति की शुद्ध बुद्धि को भ्रष्ट करके, उनसे वैर बढ़ाया था। हे नारद ! एक बार दक्ष प्रजापति ने एक यज्ञ रचाया। उस उत्सव में भाग लेने के लिए सभी देवता तथा ऋषि-मुनि आदि अपनी-अपनी पत्नियों सहित दक्ष के घर पहुँचे। मैं भी अपने सेवकों सहित यज्ञशाला में गया। मुझे देख कर सभी सभासदों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। कुछ देर बाद जब भगवान् सदाशिव भी वहाँ पहुँचे तो हम सब लोग उन्हें देखते ही उठ कर खड़े हो गये तथा हाथ जोड़ कर, बहुत प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे। चारों ओर 'जय शिव, जय शिव' का नाद गूँज उठा। हमने प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आपने इस यज्ञशाला में उपस्थित हो कर हम लोगों के ऊपर अत्यन्त कृपा की है।"

हे नारद ! हम लोगों द्वारा इस प्रकार की गयी स्तुति को सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त उनकी आज्ञा से हम सब लोग यथा स्थान बैठ गये। उस समय हम सभी सभासद अपने को परम धन्य मान कर, मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। इसके कुछ देर बाद ही उस यज्ञशाला में दक्ष प्रजापति भी आ पहुँचे। उन्हें देख कर सब देवता तथा ऋषि-मुनि फिर उठ खड़े हुए तथा दण्डवत्-प्रणाम करने के उपरान्त उनकी स्तुति करने लगे। मैं, विष्णु जी तथा शिवजी अपने आसन पर ज्यों-के-त्यों बैठे रहे। यह देख कर दक्ष ने क्रोध भरी दृष्टि से देखते हुए मुझे प्रणाम किया। फिर अत्यन्त अहंकारपूर्वक अपने आसन को ग्रहण किया। तदुपरान्त जब दक्ष ने यह देखा कि उसके जामाता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:41 AM

शिवजी ने भी उसे प्रणाम नहीं किया है, तब वह अत्यन्त अहंकार में भर कर, शिवजी के प्रति कटु शब्द कहने लगा। शिवजी की माया के वशीभूत हो कर मृत्यु को प्राप्त होने वाला दक्ष, शिवजी की निन्दा करता हुआ, समस्त सभासदों को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार बोला—"हे सभासदो ! आप लोग मेरी बात को मन लगा कर सुनें। इस सभा में उपस्थित बड़े-बड़े देवताओं ने मुझे हाथ जोड़ कर दण्डवत् किया है, परन्तु शिव ने जामाता होते हुए भी, मुझे प्रणाम न करके अपनी मूर्खता का भारी परिचय दिया है। शिव का यह कार्य वेद के विरुद्ध है। न तो इसके माता-पिता का ही कुछ पता है और न इसके कुल-शील के सम्बन्ध में कोई कुछ जानता है। अस्तु, बुद्धिमानों का यह धर्म है कि वे मूर्ख को दण्ड अवश्य दें। यदि वे ऐसा न करें तो संसार में उद्दण्डता बहुत बढ़ जाएगी। इसलिए मैं शिव को शाप देता हूँ और अपने ब्राह्मण-वंश का तेज प्रकट करता हूँ।"

हे नारद ! इतना कह कर दक्ष ने शिवजी को यह शाप दिया कि 'हे शिव ! तुम मूर्खों के समान कर्म करने वाले हो, अतः तुम्हें आज से किसी भी यज्ञ में भाग नहीं मिलेगा।' दक्ष के इस शाप को सुन कर शिवजी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे चुपचाप बैठे रहे; परन्तु उस समय नन्दी से नहीं रहा गया। अस्तु, नन्दीगण ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर दक्ष से कहा—"हे दक्ष ! तूने शिवजी को शाप दे कर अपनी परम मूर्खता का प्रदर्शन किया है। क्या तू यह नहीं जानता कि शिवजी के द्वारा इस सम्पूर्ण सृष्टि का भरण-पोषण होता है? फिर भी जो तू शिवजी को अशुभ कहता है, यह तेरी मूर्खता नहीं तो और क्या है? हे पापी तूने ऐसे परम प्रधान पुरुष की निन्दा की है। अस्तु, मैं तुझे यह शाप देता हूँ कि तेरा यह शिव-निन्दक मुख न रहे और तेरा कोई भी मनोरथ पूर्ण न हो।"

हे नारद ! नन्दीगण के मुख से यह शाप सुन कर दक्ष प्रजापति ने अत्यन्त भयभीत हो उन्हें भी यह शाप दिया—"हे नन्दी ! तुमने मेरा अपमान किया है। अस्तु, संसार में तुम दुखी रहोगे। तुम्हारे स्वरूप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:41 AM

विचित्र होगा। वेद के विरुद्ध आचरण करने के कारण तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो जायेगी और तुम बोझ ढोने के काम में आओगे। यह शाप दे कर दक्ष प्रजापति ने भृगु आदि की ओर जो शिवजी से द्वेष रखते थे, देखा। दक्ष ने इस शाप को सुन कर वे सब बड़े प्रसन्न हुए। यह देख कर नन्दी को फिर क्रोध हो आया। तब उसने अपनी अप्रेमय महिमा को दिखाते हुए, जिन लोगों ने शिवजी की निन्दा की थी, उनकी ओर देखते हुए कहा—''तुम सब लोग व्यर्थ ही ब्रह्मा के अंश में उत्पन्न हुए हो। तुम तत्त्व का ज्ञान नहीं रखते हो और काम, क्रोध, लोभ आदि के वशीभूत हो कर शिवजी के विरुद्ध आचरण करते हो, अतः मैं तुम्हें भी यह शाप देता हूँ कि तुम्हें शुभ कर्मों का फल प्राप्त न होगा और तुम कभी भी परमपद को नहीं पा सकोगे। जो लोग शिवजी से द्वेष रखने वाले हैं, वे सब वेद के विरुद्ध चल कर ब्राह्मण के कर्मों का त्याग कर बैठेंगे। वे महा दरिद्र हो कर कुकर्म करेंगे तथा अन्त में नरकवास पाएँगे।''

हे नारद ! इस प्रकार नन्दीगण ने जब ब्राह्मणों को भी शाप दे दिया, उस समय शिवजी ने हँसते हुए कहा—''हे सभासदो ! हम तुम्हें अब सच्चे ज्ञान का उपदेश करते हैं। उस ज्ञान को सुन कर कोई अप्रसन्न न हो। वेद को अक्षर तथा मंत्र कहा जाता है। उसमें भी सूक्त को अत्यन्त आनन्द देने वाला कहा गया है। इसलिए ज्ञानियों के मन सूक्त में लगे रहते हैं और वे बुद्धिमान् जन अपने मन को सदैव अपने वश में किये रहते हैं। अस्तु, मैं नन्दी से भी यह कहता हूँ कि हे नन्दी ! तुम विद्वान होते हुए भी अपने हृदय में क्रोध को जो स्थान दे रहे हो, यह उचित नहीं है। दक्ष ने मुझे कोई शाप नहीं दिया। यह ठीक है कि उसने जानने योग्य बात को जानने में अपना मन नहीं लगाया है और इस प्रकार सभा में मेरा अपमान कर अपने अज्ञान को प्रदर्शित किया है, फिर भी, तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि इस जगत् के सम्पूर्ण कर्मों को करने वाले हमीं हैं। हमारी इच्छा है और हमीं इसके भीतर बाहर सब स्थानों पर निवास करते हैं। हम शुद्ध और अशुद्ध, भूत प्रेत, देवता,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:41 AM

दैत्य आदि तीनों लोकों के प्राणियों के उत्पन्न करने वाले हैं। अस्तु, तुम्हें यह उचित है कि हमारे इन वचनों को सुन कर अपने क्रोध को दूर कर दो और अब किसी को भी शाप आदि मत दो।" हे नारद ! शिवजी के यह वचन सुन कर नन्दीगण ने अपना क्रोध शान्त कर लिया। तदुपरान्त शिवजी कैलाश पर्वत को चले गए। दक्ष प्रजापति भी उसी क्रोध से भरा हुआ अपने घर चला गया। उस दिन से वह सदैव शिवजी की निन्दा करने लगा। यदि वह किसी शिवभक्त को देख लेता था तो उसे बहुत क्रोध आ जाता था। शिवजी की माया ऐसी अपरम्पार है कि वह कब किससे क्या करा बैठेगी, इसका कोई पता नहीं चलता।"

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शिवजी की लीला अत्यन्त ही पवित्र एवं शुद्ध है, जिसको पूर्ण रूप से वेद तथा पुराण भी नहीं जानते हैं। अब मैं तुम्हें शिवजी के चरित्र के विषय में और बताता हूँ। एक बार शिवजी अपनी पत्नी सती सहित तीनों लोकों के अवलोकनार्थ चले। पृथ्वी पर घूमते-घूमते वे दंडक वन में पहुँचे। उन्होंने वहाँ रामचन्द्र जी को लक्ष्मण सहित देखा कि वे चारों ओर दुःख से विलाप करते हुए सीता जी को ढूँढ रहे हैं। उन्होंने रामचन्द्र जी को देख कर प्रणाम किया, क्योंकि वे पहले विष्णु को ऐसा वरदान दे चुके थे। शिवजी फिर जय कह कर आगे बढ़े तथा उचित समय न जान कर, उनसे कुछ वार्ता न की। इसलिए सती ने जब यह हाल देखा कि शिवजी अपने परम भक्त राम को इस प्रकार छोड़ कर आगे बढ़ गये तो वे बोलीं— "हे अनादि सर्वोपरि ब्रह्म आपने ब्रह्मा, विष्णु, सुर, मुनि तथा सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति की है। यह सब आपकी सेवा, उपासना करते हैं। फिर आज दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो वन में मिले, तो आपने उनको

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रणाम क्यों किया? मेरी समझ में नहीं आता कि इसका कारण क्या है? मुझे इसकी बहुत चिन्ता है।''

शिवजी ने जब सती को ऐसी चिन्ता में मग्न देखा तो वे बोले—''हे सती ! रामचन्द्र जी रमा के पति विष्णु हैं, जो संसार के पालन का अधिकार रखते हैं। उनका अवतार भक्तों के लिए ही है।'' फिर शिव ने सती को उनके अवतार लेने का कारण बताया; परन्तु सती का मन फिर भी सन्तुष्ट न हुआ। तब शिवजी ने विष्णु के अवतार के अनेक चरित्र सती को सुनाये, परन्तु फिर भी उन्हें कोई नहीं भाया और न उन्हें विश्वास ही हुआ। यह देख कर शिवजी ने पुनः उनसे कहा—''हे सती ! यदि तुम को विश्वास न हो तो स्वयं जा कर परीक्षा क्यों नहीं करतीं? तुम वही करो, जिससे तुम्हारा सन्देह दूर हो सके। मैं यहाँ वृक्ष की छाया में बैठा तुम्हारी तब तक प्रतीक्षा करूँगा, जब तक तुम परीक्षा ले कर लौट न आओगी।'' सती शंकर की आज्ञा पा कर सन्देहयुक्त चलीं। उन्होंने मन में विचार किया कि मैं किस प्रकार उनकी परीक्षा लूँ? बहुत सोचने के पश्चात् निश्चय किया कि मैं रानचन्द्र जी के सम्मुख श्री सीता जी का रूप धारण कर जाऊँ। यदि वे वास्तव में विष्णु होंगे तो मुझे अवश्य पहचान लेंगे और यदि केवल राजपुत्र होंगे तो नहीं पहचान सकेंगे। यह विचार कर वे सीता के रूप में हँसती हुई श्री रामचन्द्र जी की ओर गयीं। लक्ष्मण ने जब सती को इस स्वरूप में देखा तो आश्चर्य में आ कर जाना कि यह सती है, परन्तु पूर्ण ज्ञान न होने के कारण वे कुछ न बोले, परन्तु जब रामचन्द्र जी ने सती को ऐसे छल स्वरूप में देखा तो वे हँस पड़े तथा 'शिव-शिव' कहते हुए बोले—''जिसका ध्यान करने से सम्पूर्ण दुःख तथा भ्रम दूर हो जाते हैं और जिसके हृदय में सदाशिव का स्थान है, आप ने उसे धोखा देने का प्रयत्न किया है, वह सब शिव की ही माया है। धन्य है कि ऐसी माया को जो सब को, इस प्रकार नचाती है।'' इसके पश्चात् रामचन्द्र जी ने अत्यन्त नम्रता के साथ अपना पिता सहित नाम लेकर पूछा ''शिवजी कहाँ हैं तथा हे माता ! तुम उनसे अलग वन में अकेली

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:41 AM

क्यों घूम रही हैं? तुमने अपना स्वरूप त्याग कर, यह रूप क्यों धारण किया है?'' सती यह सुन कर आश्चर्यचकित हुईं तथा उन्होंने सदाशिव का ध्यान कर रामचन्द्र जी को, विष्णु का अवतार जाना। फिर वे अपना रूप धारण कर, रामचन्द्र जी से बोलीं अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप विष्णु के अवतार हैं, जिन्होंने राजा दशरथ के यहाँ अवतार लिया है। परन्तु एक शंका है कि वह आपसे पूछती हूँ कि शिवजी आपका चतुर्भुजी स्वरूप देख कर कभी इतने प्रसन्न नहीं हुए, जितने यह स्वरूप देख कर आज प्रसन्न हुए हैं। अत्यन्त प्रेम से उनके अश्रु बह चले तथा वे आपकी प्रशंसा करने लगे। आप मुझे सत्य बताएं कि इसका मुख्य कारण क्या है?''

सती के मुख से ऐसे वचन सुन कर रामचन्द्र जी प्रेम विह्वल हो गये तथा उनके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। उन्होंने प्रेम निमग्न हो कर चाहा कि उसी समय चल कर शिव को देखें; परन्तु उचित समय न जान कर तथा सती की आज्ञा पा कर उन्होंने केवल शिव का ध्यान ही किया। फिर रामचन्द्र जी ने कहा—''आज मैंने उसे देखा जो तीनों लोकों में प्रकट दिखाई नहीं देता है। यह मेरा सौभाग्य है कि मैंने उस स्वरूप को देखा है। मेरा भाग्य धन्य है कि उनकी मेरे ऊपर ऐसी कृपा है, जिनका ध्यान सिद्ध, मुनि, देवता आदि करते हैं तथा वेद स्तुति में मग्न रहते हैं, जिनकी कृपा से व्याध, किरात, नन्दा, पंचक की स्त्री हर्यक्षा तथा इन्द्रद्युम्न को परम पद प्रदान किया है। शिवजी ने किसके ऊपर कृपा नहीं की है?'' श्री रामचन्द्र इतना कह कर सती से बोले— ''हे देवि ! शिवजी ने जो मुझे प्रणाम किया, उसका यही एक मात्र कारण है कि वे मुझ पर प्रसन्न हैं।''

बीसवाँ अध्याय

रामचन्द्र जी ने कहा—''हे देवि ! एक बार शिवजी ने विश्वकर्मा को बुला कर हमारी गोशाला में एक अति सुन्दर मन्दिर बनाने की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आज्ञा दी तथा उस मन्दिर में एक उत्तमोत्तम सिंहासन बनाने का आदेश दिया। इस प्रकार जब मन्दिर बन कर तैयार हो गया तो शिवजी ने सम्पूर्ण देवताओं, मुनियों तथा ब्रह्मा को आमन्त्रित कर, वहाँ पर एक उत्सव का आयोजन किया। शिवजी ने मुझे भी वैकुण्ठ से लाकर वहाँ बैठाया तथा सब जड़ी-बूटी तथा धन-द्रव्य, वस्त्र आदि एकत्र कर, मेरे विष्णु स्वरूप का अभिषेक करना चाहा। मेरे सिर पर एक बड़ा ऊँचा छत्र रख कर तथा मुझे सिंहासन पर बैठा कर उत्तम वस्त्र पहनाये और रत्न जड़ित मुकुट मेरे सिर पर बँधवाया। इसके पश्चात् लक्ष्मी जी सहित मेरा अभिषेक किया। उस समय आपने भी लक्ष्मी का बहुत आदर किया। देव नारियाँ गान करने लगीं। अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। तब शिवजी ने अपने कमल रूपी मुख से ऐश्वर्य से पूर्ण वचन कहे। फिर उन्होंने मुझे सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी बना दिया। अनेक आशीर्वाद दिए तथा स्वयं मेरी स्तुति की। फिर ब्रह्मा से कहा कि तुम भी इनको प्रणाम करके उनकी बड़ाई करो तथा समझो कि आज से विष्णु तुम सब के स्वामी हुए। वे सब को आनन्द प्रदान करेंगे तथा तुम सब की इच्छाओं की पूर्ति करेंगे।

शिवजी का यह आदेश सुन कर सबों ने मुझे प्रणाम किया। चारों ओर से जय-जयकार का शब्द गूँजने लगा। फिर शिव ने मुझे वरदान दिया "हे विष्णु ! तुम सब के स्वामी हो कर, सब के कष्टों को दूर करो। तुम्हारी तीनों लोक पूजा करेंगे। धर्म, काम तथा मोक्ष देने वाले हो कर बड़े विजयी वीर बनोगे। हम स्वयं भी तुम पर विजय प्राप्त न कर सकेंगे। तुम ब्रह्मा के भी स्वामी हो। हमने तुम को तीनों लोक प्रदान किये, अब तुम अवतार लेकर तीनों लोकों का पालन करो। हम तुम्हारे भक्तों को आनन्द दिया करेंगे तथा उनको मुक्त करेंगे। साथ ही तुम्हारे शत्रुओं का वध कर, हर प्रकार से तुम्हारी सहायता किया करेंगे। ब्रह्मा हमारी दाहिनी तथा तुम बायीं भुजा हो। तुम्हारे अवतार, जो कि राम एवं कृष्ण के रूप में होंगे, उनको हम स्वयं जा कर देखेंगे तथा संसार के देखने के लिए सदैव उनकी भक्ति किया करेंगे।" हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:41 AM

माता ! तब से जहाँ शिवजी निवास करते हैं, मैं भी वहीं स्थित रहता हूँ। शिवलोक में ही विष्णुलोक है, जिसको गोलोक भी कहते हैं। मैं शिव के आदेशानुसार ही अवतार लेता हूँ। मेरे मत्स्य आदि अनेक अवतार हो चुके हैं। मैंने उन्हीं अवतारों में संसारी कार्य पूरे किये हैं।

हे देवि ! इस समय मेरा अवतार चार रूपों में हुआ है। राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न। उन चारों का मन एक है, परन्तु शरीर अलग-अलग हैं। मैं अपने पिता की आज्ञा से वन में आया हूँ, क्योंकि उन्होंने कैकेई को वरदान दिया था। मेरे साथ लक्ष्मण तथा सीता भी आयी थीं। रावण सीता को हर ले गया है। उसी को हम ढूँढ़ते हैं। आपके दर्शन से मेरे सब कार्य सिद्ध होंगे। इस प्रकार मुझको तो सीता हरण अत्यन्त शुभ हुआ, जिससे आपके चरणों के दर्शन प्राप्त कर सका। मुझे पूरा विश्वास है कि अब मुझे शीघ्र ही सीता का पता लग जायेगा तथा मैं शत्रु पर विजय प्राप्त कर, सीता को प्राप्त करूँगा। संसार में उससे महान् कौन है, जिसके ऊपर शिवजी तथा आपकी कृपा हो। तीनों लोक में शिवजी के समान कोई कृपा करने वाला नहीं। उनके अनेक अवतार हैं। उन्होंने पापियों का बहुत उद्धार किया है तथा मैं उनके चरित्र कहाँ तक कहूँ?'' यह कह कर रामचन्द्र जी ने सती से विदा मांगी इस प्रकार सती से आज्ञा तथा आशीर्वाद प्राप्त कर, शिवजी का ध्यान धर रामचन्द्र जी आगे चले तथा उसी प्रकार अपने कार्य में संलग्न हुए।

इक्कीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुन कर नारद जी ब्रह्मा से बोले—''हे जगत् पिता ! इसके पश्चात् शिवजी ने जो-जो कार्य किये उन पर भी प्रकाश डालिए।'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! सती को रामचन्द्र का वृत्तान्त सुन अत्यन्त आनन्द हुआ, परन्तु उन्हें अपने कर्म का विचार कर बहुत चिन्ता हुई। वे हृदय में अति भयभीत तथा दुःखी हो कर लौटीं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मार्ग में उन्होंने सोचा कि मैंने शिव की अवज्ञा की तथा रामचन्द्र के विष्णु होने पर अविश्वास किया, अब मैं शिव को क्या उत्तर दूँगी? सती इस प्रकार सोचती हुई शिव के निकट पहुँची तथा उन्हें प्रणाम किया। शिवजी ने कुशल-क्षेम पूछ हँस कर कहा—"हे सती ! तुमने रामचन्द्र की जिस प्रकार परीक्षा की, वह सब हमें बताओ? सती ने यह सुन कर लज्जा से सिर नीचा कर लिया और कोई उत्तर न दिया। तब शिवजी ने ध्यान धर कर देखा तथा जो चरित्र सती ने किया था, उसे जाना। उन्होंने अपनी पहली बात को, जो विष्णु को अभिषेक के समय कही थी, स्मरण कर अत्यन्त क्रोध किया और हृदय में निश्चय किया कि अब यदि मैं सती से प्रेम करता हूँ तो मेरा प्रथम वाक्य झूठा सिद्ध होता है। सती जैसी स्त्री को छोड़ा नहीं जा सकता, यदि छोड़ता नहीं हूँ तो जो मैं पहले कह चुका हूँ वह झूठा होता है। अस्तु, शिवजी ने पुनः सोचा और निश्चय किया कि अब सती से भेंट न होगी। मैं अपने वचन को झूठा नहीं करूँगा। यह विचार कर शिव सती को छोड़ अपने स्थान को चल दिये। जिस समय वे वहाँ से चले, तब आकाश से यह शब्द हुआ कि हे शिव ! आपने अपने वचन का पूर्ण रूप से पालन किया। आपके समान दूसरा कौन है, जो इस प्रकार अपने वचन का पालन करे? यह शब्द सुन कर सती भयभीत हो गयीं। उन्होंने कुछ सोच कर शिव से पूछा—"हे प्रभो ! आपने क्या निश्चय किया है? आप सत्य बोलने वाले हैं। अस्तु आप मुझसे सत्य-सत्य कहिए? सती के बार-बार पूछने पर भी शिवजी ने यह बात छिपा रखी। यह देख कर सती को विश्वास हो गया कि शिवजी ने उन्हें त्याग दिया है।

कुछ देर के पश्चात् सती शिवजी से बोलीं—"हे नाथ ! मैंने जो कुछ भी किया, वह अज्ञानता तथा मूर्खतावश किया है। अब आप दूध और पानी अलग करके देखें, क्योंकि प्रीति की यही रीति है। मैं स्वयं ही अपने कर्म पर बहुत लज्जित हूँ, परन्तु शिवजी ने उस बात को प्रकट करना उचित न समझा। वे अनेक प्रकार की कथा आदि के सुनाने में समय टालते रहे, परन्तु अन्त में उनको सत्य बात कहनी ही पड़ी। इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

प्रकार वे कैलाश पर्वत पर पहुँचे। शिवजी मन में विचार कर बरगद के नीचे आसन लगा कर बैठ गये तथा अपने स्वरूप का ध्यान करने लगे। इधर सती मन्दिर में अत्यन्त उदास हुईं। उनका एक-एक दिन युग के समान बीतता था, परन्तु सिवाय उनके और किसी को यह हाल प्रतीत न हो पाया। दिन-दिन दुःख बढ़ता ही जाता था। वे सोचतीं कि यह दुःख कहने के योग्य नहीं। पता नहीं, इस दुःख सागर से मैं कब पार हूँगी? मैंने शिव का कहा न माना, यह उसी का परिणाम है। तीनों लोकों में ऐसा कौन है जो शिव की अवज्ञा से आनन्द प्राप्त कर सके? फिर वे मन-ही-मन कहतीं—"हे शिव ! आपका कोई दोष नहीं है। मैंने जो कुछ भी किया, उसका फल प्राप्त कर रही हूँ। हे भाग्य ! तुझे ऐसा न चाहिए था कि मुझे शिव के विरुद्ध किया। हे ब्रह्मा ! ऐसे संकट के समय में तुम मेरी मदद करो, ताकि मेरा शरीर बदल जाए। हे मृत्यु ! मैं तुमसे निवेदन करती हूँ कि तुम मुझे इस संसार से उठा लो।"

शिवजी को इस प्रकार समाधि में सत्तासी हज़ार वर्ष व्यतीत हुए। इतने समय के पश्चात् जब वे समाधि से जागे तो उन्होंने सती को अपने सम्मुख खड़ा पाया। शिवजी ने उनको अपने सम्मुख बैठाया तथा उस बात को समाप्त कर अन्य बातें आरम्भ कीं, जिससे सती को कोई दुःख न हो। इस प्रकार वे प्रसन्न रहने लगीं। शिव ने भी अपने प्रण को न तोड़ा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सती को पिछली बात का कुछ दुःख न हुआ तथा वे सभी बातें भूल गयीं। शिवजी प्रत्येक शरीर में हैं। बहुत-से मुनि यह कहते हैं कि शिव और शक्ति का बिछोह यह पीछे के वचन हैं। शिव के चरित्र हर कल्प के अलग-अलग हैं। कल्प भेद का हाल किसको ज्ञात है? वे जो कुछ करें, सब उचित है। इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए। शिव तथा शक्ति का भेद अत्यन्त गुप्त एवं कठिन है, उसको कोई नहीं जान सकता। शेष तथा विष्णु भी उनके चरित्र का वर्णन करने में असमर्थ हैं। यह जान कर भक्तों को उचित है कि सन्देह रहित हो कर उनकी पूजा आराधना करें। हे नारद ! इस प्रकार जब बहुत समय व्यतीत हो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

गया, तब शिव ने अपना वह चरित्र किया, जिसको देख कर सब की बुद्धि भ्रमित हो गयी।''

❁❁❁

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब हम ने दक्ष प्रजापति का अभिषेक कर उसको सब प्रजापतियों के अधिकार प्रदान किये तो वह अहंकार में लीन हो गया, जिसके कारण उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी। उस समय दक्ष ने सम्पूर्ण सामग्री एकत्र कर, प्रजापति यज्ञ करने की इच्छा प्रकट की। यही इच्छा लेकर वह कनखल तीर्थ गया। वहाँ उसने सब मुनियों को बुलाया। व्यास, ककुभ, गौतम, भारद्वाज, कश्यप, अंगिरा, वशिष्ठ, वामदेव, जैमिनि, पिप्पल, पराशर, भृगु, दधीचि, नारद आदि को बुलाया। इनके अतिरिक्त संसार भर के समस्त देवता तथा ब्राह्मण आ कर वहाँ उपस्थित हुए। अग्नि भी अपने गणों सहित यज्ञ में पहुँचे। अन्य देवता भी उसके बुलावे पर, विष्णु सहित प्रसन्नतापूर्वक यज्ञ में सम्मिलित हुए। देवराज इन्द्र अपनी पत्नी शची सहित ऐरावत पर चढ़ कर वहाँ पहुँचे। इन्द्र पावक मेघ पर, यम भैंसे पर, वायु हिरण पर, तथा शिव के मित्र कुबेर पुष्पक विमान पर चढ़ कर वहाँ आये। वरुण भी अपने वाहन पर आरूढ़ हो कर यज्ञशाला में पहुँचे। सूर्य अपनी पत्नी सहित तथा चन्द्रमा भी अपनी पत्नी रोहिणी सहित वहाँ जा उपस्थित हुए।

दक्ष ने सब को उपस्थित देख कर अति आनन्द में मग्न हो, सब का आदर सत्कार किया और सब के निवास के लिए विश्वकर्मा द्वारा बनाये हुए मन्दिर बता दिये, जिनमें सब ने निवास किया। उस समय सती जी गन्धमादन पर्वत पर अपनी सखियों सहित क्रीड़ा कर रही थीं। उन्होंने देखा कि चन्द्रमा अपनी पत्नी सहित चला जा रहा है। सती ने अपनी विजया नाम की सखी को आदेश दिया कि तुम चन्द्रमा से जा कर पूछो कि वह कहाँ जा रहा है। सखी की आज्ञानुसार विजया ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

चन्द्रमा से जा कर पूछा कि सती पूछती है कि तुम अपनी पत्नी सहित ऐसे ठाठ से कहाँ जा रहे हो? यह बात सुन कर रोहिणी ने कहा कि सती के पिता दक्ष प्रजापति ने कनखल में एक यज्ञ का आयोजन किया है। वहाँ बहुत बड़ा उत्सव है। उनके निमन्त्रण पर समस्त देवता वहाँ गये हैं। ब्रह्मा तथा विष्णु भी वहाँ शोभायमान हैं। तुम तो इस प्रकार पूछती हो, जैसे कोई मूर्ख हँसी से पूछे। इसका क्या कारण है कि तुमको इस यज्ञ के विषय में कुछ भी पता नहीं है? वहाँ समस्त देवता अपना-अपना भाग लेने गये हैं, तुम वहाँ अपनी इच्छा से नहीं गयीं या दक्ष ने तुम को बुलाया ही नहीं है। विजया यह सुन कर लौट आयी तथा रोहिणी द्वारा कहे गये शब्द सती जी को कह सुनाये। इस समाचार को सुन कर सती जी को अत्यन्त दुःख हुआ। वे अपने मन में सोचने लगीं कि क्या माता-पिता ने मुझको भुला दिया है जो मुझे और शिवजी को उन्होंने नहीं बुलाया? ऐसा सोच कर सती उसी समय शिवजी के पास गयीं। उधर चन्द्रमा भी अपनी स्त्री रोहिणी सहित दक्ष के पास गया।

हे नारद ! दक्ष के यज्ञ की सजावट तथा उस समय के आनन्द, जो उस यज्ञ में मनाये जा रहे थे, अवर्णनीय हैं। जब सब मुनि एवं देवता कनखल में, जो कि हरिद्वार में है, आ गए; तब दक्ष ने यज्ञ आरम्भ किया। दक्ष अपनी पत्नी सहित यज्ञ में प्रवृत्त हुआ। भृगु मुनि को यज्ञ कराने वाला आचार्य बनाया गया। दक्ष ने उस यज्ञ में सब को उपस्थित देख, शिव से शत्रुता स्वीकार की। उस समय मेरे पुत्र दधीचि ने सदाशिव को यज्ञशाला में न देख, आश्चर्य से कहा—"इस उत्सव में समस्त देवता, मुनि तथा ब्रह्मा के पुत्र आदि आये हैं, फिर भी मैं निश्चय से कहता हूँ कि यह सभा सदाशिव के बिना अशोभित है। वे शुभ कर्मों के मूल हैं, वे सब देवताओं के स्वामी हैं। क्या कारण है कि वे यहाँ नहीं हैं? तुम लोग शिव को क्यों भूल गये? हे दक्ष ! तुम्हारी बुद्धि इस प्रकार क्यों भ्रष्ट हो गयी? अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। तुम सब देवताओं, मुनियों तथा ब्रह्मा एवं विष्णु को साथ लेकर, शिव को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

प्रसन्न करके यहाँ ले आओ। साथ में सती जी को भी प्रसन्न करके यहाँ लाओ। यह निश्चय समझ लो कि बिना शिव के यहाँ आये, यह यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। आश्चर्य है, ऐसे देवता को, जिसका स्मरण करने अथवा नाम लेने से सम्पूर्ण कार्य सिद्ध होते; तुम लोग क्यों भूल गये तथा उन्हें यहाँ क्यों नहीं बुलाया? मैं फिर कहता हूँ कि जब तक शिव यहाँ न आएंगे, यज्ञ पूर्ण न होगा।''

दधीचि के ऐसे वचन सुन कर दक्ष अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा हँस कर बोला—''हे दधीचि ! यहाँ पर सब देवताओं के स्वामी बैठे हैं। सब धर्म, वेद तथा शुभ कर्म पूर्ण रूप से उपस्थित हैं। सब के स्वामी विष्णु भी हमारे इस यज्ञ में विराजमान हैं। अब क्या शेष रह गया है सो मुझे बता दो। मेरे इस यज्ञ में ब्रह्मा, वेद, धर्मशास्त्र, पुराण तथा उपनिषद् भी अपने-अपने गणों सहित आ चुके हैं। मेरा यह सौभाग्य है कि इन सब ने मुझ पर बड़ी कृपा की है। आज मेरे यहाँ इन्द्र, समस्त देवताओं के साथ विष्णु भगवान् तथा तुम्हारे समान अनेक मुनि विराजमान हैं, अब फिर शिव के आने की क्या आवश्यकता है? तुम सब मिल कर यज्ञ को पूरा करो। मैंने अपने भाग्यवश तथा ब्रह्मा की आज्ञा मान कर, अपनी कन्या का विवाह शिव के साथ कर दिया। यद्यपि यह विवाह अनुचित हुआ, क्योंकि वह कुलवान न था। शिव संसार से विरक्त, महा अहंकारी है। उस पर भी वह माता-पिता विहीन है। इसलिए मैंने ऐसे शिव को इस यज्ञ में बुलाने की आवश्यकता न समझ कर नहीं बुलाया है। मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम पुनः ऐसे वचन मुख पर न लाना। अब यही उचित है कि तुम सब मिल कर मेरा यज्ञ पूर्ण करके, मुझे आनन्द प्रदान करो।''

दक्ष के ऐसे अहंकारपूर्ण वचन सुन कर किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया, सब शान्त रहे। उनका यही शान्त रहना सब के लिए महापाप हुआ, क्योंकि सभी ने अपने कानों से शिव निन्दा सुनी। इस पर दधीचि ने पुनः कहा कि बिना शिव के यह यज्ञ कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता। तुम सब धोखे में हो जो इसका अनुसरण कर रहे हो। यह दक्ष बड़ा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

अधर्मी तथा मूर्ख है, जो शिव की निन्दा कर रहा है। यदि इसने शिव को नहीं बुलाया तो यह यज्ञ भी पूरा नहीं होगा। जो इस यज्ञ में रहेगा वह भी दुःख का भागी होगा। यह कह कर दधीचि उस सभा से उठ कर चले गये तथा बहुत से मुनि भी दुःखी हो कर वहाँ से उठ गये। ऐसे मुनियों को अपनी सभा से जाते देख दक्ष ने अत्यन्त प्रसन्नता से कहा—यह बहुत अच्छी बात हुई जो शिव के प्रेमी तथा भक्त, जो मुझको दुःख देते थे, उठ कर चले गये। अब तुम सब मिलकर मेरे इस यज्ञ को पूर्ण करो। दक्ष की बात सुन कर यज्ञ का कार्य प्रारंभ हो गया।

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! सती ने अपने पिता के घर यज्ञ का हाल सुन कर चाहा कि मैं भी वहाँ जाऊँ। वह इसी इच्छा से अकेली सदाशिव के पास पहुँचीं। वहाँ पहुँच कर देखा कि सेवक गण शिवजी की सेवा में संलग्न हैं। वे दिगम्बर केवल रुद्राक्ष धारण किये हुए थे। उनके शीश पर जटाएँ लटक रही थीं। शरीर पर भस्म शोभित थी। शिव का ऐसा स्वरूप देख, सती ने उन्हें प्रणाम किया। सती को वहाँ देख कर शिवजी ने बड़े प्रेम के साथ उन्हें बैठा लिया। यद्यपि शिव सब कुछ जानते थे, फिर भी उन्होंने संसारी लीला के निमित्त वहाँ आने के कारण पूछा। अब सती अत्यन्त प्रसन्न हो कर बोलीं—"हे प्रभो ! क्या आपको यह अच्छा नहीं लगा कि दक्ष ने यज्ञ प्रारम्भ किया है? मित्रों तथा बान्धवों की भेंट महाधर्म है। इसी से अच्छे लोग भले बन्धुओं की संगति स्वीकार करते हैं तथा आनन्द प्राप्त करते हैं। अस्तु, आपको यह उचित है कि वहाँ चल कर यज्ञ को पवित्र करें तथा मुझे भी अपने साथ ले जा कर मेरी इच्छा की पूर्ति करें। मेरे पिता के यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु आदि सब देवता पहुँच गये हैं; परन्तु आप वहाँ नहीं गये। शायद यह यज्ञ आपको अच्छा मालूम नहीं हुआ। आप वहाँ न जाने के कारण मुझ से विस्तारपूर्वक कहिये। मैं आपकी दासी हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

मैं अपने पिता के घर जाऊँ, इसलिए आप मुझे अपने साथ लेकर वहाँ चलिये।''

शिवजी ने सती के वचन सुन कर मुस्कुराते हुए कहा—''हे सती ! तुम्हारे पिता दक्ष ने मुझ को यज्ञ का निमन्त्रण नहीं भेजा है तथा शत्रुता रख कर मेरा अनादर किया है। तुम्हीं सोचो, वहाँ केवल तुम्हीं को न बुला कर अन्य सब लड़कियों को बुलाया है, इसका एकमात्र कारण केवल शत्रुता ही है। ऐसे स्थान पर बिना बुलाये जाना कहाँ तक उचित है यद्यपि धर्मशास्त्र कहता है कि अपने पिता, मित्र, गुरु तथा स्वामी के घर बिना बुलाये भी जाना उचित है, परन्तु उनके मन में शत्रुता भी नहीं होनी चाहिए। किसी के घर बिना बुलाये जाना मृत्यु से अधिक तथा अनादर एवं लोक निन्दा का कारण होता है।'' सती यह सुन कर बोलीं—''हे स्वामी ! आप इस वैर का कारण तो बतावें।'' शिवजी ने पिछला सब वृत्तान्त सुना कर कहा। ''इसलिए उचित है कि तुम दक्ष यज्ञ में न जाओ। नहीं तो तुम को बड़ा कष्ट उठाना पड़ेगा।'' शिव ने सती को अनेक प्रकार से समझाया, परन्तु सती को यह अच्छा न लगा। वह दक्ष पर अति अप्रसन्न एवं कुपित हो कर कहने लगीं—''हे शिवजी ! आप तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करने वाले हैं। सभी देवता आपका स्मरण करते हैं। आप यज्ञ-कर्म तथा यज्ञ के फल हैं। आप की दृष्टिमात्र से ही तीनों लोक तृप्त हो जाते हैं। आपसे यज्ञ पूर्ण तथा पवित्र होता है। मेरा मूर्ख पिता ने आपको अपने यज्ञ में नहीं बुलाया सो मुझे चिन्ता है कि उसका यज्ञ किस प्रकार पूर्ण होगा? मेरा पिता इस प्रकार क्यों अज्ञानी हो गया, मुझे बड़ी चिन्ता है। यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं जा कर उसके शील या दु:शील अथवा उसके वैर भाव को देखूँ।''

हे नारद ! शिवजी को तो कुछ और ही लीला करनी थी, इसलिए उन्होंने सती के आग्रह को न टाल कर, उन्हें नन्दी पर सवार हो कर, यज्ञ में जाने की आज्ञा दे दी। उन्होंने सती के साथ साठ हजार गण दे कर, उन्हें विदा किया। अच्छे-अच्छे वस्त्र आभूषण दिये। सती का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:42 AM

स्वरूप भी अति उत्तम कर दिया। हे नारद ! शिव ने ऐसी माया की कि सती बड़ी धूमधाम से चलीं। सती ने उस समय अपनी जैसी शोभा प्रकट की, वैसी किसी समय में भी प्रकट न की थी। उनके चलने के समय बड़ा शब्द हुआ। कोई गण उछलता-कूदता था। अन्य गण भी सब को प्रसन्न तथा आनन्दित करते हुए चले, कोई सती का प्रताप-वर्णन करता था, कोई शिव की महिमा का गुण-गान करता था। इस प्रकार सब अत्यन्त प्रसन्न हो, अनेक प्रकार की गति से चलते, सती की सेवा करते, दक्ष के घर जा पहुँचे।''

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इस प्रकार सती दक्ष से भयभीत यज्ञशाला में पहुँची, परन्तु वहाँ किसी ने उनसे बात तक न पूछी। न किसी ने यही जाना कि यह जगन्माता हैं। दक्ष ने तो अहंकार में उनसे कुशल क्षेम तक न पूछी। यह देख कर सती की बहनों ने, जो वहाँ उपस्थित थीं, हँसकर सती की निन्दा की। सती ने यज्ञ में सब देवताओं का स्थान देखा, परन्तु वहाँ शिवजी का स्थान न देखा। तब वे मन में अत्यन्त क्रोधित हुईं। उन्होंने अपना अनादर देख शिवजी का स्मरण किया तथा सोचा कि अपने क्रोध से दक्ष को भस्म कर डालें; फिर उन्होंने सोचा कि यह उचित नहीं होगा। क्योंकि जब दक्ष ने कठिन तपस्या करके मुझको प्रसन्न किया था, तब मैंने उससे कहा था कि जब मैं आप में कुछ गर्व तथा अपने मान की कमी देखूँगी, तो उसी समय अपने शरीर को त्याग दूँगी। दक्ष ने भी उस बात को मान लिया था। अब वही समय आ गया है। अस्तु, सती ने पुनः इस बात पर विचार कर बहुत दुःख प्रकट किया और मन में कहा कि मुझे बड़ा दुख है जो शिवजी बिना पुत्र के ही रहे और उन्हें मेरे विवाह का कोई फल न मिला। मेरे सिवाय और कौन ऐसी स्त्री है, जो मेरे पीछे शिवजी को प्रसन्न रख सकेगी। फिर शिव भी तो दूसरी स्त्री को अंगीकार न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

करेंगे। अब मैं अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार अपने शरीर को त्याग कर हिमाचल पर्वत के घर उत्पन्न हूँगी तथा हिमालय की पत्नी मुझे अपनी पुत्री समझेगी और मैं उसको अपनी माता समझ कर आनन्द प्रदान करूँगी। तब मैं शिवजी के साथ पुनः ब्याही जाऊँगी। उस समय मेरी सब लज्जा समाप्त हो जाएगी तथा संसार के मनोरथ पूर्ण होंगे। सती ने यह सब बातें सोच कर दक्ष से क्रोधित हो कर कहा—''हे पिता ! आपने शिव को निमन्त्रण क्यों नहीं भेजा? क्या आपकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। जिन मेरे स्वामी शिव से तीनों लोक पवित्र होते हैं, आपने उन्हें नहीं बुलाया। बिना शिवजी के सब कर्म असिद्ध हो जाते हैं। आपने ऐसे शिव को क्यों नहीं पहचाना?'' फिर वे सनकादिक, ब्रह्मा तथा विष्णु से बोलीं—''आप सभा में बिना शिव के क्यों आए?'' इस प्रकार उन्होंने सब से ऐसी बातें कहीं तथा शिवजी का वर्णन कर, एक-एक को अलग-अलग लज्जित किया। उन्होंने विष्णु से कहा—''क्या आप शिव को नहीं जानते, जिन्हें वेद सगुण एवं निर्गुण कह कर बखानते हैं? मैंने आपको अनेक बार समझाया है, फिर भी आप धर्म मार्ग को भ्रष्ट करते हैं। हे ब्रह्मन् ! आप भी बुद्धिहीन हो गये? क्या आप शिव के अपार बल को नहीं जानते? यद्यपि शिव ने आपको अनेक बार कहा है, फिर भी आप में बुद्धि नहीं आयी। आपके पाँच मुख थे। आपने शिव की निन्दा की, इसीलिए आपके चार मुख शेष रहे। हे विष्णु ! क्या आप शिव की महिमा भूल गये, जबकि उन्होंने अम्बर को जला दिया था? यह जान कर भी आप इस यज्ञ में क्यों सम्मिलित हुए हैं?''

सती ने फिर देवताओं से कहा—''हे देवताओ ! आपने अपनी शुद्ध बुद्धि क्यों नष्ट कर दी? मैं समझ गयी, आप सब बड़े अभागे हो जो बिना शिव के इस यज्ञ में चले आये। हे भृगु, अत्रि, वशिष्ठ ! आपने यह बात बुद्धि के विरुद्ध क्यों की? आपको तो शाप देने की महान् शक्ति है। क्यों तुम भी शिवजी की शक्ति को नहीं जानते? एक बार भगवान् सदाशिव मगर का रूप धारण कर द्रविड़पुर को गये थे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

और वहाँ उन्होंने भक्त की परीक्षा लेने के लिए कुछ लीलाएँ कीं, परन्तु मुनियों ने उन लीलाओं के रहस्य को न जान कर, शिवजी को शाप दे डाला और उस शाप का प्रभाव उन्हीं के लिए प्रतिकूल पड़ा। उस समय जबकि तीनों लोक जलने लगे, तब शिवजी ने अपने लिंग को पृथ्वी पर गिरा दिया था, जिसके कारण वे पुनजीर्वित हो गये थे।''

इतना कह कर सती ने अत्यन्त क्रुद्ध ब्रह्मा तथा विष्णु से इस प्रकार कहा—''हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! पिता जी ने जो कुछ किया है उसके मूल में तुम दोनों हो, क्योंकि तुम दोनों शिवजी के न आने पर भी इस यज्ञ में सम्मिलित हुए हो। अस्तु, तुमने जैसा कार्य, किया उसका फल तुम्हें अवश्य भोगना पड़ेगा। आश्चर्य है कि जिन शिवजी द्वारा चारों वेद तथा सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, उन्हें तुम बिल्कुल नहीं पहचान सके। यदि तुम दोनों दक्ष के इस यज्ञ में नहीं आते तो दक्ष को इतना अहंकार कभी न होता। यदि यहाँ उपस्थित देवता तथा ऋषि-मुनि भी न आते तो दक्ष को कभी भी यह हिम्मत न होती कि वे शिवजी से विरुद्ध हो कर कोई कार्य करते। तुम लोगों की बुद्धि वास्तव में भ्रष्ट हो गयी है जो तुम्हें दधीचि मुनि का सभा से उठ जाना भी अच्छा नहीं लगा।''

''हे नारद ! सती के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुन कर दक्ष ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर कहा—''अरी मतिमन्द ! तू ऐसी बातें क्यों कर रही है? मेरा और तेरा पिता-पुत्री का सम्बन्ध समाप्त हो चुका है। यदि तेरी इच्छा हो तो तू यहाँ रह, अन्यथा अपने घर चली जा। तेरा पति अत्यन्त अशुभ है। उसके नाम में केवल दो ही अक्षर हैं। वह भूत, प्रेत एवं पिशाचों के साथ रहता है, चिता की भस्म को अपने शरीर में लगाता है और श्मशान में घूमा करता है। उसके माता, पिता, कुल, जाति-पाति आदि का कुछ भी पता नहीं है। इसका वर्णन वेद में भले हो, परन्तु उसमें कोई शुभ लक्षण दिखाई नहीं देते। इसीलिए मैंने उसे यहाँ नहीं बुलाया, क्योंकि ऐसे मूर्ख मनुष्य का यज्ञ में आना निषिद्ध कहा गया है। हे सती ! मैंने वास्तव में बड़ी मूर्खता की, जो औरों के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

कहने पर तुझ जैसी अपनी श्रेष्ठ पुत्री का विवाह उस नंग-धड़ंग औढर के साथ कर दिया। मुझे इस बात का बहुत बड़ा पश्चात्ताप है। अस्तु, तू मेरी बातों पर विचार करके अपना यह क्रोध त्याग दे।''

दक्ष की बातों को सुन कर सती पुनः क्रोधित हो उठीं और अपने पिता को महापापी अनुमान कर बहुत दुःखी भी हुईं। वे बोलीं—''शिवजी का अपमान कभी सुनना नहीं चाहिए। यदि कोई व्यक्ति शिवजी की निन्दा कर रहा हो तो सुनने वाले को उचित है कि वह या तो उस निन्दा करने वाले की जीभ काट ले अन्यथा अपने दोनों कान बन्द करके वहाँ से उठ जाये और अपने शरीर को अग्नि में जला कर भस्म कर दे। इसके विपरीत चलने से महापाप होता है। जो व्यक्ति शिवजी की निन्दा करता है, वह उस समय तक नरक में पड़ा रहता है, जब तक कि इस ब्रह्माण्ड में सूर्य और चन्द्रमा स्थित रहते हैं। यह बात वेद के कथन से भी पक्की होती है।'' इस प्रकार कह कर सती अपने मन में अत्यन्त पछताती हुई सोचने लगीं कि मैंने यहाँ आ कर शिवजी की निन्दा अपने कानों से सुनी यह अच्छा नहीं हुआ। उन्हें इस बात से और भी अधिक दुःख हो रहा था कि वे यहाँ किस लिए आयीं और अब कौन-सा मुँह ले कर शिवजी के पास लौटेंगी? वे सोचने लगीं कि यद्यपि शिवजी के श्री चरणों का दर्शन प्राप्त करना मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है, परन्तु अब भला किस मुँह से मैं उनके पास जाऊँ। मुझे तो दोनों ही प्रकार से कठिनाई दिखाई दे रही है।

हे नारद ! इस प्रकार विचार करने के उपरान्त सती अत्यन्त क्रुद्ध हो कर शिवनाम का ज़ोर-ज़ोर से उच्चारण करने लगीं। उन्होंने किसी की भी प्रतिष्ठा का ध्यान न रखते हुए यज्ञशाला में उपस्थित सब लोगों को धिक्कारते हुए कहा—''हे उपस्थित सभासदो ! मैं तुम लोगों से यह बात सत्य ही कह रही हूँ कि इस समय तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गयी है। अन्त में, तुम्हें बहुत अधिक पछताना पड़ेगा। तुम में से अनेक मारे जायेंगे और अनेक भाग कर किसी गुप्त स्थान पर छिप जाने के लिए विवश होंगे। इस सभा में जिस-जिस ने शिवजी की निन्दा की है और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

जिसने उसे सुना है, उन सब को महापाप लगा है।" सभासदों से इस प्रकार कह कर वे दक्ष से बोलीं—"हे दक्ष ! तुमने शिवजी की बहुत निन्दा की है, अतः तुम्हें भी बहुत पछताना पड़ेगा। शिवजी सब को सुख देने वाले और सब के स्वामी हैं, पर तुम उन्हें साधारण देवताओं की भाँति ही समझ रहे हो। तुम्हें यह नहीं मालूम है कि वे सम्पूर्ण सृष्टि के सबसे बड़े हितैषी हैं। तुम्हें अपनी करनी का फल शीघ्र ही मिलेगा।

हे दक्ष ! वेद में मनुष्य को तीन प्रकार कहे गये हैं। जो किसी के गुण तथा शील में दोष लगाता है, उसे अधम कहा जाता है। जो किसी के पाप तथा पुण्य का सच्चा वर्णन करता है, उसे मध्यम कहते हैं और किसी के पापों को छिपाते हुए केवल उसके सद्गुणों का ही वर्णन कहता है, उसे उत्तम की संज्ञा दी जाती है। इन तीनों में भी जो सर्वोत्तम प्राणी होते हैं, वे अन्य लोगों के केवल गुण का ही वर्णन नहीं करते हैं अपितु वे सब को अपने कृत्य द्वारा प्रसन्न भी रखते हैं। मैंने इन तीन प्रकार के प्राणियों को विचार करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि तुम अधम प्रकार के हो, क्योंकि तुमने शिवजी की झूठी निन्दा की है। मिथ्या भाषण, अहंकार, क्रोध, लोभ आदि जितने भी बड़े पाप हैं, उन सब में महान् पाप किसी दूसरे की निन्दा करना है। तुम जो यह कहते हो कि शिव नाम में केवल दो ही अक्षर हैं, सो तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि ये दो अक्षर इतने प्रभावशाली हैं कि जो मनुष्य इन्हें अपने मुख से निकालता है, उसके सम्पूर्ण पाप भस्म हो जाते हैं। ऐसे पवित्र नाम की निन्दा करना कभी भी उचित नहीं है, परन्तु तुम अपने अज्ञान के कारण इस बात को नहीं पहचानते। शिवजी अनादि, अप्रमेय तथा महान् हैं। उनसे द्वेष रखने वाले का कभी भी कल्याण नहीं होता। जिन लोगों ने शिवजी की वास्तविक महिमा को पहचान लिया है, वे सदैव उन्हीं के प्रेम में मग्न रहते हैं। यह मेरा शरीर तुम्हारे द्वारा उत्पन्न हुआ है। अस्तु, मैं अपना खेद नष्ट करने के निमित्त अब इसे अवश्य त्याग दूँगी। क्योंकि शिव-निन्दक पिता की पुत्री कहाना मुझे सहन नहीं होगा। हे दक्ष ! तुमने जो यह कहा कि शिवजी कोई कर्म नहीं करते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

और अशुभ वेषधारी हैं, उसका उत्तर यह है कि वे परब्रह्म, शरीर-रहित एवं अनादि हैं। माया का ग्रहण किये रहने के कारण ही, वे अपना ऐसा अमंगल वेष बनाये रहते हैं। भला उन्हें किसी कर्म से क्या प्रयोजन है? तुमने जो यह कहा कि वे चिता भस्म लगाने वाले, नग्न, निर्धन तथा अवधूत हैं, उसका उत्तर केवल यही है कि मुझे उनका यह स्वरूप देख कर ही प्रसन्नता होती है, उनके इस स्वरूप के अतिरिक्त किसी अन्य रूप को देखना मुझे स्वीकार नहीं है। अस्तु, अब मैं अपने निश्चयानुसार अपने को भस्म करती हूँ, क्योंकि इससे शिवजी को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी।''

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! यह कह कर सती उत्तर दिशा की ओर मुँह करके पृथ्वी पर बैठ गयीं—उन्होंने स्नान करने के उपरान्त अपने सम्पूर्ण शरीर को वस्त्रों से लपेट लिया। तत्पश्चात् योग धारण कर, विधिपूर्वक आसन लगाते हुए प्राणायाम किया। सर्वप्रथम उन्होंने समान वायु को नाभि चक्र में ला कर उदान वायु को ऊपर चढ़ाया और शिवजी की सुन्दर मूर्ति को अपने हृदय में स्थापित किया, तदुपरान्त उन्होंने अपने भौंहों के बीच दृष्टि जमाते हुए, पति के चरणों का ध्यान किया और अग्नि तथा वायु को उत्पन्न कर दिया। उस पवित्र अग्नि तथा वायु के द्वारा उन्होंने अपने उस निष्पाप शरीर को भस्म कर दिया। इस दृश्य को देख कर सब ओर हाहाकर मच गया। यज्ञशाला में उपस्थित सभी लोग अत्यन्त भयभीत तथा दुखी हुए और दक्ष की पत्नी वीरनी शोकाकुल हो गयी। उस समय शिवजी के गणों ने अत्यन्त क्रुद्ध हो कर सब लोगों को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा—

पच्चीसवाँ अध्याय

शिवगणों ने कहा—''इस दक्ष की मूर्खता को देखो कि इसने सती को भस्म होने से रोका तक नहीं। शिवजी के इस शत्रु को संसार में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

अत्यन्त निन्दा प्राप्त होगी और यह अभिमानी मूर्ख करोड़ों नरकों के दुःख भोगेगा।'' इतना कह कर वे सब दक्ष को जान से मार देने तथा यज्ञ को भ्रष्ट करने के निमित्त अपने स्थान से खड़े हो गये। उस समय अनेक हृदय की इच्छा को जान कर, भृगु ऋषि ने यज्ञ की रक्षा के निमित्त यज्ञ-कुण्ड में एक पवित्र आहुति डाली। उस आहुति के पड़ते ही यज्ञ-कुण्ड द्वारा एक सहस्त्र अत्यन्त बलवान् तथा धैर्यवान् दैत्यों की उत्पत्ति हुई, जो संसार में ऋभु नाम से प्रसिद्ध हुए। वे महाभयानक स्वरूप धारण किये हुए शिवजी के गणों के सामने जा खड़े हुए। उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि उन्होंने अपने गणों के बल को चुपचाप हर लिया, जिसके कारण वे अत्यन्त निर्बल हो गये और भयभीत हो कर हाहाकर करने लगे। उनके विलाप को सुन कर वहाँ उपस्थित अन्य शिवगण भी आश्चर्यचकित रह गये। जब उन सब ने यह देखा कि वे उन दैत्यों से युद्ध करने में अशक्त हैं और सती के वियोग को सहन करने में असमर्थ हैं, तो उन्होंने अपनी स्वामिनी के साथ ही अपने प्राण दे देने भी उचित समझे। यह निश्चय करने के उपरान्त उनमें से किसी ने अपने मस्तक को और किसी ने अन्य अंगों को काट कर स्वयं ही अपना वध कर डाला। इस प्रकार जिस स्थान पर सती ने अपना शरीर त्यागा था, उसी स्थान पर शिवजी के बीस सहस्त्र गण भी मृत्यु को प्राप्त हो गये।

हे नारद ! उस दृश्य को देख कर सभा में उपस्थित सभी लोग अत्यन्त चिंतित हुए। उस समय मेरा तथा विष्णु का श्वास शीघ्रतापूर्वक चलने लगा। पहले तो सब लोग मौन खड़े रहे, फिर कोई विष्णु की स्तुति करने लगे तथा कोई किसी अन्य की प्रार्थना करने में संलग्न हो गया। इस प्रकार सम्पूर्ण यज्ञशाला में दुःख भर गया। प्रसन्नता और आनन्द का कोई भी चिह्न शेष न रहा। अकेले दक्ष की मूर्खता के कारण उस महापाप का भागी सभी को होना पड़ा। तदुपरान्त जो थोड़े-से शिव गण शेष रह गये, उन्होंने शिवजी के पास पहुँच कर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। वे बोले—''हे प्रभो ! दक्ष ने सती जी के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

पास पहुँच कर अत्यन्त अपमान किया था। अकेली दक्ष-पत्नी ही ऐसी थी, जिन्होंने उनका हार्दिक स्वागत किया, अन्य सब लोग तो अन्त तक दक्ष के ही साथी बने रहे।'' अपने गणों द्वारा यह समाचार प्राप्त कर शिवजी क्रुद्ध हुए। उस समय तुमने अर्थात् नारद ने भी शिवजी के पास पहुँच कर, जो कुछ घटना घटित हुई थी, उसे ज्यों-का-त्यों कह सुनाया और यह कहा कि वेद के बताये अनुसार आपको उचित है कि आप उन महापापियों को दण्ड अवश्य दें। यदि आप दक्ष को दण्ड नहीं देंगे तो वेद की आज्ञा और धर्म का मार्ग मिथ्या हो जाएगा। देवताओं को दंड न देना भी नीति के विरुद्ध कार्य है। इसके अतिरिक्त एक बात यह भी है कि यदि आप दक्ष को दण्ड नहीं देंगे तो दधीचि ऋषि का वचन भी मिथ्या हो जाएगा। खेद की बात तो यह है कि ब्रह्मा और विष्णु ने भी दधीचि ऋषि के शब्दों पर कोई ध्यान नहीं दिया और दक्ष से ऐसा निन्दनीय कर्म करा दिया।''

हे नारद ! तुम्हारी बात को सुन कर शिव जी ने अपने मन में विचार किया कि यद्यपि ब्रह्मा, विष्णु, देवता, ऋषि-मुनि, एवं ब्राह्मण मुझे अति प्रिय हैं, तो भी वेद की आज्ञा सब से ऊँची है। यह निश्चय कर भगवान् शिवशंकर ने अपने गणों को अभयदान दे, दिव्य दृष्टि द्वारा यज्ञ के सम्पूर्ण वृत्तान्त की जानकारी प्राप्त की। तदुपरान्त वे ऐसे क्रुद्ध हुए कि मानो प्रलय ही कर देना चाहते हों। वे अपने दोनों होठों को दाँतों से काटने लगे। तदुपरान्त उन्होंने अपने मस्तक से एक जटा का केश उखाड़ कर पर्वत पर पटक दिया। उस बाल के गिरने से ऐसा महाभयानक शब्द उत्पन्न हुआ, जिसे सुन कर तीनों लोक काँपने लगे। यह जटा का केश टूट कर दो बराबर के टुकड़ों में अलग-अलग बँट गया। तब उसकी जड़ की ओर वाले टुकड़े से 'वीरभद्र' की उत्पत्ति हुई। उन वीरभद्र का शरीर अत्यन्त कृष्णवर्ण का था और उनके बाल काली घटा के समान घने तथा शान्त थे, वे प्रज्ज्वलित अग्नि के समान देदीप्यमान लग रहे थे। वे इतने ऊँचे थे, मानो अनायास ही आकाश को छू लेना चाहते हों। वे महाभयानक शस्त्रों को लिये हुए थे। उनके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हृदय में युद्ध करने की बड़ी प्रबल आकांक्षा थी। उनकी भौहें चढ़े हुए धनुष की भाँति बहुत टेढ़ी थीं। वे महाभयानक शब्द करते हुए सिंह के समान गरज रहे थे। उनके तीन मस्तक और एक सहस्त्र भुजाएँ थीं। वे शिवजी को प्रणाम करते हुए अपने स्थान पर निश्चल भाव से खड़े हो गये। उसी समय शिवजी के रोम-कूपों द्वारा अन्य सहस्त्रों गणों की उत्पत्ति हुई, जो शरीर, बल तथा स्वरूप में वीरभद्र के समान ही प्रतीत होते थे। शिवजी की आज्ञानुसार कैलाश पर्वत पर खड़े हुए वे परम भयानक शब्दों का उच्चारण अपने मुख से कर रहे थे। अस्तु, जटा के एक टुकड़े से तो इन सेना की उत्पत्ति हुई और दूसरे टुकड़े से श्री महाकाली प्रकट हुईं। उन महाकाली के साथ करोड़ों भूत, प्रेत आदि भी उत्पन्न हुए। वे अनेक प्रकार से नाचने-कूदने तथा लीलाएँ करने लगे। उस परम क्रोधमय अवस्था में भगवान् शिव की नासिका द्वारा जो श्वास निकले, उनसे सौ प्रकार तथा तेरह प्रकार के सन्निपातों की उत्पत्ति हुई, जो संसार में अनेक प्रकार के उपद्रव मचाते रहते हैं। इस प्रकार पलक मारते-मारते शिव गणों की महाभयानक सेना उपस्थित हो गयी। ऐसा प्रतीत होता था कि वह उसी समय सम्पूर्ण सृष्टि को नष्ट कर डालेगी। हे नारद ! इसके पश्चात् वीरभद्र ने अपने हाथ जोड़ कर शिवजी को प्रणाम करते हुए कहा—"हे प्रभो ! आप जो उचित समझें, वह आज्ञा हमें दीजिये। यदि किसी ने आपका अपमान किया हो तो वह साक्षात् काल ही क्यों न हो, हम उसे भी नष्ट कर डालेंगे।" यह सुन कर शिवजी ने कहा—"हे वीरभद्र ! दक्ष प्रजापति ने अहंकार में भर कर कनखल से एक यज्ञ रचाया है। उसने शत्रुता करके हमें यज्ञ का निमन्त्रण नहीं दिया। जब सती लोक रीति के अनुसार उसके घर पहुँचीं तो उसने उन्हें भी कुछ न समझा और बहुत-से व्यंग्य वचन कहे। दक्ष के अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी, जिसमें दक्ष-पत्नी सम्मिलित नहीं है, सती का कोई आदर नहीं किया। हमारे ऐसे अपमान को देख कर सती उस यज्ञ कुण्ड में जल कर भस्म हो गयीं, परन्तु किसी ने उन्हें रोका तक नहीं। इसके अतिरिक्त हमारे परम भक्त दधीचि ऋषि ने उस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:43 AM

सभा को शाप दिया कि उन लोगों को शिवजी का अपमान करने का फल अवश्य मिलेगा। अस्तु, तुम लोग दक्ष के यज्ञ में जा कर उसे भ्रष्ट कर डालो और हमारा अपमान करने वाले दक्ष का मस्तक काट डालो। दुर्वासा, कौशिक, मार्कण्डेय, कम्बु, उपमन्यु, इन्द्र, गौतम, पुलह, बृहस्पति तथा सनकादिक चारों भाई, जो मेरे परम भक्त हैं, वे सब भी निराश हो कर यज्ञशाला से उठ कर चले गये हैं और यह शाप दे गये हैं कि यह यज्ञ नष्ट हो जाएगा। अस्तु, मैं अपने उन भक्तों का वचन सत्य करने के हेतु तुम्हें यह आज्ञा देता हूँ कि तुम गणों को साथ ले, निर्भय हो कर दक्ष के यज्ञ में जा पहुँचो और किसी प्रकार का कुछ भी विचार न करते हुए जिसको जो उचित हो, वह दण्ड दो।'' शिवजी की इस आज्ञा को सुन कर वीरभद्र ने अत्यन्त प्रसन्न हो, महाभयानक स्वर में गर्जना की। तदुपरान्त उन्होंने शिवजी की परिक्रमा एवं स्तोत्रों द्वारा स्तुति की। फिर वे करोड़ों गणों की सेना तथा महकाली को साथ ले कर दक्ष यज्ञ को विध्वंस करने के लिए वहाँ से चल दिये।''

छब्बीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुना कर सूत जी ने कहा—''हे शौनकादिक ऋषियो ! इस वृत्तान्त को सुन कर नारद जी ब्रह्मा जी से बोले—''हे पिता ! जिन महाभयानक यूथपतियों को साथ लेकर वीरभद्र, दक्ष-यज्ञ विध्वंस करने के निमित्त गये, आप मुझे उनका नाम सुनाने की कृपा करें तथा यह भी बतायें कि उन्होंने यज्ञशाला में जा कर क्या-क्या कार्य किये और किन-किन को किस प्रकार दण्ड दिया? मुझे यह बड़ा आश्चर्य है कि एक ओर तो शिवजी की ऐसी बलवान् आज्ञा थी और विष्णु जी दक्ष के सहायक थे। अतः आप मुझे यह बतायें कि विष्णु ने दक्ष की सहायता की अथवा नहीं? कुछ समझ में नहीं आता कि शिवजी और विष्णु जी के चरित्र कैसे होते हैं? मैंने भगवान् शिव तथा विष्णु के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

किसी युद्ध का वृत्तान्त नहीं सुना; परन्तु इस कथा में वह सब सामग्री उपस्थित है।''

यह सुन कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! भगवान् सदाशिव परब्रह्म हैं। अन्य सब देवता तथा प्राणी उनके सेवक हैं। वे शिवजी अपनी इच्छा के अनुसार प्रत्येक कार्य करते हैं। हम अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु तथा हर तीनों उन्हीं के स्वरूप हैं। अस्तु, तुम इस सम्बन्ध में कोई सन्देह मत करो। वीरभद्र के साथ जो सेनाएँ गयी थीं, उनके सेनापतियों तथा विस्तार का वृत्तान्त सुनो। शंखकर्ण के साथ एक करोड़, केयेक राक्षस के साथ एक करोड़, विकृत के साथ आठ करोड़, मारियाक के साथ नौ करोड़, सुरमन्थक के साथ छः करोड़, विकृतानन के साथ भी छः करोड़, जालक के साथ बारह करोड़, दुंदुभि के साथ आठ करोड़ एवं आवेश के साथ भी आठ ही करोड़ वीरों की सेनाएँ थीं। अनल वर्ण, घण्टाकर्ण, कुक्कुट, चित्रासन, सम्वत, करटि, भृङ्ग, बकुली, नन्दन, प्रियभानु, सुरसरिनन्द, तारक, छाया, चण्ड, कालतुंग, कपटी, शूलकार्ण, पिंगल, मान, सुकेश, अंग, भारभूत, मणिभद्र, लांगूल, बिन्दु एवं मयूराक्ष के साथ चौंसठ-चौंसठ करोड़ योद्धाओं की सेनाएँ वीरभद्र की सहायता के लिए चलीं। इसके अतिरिक्त करोड़ों वीरों की सेनाएँ वीरभद्र के साथ चलीं।

''हे नारद ! रविमर्या नामक सेनापति अत्यन्त क्रोध में भर कर अपने साथ एक करोड़ वीरों को लेकर वीरभद्र के साथ चला। इसके अतिरिक्त कोकिल, अमोध एवं सुमन्त्रक इन तीनों यूथपों के साथ भी एक-एक करोड़ योद्धा थे। नील नामक महाबली यूथप के साथ नौ करोड़ वीर थे और पूर्णभद्र की सेना में भी इतने योद्धा थे। क्षेत्रपाल के साथ इतनी सेना थी जिसकी संख्या का वर्णन नहीं किया जा सकता। इन सेनापतियों के अधिपति भैरव अपार सेना लेकर चले। उस असंख्य सेना के चलते समय दसों दिशाओं में भारी हाहाकार मचा।

''हे नारद ! इन सबके साथ ही भगवती महाकाली अपने नौ स्वरूपों के साथ नाचती-कूदती हुई चलीं। उन नौ स्वरूपों के नाम इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकार हैं—काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डीरमद्रिनी, भद्रकालिका, भद्रा, त्वरिता तथा वैणवी। इनके साथ शाकिनी, डाकिनी, भूत, प्रेत, लंकिनी, मसान्ती, कुष्माण्डी, ब्रह्मराक्षसी तथा चौंसठ योगिनी के समूह भी चले। उस सेना का वर्णन मैं कहाँ तक करूँ? जिस समय वह विशाल सेना दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए चली, उस समय पृथ्वी से उठ कर ऊपर पड़ने वाली धूल समस्त आकाश में इस प्रकार भर गयी कि उसमें सूर्य नारायण छिप गये और महाभयानक अन्धकार चारों ओर फैल गया। यह सम्पूर्ण कटक दक्षिण दिशा की ओर चलता हुआ कनखल के समीप जा पहुँचा। उस समय दक्ष के यज्ञ में अनेक प्रकार के अपशकुन होने लगे, जो भावी विपत्ति के सूचक थे।''

सत्ताईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! उस समय यज्ञशाला में जो अपशकुन हुए अब मैं उनका वर्णन करता हूँ। आकाश से पिसी हुई हड्डियों की वर्षा होने लगी तथा ऐसी आश्चर्यजनक बातें दिखाई देने लगीं जिनके कारण कर्म तथा धर्म का विचार शेष न रहा। तीनों प्रकार के दुःख सब लोगों को दुःखी करने लगे। डर के मारे उनके मुख से कोई शब्द नहीं निकलता था। सब के शरीर थर-थर काँपने लगे। उस समय यज्ञ करने वाले दक्ष प्रजापति तथा यज्ञ कराने वाले भृगु ऋषि की आँखें उत्तर दिशा की ओर उठ गयीं तो उन्होंने देखा कि उधर से भारी धूल के उड़ने का कारण क्या है; परन्तु कोई ठीक बात उनकी समझ में नहीं आयी। सभा में उपस्थित सभी लोग आश्चर्य में भर कर एक-दूसरे से अनेक प्रकार की बातें करने लगे।

''हे पुत्र ! उस समय दक्ष की पत्नी वीरनी ने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा—''हे सभासदो ! तुमने मूर्ख बन कर सती का अनादर किया और उन्हें भस्म होने से नहीं रोका। दक्ष प्रजापति ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

शिवजी का घोर अपमान किया है और सती की बहनों के सामने ही सती का भी तिरस्कार किया है। यह सब उपद्रव उसी के प्रतिफल है। शिवजी का शत्रु कभी भी आनन्द नहीं पा सकता। वह कुछ समय के लिए अपने मन को प्रसन्न कर ले, परन्तु अन्त में उसे नरकगामी होना पड़ता है। अस्तु, तुम लोगों को अपने किये हुए पाप का फल अवश्य मिलेगा।''

वीरनी के इन शब्दों को सुन कर सभी देवता तथा मुनियों को अत्यन्त भय लगा। दक्ष भी भयभीत हो कर विष्णु जी के पास पहुँच कर इस प्रकार कहने लगा—''हे विष्णो ! आप यज्ञरूप, यज्ञरक्षक तथा यज्ञ के कर्मस्वरूप हैं। आपका कार्य भक्तों की रक्षा करना है। अस्तु, आप मुझे इस भय से छुड़ाइये और अपनी कृपा द्वारा यज्ञ को नष्ट होने से बचाइये। आप सच्चे स्वामी हैं।'' यह सुन कर विष्णु जी ने हँसते हुए कहा—''हे दक्ष! जहाँ तक सम्भव होगा, हम, तुम्हारी रक्षा करेंगे, परन्तु तुमने शिवजी से शत्रुता स्थापित कर स्वयं ही संकट का आवाहन कर लिया है। तुमने प्रलयकर्त्ता एवं जगत् स्वामी शिवजी के साथ वैर करके अच्छा नहीं किया। अब तुम्हें कौन पार लगा सकता है? हम स्वयं तथा अन्य सभी देवतागण भगवान् की आज्ञारूपी रस्सी से बँधे हुए हैं। संसार में उनके समान बलवान् अन्य कोई नहीं है। कोई सहस्त्रों उपाय भी क्यों न करे, परन्तु शिवजी की कृपा के बिना किसी को कर्म का फल नहीं मिलता। जिस स्थान पर पूजा करने योग्य शिवजी की पूजा नहीं की जाती, वहाँ कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता। जो देवता पूजा करने योग्य नहीं हैं, उसकी पूजा करने से दारिद्र्य, मृत्यु तथा भय—ये तीनों उपद्रव उत्पन्न होते हैं।''

हे नारद ! विष्णु के मुख से इन शब्दों को सुन कर दक्ष अत्यन्त चिन्तित और महादुखी हुआ। अन्य सब लोग भी भय के मारे काँपने लगे और इस प्रकार कहने लगे कि अब हमारी रक्षा किसी भी प्रकार नहीं हो सकती। जिस समय सभी सभासद आपस में एक-दूसरे का मुँह देखते हुए चिन्ता मग्न हो रहे थे, उसी समय वीरभद्र अपनी सेना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

सहित यज्ञस्थल में जा पहुँचे और बड़े ज़ोर का शब्द करने लगे। भैरव तथा कालिका आदि भी अपनी सेना सहित वहाँ पहुँच गए। उस समय वीरभद्र का यह स्वरूप था कि उनके पाँच मुख, तीन नेत्र तथा दस हाथ थे। वे अपने मस्तक पर जटाओं को धारण किये थे तथा उनके ललाट पर अर्द्धचन्द्र सुशोभित हो रहा था। वे रुद्राक्ष की माला पहने, शरीर में भस्म लगाये, बैल पर सवार थे। उनके सभी अंग वज्र के समान अत्यन्त कठोर थे। वे अपने अत्यन्त सुन्दर हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र लिये, चँवर-छत्र धारण किये, शिव-शिव शब्द का उच्चारण करते हुए, परम विचित्र स्वरूप से भली-भाँति अलंकृत थे। जिस रथ पर वे अपने नन्दी सहित आरूढ़ थे, वह पच्चीस योजन ऊँचा था और उस रथ को दस लाख सिंह खींच रहे थे। शार्दूल तथा हाथी चारों ओर से उस रथ की रक्षा के निमित्त चैतन्य खड़े हुए थे।

उसकी सेना ने आते ही चारों ओर से धावा करना आरम्भ कर दिया। अनेक प्रकार के युद्ध के बाजे, भेरी, शंख, पटह, गोमुख, शृंग, उपंग, मृदंग आदि बजने लगे। उस समय इन्द्र, वायु, यमराज, कुबेर, वरुण, अग्नि तथा दिक्पाल अपने-अपने वाहनों पर सवार हो-हो कर दक्ष के सम्मुख जा पहुँचे। दक्ष ने उन सब से कहा—"हे दिक्पालो ! मैंने इस यज्ञ को केवल तुम्हारे ही बल पर किया था, अतः तुम सब मेरी रक्षा और सहायता करो।" इस प्रकार सब देवताओं से कहने के उपरान्त दक्ष प्रजापति ने विष्णु जी के चरणों पर अपने मस्तक को रखते हुए कहा—"हे प्रभो ! आप संसार के रक्षक एवं शुभ कर्मों के साक्षी हैं। आपकी कृपा से संसार का पालन होता है, अतः आपको मेरे यज्ञ की रक्षा करनी चाहिए।" यह सुन कर विष्णु जी ने उत्तर दिया—"हे दक्ष ! जहाँ तक हमारा अधिकार है और जहाँ तक हम में शक्ति है, वहाँ तक हम तुम्हारे यज्ञ की रक्षा अवश्य करेंगे, परन्तु तुम्हारे कर्मों का स्मरण कर हमारी बुद्धि को आश्चर्य होता है। ब्रह्मस्वरूप शिवजी के क्रोध से तुम्हारी कौन रक्षा कर सकता है। अस्तु, उस शिव नामधारी ईश्वर से विरोध कर, कभी हित साधन नहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

हो सकता। वे शिवजी तीनों गुणों से युक्त होने पर भी परम पवित्र हैं, अतः उचित है कि तुम उन्हीं शिवजी की शरण में जाओ, जिससे तुम्हारा यह यज्ञ सम्पन्न हो सके।''

इस प्रकार दक्ष और विष्णु में बातें हो रही थीं कि वीरभद्र की सेना चारों ओर इस प्रकार घिर आयी, मानो कोई समुद्र घिर-घिर कर आकाश की ओर बढ़ रहा हो। उस सेना के सेनापतियों ने दक्ष तथा विष्णु जी को ब्रह्मज्ञान व ज्ञान की बातें करते हुए सुना तो वे सब हँस पड़े। उस समय गणों को युद्ध करने के लिए उद्यत देख कर, इंद्र ने अपना वज्र उठा लिया और यह इच्छा की कि मैं शिवगणों से युद्ध करूँ। इन्द्र युद्ध करने के लिए सामने आये, शिवजी के गण हर हर का घोष करते हुए उनके सम्मुख जा पहुँचे।''

अट्ठाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इन्द्र की सेना शिवगणों से युद्ध करने लगी। उस युद्ध में असि, शूल, तोमर, बाण, पटिस आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग होने लगा। भेरी, शंख, मृदंग, ढप, दुन्दुभि, पटह, निशान तथा डिमडिम आदि प्रसिद्ध रणवाद्यों की ध्वनि चारों ओर गूँजने लगी। सभी योद्धा उस युद्ध में अपनी वीरता का अधिकाधिक प्रदर्शन करने लगे। जिस समय शिवगणों ने अपनी परमवीरता को प्रकट किया, उस समय इन्द्र की सेना को पराजित होते हुए देख कर भृगु ऋषि ने उच्चाटन मन्त्र का जप करके वीरभद्र की सेना को अशक्त बना दिया। तब इन्द्र की सेना ने उन्हें अत्यन्त दुखी करके, सहस्त्रों योद्धाओं को जान से मार डाला। उस अयाचित विपत्ति को देख कर शिव के गण भयभीत हो कर भागने लगे और इन्द्र की सेना विजयिनी हुई।''

हे नारद ! शिव गणों की हार का मुख्य कारण यही था कि इस प्रकार शिवजी ने ब्राह्मण की श्रेष्ठता को सम्मान दिया था। अस्तु, जब वीरभद्र ने यह देखा कि उनकी सेना हार कर भाग रही है, तब वे भूत-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

प्रेतों आदि को पीछे कर स्वयं आगे बढ़ आये। जो बड़े-बड़े सेनापति योद्धा बैल पर सवार थे। वे भी उनके साथ आगे आ कर खड़े हुए। तदुपरान्त उन्होंने अपने हाथों में त्रिशूल लेकर इन्द्र के साथ महाभयानक युद्ध किया। उन प्रहारों से घायल हो कर देवता आदि भयभीत हो, युद्ध क्षेत्र से भागने लगे। किसी के विभिन्न अंग कट गये तो कोई टुकड़े-टुकड़े हो कर गिर पड़ा। इस प्रकार देवताओं की सम्पूर्ण सेना क्षीण-विषीर्ण हो गयी। कुछ देवता तो भाग कर अपने घरों को भी चले गये। उस समय अकेले इन्द्र ही दृढ़तापूर्वक खड़े हुए युद्ध क्षेत्र में दिखाई पड़ रहे थे। अपनी सेना को इस प्रकार भागते देख कर इन्द्र ने अपने गुरु बृहस्पति जी से कहा—"हे गुरु ! आप देवताओं की सेना के रक्षक हैं, अतः आप हमें ऐसा कोई उपाय बताइये, जिससे हमारी जीत हो।" यह सुन कर बृहस्पति ने उत्तर दिया—"हे इन्द्र ! विष्णु जी ने जो कुछ कहा था, वही सब इस समय सामने आ रहा है। मन्त्र, तन्त्र, औषधि, वेद, धर्मशास्त्र, पुराण, विचार तथा प्रतीति आदि यह सब शिवजी की महिमा को जानने में असमर्थ हैं। तुम मूर्ख हो, जो बच्चों के समान बुद्धिहीन बन कर, उन्हीं भगवान् सदाशिव से वैर ठान रहे हो, यह सभी गण शिवजी की आज्ञानुसार आये हुए हैं और इस यज्ञ को नष्ट करके ही मानेंगे। इनके सामने किसी का कोई वश नहीं चलेगा।"

हे नारद ! बृहस्पति जी के मुख से यह वचन सुन कर इन्द्र के सहित सभी देवताओं को बड़ी चिन्ता हुई। उसी समय वीरभद्र ने उन सब को सम्बोधित करके कहा—"हे देवताओ ! तुम्हारी सभी बातें बच्चों के समान बुद्धिहीनता की सूचक एवं व्यर्थ की सी हैं। तुम लोग सारवस्तु को नहीं पहचान पाए। अस्तु, इस यज्ञ में जो-जो देवता भाग लेने के लिए आये हैं, वे सब मेरे समीप आ कर यज्ञ का भाग ले जाएं।" यह कह कर वीरभद्र ने एक बार फिर इन्द्र, अग्नि, कुबेर, वरुण, सूर्य, चन्द्र आदि देवताओं को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे देवताओ ! तुम सब मेरे समीप आ कर अपना-अपना भाग ले जाओ। मैं तुम्हें सुख पहुँचा कर ऐसा प्रसन्न करूँगा कि तुम्हें सदैव के लिए भगवान्

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

सदाशिव की महिमा का ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।'' इतना कह कर वीरभद्र अत्यन्त क्रुद्ध हो कर बाण वर्षा करने लगे। उनके तीक्ष्ण बाणों के प्रहार ने इन्द्र के शरीर को घायल कर दिया। जब उन्होंने यह अनुभव किया कि वीरभद्र पर वे किसी प्रकार विजय प्राप्त नहीं कर सकते, तो सब देवताओं के साथ भाग खड़े हुए।

हे नारद ! यह दृश्य देख कर सब ऋषि-मुनि अत्यन्त भयभीत हो, विष्णु जी की शरण में गये और उन्हें प्रणाम करके इस प्रकार कहने लगे—''हे प्रभो ! हम आपकी शरण में आये हैं। अस्तु, आप दयालु हो कर हमारी रक्षा करें।'' उन ऋषि-मुनियों की प्रार्थना को सुन कर श्री विष्णु भी अपने अस्त्र-शस्त्र ले कर, युद्ध करने की इच्छा से वीरभद्र के सम्मुख जा खड़े हुए। जब वीरभद्र ने अपने सामने खड़े हुए विष्णु जी को देखा तो उन्हें पुकारते हुए इस प्रकार कहा—''हे विष्णु ! तुम यहाँ किस लिए आये हो? तुम दक्ष के रक्षक बन कर अपने तेज तथा प्रकाश को नष्ट कर देने पर क्यों तुले हुए हो? तुमने सब से बड़ी गलती तो यह की कि इन्द्र को साथ ले कर इस यज्ञ में अपना भाग ग्रहण करने के लिए चले आये। अब यदि तुम युद्ध करने के लिए आये हो तो यह भी स्मरण रखो कि शिवजी की जैसी आज्ञा है, उसी प्रकार मैं तुम्हें भी अच्छी तरह तृप्त कर दूँगा।''

हे नारद ! वीरभद्र के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुन कर विष्णु जी ने हँसते हुए उत्तर दिया—''हे वीरभद्र ! तुम शिवजी के गण हो और उन्हीं के द्वारा उत्पन्न होने के कारण पूजा किये जाने के योग्य हो। मैं शिवजी को त्याग कर दक्ष की रक्षा के निमित्त यहाँ जिस लिये आया हूँ, वह वृत्तान्त तुमसे कहता हूँ। दक्ष मेरे परम भक्त हैं और उन्होंने मेरी बड़ी सेवा की है। जब उन्होंने मुझे यहाँ आने का निमन्त्रण दिया तो उनकी भक्ति के वशीभूत हो कर मैं यहाँ चला आया, क्योंकि मैं सदैव अपने भक्तों के आधीन रहता हूँ। अब मैं तुम्हें अपनी शक्ति द्वारा उस स्थान से हटाने का प्रयत्न करता हूँ, इसलिए तुम्हें भी उचित है कि तुम जिस कार्य के लिए यहाँ आये हो, उसे सम्पन्न करो। जब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:44 AM

तक तुम मुझे पराजित नहीं कर देते, तब तक यज्ञ के समीप नहीं पहुँच पाओगे।''

हे नारद ! यह सुन कर वीरभद्र ने सहिष्णु बन कर हँसते हुए कहा—''हे विष्णु ! आप में और शिवजी में कोई भेद नहीं है। अस्तु, मैं तो आप दोनों का ही सेवक हूँ। जो मनुष्य आप में और शिवजी में भेद समझते हैं, उन्हें घोर दुःख उठाना पड़ता है। फिर भी मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि मुझे भगवान् सदाशिव की आज्ञा का पालन करना है। अस्तु, यदि मैं आपको कोई कष्ट पहुँचाऊँ तो उसमें मेरा कोई दोष नहीं होगा। आप जानबूझ कर भी अपने लोक को लौट कर नहीं गये और यहाँ मुझ से युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गये हैं। अतः आप स्वयं ही मुझे यह बतावें कि इस समय मुझे क्या करना उचित है?'' यह सुन कर विष्णु जी बोले—''हे वीरभद्र ! तुम निश्चिन्त हो कर हमारे साथ युद्ध करो। इस युद्ध में तुम अवश्य ही विजयी होगे। जब हम तुम्हारी चोट से घायल हो कर अपने लोक को लौट जाएं, उस समय तुम जो उचित समझो, वह करना।'' यह सुन कर वीरभद्र ने अपने हथियार उठा लिए। उस समय युद्ध के बाजे बजने लगे तथा विष्णु जी ने अपना भी शंख फूँक कर सम्पूर्ण संसार में हाहाकार मचा दिया। जो लोग युद्ध क्षेत्र से भाग गये थे, वे भी फिर लौट आये। इन्द्र आदि देवता विष्णु जी के साथ रह कर फिर से अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने लगे। इस प्रकार घमासान संग्राम आरंभ हो गया।''

उन्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इन्द्र के साथ नन्दी ने युद्ध करना प्रारंभ किया। अनल के साथ मुनिभद्र का युद्ध होने लगा। यमराज तथा महाकाल एक दूसरे के सम्मुख जा खड़े हुए तथा निर्ऋति तथा मुण्ड ने परस्पर युद्ध करते हुए वीरता का प्रदर्शन किया। वरुण के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

साथ मुण्ड एवं वायु के साथ भृंगी का युद्ध होने लगा। उस समय इन्द्र ने अपने हाथ में वज्र लेकर नन्दी के ऊपर प्रहार किया और नन्दी ने क्रुद्ध हो कर अपने त्रिशूल को इन्द्र के ऊपर चलाया। उस चोट से घायल हो कर इन्द्र पृथ्वी पर गिर पड़े और मूर्च्छित हो गये; परन्तु कुछ देर बाद जब उन्हें होश आया, तो वे पुनः युद्ध करने लगे। उधर अनल ने शक्ति की चोट द्वारा मुनिभद्र को घायल कर दिया और मुनिभद्र ने भी निर्भय हो कर अपने त्रिशूल द्वारा उसका उत्तर दिया। कालदन्त ने यमराज को अपने त्रिशूल की चोट से व्याकुल बना दिया। इधर तो ये बड़े-बड़े सेनापति परस्पर युद्ध करने में प्रवृत्त थे, उधर भैरव अत्यन्त क्रोधित हो कर योगिनियों को साथ ले, देवताओं की सेना में घुस गये और सब को घायल करते हुए उनका रुधिर पीने लगे। फिर उन्होंने अपने स्वरूप को ऐसा भयानक बनाया कि उसे देख कर अनेक देवता युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े हुए। जो देवता खड़े रहे, वे उनके तेज तथा प्रकाश को देख कर, अत्यन्त भयभीत हो, "भैरव-भैरव" की पुकार करने लगे।

हे नारद ! भैरव की भाँति क्षेत्रपाल ने भी देवताओं की सेना के अन्दर प्रविष्ट हो कर, उसे कष्ट देना आरंभ कर दिया। नौ काली भी देवताओं की सेना को नष्ट करने लगीं। वे देवताओं के मस्तक को तोड़ कर उनका रुधिर पीती थीं और शरीर को खा जाती थीं। जिसके कारण चारों ओर हाहाकार मच गया। उस समय वे सब लोग भाग कर विष्णु जी की शरण में जा पहुँचे और इस प्रकार कहने लगे—"हे प्रभो ! इस समय हम लोग बहुत दुखी हैं, अतः आप हमारी सहायता करें। आप हम सब के स्वामी हैं, इसलिए हम आप से यह प्रार्थना करते हैं कि भैरव, क्षेत्रपाल तथा काली ने हमारी जो दुर्गति की है, उसका आप उचित उपाय करें।" विष्णु जी ने सब देवताओं की उस दयनीय दशा को देखा तो उन्होंने अत्यन्त क्रोध में भर कर क्षेत्रपाल की ओर अपना चक्र छोड़ दिया। उस चक्र के तेज से संपूर्ण दिशाएँ भस्म-सी होने लगीं। जब क्षेत्रपाल ने उस प्रज्वलित ज्योति को इस प्रकार अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

ओर आते देखा तो उसने यह चक्र अपने मुख में डाल दिया। यह देख कर विष्णु जी ने क्षेत्रपाल के गाल पर अपनी गदा का प्रहार किया, जिसके कारण वह मुँह के बल पृथ्वी पर गिर पड़ा।

हे नारद ! इस अवस्था को देख कर काली जी विष्णु के सम्मुख जा पहुँचीं। उन्हें देख कर विष्णु जी ने जितने बाण चलाये उन सब को वे सहज ही में खा गयीं। तब विष्णु जी ने अपने नन्दक नामक खड्ग का प्रहार उनके ऊपर किया। उसे काली जी ने पकड़ कर तोड़ डाला। यह दृश्य देख कर विष्णु जी ने काली के साथ युद्ध करना बन्द कर दिया और भैरव के समीप जा पहुँचे। विष्णु जी ने भैरव के ऊपर जब अपना चक्र चलाया तो भैरव ने उसे सहज ही काट कर गिरा दिया। तदुपरान्त उन्होंने अपने मृत्यु के समान भयानक बाणों द्वारा विष्णु जी पर प्रहार करना आरम्भ कर दिया। विष्णु जी तथा भैरव का युद्ध, बहुत देर तक होता रहा। उस युद्ध को सब देवता अलग खड़े हो कर देखते रहे, तदुपरान्त भैरव ने उस प्रलयकर्त्ता त्रिशूल को अपने हाथ में उठाया, जो बिना प्राण लिये कभी नहीं रुकता था। भैरव के क्रोध को इस प्रकार बढ़ता देख कर वीरभद्र दौड़ते हुए उनके पास जा पहुँचे और अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा करते हुए बोले—"हे भैरव जी ! आप ऐसा क्रोध न करें, क्योंकि शिवजी ने इतनी कठिन आज्ञा नहीं दी है। विष्णु जी भी शिवजी के एक रूप हैं, अतः सेवक को अपने स्वामी के विरुद्ध ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए।" यह सुन कर भैरव जी ने अपना त्रिशूल रोक लिया। तदुपरान्त वीरभद्र स्वयं विष्णु से युद्ध करने लगे।

हे नारद ! जब विष्णु जी ने देखा कि वीरभद्र पर सहज ही विजय पाना संभव नहीं है, तब उन्होंने योगमाया द्वारा अपने ही समान असंख्य गणों को उत्पन्न किया। वे सब गरुड़ पर आरूढ़ थे और शंख चक्र गदा तथा पद्म को अपने हाथों में धारण किये हुए थे। वे उत्पन्न होते ही शिवगणों से युद्ध करने लगे। उन्होंने अपनी बाण वर्षा, शंख ध्वनि, चक्र तथा गदा आदि से शिवगणों को व्याकुल कर दिया। यह दशा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

देख कर वीरभद्र ने भगवान् सदाशिव का ध्यान धर कर अपना त्रिशूल चलाया। उस त्रिशूल के चलते ही विष्णु जी के गण भस्म होने लगे और देखते ही देखते अदृश्य हो गये। यह दशा देख कर विष्णु जी ने अत्यन्त क्रोध कर, वीरभद्र को मार डालने की इच्छा से उनके मस्तक पर अपनी गदा का एक कड़ा प्रहार किया। तब वीरभद्र ने उनकी मनोभिलाषा को जानते हुए अपना त्रिशूल उनकी छाती में मार कर, उन्हें पृथ्वी पर गिरा दिया। विष्णु जी के इस प्रहार से मूर्च्छित हो कर पृथ्वी पर गिर जाने से, चारों ओर हाहाकार मचने लगा, परन्तु कुछ देर बाद ही विष्णु जी उठ कर खड़े हो गये। तब वीरभद्र को मारने के लिए उन्होंने अपने चक्र को हाथ में उठा लिया। उस समय विष्णु जी का स्वरूप अत्यन्त भयानक हो उठा। ऐसा प्रतीत होता था मानो आज वे अपने चक्र द्वारा प्रलयकाल उपस्थित कर देंगे।

हे नारद ! वीरभद्र ने जब विष्णु के उस तेजस्वी स्वरूप को देखा, तो मन-ही-मन भगवान् सदाशिव के चरणों का ध्यान किया। उस समय शिवजी ने वीरभद्र को अभयदान देते हुए अपने शत्रु का प्रहार सहने करने की सामर्थ्य प्रदान की। उधर विष्णु जी भी पर्वत शिखर के समान निश्चल भाव से खड़े थे। अस्तु, सर्वप्रथम वीरभद्र ने अपने पवित्र बाणों द्वारा विष्णु जी के धनुष के दो टुकड़े कर डाले। विष्णु जी भी प्रबोधन मन्त्र का त्याग कर, जड़ता से मुक्त हो, अपनी सामर्थ्य को प्राप्त कर चुके थे। अस्तु, उस समय का दृश्य देख कर मैंने अर्थात् ब्रह्मा ने विष्णु जी से कहा 'हे प्रभो ! होनहार किसी के मिटाये नहीं मिटती, यद्यपि आपने दक्ष के यज्ञ की रक्षा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी, परन्तु उसका भाग्य ही इस समय विपरीत है। इसलिए आप इस युद्ध में विजय प्राप्त नहीं कर सकेंगे। वीरभद्र इस यज्ञ को अवश्य नष्ट करके मानेगा। शिवजी के क्रोध के साथ ही साथ उसका यह भी एक कारण है कि दधीचि मुनि ने भी इस यज्ञ को नष्ट होने का शाप दिया है। यदि ब्राह्मणों के वाक्य को सत्य न माना जाए तो सम्पूर्ण सृष्टि छली एवं नास्तिक हो जायेगी। अस्तु, आप युद्ध करना बन्द कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

दें। जिस समय भगवान् सदाशिव पुनः कृपालु होंगे, उस समय बिगड़े हुए सभी कार्य स्वतः ही बन जायेंगे। आपकी और शिवजी की लीला अपार है। उसका भेद कोई नहीं जान सकता।' हे नारद ! मेरी इस बात को सुन कर विष्णु जी युद्ध बन्द करके अपने लोक को चले गये और मैं भी अपने लोक को चला आया, क्योंकि मैं यह जानता था कि जब शिवजी पुनः दयालु होंगे, तभी बिगड़ा कार्य बन सकेगा।''

तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जिस समय विष्णु जी अपने लोक को चले गये, उस समय यज्ञ देवता को अत्यन्त शोक हुआ। वह मृग का रूप धारण कर उस स्थान से भाग चला; परन्तु वीरभद्र ने उसे तुरन्त ही पकड़ लिया। तदुपरान्त उन्होंने उसके मस्तक को धड़ से काट कर यज्ञ कुण्ड में डाल दिया। फिर वे अत्यन्त क्रुद्ध हो, बारम्बार गरजते हुए यज्ञ मण्डप के समीप पहुँचे। भैरव, क्षेत्रपाल तथा काली आदि ने यज्ञ स्थल पर उपस्थित सभी लोगों को इस प्रकार पकड़ा, मानो वे कोई चोर हों। कोई शिवगण देवताओं को पकड़ता, कोई मुनियों को बाँधता था, कोई विष्णु के घण्टे तोड़ता था और कोई यज्ञ कुण्ड को ठंडा करने के लिए उसमें जल डाल रहा था। सभी शिवगण अपने शत्रुओं के साथ घोर युद्ध कर रहे थे और यज्ञ-मण्डप को गिराने में संलग्न थे। उन्होंने अपने मुद्गरों की चोट से अनेक के हाथ-पावों को कुचल दिया और यज्ञ पात्रों को तोड़कर नदी में फेंक दिया। किसी ने देवताओं के शरीर को काटा, किसी ने ऋषि-मुनियों को दुःख दिया, किसी ने यज्ञ कुण्ड को खोद डाला और किसी ने सभा स्थल, अन्तःपुर तथा विहार स्थल को जड़ से खोद कर नष्ट कर दिया।

हे नारद ! इसके उपरान्त वीरभद्र ने दक्ष को पकड़ लिया। नन्दी ने सूर्य देवता को बन्दी बनाया। मणिमान ने भृगु ऋषि को पकड़ा और चण्डी ने पूषा को बाँध लिया। इसी प्रकार अन्य देवताओं को भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

उन्होंने बन्दी बना लिया। जो देवता कहीं जा कर छिप गये थे, उन सब को भी वे ढूँढ़ कर ले आये। मणिमान ने अत्यन्त क्रोध में भर कर भृगु मुनि की मूँछें उखाड़ लीं और उन्हें नगर में घुमा कर सब लोगों को भयभीत कर दिया। तदुपरान्त नन्दीश्वर ने क्रुद्ध हो कर भृगु मुनि के नेत्र निकाल लिये, क्योंकि उन्होंने दक्ष प्रजापति को बहका कर शिवजी के विरुद्ध कर दिया था। जो व्यक्ति शिवजी के विरुद्ध जाने का उपदेश करे, उसकी आँखें निकाल लेना ही उचित है। उधर चण्डी ने पूषा के उन दाँतों को तोड़ डाला, जिन्हें खोल कर उन्होंने शिवजी का उपहास किया था।

हे नारद ! इसके पश्चात् वीरभद्र ने अत्यन्त क्रोध में भर कर दक्ष प्रजापति को पृथ्वी पर पटक दिया और उसकी छाती पर पाँव रख कर उसका सिर काट डालने की इच्छा की, परन्तु अनेक हथियारों का प्रयोग करने पर भी वे न तो दक्ष का मस्तक ही काट सके और न ही उसे कोई कष्ट ही पहुँचा सके। यह दशा देख कर वीरभद्र ने शिवजी का ध्यान किया और उस ध्यानावस्था में उनसे आज्ञा प्राप्त की कि दक्ष के सिर को जोर से मरोड़ कर तोड़ डाले। वीरभद्र ने ऐसा ही आचरण किया, तदुपरान्त उस कटे हुए मस्तक को यज्ञ कुण्ड में डाल कर जला दिया। फिर अत्यन्त क्रोध करके उसके शरीर को काटा और उस कटे हुए शरीर के हिस्सों को कश्यप तथा धर्मराज के हाथों में रख दिया। फिर उन्होंने धृष्टनेमि को बहुत दुःख दिया और अंगिरा ऋषि को लातों से मारा, फिर जिस प्रकार उन्होंने शान्तनु को मारा था उसी प्रकार अन्य ऋषि-मुनियों को भी मार डाला। फिर कश्यप की पत्नी की नाक को उन्होंने अपने नखों से काट डाला, जिसके कारण देवताओं की माता अदिति, उस अंग को ही खो बैठी। इस प्रकार जिसके लिए जैसा उचित था, वैसा दण्ड दे दिया।

हे नारद ! भगवान् सदाशिव ने अपना तिरस्कार करने वाले लोगों को इस प्रकार यथोचित फल दे कर अपनी महत्ता को प्रतिष्ठापित किया। शिवजी के बिना जो देवता यज्ञ में अपना भाग लेना चाहते थे,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

वे सब या तो मारे गये या घायल हुए। इस प्रकार दक्ष का यज्ञ सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो गया। हे पुत्र ! शिवजी से शत्रुता रखने वाले को इसी प्रकार दुःख भोगना पड़ता है। सहस्त्रों उपाय करने पर भी जब तक शिवजी का पूजन नहीं किया जाता, तब तक किसी को मुक्ति प्राप्त नहीं होती। शिवजी सब से बड़े और सब के स्वामी हैं। उनकी महिमा ऐसी अपार है कि आज तक उसे कोई नहीं जान सकता। जो लोग प्रेमपूर्वक शिवजी की सेवा एवं पूजा करते हैं, उन्हें किसी प्रकार दुःख नहीं उठाना पड़ता, क्योंकि सदाशिव सदैव उनकी सहायता करते रहते हैं। शिवजी अपने भक्तों के उस पाप को भी नष्ट कर देते हैं जो पिछले पाप-कर्मों के कारण प्राप्त होता है। शिवजी के विपरीत चलने वाला मनुष्य इस संसार में तो दुःख पाता ही है, अन्त में दण्डनीय हो कर नरकवास भी करता है। शिवजी की आराधना किये बिना जो कार्य किया जाता है, उसका परिणाम इसी प्रकार दुःखदायी होता है। अस्तु, इस प्रकार दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के उपरान्त वीरभद्र भगवान् सदाशिव के समीप जा पहुँचे।''

इकतीसवाँ अध्याय

सूत जी ने कहा—''हे शौनकादि ऋषियो ! ब्रह्मा जी द्वारा इस कथा को सुन कर नारद जी को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। अस्तु, उन्होंने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए ब्रह्मा जी से पूछा—''हे पिता ! शिवजी के बिना विष्णु आदि अन्य सब देवता दक्ष के यज्ञ में क्यों चले गये? फिर विष्णु जी ने शिवगणों के साथ मित्रतापूर्वक युद्ध क्यों किया? वे दक्ष के यज्ञ को बचाने में समर्थ क्यों न हो सके?'' ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—''हे नारद ! पूर्व काल में मेरा छू नामक एक पुत्र था। वह राजा था। दधीचि उसका परम मित्र था। वे दोनों आनन्दपूर्वक अपनी राजधानी में रहते थे। कुछ समय बाद ही छू अपने सम्मान एवं पद के कारण अत्यन्त अहंकारी हो गया और अपने को सर्वश्रेष्ठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

समझने लगा। छू कहता था कि राजा सबसे श्रेष्ठ है और दधीचि का कहना था कि ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ है, क्योंकि अन्य सभी लोग, जिनमें राजा भी सम्मिलित हैं, ब्राह्मण को प्रणाम करते हैं, परन्तु छू उसकी बात को न मान कर तथा उसके प्रमाण को अपने तर्क द्वारा काट कर, यह कहता था कि देखो, आठों दिक्पाल जो राजा हैं, उन्हें प्रजापति तथा ईश्वर कहा जाता है और सब लोग, जिनमें ब्राह्मण भी सम्मिलित हैं, उनका पूजन तथा सम्मान करते हैं; इसलिए तुम्हें भी उचित है कि तुम हमारी पूजा करो।

हे नारद ! छू की इस बात को सुन कर दधीचि ने अपने बाएँ हाथ से उसके मस्तक पर एक थप्पड़ मारा और ब्राह्मण की श्रेष्ठता को प्रमाणित कर दिखलाया। यह देख कर छू ने अपने हाथ में वज्र उठा कर दधीचि को मार डाला और इस प्रकार उस पर विजय प्राप्त की। जिस समय दधीचि पृथ्वी पर गिर कर मरने को था, उस समय उसने गुरु का स्मरण करके अपने प्राण त्यागे। उसकी प्रार्थना को सुन कर शुक्राचार्य शीघ्रतापूर्वक उस स्थान पर जा पहुँचे और उन्होंने दधीचि के छिन्न-भिन्न शारीरिक अंगों को एकत्र करके उन्हें पुनर्जीवित कर दिया। इस प्रकार जीवन-दान एवं आरोग्य प्राप्त करने के पश्चात् दधीचि ने शुक्राचार्य से कहा—"हे शुक्राचार्य जी ! आप मुझे कोई ऐसी युक्ति बताइये, जिससे मैं अमर हो जाऊँ।" यह सुन कर शुक्राचार्य ने उत्तर दिया—"हे दधीचि ! ऐसा वरदान केवल शिवजी ही दे सकते हैं। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता भी शिवजी के चरण सेवक हैं। उन्हीं की सेवा द्वारा मैंने यह संजीवनी विद्या प्राप्त की है। उनका मृत्युञ्जय नाम तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। उनकी कृपा प्राप्त करके बाणासुर अमर हो गया और वह सब राजाओं मुनियों तथा ब्राह्मणों में श्रेष्ठ बन कर, शिवपुरी में निवास करता है। शिवजी की सेवा करके ही दुर्वासा ऋषि तीनों लोकों के स्वामी बन बैठे हैं और अपने उत्तम चरित्र द्वारा धर्म की रक्षा करते हैं। शिवजी की सेवा करने के कारण ही विश्वामित्र मुनि ने ब्राह्मण पद को प्राप्त किया है और नवीन सृष्टि को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

उत्पन्न कर अनेक प्रकार की नूतन वस्तुओं को जन्म दिया है। ब्रह्मा जी दिन-रात शिवजी की सेवा में संलग्न रहते हैं तथा उन्हीं की आराधना के कारण ही मार्कण्डेय ऋषि कल्प समाप्त हो जाने पर भी जीवित बने रहते हैं।

हे दधीचि ! इन्द्र ने शिवजी की सेवा द्वारा ही यह शक्ति प्राप्त की है कि उनका शत्रु किसी भी प्रकार जीवित नहीं बच सकता। भगवान् विष्णु भी शिवजी के अनन्य सेवक हैं। जगदम्बा शक्ति भी रात-दिन शिवजी की सेवा करने के कारण तीनों लोकों की स्वामिनी बनी हैं। रामचन्द्र, परशुराम तथा बलराम ने शिवजी की पूजा से ही अपना नाम अमर किया है। विकट, अंगिरस तथा गौतम ऋषि ने शिवजी का पूजन करके अमरत्व प्राप्त किया है। बृहस्पति ने भी शिवजी की सेवा द्वारा उच्च पद पाया है। इन्द्रदेव मुनि बिना इच्छा के ही शिवजी का नाम ले लेने के कारण, शिवगणों में सम्मिलित हो गये। वैश्य वर्ण नन्दी ने शिवजी की सेवा द्वारा उच्च पद को प्राप्त किया। महाकाल पूर्व जन्म में अक्सर वेद के विरुद्ध कार्य किया करते थे, परन्तु शिवजी की सेवा करने के कारण ही उन्होंने मुक्ति पद प्राप्त किया। ब्रह्मा तथा विष्णु ने परस्पर विवाद करने के उपरान्त भी शिवजी के आदि तथा अन्त को नहीं पाया। एक बार एक राक्षसी ने धोखे से शिव मन्दिर को धोया था, उसी पुण्य के कारण वह कैलाश में जा पहुँची और फिर एक राजपुत्री के रूप में उत्पन्न हुई। एक बार एक चोर ने शिवालय में अपने शरीर को त्याग दिया, जिसके कारण उसे परमपद की प्राप्ति हुई। अतः यदि तुम्हें अमरत्व प्राप्ति की इच्छा है तो उन्हीं भगवान् शिव की पूजा करो।''

हे नारद ! शुक्राचार्य जी की बात सुन कर दधीचि ने प्रसन्न हो कर कहा—''हे स्वामिन् ! आप मुझे शिव मन्त्र का उपदेश दीजिये।'' तब शुक्राचार्य जी ने भगवान् सदाशिव से प्राप्त संजीवनी विद्या का उपदेश दधीचि ऋषि के प्रति किया और शिवजी का पूजन करने के लिए एक मन्त्र का उपदेश भी दिया। फिर मैंने भी दधीचि को शिक्षा दी। तब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

दधीचि ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर, उस मन्त्र का जाप करते हुए शिवजी की बहुत सेवा-पूजा की। उनकी सेवा से प्रसन्न हो कर शिवजी ने अपना दर्शन देते हुए उनसे वरदान माँगने के लिए कहा। उस समय दधीचि ने अपने दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् सदाशिव की बहुत प्रकार से प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! आप मुझे अपनी भक्ति प्रदान कीजिये और यह वरदान दीजिये कि मेरी हड्डियाँ वज्र के समान हो जायें और मुझे कोई न मार सके। मैं किसी के साथ नम्रतापूर्वक वार्तालाप भी न करूँ।" दधीचि ऋषि की प्रार्थना सुन शिवजी ने हँसते हुए उन्हें ये तीनों वरदान दिये। तदुपरान्त दधीचि राजा छू के पास जा पहुँचे और पहुँचते ही उन्होंने उसके मस्तक में एक लात मारते हुए कहा—"यह कौन पड़ा हुआ है।" यह देख कर छू ने भी अत्यन्त क्रुद्ध हो, दधीचि के ऊपर अपने वज्र का प्रहार किया, परन्तु उसका कोई फल नहीं निकला। राजा छू ने दधीचि के साथ बहुत समय तक युद्ध किया, परन्तु न तो वह विजय प्राप्त कर सका और न उन्हें किसी प्रकार का कष्ट ही पहुँचा सका। उस समय राजा छू को यह निश्चय हुआ कि दधीचि ने शिवजी से कोई वरदान प्राप्त कर लिया है।

हे नारद ! यह देख कर राजा छू लज्जित हो, भगवान् विष्णु का पूजन करने लगा। उसकी भक्ति से प्रसन्न हो कर भगवान् विष्णु लक्ष्मी सहित गरुड़ पर आरूढ़ हो उसे दर्शन देने के लिए आ पहुँचे। उन्हें देख कर राजा छू ने साष्टांग दंडवत् प्रणाम तथा स्तुति करने के उपरान्त यह प्रार्थना की—"हे प्रभो ! दधीचि नामक एक ब्राह्मण पहले मेरा परम मित्र था, परन्तु अब शत्रु बन गया है और शिवजी से वरदान प्राप्त कर, वज्र शरीर एवं अमर हो गया है। उसने मेरा अनादर करते हुए अपने बाएँ पैर से मेरे मस्तक पर लात मारी है और अहंकार में भर कर यह कहा है कि मैं तीनों लोकों में निर्भय हूँ। हे प्रभो ! उस पर विजय प्राप्त करने के निमित्त ही मैंने आपका पूजन किया है, क्योंकि आप अहंकार को नष्ट करने वाले हैं। अस्तु, आप मुझे कृपा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:45 AM

करके यह वरदान दीजिये कि मैं उसके ऊपर विजय प्राप्त कर सकूँ।'' राजा छू की इस प्रार्थना को सुन कर भगवान् विष्णु अपने मन में अत्यन्त चिन्तित हो कर यह विचार करने लगे कि यदि मैं इस समय अपने भक्त को वरदान नहीं देता हूँ तो वेद का वचन मिथ्या होता है। इसके साथ ही यह बात भी है कि यदि मैं इसे वरदान देता हूँ तो भी वेद का वाक्य झूठा होता है; क्योंकि वेद में कहे अनुसार ब्राह्मण सदैव से निर्भय हैं। इसके साथ यह बात भी है कि मैं शिवजी का भक्त हूँ और दधीचि भी शिवजी का भक्त है। इधर राजा छू मेरा भक्त है। अस्तु, दोनों बातों में से मैं किस बात को रखूँ? शिवजी की सृष्टि मेरे द्वारा मोहित नहीं हो सकती, अतः इस सम्बन्ध में मेरी कोई भी न चल सकेगी। इस प्रकार विचार करने के उपरान्त भगवान् विष्णु ने छू से कहा—''हे राजन् ! पहले तो तुम इस बात को अपने मन में निश्चय कर रखो कि शिवजी के भक्त को कहीं भी, किसी प्रकार का भय नहीं होता; तदुपरान्त तुम यह जानो कि हम तुम्हारे सदैव रक्षक बने रहेंगे, जिसके कारण दधीचि अपना हठ त्याग देगा। साथ ही हम तुम्हें यह भी बताये देते हैं कि हम दधीचि को किसी प्रकार शाप दिलवा देंगे।''

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब राजा छू ने विष्णु जी का यह कथन स्वीकार कर लिया, तब विष्णु जी ब्राह्मण का स्वरूप धारण कर, छलपूर्वक दधीचि के पास गये और उन्हें प्रणाम करते हुए बोले—''हे ब्रह्मन् ! आप मुझे एक वरदान देने की कृपा करें।'' अपने भक्त के मनोरथ की प्राप्ति के हेतु जब विष्णु जी ने इस प्रकार कहा, उस समय उनके तात्पर्य को जान कर दधीचि ने निर्भय हो कर इस प्रकार उत्तर दिया—''हे विष्णु ! मैं आपको पहचान गया हूँ। मेरे ऊपर शिवजी की कृपा है, अतः मैं प्रत्येक बात को भली-भाँति जान लेता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

हूँ। आप मेरे साथ छल करने के निमित्त ही यहाँ ब्राह्मण भेष धारण कर आये हैं। राजा छू ने आपकी सेवा की है और केवल इसीलिए की है कि वह मुझे परास्त कर सके। अस्तु, अब आपको उचित है कि आप अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट करें और अपने घर चले जायें। शिवजी की दया से मैं तीनों काल की बातें जान लेता हूँ और तीनों लोकों में कभी किसी से भयभीत नहीं होता।''

दधीचि के मुख से यह शब्द सुन कर भगवान् विष्णु ने हँसते हुए कहा—''हे दधीचि ! तुम सत्य कह रहे हो, क्योंकि शिवजी की कृपा प्राप्त होने के कारण सदैव निर्भय हो, परन्तु मैं दंडवत् करके तुम से यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि तुम मेरे मनोरथ को स्वीकार कर छू के वरदान को पूर्ण करो।'' यह सुन कर दधीचि ने उत्तर दिया—''हे विष्णु ! शिवजी की कृपा प्राप्त होने के कारण मुझे अब किसी का भय नहीं है। अस्तु, आप मेरे साथ ऐसा छल न करें और अपने लोक को चले जायें।'' तब विष्णु जी बोले—''अरे मूर्ख ! तू मेरी इस बात को क्यों नहीं मानता? मुझसे शत्रुता रख कर कोई सुखी नहीं हो सकता। मैंने रावण आदि महान् बलशाली वीरों को भी नष्ट कर दिया है। तू मेरी अवज्ञा मत कर, अन्यथा मैं तुझे अपने चक्र से मार डालूँगा।

यह सुन कर दधीचि ने कहा—''हे विष्णु ! आपका कथन सत्य है और आप तीनों लोकों को जीत भी सकते हैं। आप ने करोड़ों राक्षसों, दैत्यों तथा अपने शत्रुओं को मारा भी है; परन्तु आप यह ध्यान रखिये कि शिव-भक्तों के ऊपर आपका कोई वश नहीं चल सकता। उनके ऊपर आपका सुदर्शन चक्र निष्फल हो जाता है। इसके प्रमाण स्वरूप मैं आपको स्मरण दिलाये देता हूँ कि तारक के कंठ में लग कर आपका चक्र निष्फल हो गया तथा रावण का भी कुछ नहीं बिगाड़ सका। जिस समय आपने अपने चक्र को निष्फल होते देख कर रावण को मारने के लिए शिवजी का पूजन किया और उन्होंने प्रसन्न हो कर आपको अमोध बाण तथा आज्ञा दी, तभी आप रावण पर विजय प्राप्त कर सके थे। आप यह भली-भाँति जान लें कि शिवजी की भक्ति के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

बिना कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता।''

हे नारद ! यह सुन कर विष्णु जी ने अत्यन्त क्रुद्ध हो, अपना चक्र दधीचि के ऊपर छोड़ दिया, परन्तु दधीचि के शरीर का स्पर्श करते ही वह चक्र सर्वथा निष्फल हो गया। उस समय विष्णु जी अपनी ऐसी पराजय देख कर बहुत व्याकुल हुए। तभी दधीचि ने मुस्कराते हुए उनसे इस प्रकार कहा—''हे विष्णु ! आप आश्चर्यचकित न हों। मैं आपको चक्र के निष्फल हो जाने का कारण विस्तारपूर्वक समझाता हूँ। यद्यपि आपने बहुत उपायों द्वारा इस चक्र को प्राप्त किया है; परन्तु यह मुझे अपना मित्र समझ कर नहीं मारता। आप मेरे ऊपर जिस अस्त्र का प्रयोग चाहें करें और अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा कर मुझे नष्ट करने का प्रयत्न करें परन्तु यह निश्चित है कि आप मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते।'' यह सुन कर विष्णु जी अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होंने महा भयानक गर्जना की। उस घोर गर्जना को सुन कर देवता, उप-देवता तथा वैकुण्ठवासी लोगों की सेना विष्णु जी के समीप तुरन्त आ पहुँची। तब विष्णु जी उस सेना को साथ ले कर दधीचि के साथ युद्ध करने लगे।''

हे नारद ! विष्णु जी ने सब देवताओं के साथ मिल कर दधीचि के ऊपर अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा की। इस प्रकार धर्म के प्रतिकूल चलते हुए, सब ने मिल कर एक मनुष्य को मार डालना चाहा; परन्तु उस दशा में भी दधीचि निर्भय बना रहा। उसने एक मुट्ठी कुश ले कर जैसे ही उन देवताओं की ओर छोड़े, वैसे ही वे पवित्र त्रिशूल बन कर प्रलयकाल की ज्योति के समान चारों ओर अग्नि फैलाते हुए सब को भस्म करने लगे। उन त्रिशूलों ने विष्णु सहित सम्पूर्ण देवताओं को नष्ट कर देना चाहा। यह दृश्य देख कर सब देवताओं ने अपने हथियार डाल दिये और उस स्थान से भाग खड़े हुए। तब विष्णु जी ने माया द्वारा अपने समान करोड़ों पार्षदों को अपने पवित्र शरीर से उत्पन्न किया, परन्तु दधीचि ने शिवजी का ध्यान धर कर, उन सब को भी भस्म कर दिया। अपने गणों को इस प्रकार नष्ट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

होते हुए देख कर विष्णु जी ने एक अत्यन्त आश्चर्यजनक चरित्र का आश्रय लिया अर्थात् उन्होंने अपना विराट स्वरूप प्रकट कर, अपने शरीर में तीनों लोकों को दिखाया ताकि दधीचि भयभीत हो जाये; परन्तु उस विराट रूप को देख कर भी दधीचि निर्भय बना रहा और बोला—"हे विष्णु ! आप इस प्रकार माया का प्रदर्शन न करें। यह सब तो केवल मन की शक्ति है। इसमें ईश्वरीय शक्ति कुछ भी नहीं है। आप चाहें तो मेरे शरीर में भी इन सब वस्तुओं को देख लें। तदुपरान्त मुझ से छल करें।" यह कह कर दधीचि ने शिवजी का स्मरण किया और अपने शरीर से सम्पूर्ण जीवों को प्रकट करके दिखा दिया। यह गति देख कर सभी देवता वहाँ से चले गये, परन्तु विष्णु जी की इच्छा युद्ध करने से फिर भी विरत नहीं हुई।

हे नारद ! उस समय विष्णु जी के मन की बात जान कर मैंने उन्हें समझाते हुए कहा "हे विष्णु जी ! आप इस प्रकार हठ क्यों कर रहे हैं। आपकी बुद्धिमत्ता और शक्ति का लोप क्यों हो गया है? क्या आप उन शिवजी के तेज से परिचित नहीं हैं। जो क्षण भर में ही तीनों लोकों को नष्ट कर देने की सामर्थ्य रखते हैं?" मेरी बात सुन कर विष्णु जी ने युद्ध बन्द कर दिया। फिर हाथ जोड़ कर, छू को आगे कर दधीचि की प्रशंसा करते हुए यह कहा—"हे दधीचि ! छू आपकी शरण में आया है और उसने अपने हठ को त्याग दिया है।"

विष्णु जी के इस प्रकार कहने के उपरान्त छू ने भी दधीचि की स्तुति करते हुए कहा—"हे मित्र ! तुम मेरा अपराध क्षमा कर दो। तुम शिवजी के परम भक्त हो और तुम्हारा कथन सब प्रकार श्रेष्ठ है। आप धन्यभाग्य हैं कि आपके ऊपर शिवजी इस प्रकार दयालु हैं। मैं यह भली-भाँति समझ गया हूँ कि तीनों लोकों में शिवजी के समान अन्य कोई नहीं है।" राजा छू के इन शब्दों को सुन कर दधीचि ने भी उसके ऊपर कृपा दिखायी। शिव भक्तों की यही रीति है कि जो व्यक्ति उनकी शरण में पहुँचता है, उस पर वे तब कृपा रखते हैं। अस्तु, दधीचि ने उस समय विष्णु तथा अन्य देवताओं को यह शाप दिया कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

तुम लोगों ने शिव भक्तों की महिमा को नहीं समझा, इस प्रकार तुमने भगवान् सदाशिव का निरादर किया है। अस्तु, तुम सब रुद्र के क्रोध में पड़ कर उनसे पराजित होगे। विष्णु जी भी अपने पार्षदों सहित इसका फल प्राप्त करेंगे। केवल ब्रह्मा ही ऐसे बचेंगे जिन्हें कोई चिन्ता और शोक नहीं होगा।''

इतना कह कर राजा छू की ओर कृपा पूर्ण दृष्टि से देखते हुए दधीचि ने कहा—''हे छू ! तुम यह स्मरण रखो कि ब्राह्मण सर्वोत्तम हैं और वे इस संसार में पूजे जाने योग्य हैं। देवताओं, राजाओं तथा सर्पों आदि से इस प्रकार कह कर, दधीचि अपने घर को चले गये। विष्णु जी भी उन्हें प्रणाम करने के उपरान्त चिन्तित मन से अपने लोक को लौट आये। ब्रह्मा जी, विष्णु तथा सनकादि को पहले तो अपने हृदय में बहुत ही ग्लानि तथा दुःख हुआ, परन्तु जब उन्होंने अहंकार रहित हो कर शुद्ध बुद्धि से यह पहचाना कि शिवजी सबसे श्रेष्ठ हैं, तो उनका खेद नष्ट हो गया। जिस स्थान पर दधीचि के साथ देवताओं का युद्ध हुआ था, वह स्थान 'हरपुर तीर्थ' तथा 'स्थानेश्वर' के नाम से प्रसिद्ध है। उस तीर्थ की सेवा करने से सम्पूर्ण दुःख दूर हो जाते हैं। जो मनुष्य स्थानेश्वर तीर्थ में जा कर शिवजी का पूजन करता है, वह सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करता है। जो मनुष्य दधीचि तथा छू की यह कथा पढ़ेगा, उसके सम्पूर्ण शोक नष्ट हो जायेंगे और वह आवागमन से रहित हो जायेगा। जो मनुष्य इस कथा को सुन कर किसी युद्ध क्षेत्र में जायेगा, उसकी निश्चय रूप से विजय होगी अथवा वह श्रेष्ठ मृत्यु को प्राप्त कर, शिवलोक पहुँचेगा।''

तैंतीसवाँ अध्याय

सूत जी ने कहा—''हे ऋषियो ! इतनी कथा सुन कर देवर्षि नारद जी पितामह ब्रह्मा जी से बोले—''हे पिता ! दक्ष के यज्ञ विध्वंस का वृत्तान्त मैंने सुना। अब आप कृपा कर विस्तारपूर्वक यह बताइये कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

यज्ञ नष्ट हो जाने के उपरान्त क्या घटना घटित हुई। यह सुन कर ब्रह्मा जी ने शिवजी के श्री चरणों का ध्यान धरने के उपरान्त उत्तर दिया—''हे नारद ! जब शिवजी के गणों ने यज्ञ में उपस्थित लोगों की इस प्रकार दुर्गति की तथा उन्हें लज्जित किया, उस समय सभी सभासद् उस स्थान पर आ कर, जहाँ मैं तथा विष्णु जी बैठे हुए थे, रुदन करने लगे तथा विस्तारपूर्वक सब वृत्तान्त बताने लगे। देवताओं तथा मुनियों की उस दुर्गति को देख कर हम दोनों को बहुत दुःख हुआ। उसी समय जब सब लोगों ने 'त्राहिमाम्, त्राहिमाम्' की पुकार की, तब मैंने उन्हें समझाते हुए कहा—''हे देवताओ तथा ऋषियो ! तुमने शिवजी को क्रुद्ध किया है और अन्य देवताओं के समान ही उन्हें जान कर भारी अपराध भी किया है, अतः अब तुम सब लोग शिवजी के चरणों पर गिर कर प्रार्थना करो और उनसे ही अपना अपराध क्षमा कराओ। तीनों लोकों में ऐसा कौन है, जो शिवजी के क्रोध को सहन कर सके? भगवान् सदाशिव रौद्र होते हुए भी, आशुतोष हैं। वे सेवा करने पर शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। अतः तुम सब उनकी शरण में जाओ। तुम सब शिवजी के बिना यज्ञ में अपना भाग लेना चाहते थे, उसी का फल तुम्हें प्राप्त हुआ है। जो लोग शिवजी के शत्रु बन कर सुख प्राप्ति की कामना करते हैं, उनका अन्त ऐसा ही होता है। जो शिवजी क्षण भर में ही सम्पूर्ण सृष्टि को भस्म कर देने की सामर्थ्य रखते हैं, उनसे शत्रुता करके किस प्रकार सुख मिल सकता है? मैं भी दधीचि के शाप के वशीभूत हो कर उस यज्ञ में चला गया था। अस्तु, तुम लोग निश्चिन्त हो कर शिवजी की शरण में जाओ। वे तुम्हें अवश्य ही क्षमा कर देंगे। एक बात यह भी तुम्हें समझ लेनी चाहिए कि यदि शिवजी इस यज्ञ को नष्ट नहीं करते तो मनुष्य वेद की रीति को त्याग कर, नास्तिक हो जाते। अतः उन्होंने जो कुछ किया वह उचित ही है।''

इतना कह कर मैं, विष्णु जी तथा अन्य सब देवताओं के साथ कैलाश पर्वत पर जा पहुँचा। हे नारद ! उस स्थान की सुन्दरता का वर्णन किस प्रकार किया जाए? वहाँ पहुँच कर, किसी को किसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

प्रकार की चिन्ता और शोक नहीं रहता। वहाँ चारों ओर सुन्दर फुलवारी लगी हुई है, जहाँ भाँति-भाँति के सुन्दर पुष्प तथा फल वृक्षों पर सुशोभित हैं। कैलाश के आगे हम सब ने कुबेर की अलकापुरी को देखा। फिर उस पवित्र वट वृक्ष को देखा, जिसके नीचे भगवान् शिवशम्भु बैठे हुए थे। जो लोग उन शिवजी के दर्शन प्राप्त करते हैं उनके धन्य भाग्य हैं। महाप्रभु का इतना सुन्दर स्वरूप था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका शरीर अत्यन्त कान्तिमय था। उस समय वे वीरासन की मुद्रा में, कुश के आसन पर बैठे हुए थे। तब मैंने, विष्णु जी ने, दधिगुप्त ने तथा अन्य देवताओं एवं ऋषि मुनियों ने उन्हें प्रणाम करते हुए, अनेक प्रकार से स्तुति की।''

चौंतीसवाँ अध्याय

देवताओं ने कहा—''हे दीनबन्धु भगवान् सदाशिव ! आप सब के रक्षक, सब के स्वामी, परब्रह्म तथा अप्रमेय हैं। आपकी लीला को कोई भी नहीं जानता। आपकी जो इच्छा होती है, वही होता है। हे प्रभो ! दक्ष प्रजापति ने अपनी मूर्खता तथा अज्ञानता के कारण आपको अपने यज्ञ में नहीं बुलाया और नास्तिक बन कर आपके भक्तों का सम्मान भी नहीं किया, जिसके कारण वे सब उसे शाप दे कर अपने घर को लौट गये। उसने आदिशक्ति का भी कोई सम्मान नहीं किया और उन्हें भस्म होने से नहीं रोका। देवताओं ने भी कोई हस्तक्षेप नहीं किया। अस्तु, सब लोग अपने-अपने किये का फल प्राप्त कर चुके हैं। हमें आप से कुछ नहीं कहना है, क्योंकि इसमें सम्पूर्ण दोष देवताओं का ही है। हम सब ने आपको भुला दिया था। अस्तु, अब आप हमारे अपराध क्षमा कर दें और कृपा दृष्टि से देख कर, हमें निर्भय बना दें। हे स्वामिन् ! यदि आप इस प्रकार दण्ड न देते तो धर्म नष्ट हो जाता। आपकी अवज्ञा होती, वेद की प्रतिष्ठा कम हो जाती तथा दक्ष का अहंकार और अधिक बढ़ जाता। अस्तु, आपने जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

कुछ किया, वह सर्वथा उचित है।''

हे नारद ! देवताओं तथा ऋषि-मुनियों द्वारा इस प्रकार स्तुति किये जाने पर मैंने तथा विष्णु जी ने भगवान् सदाशिव की प्रार्थना करते हुए कहा—''हे प्रभो ! आपकी माया सम्पूर्ण सृष्टि को अचेत किये हुए है। आप अपनी माया के द्वारा सम्पूर्ण सृष्टि को भुलावे में डाले हैं और अपने तीनों रूपों से संसार की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय करते हैं। हे प्रभो ! इस समय हम सब आपकी शरण में आये हैं। अस्तु, आप हम सब पर कृपा कीजिये और हमें वरदान दीजिये, जिसके कारण दक्ष को पुनः जीवन प्राप्त हो। आप भृगु देवता को नेत्र प्रदान कीजिये तथा भृगु ऋषि के क्लेश को दूर कीजिये। आपकी कृपा से पूषा अपने दाँतों को पुनः प्राप्त करें तथा सम्पूर्ण देवताओं के घायल शरीर भी आरोग्य प्राप्त करें। हे नाथ ! आपके यज्ञशाला में चलने पर ही यह सब बात पूरी होगी। हम यह प्रण करते हैं कि भविष्य में आपके बिना कोई भी यज्ञ न होगा।''

हे नारद ! हम लोगों की इस प्रकार स्तुति सुन कर भगवान् सदाशिव अत्यन्त प्रसन्न हुए और मुस्कुराते हुए बोले—''हे देवताओ ! हम कभी क्रोध नहीं करते तथा कल्प वृक्ष के समान सब को सुख प्राप्त कराते हैं। तुम यह निश्चय जानो कि जो प्राणी जैसा कर्म करता है, उसे वैसा फल अवश्य मिलता है; क्योंकि सांसारिक प्राणी माया में फँस कर सार वस्तु के सच्चे ज्ञान को भुला बैठते हैं। दक्ष ने जो कुछ किया, उसका फल उसे प्राप्त हो गया। अब हम यह वरदान देते हैं कि दक्ष बकरे का मुख पा कर जीवित हो जाएंगे, भृगु मित्र के नेत्रों से देखेंगे, पूषा यजमान के दाँतों से भोजन करेंगे तथा सभी देवताओं के शरीर स्वस्थ हो जाएंगे।'' इतना कह कर शिवजी मौन हो गये। उस समय सब देवता प्रसन्न हो कर जय-जयकार करने लगे तथा यह कहने लगे कि हे प्रभो ! आप अब यज्ञ में अवश्य चलें; क्योंकि आपके बिना यज्ञ पूर्ण न होगा। आप कृपा कर अपने भाग को स्वीकार कीजिये।'' इस प्रकार देवताओं ने जब प्रार्थना की तो शिवजी ने प्रसन्न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:46 AM

हो कर यज्ञ में चलना स्वीकार कर लिया। उस समय सब को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। जिस समय शिवजी यज्ञ स्थल की ओर चले, उस समय की शोभा यह थी कि कोई देवता शिवजी पर चँवर डुलाता था, कोई छत्र लिये चल रहा था और कोई उनकी महिमा का वर्णन कर रहा था।''

❀❀❀

पैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इस प्रकार मैं, विष्णु जी तथा अन्य सभी देवता जिस समय शिवजी के साथ चलते हुए दक्ष के यज्ञ-मंडप में जा पहुँचे, उस समय दक्ष के पारिवारिक जनों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त शिवजी की आज्ञानुसार प्रत्येक कार्य किया गया। जब दक्ष के शरीर में यज्ञपशु (बकरे) का सिर लगाया गया तो वह जीवित हो कर इस प्रकार उठ खड़ा हुआ, मानो अभी तक निद्रा में सो रहा हो। शिवजी के दर्शन प्राप्त कर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उस समय वह प्रेम में भर कर बकरे की जिह्वा से शिवजी की स्तुति करने लगा। हार्दिक प्रेम का सम्मिश्रण होने के कारण यह स्तुति परम पुनीत एवं सुन्दर है। दक्ष ने कहा—''हे प्रभो ! आपके आदि और अन्त को कोई नहीं जान पाया है। इसीलिए आपने मुझे दण्ड दे कर ब्रह्मज्ञान कराया, यह आपकी मुझ पर अत्यन्त कृपा है। मैंने अपने अज्ञानता तथा मूर्खता के वशीभूत हो कर आपको नहीं पहचाना और आपकी बहुत निन्दा की। अस्तु आप कृपापूर्वक मुझे अपनी भक्ति का वर प्रदान करें।''

दक्ष की स्तुति के उपरान्त विष्णु जी ने कहा—''हे प्रभो ! आपका यश अमृत के समुद्र के समान शुद्ध, शीतल एवं फलदायक है। उस समुद्र में हमारा मन हाथी के समान चिन्ता में जला हुआ, जिस समय बैठता है, उस समय उसे बाहर निकलने की इच्छा नहीं होती। आप दया करके हमारे अपराधों को क्षमा करें।'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नाथ ! संपूर्ण सृष्टि मुझे बुरा कहती है, परन्तु आपका उपासक होने के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

कारण मैं किसी की बातों पर ध्यान नहीं देता।" ऋत्विज् ने प्रार्थना की—"हे प्रभो ! हम आपको न पहचान पाने के कारण शोक और चिन्ता आदि में पड़े हुए हैं। आपका तेज और प्रकाश अत्यन्त सुन्दर है। अतः हम आपको सहस्त्रों बार प्रणाम करते हैं।" इसी प्रकार इन्द्र, वरुण, कुबेर, अग्नि आदि देवता, गन्धर्व, अप्सरा, ब्राह्मण, यजमान, विद्याधर, योगी, सती, ऋषि-मुनि आदि सभी ने शिवजी की अलग-अलग प्रार्थना करते हुए यह माँग की कि, "हे प्रभो ! आप हमारे अपराधों को क्षमा कर दें। आप सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी, सब को उत्पन्न करने वाले, सब का पालन करने वाले तथा सब का नाश करने वाले हैं। अस्तु, आप हमारे दोषों पर विचार न करते हुए, हमें अभयदान दें।"

छत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! तुम इस बात को सत्य समझो कि शिवजी के चरणों का पूजन किये बिना, करोड़ों जन्मों तक भटकते रहने पर भी दुःख दूर नहीं होता। अस्तु, जो बुद्धि बाद में प्राप्त होती है, वह यदि पहले ही प्राप्त हो जाए तो किसी को कष्ट न भोगना पड़ेगा। अब मैं शिवजी की अन्य लीलाओं को कहता हूँ, उन्हें सुनो। भगवान् सदाशिव ने जब सब लोगों द्वारा की गयी स्तुति एवं प्रार्थना को सुना तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। उस समय उन्होंने मुस्कुराते हुए इस प्रकार कहा—"हे देवताओ ! दक्ष ने बकरे की जिह्वा होने के कारण गलबल के रूप में जो उत्तम स्तुति की है, उसी प्रकार जो मनुष्य हमारी प्रार्थना करेगा, उसे सम्पूर्ण ऋद्धि-सिद्धियों की प्राप्ति होगी। हे सभासदो ! हम, ब्रह्मा तथा विष्णु संसार को मुक्ति-भुक्ति प्रदान करने वाले, परब्रह्म परमेश्वर हैं। हम तीनों गुणों से परे हैं। सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म केवल हमी हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य सब जीव हमारे ही स्वरूप हैं। वेदों का कहना भी यही है, परन्तु जो अज्ञानी जीव उसमें भेद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

समझते हैं उन्हें कष्ट उठाना पड़ता है। जो मनुष्य हम तीनों देवताओं को अन्य प्राणियों के समान ही विचारता है और उनमें किसी प्रकार का भेद नहीं मानता, वह उच्च पद को प्राप्त होता है। जो हम तीनों को भिन्न-भिन्न करके देखता है, वह सहस्त्रों युगों तक शोक में डूबा रहता है। इससे सब लोगों को उचित है कि वे श्रेष्ठ बुद्धि का आश्रय ग्रहण कर, सब देवताओं तथा मुनियों की सेवा किया करें। ब्रह्मा के पूजन के बिना विष्णु का पूजन व्यर्थ है और विष्णु की सेवा किये बिना मैं कभी प्रसन्न नहीं होता, इस बात को भली-भाँति जान लेना चाहिए।''

इस प्रकार शिवजी ने सब को सम्बोधित करने के उपरान्त भृगु ऋषि की ओर देखते हुए कहा—''हे भृगु ! तुम जो चाहते हो, वही होगा। संसार में जो व्यक्ति विष्णु अथवा हम में भेद मानेगा अथवा विष्णु का भक्त हो कर हमारी निंदा करेगा अथवा हमारा सेवक बन कर विष्णु की बुराई करेगा, वह अवश्य ही नरक को प्राप्त होगा। हम दोनों में भेद रखने वाला मनुष्य तत्त्व ज्ञान से हीन कहा जाता है।'' इस प्रकार के वचन कह कर जब शिवजी ने शापोद्धार का वरदान किया, तो सब लोग अत्यन्त प्रसन्न हो गये। दक्ष भी अपने परिवार सहित प्रसन्न हो, आनन्द में डूब गया। उस समय सब ओर से 'जय हर-हर' की ध्वनि सुनायी देने लगी और सब लोग भगवान् सदाशिव की स्तुति-प्रशंसा करने लगे।

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जो व्यक्ति शिवजी की जिस भावना से स्तुति करता है, उसकी अभिलाषा को भगवान् सदाशिव अवश्य पूरा करते हैं। यह बात सब लोकों में प्रसिद्ध है कि भगवान् शिव की प्रशंसा से सम्पूर्ण सुखों की प्राप्ति होती है। वेद और पुराणों का यह कथन है कि शिवजी के विरोधी को कभी भी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। अस्तु, इस घटना के पश्चात् शिवजी ने दक्ष प्रजापति को सम्बोधित करते हुए यों कहा—''हे दक्ष ! अब तुम यज्ञ फिर से प्रारम्भ करो। हमारी प्रसन्नता द्वारा पूर्णता को प्राप्त होगा।'' शिवजी के मुख से यह वचन सुन कर सब लोग आनन्द मग्न हो गये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

तदुपरान्त एक नवीन विशाल मण्डप का निर्माण किया गया। भगवान् शिवशंकर की आज्ञानुसार ऋषि-मुनियों ने पुनः यज्ञ आरम्भ कराया। दक्ष ने भी सब देवताओं सहित श्री शिवजी को यज्ञ का भाग दिया और उन्हें सबसे श्रेष्ठ तथा सबसे बड़ा स्वीकार किया। ब्राह्मणों को यथायोग्य दान देने के उपरान्त दक्ष प्रजापति ने यज्ञ समाप्त हो जाने पर, अपनी पत्नियों सहित नदी में स्नान किया। इस प्रकार भगवान् सदाशिव ने दक्ष के यज्ञ को पूर्ण करवा कर, सब को आनन्द प्रदान किया। तब सब देवता तथा ऋषि-मुनि श्री शिवजी की स्तुति एवं प्रशंसा करते हुए अपने-अपने घर को चले गये। मैं तथा विष्णु जी भी अपने-अपने लोक में लौट आये। परन्तु भगवान् शिवशंकर को दक्ष प्रजापति ने यह कह कर वहीं रोक लिया कि, हे प्रभो ! आप कुछ समय तक यहीं निवास कर हमें अपनी सेवा करने को सौभाग्य प्रदान करें। शिवजी ने भी दक्ष को अपना भक्त जान कर, उसकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। अस्तु, कुछ दिनों तक वहीं निवास करने के पश्चात् शिवजी अपने गणों सहित कैलाश पर्वत पर लौट गये।

हे नारद ! यद्यपि शिवजी प्रसन्न हो कर लौटे, परन्तु सती के वियोग का दुःख उनके हृदय से नहीं गया। वे अनेक कथाओं का वर्णन करते हुए, संसारी जीवों के समान चरित्र दिखाते हुए समय व्यतीत करने लगे। हे पुत्र ! भगवान् शिव अनादि और अनन्त हैं। उन्हें किसी प्रकार भी दुःख कैसे हो सकता है?, परन्तु यह सब उनकी माया का ही प्रभाव है। उस माया के भेद को हम लोग नहीं जान पाते और सहस्त्रों युक्तियों द्वारा शिवजी की महिमा को नहीं समझ पाते हैं। वे परब्रह्म परमेश्वर हैं और माया उनकी दासी है। वेद का कहना है कि भगवान् शिव की महिमा का वर्णन किया ही नहीं जा सकता और सरस्वती सब कुछ वर्णन करने के उपरान्त भी यह कहती है कि मैं भगवान् शिवशंकर की महिमा का वर्णन करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। विष्णु जी प्रतिदिन भगवान् शिव की सेवा करते रहते हैं और अपने हृदय में उनका भय माना करते हैं। उनके समान दीनों का रक्षक और कौन है? वे अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

भक्तों के मनोरथ को सब प्रकार से पूर्ण करते हैं। वे अपने भक्तों के निमित्त अनेक प्रकार के दुःख भी उठाते हैं; परन्तु स्वयं किसी को दुःख नहीं पहुँचाते। उनकी सहायता से ही मैं सृष्टि को उत्पन्न करता हूँ तथा उनकी आज्ञा पा कर ही विष्णु जी सृष्टि का पालन करते हैं। उन निर्गुण रूप परम प्रभु शिवजी को मेरा कोटिशः प्रणाम है।''

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! मैंने दक्ष यज्ञ विध्वंस का सम्पूर्ण वृत्तान्त तथा अहंकार को नष्ट करने वाले शिव-चरित्रों का तत्त्व ज्ञान तुम्हें सुना दिया। अब तुम जो चाहो, वह पूछ लो। यह सुन कर देवर्षि नारद जी ने अपने दोनों हाथ जोड़ कर ब्रह्मा जी की स्तुति एवं प्रशंसा करते हुए नम्रतापूर्वक कहा—''हे पिता ! अब आप यह बताइये कि जब शिवजी कैलाश पर्वत पर लौट गये, उसके पश्चात् क्या हुआ?'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जिस स्थान पर सती ने अपना शरीर त्याग किया था, उस स्थान पर एक परम प्रकाशवान् ज्योतिपुंज का उदय हुआ। वह ज्योतिपुंज पश्चिम दिशा की ओर एक देश में गिर गया। तब उस ज्योतिपुंज का नाम 'ज्वाला भवानी' हुआ। उसकी सेवा करने से सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होती है। उसको 'ज्वाला देवी' भी कहा जाता है। कल्पभेद के अनुसार सती के अन्य अंग भी प्रकट हुए हैं। वे जहाँ-जहाँ गिरे, उन स्थानों की महिमा अलग-अलग है।''

सूत जी बोले—''हे ऋषियो ! यह वृत्तान्त सुन कर नारद जी ने ब्रह्मा जी से पूछा—''हे पिता ! अब आप कल्पभेद से सती के सम्पूर्ण चरित्रों का वर्णन करें और यह बतायें कि उनके द्वारा किन-किन देवियों की उत्पत्ति हुई है?'' यह सुन कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब तुम कल्पभेद के अनुसार सती के चरित्रों को सुनो। एक कल्प की कथा यह है कि जब सती जी ने दक्ष के यज्ञ में पहुँच कर अपना अपमान तथा शिवजी के निरादर को देखा तो वे अत्यन्त क्रुद्ध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुईं। उन्होंने अपनी माता के पास पहुँच कर, उन्हें बहुत समझाते हुए कहा—"हे माता ! इस यज्ञ स्थल में बहुत दुःखदायी निन्दनीय कर्म हुआ है। मैं अब अवश्य ही अपने प्राणों को त्याग दूँगी, जिसके कारण सब लोगों को बहुत दुःख उठाना पड़ेगा। मेरी मृत्यु के पश्चात् शिवजी के गण बहुत उपद्रव मचायेंगे और कोई भी व्यक्ति बिना दण्ड पाये नहीं बचेगा। तदुपरान्त शिवजी भी मेरे वियोग में बहुत दुःखी हो कर तीनों लोकों में भ्रमण करेंगे।"

हे नारद ! इस प्रकार की भविष्यवाणी कर, सती ने उस स्थान से चला जाना चाहा, परन्तु उनकी माता तथा बहनों ने उन्हें रोक लिया। उस समय सती जी योग धारण कर, अन्तर्धान हो गयीं और गंगा तट पर पहुँच कर स्नान करने के उपरान्त नवीन वस्त्रों को धारण कर, गन्धमादन पर्वत पर जा पहुँची। वहाँ उन्होंने सर्वप्रथम शिवजी की पूजा की, तदुपरान्त श्वास को ब्रह्माण्ड पर चढ़ा कर, शरीर को त्याग, परब्रह्म की ज्योति में लीन हो गयीं। उस समय तीनों लोकों में भारी हाहाकार मच गया और एक ऐसा शब्द उत्पन्न हुआ, जिसके कारण दैत्यों के घर नष्ट हो गये और देवता अत्यन्त दुःखी हुए। सती जी के साथ जो गण यज्ञ मंडप में गये थे, वे भी अत्यन्त दुःखी हुए। उनमें से कुछ तो आत्मघात करके मर गये और कुछ विभिन्न प्रकार के उपद्रव करने लगे। यह देख कर भृगु ऋषि ने अपनी मन्त्र-शक्ति द्वारा यज्ञ की रक्षा की। उस समय शिव-गणों ने भगवान् सदाशिव के समीप पहुँच कर सब वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया और उनसे अपनी रक्षा की प्रार्थना की। उस समाचार को सुन कर शिवजी ने अत्यन्त क्रोधित हो, अपनी जटा को उखाड़ा और उसके द्वारा अनेक गणों को उत्पन्न किया। गणों की उस असंख्य सेना ने दक्ष के यज्ञ मंडप पर धावा बोल दिया और यज्ञ को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला। सभी सभासदों को पूरा दंड देने के उपरान्त जब वे शिवजी के पास पहुँचे, उस समय शिवजी का क्रोध तो अवश्य कुछ कम हो गया, परन्तु सती का वियोग सहन करने में वे असमर्थ ही रहे। उसी दुःख में व्याकुल हो कर वे अपने गणों को साथ ले गंगा तट पर जा पहुँचे और जिस स्थान पर सती ने अपना शरीर

CC-0. Prof. Manjunath Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

त्यागा था, उस स्थान पर पहुँच कर, वहाँ सती के शरीर को पड़ा देख मूर्छित तथा मोहित हो गये। कुछ देर पश्चात् जब उन्हें चेत हुआ तो वही सती का शरीर ऐसा दिखायी दिया, मानो कोई श्रेष्ठ कमल खिला हुआ हो। उस स्वरूप को देख कर शिवजी फिर मूर्छित हो गये। इसी का आश्रय ले कर उन्होंने यह भी प्रदर्शित कर दिया कि मोह सब दुःखों का मूल है।''

इतनी कथा सुना कर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! तुम इस सम्बन्ध में कोई सन्देह मत करना। शिवजी की लीला अत्यन्त विचित्र है। अस्तु, कुछ देर पश्चात् जब शिवजी को चैतन्यता प्राप्त हुई, तब वे अपने को निपट अभागा अनुमान कर अधीर और निर्बल हो गये तथा किसी भी प्रकार सन्तोष धारण न करके, ज़ोर-ज़ोर से रोने-चिल्लाने लगे। 'हे प्राण प्रिये ! तुम्हारे तिरछे नेत्रों को देखे बिना मुझे बेचैनी हो रही है। भला, तुम इतनी निष्ठुर कैसे हो गयी कि मुझ से बोलती तक नहीं हो?'' इस प्रकार कहते हुए शिवजी ने सती जी के मृत शरीर को अपने हाथ से उठा कर हृदय से लगा लिया। तदुपरान्त उसे बार-बार छाती से लगा कर, चूमने लगे। इस प्रकार अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हुए, वे फिर मूर्छित हो गये। कुछ देर बाद जब उन्हें चैतन्यता प्राप्त हुई, तब वे सती के मृत शरीर को अपने कन्धे पर लाद कर, घोर दुःख उठाते हुए, चारों ओर भ्रमण करने लगे। उन्होंने सम्पूर्ण देश, पर्वत, द्वीप, समुद्र, वन, लोकालोक, सप्तश्रृंग पर्वत आदि सम्पूर्ण पृथ्वी का भ्रमण किया। तदुपरान्त वे भरतखण्ड में आ कर देव नदी के तट पर खड़े हो गये। उस स्थान पर एक बरगद का बहुत बड़ा तथा श्रेष्ठ वृक्ष था। वहीं दौड़-दौड़ कर शिवजी ने रुदन करना आरम्भ कर दिया। साथ ही 'सती ! प्रिये।' आदि अनेक नाम ले-ले कर, वे सती को पुकारने लगे। उस समय उनके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह चली।

''हे नारद ! जिस स्थान पर भगवान् सदाशिव के आँसू गिरे, वह स्थान 'नेत्र सरोवर' नामक तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हुआ। उस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को अपने सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होती है। वह स्थान तपस्वियों के लिए श्रेष्ठ तपोभूमि है। उस तीर्थ पर स्नान करने से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। उस सरोवर की लम्बाई का प्रमाण दो योजन है। अस्तु, वहाँ कुछ समय ठहरने के पश्चात् शिवजी फिर आगे चल दिये। मार्ग में चलते हुए जिन-जिन स्थानों पर सती के मृत शरीर का जो भी अंग पृथक् हो कर गिर पड़ा, वे स्थान 'सिद्धपीठ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन सिद्धपीठ स्थानों की पूजा करने से सम्पूर्ण मनोरथों की प्राप्ति होती है। उक्त स्थानों पर भगवती महामाया अपनी सम्पूर्ण कलाओं सहित निवास कर, अपने भक्तों को सर्वस्व प्रदान करती हैं। इस प्रकार लीला करने के उपरान्त शिवजी एक स्थान पर जा कर बैठ गये। सती के मृत-शरीर का जो भाग शेष रह गया था, वहाँ उन्होंने उसका दाह-संस्कार किया। तदुपरान्त उनकी हड्डियों को एकत्रित कर एक माला बनायी, जिसे उन्होंने अपने गले में धारण कर लिया। फिर चिता की भस्म को अपने शरीर पर मल कर, वे उसी स्थान पर बैठ गये और 'प्राणेश्वरी, भवानी' आदि नामों द्वारा सती का स्मरण करते हुए रो-रो कर व्याकुल होने लगे। उन्होंने परब्रह्म होते हुए भी ऐसी लीलाओं द्वारा सब को मोहित कर लिया। हे पुत्र ! भगवान् सदाशिव के इस चरित्र को पढ़ने तथा सुनने से भी मुक्ति की प्राप्ति होती है।''

अड़तीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर पौराणिक सूत जी ने कहा—''हे शौनकादि ऋषियो ! सिद्धपीठ के इस वृत्तान्त को सुनकर देवर्षि नारद जी ने ब्रह्माजी से कहा—हे पिता ! सती के अंगों द्वारा जिन-जिन स्थानों पर जो-जो पीठ उत्पन्न हुए, अब उनके सम्बन्ध में मुझे बताने की कृपा करें।'' यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! सिद्ध पीठों का सम्पूर्ण वृत्तान्त मैं तुम्हें सुनाता हूँ। तुम ध्यान देकर सुनो। देवपुर नामक परम रमणीक पर्वत पर सतीजी के दोनों चरण गिरे, उस स्थान पर 'महाभागा देवी' प्रकट हुईं। वहाँ शिवलिंग भी विराजमान हैं। औट्यानि देश में सतीजी के दोनों नितम्ब गिरे, वहाँ 'कात्यायनी' सिद्धपीठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

प्रकट हुआ। वहाँ भी शिवलिंग विराजमान है। मैंने, विष्णु जी ने तथा सम्पूर्ण सृष्टि ने उस स्थान की पूजा की। कामशैल पर्वत पर सतीजी की योनि गिरी, वहाँ 'कामाक्षा' नामक देवी की उत्पत्ति हुई। उन्हें 'कामरूपा' भी कहा जाता है। हम सब लोगों ने उस सिद्धपीठ की पूजा करके अपने मनोरथों को प्राप्त किया। सती जी की अग्नि द्वारा पूर्णशैल पर्वत पर 'पूर्णेश्वरी भवानी' शिवलिंग सहित प्रकट हुईं। जलन्धर नामक पर्वत पर सती के कुच गिरे, जिससे वहाँ चण्डी नामक देवी का सिद्धपीठ प्रकट हुआ। गंगा जी के तट पर भी सतीजी का एक अंग कट कर गिरा जिससे उस स्थान पर 'वागीश्वरी देवी' का आविर्भाव हुआ। इसी प्रकार सती जी के अंग-प्रत्यंगों के गिरने पर बहुत-से सिद्धपीठ प्रकट हुए। उन सभी स्थानों पर शिवलिंग भी स्थापित हुए हैं। मैंने, विष्णु जी तथा अन्य सभी देवताओं ने उन सिद्धपीठों का पूजन कर, सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त किया है। जो व्यक्ति इन सिद्धपीठों की पूजा करता है, उसकी सभी अभिलाषाएँ पूरी होती हैं।

हे नारद ! शिवजी ने सांसारिक मनुष्यों के विशेष उपकार के लिए यह लीलाएं की हैं, क्योंकि वे अपने भक्तों को भुक्ति-मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। शिवजी तथा भवानी सम्पूर्ण सृष्टि के माता-पिता हैं। तीनों लोकों में उनकी समता का कोई स्त्री-पुरुष नहीं हैं। वे दोनों लोक-परलोक का सुख प्रदान करने वाले हैं और तीनों लोकों में सबसे श्रेष्ठ हैं। इस प्रकृति का मूल जगदम्बा सती द्वारा ही है। मैं तथा विष्णु जी आदि सब देवता उन्हीं भवानी के सेवक हैं। शिवजी साक्षात् परब्रह्म, निर्गुण सगुण तथा अप्रमेय हैं। शिव तथा भवानी की सेवा करने वाले मनुष्य भवसागर से पार हो जाते हैं।

हे नारद ! दक्ष के यज्ञ में शरीर त्यागने के पश्चात् सतीजी ने पर्वतराज हिमाचल के घर, उनकी मैना नामक पत्नी के गर्भ से जन्म लिया। वहाँ उन्होंने अनेक प्रकार की श्रेष्ठ लीलाएँ करके अपने माता-पिता को बहुत आनन्द दिया तथा उनकी आज्ञा लेकर शिवजी की तपस्या की। फिर शिवजी के साथ ही उनका विवाह हुआ। उन्होंने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:47 AM

शिवजी की अर्द्धांगिनी होकर देवताओं के सम्पूर्ण दुःख दूर किये। फिर शिवजी की उपासना करके अपने शरीर का रंग गौर कर लिया।

हे नारद ! शिव और शक्ति अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सब प्रकार के आनन्द प्रदान करते हैं। वे सम्पूर्ण सृष्टि के माता-पिता हैं और उनसे बाहर कोई भी नहीं है। जब प्राणी के हृदय में यह बुद्धि उत्पन्न हो जाती है और इस बात का भली-भांति ज्ञान हो जाता है कि शिव और शक्ति ही सृष्टि के मूल कारण हैं, तब वह सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर, परमपद को प्राप्त कर लेता है। मैं उन्हीं की कृपा प्राप्त करके सृष्टि को उत्पन्न करता हूँ और उन्हीं की शक्ति पाकर विष्णुजी संसार का पालन करते हैं। उन शिव और शक्ति को मैं, विष्णु जी तथा सनकादिक की भली-भाँति नहीं जान सके हैं। केवल अपनी बुद्धि के अनुसार ही हम उनकी महिमा का थोड़ा-बहुत वर्णन कर लिया करते हैं।

हे नारद! मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार शिव-सती के चरित्र को कहा है। इसी प्रकार अन्य सभी लोग भी अपनी बुद्धि के अनुसार चरित्र का वर्णन करते हैं, परन्तु अन्त में दीन होकर पार नहीं पाते। भगवान् सदाशिव एवं भगवती सती का यह चरित्र परम पवित्र तथा आनन्द बढ़ाने वाला है। इसको सुनने से कीर्ति तथा आयु की वृद्धि होती है। यह चरित्र सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराने वाला है। शिव और सती का यह चरित्र जो स्वयं पढ़ता है अथवा दूसरों को सुनाता है, वह अपने कुल सहित समस्त विपत्तियों से छूट जाता है और इस संसार में अनेक प्रकार के आनन्द का उपभोग करने के पश्चात् अन्त में शिवलोक को प्राप्त होता है। हे नारद! मैंने तुमसे यह सब चरित्र कहा। अब तुम और जो सुनना चाहते हो, उसे बताओ।''

इति श्री शिवपुराणे श्री शिवविलासे उत्तरखण्डे भाषायां ब्रह्मा-नारद सम्वादे द्वितीयो खण्डस्समाप्तः॥ २॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

तीसरा खण्ड

पहला अध्याय

सूतजी बोले—हे ऋषियो ! इतनी कथा सुनकर नारदजी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता! अब आप मुझे यह बताइये कि सती ने दूसरा अवतार किस प्रकार लिया, उनका विवाह शिवाजी के साथ किस प्रकार हुआ और उन्होंने अर्द्धांगिनी नाम किस प्रकार पाया? इसके अतिरिक्त आप मुझे शिव-पार्वती की अन्य लीलाओं को भी सुनायें, क्योंकि शिव-चरित्र सुनने से मेरी तृप्ति नहीं होती है। इसके विपरीत यह इच्छा अधिक बढ़ती जाती है कि मैं भगवान् शिव के चरित्र को निरन्तर सुनता रहूँ।" नारदजी के मुख से यह वचन सुनकर ब्रह्माजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—"हे नारद ! दक्ष-यज्ञ में भस्म होने से पूर्व सती ने शिवजी से यह वरदान माँगा था कि मुझे आपके चरणों की भक्ति सदैव प्राप्त हो और आपकी प्रीति भी मेरे ऊपर कभी कम न हो। इतना कहकर उन्होंने अपने शरीर को भस्म कर दिया, तदुपरान्त मैना के गर्भ से दूसरा जन्म लिया।

यह सुनकर नारदजी बोले—"हे पिता ! मैं मैना को नहीं जानता हूँ। अस्तु, आप विस्तारपूर्वक यह बताने की कृपा करें कि मैना किसकी पुत्री थी और किसके साथ विवाह हुआ था।" ब्रह्माजी ने कहा—"हे नारद ! उत्तर दिशा की ओर सम्पूर्ण पर्वतों का राजा हिमालय नामक पर्वत है। वह पर्वत प्रदेश अत्यन्त रमणीक है। उसी हिमालय प्रदेश के एक देश में, एक राजा राज्य करता था। उसके राज्य की शोभा का किसी भी प्रकार वर्णन नहीं किया जा सकता। वहाँ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:48 AM

बिना तेल के ही दीपक जलते हैं और वहाँ के निवासी अपने घरों में देवदारु की लकड़ी जला कर प्रकाश करते हैं। वहाँ की बर्फ पत्थर की शिला के समान कठोर होती है जिसके ऊपर लोग चलते हैं। यदि कोई छोटा मनुष्य भी वहाँ जा पहुँचता है तो वहाँ के निवासी उच्च पद वाले व्यक्ति भी, उसका आदर तथा सम्मान करते हैं। उस पर्वत पर ऐसी गायें हैं कि लोग उनकी पूँछ का मोरछल बनाते हैं और वे वन में निर्भय होकर स्वच्छन्द विचरण किया करती हैं। वहाँ की स्त्रियाँ भी निर्भय होकर स्वच्छन्द जहाँ भी चाहें, वहाँ घूमती रहती हैं। सहस्त्रों प्रकार के सुगन्धित पुष्प वहाँ सर्वत्र खिले रहते हैं।''

हे नारद ! अब मैं तुमसे उस पर्वत की श्रेष्ठता का वर्णन करता हूँ, जिस प्रकार कि उसने मेरे द्वारा उच्च पद प्राप्त किया। सर्वप्रथम जब मैंने यह विचार किया कि पर्वतों का राजा किसे बनाना चाहिए तब मैंने हिमालय पर्वत में सम्पूर्ण लक्षण देखकर, उसे राजा बनाना निश्चित किया, क्योंकि वह पर्वतराज विष्णु के अंश से उत्पन्न हुआ है। उसका सम्पूर्ण शरीर देवताओं के समान सुन्दर है तथा उसका स्वरूप सत्पुरुषों के समान है। वह विशाल शरीरधारी, पुष्ट, परम तेजस्वी, निष्पाप तथा बहुत बुद्धिमान् है और वह अपने समान आप ही है। वह न तो औरों को दिखाई देता है और न कोई उसके पास पहुँच ही सकता है। पर्वतों का स्वामी होने के पश्चात् वह नीतिपूर्वक राज्य करता हुआ, प्रजा का पालन करने लगा। उसकी प्रजा भी शुद्ध आचरणों वाली तथा व्रत-नियमों को धारण कर धर्म-मार्ग पर सदैव दृढ़ रहती थी। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी से रस लेता है तथा वर्षा द्वारा पुनः उसी को दे देता है, उसी प्रकार वह राजा भी अपनी प्रजा से जो कर लेता था, उस सब को उसी की भलाई में व्यय कर देता था।

हे नारद ! हिमाचल सम्पूर्ण राज्य लक्षणों को धारण किये हुए था। वह परम शास्त्रज्ञ, बुद्धिमान् तथा दूरदर्शी था। वह चिकित्सा तथा उपाय से रहित होकर अपने शरीर का पालन करता था और किसी कार्य में शीघ्रता नहीं दिखाता था। वह दूसरों के आनन्द के लिए धन संचित करता था और इसलिए मौन रहता था कि अधिक न बोलने से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ बुद्धि की प्राप्ति होती है। शक्तिशाली होते हुए भी वह दीन बना रहता था। त्याग तथा सन्तोष की कीर्ति का प्रकाश बढ़ाकर, उसने अहंकार से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया था। यद्यपि वह युवा था तो भी वृद्ध पिता की भाँति अपनी पुत्र रूपी प्रजा का उदारतापूर्वक पालन करता था। वह दंड देने योग्य व्यक्तियों को इसलिए दंड देता था ताकि धर्म स्थिर बना रहे। वह प्रत्येक विद्या तथा गुण का ज्ञाता था। उसके राज्य में चोरों ने चोरी करना छोड़ दिया और वे वेद की आज्ञानुसार चलने लगे। उसके मित्र उसके प्रति हृदय में सच्चा स्नेह रखते थे। उसके राज्य में किसी को कष्ट नहीं था।

हे नारद ! उस श्रेष्ठ राजा के विवाह के लिए सब देवताओं ने उद्योग किया। उन्होंने अपने मनोरथ की पूर्ति के हेतु पितरों से कहा कि आप अपनी बड़ी पुत्री, जिसका नाम मैना है, का विवाह हिमाचल के साथ कर दीजिये। ऐसा करने से देवताओं के अनेक कार्य सिद्ध होंगे तथा सब लोगों के दुःख दूर हो जायेंगे। अपनी पुत्रियों के शाप का स्मरण कर, पितारों ने देवताओं की यह बात स्वीकार कर ली तथा एक शुभ लग्न में मैना का विवाह हिमाचल के साथ कर दिया। विवाह में आनन्द-मंगल की जो-जो रीतियां होती हैं, ये सब यथाविधि सम्पन्न हुईं। उस विवाह को देखकर मुझे, विष्णुजी को तथा देवताओं को यह समझ कर विशेष प्रसन्नता हो रही थी कि इसके घर में जो पुत्री उत्पन्न होगी वह भगवान् सदाशिव को ब्याही जायेगी। अस्तु, विवाह हो जाने के उपरान्त हिमाचल मैना को साथ ले अपने घर को लौट गये।"

दूसरा अध्याय

सूत जी बोले—हे शौनकादि ऋषियो ! इतनी कथा सुनने के पश्चात् नारदजी ने ब्रह्माजी से इस प्रकार कहा—"हे पिता ! यह वृत्तान्त सुनकर मेरे मन में एक सन्देह उत्पन्न हुआ है, अतः आप उसका

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:49 AM

निराकरण कर दें। आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि मैना की कितनी बहनें और थीं? क्योंकि आप अभी यह बता चुके हैं कि मैना अपनी बहनों में सबसे बड़ी थी। आप यह भी बताइये कि उन बहनों को किसने शाप दिया था?'' यह सुनकर ब्रह्माजी बोले—''हे नारद ! मेरे पुत्र दक्ष प्रजापति ने सर्वप्रथम बहुत-से पुत्र उत्पन्न किये, परन्तु उनके द्वारा दक्ष को आनन्द लाभ न हुआ, क्योंकि वे मुक्ति पाकर परमपद को जा पहुँचे। तब यह देखकर दक्ष प्रजापति ने सात कन्याएँ उत्पन्न कीं और उनका विवाह चन्द्रमा आदि के साथ कर दिया। यह वृत्तान्त पहले भी सुना चुका हूँ। दक्ष की उन पुत्रियों में एक लड़की का नाम 'स्वधा' था। उसका विवाह पितरों के साथ हुआ। स्वधा के गर्भ से तीन कन्याओं ने जन्म लिया। उनमें सबसे बड़ी का नाम मैना, मझली का नाम धन्या तथा छोटी का नाम कलावती था।

हे नारद ! प्रातःकाल के समय जो मनुष्य इनका नाम लेता है, उसके सम्पूर्ण मनोरथ पूरे होते हैं। इनके शुद्ध चरित्र को सुनने से आनन्द की प्राप्ति होती है, क्योंकि तीनों लोकों में सम्मान प्राप्त करने वाली ये इसी योग्य हैं। एक दिन की बात है कि तीनों कन्याएँ श्वेतद्वीप में जाकर, क्षीर समुद्र के निकट भगवान् विष्णु के समीप जा पहुँचीं और वहाँ विष्णुजी के दर्शन करने के उपरान्त उनकी स्तुति करके, उनकी आज्ञा से वहीं एक स्थान पर बैठ गयीं! कुछ देर पश्चात् मेरे पुत्र सनकादिक भी वहाँ जा पहुँचे। उन्होंने दूर से ही भगवान् विष्णु को प्रणाम किया। सनकादिक को आते देखकर वहाँ उपस्थित सभी लोग उठकर खड़े हो गये तथा सम्मानपूर्वक उन्हें प्रणाम करने लगे, परन्तु हे नारद! वे तीनों कन्याएँ अपने स्थान पर ज्यों-की-त्यों बैठी रहीं। उन्होंने न तो सनकादिक को प्रणाम किया और न उनका सम्मान ही किया।

हे नारद ! दूसरों को दोष भले ही दे दिया जाए, परन्तु सत्य बात तो यह है कि शिवजी की जो इच्छा होती है, वही होता है। भगवान् सदाशिव की आज्ञा को ही भाग्य अथवा कर्म कहते हैं। अस्तु, उन तीनों कन्याओं की ढिठाई को देखकर सनत्कुमार को बहुत क्रोध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुआ। यद्यपि वे लोग बुद्धिमान्, निरहंकार तथा परमहंस हैं, परन्तु उस समय शिवजी की माया में पड़कर वे अपने ज्ञान को भुला बैठे। भला, तीनों लोकों में ऐसा कौन है, जो शिवजी की माया तथा इच्छा पर विजय प्राप्त कर सके। अस्तु, सनत्कुमार ने उनको सम्बोधित करके कहा—"अरी ! तुम तीनों बहनें परम मूर्ख हो। तुम वेद के आशय को नहीं समझ पायी हो और तुमने यह बात नहीं जानी है कि ब्राह्मण समस्य प्राणियों द्वारा पूजा जाने योग्य हैं। तुमने अहंकार के वशीभूत हो, मनुष्यों के समान अपने मार्ग को त्याग दिया है और हमारा बहुत निरादर किया है, अतः हम तुम्हें यह शाप देते हैं कि तुम देवभूमि स्वर्ग को त्यागकर, मनुष्यों के देश में जाकर रहो।"

हे नारद ! इस शाप को सुनकर वे तीनों आश्चर्य चकित रह गयीं और सनत्कुमार की प्रार्थना करती हुई बोलीं—"हे मुनि ! हमसे यह बड़ा भारी अपराध हुआ जो आपका सम्मान नहीं किया। वास्तव में यह अपराध हमसे मनुष्य के समान ही बन पड़ा है। उसका फल भी हम प्राप्त कर चुकी हैं। परन्तु अब हम आप से प्रार्थना करती हैं कि आप हमें यह वरदान दें कि जिस समय हमारा पाप नष्ट हो जाए, तब हम फिर इसी स्वरूप को प्राप्त कर लें।" उनके इन विनीत वचन को सुनकर सनत्कुमार अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे कन्याओ ! तुम्हारी प्रार्थना सुनकर हमारे मन का क्षोभ दूर हो गया है। अस्तु, हम प्रसन्न होकर तुम्हें यह वर देते हैं कि तुम में जो सबसे बड़ी कन्या है, वह विष्णु के अंश से उत्पन्न पर्वतराज हिमाचल की पत्नी होगी और उसके गर्भ से जो लड़की उत्पन्न होगी, वह शिवरानी होकर अपने कुटुम्ब के लोगों का सब पाप नष्ट कर देगी। मंझली कन्या का विवाह त्रेतायुग में राजा जनक के साथ होगा। उसके गर्भ से सीता का जन्म होगा, जो भगवान् रामचन्द्र के साथ ब्याही जायेंगी। तीसरी बहन का विवाह द्वापर युग में वैश्य वर्ण वृषभानु के साथ होगा। उसकी पुत्री राधा भगवान् श्रीकृष्ण की प्रेयसी होंगी। इस प्रकार तुम तीनों ही पुनः अपनी गति को प्राप्त होकर, स्वर्ग में आ पहुँचोगी। इतना कहकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:49 AM

सनकादिक वहाँ से चले गये। तब वे तीनों कन्याएँ भी अपने पिता के घर लौट आयीं।''

इतनी कथा को सुनकर नारद जी ने पूछा—''हे पिता ! इसके बाद क्या हुआ, वह आप मुझसे कहिये।'' ब्रह्मा जी बोले—हे पुत्र ! अब मैं आगे का यह वृत्तान्त भी कहता हूँ, जिसे सुनकर भगवान् सदाशिव के चरणों में भक्ति उत्पन्न होती है।''

❁❁❁

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब हिमाचल विवाह करके अपने घर लौटे उस समय उनके राज्य में बहुत आनन्द मनाया गया। ब्रह्माणों की सेवा करके उन्हें दान-दक्षिणा देकर बहुत प्रसन्न किया गया। तदुपरान्त देवता तथा ऋषि, मुनि आदि अपने मनोरथों की प्राप्ति के लिए हिमाचल के समीप पहुँचे। हिमाचल ने सबका स्वागत सत्कार करते हुए कहा—''आज मेरा अहोभाग्य है जो आप सबने यहाँ पधार कर मेरे घर को पवित्र किया है। अब आप मुझे अपना सेवक जानकर कोई आज्ञा दीजिये। हिमाचल के इन विनम्र वचनों को सुनकर देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—''हे हिमाचल ! हम लोग तुम्हारे पास इसलिए आये हैं कि तुम्हारे, द्वारा देवताओं के कार्य की सिद्धि होगी। तुम यह तो जानते हो कि सती ने दक्ष के यज्ञ में अपना शरीर त्याग दिया था। अस्तु, अब तुम ऐसा उपाय करो, जिससे वे तुम्हारी कन्या बनकर पुनः जन्म लें। ऐसा करने से उन्हें तो आनन्द प्राप्त होगा ही, तीनों लोकों का भी कल्याण होगा।''

हे नारद ! इस प्रकार हिमाचल को युक्ति बताने के उपरान्त सब देवता भगवती जगदम्बा की शरण में गये और उनकी बहुत प्रकार से स्तुति-प्रशंसा करन लगे। उस समय आदि शक्ति ने अपने पूर्ण स्वरूप को प्रकट कर उन्हें दर्शन दिया। वे भगवती श्रेष्ठ रथ पर विराजमान थीं और उसके शरीर से करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश निकल रहा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:49 AM

था। जब देवता उनके तेजस्वी स्वरूप के तेज को सहन करने में असमर्थ हुए, तब भगवती जगदम्बा ने कृपा करके उन्हें ऐसी शक्ति प्रदान की, जिससे वे स्थिर रह सकें। अस्तु, भगवती महामाया के प्रकट होने पर देवता तथा ऋषि-मुनियों ने हाथ जोड़कर उनकी प्रार्थना करते हुए यों कहा—"हे मातेश्वरी! आप सर्वश्रेष्ठ हैं। आपकी शरण में पहुँचे हुए जीव को कभी दुःख प्राप्त नहीं होता। हे जगदम्बे! अब हम आपकी शरण में आये हैं। अस्तु, आप हमारे मनोरथों को पूर्ण करें अर्थात् पृथ्वी पर दूसरा जन्म लेकर शिवरानी का पद ग्रहण करें, जिससे सब देवताओं का दुःख दूर हो तथा ब्रह्मा एवं विष्णु को भी प्रसन्नता प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त सनत्कुमार जो भविष्यवाणी कर चुके हैं, उसको पूर्ण करना भी आपका ही कार्य है। अस्तु, आप हमारी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करने की कृपा करें।"

हे नारद ! देवताओं द्वारा की गयी इस प्रार्थना को सुनकर भगवती जगदम्बा ने अत्यन्त प्रसन्न होकर मधुर वाणी में कहा—"हे देवताओ ! हमारी अपनी भी यही इच्छा थी। अब हम तुम्हारी प्रार्थना को स्वीकार कर अवश्य ही अवतार लेंगी। हिमाचल तथा मैना हमें प्राप्त करने के लिए तप कर रहे हैं। उनसे बड़ा भक्त अन्य कोई नहीं है। अतः उन्हीं के घर हम प्रकट होंगी। अब तुम सब लोग हमारे कथन पर विश्वास रखकर, अपने-अपने घरों को जाओ। हम तुम्हारे दुःख को अवश्य ही दूर करेंगी। और सुनो, हम तुम पर एक गुप्त रहस्य और प्रकट किये देती हैं। वह यह है कि शिवजी ने भी हमारे दुबारा अवतार लेने के लिए अनेक उपाय किये हैं। जब से हमने दक्ष प्रजापति के यज्ञ में शरीर त्यागा है, तब से वे संसार से विरक्त होकर हमारे वियोग में अत्यन्त दुखी हैं। उन्होंने हमारे शरीर की भस्म को अपने शरीर में मल रक्खा है और हमारी हड्डियों की माला को कण्ठ में पहन रक्खा है। हमारे वियोग-दुख में दुःखी होकर वे अब तक अकेले ही वनों में भ्रमण करते रहते हैं और देवताओं की सभा में नहीं गये हैं। अस्तु, तुम अपने मन में किसी प्रकार का सन्देह मत करो। तुम्हारे सम्पूर्ण दुःख अवश्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:49 AM

ही दूर हो जायेंगे। इतना कह कर भगवती जगदम्बा अन्तर्धान हो गयीं। तब सब देवता भी उन्हें प्रणाम करके अपने-अपने घर लौट गये। हे नारद ! इस चरित्र को जो कोई सुनेगा अथवा सुनायेगा, उसे परम पद की प्राप्ति होगी और उसके यहाँ धन, सन्तान आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहेगी।''

चौथा अध्याय

ब्रह्माजी ने कहा—''हे नारद ! हिमाचल ने अब अपनी पत्नी मैना को देवताओं की आज्ञा सुनायी तो मैना को बहुत प्रसन्नता हुई। तदुपरान्त दोनों पति-पत्नी गृहस्थ धर्म का अति उत्तम रीति से पालन करने लगे। मैना ने शिवजी की सेवा-पूजा आरम्भ कर दी तथा प्रतिदिन उन्हीं कार्यों में अपना समय व्यतीत करने लगी, जिनके करने से शिवजी प्रसन्न होते हैं। दोनों पति-पत्नी शिव तथा शिवरानी के स्मरण एवं ध्यान में मग्न हो गये। हे नारद ! शिवजी के भक्त परम धन्य हैं। वे लोक तथा परलोक में अत्यन्त आनन्द तथा पुण्य प्राप्त करते हैं तथा अपने कुल को ही नहीं, अपितु औरों को भी मुक्त कर देते हैं। अस्तु, हिमाचल ने भगवती जगदम्बा की आराधना आरम्भ की और मैना से भी यह कहा कि तुम अपनी तपस्या द्वारा आदिशक्ति तथा शिवजी को प्रसन्न करने का उपाय करो। इस प्रकार वे दोनों शिव तथा शक्ति की उपासना करने लगे।

हे नारद ! उन दोनों ने शिव तथा शक्ति की उपासना करने के अतिरिक्त अन्य सब कार्यों को भुला दिया। वे अष्टमी के दिन व्रत रखने तथा शिवजी का पूजन किया करते थे। श्रावण मास में शिव व्रत रखने के उपरान्त उसकी पूर्णता के निमित्त गंगा तट पर बसे औषधप्रस्थ देश में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने शिवलिंग की स्थापना कर, तपस्या करना आरम्भ किया। उस तप की अवधि बीस वर्ष की थी। उस बीच में उन्होंने कभी बिना अन्न-जल ग्रहण किये और कभी केवल वायु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:50 AM

का ही भक्षण करते हुए, शिव तथा शक्ति का विधिवत् पूजन किया। जब वह तपस्या पूर्ण हुई, तब भगवती उमा ने प्रकट होकर उन्हें अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया। उनका शरीर सजल मेघ के समान श्रेष्ठ श्यामवर्ण था तथा आठ हाथ और तीन आँखें थीं। वे सब प्रकार के वस्त्राभूषणों से अलंकृत थीं। हे नारद ! तब उन भगवती ने प्रकट होकर मैना से कहा—"हे मैना ! तुम अपने मनोरथ को प्रकट करो, जो चाहो, माँग लो।"

हे नारद ! जब मैना ने अपने नेत्र खोल कर भगवती जगदम्बा के स्वरूप को देखा तो उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसने हाथ जोड़कर स्तुति करते हुए कहा—"हे माता ! मेरे धन्य भाग्य हैं, जो मुझे आज आपके दर्शन प्राप्त करने का यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं इस समय आपकी कुछ स्तुति करना चाहती हूँ, परन्तु हे माता ! न तो मुझे कुछ ज्ञान ही है और न मैं विद्या ही जानती हूँ, जिससे अपनी इस अभिलाषा को पूर्ण कर सकूँ। यह जानकर भगवती महामाया ने मैना के शरीर से अपने हाथ से स्पर्श करा दिया, जिसके कारण उसे उसी समय श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति हुई। तब वह अत्यन्त प्रेममग्न होकर अपनी आँखों से अश्रुवर्षा करने लगी। उस समय उसने ऐसे कठिन शब्दों से युक्त श्रेष्ठ पदावली में जगदम्बा की स्तुति की, जिसे बड़े-बड़े विद्वान् भी अच्छी तरह नहीं समझ सके। उस स्तुति को सुनकर भगवती ने कहा—"हे मैना ! जो व्यक्ति इस स्तुति को सुनेगा अथवा पढ़ेगा, वह अपने सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करेगा तथा संसार में स्त्री, पुत्र, धन आदि प्राप्त करके, अन्त में मेरे लोक में आवेगा।"

भगवती महामाया के इन कृपापूर्ण वचनों को सुनकर मैना ने हाथ जोड़कर कहा—"हे मातेश्वरी ! तीनों लोकों में ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसे आप न दे सकती हैं? अस्तु, अब मेरी आप से यही प्रार्थना है कि सर्वप्रथम मेरे गर्भ से अत्यन्त वीर, धीर तथा गुणी सौ पुत्रों का जन्म हो। वे ब्रह्मज्ञानी होकर अपने कुल का मान बढ़ायें तथा दोनों वंशों को मुक्ति देने वाले सिद्ध हों। तदुपरान्त मेरे गर्भ से एक कन्या का जन्म

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:50 AM

हो, जो सब बातों में आपके समान ही हो। तीनों लोकों में उसके समान और कोई न हो और वह देवताओं की दुःख रूपी जड़ को काटने में कुल्हाड़ी के समान सिद्ध हो सके।

मैना की इस प्रार्थना को सुनकर भगवती जगदम्बा ने मुस्कुराकर कहा—"हे मैना ! तुम्हारी बुद्धि को धन्य है, जो तुमने ऐसा वर माँगा है। मैं तुम्हें इच्छित वर देती हूँ और यह बताती हूँ कि तुमने जिस प्रकार के सौ पुत्रों की कामना की है, वे तुम्हारे गर्भ से उसी रूप से जन्म लेंगे, परन्तु अपने समान मैं स्वयं ही हूँ अस्तु, तुम्हारी मनोभिलाषा की पूर्ति के हेतु मैं स्वयं ही तुम्हारे घर में अवतार लूँगी।" इतना कहकर भगवती जगदम्बा अन्तर्धान हो गयीं। तब जिस दिशा की ओर वे अन्तर्धान हुई थीं, उस दिशा की ओर प्रणाम करने के पश्चात्, मैना भी अपने घर को लौट चली। जब उसने घर जाकर हिमाचल को सब वृत्तान्त सुनाया तो वे अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने मैना की बहुत प्रकार से प्रशंसा की। तदुपरान्त हिमाचल ने इस उपलक्ष्य में एक बहुत बड़ा उत्सव मनाया।"

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जिस दिन से सती ने अपने शरीर को त्यागा था, उसी दिन से भगवान् सदाशिव अवधूत स्वरूप धारण कर, साधारण मनुष्यों के समान पत्नी-वियोग से दुःखी हो, संसार में सब ओर भ्रमण करते रहे। वे परमहंस योगियों के समान नग्न शरीर, सर्वांग में भस्म मले हुए, मस्तक पर जटाजूट धारण किये, गले में मुण्डों की माला पहने हुए, भ्रमण करते रहे। कुछ समय तक इस प्रकार भ्रमण करने के उपरान्त वे एक पर्वत की कन्दरा में जा बैठे और घोर तप करने लगे। अकेले रह जाने पर उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाये। एक दिन ये दिगम्बर वेषधारी शिवजी दारुक वन में जा पहुँचे। वहाँ उन्हें नग्नावस्था में देखकर, मुनियों की स्त्रियाँ उनके सुन्दर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:50 AM

स्वरूप पर मोहित हो, काम के आवेग में उनसे लिपट गयीं। यह देखकर सब मुनियों ने शिवजी को शाप दिया। उस शाप के कारण शिवजी का लिंग उनके शरीर से पृथक् होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और उस समय तीनों लोकों में भारी हाहाकार मच उठा।''

इस कथा को सुनकर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—''हे पिता ! मैं चाहता हूँ कि आप शिवजी के चरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''अच्छा सुनो, जिस समय शिवजी दिगम्बर वेष में वन में भ्रमण कर रहे थे, उस समय ऋषि-मुनि तो कहीं अन्यत्र गये थे, केवल उनकी स्त्रियाँ ही घरों में थीं। उस कठिन अवस्था में भी शिवजी का स्वरूप इतना सुन्दर था कि उसे देखते ही सब ऋषि-पत्नियाँ उनके ऊपर मोहित हो, काम के वशीभूत हो गयीं। वे आपस में एक दूसरी को सम्बोधित करती हुई यों बोलीं—''हे सखी ! उस स्त्री को बड़ी भाग्यवान् समझना चाहिए, जो इनके शरीर से जा लिपटें।'' इस प्रकार कहकर वे सब स्त्रियाँ काम के वशीभूत हो, हँसती, मुस्कुराती हुई शिवजी से जाकर लिपट गयीं। उसी समय उनके पति भी लौट कर वहाँ आ पहुँचे। जब उन्होंने यह दृश्य देखा तो वे अत्यन्त क्रोध में भरकर शिवजी से कहने लगे—''अरे मूर्ख ! नारकी, अधर्मी, पापी, अनाचारी, तू यह कैसा पाप कर रहा है? तूने वेद के विरुद्ध अधर्म को स्वीकार किया। तूने अपने इस स्वरूप द्वारा हमारी स्त्रियों के धर्म को बिगाड़ा है। अस्तु, हम तुझे यह शाप देते है कि तेरा लिंग पृथ्वी पर गिर पड़े।''

हे नारद ! उन ऋषियों के इस प्रकार कहते ही शिवजी का लिंग कटकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और पृथ्वी को पार करता हुआ पाताल के भीतर जा पहुँचा। इधर लिंग-हीन हो जाने पर शिवजी भी अत्यन्त लज्जित हुए। फिर उन्होंने अपने स्वरूप को प्रलयकालीन रूप की भाँति महा भयानक बना लिया, परन्तु यह भेद किसी पर प्रकट न हुआ कि शिवजी ने ऐसा चरित्र क्यों रचा था? शिवजी का लिंग जब गिर पड़ा, उसके पश्चात् तीनों लोकों में अनेक प्रकार के उपद्रव उठने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:50 AM

लगे, जिसके कारण सब लोग अत्यन्त भयभीत, दुःखी तथा चिन्तित हो गये। पर्वतों से अग्नि की लपटें उठने लगीं, दिन में आकाश से तारे टूट-टूट कर गिरने लगे, चारों ओर हाहाकार का शब्द भर गया, ऋषि-मुनियों के आश्रम में यह उत्पात सबसे अधिक हुए, परन्तु इस भेद को कोई भी नहीं जान सका कि इन उपद्रवों का मूल कारण क्या है।

हे नारद ! प्रत्येक मनुष्य को यह उचित है कि वह प्रत्येक कार्य को भली-भाँति सोच-समझ लेने के पश्चात् ही करे। जो मनुष्य विद्या पढ़कर अहंकारी हो जाते हैं, वे शिवजी को नहीं जान पाते और पीछे बहुत दुःख उठाते हैं। अस्तु, उन उपद्रवों के कारण घोर दुःख पाने के पश्चात् वे ऋषि-मुनि अपने स्थान को त्याग कर देवलोक में जा पहुँचे ; परन्तु जब वहाँ भी उन्हें शान्ति न मिली तब से सब देवताओं को लेकर मेरे पास आए। उस समय इन्द्र आदि सब देवताओं ने मुझे प्रणाम करते हुए पूछा—"हे प्रभो ! जिन उपद्रवों के कारण तीनों लोक भस्म हुए जाते हैं, उनके उत्पन्न होने का वास्तविक कारण क्या है?" देवताओं की बात सुनकर मैंने बहुत विचार किया, परन्तु वास्तविक रहस्य को नहीं समझ पाया। तब मैं उन सबको साथ लेकर विष्णु लोक में जा पहुँचा। वहाँ भगवान् विष्णु को प्रणाम करने के पश्चात् मैंने उनसे उन उत्पादों का कारण पूछा। मैं बोला—"हे प्रभो ! पृथ्वी में भूकंप, उल्कापात तथा पर्वतों का जलना क्यों हो रहा है? आप कृपापूर्वक इसका कारण बताइये तथा जैसे हो, इन उपद्रवों को शान्त कर दीजिये, जिससे तीनों लोक इस घोर दुःख से मुक्ति प्राप्त कर सकें।"

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मेरी यह प्रार्थना सुनकर भगवान् विष्णु ने कहा—"हे ब्रह्मन् ! मैंने दिव्यदृष्टि द्वारा उन उत्पातों का जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कारण जाना है, उसे तुमसे कहता हूँ। आश्चर्य की बात तो यह है कि बुद्धिमान् लोग भी पशुओं के समान मूर्ख बन बैठे और उन्होंने निन्दनीय कर्म कर डाला। तुम्हारे साथ जो ऋषि-मुनि आये हैं, यह सब इन्हीं की मूर्खता का परिणाम है। इन्होंने अपनी स्त्रियों को काम के वशीभूत हो, शिवजी के शरीर से लिपटे हुए देखकर, अपने ब्रह्मतेज का प्रदर्शन किया, जिसके कारण शिवजी का लिंग पृथ्वी पर गिर पड़ा है। जबसे वह लिंग गिरा है, तभी से यह सब उपद्रव उठ रहे हैं। अब हम को उचित है कि हम सब भगवान् सदाशिव की शरण में चलें और उनसे क्रोध शान्त कर लेने की प्रार्थना करें। हे ब्रह्मन् ! जब तक वे अपने लिंग को पुनः धारण नहीं कर लेते, तब तक किसी को भी चैन नहीं मिलेगा। इतना ही नहीं, यदि इस कार्य में अधिक विलम्ब हुआ तो सर्वत्र प्रलय का दृश्य उपस्थित हो जायेगा।''

इतना कहकर विष्णु जी हम सबको साथ लेकर शिवजी के पास पहुँचे और उनकी अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए इस प्रकार कहने लगे—''हे प्रभो ! आप हमारे ऊपर कृपा करके अपने लिंग को पुनः धारण करें।'' विष्णु जी की यह प्रार्थना सुनकर शिव जी ने अत्यन्त लज्जित होकर कहा—''हे विष्णो ! इसमें इन मुनियों तथा देवताओं का कोई दोष नहीं, यह चरित्र तो हमने अपनी इच्छा से ही किया है। जब हम बिना स्त्री के हैं, तब फिर हमें लिंग धारण करने की आवश्यकता ही क्या है? अस्तु, तुम हमें इसी दशा में रहकर आनन्द प्राप्त करने दो।'' भगवान् सदाशिव के मुख से यह वचन सुनकर सब देवताओं ने उनकी स्तुति करते हुए कहा—''हे प्रभो ! यद्यपि हमें आपके सम्मुख धृष्टता करनी उचित नहीं है, परन्तु तो भी हम आपसे यह प्रार्थना करते हैं कि सती जी ने हिमाचल के घर फिर से जन्म लिया है और वे तपस्या करके आपकी अर्द्धांगिनी होंगी। अस्तु, आपको उचित है कि आप अपने लिंग को पुनः धारण कर लें।''

यह सुनकर शिवजी ने कहा—''हे देवताओ तथा मुनियो ! यदि तुम हमारे लिंग की पूजा करना स्वीकार करो, तो हम पुनः अपने लिंग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:50 AM

को ग्रहण कर सकते हैं और तभी सृष्टि को आनन्द प्राप्त हो सकता है।" भगवान् शिव के श्रीमुख से निकले हुए इन वचनों को सुन मैंने, विष्णु जी ने तथा अन्य सभी देवताओं एवं ऋषि-मुनियों ने उनसे कहा—"हे प्रभो ! हम सब आपके लिंग की पूजा करेंगे आप उसे धारण कर लें।" इन शब्दों को सुनकर शिवजी उसी समय अन्तर्धान हो गये। तब लोगों ने पाताल के नीचे पहुँच कर शिवजी के लिंग का पूजन किया। सर्वप्रथम विष्णु जी ने, तदुपरान्त मैंने, फिर इन्द्र ने, इसी प्रकार क्रमानुसार सब देवताओं तथा ऋषि-मुनियों ने शिवलिंग की पूजा की। उस पूजा में अनेक प्रकार के उत्सव हुए तथा आकाश से पुष्प वर्षा हुई। उस समय शिवजी ने अपने लिंग से प्रकट होकर हँसते हुए कहा—"हे देवताओ तथा मुनियो ! हम तुम्हारी पूजा से अत्यन्त प्रसन्न हुए। अब तुम जो चाहो, वह वर माँग लो।" यह सुनकर हमने उनसे प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आप तीनों लोकों को अभयदान देकर, अपने लिंग को पुनः धारण कर लीजिये। तदुपरान्त आप हम लोगों को यह वर दीजिये कि हम सब अहंकार रहित होकर, आपकी भक्ति करते रहें।" यह सुनकर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहते हुए अपने लिंग को पुनः धारण कर लिया।

हे नारद ! इस चरित्र के पश्चात् मैंने तथा विष्णु जी ने एक उत्तम तथा पवित्र हीरे को लेकर शिवलिंग के समान एक मूर्ति का निर्माण किया और उस मूर्ति को उसी स्थान पर स्थापित कर दिया। तदुपरान्त मैंने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा—"इस हीरकेश शिवलिंग का जो भी व्यक्ति पूजन करेगा, उसे लोक तथा परलोक में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होगा।" उस शिवलिंग के अतिरिक्त हमने वहाँ और भी शिवलिंग की स्थापना की। तदुपरान्त हम सब शिवजी के उस लिंग स्वरूप का ध्यान धरते हुए, अपने-अपने लोक को लौट आये। भगवान् सदाशिव भी प्रसन्न होकर अपने स्थान को चले गये। वे भगवान् त्रिशूलपाणि अपनी इच्छानुसार कभी मुनियों के पास बैठकर ज्ञान चर्चा करते तथा कभी पर्वत पर चढ़कर सती के वियोग को भुला

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देने की चेष्टा में सलंग्न रहते थे। हे नारद ! शिवलिंग पूजन की कथा को जो प्राणी मन लगाकर सुनता है, वह सदैव प्रसन्न रहता है। जो लोग शिवलिंग की पूजा करते हैं, वे अपने कुल सहित मुक्ति को प्राप्त करते हैं।''

सातवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! आपने शिव-चरित्र का वर्णन कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान की है। अब आप शिवजी की अन्य कथाओं का भी विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये तथा उनके कैलाश पर्वत पर निवास करने का सब हाल सुनाइये।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! कैलाश पर्वत पर पहुँच कर शिवजी ने सती जी का स्मरण किया और वीरभद्र आदि गणों के सम्मुख सती जी की महिमा का विविध प्रकार से वर्णन किया। उन्होंने सांसारिक मनुष्यों को कामदेव की महिमा दिखाने के लिए सती जी के वियोग में शोक-प्रकट करते हुए, अनेक प्रकार के चरित्र दिखाये। तदुपरान्त वे बहुत समय तक एक ही आसन पर बैठकर, ध्यान मग्न हो गये। जब उन्होंने बहुत दिनों बाद उस समाधि का त्याग किया, उस समय उनके ललाट से कुछ पसीना पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसके द्वारा एक परम तेजस्वी पुरुष की उत्पत्ति हुई। उस पुरुष के चार हाथ थे। वह लाल वर्ण वाला, अपने कण्ठ में माला पहने तथा अत्यन्त शक्तिशाली था। उत्पन्न होते ही वह बालकों के समान रोने लगा।

हे नारद ! उसे देखकर पृथ्वी ने अपने मन में यह विचार किया कि इस बालक का पालन-पोषण मुझे करना चाहिए ; क्योंकि यह परम तेजस्वी प्रतीत होता है। शिवजी की अर्द्धांगिनी सती जी अपना शरीर त्याग चुकी हैं? अतः अब मेरे अतिरिक्त इसका पालन करने वाला और कौन है? यह मेरे ऊपर उत्पन्न हुआ है, इसलिए मैं इसकी माता के समान हूँ और माता के समान ही मुझे इसका पालन-पोषण करना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

चाहिए। यदि मैं स्त्री रूप धर कर इसका पालन नहीं करूँगी तो शिवजी मुझे अवश्य ही दण्ड देंगे। यह निश्चय कर पृथ्वी ने अपना स्वरूप स्त्रियों के समान बनाया। पृथ्वी का यह स्वरूप अत्यन्त सुन्दर तथा पवित्र था। उसे देखकर यह प्रतीत होता था मानो कामदेव की पत्नी रति दूसरा अवतार ग्रहण किया हो अथवा भगवान् विष्णु ने फिर मोहिनी रूप धारण कर लिया हो। ऐसा सुन्दर स्वरूप बनाकर पृथ्वी उस बालक के समीप जा पहुँची और उसे अपनी गोद में उठाकर तथा अपने स्तनों को उसके मुख से लगाकर, दूध पिलाने लगी। वह बार-बार उसे देखकर हँसती और उसका मुख चूमती थी।

शिवजी ने जब पृथ्वी को इस रूप में देखा तो वे उनकी अभिलाषा जानकर मुस्कुरा पड़े। फिर उसे सम्बोधित करते हुए बोले—"हे पृथ्वी ! तुम्हारा बड़ा भाग्य है, जो हमारा पुत्र तुम्हें दिखाई दिया। तुम प्रसन्नतापूर्वक इसका पालन करो। यद्यपि यह बालक हमारे पसीने से उत्पन्न हुआ है, तो भी यह तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा अर्थात् सब लोग इसे भौम कहकर पुकारेंगे। यह बालक तुम्हें अत्यन्त सुख प्रदान करेगा।" इस प्रकार पृथ्वी से कहकर, जब शिवजी ने उस बालक की ओर देखा तो उनके हृदय का शोक कुछ घट गया। तदुपरान्त पृथ्वी उस बालक को लेकर अपने घर लौट गयी और प्रसन्नतापूर्वक उसका पालन-पोषण करने लगी। वह भौम नामक बालक शरद काल की रात्रि के समान निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होने लगा। जब वह बड़ा हुआ तो शिवजी का पूजन करने के निमित्त मधुवन में जा पहुँचा और अत्यन्त भक्तिपूर्वक शिवजी की पूजा करने लगा। उसने ग्रीष्म ऋतु में अग्नि सुलगाकर तथा शीत ऋतु में जल में बैठकर शिवजी की पूजा की। तीन करोड़ शिवलिंगों की स्थापना करके उसने श्रेष्ठ व्रत तथा नियमों द्वारा उनका पूजन किया। इस प्रकार कठिन तपस्या करने के उपरान्त जब वह एक स्थान पर निश्चिंत होकर बैठा, उस समय शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर उसे अपने दर्शन प्रदान किये।

हे नारद ! शिवजी के दर्शन प्राप्त कर भौम ने सर्वप्रथम अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

कठिन शब्दावली में रचित उनकी स्तुति की, तदुपरान्त यह कहा—"हे प्रभो ! मैं स्वयं आप से कुछ नहीं माँगना चाहता अस्तु, आप मेरे लिए जो भी उचित समझें, वह वरदान देने की कृपा करें।" यह सुनकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—"हे भौम ! तुम्हारी बुद्धि को धन्य है, तुम मेरी आराधना द्वारा भक्तिपद को प्राप्त कर चुके हो। अब मेरी कृपा से तुम पवित्र मंगल ग्रह के रूप में प्रसिद्ध होंगे और तुम्हारा स्थान सूर्य लोक में भी ऊपर होगा। तुम्हें सब प्रकार के आनन्द और प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। इतना कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तब भौम भी अपने लोक को जाकर परिवार सहित आनन्द करने लगा। हे नारद ! शिवजी के इस पवित्र चरित्र को सुनने अथवा कहने से धन, सन्तान तथा सुख की प्राप्ति होती है एवं सम्पूर्ण प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।"

आठवाँ अध्याय

नारद जी ने कहा—"हे पिता ! शिव-चरित्र को सुन-सुन कर मुझे अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। अब आप कृपा करके यह वृत्तान्त सुनाइये कि हिमाचल की पत्नी मैना ने शिवजी से वरदान माँगने के उपरान्त क्या किया?" यह सुनकर श्री ब्रह्मा जी ने भगवान् सदाशिव का ध्यान धरने के उपरान्त कहा—"हे पुत्र ! जब मैना ने शिवजी से वरदान प्राप्त किया तथा शक्ति को अपने ऊपर प्रसन्न देखा, तब वह आनन्दित हो अपने घर लौट आयीं। वहाँ सर्व प्रथम उसने एक सौ पुत्रों को जन्म दिया। वे सब 'मैनाक' तथा 'क्रौंच' आदि नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके शरीर बहुत लम्बे थे। वे सब अत्यन्त बलवान्, बुद्धिमान् तथा गुणवान् हुए। इसके पश्चात् सती जी ने हिमाचल के हृदय में प्रवेश किया, ताकि उनके सब मनोरथ पूर्ण हो सकें। हिमाचल ने सती जी के उस तेज़ को शुभ घड़ी प्राप्त कर मैना में स्थित कर दिया। जिस समय में सती जी मैना के गर्भ में आयीं, उस समय से मैना का शरीर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

अत्यन्त तेजस्वी हो गया। उस गर्भ को धारण कर मैना ऐसी सुन्दर तथा तेजस्विनी हो गयी, जैसी पहले कभी नहीं थी। हिमाचल की यह अवस्था थी कि वे बारम्बार मैना के निकट पहुँचते तथा मैना की सखी-सहेलियों द्वारा यह पुछवाते कि उसे किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं है। मैना लज्जित होकर कोई उत्तर नहीं देती थी, परन्तु वह जिस वस्तु की इच्छा करती वह स्वयं ही प्रकट हो जाया करती थी। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं थी, जिसे प्राप्त करने में मैना को कभी कोई कठिनाई हुई हो।

हे नारद ! मैना का गर्भ जितना अधिक बढ़ता जाता था, उतना ही उसका तेज भी अधिक होता जाता था। गर्भावस्था में जिन रीतियों तथा उत्सवों को करना उचित है, उन सबको हिमाचल ने बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न किया। उन्होंने सब लोगों को इच्छानुसार दान दिया, तथा ब्राह्मणों, देवताओं एवं अतिथियों की भली-भाँति पूजा की। उन्हीं दिनों में, विष्णु जी तथा अन्य सब देवता शिवरानी की गर्भ स्तुति करने हेतु हिमाचल के घर गये और अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के उपरान्त लौट आए। जब गर्भ के नौ महीने व्यतीत हुए और दसवाँ मास पूरा होने लगा, उस समय आकाश तथा पृथ्वी में शुभ शकुन होने लगे। आकाश पूर्णतः निर्मल हो गया और उसका प्रकाश बढ़ गया। सभी अशुभ ग्रह लुप्त हो गए। उस समय ऋषि-मुनि तथा देवता पुष्प-वर्षा करने लगे एवं गन्धर्व, सिद्ध, चारण, किन्नर, अप्सरा तथा विद्याधर अपनी स्त्रियों सहित नाचने-गाने लगे। इस प्रकार मधुमास की शुक्लपक्ष नवमी को मृगशिरा नक्षत्र में अर्धरात्रि के समय भगवती महामाया ने उस अपार आनन्द के बीच मैना के गर्भ से पार्वती रूप में जन्म ग्रहण किया। कालिका पुराण में भी यह कथा लिखी हुई है।

हे नारद ! उस समय मैं तथा विष्णु जी, सब देवताओं सहित सम्पूर्ण सामग्रियों को साथ लेकर, हिमाचल के स्थान पर जा पहुँचे। हम सब ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार शिवरानी की स्तुति एवं प्रशंसा की। उस समय अनेक प्रकार के बाजे बज रहे थे तथा पुष्प वर्षा हो रही थी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

देवताओं ने उन आदि शक्ति की स्तुति करते हुए इस प्रकार कहा—'हे जगदम्बे ! आपकी जय हो। आप तीनों लोकों की माता तथा भगवान् भूतभावन की अर्द्धांगिनी हैं। आप हमारी विपत्तियों का नाश करें, क्योंकि हमारे मन की कोई भी अभिलाषा आपसे छिपी नहीं है। हे आदिशक्ति ! आपका तेज अपरिमित है। सृष्टि के सभी जीव आपके सेवक हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आपके पुत्र कहे जाते हैं तथा तीनों गुणों की उत्पत्ति आप से ही हुई है। आप ब्रह्मस्वरूप आदिशक्ति बनकर सब जीवों में निवास करती हैं तथा सबसे भिन्न सी रहती हैं। वेदों ने आपकी महिमा का कुछ वर्णन किया है, परन्तु पार नहीं पाये हैं। नारद, शारद, शुक तथा सनकादिक बुद्धिमान् मुनि और देवता वाचाल होने पर भी आपकी महिमा का बहुत थोड़ा ही वर्णन कर सके हैं। उपनिषद् इस बात को कहते हैं कि यदि किसी मूर्ख पर भी आपकी कृपा हो जाए तो वह आपकी स्तुति करने में समर्थ हो सकता है। आप अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान करती हैं तथा करोड़ों कलाओं को अपने वश में किये रहती हैं। आप अहंकार को नष्ट करने वाली हैं। वेद और वेदान्त सब में आप ही सन्निहित हैं। हे भगवती ! आपके सहस्त्रों नाम हैं, जिनका वर्णन करना वाणी की सामर्थ्य से परे है।' इस प्रकार बहुत स्तुति करने के उपरान्त सब लोग अपने-अपने घर को लौट गये।

नौवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—"हे पिता ! अब मेरी यह अभिलाषा है कि भगवती महामाया के जन्म के पश्चात् का वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की कृपा करें। उन्होंने हिमाचल के घर में रह कर जो बाल-लीलाएँ कीं, उन सब को सुनाकर, आप मुझे प्रसन्नता प्रदान कीजिये।" देवर्षि नारद की यह प्रार्थना सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे पुत्र ! जब भगवती महामाया ने अवतार ग्रहण किया और सब देवता उनकी स्तुति-प्रशंसा करने के उपरान्त अपने-अपने स्थान को लौट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गये, उस समय हिमाचल ने बड़ी धूमधाम से अपनी पुत्री का जन्म-महोत्सव मनाया। मैना, उन्हें आदिशक्ति का अवतार पहचान कर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उस समय भगवती जगदम्बा ने भी अष्टभुजी स्वरूप धारण कर मैना को अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया। हे नारद ! उस स्वरूप का वर्णन करना अत्यन्त कठिन है। वे भगवती आठ भुजाएँ, तीन नेत्र एवं ज्योतिपूर्ण वस्त्रालंकारों को धारण किये हुए थीं। मैना ने जब उनको इस स्वरूप में देखा तो उनकी बहुत प्रकार से स्तुति-प्रशंसा करते हुए यह कहा—''हे भगवती ! आपने अत्यन्त कृपा करके मेरे घर में अवतार लिया है। मेरी यही प्रार्थना है कि आपका यह स्वरूप मेरे हृदय में सदैव स्थित रहे। अब आप कृपा करके पुनः अपना बाल स्वरूप धारण कर मुझे सुख पहुँचाइए।''

हे नारद ! मैना की प्रार्थना सुनकर भगवती महामाया ने उसे सान्तवना देते हुए कहा—''हे मैना ! मैने इस समय यह स्वरूप केवल इसीलिए धारण किया है ताकि तुम्हारे हृदय में यह विश्वास हो सके कि मैं वही देवी हूँ, जिसे तुमने वरदान प्राप्त करते समय देखा था। अब तुम अपने मन में निश्चिन्त हो जाओ।'' इतना कहकर भगवती जगदम्बा ने पुनः बाल-स्वरूप धारण कर लिया और नवजात शिशु की भाँति रुदन करने लगीं। उस समय स्त्रियाँ मैना के समीप आ इकट्ठी हुईं। कन्या का जन्म देखकर उन सबको अत्यन्त प्रसन्नता हुई। हिमाचल को भी उस समय बहुत हर्ष हुआ। तदुपरान्त वे पुरोहित, गुरु, ब्राह्मण तथा ऋषि-मुनियों को साथ लेकर घर के भीतर पहुँचे। उस समय ऋषि-मुनियों ने उस कन्या को देखकर कहा—''हे पर्वतराज ! तुम्हारे घर आदिशक्ति ने अवतार लिया है।'' यह सुनकर हिमाचल ने अत्यन्त प्रसन्न हो, ब्राह्मण तथा भिक्षुकों को बहुत-सा धन दान में दिया। नगर की सब स्त्रियाँ भी उस समय अपने-अपने श्रृंगार सजाकर बधावा देने के लिए मैना के समीप आ पहुंचीं। हिमाचल ने रीतिपूर्वक सम्पूर्ण संस्कारों को सम्पन्न किया, तदुपरान्त ब्राह्मणों ने उस कन्या के नाम गिरिजा, काली आदि रखे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

हे नारद ! बाल-स्वरूपा शिव रानी ने संसारी लड़कियों की भाँति ही अनेक चरित्र करके माता-पिता को प्रसन्न करना आरम्भ किया। ज्यों-ज्यों उनकी आयु बढ़ती जाती थी, वे विविध प्रकार के चरित्रों द्वारा सबको प्रसन्नता प्रदान करती थीं। वे कभी गोद में लिपट कर मुस्कुरातीं, कभी अपनी तुतली वाणी से ऐसी बातें कहती थीं, जिनको सुनकर माता-पिता को अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होती थी। कुछ समय में ही उन्हें उमा, शिवा आदि नामों से भी पुकारा जाने लगा। बड़ी होकर जब उन्होंने तपस्या करने के लिए वन में जाने का विचार किया, उस समय मैना ने चिन्तित होकर उन्हें नहीं जाने दिया। पर्वतराज हिमाचल यद्यपि अनेक सन्तानों के पिता थे, तो भी उनका सबसे अधिक प्रेम गिरिजा पर ही रहता था। गिरिजा दिन-प्रतिदिन चन्द्रमा की कला की भाँति बढ़ती जाती थीं। कभी वे कौड़ियों का खेल खेलतीं और कभी गंगा जी के जल में विहार किया करती थीं। संसारी रीति के अनुसार उन्होंने विद्या अध्ययन भी प्रारम्भ किया और कुछ ही समय में सम्पूर्ण विद्याओं का निधान हो गयीं।

हे नारद ! बाल्यावस्था व्यतीत हो जाने पर जब उन्होंने युवावस्था में प्रवेश किया, उस समय उनकी सुन्दरता का वर्णन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता। वे ऐसी अनन्य स्वरूपा थीं कि उन्हें उत्पन्न करने के पश्चात् मैं उन जैसी सुन्दरता अन्य किसी भी प्राणी को प्रदान नहीं कर सका। मानो गिरिजा को उत्पन्न करने के पश्चात् मेरा सृष्टि रचना का सम्पूर्ण परिश्रम सफल हो गया हो। जिन लक्ष्मी जी को मैंने अत्यन्त प्रेमपूर्वक समुद्र से निकाला था, उन्हें भी गिरिजा के समान कहते हुए मुझे लज्जा का अनुभव होता है। गिरिजा के समान अन्य किसी को न पाकर मैं उन्हें केवल निरूपमेय कहकर ही मौन हो जाता हूँ। तीनों लोकों में उन जैसी अन्य कोई नहीं है। मेरी पत्नी तो किसी भी प्रकार उनके समक्ष नहीं ठहर सकती। लक्ष्मी में चंचलता का अवगुण है, अतः उन्हें गिरिजा के समान नहीं कहा जा सकता। रति तथा भगवान् विष्णु के मोहिनी रूप की महिमा भी उनके सौन्दर्य के समक्ष

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

नहीं ठहर सकती, इसलिए यही कहना उचित है कि वे अपनी उपमा आप ही थीं।''

❁❁❁

दसवाँ अध्याय

सूत जी ने कहा—''हे ऋषियो ! इतनी कथा सुनकर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—हे पिता ! जिस प्रकार आपने भगवती गिरिजा की सुन्दरता का वर्णन किया, उसी प्रकार उनके विवाह का चरित्र भी मुझे सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शिवजी तथा शिव रानी की लीलाएँ परम आश्चर्यजनक हैं। वे तीनों लोकों के स्वामी हैं। अतः तुम्हें उचित है कि तुम सन्देह रहित होकर उनकी सम्पूर्ण कथाओं में विश्वास रक्खो। अब मैं तुम्हें उनके विवाह का चरित्र सुनाता हूँ। कुछ लोगों का यह कहना है कि गिरिजा का विवाह स्वयंवर के रूप में हुआ, परन्तु कल्पभेद के अनुसार गिरिजा के विवाह की कथाएँ अलग-अलग प्रकार से हैं। एक कथा यह है कि शिवजी दिगम्बर वेष में भिक्षुक स्वरूप धारण कर हिमाचल के द्वार पर विवाह करने के लिए आये थे। उस समय वे बैल पर आरूढ़ थे और शुक्र तथा शनिश्चर नामक देवता उनके साथ थे। अन्य देवता उनके साथ तो थे, परन्तु वे प्रत्यक्ष दिखाई नहीं देते थे। अस्तु, इस प्रकार विवाह के निमित्त पधारकर, सर्व प्रथम शिवजी ने हिमाचल के अहंकार का नाश किया, तदुपरान्त वे बारात सजाकर विवाह करने को पधारे और गिरिजा को अंगीकार किया।

हे नारद ! कुछ आचार्यों का कहना है कि शिवजी ने गिरिजा की तपस्या से प्रसन्न होकर उनके साथ विवाह करना स्वीकार किया और बारात लेकर हिमाचल के घर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने अनेक प्रकार की लीलाओं के द्वारा सब लोगों को सुख पहुँचाया तथा मैना के भ्रम को नष्ट किया। इन अनेक प्रकार की कथाओं का कारण एक तो कल्पभेद है और दूसरा यह है कि शिवजी के प्रति जिसकी जैसी प्रीति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:51 AM

होती है, उसे वैसा ही चरित्र दिखाई देता है। अस्तु, इन बातों पर किसी प्रकार की शंका अथवा विचार करना ठीक नहीं है। सर्वप्रथम मैं स्वयंवर कथा का वर्णन करता हूँ जिससे विष्णु के गणों तथा देवताओं की बुद्धि कुण्ठित हो गयी थी। वह कथा इस प्रकार है—

एक दिन हिमाचल ने यह देखा कि गिरिजा युवावस्था को प्राप्त हो चुकी हैं, तब उसने अपने भाई-बन्धुओं को बुलाकर यह कहा कि तुम लोग गिरिजा के अनुरूप किसी देवता को देखकर, उसके साथ गिरिजा का विवाह कर दो ; क्योंकि पिता का धर्म यही है कि वह अपनी पुत्री के युवा हो जाने पर किसी श्रेष्ठ वर के साथ उसका विवाह करके अपने ऋण से उऋण हो जाए। उन्हीं दिनों मैना ने भी हिमाचल को अपने निकट बुलाकर यह कहा कि, "हे पति ! गिरिजा युवावस्था को प्राप्त हो चुकी है। अस्तु, आप उसके लिए कोई श्रेष्ठ वर ढूँढें। उन्होंने यह भी कहा कि गिरिजा मुझे अत्यन्त प्रिय है, अतः इसके लिए कोई ऐसा योग्य वर ढूँढ़ें जो सब प्रकार से प्रशंसा का पात्र हो।"

हे नारद ! मैना की बात सुनकर हिमाचल अत्यन्त प्रसन्न हो, घर के बाहर निकले और राज्यसभा में पहुँचकर मन्त्रियों से इस प्रकार कहने लगे—"हे मन्त्रियो ! आप मेरी पुत्री के योग्य किसी उचित वर की तलाश करें।" उस समय मन्त्रियों ने यह सम्मति दी—"हे राजन् ! राजकन्या के विवाह के लिए आप एक ऐसे स्वयंवर का आयोजन करें, जिसमें ब्रह्मा, विष्णु आदि सभी दिक्पाल भी सम्मिलित हों। सर्व प्रथम आप उस स्वयंवर के समय गिरिजा को प्रत्येक विवाहेच्छु पुरुष के नाम, गुण आदि के सम्बन्ध में सूचित करें, तदुपरान्त उसका स्वरूप दिखाएँ। उस समय गिरिजा जिसके कण्ठ में वरमाला डाल दे, उसी के साथ गिरिजा का विवाह कर दिया जाए।" मन्त्रियों की इस सम्मति को सुनकर हिमाचल को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तब उन्होंने स्वयंवर की तिथि निश्चित कर, सब लोगों के पास निमन्त्रण-पत्र भेज दिये।

हे नारद ! गिरिजा के स्वयंवर का समाचार प्राप्त कर सभी देवता हिमाचल के नगर में जा पहुँचे। मैं, विष्णु, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

तथा अन्य दिक्पाल भी अपनी-अपनी बारात सजा कर, बड़ी धूमधाम से हिमाचल के यहाँ गये।

हे नारद ! हम सब लोगों को देखते ही हिमाचल ने अगवानी करते हुए, सबका अत्यन्त आदर-सत्कार किया। तदुपरान्त स्तुति एवं प्रशंसा करके, रहने के लिए श्रेष्ठ निवास दिया। उसने अन्य सब देवताओं की भी बहुत सेवा की। जब हम लोग स्वयंवर स्थल में जा पहुँचे तो उस विचित्र मण्डप को देखकर हमें अत्यन्त आनन्द हुआ। हम लोग परस्पर बातें करते हुए कहने लगे—"देखें, आज गिरिजा किस पर प्रसन्न होती हैं और किसे उसके साथ विवाह करने का सौभाग्य प्राप्त होता है?" कोई कहता—वे विष्णु जी को स्वीकार करेंगी और कोई अन्य देवता का नाम लेता था। बीच-बीच में सब लोग यह भी कहते जाते थे कि गिरिजा का विवाह जिसके साथ होगा, उसी को हम सब अपने से उत्तम और प्रधान पुरुष समझ लेंगे। वे लोग जो विवाह देखने योग्य हैं, अतः उनका विवाह किसी के साथ क्यों न हो, हम तो उस आनन्द को देखकर ही कृतार्थ हो जायेंगे।"

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! उस समय हिमाचल ने स्वयंवर-सभा में अनेक स्वर्ण-सिंहासन रखवा दिये तथा उन्हें सब प्रकार से सुसज्जित करके सब लोगों के पास यह सन्देश भिजवाया कि वे स्वयंवर-सभा में आ विराजें। उस सन्देश को सुनकर प्रत्येक व्यक्ति बड़ी धूमधाम से स्वयंवर-मण्डप में जा पहुँचा। इन्द्र ऐरावत हाथी पर सवार होकर आया, विश्वानर के पुत्र अग्नि अपने गणों के साथ बड़ी सजधज कर आये। इसी प्रकार विष्णु, दिक्पाल, वरुण, कुबेर, यमराज, सूर्य तथा चन्द्रमा आदि भी सभा में पहुँचकर अपनी-अपनी चौकियों पर बैठ गये। मैं भी अपने हंस पर बैठकर उस स्वयंवर-सभा में पहुँचा। वहाँ मैंने यह देखा कि विष्णु जी चतुर्भुज रूप धारण किए,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

पीत वस्त्र पहने, रत्नालंकारों से सुसज्जित हो, सभा में बैठे हुए हैं। कोई भी देवता ऐसा न था, जो वहाँ दिखाई न पड़ रहा हो। मेरी, विष्णु जी की तथा अन्य सभी लोगों की यह इच्छा थी कि गिरिजा का विवाह केवल हमारे साथ ही हो। सम्पूर्ण पर्वत अर्थात् कनकगिरि, देवकूप, विन्ध्य पर्वत, त्रिकूट, करवीर, चित्रकूट आदि भी उस सभा में आये थे और समुद्र के जीव भी मनुष्यों का स्वरूप धारण कर आ पहुँचे थे। तात्पर्य यह कि प्रत्येक लोक, प्रत्येक द्वीप, प्रत्येक दिशा तथा प्रत्येक नगर से आये हुए जीव उस स्वयंवर-सभा में उपस्थित थे। उस मण्डप में सुख की सम्पूर्ण सामग्रियाँ उपस्थित थीं। वहाँ घण्टा, ढोल आदि विविध प्रकार के बाजे बज रहे थे तथा वेदपाठी जन वेद-मन्त्रों का उच्चारण कर रहे थे।''

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब स्वयंवर-सभा में सब लोग यथास्थान आ विराजे, उस समय हिमाचल ने गिरिजा को यह आज्ञा दी कि अब तुम स्वयंवर-सभा में पहुँच कर, अपने अनुरूप पति का चुनाव कर लो। उस समय कुल की स्त्रियों ने गिरिजा का अनेक प्रकार से श्रृंगार किया तथा सभी ने यह प्रार्थना की कि गिरिजा का विवाह किसी श्रेष्ठ वर के साथ हो। अस्तु, गिरिजा भगवान् सदाशिव का ध्यान धरती हुई स्वयंवर-सभा में आ पहुँचीं। उस समय सहस्त्रों आँखें उनकी ओर उठ गयीं। विवाहेच्छु सभी व्यक्तियों ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया। उस समय सखियों ने सर्व प्रथम गिरिजा को इन्द्र के समीप ले जाकर खड़ा किया और उनका परिचय देते हुए कहा ''हे पार्वती ! इनका नाम इन्द्र है। इन्होंने सहस्त्र यज्ञ किये हैं। जो व्यक्ति इनकी शरण में आ जाता है, उसकी ये सब प्रकार से रक्षा करते हैं। इनका स्वरूप चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर है। इन्हें स्वीकार कर लेने पर तुम इन्द्राणी पद को प्राप्त करोगी तथा सब प्रकार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के सुख-भोग तुम्हें हर समय उपलब्ध होते रहेंगे। अस्तु, हे गिरिजे ! तुम्हें उचित है कि तुम इनके साथ विवाह करना स्वीकार कर लो।''

हे नारद ! सखी की बातें सुनकर गिरिजा ने एक बार इन्द्र की ओर नीची दृष्टि डाली, तदुपरान्त उन्हें प्रणाम करती हुई चुपचाप आगे बढ़ गयीं। इसी प्रकार सखियों ने विष्णु आदि देवताओं की प्रशंसा करते हुए, उनमें से किसी को भी अपना पति चुन लेने की सलाह दी, परन्तु गिरिजा उन सबको प्रणाम करती हुई आगे बढ़ती गयीं। जब वे मुझ पर तथा विष्णु जी पर भी प्रसन्न नहीं हुईं और वर माला लेकर आगे बढ़ीं, उसी समय अचानक ही शिवजी उस स्वयंवर स्थल में आकाश से प्रकट होकर आ विराजे। उन्हें देखते ही गिरिजा के मुख पर प्रसन्नता चमक उठी और उन्होंने माला शिवजी के गले में डाल दी।''

तेरहवाँ अध्याय

इस वृत्तान्त को सुनकर देवर्षि नारद ने ब्रह्मा जी से कहा—''हे पिता ! आप इस कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये कि शिवजी वहाँ किस प्रकार प्रकट हुए और गिरिजा ने उनके गले में वरमाला किस लिए पहना दी?'' ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! गिरिजा तो जन्म-जन्मान्तर से भगवान् शिव की संगिनी थीं। तब वह किसी अन्य को वरमाला किस प्रकार पहना देतीं? स्वयंवर-सभा में वे जिसके समीप पहुँचकर आगे बढ़ जाती थीं, वही अपने मन में अत्यन्त लज्जित होकर रह जाता था। इस प्रकार गिरिजा ने सब लोगों को सभा में देखा, परन्तु वे किसी को भी देखकर प्रसन्न न हुईं? जब उन्हें वहाँ परब्रह्म शिवजी दिखाई न दिये तो उन्होंने अत्यन्त चिन्तित होकर यह विचार किया कि भला, क्या कारण है जो शिवजी अभी तक यहाँ नहीं पधारे हैं? उस समय उन्होंने मन-ही-मन शिवजी की बहुत प्रकार से स्तुति करते हुए यह कहा—''हे प्रभो ! मैं तो सदैव से आपकी चेरी हूँ, मेरे चाहे करोड़ों जन्म क्यों न बीत जाएं, परन्तु मैं आपके अतिरिक्त अन्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

किसी के साथ विवाह न करूँगी। हे स्वामी ! यदि मुझ से कोई अपराध बन पड़ा हो तो आप उसे क्षमा कर दें और मुझे इसी समय अपना दर्शन देकर कृतार्थ करें।''

हे नारद ! इस प्रकार मन-ही-मन प्रार्थना करती हुई जब गिरिजा भगवान् सदाशिव के प्रेम में मग्न हो गयीं ; उसी समय शिवजी उनके आन्तरिक स्नेह को पहचान कर वहाँ प्रकट हो गये। भगवान् शिवजी के तेज तथा स्वरूप को देखकर सभी सभासद् चकित रह गये। उन्हें कोई पहचान भी नहीं पाया। शिवजी सब मनुष्यों के अहंकार का नाश करने वाले हैं, अस्तु, उस समय उन्होंने यह लीला भी रची कि वे उस सभा मंडप में एक सुन्दर बालक के रूप में प्रकट हुए। भगवान् भूतभावन के उस रूप को पहचानने में असमर्थ होने के कारण सब लोगों ने उन्हें एक साधारण बालक ही समझा और अपने पास से दूर हटा देना चाहा। जब वे भगाने पर भी नहीं भागे और निर्भय होकर अपने स्थान पर ही खड़े रहे, तब कुछ लोगों ने क्रुद्ध होकर यह चाहा कि उन्हें जान से ही मार डाला जाए। अपनी इच्छा की पूर्ति के हेतु पहले तो कुछ देवताओं ने साधारण अस्त्र-शस्त्रों द्वारा उनके ऊपर प्रहार किया, परन्तु जब शिवजी के ऊपर उन शस्त्रों का कोई प्रभाव न पड़ा, तो वे अपने तीक्ष्ण शस्त्रों द्वारा उन पर प्रहार करने की इच्छा करने लगे। यह गति देखकर शिवजीं ने उन सब की ओर ज्यों ही अपनी आँखें उठाकर देखा तो उनके हाथ तथा शरीर जड़वत् हो गये और उस समय जो जैसे बैठा था, पत्थर की मूर्ति के समान उसी प्रकार बैठा रह गया।

हे नारद ! इस स्थिति को देखकर विष्णु जी ने अपना सुदर्शन चक्र उनके ऊपर छोड़ा; परन्तु वह भी निष्फल हो गया। उस समय सब लोगों को मन में अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि वह परम शक्तिशाली बालक कौन है ; परन्तु शिवजी की माया में मोहित होने के कारण किसी को उनके वास्तविक भेद का पता न चल सका। शिवजी के इस चरित्र को देखकर गिरिजा मुस्कुराने लगीं। उस समय जब मैंने शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

का ध्यान धर कर विचार किया तो यह जाना कि यह बालक और कोई नहीं, साक्षात् भगवान् सदाशिव ही हैं। उसी समय वे बालरूप भगवान् भूतभावन भी मेरी ओर देखकर हँस दिये। तब मैंने उनकी स्तुति करते हुए कहा—"हे प्रभो ! हम लोगों का इसमें कोई दोष नहीं है। आपकी माया के वशीभूत होकर ही हम भगवती जगदम्बा को प्राप्त करने की इच्छा से यहाँ आये थे। अब आप हमें जो आज्ञा देंगे वह शिरोधार्य होगी।" इसके उपरान्त मैंने गिरिजा की भी स्तुति करते हुए कहा—"हे देवी ! अब आप वह चरित्र कीजिये, जिससे हम लोगों की चिन्ता दूर हो।" मेरे मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर भगवान् त्रिशूलपाणि अत्यन्त प्रसन्न हुए। तब उन्होंने अपनी माया को हमारे ऊपर से हटा लिया। उस समय चैतन्यता प्राप्त होने पर हम सब लोगों को उस बालक के स्थान पर साक्षात् सदाशिव खड़े हुए दिखाई दिये। उनका स्वरूप इतना सुन्दर था कि उसे देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित हो जाएं। वे मणि एवं स्वर्ण निर्मित आभूषणों को धारण किये हुए थे और ऐसे मनमोहक प्रतीत हो रहे थे जिसका वर्णन करना नितान्त असम्भव है।

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! भगवान् सदाशिव के उस स्वरूप को देखकर सभा में उपस्थित सभी लोगों ने अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार उनकी बहुत स्तुति की। विष्णु जी ने प्रार्थना करते हुए कहा—"हे प्रभो ! हम आपकी माया के वशीभूत होकर गिरिजा के साथ विवाह करने की इच्छा से यहाँ आये थे, सो आप हमारे अपराध को क्षमा करने की कृपा करें। आप और गिरिजा जी सम्पूर्ण सृष्टि के माता-पिता हैं। अस्तु, आप हमें अपना बालक समझकर हमारे पाप को क्षमा कर दें।" इसी प्रकार मैंने तथा इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, ईशान, कुबेर, शेष, दक्ष प्रजापति आदि सिद्ध जन एवं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

हिमाचल आदि ने शिवजी की प्रार्थना करते हुए अपने अपराधों की क्षमा माँगी। हे नारद ! उस समय गिरिजा ने अपने पिता की आज्ञा प्राप्त कर, भगवान् सदाशिव के गले में वरमाला पहना दी। सब लोगों ने हर्ष में भर कर जय-जयकार की।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उस समय के आनन्द का वर्णन किस प्रकार किया जाए? हम सब लोग गिरिजा तथा शिवजी के पीछे-पीछे चलने लगे। विष्णु जी उनके बायीं ओर थे और मैं दाहिनी ओर चल रहा था। अन्य सब देवता पीछे अपने हाथों में छत्र-चँवर उठाये चल रहे थे। कोई जय-जयकार कर रहा था तो कोई शंख आदि की ध्वनि द्वारा अपना उत्साह प्रकट कर रहा था। इसी प्रकार सब लोग उनकी सेवा करने में संलग्न थे। अपने भाइयों तथा मित्रों सहित पर्वत राज हिमाचल भी हम लोगों के साथ चले। जिस समय सब लोग हिमाचल के नगर में पहुँचे, उस समय चारों ओर धूमधाम होने लगी। भगवान् सदाशिव के दर्शन प्राप्त करने के लिए नगर की सभी स्त्रियाँ अपने-अपने मकान के ऊपर जा चढ़ीं। सब लोग अपने-अपने काम को छोड़कर शिवजी का दर्शन पाने के लिए दौड़ पड़े। स्त्रियों की तो यह दशा थी की जो काजल लगा रही थी, वह एक आँख के बिना काजल लगाये ही दौड़ी चली गयी। वे झरोखों के भीतर बैठी हुई शिव दर्शन करने में ऐसी मग्न थीं कि यदि किसी की धोती की गाँठ खुल गयी तो उस बात का उनको कोई ध्यान ही नहीं था। स्त्रियों की ऐसी दशा को देखकर शिवजी, विष्णु जी तथा हम बहुत हँसते चले जा रहे थे।

हिमाचल के घर पहुँचने पर शिवजी अपने नन्दी से नीचे उतरे। पर्वतराज ने सभी बारातियों को श्रेष्ठ स्थानों पर ठहराया और सबकी यथा शक्ति सेवा पूजा की। उस समय शिवजी की आज्ञा से उनके वीरभद्र आदि गण भी कैलाश से चलकर उस स्थान पर आ पहुँचे। उन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

गणों ने आकर हम सबको प्रणाम किया। तदुपरान्त हिमाचल की प्रार्थना स्वीकार कर शिवजी घर के भीतर गये। वहाँ हिमाचल के पुरोहित गर्ग ऋषि ने विवाह की सम्पूर्ण विधियों को सम्पन्न कराया। मैंने तथा विष्णु जी ने हवन के मंत्रों का उच्चारण किया। उस समय दोनों ओर से बहुत दान दिया गया। जब शिवजी ने गिरिजा का हाथ अपने हाथ में लिया, उस समय के सुख का वर्णन किसी भी प्रकार नहीं किया जा सकता। उस अवसर पर जिसने जिस वस्तु की इच्छा प्रकट की, वह उसे प्राप्त हुई। जब भाँवरें पड़ चुकीं, तब शिवजी तथा गिरिजा को एक ही शैय्या पर बैठाया गया। उस समय सब लोगों ने धन्य-धन्य का घोष कर, आकाश को गूँजा दिया। हिमाचल ने भगवान् भूतभावन को दहेज में बहुत-सा धन तथा वस्त्रालंकार प्रदान किये। फिर सब बारातियों को भोजन कराया। इस प्रकार जब विवाह हो चुका तो शिवजी वहाँ से चल कर अपने कैलाश पर्वत पर लौट आए। फिर हम सब लोग भी शिवजी की आज्ञा पाकर अपने-अपने लोक को लौट गये।''

❀❀❀

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं दूसरे प्रकार के शिवजी के विवाह का विस्तारपूर्वक वर्णन करता हूँ। वह प्रकार यह है कि जब गिरिजा युवावस्था को प्राप्त हुई तब मैना ने हिमाचल से यह कहा—''हे पति ! आप एक लाख पर्वतों के राजा हैं। अस्तु, आप जैसे श्रेष्ठ कीर्तिवाले हैं, उसी प्रकार गिरिजा के लिए भी किसी उत्तम वर को ढूँढ़िये। हे स्वामी ! हमारे पुत्र तो सौ हैं, परन्तु कन्या केवल एक ही है, अस्तु, इसके श्रेष्ठ भविष्य के हेतु हमें अच्छी से अच्छी जगह इसका विवाह करना चाहिए।'' हिमाचल ने उत्तर दिया—''हे प्रिये ! तुम निश्चिंत रहो। जो वर श्रेष्ठ होगा, उसी के साथ हम गिरिजा का विवाह करेंगे।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:52 AM

हे नारद ! इतना कहकर हिमाचल अपनी राज्यसभा में आये और मन्त्रियों से विचार-विमर्श करने के उपरान्त अपने पुरोहित से बोले— "हे पुरोहित जी ! आप गिरिजा के लिए कोई योग्य वर ढूँढने की कृपा करें।" हिमाचल की बात सुनकर पुरोहित सर्व प्रथम इन्द्र लोक में गये। वहाँ इन्द्र की सुन्दरता को देखकर उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई और उनसे गिरिजा के विवाह की चर्चा छेड़ी। उसे सुनकर इन्द्र ने उत्तर दिया—"हे पुरोहित ! गिरिजा ने तो शिवजी के लिए अवतार ग्रहण किया है। तुम ऐसी बातें करके हमें नरकगामी क्यों बनाना चाहते हो?" इन्द्र के यह वचन सुनकर पुरोहित अग्निलोक में गये। वहाँ भी उन्हें यही उत्तर सुनने को मिला। इस प्रकार वे जहाँ-जहाँ भी गये वहीं सबने गिरिजा को अपनी माता अनुमान कर पुरोहित के ऊपर क्रोध किया। अन्त में सब के कहने से पुरोहित विष्णु जी के पास गये। विष्णु जी ने स्वयं गिरिजा के साथ विवाह करना स्वीकार न करके, पुरोहित को यह उत्तर दिया कि तुम हिमाचल से जाकर यह कहना कि वे गिरिजा से ही यह बात पूछें कि तुम्हारा पति कौन है। तब गिरिजा जिसे बतावे उसी के साथ हिमाचल उसका विवाह कर दें। विष्णु जी के मुख से यह शब्द सुनकर पुरोहित हिमाचल के पास लौट गये और उन्हें सब समाचार कह सुनाया। समाचार पाकर गिरिजा अत्यन्त प्रसन्न हुईं।"

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! तब हिमाचल ने अपनी सभा में गिरिजा को बुलाया और जिस प्रकार विष्णु जी ने पुरोहित को बताया था, वह सब वृत्तान्त सुनाते हुए यह पूछा—"हे पुत्री ! तुम्हारा पति कौन है? तुम उसे हमें बताओ तो हम उसी के साथ तुम्हारा विवाह कर देंगे।" यह सुनकर गिरिजा ने लज्जित होते हुए उत्तर दिया—"हे पिता ! यदि आप शपथ पूर्वक मेरी बात मानने के लिए तैयार हों तो मैं पुरोहित जी को अपने पति का नाम बता दूँगी। उसी के अनुसार वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

तिलक चढ़ा आवें।" हिमाचल ने प्रसन्नता पूर्वक यह बात स्वीकार कर ली। तब गिरिजा ने पुरोहित को अलग ले जाकर कहा कि तीनों लोकों में सब से उत्तम जो कैलाश पर्वत है, वहाँ शिवजी निवास करते हैं। तुम वहीं जाकर उन्हें टीका चढ़ा आओ, क्योंकि मैं उन्हीं के साथ अपना विवाह करना चाहती हूँ।"

हे नारद ! यह सुनकर पुरोहित अपने साथ ही एक नाई को लेकर टीका चढ़ाने के लिए चल दिये परन्तु उन्होंने नाई को यह नहीं बताया कि वे किस व्यक्ति को टीका चढ़ाने के लिए जा रहे हैं। अस्तु, जब वे कैलाश पर्वत पर पहुँचे तो वहाँ एक वट वृक्ष के नीचे शिवजी को दूर से ही बैठे देखकर, उन्होंने प्रणाम किया। उस समय शिवजी ध्यान-मग्न बैठे थे। अस्तु, वे दोनों भी कुछ दूरी पर चुपचाप बैठ गये। लेकिन थोड़ी देर बाद ही नाई ने क्रोध में भरकर पुरोहित से यह कहा—"हे पुरोहित जी ! आप मुझे ऐसे निर्जन स्थान में क्यों ले आये हो? यहाँ तो चारों ओर दैत्य ही दैत्य दिखाई पड़ते हैं। अस्तु, यहाँ प्राण बचना असम्भव है। तुम यहाँ से तुरन्त भाग चलो और गिरिजा के लिए कोई दूसरा पति ढूँढो। यह व्यक्ति तो गिरिजा का पति होने के सर्वथा अयोग्य है।" नाई की बात सुनकर पुरोहित ने उसे डाँटते हुए कहा—"अरे मूर्ख ! तू चुप क्यों नहीं बैठा रहता? इस प्रकार प्रलाप क्यों कर रहा है?" पुरोहित की इस दृढ़ता को देखकर तथा गिरिजा की प्रीति का स्मरण कर शिवजी ने अपनी समाधि खोली। उस समय पुरोहित हाथ जोड़कर उनके सामने जा खड़ा हुआ और बहुत प्रकार से स्तुति तथा प्रशंसा करने लगा।

हे नारद ! पुरोहित ने गिरिजा के गुण तथा सौन्दर्य का वर्णन करते हुए शिवजी से कहा—"हे प्रभो ! गिरिजा आपके साथ विवाह करना चाहती हैं, अतः आप उसे स्वीकार करें।" तब शिवजी ने उससे कहा—"हे पुरोहित ! तुम्हें ऐसी बात कहनी उचित नहीं है, क्योंकि हिमाचल की पुत्री के साथ सम्बन्ध रखने के योग्य हम नहीं हैं। हिमाचल पर्वतों के राजा हैं तथा बहुत धनवान् हैं। इसके विपरीत हम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

निर्धन हैं। मित्रता, शत्रुता तथा विवाह अपने समान बल वालों के साथ करनी चाहिए। गिरिजा मुझे अपना पति बना कर कोई सुख नहीं पावेगी बल्कि यों कहिये कि मेरी भाँग घोंटते समय उसे बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा। वह राजपुत्री है, अतः उसका विवाह किसी राजा के साथ होना ही उचित है। दूसरी बात यह भी है कि मुझे तिलक चढ़ाने पर तुम्हें पुरस्कार में धन भी नहीं मिल सकेगा, क्योंकि हम तो दक्षिणा में थोड़ी-सी भस्म ही तुम्हें दे सकते हैं।''

हे नारद ! शिवजी की यह बात सुनकर पुरोहित ने उत्तर दिया ''हे प्रभो ! यदि आपकी भस्म हमें मिल जाए तो इससे बढ़कर हमारे भाग्य और क्या होंगे? अस्तु, अब आप कुछ और अधिक न कहकर, मुझे तिलक चढ़ाने दीजिये।'' इतना कहकर पुरोहित ने शिवजी के तिलक चढ़ा दिया। शिवजी को भी उस समय अत्यन्त प्रसन्नता हुई, परन्तु नाई को यह बातें अच्छी न लगीं। जब पुरोहित ने घर लौटना चाहा उस समय शिवजी ने उसे थोड़ी-सी भस्म देकर उसे विदा कर दिया। इसी प्रकार नाई को भी उन्होंने थोड़ी-सी भस्म दे दी। पुरोहित तो उस भस्म को पाकर बहुत प्रसन्न हुए, परन्तु नाई को अत्यन्त क्रोध आया। उसने पुरोहित से कहा—''हे पुरोहित जी ! तुमने राजा हिमाचल की पुत्री का तिलक एक अवधूत को चढ़ा दिया, इससे बढ़कर बुरी बात और क्या हो सकती है? भला, तुमने किस लोभ में पड़कर ऐसा बुरा काम किया? यदि तुमने किसी राजा के यहाँ तिलक चढ़ाया होता तो हमारी राह इस प्रकार नहीं कटती, जैसी कि अब कट रही है। शिवजी ने तो केवल एक मुट्ठी भर राख दे दी है और मुँह से भी कुछ अच्छी बात नहीं कही। मेरे घर में तो ऐसी राख बहुत भरी पड़ी है। यदि तुम्हारे घर में न हो तो तुम भले ही ले जाओ। मुझे तो उन्होंने मार्ग का खर्च भी नहीं दिया। अब भला मैं किस प्रकार अपने घर तक पहुँचूँ? पता नहीं, राजा हिमाचल इस वृत्तान्त को सुनकर क्या दंड देंगे? मैं तो सारा दोष तुम्हारे ही सिर पर रख दूँगा, यह याद रखना।'' इतना कह कर नाई ने क्रुद्ध हो भस्म को खोलकर वहीं फेंक दिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

हे नारद ! जब पुरोहित और नाई अपने-अपने घर पहुँचे तो उस भस्म के प्रभाव से पुरोहित के घर में संसार के सम्पूर्ण रत्न और सुख-सामग्री उत्पन्न हुई, जिससे पुरोहित तथा उनकी पत्नी को बहुत आनन्द हुआ। एक दिन नाई की स्त्री पुरोहित के घर आयी। जब उसने यह देखा कि उसके घर में सुख की सम्पूर्ण सामग्रियाँ उपस्थित हैं तो उसने पुरोहित की पत्नी से उस ऐश्वर्य का कारण पूछा। जब पुरोहित की पत्नी ने उसे यह बताया कि यह सब सम्पत्ति शिवजी द्वारा दी गयी भस्म के कारण प्राप्त हुई है, तो उसने अपने पति के पास पहुँच कर यह सब हाल कह सुनाया। उसे सुनकर नाई दौड़ा-दौड़ा पुरोहित के पास आया और झगड़ा करके यह कहने लगा कि तुम मुझे इस धन का आधा भाग दो। उस समय पुरोहित ने उसे यह उत्तर दिया—''मूर्ख ! तूने शिवजी द्वारा दी गयी भस्म का निरादर करके उसे फेंक दिया, इसलिए तू इस सम्पत्ति से वंचित रहा। अब मुझसे लड़ने के लिए क्यों आया है? यदि तू सम्पत्ति प्राप्त करना चाहता है तो फिर उन्हीं के पास चला जा, जिन्होंने पहले तुझे भस्म दी थी।'' पुरोहित की बात सुनकर नाई फिर कैलाश पर्वत पर गया, परन्तु इस बार उसे वहाँ से निराश लौट आना पड़ा।''

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब राजा हिमाचल ने पुरोहित एवं नाई के झगड़े का हाल सुना, तो उन्होंने दोनों को अपने पास बुलाकर यह कहा कि तुम दोनों गिरिजा के वर का हाल कह सुनाओ।'' यह सुनकर पुरोहित ने उत्तर दिया—''हे प्रभो ! आपकी आज्ञानुसार मैं सर्वप्रथम गिरिजा के पास गया। फिर गिरिजा की आज्ञा पाकर कैलाश पर्वत पर जा पहुँचा और वहाँ शिवजी को तिलक चढ़ा आया। मैंने शिवजी का पूजन किया फिर उनकी स्तुति करते हुए यह कहा कि तीनों लोक आपके सेवक हैं, अतः आप कृपा करके गिरिजा के साथ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

विवाह करना स्वीकार कर लीजिये। मेरी बात सुनकर पहले तो शिवजी ने मना किया, परन्तु फिर मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। मैं उन्हें तिलक चढ़ाकर लौट आया। हे राजन् ! शिवजी सब प्रकार से गिरिजा के पति होने योग्य है। तीनों लोकों में उनसे बड़ा और कोई नहीं है। सब लोकपाल उन श्री शिवजी की महिमा का वर्णन करते हैं। उन्होंने चलते समय मुझे भस्म दी थी, जिससे मेरे घर में सब प्रकार की सुख-सामग्रियाँ उपस्थित हुई हैं। इतना कहकर पुरोहित अपने घर चला गया।

हे नारद ! पुरोहित के जाने के बाद नाई आया। वह हाय-हाय करता हुआ राजा हिमाचल से बोला—"हे राजन् ! आपके पुरोहित ने सब काम बिगाड़ दिया। वह स्थान ऐसा निर्जन था कि वहाँ एक भी मनुष्य दिखाई नहीं देता था। कुछ और आगे चलकर वट वृक्ष के नीचे बैठा हुआ केवल एक मनुष्य दिखाई दिया। उसका रूप अवधूतों जैसा था। वह योगियों के समान ध्यान मग्न बैठा हुआ था। पुरोहित ने बिना पूछे ही उसे तिलक चढ़ा दिया। यद्यपि मैंने बहुत रोका, किन्तु पुरोहित ने मेरी एक बात नहीं मानीं। उस अवधूत के पास एक बैल के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। चलते समय उसने हमें कुछ धन भी नहीं दिया। केवल एक-एक मुट्ठी भस्म पकड़ा दी। हे राजन् ! जो सच्ची बात थी, वह मैंने कह सुनायी। अब जो आप उचित समझें, वह करें।"

हे नारद ! इस समाचार को सुनकर हिमाचल को तो कुछ ही खेद हुआ, परन्तु मैना को बहुत चिन्ता उत्पन्न हुई। उन्होंने हिमाचल से कहा—"हे स्वामी ! मैंने जब से यह सुना है कि पुरोहित ने एक भिखारी के साथ मेरी पुत्री का विवाह निश्चित किया है, तब से मुझे बहुत चिन्ता हो रही है। मैंने यह भी सुना है कि वह अवधूत बहुत कुरूप, अशक्त तथा मूर्ख है। मेरी पुत्री परम सुन्दरी है, तब भला ऐसे पति के साथ उसका विवाह किस प्रकार किया जा सकता है?" हे नारद ! हिमाचल ने यह सुनकर जब अपने मित्रों को सब वृत्तान्त सुनाया, तब उनमें से किसी ने यह बताया कि तुम्हारे धन्य भाग्य हैं जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

गिरिजा को ऐसे श्रेष्ठ पति की प्राप्ति हुई है और किसी ने यह कहा कि ऐसे वर के साथ विवाह करना उचित नहीं है। गिरिजा का विवाह तो किसी राजा के साथ ही होना चाहिए। हिमाचल ने उन सबकी बातें सुनकर उत्तर दिया—"हे भाइयो ! जो भगवत इच्छा होती है, उसमें किसी का वश नहीं चलता।" यह कहकर हिमाचल ने यह सब वृत्तान्त कह सुनाया कि जिस प्रकार सब देवताओं ने गिरिजा के साथ विवाह करना अस्वीकार कर दिया था। फिर उन्हें यह शाप भी बताया कि देखो, शिवजी की भस्म के प्रताप से हमारे पुरोहित के घर किसी प्रकार की कमी नहीं रही है। उन्होंने यह भी कहा कि इन सब बातों पर भली-भाँति विचार कर, आप मुझे अपनी राय दीजिए उसी के अनुसार मैं आचरण करूँगा।"

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! हिमाचल की बातों को सुनकर सब लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ। तब उनमें से किसी ने यह राय दी कि शिवजी के साथ विवाह कभी नहीं करना चाहिए। अंत में बहुत कुछ सोच-विचार करने के उपरान्त बुद्धिमान् तथा विद्वान् पुरुषों ने हिमाचल से यह कहा—हे राजन् ! आप शिवजी को एक पत्र इस आशय का लिखें कि वे एक अच्छी-सी बारात सजाकर लावें। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो गिरिजा के साथ उनका विवाह न हो सकेगा। यदि वे वास्तव में तपस्वी तथा योगी होंगे तो आपकी बात को स्वीकार करके श्रेष्ठ बारात सजाकर लावेंगे।"

हे नारद ! बुद्धिमानों की इस बात को हिमाचल तथा मैना ने स्वीकार कर लिया तथा शिवजी को अच्छी बारात लाने के लिए पत्र लिखा। उसमें यह कहा गया था कि आपकी बारात में सभी देवता, ऋषि, मुनि, सनकादिक, शेषनाग, ब्रह्मा जी तथा विष्णु जी को भी आना चाहिए। यदि ये लोग नहीं आये तो गिरिजा के साथ आपका

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

विवाह न हो सकेगा। इस पत्र के साथ लग्न की सामग्री देकर हिमालय ने पुरोहित को पुनः शिवजी के पास भेजा। जब पुरोहित पुनः कैलाश पर्वत पर पहुँचा तो उसने देखा कि शिवजी ने उसकी मनोभिलाषा जानकर पहले से ही वहाँ देवताओं की सभा जमा कर रखी है। उस सभा के समान अन्य कोई सभा संसार में नहीं हो सकती थी। जिस समय पुरोहित ने उस सभा को देखा तो उसके आनन्द का पारावार न रहा। अस्तु, उसने प्रसन्न होकर लग्न चढ़ायी। उस लग्न की सामग्री को देखकर सभी सभासद् अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त पुरोहित शिवजी से आज्ञा तथा अपना नेग लेकर, हिमाचल के समीप लौट आया और उन्हें सब हाल कह सुनाया। पुरोहित ने नाई की निन्दा करते हुए कहा—"हे राजन्! मैं आपको शपथ खा कर कहता हूँ कि गिरिजा का पति अत्यन्त सुन्दर तथा तेजस्वी हैं और तीनों लोकों में उसके समान अन्य कोई नहीं हैं।" पुरोहित के मुख से इन शब्दों को सुनकर हिमालय तथा मैना अपने भाई-बन्धुओं सहित अत्यन्त प्रसन्न हुए। पुरवासी जनों ने जब यह समाचार सुना तो उन्हें भी हार्दिक आनन्द हुआ।

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद! हिमाचल ने सब सामग्री एकत्र करके, बारात के ठहरने के लिए एक बहुत लम्बा-चौड़ा श्रेष्ठ भवन निर्मित कराया। जहाँ एक ओर भगवती आदिशक्ति और दूसरी ओर परमपुरुष सदाशिवजी हों, वहाँ किसी प्रकार की कमी हो भी कैसे सकती है? अब तुम शिवजी का हाल सुनो। जब शिवजी ने हिमाचल का पत्र पढ़ा तब उन्हें बहुत हँसी आयी। फिर उन्होंने हिमाचल के गर्व को नष्ट करने के लिए यह चरित्र किया कि उन्होंने अपना स्वरूप एक बूढ़े जैसा बना लिया। तदुपरान्त अपने बैल को भी बूढ़ा बना कर उसके ऊपर बैठ गये, फिर अपने साथ दो शिष्यों को ले डमरू तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

सिंगी को बजाते हुए 'अलख-अलख' शब्द का उच्चारण करते हुए, भयानक वेष बनाये, हिमाचल के नगर में जा पहुँचे और वहाँ जाकर एक बाग में ठहर गये। इधर राजा हिमाचल बारात आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। अस्तु, उन्होंने जब सिंगी और डमरू का नाद सुना तो बहुत-से लोगों को बारात देखने के लिए भेजा। वे सब मनुष्य तथा गिरिजा की सहेलियाँ उस स्थान पर जा पहुँची, जहाँ अवधूत-स्वरूप शिवजी बैठे हुए 'अलख-अलख' शब्द का उच्चारण कर रहे थे। उन्होंने शिवजी के पास पहुँचकर पूछा—"हे योगिराज ! तुमने कहीं शिवजी की बारात तो नहीं देखी?" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हम हीं गिरिजा के दूल्हा हैं और हम हीं बारात हैं। हमारे साथ दो शिष्यों के अतिरिक्त और कोई नहीं आया है।"

हे नारद ! शिवजी के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर गिरिजा की सखियों ने उन्हें गालियाँ देते हुए कहा—"अरे पागल ! तू हमारे राजा की पुत्री के लिए ऐसी बात क्यों कहता है? यदि तू ठीक-ठाक बतायेगा कि तूने बारात को नहीं देखा है, तो हम तुझे अच्छे भोजन खिलायेंगी और पहनने के लिए सुन्दर वस्त्र भी देंगी।" यह सुनकर शिवजी ने फिर अपना पहला उत्तर दुहरा दिया और कहा—"हे सखियो ! तुम गिरिजा से जाकर यह कह देना कि हम वही व्यक्ति हैं, जिन्हें पुरोहित लग्न चढ़ाकर आया है। गिरिजा हमें अच्छी तरह जानती है, अतः वह सब कुछ बता देगी। यह सुनकर उन सब स्त्रियों ने शिवजी की लात-घूसों से खूब पिटाई की तथा पाँव पकड़कर चारों ओर घसीट डाला। इसके बाद उन्होंने नाखून तथा चुटकियों से उनके पवित्र शरीर को जगह-जगह काटा। किसी ने उनके बैल को डंडा मार कर भगा दिया और किसी ने उनके साथ के छोटे-छोटे नंग-धड़ंग बालकों को ऐसे जोर-जोर के चाँटे लगाये कि वे रोते हुए भाग खड़े हुए।

हे नारद ! उन सखियों ने यह सब ऊधम केवल इसीलिए किया था कि वे शिवजी की माया में मोहित होकर, उन्हें पहिचानने में असमर्थ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:53 AM

रही थीं। शिवजी ने उनकी इस मार-पीट का कोई बुरा न मानते हुए हँसकर कहा—"हे स्त्रियो ! ससुराल में इस प्रकार मार खाना भी अच्छा लगता है, अतः तुम अपने मन में किसी प्रकार का संकोच मत करो और जिस प्रकार चाहो, मुझे खूब तंग कर लो।" यह सुनकर वे स्त्रियाँ तथा पुरुष शिवजी को छोड़कर अपने घर को लौट चले। जब वे लोग चले गये, तब शुक्र और शनिश्चर देवता, तो बाल-स्वरूप धारण किये हुए शिवजी के साथ थे तथा बैल, जिन्हें स्त्रियों ने कुछ देर पहले मार कर भगा दिया था, वे रोते-रोते फिर शिवजी के पास आ पहुँचे। उस समय शिवजी ने हँसते हुए उनसे कहा—"तुम लोग अपने मन में कुछ बुरा मत मानो। ससुराल में तो इसी प्रकार का आनन्द मिलता है।" परन्तु जब उन लोगों को शिवजी की इस बात से प्रसन्नता नहीं मिली, तब शिवजी ने लौटकर जाती हुई उन स्त्रियों के पीछे, अपने झोले में से निकाल कर अनेक प्रकार की बर्रें छोड़ दीं। उन बर्रों ने स्त्रियों के कोमल शरीर को काट कर जगह-जगह सुजा दिया। तब वे रोती-चिखती और चिल्लाती हुई बड़ी तेजी के साथ अपने घरों को भाग चलीं। उसी अवस्था में वे सब गिरिजा के समीप जा पहुँची। उनकी इस दुर्गति को देखकर जो स्त्रियाँ उनके साथ नहीं गयी थीं, वे बहुत प्रसन्न हुईं और उन्हें चिढ़ाती हुई पूछने लगीं—"अरी सखियो ! तुम्हारी यह दुर्गति किसने कर दी है?" गिरिजा भी उनकी हालत को देखकर पहले तो बहुत हँसी, फिर अपनी कृपा दृष्टि द्वारा उन सबको स्वस्थ कर दिया। तदुपरान्त उन्होंने पूछा कि यह सब चरित्र कैसे हुआ, वह तुम मुझे बताओ। गिरिजा के इन शब्दों को सुनकर उन स्त्रियों ने सम्पूर्ण घटना कह सुनायी। तब शिवजी के चरित्र को देख-सुनकर गिरिजा हँसने लगीं।"

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! हिमाचल की आज्ञा पाकर जो लोग बारात को ढूँढने गये थे, उन लोगों ने लौटकर यह समाचार दिया कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हमें बारात कहीं नहीं मिली। हिमाचल यह सुनकर पहले तो बहुत दुःखी हुए, परन्तु जब उन्होंने गिरिजा की सखियों की दुर्गति का समाचार सुना तो उन्होंने अपने मन में निश्चय किया कि सम्भवतः वही शिवजी होंगे। यह विचार आते ही वे बहुत पछताकर कहने लगे— "हाय, ब्राह्मण आदि तो शिवजी की बहुत प्रशंसा किया करते हैं, फिर क्या कारण है, जो वे ऐसा भयानक स्वरूप बनाकर मेरी पुत्री को ब्याहने आये हैं? अब मुझे वास्तव में पता चला कि पुरोहित ने मेरे साथ धोखा किया है। मैं राजा होकर ऐसे भिखारी के साथ अपनी पुत्री का विवाह कदापि नहीं करूँगा।" इस प्रकार की बातें करते हुए हिमाचल तथा मैना बहुत चिन्तित हुए। जो बन्धु-बान्धव विवाह में सम्मिलित होने के निमित्त हिमाचल के घर आये हुए थे, वे भी शोकाकुल होकर कहने लगे कि अरे, यह क्या हुआ?

हे नारद ! उस समय हिमाचल आदि के चित की चिन्ता को देखकर गिरिजा ने 'विजया' नामक सखी को अपने पास बुलाया और उसे एक पत्र देते हुए कहा—हे सखी ! तुम इसी समय इस पत्र को लेकर शिवजी के पास चली जाओ और निर्भय हो हाथ जोड़कर, उनसे मेरी ओर से प्रार्थना करते हुए यह कहना कि आप गिरिजा के इस पत्र का उत्तर तुरन्त देवें। फिर वे जो भी उत्तर दें उसे लेकर तुम मेरे पास लौट आना। यह सुनकर वह सखी गिरिजा का पत्र लेकर शिवजी के पास चल दी और वहाँ पहुँचकर उन्हें दणडवत्-प्रणाम करने के उपरान्त पत्र देती हुई बोली—"हे परब्रह्म शिवजी ! मैं आपको भली-भाँति जानती हूँ, परन्तु मेरे माता-पिता तथा अन्य लोग आपकी महिमा को न पहिचान पाने के कारण अत्यन्त चिन्तित हो रहे हैं। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप अपने परम सुन्दर तथा कोमल स्वरूप को धारण कीजिये। इसके अतिरिक्त आप श्रेष्ठ बारात एवं सुन्दर सामग्री के साथ यहाँ पधारिये, जिससे सब लोगों के मन की व्याधि दूर हो।" शिवजी ने इस पत्र को पढ़कर उत्तर लिख दिया और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उसे देकर सखी को विदा किया। जब गिरिजा को अपने पत्र का उत्तर मिल गया, तब वे अपने मन में बहुत प्रसन्न तथा सुखी हुईं।''

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! उस समय हिमाचल ने बहुत दुःखी होकर गिरिजा को अपने पास बुलाया और यह कहा—''हे पुत्री ! तूने यह क्या किया जो सब देवताओं को छोड़कर ऐसे अवधूत पति की इच्छा की? मैं तो अपनी प्रतिज्ञा के कारण तुझ से कुछ नहीं कह सकता, परन्तु तेरी माता अपयश का ध्यान करके बहुत दुःखी हो रही हैं। जब मैं यह विचार करता हूँ कि मेरी लड़की का विवाह एक अवधूत के साथ होगा, उस समय मैं शोक-समुद्र में डूब जाता हूँ। मुझे बड़ी चिन्ता है कि मैंने तो इतनी सामग्रियाँ एकत्र कीं, परन्तु तेरा पति अपने साथ केवल दो कुरूप शिष्यों को बारातियों के नाम पर लाया है। उसके साथ जो बैल है, वह भी बहुत बूढ़ा तथा निर्बल है। उस बैल के ऊपर भाँग-धतूरा आदि अनेक प्रकार की मादक वस्तुएँ तथा विभिन्न प्रकार के विष लदे हुए हैं। मेरा भाग्य तो देखो कि कैसी बारात आज मेरे दरवाजे पर आयी है। अब भला तू ही बता कि इस अवसर पर सब लोग मुझे क्यों नहीं धिक्कारेंगे?''

हे नारद ! हिमाचल की बात सुनकर गिरिजा ने हँसते हुए कहा—''हे पिता ! आप कुछ चिन्ता न करें। विष्णु जी का वचन मिथ्या न होगा। इस समय जो लीला हो रही है, वह भी सब लोगों का आनन्द प्रदान करने वाली सिद्ध होगी। अन्त में, सब लोग आपकी बहुत स्तुति करेंगे तथा आपके प्रताप को सबसे बड़ा स्वीकार करेंगे। आप विश्वास रखें कि इस विवाह के बाद तीनों लोकों में आपको सुयश प्राप्त होगा। ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता भी आपका अत्यंत सम्मान करेंगे। अब आपको उचित है कि आप उन योगी रूपधारी भगवान् सदाशिव के समीप जायें और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करें, वे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपकी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूरी करेंगे।''

हे नारद ! शिवजी तथा गिरिजा की लीलाएँ अपार हैं। वे दोनों एक ही रूप हैं। अस्तु, उनमें किसी प्रकार का भेद नहीं समझना चाहिए। जिस प्रकार शब्द और अर्थ में कोई अन्तर नहीं होता, उसी प्रकार शिवजी तथा गिरिजा जी में भी किसी प्रकार की भिन्नता नहीं है। उनकी जो इच्छा होती है, उसी लीला को वे सब लोगों को दिखाते हैं। उनकी लीलाओं का पार किसी ने नहीं पाया है। अस्तु, इस घटना के उपरान्त हिमाचल ने अपने भाई-बन्धुओं को बुलाकर गिरिजा ने जो बात कही थी, वह सब कह सुनायी। फिर कहा—''हे भाइयो ! वह योगी अवधूत का स्वरूप बनाये हुए एक निर्बल बैल तथा दो छोटे-छोटे बालकों को साथ लिये हुए यहाँ आया है। अब आप लोगों की जो सम्मति हो, वही कार्य किया जाए।''

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! हिमाचल की बात सुनकर सब पर्वतों ने इस प्रकार कहा—''हे राजन् ! हमें सर्व प्रथम उस योगी के पास पहुँचकर उसकी परीक्षा ले लेनी चाहिए। यदि उसमें कोई बुराई न हो तो उसके साथ गिरिजा का विवाह करने में कोई हानि नहीं है।'' यह सुनकर हिमाचल अपने साथ कई लोगों को लेकर शिवजी के पास जा पहुँचे और हाथ जोड़कर प्रणाम करने के उपरान्त चुपचाप खड़े हो गये। उस समय शिवजी ने यह लीला की कि शुक्र तथा शनिश्चर, जो शिष्यों की भाँति उनके साथ थे, पास आ पहुँचे और रुदन करने लगे। उन्हें रोते हुए देखकर शिवजी ने कहा—''हे बालको ! तुम रोना-धोना त्यागकर खूब खेलो-कूदो, परन्तु मेरे पास से कहीं दूर मत चले जाना। मैं अकेला निर्धन मनुष्य हूँ। तुम भी मुझे बड़ी कठिनाई से प्राप्त हुए हो। देखो, तुम बैल की भी देखभाल करते रहना ; क्योंकि नशे में चूर होने के कारण इस समय मैं उसकी देखभाल नहीं कर सकता हूँ।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

हे नारद ! इस प्रकार नशे बाजों की भाँति शिवजी ने हिमाचल आदि के सामने उन बालकों से बहुत-सी बातें कहीं, परन्तु वे बालक बराबर रोते रहे। उस समय शिवजी ने उनसे रोने का कारण पूछा तो वे उत्तर देते हुए बोले—"हे बाबा ! हम तो भूख से मरे जाते हैं, अब या तो आप हमें कुछ खाने के लिए दीजिये, अन्यथा हम इसी प्रकार चिल्लाते रहेंगे।" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे बालको ! मेरे पास तो खाने के लिए कुछ भी नहीं है, परन्तु तुम कुछ देर और ठहरे रहो। हिमाचल के घर खाने-पीने की बहुत सामग्रियाँ बनी हैं। जब गिरिजा के साथ मेरा विवाह होगा, उस समय तुम्हें भी बहुत-सा भोजन खाने के लिए मिलेगा।" यह सुनकर दोनों चेलों ने कहा—"हे बाबा ! विवाह में तो अभी बहुत देर है तब तक हम भूखे नहीं रह सकेंगे। कई दिनों से भोजन प्राप्त न होने के कारण अब हम से और अधिक देर तक नहीं ठहरा जाता है। इसलिए आप कुछ-न-कुछ खाने का प्रबन्ध तो कर ही दें।"

हे नारद ! हिमाचल ने जब उन दोनों बालकों की यह बात सुनी तो शिवजी से कहा—"हे प्रभो ! यदि आपकी आज्ञा हो तो हम आपके दोनों शिष्यों को अपने साथ घर ले जाकर भोजन करा लावें।" शिवजी बोले—"हे राजन् ! यदि आप यही चाहते हैं तो इन्हें भोजन करा लाइये। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है।" यह सुनकर हिमाचल को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे राजन् ! हम आपके घर भोजन करने के लिए नहीं जायेंगे ; क्योंकि घर के स्वामी के बिना हमें वहाँ कोई भी अच्छी तरह से भोजन नहीं करा सकेगा। यदि आप स्वयं हमें लेकर चलें तो हम तैयार हैं, अन्यथा भूखे रहकर यहीं रोते रहेंगे।" उस समय शिवजी ने हिमाचल को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे राजन् ! आप स्वयं इन्हें साथ ले जाकर भोजन करा लाइये। सचमुच यह कई दिन के भूखे हैं। आप इन्हें अच्छी तरह से भोजन करा दें तथा पानी भी पिला दें।"

हे नारद ! शिवजी की आज्ञा सुनकर हिमाचल उन दोनों को साथ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

लेकर घर आये और उन्हें भोजन कराने लगे। उस समय उन दोनों शिष्यों ने यह किया कि उनके सामने जितना भी भोजन परोसा गया, उन सब को वे एक ही ग्रास में खा गये, तदुपरान्त उन्होंने हिमाचल को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे राजन् ! अभी तो हमने केवल एक ही ग्रास भोजन खाया है, इससे हमारी भूख बिल्कुल नहीं बुझी, अब तुम हमें शीघ्र ही और कुछ खिलाओ। तुम बहुत बड़े राजा हो, अतः तुम्हें किसी प्रकार का लोभ करना उचित नहीं है। यदि हम भूखे उठ गये तो तुम्हें बहुत पाप लगेगा।" यह सुनकर हिमाचल ने रसोई करने वालों से कहा—"तुम्हें लोभ करने की आवश्यकता नहीं है। मेरे यहाँ भोजन ढेर के ढेर रखे हैं, अतः ये जितना भी खा सकें, तुम इन्हें खूब खिला दो।" यह सुनकर रसोईया जब और सारा भोजन ले आया तो उसको भी वे एक ही ग्रास में खा गये। हिमाचल के यहाँ जितना पानी था, उन सबको भी उन्होंने एक ही घूँट में पी लिया। तदुपरान्त वे चिल्लाते हुए बोले—"हे राजन् ! हम तो भूख के मारे मरे जा रहे हैं, तुम हमें खाने के लिए कुछ क्यों नहीं देते हो? यदि तुम्हारे यहाँ भोजन तैयार न हो तो हमें कच्चा अन्न ही बतला दो, हम उसी को खा जायेंगे।" यह सुनकर हिमाचल ने अत्यन्त चिन्तित होकर कच्चे अन्न का जो अम्बार लगा था, वह उन दोनों को बतला दिया। उस पर्वत के समान अन्न के ढेर को भी वे एक ही ग्रास में खा गये। जब राजा के घर कुछ भी शेष नहीं रहा, तब वे भूख-भूख चिल्लाते और रोते हुए वहाँ से लौट पड़े तथा अपने गुरु के समीप जा पहुँचे। शिवजी ने जब उन्हें देखा तो पहले तो बहुत हँसे, तदुपरान्त अपने झोले से निकाल कर उन्हें एक जड़ी ऐसी दे दी, जिसे खाते ही उनकी भूख शांत हो गयी।"

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! हिमालय के घर से जब शिवजी के दोनों शिष्य चले गये, तो उस समय सब लोगों ने हिमालय के पास

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पहुँचकर कहा—"हे राजन् ! अब तो नगर में अन्न का लेश मात्र भी शेष नहीं रहा है। भला, हम लोग किस प्रकार जीवित रहेंगे? अब आप शीघ्र ही वह उपाय कीजिये, जिससे प्रजा का यह दुःख दूर हो।" यह सुनकर हिमाचल ने उनसे कहा—"हे भाइयो ! हमारे नगर के बाहर उद्यान में एक बूढ़ा योगी कहीं से आकर ठहरा हुआ है। उसके साथ एक बैल है और दो शिष्य हैं। वह मेरी पुत्री के साथ विवाह करने की इच्छा रखता है। उसके शिष्यों ने ही नगर में अन्न का अकाल उपस्थित कर दिया है। ऐसी दशा में अब आप ही बताइये कि हमें क्या करना चाहिए?" यह सुनकर सब लोगों ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! इसका भेद तो पुरोहित अथवा गिरिजा से ही पूछना उचित है, परन्तु एक बात को हम लोग अवश्य स्वीकार करते हैं कि यदि उस योगी में कोई दोष होता तो गिरिजा उसे पति रूप में पाने की इच्छा कभी नहीं करतीं।"

हे नारद ! यह सुनकर हिमाचल ने पुरोहित को अपने पास बुलाकर पूछा—"हे पुरोहित ! तुम सच-सच बताओ कि जो योगी दो शिष्यों को साथ लेकर यहाँ आया है, वह वास्तव में कौन है?" पुरोहित ने उत्तर दिया—"हे राजन् ! गिरिजा ने मुझे इस योगी का पता बताया था, तब मैं उसे तिलक चढ़ा आया।" इतना कहकर पुरोहित ने योगी स्वरूप शिवजी की महिमा को सुनाते हुए कहा—"हे राजन् ! ये योगीरूप में साक्षात् शिवजी हैं और तुम्हारी पुत्री गिरिजा आदिशक्ति भवानी का अवतार हैं। यदि आप इससे कुछ और अधिक जानना चाहते हों तो गिरिजा से ही पूछ लीजिये। वे इस सम्बंध में आपको और अधिक बात बता सकेंगी।" पुरोहित के मुख से यह बात सुनकर सब लोगों ने गिरिजा की बात सुनने का निश्चय किया। तब हिमाचल ने गिरिजा को अपनी सभा में बुलाया। पिता की आज्ञा सुनकर गिरिजा अपनी माता तथा दो सखियों को साथ लेकर सभा में पहुँचीं। जब गिरिजा ने लोगों को प्रणाम किया तो हिमाचल ने प्रसन्न होकर उन्हें अपने पास बैठा लिया।

❁ ❁ ❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

पच्चीसवाँ अध्याय

हिमाचल ने गिरिजा को अपने पास बैठाते हुए अत्यन्त स्नेह पूर्वक कहा—"हे पुत्री ! इस समय सब लोग दुःख सागर में निमग्न हैं, अतः तुम सब हाल समझाकर कहो कि वह योगी कौन हैं, जिसके शिष्यों ने हमारा सम्पूर्ण भोजन खा लिया है और नगर में अन्न तो अन्न, कहीं पानी भी ढूँढे नहीं मिलता है?" पिता की बात सुनकर गिरिजा मन-ही-मन अत्यन्त प्रसन्न हुईं, परन्तु ऊपर से लज्जित होकर कुछ न कह सकीं। हे नारद ! उसी समय तुम हिमाचल की सभा में पहुँचे और तुमने आदि से अन्त तक का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाते हुए हिमाचल से कहा—"हे राजन् ! तुम किसी प्रकार सन्देह मत करो। तुम और तुम्हारी पत्नी परम धन्य हो। तुम्हारे यहाँ भगवती आदिशक्ति ने अवतार लिया है। ये आदिशक्ति ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को भी उत्पन्न करने वाली हैं। यही सब का संहार भी करती हैं। इनकी माया अपरम्पार है। यह जो तुम्हारे घर में सखियों के साथ क्रीड़ा करती हुई भ्रमण कर रही हैं, इसे तुम अपना अहोभाग्य ही समझो। इन्होंने प्रेम के वशीभूत होकर ही तुम्हारे ऊपर यह कृपा की है। वे बूढ़े योगी, जिसका नाम हर है और जो अपने साथ शुक्र तथा शनिश्चर नामक दो शिष्यों को लेकर बाग में ठहरे हुए हैं, तुम्हारी इस कन्या के सच्चे पति हैं। ये ब्रह्मा तथा विष्णु के भी पिता हैं और सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करने वाले तथा उसका संहार करने वाले भी हैं। अब तुम्हें यह उचित है कि तुम उन्हीं की शरण में जाओ। वे तुम्हारे अन्न आदि को जो उनकी माया द्वारा गुप्त हो गया है, फिर से प्रकट कर देंगे तथा तुम्हारी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करेंगे। वे अपना स्वरूप भी ऐसा सुन्दर बना लेंगे कि उसे देखकर तुम्हें अत्यन्त आश्चर्य होगा। उनकी बारात भी पलक मारते ही सज जायेगी और उसमें ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता सेवक बनकर सम्मिलित होंगे।"

हे नारद ! जब तुमने इस प्रकार सब लोगों को समझाया, उस समय हिमाचल तथा अन्य लोगों को अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त हुई। तदुपरान्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

तुम अपने लोक को चले गये और हिमाचल गिरिजा के विवाह की तैयारी में संलग्न हुए।''

❁❁❁

छब्बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! फिर पर्वतराज हिमाचल सब लोगों को साथ लेकर शिवजी की सेवा में जा पहुँचे और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। यह देखकर शिवजी ने उनसे हँसते हुए पूछा—''हे राजन् ! तुम क्या चाहते हो? हम तुम्हारी प्रत्येक मनोकामना को पूर्ण करेंगे?'' यह सुनकर हिमाचल ने अपनी इच्छा को प्रकट करते हुए कहा—''हे प्रभो ! आपकी लीला जानी नहीं जाती। आप कृपा करके मेरे सम्पूर्ण अपारधों को क्षमा कीजिये और मुझे ऐसा ज्ञान प्रदान कीजिये कि जिससे मैं सदैव चैतन्य बना रहूँ। हे प्रभो ! आपका वर्णन वेदों से भी नहीं हो सकता। यदि नारद जी हमें आश्चर्य रूपी समुद्र से बाहर न निकालते तो हमारी अज्ञानता कभी दूर नहीं होती। हे नाथ ! अब मेरा सम्पूर्ण अहंकार नष्ट हो गया है। आप नगर में पधारकर गिरिजा को स्वीकार कीजिये और हम सब लोगों को प्रसन्नता प्रदान कीजिये। हे प्रभो ! आपके दोनों शिष्यों ने नगर का सम्पूर्ण अन्न खा डाला है जिसके कारण लोग अत्यन्त दुःखी हैं। आप कृपा करके इस दुःख को भी दूर कर दीजिए। इस समय मेरी प्रतिष्ठा आपके हाथ में है। मैं आपकी शरण में आया हूँ।''

हे नारद ! हिमाचल के इन शब्दों को सुनकर शिवजी ने प्रसन्न होते हुए कहा—''हे राजन् ! अब तुम प्रसन्नतापूर्वक अपने नगर को लौट जाओ। तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होंगे। तुम विवाह की सामग्री एकत्र करो। हे पर्वतराज ! तुम्हें अपने राज्य तथा सामग्री एकत्र करने का बहुत अहंकार हो गया था, उसे नष्ट करने के लिए ही हमने यह लीला दिखायी है। अब तुम घर जाकर बारात की अगवानी की प्रतीक्षा करो। तुम्हारे घर की सभी वस्तुएँ ज्यों-की-त्यों प्रकट हो जायेंगी।'' शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

की आज्ञा पाकर हिमाचल अपने घर लौट गये। वहाँ जाकर जब उन्होंने यह देखा कि सब सामग्रियाँ पुनः प्रकट हो गयी हैं तो उन्हें अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैना भी गिरिजा की ओर देखकर अत्यन्त आनन्दित हुईं। तदुपरान्त हिमाचल बारात की अगवानी के लिए सभी लोगों को साथ लेकर आगे चले। इधर हिमाचल को विदा करने के उपरान्त शिवजी ने सिंगी नाद करके अपना डमरू बजा दिया। उसके शब्द को सुनते ही मैं, विष्णु, इन्द्र आदि सम्पूर्ण देवता तथा ऋषि-मुनि सम्पूर्ण सृष्टि के साथ लेकर शिवजी के समीप जा पहुँचे। उस समय शिवजी ने वस्त्रालंकारों से सुसज्जित होकर अपना सुन्दर दूल्हा रूप बनाया। भगवान् सदाशिव के उस परम तेजस्वी स्वरूप का दर्शन प्राप्त कर, सब लोगों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

सत्ताईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब हिमाचल अपने भाई-बन्धु तथा प्रजा को साथ लेकर अगवानी के लिए आगे आये, उस समय शिवजी की सजी हुई बारात की धूमधाम को देखकर वे आनन्द मग्न हो गये। उस बारात के सम्मुख हिमाचल ने अपनी सम्पूर्ण सामग्री को बहुत तुच्छ समझा। तब वह अत्यन्त लज्जित हो शिवजी के चरणों पर गिर पड़े। उस समय शिवजी ने प्रेम मग्न हो उन्हें अपने हाथों पर उठा लिया। फिर बारात हिमाचल के द्वार की ओर चली। उस सुन्दर बारात को देखने के लिए नगर की सभी स्त्रियाँ अपना-अपना काम छोड़कर छज्जों पर आ बैठीं। यहाँ तक कि कोई स्त्री अपने पति को भोजन करते छोड़कर ही उठ बैठी और कोई अधूरा शृंगार किये ही भागी चली आयी। वे सब शिवजी के परम मनोहर रूप को टकटकी बाँधकर देखने लगीं और गिरिजा के भाग्य की सराहना करती हुई, बारात के ऊपर पुष्पों की वर्षा करने लगीं।

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी की बारात हिमाचल के द्वार पर जा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:54 AM

पहुँची। उस समय हिमाचल तथा मैना ने अपना अहंकार त्याग कर बहुत-सा धन शिवजी को भेंट किया। तदुपरान्त बारात के ठहरने के लिए जो निवास बनाया गया था, उसमें सभी बाराती ठहरे। गिरिजा ने ऋद्धि-सिद्धियों को बारात की सेवा करने के लिए भेज दिया था। अस्तु, किसी को किसी वस्तु की कमी न रही। रीति-भाँति सम्पन्न होने के पश्चात् हिमाचल ने बारातियों को अनेक प्रकार के सुस्वादु, व्यंजन खिलाये। तदुपरान्त भगवान् सदाशिव के उन चरण-कमलों को जिन्हें हम तथा विष्णु रात-दिन अपने हृदय में बैठाये रहते हैं, हिमाचल ने अपने हाथों से धोया। भोजन के समय बारातियों को जो प्रसन्नता हुई, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। भक्ष्य, भोज्य, लेह्य तथा चोष्य, ये चारों प्रकार के व्यंजन बारातियों को खिलाये गये। जब बारात भोजन करके जनवासे में चली गयी, तब हिमाचल के बन्धु-बान्धवों ने भोजन प्राप्त किया। शिवजी जिस स्थान पर ठहरे हुए थे, वहाँ विविध प्रकार के नृत्य एवं गीतों का आयोजन हुआ, जिन्हें देख-सुनकर व्यसनी लोग अत्यन्त प्रसन्न होते थे। उस समय सब लोग भगवान् सदाशिव तथा भगवती गिरिजा की बारम्बार प्रशंसा कर रहे थे।''

अट्ठाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! उस समय हिमाचल के पंडित ने आकर लग्न का मुहूर्त बताया। तब मैं और विष्णु जी, शिवजी को साथ लेकर हिमाचल के घर में जा पहुँचे। भगवान् सदाशिव के उस समय के स्वरूप का वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका सम्पूर्ण शरीर कपूर तथा अथवा कुन्द के पुष्प के समान श्वेत था। वे सिर से पाँव तक वस्त्राभूषणों से अलंकृत थे और माथे पर मौर रक्खे हुए थे। जिस बैल पर वे आरूढ़ थे, उसके सौन्दर्य और श्रृंगार का भी वर्णन नहीं किया जा सकता। जब शिवजी घर के भीतर पहुँचे, तब उनकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:55 AM

ओर से मैंने तथा हिमाचल की ओर से पुरोहित ने मिलकर सम्पूर्ण रीतियाँ सम्पन्न कीं। हिमाचल ने शिवजी का मधुपर्क सहित अर्घ्य प्रदान किया तथा दो वस्त्र भेंट किये, तदुपरान्त मैंने उसी स्थान पर गिरिजा को बुलवाया।''

''हे नारद ! गिरिजा के आ जाने पर पुरोहित ने हवन किया। तदुपरान्त अग्नि को साक्षी करके हिमाचल ने कन्यादान किया। जिस समय शिवजी ने गिरिजा के हाथ को अपने हाथ में पकड़ा, उस समय सब लोग अत्यन्त प्रसन्न हो गये। हिमाचल के कुटुम्बियों ने शिव तथा गिरिजा दोनों के चरणों की पूजा की। दोनों ओर के सेवकों को उस समय इतना पुरस्कार दिया गया कि वे सब तृप्त हो गये। भाँवरें हो जाने के उपरान्त शिव तथा गिरिजा को एक स्वर्ण सिंहासन पर बैठाया गया तथा जो रीतियाँ शेष रह गयी थीं, उन्हें मैंने पुरोहित के साथ सम्पन्न कराया। फिर शिवजी ने मेरी आज्ञानुसार गिरिजा के मस्तक में सिन्दूर लगाया। उस समय मैंने तथा पुरोहित ने भी अपना-अपना पुरस्कार प्राप्त कर दोनों को आशीर्वाद किया। हे पुत्र ! शिव तथा पार्वती के विवाह का वह आनन्द तीनों लोकों में भर गया। फिर स्त्रियाँ शिवजी को अन्त:पुर में ले गयीं। वहाँ जो भी रीतियाँ होने को थीं, उन सबको शिवजी ने प्रसन्नतापूर्वक किया। दूसरे दिन भी हिमाचल ने बारात को ठहराये रखा और इस दिन भी उसने सम्पूर्ण बारात का अत्यन्त स्वागत-सत्कार किया। तीसरे दिन हिमाचल ने अत्यन्त स्नेह में भरकर शिवजी को प्रणाम किया और गिरिजा का हाथ उनके हाथ में देकर, बारात को विदा किया। हिमाचल के नगर से विदा होकर बारात कैलाश पर्वत पर जा पहुँची। वहाँ भी अनेक प्रकार के उत्सव हुए। तदुपरान्त सब देवता शिवजी से विदा लेकर अपने-अपने घर लौटे। मैं तथा विष्णु भी अपने-अपने लोक को लौट गये। शिवजी तथा गिरिजा जी के विवाहोत्सव का वर्णन करते हुए सब लोग अत्यन्त प्रसन्न होते थे।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:55 AM

उन्नीतसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! एक समय संसार की मंगल-कामना करते हुए हम हिमालय के घर पहुँचे थे। उस समय की कथा यह है कि जब हिमाचल ने तुम्हारे दर्शन पाये तो उसने अत्यन्त प्रेम मग्न होकर तुम्हें दंडवत् करते हुए, स्तुति एवं प्रशंसा की। तदुपरान्त उसने गिरिजा को बुलाकर तुम्हारे चरणों में डाल दिया और यह कहा—हे मुनि ! आज आप इस कन्या के गुण-दोषों का वर्णन करने की कृपा करें। यह सुनकर तुमने गिरिजा की हस्तरेखा को देखते हुए हिमालय को बताया—"हे राजन् ! तुम्हारी पुत्री सर्व गुण सम्पन्न हैं। यह शीलवान् बुद्धिमान्, गुणवान्, रूपवान् तथा पति को प्रसन्नता प्रदान करने वाली होगी। यह अपने माता-पिता के सुयश को दुगुना बढ़ायेगी, परन्तु इसका पति योगी, अहंकार-हीन, नग्न-वेषधारी तथा माता-पिता से रहित होगा।"

हे नारद ! तुम्हारी बात सुनकर हिमाचल अत्यन्त चिन्तित हुए, परन्तु गिरिजा को बहुत प्रसन्नता हुई ; क्योंकि वे जानती थीं कि ऐसे लक्षण वाले शिवजी ही हैं। उन्हें यह विश्वास था कि नारद जी का वचन कभी झूठा नहीं होता, इसलिए वे शिवजी को पति रूप में प्राप्त करने की अभिलाषा से और अधिक प्रसन्न हो गयीं, परन्तु उन्होंने प्रसन्नता का कोई लक्षण प्रकट नहीं किया। उस समय हिमाचल ने मुझसे कहा—"हे ऋषिराज ! आपने तो ऐसी बात बतायी, जिसे सुनकर मैं चिन्तित हो उठा हूँ। अब आप कृपा कर यह और बताइये कि मुझे गिरिजा के वर के सम्बन्ध में क्या उपाय करना चाहिए?" यह सुनकर तुमने उत्तर दिया—"हे राजन् ! भाग्य के सम्मुख किसी का वश नहीं चलता, फिर भी हम तुम्हें एक उपाय बतलाते हैं, यदि भाग्य सहायता दे तो वह ठीक बैठेगा। हमने गिरिजा के पति के सम्बन्ध में जो गुण बताये हैं, वे सब शिवजी में भी पाये जाते हैं। भगवान् सदाशिव सबसे श्रेष्ठ तथा सब के स्वामी मैं। आप अपनी कन्या का विवाह उनके साथ करें। मुझे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:55 AM

यह भी निश्चय है कि वे स्वयं भी गिरिजा के अतिरिक्त किसी अन्य स्त्री के साथ अपना विवाह नहीं करेंगे।''

हे नारद ! यह सुनकर हिमाचल ने कहा—''हे मुनिराज ! शिवजी को तो सब लोग त्यागी कहते हैं तथा वे सदैव योग-समाधि में मग्न रहते हैं। इसके अतिरिक्त तीनों लोकों में यह बात भी प्रसिद्ध है कि उन्होंने केवल सती के साथ विवाह करने की प्रतिज्ञा की है। अस्तु, मुझे यह सन्देह होता है कि वे गिरिजा को किस प्रकार स्वीकार कर लेंगे?'' यह सुनकर तुमने उत्तर दिया—''हे हिमाचल ! शिवजी की उन आदिशक्ति सती ने ही गिरिजा बनकर तुम्हारे घर में अवतार लिया है। तुम इस सम्बन्ध में किसी प्रकार सन्देह मत करो।'' यह कहकर तुमने हिमाचल को पूर्व-वृत्तान्त कह सुनाया। तदुपरान्त तुम गिरिजा को श्रेष्ठ वर देकर, वहाँ से लौट आये। हे नारद ! कुछ दिनों बाद जब गिरिजा युवावस्था को प्राप्त हुईं, उस समय मैना ने हिमाचल से इस प्रकार कहा—''हे स्वामी ! अब आपको गिरिजा के विवाह का प्रयत्न करना चाहिए।'' पत्नी की बात सुनकर हिमाचल ने उत्तर दिया—''हे मैना ! सूर्य चाहे पूर्व की अपेक्षा पश्चिम में उदय होने लगे, परन्तु नारद जी के वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकते हैं। अस्तु, तुम सम्पूर्ण सन्देहों को नष्ट कर, शिवजी का ध्यान धरो और गिरिजा से यह कह दो कि वह शिवजी को प्राप्त करने के निमित्त तपस्या करें। तभी हमारा मनोरथ पूर्ण होगा।'' यह सुनकर मैना के हृदय में धैर्य बँधा। तब वह गिरिजा के समीप पहुँचकर, उन्हें गोद में उठाकर रोने लगी। प्रेम की अधिकता के कारण उनके मुख से कोई बात नहीं निकलती थी। उस समय गिरिजा ने अपनी माता के मनोरथ को पहचान कर इस प्रकार कहा—''हे माता ! मैंने आज स्वप्न में यह देखा है कि मुझ से एक मनुष्य इस प्रकार कह रहा है—''हे गिरिजे ! तुम वन में जाकर शिवजी की तपस्या करो, जिससे तुम्हारे माता-पिता तथा तीनों लोकों को आनन्द की प्राप्ति हो। नारद का वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता। तुम जब तक तपस्या नहीं करोगी, तब तक कोई कार्य सिद्ध न होगा।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:55 AM

गिरिजा के स्वप्न को जब मैना तथा हिमाचल ने सुना, वे अत्यन्त प्रसन्न होकर, शुभ समय की प्रतीक्षा में रात-दिन व्यतीत करने लगे।

तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! एक समय शिवजी ने यह इच्छा की कि हम परिश्रम पूर्वक तप करें तथा अपने नाम का स्वयं स्मरण करें। यह विचार कर वे अपने गणों सहित हिमालय पर्वत की ओर चले। जब वे हिमालय पर्वत पर पहुँचे तो उन्होंने डमरू को बजाना आरम्भ कर दिया। उस स्थान पर गंगा जी की धारा बह रही थी और औषधियों का केन्द्र होने के कारण वह जगह 'औषधप्रस्थ' के नाम से प्रसिद्ध थी। वहाँ पक्षी मधुर ध्वनि में चहचहाते थे तथा अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्प खिले हुए थे। उस श्रेष्ठ स्थान को देखकर शिवजी तप करने की इच्छा से वहीं बैठ गये और अपने स्वरूप का ध्यान धरने लगे। उन्होंने कुम्भक, रेचक तथा पूरक—इन तीनों प्रकार के प्राणायाम को करना आरम्भ कर दिया। उनके नन्दी, भृंगी आदि गण भी, शिवजी का ध्यान धरते हुए, उसी स्थान पर बैठ गये।

हे नारद ! जब हिमाचल ने भगवान् सदाशिव के आगमन का समाचार सुना तो बड़ी सज-धज के साथ उनके समीप जा पहुँचे। फिर शिवजी की बहुत प्रकार से स्तुति-प्रशंसा करते हुए बोले—"हे प्रभो ! मेरा धन्य भाग्य है, जो आप यहाँ पधारें हैं। अब आप मुझे कोई आज्ञा दीजिये, जिसका पालन करने मैं कृतार्थ हो जाऊँ।" यह सुनकर शिवजी ने हँसते हुए कहा—"हे पर्वतराज ! हम यहाँ तपस्या करने के हेतु आये हैं और कुछ दिनों तक यहीं निवास करेंगे। हम केवल यही चाहते हैं कि जब तक हम यहाँ रहें, तब तक हमारे समीप कोई न आने पावे।" हिमाचल ने इस आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए कहा—"हे स्वामी ! आप जो चाहते हैं, वही होगा। मेरा यह परम सौभाग्य है कि आपने यहाँ पधारकर मुझे प्रतिष्ठा प्रदान की है। इतना कहकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हिमाचल शिवजी की आज्ञा लेकर अपने घर लौट आये और सब जगह यह राजा की आज्ञा घोषित कर दी कि औषधप्रस्थ पर कोई व्यक्ति न जाने पाये, यदि कोई जायेगा तो वह मृत्यु-दण्ड पायेगा। इस आज्ञा के उपरान्त हिमाचल अपनी पुत्री गिरिजा को साथ लेकर फिर शिवजी की सेवा में पहुँचे और उनकी स्तुति प्रशंसा करने के उपरान्त बोले—"हे प्रभो ! यदि आप आज्ञा दें तो मेरी कन्या गिरिजा अपनी सखियों सहित यहाँ आपकी सेवा करती रहे।"

हे नारद ! हिमाचल की प्रार्थना सुनकर शिवजी ने गिरिजा को सिर से पाँव तक देखने के उपरान्त विचार किया कि श्रेष्ठ कार्यों में स्त्री बाधा स्वरूप आ खड़ी होती है, इसलिए उत्तम कार्य करते समय स्त्री को पास रखने का निषेध किया गया है। कामदेव का उत्तम शस्त्र स्त्री को ही कहा गया है, इसीलिए बुद्धिमानों ने स्त्री को महारोग के समान कहा है। यह विचार कर शिवजी ने हिमाचल से कहा—"हे राजन् ! हम तपस्वियों का स्त्री के साथ रहना शुभ नहीं है। स्त्री तप को भ्रष्ट कर डालती है। अतः हमें गिरिजा का यहाँ रहना स्वीकार नहीं है।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर हिमाचल आश्चर्य चकित रह गया, परन्तु गिरिजा ने शिवजी को सम्बोधित कर कुछ बातें कहीं।

हे नारद ! गिरिजा ने कहा—"हे तपस्वी ! आपका मत यह है कि पुरुष प्रकृति से पृथक् रहता है, परन्तु मैं कहती हूँ कि प्रकृति के बिना पुरुष कभी नहीं ठहर सकता। इस संसार में जो कुछ भी दृष्टिगोचर होता है, वह सब प्रकृति का स्वरूप है। प्रकृति जड़ तथा चैतन्य को अपने वश में रखती है। आपकी समझ में तो पुरुष और प्रकृति अलग-अलग हैं, परन्तु मेरी समझ में पुरुष प्रकृति से मिला हुआ है; क्योंकि कहना, सुनना तथा तपस्या करना आदि सब कार्य माया के रूप हैं। जो पुरुष माया से अलग है, उसे तो तपस्या करते समय किसी के द्वारा विघ्न डाले जाने का भय होना ही नहीं चाहिए।"

गिरिजा के ऐसे वचन सुनकर शिवजी बोले—"हे गिरिजे ! तुम्हारी यह बुद्धि केवल अपने मन से उत्पन्न की हुई है, जिसे केवल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:55 AM

आनुमानिक ही कहा जा सकता है। तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि ब्रह्मा सबसे श्रेष्ठ है। माया कभी स्वाधीन नहीं है, क्योंकि वह जड़ होती है। यदि तुम्हें ऐसा अहंकार है कि माया और ब्रह्म एक दूसरे से अलग नहीं रह सकते तो तुम ब्रह्म को रोक क्यों नहीं लेती हो?'' इतना कहकर शिवजी चुप हो गये। तब हिमाचल शिवजी की स्तुति करने के उपरान्त अपने घर को लौट गये, परन्तु गिरिजा को सखियों सहित वहीं छोड़ गये। इस बार शिवजी ने भी उनसे यह आग्रह नहीं किया कि वे गिरिजा को लौटा ले जाएं। अस्तु, गिरिजा प्रतिदिन अपनी सखियों सहित शिवजी की सेवा करने लगीं। वे वन से अनेक प्रकार के पुष्प आदि तोड़कर लातीं और शिवजी का पूजन किया करती थीं, परन्तु शिवजी का चित्त किसी भी प्रकार चलायमान न हुआ।

हे नारद ! गिरिजा अपने मन में विचार किया करती थीं कि शिवजी मुझे किस समय स्वीकार करेंगे? उधर शिवजी भी अपने मन में यह सोचते थे कि यदि मैं गिरिजा को इसी समय ग्रहण कर लूँगा तो इसे अपने मन में बहुत अहंकार हो जायेगा। इसके अतिरिक्त तीनों लोकों में मेरी निन्दा भी होगी। क्योंकि उस समय लोग यह कहेंगे कि शिवजी ने काम के आवेश में गिरिजा को स्वीकार कर लिया। अस्तु, जब गिरिजा मेरे लिए बहुत तपस्या करेगी, तब मैं इसके मनोरथों को पूर्ण करूँगा। यह निश्चय कर शिवजी ध्यान में मग्न हो गये। उसी समय तारक नामक दैत्य के द्वारा दुःखी होकर सब देवता मेरी शरण में आये। तब मेरे कहने से इन्द्र ने कामदेव को बुलाकर शिवजी को वश में करने के लिए उसे हिमालय पर्वत पर भेजा। इन्द्र की आज्ञा मानकर कामदेव शिवजी के पास गया, परन्तु वहाँ उनकी क्रोधाग्नि में पड़कर भस्म हो गया। उस समय तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। गिरिजा ने वन में जाकर बहुत तपस्या की तब शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें अंगीकार कर लिया।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इकतीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! ब्रह्मा जी के मुख से यह वृत्तान्त सुनकर नारद जी ने संशययुक्त हो, यह प्रार्थना की—"हे पिता ! आप मुझे तारक दैत्य द्वारा देवताओं को दुःख देने, कामदेव के भस्म होने तथा शिवजी द्वारा गिरिजा को पुनः ग्रहण करने का वृत्तान्त विस्तारपूर्वक सुनाने की कृपा करें।" ब्रह्मा जी बोले—'हे पुत्र ! तुम ध्यान देकर इस कथा को सुनो। कश्यप की दिति नामक स्त्री के गर्भ से हिरण्यकशिपु तथा हिरण्याक्ष नामक दो अत्यन्त बलवान् तथा तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुए। उन्होंने अपनी शक्ति द्वारा तीनों लोकों को वश में कर लिया। उनके अत्याचारों के कारण देवताओं को स्वप्न में भी आनन्द नहीं मिलता था। तब विष्णु जी ने अवतार लेकर हिरण्यकशिपु को मारा तथा वाराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष का वध किया। उस समय सब देवता प्रसन्न होकर विष्णु जी की स्तुति करने लगे।

हे नारद ! अपने दोनों पुत्रों की मृत्यु से दिति को बहुत दुःख हुआ। उसने कश्यप के पास जाकर सब समाचार कह सुनाया। तदुपरान्त उसने अपने पति की अत्यन्त सेवा करके, उनसे आनन्द प्रदान करने वाले एक पुत्र की माँग की। दिति की सेवा से प्रसन्न होकर कश्यप ने उससे यह कहा—"हे दिति ! तुम एक सहस्त्र वर्षों तक तपस्या करो। यदि तुम्हारा तप सिद्ध हुआ तो तुम्हें अवश्य ही भाग्यवान् पुत्र की प्राप्ति होगी।" यह सुनकर दिति ने तप करना आरम्भ कर दिया। जब इन्द्र ने दिति को इस प्रकार तप करते देखा तो वे पास जाकर दिति की सेवा करने लगे। दिति ने उसकी सेवा से प्रसन्न होकर पूछा—"हे इन्द्र ! तुम मेरी इतनी सेवा किस इच्छा से कर रहे हो? तुम मुझे अपनी अभिलाषा बताओ तो मैं उसे अवश्य पूर्ण करूँगी।" यह सुनकर इन्द्र ने उत्तर दिया—"हे माता ! हम अपनी सेवा के बदले तुम से यही वर माँगते हैं कि जिस पुत्र के लिए तुम ऐसा कठिन तप कर रही हो, वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:58 AM

जब जन्म ले तो हमारे भाई के समान, हमारा परम हितैषी हो और हम देवताओं का दु:ख दूर किया करे।" यह बात सुनकर दिति ने अत्यन्त दु:खी होकर कहा—"हे इन्द्र ! तुमने छल करके मुझे ठग लिया है, फिर भी मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूँगी।" इतना कहकर दिति पुन: उग्र तप करने लगी।

हे नारद ! एक दिन अचानक ही दिति सोते समय अशुद्ध हो गयी। उस समय इन्द्र छिद्र के मार्ग द्वारा उसके गर्भाशय में प्रवेश कर गये। वहाँ पहुँचकर, उन्होंने दिति के गर्भ में जो बालक था, उसके सात खण्ड कर डाले ; परन्तु इतने पर भी जब वह बालक नहीं मरा और एक के स्थान पर सात रूपों में विभाजित हो गया, तब इन्द्र ने उनमें से प्रत्येक खण्ड के सात-सात टुकड़े और कर दिये। इस प्रकार वे सब उनचास टुकड़े हो गये, परन्तु वे सब टुकड़े मृत्यु को प्राप्त न होकर अलग-अलग बालक के रूप में जीवित बने रहे। यह देखकर इन्द्र दिति के गर्भाशय से बाहर निकल आए। इसी बीच दिति की नींद टूट गयी। तब उन्होंने अत्यन्त चिन्तित होकर इन्द्र से पूछा कि कुछ देर पूर्व मेरे गर्भाशय में किसने प्रवेश किया था? दिति की बात सुनकर इन्द्र ने उन्हें सब सच्चा वृत्तान्त कह सुनाया। उस घटना को सुनकर दिति को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। जब वे उन्चास खण्ड बालक के रूप में प्रकट हुए, तब उनका नाम मरुद्गण अर्थात् वायु रखा गया। वे उनचासों मरुद्गण इन्द्र के भाई होकर, देवपद को प्राप्त हुए।

हे नारद ! मरुद्गणों के जन्म के पश्चात् दिति ने कश्यप जी की फिर बहुत सेवा की और यह कहा कि, "हे प्रभो ! अब आप मुझे एक ऐसा लड़का दीजिये, जिसके शरीर पर किसी भी शस्त्र का प्रभाव न हो सके। यह सुनकर कश्यप ने उत्तर दिया—"हे दिति ! तुम दश सहस्त्र वर्षों तक तपस्या करो, तो तुम्हें निश्चय ही ऐसे पुत्र की प्राप्ति होगी। पति की आज्ञानुसार दिति ने पुन: दश सहस्त्र वर्षों तक कठिन तप किया। जब उसकी तपस्या पूर्ण हुई तो उसके गर्भ से एक बालक ने जन्म लिया। उसका नाम 'वज्रांग' रक्खा गया। वह बालक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:58 AM

महाप्रतापी, तेजस्वी, धीर, वीर तथा बुद्धिमान् था, उसने अपने माता दिति की आज्ञा से इन्द्र को पकड़ लिया। फिर उसे लात-घूसों से अच्छी तरह पीटता और पृथ्वी पर घसीटता हुआ अपनी माता के सामने लाकर खड़ा कर दिया। हार कर इन्द्र ने वज्रांग की अधीनता स्वीकार कर ली।

हे नारद ! जब मैंने इन्द्र की यह दशा देखी, उस समय मैंने तथा कश्यप ने वज्रांग के पास जाकर यह कहा—"हे पुत्र ! तुमने इन्द्र को अपने वश में कर लिया है। अस्तु, अब तुम हमारे ऊपर कृपा करके इसे छोड़ दो। तुम अपने कुल में सूर्य के समान प्रतापी हो। तुम्हारी शक्ति का वर्णन कहाँ तक किया जाए। यह सुनकर वज्रांग ने उत्तर दिया—मैं आप लोगों के कहने से इन्द्र को छोड़ देता हूँ। मुझे इन्द्र लोक प्राप्त करने की कोई इच्छा नहीं है। मैंने तो अपनी माता की आज्ञा मानकर ही इन्द्र को यह दंड दिया है।" इतना कहकर वह मुझसे बोला—"हे पितामह ! आप तीनों लोकों के स्वामी हैं, अतः मैं चाहता हूँ कि आप मुझे तीनों लोकों का सार बता दें।" उसकी बात सुनकर मैंने बहुत देर तक सोच-विचार करने के उपरान्त उसे तपस्या तथा योग का सार बता दिया और वारांगी नामक एक स्त्री उसे देकर बोला—"हे वज्रांग ! यह स्त्री तुम्हारी पत्नी होगी, तुम इसे स्वीकार करो।"

हे नारद ! इतना करके मैं तो अपने लोक को लौट आया, उधर वज्रांग समुद्र में घुसकर तपस्या करने लगा। उसकी स्त्री वारांगी भी समुद्र, के तट पर स्थिर एक पर्वत के समीप बैठकर तपस्या करने लगी। उस समय इन्द्र ने उसकी तपस्या भ्रष्ट करने के लिए अपने अनेक सेवकों को भेजा। उन्होंने अनेक प्रकार के स्वरूप धारण कर वारांगी को डराया परन्तु उस स्त्री के ऊपर किसी का कुछ वश न चला। यह देखकर इन्द्र ने अत्यन्त भयभीत हो, मनुष्य रूप धारण कर उसकी शरण में पहुँचा, परन्तु जैसे ही वारांगी ने उसकी ओर अपनी दृष्टि घुमायी, वैसे ही इन्द्र की सम्पूर्ण माया इस प्रकार लुप्त हो गयी, जिस प्रकार शिवजी के दर्शन प्राप्त करके, सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। तब इन्द्र अपने गणों के साथ उस स्थान से चला गया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! कुछ समय बाद वज्रांग की तपस्या से प्रसन्न होकर मैं उसे वर देने के लिए पहुँचा। उस समय उसने मेरी बहुत प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे पितामह ! आप मुझे अपना सेवक जानकर यह वरदान दीजिये कि मुझ में आसुरी भाव उत्पन्न न हो। मेरा मन धार्मिक कार्यों में सदैव लगा रहे। वज्रांग की विनती सुनकर मैंने उसे इच्छित वरदान दे दिया और अपने लोक को लौट आया। तदुपरान्त वज्रांग भी जल से बाहर निकल कर अपनी स्त्री के पास जा पहुँचा। स्त्री ने उसे देखकर रोते हुए इन्द्र के गणों द्वारा कष्ट देने का सब हाल कह सुनाया, परन्तु वज्रांग ने उसे शान्त करते हुए धर्म का उपदेश किया और यह कहा कि हमें इन्द्र के ऊपर क्रोध करना उचित नहीं है। उस समय तो वारांगी यह सुनकर चुप रह गयी। जब कुछ समय उसे पति की सेवा करते हुए व्यतीत हुए, तब एक दिन उसने वज्रांग से कहा कि हे स्वामी ! इन्द्र हम लोगों का शत्रु है और उसने मुझे बहुत दुःख दिया अस्तु, आप मेरी मनोभिलाषा पूर्ण करने के निमित्त मुझे एक ऐसा पुत्र दीजिये जो इन्द्र से मेरे अपमान का बदला ले सके। इतना कहकर वह अपने पति के चरणों में गिर पड़ी।"

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! अपनी स्त्री के मुख से यह शब्द सुनकर वज्रांग ने अपने मन में दुःखी होकर यह विचार किया कि अब मुझे क्या करना चाहिए? मेरी पत्नी तो देवताओं से शत्रुता करना चाहती है। मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि मुझे क्या करना उचित है और क्या अनुचित है? नियम यह है कि यदि स्त्री का मनोरथ पूर्ण हो जाये तो वह अत्यन्त सुख देने वाली होती है, उसके कारण तीनों लोकों में किसी को अप्रसन्नता नहीं होती। इसके विपरीत जो स्त्री के मनोरथ को पूरा नहीं करता तो वह भी लोक में बहुत दुःख पाता है और अन्त में नरक में गिरता है। इस विचार से वज्रांग बहुत दुःखी होकर तपस्या

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:59 AM

करता रहा। बहुत समय तक वह उसी अवस्था में बैठा रहा। अन्त में, मैं उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वरदान देने के लिए पास पहुँचा। उस समय उसने मेरी बहुत स्तुति करते हुए यह माँग की मेरे एक ऐसा पुत्र उत्पन्न हो, जो परम तेजस्वी, बलवान् तथा अपनी माता को आनन्द देने वाला सिद्ध हो। मैं उसे इच्छित वरदान देकर अपने लोक को लौट आया। तब वज्रांग ने भी अपने घर पहुँचकर वारांगी को वरदान पाने का सब हाल कह सुनाया।''

हे नारद ! कुछ समय बाद वारांगी गर्भवती हुई। उसके गर्भ से जब बालक उत्पन्न हुआ, उस समय संसार में अनेक प्रकार के उपद्रव होने लगे। पृथ्वी पर भूकम्प आने लगे, आकाश से तारे टूट-टूट कर गिरने लगे। इस प्रकार उस दुखदायी बालक ने जन्म लिया। वज्रांग ने नियमानुसार जातकर्म आदि संस्कारों को सम्पन्न किया। उसकी माता को भी अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वह बालक अपने माता-पिता के दुःख को दूर करने के लिए उत्पन्न हुआ था इसलिए उसका नाम 'तारक' रखा गया।

हे नारद ! कुछ समय बाद जब वह बालक बड़ा हुआ तब उसने अपनी माता की आज्ञा से पारिजात पर्वत पर जाकर तीनों लोकों को विजय करने की इच्छा से तप करना आरम्भ कर दिया। वह सौ वर्षों तक पाँव के अगूँठे के बल खड़ा रह कर तपस्या करता रहा। गर्मियों के दिनों में वह अग्नि में तपा तथा अन्य ऋतुओं में वन में बैठा रहा। जाड़े के दिनों में उसने पानी के भीतर खड़े होकर तपस्या की। उसकी इस कठिन तपस्या को देखकर भी जब शिवजी प्रसन्न नहीं हुए, तब उसने आसुरी-यज्ञ करना आरम्भ कर दिया। और उसने अपनी शरीर को काट-काट कर अग्नि में हवन करने का व्रत लिया। जब उसकी इस कठिन तपस्या से तीनों लोक जलने लगे, उस समय सब देवताओं ने मेरे पास आकर अपने दुःख को सुनाते हुए कहा—''हे ब्रह्मन् ! तीनों लोकों में यह कैसी अग्नि फैल रही है। हम सब लोग इसमें पड़कर भस्म हुए जाते हैं। अस्तु, आप हमारी रक्षा करने की कृपा करें।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:59 AM

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुनकर मैंने बहुत विचार किया, परन्तु शिवजी की माया को किसी प्रकार नहीं समझ सका। तब मैं उन सबको अपने साथ लेकर विष्णु जी के पास जा पहुँचा। विष्णु जी भी शिव की माया को नहीं जान सके। तब हम सब लोग शिवजी के पास पहुँचे और स्तुति-प्रणाम करने के उपरान्त उनसे कहने लगे—"हे प्रभो ! हम सब आपकी शरण में आये हैं। आप सबसे श्रेष्ठ तथा सबके स्वामी हैं। अस्तु, आप कृपा करके हमारे दुःख को दूर कीजिये।" हमारी प्रार्थना सुनकर शिवजी ने हँसते हुए कहा—"हे देवताओ ! तारक द्वारा कठिन तपस्या किये जाने के कारण ही सब लोगों की यह दशा हो रही है। वह देवताओं को दुःख देने के लिए उग्र तप कर रहा है, इसीलिए हम उसे वरदान देने में संकोच करते हैं।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर देवताओं ने अत्यन्त अचरज में भरकर कहा—"हे प्रभो ! आप तारक को वरदान अवश्य दे दें क्योंकि उसे वरदान देने पर हम इतनी जल्दी नष्ट नहीं होंगे, जितने इस समय अग्नि के कारण भस्म हुए जाते हैं।" तब शिवजी बोले—"हे देवताओ ! क्या तुम में से कोई भी इतना बलवान् नहीं है जो अपनी माया द्वारा तारक की तपस्या को भ्रष्ट कर दे?" यह सुनकर विष्णु जी ने अहंकार में भरकर उत्तर दिया—"हे प्रभो ! यदि आप मुझे आज्ञा दें तो मैं तारक की तपस्या को भंग कर सकता हूँ।" विष्णु जी की यह बात सुनकर शिवजी ने उन्हें आज्ञा दे दी। तब विष्णु जी मोहिनी रूप धारण करके तारक के पास जा पहुँचे ; परन्तु शिवजी की लीला के कारण वे तारक पर कुछ भी प्रभाव नहीं डाल सके और असफल मनोरथ होकर लौट आये।

इतनी कथा सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शिवजी की माया अत्यन्त बलवान् है। इसके कारण विष्णु जी मोहिनी स्वरूप धारण करके भी शिव भक्त तारक की तपस्या भ्रष्ट करने में असमर्थ रहे। अस्तु, विष्णु जी ने शिवजी के पास जाकर यह प्रार्थना की हे प्रभो ! तारक की तपस्या भंग करने में, मैं असफल रहा हूँ। अस्तु, आप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उसे वरदान दे दीजिये।'' यह सुनकर शिवजी तारक का वरदान देने के लिए उसके पास जा पहुँचे और उसे सुनाते हुए बोले—''हे तारक ! मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। तुम जो चाहो वह वरदान माँग लो।'' यह सुनकर तारक ने अत्यन्त प्रसन्न हो, पहले तो शिवजी को प्रणाम किया और फिर हाथ जोड़कर यह कहा—''हे प्रभो ! मैं आपके अतिरिक्त अन्य किसी के हाथ से न मरूँ और करोड़ों वर्षों तक तीनों लोकों का राज्य करूँ। यह वरदान आाप मुझे दीजिये।'' शिवजी ने तारक की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली, तदुपरान्त वे उसे इच्छित वरदान दे, कैलाश पर्वत पर लौट आये। तारक भी शिवजी से वरदान प्राप्त कर, अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने घर को लौट गया।''

तैंतीसवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! वरदान पाकर तारक ने क्या किया, वह सब वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! वरदान पाकर तारक अपने घर लौट आया और उसने अपनी स्त्री से सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय सब दैत्यों ने एकत्र होकर तारक को अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा अपना स्वामी स्वीकार करते हुए, उसकी बहुत प्रकार से स्तुति-प्रशंसा की। तदुपरान्त तारक ने सब असुरों की एक बड़ी सेना इकट्ठी की। उसमें करोड़ों बलशाली असुर योद्धा थे। उस सेना के दस मुख्य सेनापति थे, जिनके नाम इस प्रकार हैं—कुम्भक, कुञ्ज, महिष, कुंजर, कालनेमि, निमि, कृष्णजठर, प्रजम्बुक, शुंभ तथा कालकेतु। जो दैत्य इस सम्पूर्ण सेना का प्रधान सेनापति था, उसका नाम 'ग्रसन' था। ये सब असुर योद्धा अपने सामने तीनों लोकों को तुच्छ समझते थे। इस सेना को लेकर तारक ने सबसे पहले इन्द्र पर चढ़ाई की, तदुपरान्त देव लोक को चारों ओर से घेर लिया।''

हे नारद ! उस समय देवता तथा दैत्यों में घोर युद्ध होने लगा,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:59 AM

जिसमें अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग हुआ। तारक से इन्द्र ने युद्ध ठाना, निमि से अग्नि आ भिड़े, कालनेमि तथा यमराज आमने-सामने हुए, नमुचि तथा नत्रऋति ने परस्पर युद्ध करते हुए अपनी-अपनी विजय की कामना की, महिषासुर तथा वरुण ने एक दूसरे को मारने के लिए शस्त्र धारण किये। इसी प्रकार सभी दैत्यों और देवता अपनी-अपनी जोड़ी देखकर आपस में युद्ध करने लगे।

हे नारद ! उस समय तारक ने अपना तेज प्रकट करके इन्द्र को परास्त कर दिया, तदुपरान्त वह विष्णु जी के सम्मुख जा पहुँचा। तारक के इस प्रताप को देखकर विष्णु जी ने पहले तो बहुत आश्चर्य किया, फिर शिव जी के वरदान की महिमा समझकर युद्ध-क्षेत्र से अन्तर्धान हो गये। इस प्रकार तारक ने उस युद्ध में विजय पाकर सब देवताओं को बन्दी बना लिया। तदुपरान्त वह उन्हें अपनी राजधानी में ले गया और बन्दीगृह में डालकर अनेक प्रकार की यन्त्रणा देने लगा। जिस स्थान पर महानदी समुद्र में जा मिली है, उसी स्थान पर तारक की राजधानी थी। इस प्रकार वहाँ देवता तथा दैत्य इकट्ठे होकर रहने लगे। तारक ने निर्भय होकर अपने देश को अलग-अलग भागों में बाँट दिया और उनका राज्य असुरों को सौंप दिया, जहाँ वे अपने परिवार तथा मित्रों सहित आनन्द का उपभोग करने लगे। इस प्रकार विष्णु जी के स्थान पर तारक स्वयं ही तीनों लोकों का स्वामी बन बैठा। उसने अग्नि की पद निमि को दी तथा कालनेमि को यमराज के स्थान पर नियुक्त किया। तदुपरान्त उसने नित्रऋति का पद नमुचि को, वरुण का महिषासुर को, पवन का मेध को, कुबेर का कक्ष को, इन्द्र का जृम्भक को, अहिपति का शुम्भ को, ब्रह्मा का कुंभ को तथा मित्र का पद कुञ्जर को दिया। इसी प्रकार उसने सब देवताओं के पद पर दैत्यों को प्रतिष्ठित कर दिया। वे सब असुर संसार के स्वामी बनकर राज्य करने लगे। उनके राज्य में देवताओं के अतिरिक्त अन्य कोई भी प्राणी दुःखी नहीं था। अस्तु, कुछ समय बीतने पर विष्णु जी ने छिपे हुए देवताओं के पास जाकर यह कहा कि हे देवताओ ! शिवजी का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:59 AM

भक्त होने के कारण तारक अत्यन्त बलवान तथा प्रतापी है, इसलिए वह तुमसे कभी परास्त नहीं होगा। मैंने बहुत कुछ विचार करने के उपरान्त यह निश्चय किया है कि तुम सब लोग अपना मनोरथ प्राप्त करने के लिए उसकी सेवा करना आरम्भ कर दो। तुम नट का स्वरूप धारण कर उसके पास जाओ और अपने कौशल द्वारा उसे प्रसन्न करो। जब वह प्रसन्न हो जायेगा, तब तुम्हें अवश्य छोड़ देगा। तदुपरान्त सब देवता नट का रूप धारण कर तारक के पास जा पहुँचे और उससे ऐसी बातें कीं, जिनके कारण वह अत्यन्त प्रसन्न हो गया। तब तारक ने देवताओं से कहा—"हे देवताओ ! तुम जो चाहो, वह मुझ से माँग लो।" यह सुनकर देवताओं ने प्रार्थना की—"हे असुरराज ! यदि आप हम पर प्रसन्न हैं तो देवताओं को अपने बन्दीगृह से मुक्त कर दीजिये" देवताओं की इस प्रार्थना को स्वीकार कर, तारक ने उनके सभी साथियों को बन्दीगृह से मुक्त कर दिया। तब वे भी अपने लोक को चले गये। हे नारद ! तारक के राज्य में देवताओं के अतिरिक्त और कोई दुःखी नहीं था। यह बात मुझे भली-भाँति जान लेनी चाहिए।

चौंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब देवताओं ने राक्षसों द्वारा पीड़ित होकर अनेक प्रकार के दुःख उठाये तो वे परस्पर इस प्रकार कहने लगे कि हम किसके पास जाकर अपना दुःख कहें? सूर्य और चन्द्रमा जो संसार के जीवन दाता हैं, वे स्वयं भी इस समय तारक की सेवा करते रहते हैं। पता नहीं, यह दैत्य हमें कब तक दुःख देता रहेगा? इस समय हमारा कौन सहायक है, जिसके पास जाकर हम अपना दुःख सुनायें? इस प्रकार देवताओं ने दुःख में डूब कर बहुत चिन्ता की। अन्त में, वे सब एकत्र होकर इन्द्र तथा बृहस्पति को साथ लेकर मेरे पास आये और मेरी स्तुति तथा पूजा करने लगे। देवताओं की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

8:59 AM

प्रार्थना सुनकर मैंने उनसे कहा—"हे देवताओ ! मैं तुम लोगों को अत्यन्त दुःखी तथा चिन्तित देख रहा हूँ। इन्द्र के मुख पर भी कोई तेज दिखाई नहीं देता। हे पुत्रो ! तुम मुझे अपने यहाँ आने का सब कारण कह सुनाओ।"

हे नारद ! मेरी बात सुनकर देवताओं की ओर से बृहस्पति ने मुझ से कहा—"हे पिता ! तारक नामक दैत्य ने शिवजी से वरदान प्राप्त कर तीनों लोकों को अपने वश में कर लिया है। उसके भय से सूर्य ने भी अपने तेज को ठंडा कर लिया है तथा चन्द्रमा भी अपनी सम्पूर्ण कलाओं सहित उसकी सेवा में हर समय उपस्थित रहता है। सभी ऋतुएँ उसकी सेवा में बनी रहती हैं और फल-फूलों को उत्पन्न कर, उसे सन्तुष्ट रखती हैं। इन्द्र भी उसकी बहुत प्रकार से सेवा किया करते हैं। इस प्रकार सभी देवता उनके सेवक बने हुए हैं, परन्तु वह किसी के ऊपर कोई कृपा नहीं दिखाता। जिन देव वृक्षों की पत्तियों को देव स्त्रियाँ बहुत समझ-बूझ कर तोड़ती थीं, उन वृक्षों को तारक के साथी जड़ से उखाड़कर फेंक देते हैं। जिस समय वह शयन करता है, उस समय देवताओं की स्त्रियाँ अपने नेत्रों से आँसू बहाती हुई उसकी स्तुति करने को विवश होती हैं। उनके भय से देवता अपने लोक की ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकते। वे स्वयं ही यज्ञ का भाग ले लेते हैं। इन्द्र को भी कोई कुछ नहीं गिनता। जिस प्रकार सन्निपात हो जाने पर कोई औषधि काम नहीं देती, उसी प्रकार भगवान् विष्णु के जिस चक्र पर हमें बड़ा भारी भरोसा था, वह इन दिनों व्यर्थ हो गया है। हे पिता ! आप हमारे दुःख को दूर करने के लिए कोई उपाय करें।"

हे नारद ! देवताओं की प्रार्थना सुनकर मैंने उन्हें उत्तर दिया—"हे देवताओ ! तारक ने शिवजी से ऐसा वरदान प्राप्त किया है कि उसे शिवजी के अतिरिक्त और कोई नहीं मार सकेगा। यदि शिवजी के वीर्य से कोई पुत्र उत्पन्न हो तो वह भी तारक को मारने में समर्थ हो सकता है, क्योंकि पुत्र में पिता का तेज रहता है और उसे पिता का स्वरूप कहा जाता है; परन्तु यह बात बहुत कठिन दिखाई देती है। इस

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

समय शिवजी हिमाचल पर्वत पर तपस्या कर रहे हैं तथा गिरिजा अपनी सखियों सहित उनकी सेवा में सलंग्न हैं। यदि किसी प्रकार वे दोनों परस्पर मिल जाएं तो तुम्हारा कार्य पूर्ण हो सकता है। गिरिजा के बिना और किसी से तुम्हारा कार्य नहीं चलेगा। मैं तुम्हें एक उपाय बताता हूँ तुम उसके अनुसार कार्य करो। वह उपाय यह है कि तुम कामदेव को शिवजी के पास भेजो वह शिवजी के मन में गिरिजा के प्रति स्नेह उत्पन्न करे। बस, इतना होते ही सब कार्य स्वतः सिद्ध हो जायेंगे।''

हे नारद ! मेरी बात सुनकर सब देवता बहुत स्तुति करते हुए अपने घर को चले गये। तदुपरान्त इन्द्र ने कामदेव को अपने समीप बुलाया और उससे यह कहा—''हे कामदेव ! तुम देवताओं के हितैषी तथा उनका सब कार्य सिद्ध करने वाले हो। अस्तु, ब्रह्मा जी ने जो उपाय बताया है, उसके अनुसार कार्य सिद्ध करने के हेतु शीघ्र तैयार हो जाओ। हे मित्र ! वीरों की परीक्षा युद्ध के समय ली जाती है, उदार लोगों को समय के अनुसार पहचाना जाता है, इसी प्रकार विपत्ति पड़ने पर मित्र तथा स्त्री की परीक्षा का अवसर होता है। अस्तु, इस अवसर पर मैं तुम्हारी मित्रता की परीक्षा लेना चाहता हूँ। इस कार्य में केवल मेरा ही स्वार्थ नहीं है, अपितु अन्य सब लोगों का भी हित है।''

हे नारद ! इन्द्र की बात सुनकर कामदेव ने उत्तर दिया—''हे देवराज ! मैं आपकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करने को तैयार हूँ। यदि कोई व्यक्ति आपका पद प्राप्त करने के लिए तपस्या कर रहा हो तो मैं उसके तप को इसी समय भ्रष्ट कर सकता हूँ। देवता, दैत्य, ऋषि आदि सभी लोग मेरे वश में रहते हैं। मनुष्य तो सेवकों की भाँति मेरी पूजा किया करते हैं। अस्तु, आप अपने हृदय में अब किसी प्रकार की चिन्ता न करें।'' कामदेव की इन बातों को सुनकर इन्द्र ने अत्यन्त प्रसन्न हो, उसे अपने पास बैठाते हुए कहा—''हे मन्मथ ! मैं जिस कार्य के लिए तुमसे कहने जा रहा था, उसे तुम स्वयं ही बता रहे हो यह अत्यन्त शुभ है। अब सुनो, तारक दैत्य ने शिवजी की तपस्या करके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

उनसे अमोघ वरदान प्राप्त किया है। उसने धर्म-कर्म को नष्ट करके, उस वरदान के बल पर देवताओं के सम्पूर्ण सुखों को छीन लिया है और उनके पद पर अपने साथी दैत्यों को प्रतिष्ठित कर दिया है। उसके ऊपर देवताओं के सभी अस्त्र-शस्त्र निष्फल हो गये हैं, इस कारण सभी देवता अत्यन्त चिन्तित एवं दुःखी हैं। ब्रह्मा जी ने इस कष्ट से मुक्ति प्राप्त करने का यह उपाय बतलाया है कि शिवजी के वीर्य द्वारा किसी पुत्र की उत्पत्ति हो तो वह तारकासुर का वध करने में समर्थ हो सकेगा। शिवजी स्वयं अपने भक्त तारक को अपने हाथ से नहीं मारेंगे। अब कहना यह है कि गिरिजा अपनी सखियों सहित उनकी सेवा में संलग्न हैं। तुम अपनी माया द्वारा शिवजी को मोहित करके उनका संयोग गिरिजा के साथ करा दो। ऐसा करने से शिवजी के द्वारा पुत्र उत्पन्न होना सम्भव हो जायेगा।''

पैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इन्द्र की बात को कामदेव ने स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त वह शिवजी पर विजय प्राप्त करने के हेतु, इन्द्र से विदा लेकर अपनी पत्नी के साथ चल दिया। जिस समय वह चला, उस समय अनेक प्रकार के अपशकुन होने लगे। होनी के वशीभूत होकर उसने उन अपशुकनों पर कोई विचार नहीं किया। उसने वसंत आदि अपनी सम्पूर्ण सेना को एकत्र किया और अत्यन्त अहंकार में भरकर शिवजी पर विजय प्राप्त करने के लिए हिमाचल पर्वत की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में वह इस बात पर निरन्तर विचार करता चला जा रहा था कि मैं शिवजी के ऊपर किस प्रकार विजय पाऊँगा। अस्तु, जब वह शिवजी के समीप पहुँचा, उस समय उसने अपनी माया द्वारा सब ओर वसंत ऋतु को फैला दिया। वसंत ऋतु के फैलते ही उस स्थान पर चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिल गये तथा लताओं ने प्रकट होकर वृक्षों से आलिंगन करना आरम्भ कर दिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

अनेक प्रकार के पक्षी मीठे स्वरों में चहचहाने लगे। जिन लोगों को अपने ज्ञान का बड़ा अभिमान था, वे भी कामदेव की माया में पड़े बिना न रहे। सब का तप और संयम नष्ट हो गया। चराचर जगत् में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं बचा, जिसे कामदेव के बाणों ने घायल न किया हो। यद्यपि यह अवस्था एक मुहूर्त भर ही रही, परन्तु इसी बीच सब लोगों का विवेक नष्ट हो गया। सम्पूर्ण संसार तो कामदेव के वशीभूत हुआ, परन्तु शिवजी और उनके गणों पर कामदेव का कोई प्रभाव न पड़ा। जिस समय कामदेव शिवजी के पास पहुँचा, उस समय उसका सम्पूर्ण बल नष्ट हो गया। कामदेव की शक्ति क्षीण होते ही संसार के सभी प्राणी उसी प्रकार पूर्व स्थिति में आ गये, जिस प्रकार कि नशा उतर जाने पर मनुष्य होश में आ जाता है।'' हे नारद ! उस समय कामदेव अपने मन में इस प्रकार विचार करने लगा—''मुझ से यह बड़ा अपराध हुआ जो मैं अपने अहंकार में भरकर शिवजी का चित डिगाने के लिए यहाँ चला आया। अब शिवजी के क्रोध से मेरी मृत्यु अवश्य ही होगी। यह विचार कर कामदेव कुछ समय तक तो चिन्ता में पड़ा रहा, अन्त में उसने निश्चय किया कि पर उपकार के लिए यदि मुझे प्राण भी त्याग देने पड़ें तो वह शुभ ही है। साथ ही यदि मेरी मृत्यु शिवजी के द्वारा हुई तो मैं भी शिवगणों में गिना जाऊँगा। अस्तु, मुझे मृत्यु का भय त्याग कर देवताओं का कार्य सिद्ध करना चाहिए।'' यह निश्चय कर कामदेव ने पुनः अपनी शक्ति को प्रदर्शित किया और सम्पूर्ण संसार को पहले के ही समान फिर अपने वश में कर लिया। शिवजी ने यह दशा देखकर अपने मन को दृढ़ता पूर्वक वश में कर लिया और हठ योग साध कर बैठ गये। यह देखकर कामदेव अपने धनुष पर बाण चढ़ा शिवजी की बाँयी ओर जा खड़ा हुआ। उस समय तपो भूमि में शिवजी के अतिरिक्त ऐसा और कोई नहीं था, जिसे उसने मोहित न कर लिया हो। वह छिपकर समय की प्रतक्षा करने लगा। अस्तु, जिस समय शिवजी अपना ध्यान छोड़कर आसन पर बैठे और गिरिजा पूजन की सामग्री लेकर उनके पास आयीं, उसी समय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

कामदेव ने उचित अवसर जानकर, अपने बाण को कानों तक खींचकर शिवजी के हृदय पर छोड़ दिया। उसके लगते ही शिवजी के मन में प्रीति का अंकुर उत्पन्न हो गया। उस समय शिवजी भी कामदेव के वशीभूत हो, मुस्कराते हुए, गिरिजा के सुन्दर अंगों की प्रशंसा करने लगे और यह इच्छा प्रकट करने लगे कि गिरिजा का हाथ पकड़कर अपने पास खींच लिया जाए। उस समय गिरिजा नारी-सुलभ लज्जा के कारण संकुचित हो, कुछ पीछे की ओर हट गयीं।

हे नारद ! यह दशा देखकर शिवजी ने अपने मन में विचार किया कि यह क्या कारण है जो हम इस स्त्री के द्वारा छले गये हैं? ऐसा कौन सा प्रतापी है, जिसने हमें ऐसा आचरण करने के लिए विवश कर दिया? यह विचार कर ज्यों ही उन्होंने चारों ओर दृष्टि घुमायी, त्यों ही उन्हें अपने बाँयी ओर एक वृक्ष की आड़ में छिपा हुआ कामदेव दिखाई दे गया। उस समय शिवजी के भयानक रूप को देखकर तीनों लोक काँपने लगे और यह प्रतीत होने लगा मानो अब प्रलय होने ही वाली है। अस्तु, शिवजी ने कामदेव पर क्रोधित हो, जैसे ही अपने तीसरे नेत्र को खोला, वैसे ही कामदेव जलकर भस्म हो गया। उस समय तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। सभी देवता अत्यन्त भयभीत, परम दुःखी तथा दीन हो गये और व्यक्तियों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।"

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! यह चरित्र सुनकर मुझे अत्यन्त आश्चर्य होता है। शिवजी परब्रह्म, निष्पाप, माया-रहित, योगी, तीनों लोकों के स्वामी तथा देवताओं के पूज्य हैं, उनका नाम कामजित् तथा मृत्युजित् प्रसिद्ध है, उनकी कृपा प्राप्त करके उनके भक्त कामदेव को अपने वश में किये रहते हैं। ऐसे भगवान् सदाशिव को कामदेव ने अपना लक्ष्य क्यों बनाया और सुगमतापूर्वक उनके ऊपर विजय कैसे प्राप्त कर ली?" यह सुनकर ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—"हे नारद ! मैं तुम्हें यह वृत्तान्त सुना चुका हूँ कि पहले मैंने सन्ध्या नामक एक कन्या को उत्पन्न किया था,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

तदुपरान्त मैंने मन्मथ अर्थात् कामदेव को जन्म दिया। फिर मैंने कामदेव को यह वरदान भी दिया कि तुम तीनों लोकों के स्वामी बनकर सब लोगों को अपने वश में रखोगे। यहाँ तक कि मैं, विष्णु तथा शिव भी तुम्हारे वशीभूत हो जायेंगे। मुझसे यह वरदान पाकर उसने सर्व प्रथम मेरे ही ऊपर अपना बाण छोड़ा और मुझसे कुकर्म करना चाहा। तब मैंने उसे यह शाप दिया कि तुम शिवजी के तीसरे नेत्र की ज्वाला में पड़कर भस्म हो जाओगे। इसी शाप के कारण कामदेव ने पहले तो शिवजी को अपने वश में कर लिया, तदुपरान्त वह शिवजी के तीसरे नेत्र की ज्वाला में पड़कर भस्म हो गया। जिस समय शिवजी ने कामदेव को भस्म कर दिया, उस समय कुछ लोगों को दुःख हुआ और कुछ लोग सुखी हुए। गिरिजा को भी अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उस समय उनके शरीर से बहुत पसीना छूटा और वे अपने सौंदर्य का अहंकार त्याग कर मूर्च्छित हो गयीं। उनका कमल के समान मुख प्रभात कालीन चन्द्रमा के समान तेजहीन हो गया। जब सखियों ने उनकी इस अवस्था को देखा, तो वे गिरिजा का हाथ पकड़कर उनका उपचार करने लगीं। तदुपरान्त चैतन्यता प्राप्त होने पर, गिरिजा अत्यन्त लज्जित हो, अपने घर लौट आयीं।

हे नारद ! इस घटना के उपरान्त शिवजी भी हिमाचल पर्वत को छोड़कर अपने कैलाश पर्वत पर चले गये। शिवजी के चले जाने पर गिरिजा की यह दशा हुई कि वे हर समय शिवजी के चरित्रों का ध्यान करती हुईं, उन्हीं के स्मरण में संलग्न हो गयीं। कामदेव की स्त्री रति ने जब अपने पति की मृत्यु को देखा, तो वह बहुत प्रकार से विलाप कर उठी। वह अपने पति के चरित्रों का वर्णन करती हुई 'हाय-हाय' शब्द का उच्चारण करती थी और अपने शरीर की सुधि-बुधि को भुला बैठी थी। जब उसे कुछ चैतन्यता प्राप्त हुई, तब वह अपने पति के शव को सम्बोधित करती हुई इस प्रकार कहने लगी—"हे स्वामी ! मैंने आपको पहले भी बहुत समझाया था कि शिवजी के साथ वैर करना उचित नहीं है, परन्तु आपने दूसरों के वश में पड़ कर मेरी बात पर कोई

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

ध्यान नहीं दिया। हे नाथ ! आपने मुझसे कुछ भी नहीं कहा और मुझे त्याग कर अकेले ही शिवपुरी को चले गये। अब मैं अनाथ बनकर रह रही हूँ। आपने जैसा किया, उसका फल अच्छी तरह पा लिया। यह नियम है कि संसार में कोई किसी को दुःख देकर, स्वयं सुखी नहीं रहा है। उसे कहीं भी आनन्द नहीं मिलता है। हे पति ! आप तो शिवगणों में सम्मिलित हो गये, परन्तु अब मेरा कोई नहीं रहा।'' इस प्रकार की बातें कहते हुए रति ने बहुत विलाप किया।

छत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! मैं, विष्णु तथा अन्य सभी देवता रति को साथ लेकर शिवजी की शरण में गये और उन्हें प्रणाम करके इस प्रकार स्तुति करने लगे—''हे प्रभो ! हम सब लोग शोक रूपी समुद्र में डूब रहे हैं, अतः आप हमारा उद्धार करने की कृपा करें।'' हमारी प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने प्रकट होकर दर्शन दिया। उस समय वे परमहंसों के समान स्वरूप धारण किये हुए थे। उनके उस सुन्दर रूप को देखकर हम सबको अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तब मैंने अलग-अलग खड़े होकर शिवजी की प्रार्थना की। शिवजी ने प्रसन्न होकर हम सबको सम्बोधित करते हुए कहा—''हे देवताओ ! तुम सबने जो हमारी स्तुति की है, उससे हम अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। जो मनुष्य इस स्तुति को पढ़ेगा, उस पर हम सदैव कृपा किया करेंगे। अब तुम जो चाहो, वह हमसे माँग लो।'' शिवजी के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर हमने उनसे कहा—''हे प्रभो ! आप हमारे मन की इच्छा को भली-भाँति जानते हैं, हम स्वयं आपसे क्या कहें?''

हे नारद ! यह सुनकर शिवजी ने हँसते हुए कहा—''हे देवताओ ! हमने ब्रह्मा के शाप को सत्य करने के लिए ही कामदेव को भस्म किया है। अब हम तुम्हें यह वरदान देते हैं कि आज से कामदेव शरीर रहित होकर 'अतनु' के नाम से संसार में प्रसिद्ध होगा और उसकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:00 AM

उत्पत्ति मन के द्वारा हुआ करेगी। उचित समय आने पर हम रति को उसका स्वरूप भी दिखा देंगे। तब वह हमारे पास इसी कैलाश पर्वत पर निवास किया करेगा। जब द्वापर युग में विष्णु का अवतार कृष्ण के रूप में होगा, तब कामदेव कृष्ण के पुत्र के रूप में जन्म लेगा। उस समय वह रति को पुनः प्राप्त कर लेगा। अब रति को उचित है कि वह उस समय के आने तक इन्द्र के यहाँ जाकर रहे और अपने मन में किसी प्रकार का दुःख न माने। वह बिना कोई परिश्रम किये अपने पति को पुनः प्राप्त कर लेगी। जब रुक्मिणी के गर्भ से पुत्र के रूप में कामदेव की उत्पत्ति होगी, उस समय इन्द्र उसे उठा ले जायेंगे और समुद्र में डाल देंगे। वहाँ समुद्र में एक मछली उसे निगल जाएगी। पर हमारे प्रताप से उसकी मृत्यु नहीं होगी। उस मछली को एक केवट अपने जाल में फँसा लेगा और उसे 'शंबर' नामक एक असुर को भेंट कर देगा। जिस समय मछली का पेट फाड़ा जायेगा, उस समय कामदेव जिसका नाम उस समय 'प्रद्युम्न' प्रसिद्ध होगा, प्रकट होकर रति के पास गुप्त रूप से रहेगा। तदुपरान्त वह बालक उस असुर को मारकर यहाँ चला आयेगा।'' इतना कहकर शिवजी सबके देखते-देखते अन्तर्धान हो गये। फिर देवताओं ने भी रति को इन्द्र के साथ कर दिया और अपने-अपने स्थान को चले गये। हे नारद ! कामदेव का चरित्र तुम से कहा, अब तुम गिरिजा का वृत्तान्त सुनो।''

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जिस समय गिरिजा ने कामदेव को जलते हुए देखा, उस समय वे भयभीत हो वहाँ से भागकर अपने घर जा पहुँचीं। इस दशा को देखकर माता-पिता शीघ्र ही गिरिजा के समीप जा पहुँचे। उस समय हिमाचल के सम्पूर्ण नगर में भी खलबली मच गयी। जब गिरिजा को कुछ चैतन्यता प्राप्त हुई, तब उनकी माता ने इस प्रकार पूछा—''हे पुत्री ! तुझे इस प्रकार किसने भयभीत किया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:01 AM

है, जो तू लम्बी-लम्बी श्वासें ले रही है?'' तब गिरिजा ने जो कुछ दृश्य देखा था वह सब विस्तारपूर्वक कह सुनाया। उसे सुनकर माता-पिता ने गिरिजा को बहुत सान्त्वना दी।

हे नारद ! कुछ समय बाद तुम गिरिजा के समीप पहुँचे। तब गिरिजा ने अत्यन्त लज्जित होकर तुमसे यह कहा कि आप मुझे ऐसा उपाय बतावें जिससे मुझे शिवजी की प्राप्ति हो। यह सुनकर तुमने उत्तर दिया—''हे गिरिजे ! शिवजी केवल तपस्या के वशीभूत रहते हैं। यदि तुम उन्हें अपने पति रूप में प्राप्त करना चाहती हो, तो वन में जाकर कठिन तपस्या करो। शिवजी तपस्या के वशीभूत होकर सब लोकों का पालन करते हैं और उसी के बल पर सबका संहार भी करते हैं। तपस्या के बल पर ही शेषनाग पृथ्वी को अपने मस्तक पर धारण किये हुए हैं और तपस्या के द्वारा ही देवता सम्पूर्ण वस्तुओं को प्राप्त करते हैं।'' यह सुनकर गिरिजा ने उत्तर दिया—''हे मुनिराज ! आपका कथन सत्य है, परन्तु गुरु के बिना किसी को सच्चे ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती, आप मुझे अपनी शिष्या बनाकर, तपस्या की विधि बताइये। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिवजी गुरु के बिना शक्ति-हीन हो जाते हैं, आप मेरे गुरु बनना स्वीकार करें।''

हे नारद ! यह सुनकर तुमने शिवजी का ध्यान किया और गिरिजा को अपनी शिष्या बनाकर, पंचाक्षर मंत्र का उपदेश दिया। तदुपरान्त तुम वहाँ से लौटकर मेरे पास आये और गिरिजा तुम्हारे उपदेश को पाकर, अपने मन में तपस्या करने की दृढ़ इच्छा को ले, सखियों सहित अपने पिता हिमाचल के समीप जा पहुँचीं। उस समय सखियों ने पर्वतराज हिमाचल को सम्बोधित करते हुए यह कहा—''हे राजन् ! गिरिजा अपने मन की अभिलाषा को कहते हुए लजाती हैं। अस्तु, उनकी ओर से हम आप से यह प्रार्थना करती हैं कि आप गिरिजा को तपस्या करने के निमित्त वन में जाने की आज्ञा दें, जिससे वे शिवजी को प्राप्त करने के लिए तप करें।'' सखियों की यह बात सुनकर हिमाचल अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने इस प्रार्थना को स्वीकार करते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुए गिरिजा को तपस्या के निमित्त वन में जाने की आज्ञा दे दी। तदुपरान्त गिरिजा अपनी सखियों को साथ लेकर अपनी माता के पास पहुँचीं और उनसे भी यही प्रार्थना की। मैना ने जब इस समाचार को सुना तो उन्हें अत्यन्त चिन्ता हुई। उन्होंने अत्यन्त उदास होकर गिरिजा से यह कहा—"हे पुत्री ! तुम घर में ही रहकर तपस्या करो। माता-पिता के घर को किसी तीर्थ अथवा देवालय से कम नहीं समझना चाहिए। तुम्हें इस प्रकार कष्ट सहन करना उचित नहीं है, तुम यही तपस्या करो।"

हे नारद ! मैना की बात सुनकर गिरिजा ने उत्तर दिया—"हे माता ! शिवजी केवल तपस्या के ही वश में हैं। अस्तु, बिना तपस्या किये कोई फल प्राप्त नहीं हो सकता। संसार में जिसने जो वस्तु पायी है, वह सब तपस्या का ही फल है। तपस्या करने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है। अस्तु, तुम मुझे तपस्या करने से मत रोको।" यह सुनकर मैना बोली—"हे पुत्री ! मेरे सौ पुत्र हैं, परन्तु तुम उनमें मुझे सबसे अधिक प्रिय हो। मैं चाहती तो यह हूँ कि तुम मेरी आँखों से दूर मत जाओ और यहीं रहो। तुम जो चाहोगी, मैं वही करूँगी, जो माँगोगी वही दूँगी।" गिरिजा ने कहा—"हे माता ! जब तक मैं तपस्या नहीं करूँगी, तब तक शिवजी मेरे साथ विवाह नहीं करेंगे और तपस्या केवल वन में हो सकती है, क्योंकि घर अहंकार, मूर्खता, दुःख एवं चिन्ता को प्रदान करने वाला होता है। यदि घर में बैठकर तपस्या हो सकती हो तो मुनि तथा राजा लोग वन में कभी न जाते।" यह सुनकर मैना ने फिर चिन्तित होते हुए कहा—"हे गिरिजा ! वन में सिंह, हाथी आदि अनेक हिंसक जीव घूमते रहते हैं। तुमने उन्हें कभी देखा भी नहीं है, फिर भला तुम उनके बीच किस प्रकार रह सकोगी?" गिरिजा ने उत्तर दिया—"हे माता ! बिना कष्ट उठाये संसार में किसी वस्तु अथवा मनोरथ की प्राप्ति नहीं होती। मेरा यह निश्चित मत है कि शिवजी अपने भक्त की, घर तथा बाहर सब जगह रक्षा करते हैं।" गिरिजा के मुख से इन शब्दों को सुनकर मैना ने उसका मन शिवजी की ओर से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:01 AM

हटाने के लिए यह बात कही—"हे गिरिजा ! शिवजी भाँग, धतूरा, विष आदि मादक वस्तुओं का सेवन करते हैं। वे नग्न शरीर, अशुभ वेषधारी तथा दरिद्री हैं। भला, यह तो बताओ कि उनकी भक्ति करने से तुम्हें क्या प्राप्त हो सकेगा?"

हे नारद ! माता की यह बात सुनकर गिरिजा ने उत्तर दिया—"हे माता ! ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता तथा समस्त ऋषि-मुनि शिवजी की सेवा करते हैं। वे आदिपुरुष तथा सबके स्वामी हैं। मेरे हृदय में भी अब उन्हीं का निवास हो गया है। वे तीनों गुणों से रहित होते हुए भी अनेक प्रकार के चरित्र करते हैं। अस्तु, तुम्हें उनकी निन्दा करनी उचित नहीं है। अब तुम मुझे आज्ञा दो जिससे मैं वन में जाकर तपस्या करूँ।" गिरिजा के इस प्रकार के निश्चय को देखकर जब मैना ने यह जान लिया कि गिरिजा के हृदय में सचमुच ही शिवजी की भक्ति दृढ़ हो गयी है, तो उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न हो इस प्रकार कहा—"हे पुत्री ! मैंने तुम्हारे निश्चय को देखने के लिए ही जानबूझकर ऐसी बातें कही थीं। सच पूछा जाए तो भगवान् शिव सबका मनोरथ पूरा करते हैं। अब तुम प्रसन्नतापूर्वक वन में जाओ और शिवजी की आराधना करो।" इस प्रकार माता-पिता की आज्ञा पाकर गिरिजा भगवान् सदाशिव की स्तुति करती हुईं, तपस्या करने के हेतु वन के लिये चल दीं। जिस समय मैना ने उन्हें जाते हुए देखा तो वे मातृ-प्रेम के कारण मूर्च्छित हो, पृथ्वी पर गिर पड़ीं। यह देखकर सब कुटुम्बियों तथा नगरवासियों ने गिरिजा को पुनः वन में जाने से रोकना चाहा तथा वन के कष्टों का वर्णन करते हुए सलाह दी कि वे घर में ही रहकर तपस्या करें। उन्होंने सब लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा—"हे प्रियजनो ! आप लोग किसी प्रकार की चिन्ता न करें, मैं शीघ्र ही शिवजी का वरदान प्राप्त कर लौट आऊँगी। मुझे वन में जाना ही शुभ है, क्योंकि यहाँ रहकर तपस्या नहीं की जा सकती।"

हे नारद ! इस प्रकार मीठे शब्दों में सब को समझाने-बुझाने के उपरान्त गिरिजा ने ब्राह्मणों को प्रणाम किया तथा अपने लौटने के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समय तक के लिए उन्हें कालक्षेप करने के निमित्त बहुत कुछ दान देकर प्रसन्न किया। उन्होंने भिखारियों को भी सब वस्तुएँ प्रदान कीं, क्योंकि भिखारियों को भिक्षा देने से शिवजी अधिक प्रसन्न होते हैं। गिरिजा ने श्रेष्ठ मुहूर्त में वन के लिए प्रस्थान किया। उस समय सब लोग उन्हें आशीर्वाद देने लगे। देवताओं ने भी जय-जयकार करते हुए उनके ऊपर फूलों की वर्षा की तथा दुन्दुभी बजायी। जिस समय गिरिजा चलीं, उस समय उनके बायें अंग फड़कने लगे तथा शुभ-शकुन होने लगे, जिनसे यह प्रतीत होता था कि उन्हें शिवजी अवश्य प्राप्त होंगे। यद्यपि गिरिजा के वन जाने के कारण नगर-निवासी अत्यन्त चिन्तित थे, किन्तु अशुभ समझकर किसी ने भी अपने नेत्रों से आँसू नहीं बहाये। हिमाचल के नगर का सम्पूर्ण वैभव मानो लोप-सा हो गया और ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो यह नगर कालरात्रि के समान भयानक हो। नगर निवासी भी साक्षात् यमराज जैसे दिखाई देने लगे। वे आपस में ही एक-दूसरे को देखकर भयभीत हो जाते थे। नगर के सभी घर श्मशान के समान प्रतीत होने लगे और मित्र यमदूत के समान दिखाई पड़ने लगा। नदी और नालों में पानी नहीं रहा। सब प्राणियों का तेज नष्ट हो गया। सब लोग गिरिजा के वियोग दुःख से दुःखी होकर उनकी बाल-लीलाओं का स्मरण कर अपना समय ज्यों-त्यों कर काटने लगे।

हे नारद ! तुम इस बात को भली-भाँति जान लो कि शक्ति के बिना संसार में कोई आनन्द नहीं है। शक्ति के प्रकट होने पर ही संसार में आनन्द प्रकट होते हैं। वे शक्ति ही अपने चरित्रों द्वारा सब लोगों के दुःखों को दूर किया करती हैं। जिस प्रकार जीव के बिना इन्द्रियाँ चन्द्रमा के बिना रात्रि और जल के बिना मछली प्रसन्न नहीं रहती, उसी प्रकार गिरिजा के बिना हिमाचल का नगर भी सूना हो गया। यह दशा देखकर वेदज्ञ मुनि हिमाचल के नगर में पहुँचे। उन्हें देखकर सब लोगों ने उनकी बहुत प्रकार से सेवा की। मुनि ने उन्हें सम्बोधित करते हु[ए] पूछा—"हे हिमाचल ! तुम किस शोक में व्याकुल हो?" मुनि व

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:01 AM

बात सुनकर हिमाचल पहले तो दुःख की अधिकता के कारण कुछ नहीं बता सके, तदुपरान्त धैर्य धरकर बोले—"हे प्रभो ! मेरी पुत्री शिवजी को प्राप्त करने के निमित्त वन में तपस्या करने के लिए गयी है। मैं उसी के वियोग दुःख से दुःखी हूँ।" मैना ने भी यह कहा—"हे मुनिराज ! मेरी पुत्री को कभी उष्ण वायु भी नहीं लगी थी, परन्तु अब वह वन में जाकर न जाने कैसे-कैसे दुःख उठा रही होगी? जब वह यहाँ घर में सोती थी उस समय उसकी सखियाँ स्तुति किया करती थीं, परन्तु अब मुझे यह सन्देह हो रहा है कि कहीं वन में उसे कोई सिंह आदि न खा ले। मेरा जीवन तो उसके जाते ही कठिन हो गया है।" हे नारद ! हिमाचल तथा मैना के मुख से यह शब्द सुनकर मुनि ने भगवान् सदाशिव की माया को बारम्बार धन्यवाद देते हुए कहा—"हे भगवान् सदाशिव ! आपकी माया का पार कोई नहीं पा सकता। आप जब जो चाहते हैं, वही कर दिखाते हैं।" मन-ही-मन इतना कहकर वे हिमाचल तथा मैना को सम्बोधित करते हुए बोले—"हे पर्वतराज ! तुम अपने मन में कुछ चिन्ता मत करो। तुम्हारी पुत्री आदिशक्ति है। तुम उसकी महिमा को नहीं जानते हो, इसीलिए इतने दुःखी हो रहे हो। वह अपनी तपस्या के द्वारा तुम सबको आनन्द प्रदान करेगी। उसके कारण संसार में तुम्हारा भी बहुत यश फैलेगा। अस्तु, तुम्हें उचित है कि तुम उसके लिए कोई चिन्ता मत करो और अपने हृदय में शिवजी का ध्यान धरते रहो।" इतना कहकर मुनि ने मन ही मन गिरिजा को प्रणाम किया, तदुपरान्त वे हिमाचल से विदा लेकर चल दिये। उनके वचन सुनकर हिमाचल मैना तथा सब नगर-निवासी भी अत्यन्त प्रसन्न हुए। सभी ने चिन्ता करना त्याग दिया और मन-ही-मन शिवजी का ध्यान धरने लगे।"

अड़तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब हिमाचल और मैना का दुःख दूर हो गया, तब उन्होंने शिवजी के चरणों में अपना ध्यान लगा दिया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:01 AM

उधर गिरिजा ने भी वन में पहुँचकर अपना स्वरूप ऋषि-मुनियों के समान बनाया तथा शिवजी के अतिरिक्त और सबों का ध्यान भुला दिया। तदुपरान्त वे तपस्या करने के निमित्त 'श्रृंगतीर्थ' को गयीं, जो उसी समय से 'गौरीशिखिर' के नाम से संसार में प्रसिद्ध है। उन्होंने चौंसठ वर्षों तक सिर नीचा किये हुए, एक ही आसन पर बैठे, तपस्या की। वे ग्रीष्मकाल में अग्नि में तपतीं, वर्षाकाल में खुले मैदान में रहतीं और शीतकाल में जल के भीतर बैठकर कठिन तपस्या करतीं। जब इस प्रकार के उग्र तप द्वारा भी उन्हें फल की प्राप्ति नहीं हुई तो उन्होंने एक सहस्त्र वर्षों तक केवल वृक्षों की जड़ तथा पत्ते खाकर और कठिन तपस्या की। तदुपरान्त एक वर्ष तक केवल हरी घास और साग आदि खाये। फिर कुछ समय तक केवल वायु पीकर ही तप करती रहीं।

हे नारद ! ऐसा उग्र-तप करने पर भी जब उनका मनोरथ पूरा न हुआ, तब वे हिमाचल पर्वत पर लौट आयीं। वहाँ उन्होंने तीन करोड़ पार्थिव अर्थात् शिवलिंग बनाकर, उनका पूजन किया। उन्होंने अनेक प्रकार के पुष्प गिन-गिन कर उन शिव-मूर्तियों पर चढ़ाये तथा दिन-रात शिवजी के पूजन, ध्यान तथा स्मरण के अतिरिक्त अन्य किसी बात से अपना सम्बन्ध नहीं रक्खा। वे शिवजी के प्रेम में ऐसी मग्न हुईं कि उन्होंने प्राणायाम करके अपने को अपने में ही लीन कर दिया और ब्रह्म रूप में स्थित हो गयीं। उनके इस तपस्या काल में अनेक प्रकार के संकट भी सामने आये। कई बार उन्हें भूत-प्रेत की सेना ने चारों ओर से घेर लिया। कई बार सिंह, हाथी, भैंसा, बैल तथा चमगादड़ आदि का स्वरूप धारण करके भूतों ने उन्हें डराया। जो भूत-प्रेत गिरिजा को डराने के लिए आते थे, उनका स्वरूप ऐसा भयानक था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनमें से अनेक के केवल एक ही आँख थी। कोई अन्धा था, तो किसी के सहस्त्रों नेत्र थे। कोई नाचता था तो कोई दौड़ता था। कोई मार-मार शब्द का उच्चारण करता और कोई गिरिजा को मारने की चेष्टा करता था। कोई मैना का स्वरूप धारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:01 AM

कर के यह कहता कि "हे गिरिजे ! तुम्हारे पिता ने तुम्हारे वियोग में खाना-पीना छोड़ दिया है, अब वे मृत्यु को प्राप्त होने ही वाले हैं। अस्तु, तुम घर चल कर, उनकी रक्षा करो। इस प्रकार भूत-प्रेतों ने गिरिजा का तप भंग करने के लिए अनेक छल किये, परन्तु गिरिजा का ध्यान पल भर को भी विचलित न हुआ। वे दुगुने उत्साह से शिवजी के चरणों में अपना मन लगाये रहीं। तब गिरिजा के तेज़ से भयभीत होकर बहुत-से भूत-भाग गये। जो बचे, उनमें से कोई भस्म हो गया, तो कोई किसी नदी में डूब कर मर गया। इस प्रकार गिरिजा के ध्यान को भंग करने में वे सब के सब असमर्थ रहे।"

हे नारद ! जिस स्थान पर गिरिजा तपस्या कर रही थीं, वह स्थान कैलाश पर्वत के समान ही सुन्दर हो गया। वहाँ के निवासियों को ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ कि वे संसार की माया को भुलाकर ब्रह्मज्ञानी हो गये। उस स्थान पर सिंह, गायों के साथ खेला करते थे, बिल्ली चूहों से प्यार करती थीं। यदि किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट होता था, तो दूसरे प्राणी उसके दुःख दूर करने की स्वयं चेष्टा करने लगता था। उस स्थान पर पारस्परिक वैर-विरोध का कहीं नाम ही न रहा। वहाँ के तालाब, नदी और नाले जल से परिपूर्ण हो बहते रहते थे। सब वृक्षों में अनेक प्रकार के फल-फूल दिखाई पड़ते थे। इस प्रकार वहाँ किसी वस्तु की कोई कमी नहीं रही। गिरिजा की तपस्या तीनों लोकों में ऐसी प्रसिद्ध हुई कि उसे देखने के लिए मैं, विष्णु तथा इन्द्र आदि उस स्थान पर पहुँचे। हम लोगों ने उन्हें इस प्रकार देखा मानो वे स्वयं सिद्धि रूपा हों। हम सबने उन्हें प्रणाम करते हुए स्तुति की। उस समय इन्द्र ने सब देवताओं को सम्बोधित करते हुए यह कहा—"गिरिजा का तप सर्वश्रेष्ठ है। तीनों लोकों में किसी भी प्राणी ने ऐसी कठिन तपस्या नहीं की। गिरिजा को तथा गिरिजा के माता-पिता को सहस्त्रों धन्यवाद हैं।"

हे नारद ! इस प्रकार गिरिजा की स्तुति-प्रशंसा करने के उपरान्त हम सब लोग कैलाश पर्वत पर शिवजी के समीप पहुँचे। वह कैलाश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पर्वत इतना सुन्दर है कि वहाँ छहों ऋतुएँ हर समय वर्तमान रहती हैं। वहाँ कलकल-निनादिनी गंगा जी की धारा अत्यन्त प्रसन्नता प्रदान करती है। वहाँ किसी को भी, किसी प्रकार का दुःख नहीं है। सब ओर ऋषि-मुनि लोग बैठे हुए भगवान् सदाशिव का ध्यान धरते रहते हैं। कहीं पर सिद्धजन तपस्या करते हैं और कहीं किन्नर गीत गाते हैं। कैलाश के उस आनन्द को देखते हुए जब हम लोग शिवजी के समीप पहुँचे तो उन्होंने हमें योगस्थित शरीर धारण किये अपना दर्शन दिया। शिवजी के उस स्वरूप को देख हमें ऐसी प्रसन्नता हुई कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके ललाट पर चन्द्रमा विराजमान था तथा जटाओं से गंगा जी बह रही थीं। वे अपने मस्तक पर त्रिपुण्ड लगाये हुए थे तथा कानों में सर्पों के कुण्डल पहने थे। शिवजी के उस परम सुन्दर स्वरूप को देखकर हम सब लोगों ने पहले तो उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया, तदुपरान्त बहुत प्रकार से स्तुति एवं प्रशंसा की।''

उन्तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! देवताओं ने भगवान् सदाशिव की प्रार्थना करते हुए कहा—''हे प्रभो ! आपके महान् तेज तथा महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। आपने कृपा करके शबरी को मुक्त किया तथा सुमना को भी परम पद दिया है। आपकी सेवा करके अनेक पापी आपके लोक को प्राप्त हुए हैं। आप परब्रह्म, परमेश्वर तथा सबके स्वामी हैं। उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय यह तीनों कार्य आपके वश में रहते हैं। आप ही हम सबके रक्षक हैं। जड़ तथा चेतन की बातों को आप भली-भाँति जानते हैं। संसार में ऐसा कोई पदार्थ नहीं है, जो आपसे भिन्न हो। यह सम्पूर्ण संसार एक वृक्ष के समान है, उस वृक्ष का एक अंकुर, दो फल, तीन मूल तथा चार रस हैं। आप स्वयं ही आकाश तथा स्वयं ही पृथ्वी रूप हैं। निकट तथा दूरी सब मे आप वर्तमान हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

हे प्रभो ! माया के वशीभूत रहने के कारण साधारण लोग आपको नहीं जान पाते, परन्तु जो लोग आपके भक्त हैं, वे सम्पूर्ण संसार को शिवमय ही देखते हैं। आपका स्वरूप निर्गुण है, परन्तु भक्तों पर कृपा करके आप सगुण भी बन जाते हैं। बहुत-से लोग आपकी चरण रूपी नौका का सहारा लेकर संसार-सागर से पार उतर गये हैं। आपकी भक्ति के बिना आवागमन से छुटकारा नहीं मिलता। आपके भक्त आवागमन से सहज ही छूट जाते हैं और वे सदैव निर्भय होकर आपके चरणों की सेवा द्वारा परम पद को प्राप्त कर लेते हैं। हे स्वामी ! आप उत्पत्ति के समय ब्रह्म, पालन के समय विष्णु तथा प्रलय के समय हर का स्वरूप धारण कर लेते हैं। वेद, कर्म, जप, तप, योग तथा ध्यान आदि द्वारा आप प्राप्त होते हैं। यदि आप सगुण रूप धारण नहीं करते तो हम लोगों को सहज ही मोक्षपद किस प्रकार प्राप्त होता? आपके नाम तथा गुण अनन्त हैं और उनका वर्णन करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। हम में आप के समान बुद्धि कहाँ से आयी? आपकी महिमा अपार है। हे नाथ ! आप हमारे कार्यों को पूर्ण करें। आप देवताओं के स्वामी, सम्पूर्ण सृष्टि के इन्द्र, शुभ मार्ग पर स्थित करने वाले, सम्पूर्ण सृष्टि के कारण रूप, अविनाशी, अनादि तथा अप्रेमय हैं। आपका शरीर विद्या तथा बुद्धि से परिपूर्ण है।

हे प्रभो ! आपका पवित्र स्वरूप भक्तों के हृदय में वास करता है, इसीलिए वे कुसंगति तथा काम-क्रोध आदि को त्याग कर आपकी सेवा में संलग्न रहते हैं। आप पूर्ण ब्रह्म, आनन्द के निधान, दुःख-नाशक अत्यन्त कृपालु हैं। आप इच्छा रहित, अद्वितीय, निरीह तथा परब्रह्म हैं। आपने ही सबसे पहले शरीर धारण किया है। आपके अवतार हमारे मनोरथों को पूर्ण करने के लिए ही होते हैं। आपके उन अवतारों की महिमा अपार तथा अप्रेमय है। हम लोगों का मन आपकी महिमा को कहाँ तक जान सकता है? जो लोग मन लगाकर आपके गुणों को सुनते हैं और उनका ध्यान धरते हैं, उन्हीं पर आप अपनी कृपा दिखाते हैं। बहुत-से लोग तो धर्म मार्ग को भी त्याग कर केवल आपसे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

ही स्नेह रखते हैं और अपनी भक्ति पर दृढ़ रहने के कारण आप को प्राप्त कर लेते हैं। वे केवल आपका गुण-गान करते हैं तथा किसी संसारी वस्तु से अपना कोई प्रयोजन नहीं रखते। आपको भी अपने भक्त अत्यन्त प्रिय हैं। आप उन्हीं के सामने प्रकट होते हैं तथा उनकी प्रत्येक अभिलाषा को पूर्ण करते हैं।'' इस प्रकार स्तुति करके मैं, विष्णु तथा अन्य सब देवता चुप रह गये।

हे नारद ! उस समय शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर हम लोगों से इस प्रकार कहा—''हे देवताओ ! तुम सब लोग यहाँ किस लिए आये हो? हमें ऐसा प्रतीत होता है कि तुम बहुत चिन्तित हो। अस्तु, जो भी बात हो, उसे हमारे सम्मुख निःसंकोच प्रकट करो।'' यह सुनकर मैंने तथा विष्णु जी ने प्रार्थना करते हुए उनसे यह कहा—''हे प्रभो ! हम लोगों के धन्य भाग्य हैं, जो आपने हम पर कृपा दृष्टि की। संसार में वे ही लोग पूर्णात्मा हैं, जिनके ऊपर आप अनुग्रह करते हैं। हे स्वामी ! आपकी महिमा महान् है। आप प्रत्येक प्राणी के शरीर में निवास करते हैं। आपकी कलाएँ असंख्य हैं तथा आप अपने भक्तों को दुःखी देखकर, उन्हें अत्यन्त आनन्द प्रदान करते हैं।'' इतना कहकर मैं तथा विष्णु जी चुप हो गये।

चालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! हमारी इस प्रकार स्तुति एवं प्रार्थना को सुनकर शिवजी बोले—''हे ब्रह्मा तथा हे विष्णु ! तुम सब देवताओं को साथ लेकर जिस कार्य के लिए आये हो, वह हमसे स्पष्ट कहो। हम तुम्हारे मनोरथ को अवश्य पूरा करेंगे।'' यह सुनकर मैंने तथा विष्णु जी ने फिर इस प्रकार कहा—''हे प्रभो ! आप सम्पूर्ण देवताओं के स्वामी हैं। आप सबके मन की बात जानते हैं और अपने स्थान पर बैठे हुए तीनों लोकों की घटनाओं को देखते रहते हैं। अस्तु, आप इस प्रकार अनजान बनकर हमसे क्यों पूछ रहे हैं? फिर भी जब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपकी आज्ञा है तो हम यह प्रार्थना करते हैं कि नारद जी से उपदेश ग्रहण कर गिरिजा अत्यन्त कठिन तपस्या कर रही हैं। उन जैसा कठोर तप आज तक किसी ने नहीं किया। अब आपको उचित है कि आप उनके पास जाकर इच्छित वरदान दें। हम सब लोगों की यह प्रबल इच्छा है कि हम गिरिजा के साथ आपके विवाह का आनन्द लाभ करें और आपकी बारात में बाराती बनकर सम्मिलित हों।''

हे नारद ! हम लोगों की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी हँसकर बोले—''हे देवताओ ! विवाह करके सांसारिक जाल में फँसना मूर्खों का काम है। यद्यपि वेद ने इस सम्बन्ध में बहुत-सी बातें कहीं हैं, परन्तु उनमें सबसे मुख्य बात ध्यान में रखने योग्य यह है कि स्त्री की संगति के समान बुरा कर्म और कोई नहीं है। परन्तु, हम तुम्हारा कहना भी नहीं टाल सकते, क्योंकि यदि हम अपने भक्तों की बात न मानें तो वेद और धर्मशास्त्र की प्रतिष्ठा कम होगी। अस्तु, चाहे हमें बहुत दुःख ही क्यों न उठाने पड़ें, फिर भी हम गिरिजा की तपस्या के वशीभूत होकर तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार किये लेते हैं। तुम यह तो जानते ही होगे कि जब राजा कामरूप ने इच्छा की, तब हमने दैत्य को मारकर उसे आनन्द प्रदान किया था। इसी प्रकार गौतम के दुःख को भी दूर किया था। जब हलाहल विष के कारण सब देवता भस्म हुए जा रहे थे उस समय हमने कृपा करके उस विष को भी पी लिया था। विष्णु जी के रामचन्द्र अवतार के समय हमने हनुमान का अवतार लेकर अनेक दुःख उठाये थे। इसी प्रकार जब-जब हमारे भक्तों पर कोई कष्ट पड़ा है। तब-तब हमने स्वयं दुख उठाकर उन्हें आनन्द प्रदान किया है, जिस प्रकार हमने ग्रहिपति नामक अवतार लेकर विश्वामित्र मुनि के दुःख को दूर किया, उसी प्रकार अब तुम्हारे लिए भी हम गिरिजा के साथ विवाह कर लेंगे, क्योंकि हमने भक्तों की प्रार्थना को कभी अस्वीकार नहीं किया है। अब तुम सब लोग निश्चिंत होकर अपने-अपने लोक को जाओ।''

हे नारद ! हम सबको विदा करने के उपरान्त शिवजी ने सप्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

ऋषियों को अपने पास बुलाया। तब उन्होंने शिवजी के समीप पहुँचकर दंडवत्-प्रणाम एवं स्तुति करते हुए हाथ जोड़कर कहा— "हे प्रभो ! आपने हमें किस लिए बुलाया है? अब आप हमें क्या आज्ञा देते हैं, वह बताइए। हम उसका पालन करेंगे?" यह सुनकर शिवजी उनसे बोले—"हे ऋषियो ! गिरिजा हमें प्राप्त करने के लिए बहुत कठिन तपस्या कर रही है। अस्तु, तुम उसके प्रेम की परीक्षा लेने के लिए उसके पास जाओ और उसे छलने का प्रयत्न करो।" शिवजी की यह आज्ञा पाकर सप्त ऋषि गिरिजा के समीप जा पहुँचे और यह देखा कि वे साक्षात् तपस्या का रूप बनी बैठी हैं। उस समय ऋषियों ने अपनी चतुराई का प्रदर्शन करते हुए उनसे यह कहा—हे गिरिजे ! तुम ऐसा तप क्यों कर रही हो और किस कार्य के लिए ऐसी कठिन साधना में संलग्न हो? तुम हमसे सब हाल सत्य-सत्य कहो।" ऋषियों की बात सुनकर पार्वती ने उत्तर दिया—"हे ऋषियो ! मुझे अपना मनोरथ कहने में लज्जा का अनुभव होता है, क्योंकि आप उसे सुनकर अवश्य ही हँसेंगे, फिर भी मैं आपको बताती हूँ कि देवता तथा मुनियों के वचन को सत्य मानकर शिवजी के साथ विवाह करने की इच्छा से यह तपस्या कर रही हूँ।"

हे नारद ! गिरिजा की बात सुनकर मुनियों ने हँसते हुए इस प्रकार कहा—"हे गिरिजे ! तुम नारद की बातों पर विश्वास कर बैठीं, इससे बढ़कर मूर्खता और क्या होगी? तुम्हें यह पता नहीं है कि नारद की बातों से अनेक नगर तथा गाँव उजड़ चुके हैं। इस सम्बन्ध में हम एक इतिहास सुनाते हैं। ब्रह्मा जी के पुत्र दक्ष प्रजापति ने दस सहस्त्र पुत्रों को उत्पन्न किया था। वे सब बड़े गुणवान्, रूपवान्, बलवान् तथा बुद्धिमान् थे। दक्ष ने उन्हें सृष्टि उत्पन्न करने की आज्ञा दी, परन्तु उसी समय नारद ने उनके पास पहुँचकर ऐसा उपदेश दिया कि वे संसार त्यागकर वन में चले गये ; फिर कभी लौटकर नहीं आये। इसके उपरान्त दक्ष नें फिर उतने ही पुत्र उत्पन्न किये, परन्तु वे भी नारद के उपदेश से उसी स्थान पर जा पहुंचे, जहाँ पहले उनके भाई गये थे। यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

गति देखकर दक्ष ने नारद को यह शाप दिया कि तुम एक मुहूर्त से अधिक किसी स्थान पर नहीं ठहर सकोगे। इसके अतिरिक्त नारद ने राजा चित्रकेतु के घर को भी नष्ट कर दिया और उन्होंने हिरण्यकशिपु का भी सर्वस्व नष्ट कर दिया है। हम नारद को बहुत अच्छी तरह जानते हैं, क्योंकि बहुत दिनों तक हम उनके साथ रहे हैं। इसलिए हम यह कहते हैं कि तुम नारद के भुलावे में आकर बहुत बड़ी भूल कर रही हो।'

"हे गिरजे ! इसके अतिरिक्त जिन शिवजी को प्राप्त करने के लिए तुम यह घोर तपस्या कर रही हो, उनके सम्बन्ध में भी हम तुम्हें यह बता देना चाहते हैं कि वे निर्गुण, अशुभ, निर्लज्ज तथा बुरा वेष धारण करने वाले हैं। न तो उनके कुल परिवार का कोई पता है और न उनके पास सेवक आदि ही हैं। तुम्हें उस ठग नारद ने मोहित करके तुम्हारी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया है। भला, ऐसा पति पाकर तुम्हें कौन सा सुख मिल सकेगा? तुम इस बात पर भली-भाँति विचार करो तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि हमारा कथन सत्य है अथवा नहीं। शिव ने पहले दक्ष की पुत्री के साथ भी विवाह किया था, परन्तु जब वे उसका निर्वाह नहीं कर सके, तो उसे मिथ्या दोष लगाकर त्याग दिया। तब से वे अपने-आप में ध्यान लगाकर निश्चिंत बैठे रहते हैं। भला, जो आदमी एकान्त में ही रहना पसन्द करता है उसके साथ किसी स्त्री का निर्वाह किस प्रकार हो सकता है? हमारा तो यह कहना है कि अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। तुम अपना हठ छोड़कर घर चली जाओ। यदि तुम अपने लिए श्रेष्ठ वर को ही चाहती हो तो हम तुम्हें यह भी बताये देते हैं कि विष्णु से अधिक श्रेष्ठ और कोई नहीं है। वे सब देवताओं के स्वामी हैं और तुम्हारे वर बनने के सर्वथा योग्य हैं।"

हे नारद ! सप्तऋषियों की बात सुनकर पार्वती ने उन्हें उत्तर देते हुए कहा—"हे ऋषियो ! आपका कहना सत्य हो सकता है, परन्तु मेरे हठ में किसी प्रकार की कमी नहीं आयेगी। मैं तो उसी राग में गाती रहूँगी, जिसे अब तक गाती आयी हूँ। मेरा शरीर पहाड़ से उत्पन्न हुआ है,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

अतः उसमें पहाड़ की जड़ता प्रत्यक्ष देखने में आती है। मैं नारद जी को अपना गुरु स्वीकार कर चुकी हूँ, अतः उनकी बात को किसी प्रकार नहीं टालूँगी ; क्योंकि जो लोग गुरु के वचन को मिथ्या समझते हैं, वे कल्प भर भटकते रहने पर भी कभी ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाते। मैं आपकी इस बात को मान लेती हूँ कि विष्णु में सब गुण भरे हुए हैं तथा शिवजी अवगुणों की खान हैं, परन्तु आपको यह भी अवश्य बता देना चाहती हूँ कि शिवजी निर्गुण हैं और उन्होंने अपने भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त ही शरीर धारण किया है। वे अपनी शक्ति और ऐश्वर्य का विज्ञापन नहीं करना चाहते। इसलिए वे परमहंस गति में रहकर, अवधूतों के समान दिखाई देते हैं। वस्त्र और आभूषणों को पहनना तो साधारण मनुष्यों का काम है। शिवजी तीनों गुणों से रहित तथा सब के स्वामी हैं। अस्तु, वे इन वस्तुओं को स्वीकार नहीं करते। मैंने अपने गुरु की कृपा से शिवजी को भली-भाँति पहचान लिया है और इसीलिए मैं यह निश्चय पूर्वक कहती हूँ कि या तो मैं शिवजी के साथ विवाह करूँगी, अन्यथा जन्म भर कुंवारी रहूँगी। अस्तु, आप मुझे इस प्रकार का उपदेश देने की कृपा न करें।''

हे नारद ! इतना कहकर गिरिजा ने सप्तऋषियों को प्रणाम किया, तदुपरान्त वे पहले की ही भाँति शिवजी के ध्यान में मग्न हो गयीं। गिरिजा के उस दृढ़ निश्चय को देखकर सप्तर्षि जय-जयकार करने लगे तथा आशीर्वाद देते हुए बोले—''हे गिरिजे ! तुम परम धन्य हो। तुम्हें शिवजी अवश्य प्राप्त होंगे।'' इतना कहकर वे गिरिजा को प्रणाम करने के उपरान्त शिवजी के पास चले गये। कैलाश पर्वत पर पहुँचकर उन्होंने शिवजी से कहा—''हे प्रभो ! हमने गिरिजा की बहुत प्रकार से परीक्षा ली तथा अपने वाक्जाल द्वारा छलने का भी बहुत प्रयत्न किया; परन्तु न तो वे हमारे धोखे में आयीं और न उन्होंने आपके चरणों से अपने ध्यान को ही हटाया। अस्तु, आपको उचित है कि आप उन्हें वहाँ जाकर वरदान दें।'' इतना कहकर सप्तर्षि अपने स्थान को चले गये।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इकतालीसवाँ अध्याय

इतना सुनकर नारद ने ब्रह्मा जी से पूछा—"हे पिता ! जब सप्तर्षि विदा होकर अपने घर चले गये, तब उस समय शिवजी ने क्या किया, यह सब वृत्तान्त आप मुझे बताइए?" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी ने सप्तर्षियों के चले जाने के पश्चात् ब्राह्मण का रूप धारण किया तथा ब्रह्मचारियों के समान दंड लेकर मस्तक में त्रिपुण्ड लगाया, गले और हाथ में रुद्राक्ष की माला पहनी। फिर ऐसा स्वरूप धारण कर के वहाँ पहुँचे, जहाँ पार्वती तप करती थीं। पार्वती ने उन्हें प्रणाम किया तथा कुशल के पश्चात् पूछा कि तुम कौन हो और कहाँ से आये हो?" यह सुनकर ब्राह्मण रूपी शिवजी ने ठंडी साँस लेकर कहा—" हम ब्रह्मचारियों का व्रत धारण किये सृष्टि की भलाई के लिए इधर-उधर घूमते हैं। तुमने हमको धर्मनिष्ठ जानकर हमारा जो आदर और सत्कार किया इससे हमको बड़ी प्रसन्नता हुई है। अब हम तुमसे पूछते हैं कि हे देवी ! तुम कौन हो और किस उद्देश्य से आयी हो?" श्री पार्वती जी ने यह सुन, कुछ सोचकर अपनी एक सखी से संकेत किया। उसने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त जिस प्रकार नारद जी ने आकर भविष्यवाणी की थी कि पार्वती का विवाह शिव से होगा, कह सुनाया। उसे सुनकर ब्राह्मण ने पश्चात्ताप करके कहा—"हे पार्वती ! तुम हमसे यह हँसी क्यों करती हो, तुम स्वयं हमको उत्तर क्यों नहीं देतीं?" पार्वती बोली—"हे ब्राह्मन् मेरी सखी ने आपसे जो कुछ कहा है, वह सब सत्य है। मैं यह चाहती हूँ कि मेरा विवाह शिव के साथ हो।" यह सुनकर ब्राह्मण वेषधारी शिवजी ने शब्द जाल फैलाते हुए कहा—"हे गिरिजे ! तुम जो चाहो सो करो, हमको उससे क्या मतलब ; परन्तु तुमने मेरा आदर और सत्कार किया है, इसलिए मुझ से बिना कहे नहीं रहा जाता। इसके अतिरिक्त जान-बूझकर किसी बात को छिपाना भी बहुत बड़ा पाप है। हे पार्वती ! तुम हिमाचल की पुत्री होकर इतनी मूर्ख क्यों हो गयी हो जो अपने ऐसे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:02 AM

कोमल शरीर को तपस्या द्वारा भस्म कर रही हो? तुम इस प्रकार अपनी सुन्दरता को क्यों नष्ट करना चाहती हो? यह भाग्य की बात है कि तुम विष्णु एवं ब्रह्म को छोड़कर शिव के लिए तप करती हो। क्या तुम्हारे लिए शिव के समान अशुभ तथा अनुचित पति चाहिए? उनकी चाल-ढाल तो संसार से अलग है। देखो, विष्णु आदि सर्वगुण सम्पन्न, कुलवान् तथा प्रतिष्ठित हैं, परन्तु शिव में इनमें से कोई बात नहीं। वे माता-पिता से हीन हैं तथा सर्प एवं भस्म शरीर से लपेटे रहते हैं। वे बैल पर सवार होकर नाना प्रकार के विष एवं भंग का सेवन करते हैं। वे सिंगी तथा डमरू हाथ में लिये हुए भूत-प्रेतों के साथ लीला करते हैं तथा वन में अकेले उदास बैठे रहते हैं। उन्होंने कामदेव को, जो स्त्रियों को प्रिय है, जला दिया है। नारद ने भी तुमको उनके अवगुण न बताकर इस प्रकार छला है। फिर नारद का तो यह स्वभाव है कि वह सम्पूर्ण सृष्टि में इसी प्रकार के उत्पात करते फिरते हैं। उन्होंने दक्ष प्रजापति के सब लड़के नष्ट कर डाले तथा हिरण्यकशिपु के लड़के के साथ कितना छल किया। वे प्रकट में साधु बनकर सब को छला करते हैं। तुम उन सब बातों को भुलाकर, समझ से काम लो तथा अपना काम करो। अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। तुम स्वर्ण जड़ित अँगूठी छोड़कर कांच को क्यों ग्रहण करती हो? गंगाजल छोड़कर कुएँ के जल की क्यों इच्छा करती हो?''

इतना कहकर शिवजी ने पार्वती के स्वरूप की प्रशंसा करते हुए कहा—''हे पार्वती ! देखो, तुम्हारे इस सुन्दर मुख-कमल पर असंख्य चन्द्रमाओं की कान्ति विद्यमान है। तुम्हारा मुखचन्द्र सुन्दरता की खान के समान सुन्दर है। तुम इस प्रकार अपने सुन्दर शरीर को व्यर्थ ही क्यों नष्ट करती हो? तुम्हारे विवाह के लिए केवल विष्णु ही हैं। तुम उन्हीं से विवाह करो। हम तुमसे कहते हैं कि यह बात उचित नहीं है। तुम सम्भल जाओ।'' इस प्रकार ब्राह्मण रूपधारी शिवजी छल की बातें कहकर खेद सहित तथा रूखे हो, अलग बैठ गये। पार्वती ने शिवजी की निन्दा सुन, मन में कुपित हो बार-बार खेद किया। कुछ समय के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

पश्चात् पार्वती मन-ही-मन बोलीं मैंने इस व्यक्ति को ब्राह्मण जानकर धोखा खाया। यदि मैं पहले से इस ब्राह्मण को दुष्ट तथा शिवजी की इतनी निन्दा करने वाला जानती तो चुप रहती। इसने वेद के विरुद्ध शिवजी की इतनी निन्दा की है कि यदि अब मैं इसको उत्तर नहीं देती हूँ तो शिव की निन्दा सुनने का पाप मुझे लगेगा।'' यह विचार कर पार्वती ने कहा—''हे ब्राह्मण ! तू हमको धोखा क्यों देता है? तूने तो वेद के विरुद्ध शिवजी की अत्यन्त निन्दा की है। तुझको ब्राह्मण होने के नाते प्राण दंड नहीं दिया जा सकता। अब मैं वेद, पुराण तथा स्मृति के वचनों के अनुकूल शिवजी का वर्णन करती हूँ। तू अब तक शिवजी के गुणों को नहीं जान पाया है, इसीलिए तेरा वचन वेद के विरुद्ध है। यदि तू शिव को जानता तो वेद के विरुद्ध कभी ऐसे वचन न कहता। शिव की समस्त अशुभ सामग्री शुभ ही है। कोई भी देवता उनसे श्रेष्ठ नहीं है। वे सब विद्याओं के ज्ञाता, पूर्णब्रह्म, अलख, जगदीश हैं। उन्होंने ही ब्रह्म को अपने श्वास-मार्ग से वेद दिये। वही शिव सबका आदि, मध्य एवं अन्त हैं। उनका तेज एवं प्रताप आज तक कोई नहीं जान पाया। वे अपने भक्तों को तीनों लोक प्रदान करते हैं। उनकी सेवा द्वारा ही मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हैं। शिवजी की निन्दा करने से मनुष्य बहुत दुःख प्राप्त करता है। जो दुष्ट एवं अनाचारी ब्राह्मण शिव के विरुद्ध हैं, वे करोड़ों जन्म तक दरिद्र रहा करते हैं। हे ब्राह्मन् ! तूने शिव की निन्दा करके अपने लिए नरक का मार्ग खोला है। तेरा आदर करने से मुझे कोई फल प्राप्त नहीं हुआ, वरन् मेरे समस्त पुण्य नष्ट हो गये। अब तू शीघ्र अपने घर चला जा; क्योंकि मेरा मन शिवजी में लग रहा है।''

ब्राह्मण यह सुनकर हँसा तथा मन में पार्वती की प्रशंसा करना चाहा कि और कुछ कहें, परन्तु पार्वती ने ब्राह्मण की इच्छा समझ, अपनी एक सहेली से कहा—''अब इस स्थान को छोड़कर कहीं और चलो, क्योंकि यहाँ रहने से बड़ा दुःख होता है। इस ब्राह्मण ने शिव की निन्दा करके हमको दुःख पहुँचाया है। शिव की निन्दा करने वाले को आँख

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

से न देखना ही उचित है। इसकी व्यर्थ की बातें सुनने से महापाप होगा। जो शिव-निन्दा की आँखों से देख ले, उसको तुरन्त स्नान कर डालना चाहिए और यदि वश चले तो उसकी जिह्वा को काट डाले नहीं तो अपने दोनों कान बन्द कर वहाँ से उठ जाना चाहिए। वेद भी यही कहते हैं। अस्तु, अब तुम देरी न करो। उठो, किसी और वन में चलकर रहेंगे। अन्यत्र जाकर तप करूँगी। यदि मेरा निश्चय दृढ़ है तो शिवजी मुझ से अवश्य प्रसन्न होंगे। किसी के धोखा देने से क्या होता है? शिव तो केवल प्रेम से ही प्रसन्न होते हैं। मैंने गुरु से सुना है कि तप करने में इसी प्रकार के विघ्न सामने आते हैं। उनसे धोखा खाकर जो तप से विमुख हो जाते हैं, वे मूर्ख हैं और तप का फल प्राप्त नहीं कर पाते। जो दृढ़तापूर्वक धोखे से बचे रहकर तप में संलग्न रहते हैं, वे ही सिद्धि प्राप्त करते हैं। शिवजी अपने भक्तों का पालन करने वाले हैं। पहले तो वे अपने भक्तों की परीक्षा लेते हैं, फिर प्रसन्न हो जाते हैं।'' यह कह कर पार्वती अपनी सखियों के साथ वहाँ से चली गयीं।

बयालीसवाँ अध्याय

इतना कहकर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शिवजी इस प्रकार पार्वती का हठ तथा प्रेम देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उन्होंने अपना यथार्थ मुख्य स्वरूप जैसा कि नारद जी ने उमा से कहा था, धारण कर लिया। मस्तक पर जटा, गंगा की धारा तथा चन्द्रमा विराजमान, ललाट पर त्रिपुण्ड लगाये हुए, कानों में कुण्डल पहने, गोल-गोल सुडौल कपोल, तीन नेत्र, नाक तथा ओष्ठ परम सुन्दर, हाथ-पाँव की उँगलियाँ लाल-लाल, इसी प्रकार प्रत्येक अंग-प्रत्यंग अत्यन्त सुन्दर एवं सुभग था। जिस रूप का पार्वती ध्यान कर रही थीं, शिवजी ने उसी प्रकार का रूप धारण कर, उनको दर्शन दिये और कहा कि ''हे पार्वती ! तुमने हमारी इतनी आराधना तथा तपस्या की है, जितनी आज तक किसी ने नहीं की। तुमको ग्रहण करके हम भी लोक में पवित्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

होते हैं। यद्यपि हमारा तप और संयम अत्यन्त दृढ़ है, परन्तु तुम्हारे तप ने उसे भी हिला दिया। हमने पहले भूतों को, फिर सप्तर्षियों को तुम्हारे पास भेजा जिसमें तुम्हारे दृढ़ तप की ख्याति संसार भर में प्रसिद्ध हो। तुम क्रोध न करो, क्योंकि हमने यह सब बातें तुमसे प्रकट होने के लिए तथा परीक्षा लेने के लिए की हैं, जैसा कि कुम्हार घड़े को सम्हालने के लिए ऊपर से पीटता है। हमने तुम्हारी भक्ति को संसारी रीति के कारण ही देखा है। तुम समस्त संसार की माता तथा वह देवी हो, जिनके चरण-कमलों की सेवा देवता आदि सब करते हैं। तुम उत्पत्ति, पालन तथा प्रलय के हेतु तीन गुण धारण करती हो। तुम्हीं तीनों लोकों को आनन्द देने वाली हो। तुम्हारे रूप गुण तथा प्रभाव असंख्य हैं। तुम्हारा ही अंग लक्ष्मी, वाणी तथा ब्राह्मणी है। तुमने मुझे सगुण अवतार लेते हुए जानकर गिरिजा का अवतार लिया है। जिस प्रकार शब्द एवं अर्थ में कोई अन्तर नहीं है, उसी प्रकार हमारे और तुम्हारे बीच में भी कोई अन्तर नहीं है। केवल संसारी जीवों की दृष्टि में हम-तुम दो शरीर रखते हैं, परन्तु वास्तव में हम एक हैं। हमारे तुम्हारे चरित्र वेद भी नहीं जानते। तुम्हारा तप अब पूर्ण हो गया है। तुम्हारी जो इच्छा हो, वह हमसे माँगो।'' यह कहकर शिवजी चुप हो गये।

पार्वती बोली—''हे देव ! यदि आप वास्तव में मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझको मेरी इच्छानुसार वर दीजिये। आप मेरे पति होकर संसार की रीति के अनुसार मेरे साथ विवाह कीजिये। मेरे समस्त अपराधों को क्षमा कर, अब आप मेरे पिता से जाकर विनती करें तथा अपने संसारी चरित्र को दिखावें।'' पार्वती यह कहकर चुप हो गयीं। तब शिवजी ने कहा—''हे गिरिजे ! तुमने जो वरदान माँगा है, हम उसे स्वीकार करते हैं।'' यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। तब देवताओं ने जय-जयकार किया, आकाश से पुष्प-वर्षा हुई, विष्णु, मैं तथा अन्य देवता गिरिजा के चरणों पर आकर गिर पड़े तथा हर्ष के कारण गिरिजा की स्तुति करने लगे। जो कोई उस स्तुति का पाठ करता है, उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। उस स्तुति को सुनकर पार्वती ने सब देवताओं से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

कहा—"हे देवताओ ! तुम सब अपने-अपने घरों को जाकर प्रसन्न रहो। मैंने कठोर तप किया है इसलिए देवताओं के सभी कार्य पूर्ण होंगे। शिवजी ने मुझको वर दिया है कि तुम्हारा कोई कार्य शेष नहीं रह जायेगा।" यह आज्ञा सुनकर सब देवता वहाँ से चले गये तथा गिरिजा भी घर जा पहुँचीं। उस समय जो हर्ष हिमाचल एवं मैना को हुआ, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। हिमाचल ने हर प्रकार से आनन्द मंगल मनाया तथा असंख्य द्रव्य दान दिया। यद्यपि गिरिजा ने वरदान का वृत्तान्त किसी पर प्रकट न किया, पर वह सब लोगों पर प्रकट हो गया।"

तैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! भगवान् सदाशिव की महिमा जानना अत्यन्त कठिन है। उनकी महिमा करोड़ों वर्ष तप करके भी कठिनता से जानी जा सकती है। वे शरीर धारण कर अनेक प्रकार की लीलाएँ रचते हैं तथा संसार के जीवों की भाँति प्रकट होकर, अपने भक्तों के कार्य पूरे करते हैं। हे नारद ! तुम ध्यान से सुनो, जिस समय शिवजी पार्वती को वर देकर चले गये, उसी समय उन्होंने भिक्षुक का रूप धारण किया और नृत्य एवं गायन में पूर्ण अभ्यास करके एक सहस्त्र गति के ज्ञाता बन गये। फिर उन्होंने अपने बाएँ हाथ में सिंगी तथा दाहिने हाथ में डमरू लिया और समस्त शरीर में श्वेत भस्म लगाकर लाल वस्त्र पहने। इस प्रकार वे वृद्ध बन गये। उनका शरीर बूढ़ों की भाँति काँपता था, परन्तु वाणी अत्यन्त मधुर थी। ऐसे अनूप रूप तथा वस्त्राभूषणों से सुशोभित होकर श्री सदाशिव जी हिमाचल पर्वत के पास गये। उन्होंने अनेक प्रकार के नृत्य-गान, नट करतब, मधुर-स्वर, प्रिय सिंगी तथा डमरू के नाद से नगर निवासियों को मोहित कर लिया। उनके इस करतब को देखने के लिए चारों ओर से झुण्ड के झुण्ड पर्वत-निवासी एकत्र होकर यहाँ तक कि सभी बूढ़े

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

बालक स्त्री, पुरुष वह मधुर शब्द सुन, घरों से बाहर निकल आए। इस प्रकार कोई भी शिव के उत्तमोत्तम ताल एवं प्रिय स्वर सहित राग द्वारा मोहित विह्वल तथा अधीर होने से शेष न रहा। पार्वती उस आनन्ददायक स्वर में मग्न हो गयीं। वे शिव की मूर्ति का मन में ध्यानकर अत्यन्त प्रसन्न हुईं तथा उन्होंने अपने मन में शिव की स्तुति की। तब शिवजी कृपालु होकर बैठ गये। जब मैना को चेत आया, तब वह योगी को अत्यन्त प्रसन्न हो, हीरा, पन्ना, मोती, मणि आदि थाल में भरकर देने लगीं, परन्तु उस योगी ने कुछ न लेकर केवल पार्वती को माँगा तथा फिर नृत्य करने को उठ खड़ा हुआ। यह सुनकर मैना ने अप्रसन्न होकर उसे बहुत डराया, धमकाया तथा यह इच्छा की कि उस योगी को निकाल दें। इतने में हिमाचल भी वहाँ आ पहुँचे और सब वृत्तान्त सुनकर क्रोधित हुए। उन्होंने आज्ञा दी कि इस योगी को तुरन्त यहाँ से निकाल दो। हिमाचल के सेवक इस आदेश को पाकर इस योगी को निकालने को उद्यत हुए, परन्तु वे उस योगी के प्रताप से, उसके निकट भी न जा सकें। उस समय हिमाचल ने मन में सोचा कि यह कौन मनुष्य है? जब उन्होंने बहुत ध्यान से विचारपूर्वक योगी को देखा तो उन्होंने शिवजी को चतुर्भुजी स्वरूप, सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, पीले वस्त्र पहने हुए तथा जो पुष्प विष्णु पर चढ़ाए जाते हैं, उनसे भूषित देखा। फिर हिमाचल ने उसी समय द्विभुजी मूर्ति इस प्रकार देखी कि वे अपने को गोपों के समान भूषित किये, मुरली हाथों में लिये, चन्द्रमा के समान उत्तम किशोरावस्था को प्राप्त दिखाई दे रहे हैं।

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी ने हिमाचल को अपना मुख्य स्वरूप दिखाया कि शीश पर जटा तथा गंगा की पवित्र धारा, मस्तक पर चन्द्रमा एवं त्रिपुण्ड, चन्द्र के समान सुन्दर मुख, लालिमा लिये हुए तीनों नेत्र, कीर के समान नासिका, अरुण अधर, कंठ में श्यामता लिये हुए तीन रेखाएं, गले में हार पहने, चार भुजाएं, सूर्य, कपाल, अभय आदि नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से अलंकृत, उदर अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

कोमल, जिसमें तीन बल पड़े हुए, अत्यन्त सुन्दर कटि, लाल कमल के समान लाल पगतल, गोल नितम्ब, रक्त वर्ण नख आदि थे। हिमाचल ने ऐसा मनोहर विचित्र स्वरूप देख, अत्यन्त आश्चर्यचकित होकर जाना कि यह सदाशिव हैं। जब सदाशिव ने जाना कि हिमाचल ने हमको पहचान लिया तो उन्होंने तुरन्त उसी योगी का स्वरूप धारण कर लिया तथा पुनः हिमाचल से पार्वती को पाने की इच्छा प्रकट की। उस समय हिमाचल ने तुरन्त ही प्रणाम कर, सब स्वीकार कर लिया। कुछ समय पश्चात् योगी जब अन्तर्धान हो गये, तब मैना और हिमाचल ने चेत में आकर शिव को सर्वश्रेष्ठ जाना। देवताओं ने भी अपने हृदय में निश्चित ठहराया कि शिव एवं पार्वती का विवाह उनको, समस्त संसार को तथा पार्वती के माता-पिता को शुभदायक होगा।

इसी इच्छा से उन सभी देवताओं ने हिमाचल के गुरु के घर जाकर उनको प्रणाम किया तथा कहा—''हे देव ! इस समय शिव के चरित्र से मैना एवं हिमाचल ने शिव को सर्वश्रेष्ठ समझ लिया है। अप आप वहाँ जाकर ऐसा प्रयत्न करें, जिससे शिव तथा पार्वती का विवाह हो जाए।'' यह सुनकर गुरु अत्यन्त क्रोधित होकर दोनों हाथ कानों पर रखकर बोले—''हे देवताओ ! तुम बड़े स्वार्थी हो। तुम हमारी यही सेवा करते हो, जिससे हमको नरक प्राप्त हो। जो मनुष्य विष्णु, महादेव, ब्रह्मा आदि देवता, ब्राह्मण, अपने गुरु, गौ, तुलसी, पुराण, गंगा, वेदमाता, गायत्री, वेद एवं दान की निन्दा करता है, वह निःसंदेह नरक में जाकर असंख्य कल्पों तक दुःख तथा कष्ट भोगता है। यदि तुम यह कार्य करना आवश्यक समझते हो, तो तुमको चाहिए कि ब्रह्मा के पास जाकर उनसे सहायता माँगो तथा तुम भी अपनी बुद्धि के अनुसार कोई उपाय करो, परन्तु अपने मन में शिव के चरणों का ध्यान अवश्य रखो। हमें पूर्ण विश्वास है कि ब्रह्मा, अरुन्धती तथा सप्तर्षि के साथ जाकर हिमाचल को समझाएंगे। हमको अपने तपोबल से यह भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

पूर्ण विश्वास है कि पार्वती को शिव के अतिरिक्त और कोई प्राप्त नहीं कर सकता।'' यह कहकर गुरु चुप हो गये।

चौवालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! गुरु के आदेशानुसार समस्त देवताओं ने हमारे पास आकर अपना मनोरथ कहा। हमने उनसे कहा कि तुम हमें शिवजी की निन्दा कराना सिखाते हो? क्या अच्छे लोगों का यही धर्म है? भला, पिता की यही सेवा करना लड़कों का धर्म है? शिव की निन्दा सबको दुःख देने वाली है। यह विपत्ति की जड़ तथा सब प्रकार के आनन्द-मंगल को नष्ट करने वाली है। मैं तुम्हारी इस विषय में कोई सहायता नहीं करूँगा। तुम सब मिलकर शिव के पास जाओ तथा विनय करो, क्योंकि पर-निन्दा तीनों लोकों में दुःखदायी होती है।'' यह सुनकर वे सब कैलाश पर्वत में जाकर शिव की प्रशंसा एवं स्तुति करने लगे। वे बोले—''हे विश्वपति ! हिमाचल आपका बड़ा भक्त है, उसने आपको परब्रह्म जानकर इच्छा की है कि अपनी पुत्री आपको देकर मुक्ति प्राप्त करे। अस्तु, आप इस प्रस्ताव को स्वीकार करें।'' देवताओं की यह विनती सुनकर शिवजी हँस दिये तथा उन सबको अत्यन्त प्रसन्न कर विदा किया। इसके पश्चात् वे अति सुन्दर ब्राह्मण-शरीर धारण कर, हाथ में श्वेत रत्नों की माला पहने, मस्तक पर तिलक लगा, गले में शालिग्राम की मूर्ति डाल, उत्तमोत्तम वस्त्र धारण कर, वैष्णवी वस्त्रों से भूषित हो, अति चतुरता से हिमाचल के घर गये। हिमाचल सपरिवार उनके आदर के लिए उठ खड़ा हुआ। पार्वती ने उस ब्राह्मण रूप की बड़ी भक्ति से पूजा की। उन्होंने पहचान लिया कि यह शिव ही हैं। ब्राह्मण ने आशीर्वाद देकर कुशल-क्षेम पूछा। तब हिमाचल ने उनसे पूछा—''हे महात्मन् ! आप कौन हैं तथा किस कार्य से आये हैं?'' ब्राह्मण रूपी शिवजी ने उत्तर दिया—''मैं ब्राह्मण हूँ और पर्यटन करता रहता हूँ। मैं अपने गुरु की कृपा से तीनों लोकों को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पहचानता तथा सब बातों को जानता हूँ। मनुष्यों तीनों लोकों में कोई काम करता है, मैं उसे अपने मन में ही जान लेता हूँ।''

ब्राह्मण ने कहा—''हे राजन् ! तुम्हारी यह प्रबल इच्छा है कि पार्वती का विवाह शिवजी के साथ हो। मैं तुम्हारे भले के लिए कहता हूँ कि तुम ऐसी रूपवती गुणवती कन्या को ऐसे बुरे एवं निर्गुण व्यक्ति को क्यों देते हो? जिनकी सेवा सम्पूर्ण सृष्टि, देवता, मुनि, दैत्य, सिद्ध आदि सब करते हैं, उन विष्णु के ही साथ इसका विवाह करना उचित है। इस विषय में तुम अपने भाई-बन्धुओं से परामर्श ले लो। यदि तुम यह कहोगे कि पार्वती को शिव के अतिरिक्त अन्य पति स्वीकार नहीं है तो यह बात स्पष्ट है कि रोगी को कुपथ्य ही भाता है, कोई गुणकारी औषधि रुचिकर नहीं लगती।'' यह कहकर ब्राह्मण रूपधारी शिव वहाँ से चल दिये। उस समय हिमाचल के नेत्रों से दुःख और चिन्ता के अश्रु बह चले। तब मैना ने हिमाचल से कहा—''हे स्वामी ! मेरी बात सुनो, जो अन्त को अच्छी फलदायक होगी। आपको यही उचित है कि सब पर्वतों को बुलाकर उस ब्राह्मण के कथन के विषय में अवश्य पूछें, क्योंकि उसकी बातें सुनकर मुझको बड़ा सन्देह हुआ है। जब तक यह बात स्पष्ट न होगी, मुझे बहुत ही भय बना रहेगा। आप भी ब्राह्मणों की बातों पर अच्छी तरह विचार करें। यदि ऐसा न किया तो मैं या तो वन में जा रहूँगी या विष खाकर मर जाऊँगी।'' मैना यह कह अत्यन्त कुपित होकर पार्वती को साथ ले, कोप भवन में जा बैठी। हिमाचल मैना का यह चरित्र देख अत्यन्त दुःखी हुए तथा उसके पास जाकर अनेक प्रकार से समझाने लगे। उन्हें समझाते हुए कहा कि तुम इस प्रकार के कोप भवन में क्यों पड़ी हो? फिर हिमाचल बड़े आश्चर्य में पड़कर सोचने लगे कि शिव ने यह चरित्र कैसा किया?''

पैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! इस दशा को देखकर हिमाचल के परिवार के सब लोग तथा नगर निवासी अत्यन्त व्याकुल हुए। देवता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:03 AM

भी आपस में यह कहने लगे कि क्या करते हुए, यह क्या हो गया? तब सब स्त्री-पुरुषों ने भगवान् सदाशिव का ध्यान कर इस प्रकार प्रार्थना की—"हे प्रभो ! आपने जो कुछ किया, वह सब लोगों के लिए शुभ हो।" गिरिजा भी बहुत उदास होकर शिवजी का स्मरण करने लगीं। उस समय गिरिजा की चिन्ता को देखकर शिवजी ने सप्तर्षियों का स्मरण किया। शिवजी की आज्ञा का पालन करने के लिए वे शीघ्र ही आ पहुँचे। वे अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म लगाये थे तथा हाथों में माला लिये थे। वे अपने मुख से 'शिव-शिव' उच्चारण कर रहे थे। उन्होंने आते ही शिवजी को प्रणाम किया, तदुपरान्त हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए बोले—"हे प्रभो ! आप हमें क्या आज्ञा देते हैं?" यह सुनकर शिवजी ने उत्तर दिया—"हे ऋषियो ! तारक दैत्य के संहार के निमित्त हमने गिरिजा के साथ विवाह करने का निश्चय किया है। अब वह समय निकट है। अस्तु, तुम हिमाचल के निकट जाकर उनसे तथा उनकी स्त्री से हमारे विवाह के लिए कहो।"

हे नारद ! यह सुनकर सप्तर्षि अत्यन्त प्रसन्न हो, परस्पर यह कहने लगे कि हमारे भाग्य धन्य हैं जो सृष्टि का उपकार करने के निमित्त शिवजी अपने विवाह का सन्देश पहुँचाने के लिए हमें हिमाचल के पास भेज रहे हैं। इस प्रकार कहकर वे हिमाचल के समीप जा पहुँचे। हिमाचल ने उन्हें दंडवत्-प्रणाम करने के उपरान्त आने का कारण पूछा। उस समय सप्तर्षियों ने उत्तर दिया—"हे हिमाचल ! शिवजी सम्पूर्ण सृष्टि के पिता हैं और गिरिजा सब की माता हैं। संसार के कल्याण करने के निमित्त शिवजी गिरिजा के साथ विवाह करना चाहते हैं। अस्तु, तुम गिरिजा का शिवजी के साथ विवाह कर दो। इस सम्बन्ध में ब्रह्मा जी ने शिवजी से बड़ी प्रार्थना की थी तथा गिरिजा ने भी कठिन तपस्या करके उन्हें प्रसन्न किया है। तभी शिवजी यह विवाह करने को तैयार हुए हैं।"

जिस समय सप्तर्षि हिमाचल से इस प्रकार की बातें कर रहे थे, उसी समय अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा तथा वशिष्ठ मुनि की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

पत्नी अरुन्धती भी मैना के समीप जा पहुँची। उन्होंने देखा कि मैना महामलिन वस्त्र पहने, अत्यन्त दु:खी हो, कोप भवन के भीतर पृथ्वी पर पड़ी हुई है। यह देखकर उन्होंने मैना से कहा—"हे मैना ! तुम उठकर हमारी बात सुनो।" ऋषि-पत्नियों को देखकर मैना तुरन्त उठ बैठी और बोली—"मेरा धन्य भाग्य हैं जो आपने यहाँ पधारकर मेरे ऊपर कृपा की। आप मुझे कोई आज्ञा प्रदान करने की कृपा करें।" यह सुनकर अरुन्धती ने कहा—"हे मैना ! देखो, हिमाचल गिरिजा का विवाह शिवजी के साथ करना चाहते हैं। तुम इससे अप्रसन्न क्यों हो? क्या तुम शिवजी को नहीं पहचानती कि वे तीनों लोकों के स्वामी और सबसे श्रेष्ठ हैं?" इस प्रकार शिवजी की महिमा का बहुत कुछ वर्णन करने के उपरान्त दोनों ऋषि-पत्नियाँ मैना को साथ ले हिमाचल की सभा में जा पहुँचीं। वहाँ पहुँचकर मैना ने सप्तर्षियों को प्रणाम किया। फिर वह अपने पति के चरणों का ध्यान धरती हुई अरुन्धती के समीप बैठ गयी। उस समय सप्तर्षियों ने हिमाचल से इस प्रकार कहा—

छियालीसवाँ अध्याय

सप्तर्षियों ने कहा—"हे हिमाचल ! तुम्हें उचित है कि अब तुम अपनी बुद्धि को स्थिर कर शिवजी के साथ गिरिजा का विवाह कर दो। शिवजी को अपना जामाता बनाकर तुम सर्वश्रेष्ठ पद को प्राप्त करोगे। देखो, इस समय संसार में तारक नामक दैत्य अत्यन्त उपद्रव कर रहा है। उसका वध करने के निमित्त ही शिवजी ने विवाह करना स्वीकार किया है। अस्तु, तुम देवताओं का कार्य पूरा करने के लिए इस कार्य में विलम्ब न करो।"

यह सुनकर हिमाचल ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—"हे ऋषियो ! मैं आप से एक बात पूछना चाहता हूँ कि वे संसार में विरक्त, वनवासी, अवधूत तथा अशुभ वेषधारी हैं। भला मैं ऐसे व्यक्ति के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

साथ अपनी कन्या का विवाह कैसे कर दूँ? इस प्रकार के वर को कन्यादान करने से पिता नरकगामी होता है ; क्योंकि विवाह, मैत्री और वैर बराबर वाले से ही करना चाहिए। इसीलिए मैं शिवजी के साथ अपनी कन्या का विवाह नहीं करना चाहता।''

हिमाचल की बात सुनकर अरुन्धती ने उत्तर दिया—''हे राजन् ! वेद के अनुसार, तीन प्रकार के वचन होते हैं। एक ऐसा होता है, जिसको सुनने में ऊपर से तो आनन्द होता है, परन्तु वास्तव में वह आनन्द का नाश करने वाला होता है। दूसरे प्रकार का वचन सुनने में भी अमृत के समान होता है और उसका अन्त भी शुभ होता है। तीसरे प्रकार के वचन सत्य धर्म से विभूषित होता है। अस्तु, हम बीच वाले वचन का आश्रय लेकर तुम्हें समझाती हैं कि शिवजी सम्पूर्ण संसार के राजा तथा सबके स्वामी हैं। वे निर्गुण तथा सगुण दोनों रूप वाले हैं। कुबेर के समान धनपति उनके सेवक हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा हर उन्हीं के तीनों गुणों द्वारा उत्पन्न हुए हैं।''

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अरुन्धती ने पुनः कहा—''हे राजन् ! गिरिजा तो सनातन काल से शिवजी की शक्ति हैं अतः तुम्हें उचित है कि तुम गिरिजा का विवाह शिवजी के साथ कर दो। ऐसा करने से तीनों लोकों में तुम्हें यश प्राप्त होगा तथा सम्पूर्ण देवता तुम्हारे वशीभूत हो जायेंगे। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो भी यह निश्चित रखो कि गिरिजा तो शिवजी को अवश्य प्राप्त करेगी ही, तुम्हें व्यर्थ ही सन्ताप उठाना पड़ेगा। जिस प्रकार राजा अनरण्य ने अपनी कन्या का विवाह ब्राह्मण के साथ करके अपने वंश की रक्षा की, उसी प्रकार तुम्हें भी उचित है कि तुम गिरिजा का विवाह शिवजी के साथ करके अपने कुल की रक्षा कर लो।''

यह सुनकर हिमाचल ने कहा—''आप मुझसे राजा अनरण्य की कथा कहने की कृपा करें।'' यह सुनकर वशिष्ठ जी ने उत्तर दिया—''हे हिमाचल ! वेदचन्द्र नामक चौहदवें मनु की सौलहवीं पीढ़ी में 'अनरण्य' नामक राजा उत्पन्न हुआ था। वह मंगलारण्य राजा की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

भाँति प्रजा का पालन करने वाला तथा राज्य सिंहासन पर बैठकर नीतिपूर्वक राज्य करने वाला था। उसके सात पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न हुई। पुत्री का नाम 'पद्मा' था। वह पुत्री राजा तथा रानी को प्राणों से भी अधिक प्रिय थी। जब उसकी अवस्था विवाह के योग्य हुई, तब राजा उसके लिए पति की खोज करने लगे। इतने में 'पिप्पलाद' मुनि ने अपने आश्रम को जाते समय वन में देखा कि एक गन्धर्व अपनी स्त्री से विहार कर रहा है। मुनि भी यह देखकर काम के वशीभूत होकर स्त्री से भोग की इच्छा करने लगे। तभी मुनि ने पुष्पभद्रा नदी के तट पर पद्मा को देख, सबसे पूछा कि यह किसकी कन्या है? लोगों ने बताया कि यह राजा अनरण्य की पुत्री है। यह सुनकर मुनि स्नान तथा पूजन कर राजा के पास गये और कामवश होकर उससे उनकी पुत्री को माँगा, परन्तु राजा चुप रहे, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। तब मुनि ने क्रोधित होकर कहा कि तू हमको लड़की नहीं देता तथा चुप बैठा हुआ है। हमारे पास वह विद्या है, जिससे हम इसी समय तुझे जला कर भस्म किये देते हैं।" मुनि के ऐसे क्रोधपूर्ण वचन सुनकर राजा, स्त्री, पुत्र तथा भृत्यों सहित आश्चर्य चकित होकर रोने लगा। उस समय एक बुद्धिमान् पंडित ने राजा से कहा—"हे राजन् ! अब आपको यही उचित है कि अपनी पुत्री मुनि को दे दें और इस प्रकार मुनि के क्रोध से अपने कुल को जलने से बचावें।" तब राजा ने पंडित की बात मानकर, अपने कुल की रक्षा के लिए, पुत्री मुनि को दे दी। इसलिए हे हिमाचल ! तुमको भी यही करना चाहिए। अब विवाह के शुभ मुहूर्त को केवल सात दिन शेष रह गये हैं। उस दिन मृगशिरा नक्षत्र, चन्द्र वार, उत्तम योग करण तथा केन्द्र के शुभ ग्रह हैं। उसी समय लग्न का स्वामी अपने स्थान पर आयेगा। यही अति उत्तम मुहूर्त होगा। उस दिन तुम गिरिजा का विवाह शिव के साथ कर दो।" इस प्रकार समझाते हुए सप्तर्षि तीन दिन तक वहाँ ठहरे। तब हिमाचल ने उनकी बात मानकर, चौथे दिन लग्न लिखाया। उसे लेकर सप्तर्षि शिव के पास गए।"

❁ ❁ ❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

सैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! सप्तर्षियों ने शिवजी के पास जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया।" शिवजी बोले—"हे ऋषियों ! तुमने यह काम अच्छा किया। तुम भी अपने शिष्यों सहित हमारे विवाह में अवश्य उपस्थित होना।" यह सुनकर सप्तर्षि प्रसन्न होकर वहाँ से विदा हुए। हे नारद ! इसके पश्चात् शिवजी ने तुमको स्मरण किया। तुम वहाँ तुरन्त प्रसन्नतापूर्वक पहुँचे। तुमने शिवजी की हाथ जोड़कर स्तुति एवं विनती की और कहा कि मेरा यह सौभाग्य है, जो आपने मुझे स्मरण किया। आप मुझ सेवक को आज्ञा दीजिये। उस समय शिवजी ने संसार की रीति के अनुसार कहा—"हे नारद ! गिरिजा ने हमारी बड़ी आराधना की है। हमने प्रेम के वश होकर उसे अपने साथ विवाह करने का वर दे दिया है। अब तुम हमारी ओर से समस्त देवताओं को निमन्त्रण दो। उन सब को यह बात भली-भाँति समझा देना कि जो हमारी बारात में सम्मिलित न होगा, वह हमारा प्यारा न होगा।" तुम यह सुनकर तुरन्त चल दिये। सर्वप्रथम तुम विष्णु जी के पास तथा इसी प्रकार सनकादिक, भृगु आदि के समीप पहुँचे। तुमने सबको शिवजी का सन्देश कह सुनाया और सब ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उसे स्वीकार किया।

हे नारद ! इस प्रकार तीनों लोकों में कोई ऐसा स्थान शेष नहीं रहा। जहाँ तुमने शिव की ओर से जाकर निमन्त्रण न पहुँचाया हो। सबको निमन्त्रण देने के पश्चात् तुम शिवजी के पास लौट आये और उनकी स्तुति करते हुए बोले—"हे महाराज ! आपके निमन्त्रण को ब्रह्मा, विष्णु एवं सम्पूर्ण सृष्टि ने बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया है।" इसके पश्चात् तुम शिव की आज्ञा से वहीं रह गये। नियत समय पर ब्रह्मा, विष्णु, सनकादिक, लोकपाल, इन्द्र आदि गणपति, अग्नि, धर्मराज, वरुण, कुबेर, पवन, ईशान, दिक्पाल, सूर्य, चन्द्रमा, हिंगुलाज, ज्वालामुखी आदि देवी-देवता तथा मुनि कैलाश में अपनी समस्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

सामग्री, परिवार, स्त्री, गण, सेना तथा सभासदों को लेकर आये और अपने पद के अनुकूल बैठे। विष्णु तथा मैं शुभ लग्न पर शिवजी के पास आये तथा प्रणाम के पश्चात् उनसे बोले—"हे प्रभो ! अब तो चलने का समय आ गया है।"

❀❀❀

अड़तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी नें उसी समय बारात की तैयारी की आज्ञा दी। उनके आदेशानुसार सब अपने को वस्त्राभूषणों से भूषित करने लगे। चारों ओर ध्वजा, पताका, चँवर आदि शुभ सामग्री स्थापित हुई। देवताओं की पत्नियाँ मंगलगान करने लगीं। रत्न एवं मोतियों से चौक पुराये गये। उस समय की शिवजी की सुन्दरता का हम वर्णन नहीं कर सकते। विष्णु, मैं तथा इन्द्र आदि देवता अपने-अपने प्रसिद्ध वस्त्रों से भूषित हुए। सवारों के रिसाले, गज समूह तथा घोड़ों के छल-बल देखने योग्य एवं प्रशंसा के योग्य थे। शुभ मुहूर्त में शिवजी महाराज बारात सहित चले। नन्दी, वीरभद्र, भैरव आदि भी अपने गणों सहित उनके साथ हुए। शिवजी की उस बारात में असंख्य सेना चली। शिवजी ने सर्वप्रथम सांसारिक नियम के अनुसार ब्राह्मण के चरणों का ध्यान धर, डमरू बजाया, इसके पश्चात् वे बारात के साथ चले।"

❀❀❀

उन्चासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! हिमाचल ने भी इस विवाह के लिए अपने भाई, बान्धव तथा समस्त नदी, नद एवं समुद्रों को स्त्रियों सहित निमन्त्रित किया और अपने नगर को भली-भाँति सजाया। अनेक मन्दिरों को रत्न आदि से पूर्ण कर भूषित किया। अच्छा मँडवा छाकर बन्दनवार तथा मोतियों की झालरें लटका दीं। समस्त निमन्त्रित भाई-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

बन्धु उनके घर एकत्र हुए। इस प्रकार वहाँ एक आश्चर्यजनक सामग्री एकत्र हुई। हिमाचल ने अपने दान से सब याचकों को सन्तुष्ट किया। प्रत्येक ने अपने को सुसज्जित किया तथा अनेक प्रकार के साज सजने लगे। स्त्रियों के समूह ने एकत्र होकर गिरिजा को स्नान कराया। जो-जो कुल देवता आदि की पूजा नियत हैं, वह सब गिरिजा से करायी गयीं। तुमको शिवजी की ओर से देवताओं ने पहले, हिमाचल के पास भेजा, जहाँ तुम्हारा बहुत ही आदर-सत्कार हुआ। सब रीति-रिवाजों के पूरा हो जाने के पश्चात् हिमाचल ने पहले अपने पुत्रों को बारात की अगवानी के लिए भेजा तथा स्वयं भी बारात आने की प्रतीक्षा करने लगे। जब बारात निकट पहुँची तो हिमाचल स्वयं अपने समस्त भाई-बन्धुओं सहित अगवानी के लिए चले। वे बारात की शोभा, असंख्य सेना तथा विचित्र सामग्री देखकर साथियों सहित आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने हम सबको झुककर प्रणाम किया तथा बहुत कुछ स्तुति की। तदुपरान्त रहने के लिए एक बहुत अच्छा स्थान दिया।

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! बारात की उस शोभा का वर्णन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता। सब बारात बड़ी सज-धज के साथ अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर हिमाचल के घर की ओर चलीं। बारात को द्वार पर आया हुआ देखकर मैना की इच्छी हुई कि सर्वप्रथम मैं अपने दामाद को देखूँ, उसके पश्चात् द्वारचार की रीति पूरी की जाए। यह विचार कर मैना ने तुमको बुलाया तथा अपनी मनोकांक्षा प्रकट की। वह बोली कि तुम जिसको परब्रह्म तथा सर्वश्रेष्ठ कहते थे, उसे देखकर ही सब काम किये जाएंगे।"

❁❁❁

पचासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जब मैना राज्य के अहंकार से यह अनुचित विचार अपने मन में लायी तथा उसने शिवजी के स्वरूप की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

परीक्षा करनी चाही, तब शिवजी यह जानकर अप्रसन्न हुए। अब मैं ऐसा चरित्र करता हूँ, जिससे यह मूर्ख ऐसी बातों को भूल जाए। ऐसा सोचकर शिवजी ने अपना विचार विष्णु को बुलाकर प्रकट किया और कहा—"हे विष्णु ! तुम और ब्रह्मा हमारे बड़े शुभचिन्तक हो। हम तुमको आदेश देते हैं कि तुम सब पहले अलग-अलग अपनी सेना सहित हिमाचल के द्वार पर चलो। हम सब के पश्चात् वहाँ आवेंगे।" विष्णु जी ने यह सुनकर सबको शिवजी का आदेश सुनाया। उस आदेश के अनुसार ही सब अलग-अलग अपनी सेना सहित चले तथा हिमाचल के द्वार में प्रवेश करने लगे। मैना ऐसी धूमधाम से आती हुई बारात को देखकर प्रसन्न हो कहने लगी—"वाह, वाह, कैसी सुन्दर बारात है।" उसकी ऐसी दशा हुई कि जिसको देखती, तुमसे उसी के विषय में पूछती कि क्या यही गिरिजा के पति हैं? पहले जब मैना ने गन्धर्वराज वसु को देखा तो तुमसे कहा कि क्या यही शिव हैं? तब तुमने उत्तर दिया—"नहीं। यह तो शिव की सभा के गाने वाले हैं।" यह सुनकर मैना बोली कि जिसकी सभा के गाने व नाचने वाले ऐसे हैं, तब वह मुझको कब दिखाई पड़ेंगे? फिर मैना ने यक्षों के स्वामी मणिग्रीव को देखा और तुमसे पूछा कि क्या यही शिव हैं? तुमने उत्तर दिया—"नहीं।"

हे नारद ! इसी प्रकार मैना ने धर्मराज, सप्र, वरुण, पवन, कुबेर, ईशान, आठों दिक्पाल, रुद्र, इन्द्र, चन्द्र, गृहपति, शुक्र प्रजापति, सप्तर्षि, ब्रह्मा तथा विष्णु जो एक के पीछे एक आते थे, को देखकर, प्रसन्न हो, तुमसे पूछा—"क्या यही शिव है?" परन्तु तुम बराबर यही उत्तर देते रहे कि नहीं यह शिव नहीं हैं, यह तो शिव के भक्त हैं। यह सुनकर मैना अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा अपने को धन्य समझने लगी। वह समझी कि हमारा कुल कृतार्थ हो गया। इस प्रकार मैना के सब दुःख दूर हो गए।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

इक्यावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मैना ने तुम्हारी तथा गिरिजा की बहुत प्रशंसा करते हुए तुमसे कहा कि मैंने अब तक शिवजी को नहीं देखा। इतने में शिवजी सम्मुख आ गये। तब तुमने मैना से कहा—"यही शिवजी हैं, यही गिरिजा के पति हैं, इन्हें अच्छी तरह देखो।" मैना ने शिव को अच्छी तरह देखा, परन्तु शिव की माया से उसके नेत्र ऐसे हो गये कि उसकी दृष्टि में सन्देह उत्पन्न हुआ। उस समय उसको शिवजी का दल ऐसा दिखाई देने लगा, जैसे कि वे सभी भूत प्रेत आदि हैं। कई के तो हाथ ही नहीं थे तथा कई के बहुत से हाथ थे। मैना ऐसा दल देखकर बहुत भयभीत हुई। उस सेना में शिव को बैल पर चढ़े, त्रिनेत्र, चन्द्रमा तथा मुकुट धारण किए, बाघम्बर एवं गज चर्म धारण किये, हाथों में डमरू, कपाल, त्रिशूल और सब शस्त्र लिए, सिर पर जटा-जूट, कानों में सप्र, पाँच मुख, मुण्डमाल धारण किये हुए, कण्ठ में हलाहल की श्यामता तथा शरीर में सर्प लपटाये हुए देखा। हे नारद ! उस समय तुमने मैना से कहा कि अब तुम इधर-उधर क्या देखती हो, शिव का रूप क्यों नहीं देखतीं? जब मैना ने शिव का ऐसा रूप तथा वैसी सेना देखी तो वे भयभीत होकर अत्यन्त दुःखी हुईं और मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़ीं। सबको अत्यन्त खेद हुआ। सब लोग औषधि आदि का उपचार कर मैना को चेत में लाए। फिर मैना तुमसे बोली—"हे नारद ! तुझे धिक्कार है। तूने मेरी कन्या का जीवन नष्ट कर दिया। यह अवधूत मेरी लड़की के साथ विवाह करने के लिए भूत-प्रेतों की सेना लेकर आया है। मेरा तथा हिमाचल का जन्म वृथा हुआ। सप्तर्षियों ने भी मेरे साथ धोखा किया है।"

हे नारद ! यह कहकर मैना गिरिजा से बोली—"हे पुत्रि ! तुमने वन में जाकर यह क्या काम किया? हंस के स्थान पर कौआ लिया, सूर्य से मतलब न रखकर जुगनू से मनोरथ चाहा, घी अच्छा न लगा और रेंडी के तेल से रुचि हुई। तुमने यज्ञ की भस्म को दूर कर चिता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

की भस्म लगायी, जो विष्णु तथा अन्य देवताओं को छोड़, शिव के लिए तप किया। तुम्हारे कर्मों को धिक्कार है, तुम्हारे उपदेश, तुम्हारी सखियों एवं तुम्हें भी धिक्कार है। अब मुझको आनन्द कहाँ है? यह सब मेरे कर्मों का ही फल है। मैंने बड़े प्रेम से पुत्री के लिए तप किया था परन्तु ऐसा दुःख देने वाल फल तथा ऐसा भयावना स्वरूप मुझको प्राप्त हुआ।'' यह कहकर मैना बारम्बार पृथ्वी पर गिरकर मूर्च्छित होने लगी। कुछ देर पश्चात् मैना को जब चेत हुआ तो गिरिजा की ओर से आँखें मूंद कर 'धिक्-धिक्' कहने लगीं। वे बोलीं—''मुझे दुःख है कि तुम मर न गई। इस प्रकार इस समय हमारे कुल में बट्टा तो न लगता। हिमाचल ने भी नारद के वचन पर इतना विश्वास कर बहुत बड़ी मूर्खता की। अब मैं क्या करूँ, जिससे मेरा यह दुःख दूर हो?'' मैना ऐसे वचन कहती हुई रो-रो कर धरती पर गिर पड़ती थी। यह देखकर सब आनन्द दुःख में परिवर्तित हो गया, परन्तु बहुत समझाने के पश्चात् सब लोगों ने पुनः आनन्द मनाया।''

बावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! मैना की यह दशा देखकर नगर भर में उदासी छा गयी। तब देवता आदि वहाँ बहुत प्रकार से मैना को समझाने लगे कि तुम यह क्या करती हो, जो इस प्रकार इस शुभ अवसर को अशुभ किये देती हो? यह सुनकर मैना ने जो कुछ मन में आया, देवताओं को बुरा-भला कहा तथा दिक्पाल आदि को वहाँ से उठा दिया। हे नारद ! तुम तुमने मैना को समझाते हुए कहा—''हे मैना ! तुम्हारी बुद्धि कहाँ गयी है? यह सब शिव की लीला है। शिवजी परब्रह्म हैं। उठकर अपना सब काम करो।'' मैना ने तुम्हारे इस प्रकार के वचन सुन 'दुर-दुर' कहकर तुम को फटकारा। तब सप्तर्षि अरुन्धती सहित वहाँ आकर मैना को समझाने लगे। मैना ने उनको भी क्रोधित होकर वहाँ से निकाल दिया। जब मैंने अच्छी प्रकार से शिव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:04 AM

की स्तुति की, तब मैना मुझसे अत्यन्त क्रोधित होकर बोली—"चुप रहो, ऐसी व्यर्थ की झूठी बातें मत कहो।" अन्त में हिमालय ने वहाँ जाकर मैना को बहुत समझाया और कहा—"संसार के स्वामी तथा पिता शिव मेरे द्वार पर आये हैं, तुमको ऐसा अनुचित कार्य नहीं करना चाहिए। देखो, एक बार पहले भी वे शिवजी मेरे यहाँ अवधूत स्वरूप धारण कर आये थे तथा ऐसे नाचे-गाये थे कि स्त्री-पुरुष सब अधीर हो उठे। उन्होंने यहाँ ऐसे-ऐसे रूप दिखलाये थे कि उनको देखकर मैं और तुम दोनों ने गिरिजा को उन्हें देना स्वीकार कर लिया था।" इस प्रकार हिमाचल ने अनेक उदाहरण देकर मैना को समझाया, परन्तु मैना के मन में कुछ न आया। तब मैना की यह दशा देखकर गिरिजा बोलीं—"हे माता ! मैं शिवजी के अतिरिक्त और किसी के साथ विवाह न करूँगी। यह बात किस प्रकार हो सकती है कि सिंह का भाग सियार प्राप्त करे?" यह सुनकर मैना क्रोधित हो उठी। हे नारद ! जब मैना का क्रोध शान्त न हुआ, अपितु वह और बढ़ता ही गया, तब विष्णु जी स्वयं वहाँ मैना को समझाने के लिये गए।"

तिरपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! विष्णु जी ने वहाँ पहुँचकर मैना को समझाते हुए कहा—"हे मैना ! तुम शिव को नहीं जानती हो। वे सबसे बड़े, सबके स्वामी तथा अनादि हैं। उन्हीं से प्रकृति, पुरुष, सनकादिक, मैं तथा ब्रह्मा आदि सब उत्पन्न हुए हैं। वे और मैं उन्हीं की सेवा करता हूँ।" अनेक स्तुति करने के पश्चात् विष्णु जी ने फिर कहा—सबको शिवजी में और शिव को सब में समझो। जिस प्रकार एक शरीर अनेक प्रकार के वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार शिवजी को भी समझना चाहिए। शिवजी की भक्ति बड़ी आनन्ददायक है। मैं उन्हीं की शक्ति से सब कार्य करता हूँ तथा उन्हीं के तप से मुझको चक्र प्राप्त हुआ है। सब देवता शिवजी की सेवा से ही अमर हो गये हैं।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! विष्णु जी शिवजी के गुणों का इस प्रकार वर्णन करते हुए मैना से फिर बोले—"हे मैना ! तुमको सब धर्म रूप कहते हैं, इसलिए आज मैं तुमको समझाता हूँ कि तुम्हारा यह परम सौभाग्य है, जो सदाशिव हम सब के साथ तुम्हारे द्वार पर पधारे हैं। तुम इस बात को भली-भाँति समझो कि शिवजी की भक्ति के बिना यह संसार भर का बखेड़ा व्यर्थ है। शिवजी का तप बहुत सरल है। उनके अनेक रूप तथा असंख्य लीलाएँ हैं। जिस प्रकार तुमने सब अनेक रूप देखे थे, उसी प्रकार अब उनके भयानक स्वरूप को भी देख लिया। जो मनुष्य किसी को कुछ देने के लिए कहे और अन्त में अपने वचन का पालन न करके न दे, उसके बराबर और कोई पापी नहीं। अब तुम उठो तथा अपना काम करो। शिवजी तुम्हारा कल्याण करेंगे। मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि शिव और गिरिजा का विवाह अवश्य होगा।"

चौवनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! विष्णु जी के मुख से इस प्रकार के पवित्र वचन सुनकर मैना को कुछ ढाढस हुआ। तब वह उठकर लज्जापूर्वक विष्णु से बोलीं—"आपने मुझको समझाकर बड़ा धीरज बँधाया, परन्तु मैं अपने मन से विवश हूँ। वह बात को समझ कर भी समझने की शक्ति नहीं रखता। मेरा हृदय यह कार्य करने को नहीं चाहता।" हे नारद ! यह सुनकर विष्णु जी ने तुमसे कहा कि तुम शिवजी के पास जाकर निवेदन करो कि वे मैना के हृदय से अपनी माया को खींच लें जिससे मैना अपनी यथार्थ दशा को प्राप्त करे और गिरिजा का विवाह हो सके तथा सब मनुष्य प्रसन्न हो जाएं। हे नारद ! तुम विष्णु जी की आज्ञा पाकर शिवजी के चरणों में पहुंचे तो शिवजी विष्णु की इच्छा जानकर, अत्यन्त सुन्दर हो गये। उन्होंने एक मुख, दो नेत्र, चम्पा के फूल के समान शरीर का रंग तथा सब प्रकार से मोहक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

रूप धारण कर लिया। उन्होंने अपने शरीर को उत्तमोत्तम रत्न एवं जड़ाऊ वस्त्रों से भूषित कर लिया। अग्नि के समान चमकते हुए मस्तक पर चन्दन, कस्तूरी, अगरु, कुंकुम, इत्र आदि लगाये। मणिजड़ित अँगूठियाँ हाथों में पहनी तथा नेत्रों में काजल लगाया। उस समय समस्त संसार की सुन्दरता एकत्र होकर शिवजी में स्थित हो गयी।

हे नारद ! जो परब्रह्म आदि, मध्य, अन्तरहित तथा सृष्टि उत्पन्न करने वाला है, उसने ऐसे रूप में प्रकट होकर कैसी-कैसी लीला की? हे नारद ! तुमने शिवजी का ऐसा सुन्दर स्वरूप देखा, अत्यन्त आनन्द माना। तुम स्तुति करने लगे और मैना से बोले कि हे मैना ! अब तुम शिवजी के रूप के देखो। तब मैना ने शिवजी के रूप को देखा और अत्यन्त प्रसन्न हुई। फिर चारों ओर प्रसन्नता छा गयी। देवता उच्च स्वर में 'जय शिव शम्भु' कहने लगे। अप्सराएँ नृत्य करने लगीं। शंख, मृदंग आदि वाद्य बजने लगे। उस समय मैना भी बोली—''यह हमारा परम सौभाग्य है।'' इसके पश्चात् शिवजी सम्पूर्ण बारात के साथ हिमाचल के द्वार को चले।''

❁❁❁

पचपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! वे लोग संसार में बड़े भाग्यशाली हैं, जो शिवजी की भक्ति करते हैं। शिवजी की भक्ति तीनों लोकों को भाग्य से ही प्राप्त होती है। वे ही सदाशिव जब देवताओं सहित संसारी मनुष्यों के समान हिमाचल के द्वार को चले, तब उनको देखने के लिए नगर की सब स्त्रियाँ, जो जिस अवस्था में बैठी थीं, उसी प्रकार उठकर चल दीं। वे शिवजी को देखकर परस्पर कहती थीं कि गिरिजा को ऐसा पति तप के ही कारण मिला है। वे सब मिलकर परस्पर मंगल गान करने लगीं। मैना ने अत्यन्त प्रसन्न होकर शिवजी की आरती उतारी। गिरिजा ने भी अपनी माता से छिपकर शिवजी को देखा। उनका जैसा सुन्दर स्वरूप गिरिजा को दिखाई दिया, उसकी प्रशंसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

नहीं की जा सकती। गिरिजा ने सुन्दर स्वरूप को देखकर प्रणाम किया। तब हिमाचल ने कुल तथा संसार की रीति के अनुसार बड़ी प्रसन्नता व धूमधाम के साथ सब रीतियाँ पूरी कीं। द्वारचार के पश्चात् गायन, नृत्य, पुष्प वृष्टि तथा अनेक प्रकार के आनन्द मंगल होने लगे। तत्पश्चात् बारात जनवासा में गयी।''

छप्पनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! हिमाचल ने बारात की सेवा के लिए दास-दासी तथा अन्य सब प्रकार की सामग्री भेज दी। गिरिजा ने ध्यान करके बारात में सिद्धि को प्रकट कर दिया, जिससे किसी बात की कमी न रह गयी। विष्णु आदि सब देवता हिमाचल की बड़ाई करने लगे, परन्तु वे सब यह न जान सके कि यह सब सिद्धि गिरिजा की है। इसके पश्चात् मैंने हिमाचल से लग्न मुहूर्त का ध्यान दिलाते हुए कहा कि अब देर मत करो, यह सुनकर हिमाचल ने प्रसन्न होकर अपने पुरोहित को बुलाया। पण्डित वेद पाठ करते हुए अनेक प्रकार के बाजे बजवाते हुए चले तथा शिवजी के पास जाकर यह निवेदन किया कि अब आप हमारे घर चलें। तब मैं, शिव सहित हिमाचल के घर को गया। हम सब देवता वहाँ पहुँचकर उचित स्थानों पर बैठे। फिर गिरिजा को भीतर से बुलवाया। सबने गिरिजा को आते हुए देखकर प्रणाम किया। गिरिजा को उत्तम स्थान पर बैठने के उपरान्त विवाह की सब रीतियाँ होने लगीं। दोनों ओर से बहुत-सा दान दिया गया, जो प्रत्येक को उसकी इच्छानुसार ही मिला। उस समय चारों ओर बड़ा आनन्द हुआ। स्त्रियाँ मंगल गान कर रही थीं।''

हे नारद ! इसके पश्चात् बारात वहाँ से चल कर जनवासा में आयी। तब हर प्रकार के भोजन परोसे गए। हिमाचल ने अपने घर में ही छप्पन प्रकार के भोजन बनवाए थे। हिमाचल ने बारात को आने का सन्देश भेजा। थोड़ी ही देर में सब बारात आ पहुँची। हिमाचल ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

सबके पाँव धोये। जिस समय उन्होंने शिव के चरण धोए, उस समय वे प्रसन्नता से विह्वल हो गए। उन्होंने यही सोचा कि ये वही चरण हैं, जिनका विष्णु एवं ब्रह्मा ध्यान करते हैं। चरण धोने के पश्चात् शिवजी को एक सुन्दर स्वर्ण की चौकी पर बैठाया तथा उनके सम्मुख भोजन लाकर रखा। प्रत्येक के सम्मुख स्वादिष्ट भोजन रखे गये। वे भोजन चारों प्रकार के थे, जिनमें छहों रसों का स्वाद था। सभी भोजन करने लगे। स्त्रियों ने गालियाँ गायीं, जिनमें वे सब के नाम लेती थीं और बाराती प्रसन्न होकर बहुत धीरे-धीरे भोजन करते थे। जब भोजन समाप्त कर चुके, तब उनको पान बाँटे गये। तदुपरान्त वहाँ से बारात विदा होकर जनवासा में आईं। जब मैंने विवाह की शुभ लग्न पहले के विचार के अनुसार देखी तो हिमाचल को सूचित कर दिया। हिमाचल ने उसी समय अपना एक पुत्र शिवजी को आदर सहित लाने के लिए भेज दिया। शिवजी देवता एवं मुनियों सहित तुरन्त वहाँ से चल दिये। उस समय अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। उस समय चारों ओर जो आनन्द छा गया उसका वर्णन किसी प्रकार भी नहीं किया जा सकता।''

सत्तावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उस समय शिवजी का विवाह अपने नेत्रों से देखने के लिए सभी उत्सुक एवं प्रसन्न थे। मैना ने सर्वप्रथम शिवजी की आरती उतारी, इसके पश्चात् शिवजी अन्दर गए। देवता एवं मुनि आदि भी अन्दर आकर बैठ गये। वे सब शिवजी के चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख को चकोर की भाँति देखने लगे। उस समय मण्डप के चारों ओर की धरती चार प्रकार से पवित्र की गयी। उसके नीचे सिंहासन पर शिवजी विराजमान हुए। फिर गिरिजा आयीं। वे सोलह श्रृंगार किये हुए अपने सखियों के साथ थीं। विष्णु जी तथा हम सब देवताओं ने हाथ जोड़कर गिरिजा को प्रणाम किया तथा सबने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शुभ आशीर्वाद दिया। दोनों ओर के मुनियों ने प्रथम गणपति एवं गौरी का पूजन किया। तदुपरान्त वे अन्य रीतियाँ पूरी करने लगे।''

हे नारद ! पंचदेवता अनादि हैं तथा पाँचों के समान जानकर उनकी पूजा करनी चाहिए। जिस प्रकार वेद में विवाह की विधि लिखी है, हिमाचल ने उसी प्रकार सब रीतियाँ पूरी कीं। मैना ने बहुत महीन तथा उत्तम वस्त्र शिवजी को दिये। उसी प्रकार के दो वस्त्र गिरिजा को भी दिये। गिरिजा हिमाचल की दाहिनी ओर आकर बैठीं और शिवजी गिरिजा के सम्मुख बैठे। तब मुनीश्वरों ने वेदपाठ किया। मैना भी कन्यादान के समय आयीं। पुरोहित दूसरे पक्ष का गोत्र-नाम पूछने लगा तथा अपने कुल का बताने लगे। पुरोहित दूसरे पक्ष का गोत्र-नाम पूछने लगे तथा अपने कुल का बताने लगे। हिमाचल ने गर्ग, विष्णु जी तथा मुझसे कहा कि अब आप लोग कन्यादान करा दीजिये, परन्तु हम लोग शिवजी का गोत्रोच्चारण न कर सके, इसलिए विवश होकर चुप ही रहे। तब हिमाचल ने शिवजी से कहा कि आप अपना गोत्र एवं कुल स्वयं वर्णन कीजिये ; क्योंकि बिना इसके कन्यादान नहीं हो सकता। शिवजी ने लीला करके अपने मुख से कुछ न कहा, वे चुप हो गये। यह देखकर सब लोग आश्चर्य करने लगे। उस समय सबको बहुत दुःख भी हुआ, सबकी आशा टूट गयी। हिमाचल का यह वचन एवं हठ किसी को भी भला न लगा। सब परस्पर एक-दूसरे की ओर देखने लगे, परन्तु शिवजी की लीला को कोई न जान सका। गिरिजा अपने पति के मुख को देखकर सबसे अधिक चिन्तित हुई और शिवजी का ध्यान करने लगीं। शिवजी ने गिरिजा की चिन्ता को जानकर, तुम (नारद) पर अपनी इच्छा प्रकट की। तब तुम तुरन्त हँसकर अपनी वीणा बजाने लगे। हिमाचल मन में अत्यन्त प्रसन्न हुए। सब लोगों ने तुम से कहा कि यह समय वीणा बजाने का नहीं है।

हे नारद ! यह सुनकर तुमने उत्तर दिया—''हे राजन् ! तुमने जो शिवजी का गोत्र एवं कुल पूछा है सो हमने शिवजी के संकेत के अनुसार उत्तर दिया है अर्थात् शिवजी का कुल एवं गोत्र नाद है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

शिवजी का शरीर नादरूपी है तथा शिवजी नादपूर्ण है। शिवजी का कुल एवं गोत्र जो ब्रह्मा, विष्णु तथा हम सब में से कोई नहीं जानता, कौन मनुष्य बता सकता है। तुम तो मूर्खों जैसी बातें करते हो। शिव सशरीर, शरीर रहित, निष्कुल, सकुल, अगोत्र तथा सगोत्र सब कुछ हैं। अब समय बीता जाता है, इसलिए तुम कन्यादान कर दो।'' तब हिमाचल ने उसी समय कुश एवं जल लेकर कन्यादान कर दिया तथा गिरिजा का हाथ शिवजी के हाथ में पकड़ा दिया। इससे हिमाचल की तीनों लोकों में कीर्ति हुई। शिवजी ने गिरिजा का हाथ पकड़ा सो यही विवाह पद्धति लोक में प्रसिद्ध हो गयी।''

अट्ठावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उस समय सब आनन्दित हुए। दास, दासी आदि को भरपूर पारितोषिक दिया गया। तदुपरान्त पुरोहित गिरिजा को शिव के वामभाग में बैठाकर हवन करने लगे। उत्तम रीति से भाँवरें पड़ने लगीं, जिनको देखकर सबको आनन्द प्राप्त हुई। तब शिवजी ने ऐसा चरित्र किया कि भाँवरें पड़ते समय गिरिजा का एक अँगूठा कपड़े से हट जाने से मुझे दिखाई दे गया। मैंने भावी के वश में होकर उसको काम की दृष्टि से देखा। यद्यपि मैंने अपने को बहुत सँभाला, परन्तु मेरा वीर्य धरती पर गिर पड़ा। उससे असंख्य बटुक एवं जटाधारी तेजस्वी उत्पन्न हुए। वे सब मेरी स्तुति करके खड़े हो गये। शिवजी ने उनको देखकर अत्यन्त क्रोधित हो त्रिशूल उठा लिया। जब सबने मिलकर शिवजी की विनती की तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले—''हे ब्रह्मा ! हम अप्रसन्न नहीं हैं। तुम सुखपूर्वक अपना कार्य करो।'' तब मैंने उन सब बटुकों को सूर्य को सौंप कर कहा कि तुम सब इनकी सेवा में रहो। वे सब सूर्य की सेवा में ब्रह्मचारी रहकर, वेद के महान् ज्ञाता हुए।

हे नारद ! इसके पश्चात् मैंने विवाह का जो कार्य शेष रह गया था,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

वह सब भली-भाँति पूर्ण करा दिया। फिर हिमाचल ने हम सबको जो कुछ उचित था, दिया। शिवजी को उन्होंने रत्न आदि हर प्रकार का धन-द्रव्य दहेज के रूप में दिया। हिमाचल की उदारता से उस समय कोई भिक्षुक खाली हाथ न रहा। फिर हम सब तो अपने-अपने निवास स्थान पर लौट आए, परन्तु स्त्रियाँ शिवजी को घर के भीतर ले जाकर सब रीतियाँ पूरी करने लगीं। उन स्त्रियों ने शिवजी के साथ अनेक प्रकार के हास्य किए।''

उनसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सब रीतियाँ पूरी हो जाने के पश्चात् स्त्रियों ने शिव और गिरिजा को अन्तःपुर में ले जाकर उत्तम शैय्या पर बैठाया। गिरिजा और शिव के उस समय के स्वरूप का, जो वस्त्राभूषण से सज्जित था, किसी प्रकार भी वर्णन नहीं किया जा सकता। उस समय सब देव पत्नियाँ शिवजी के पास गयीं, जिनमें सावित्री, जाह्नवी, लक्ष्मी, सरस्वती, अहल्या, तुलसी, शतरूपा, संज्ञावर्ता, अदिति तथा सोलहों संसार की माताएँ जो अपनी कृपा द्वारा संसार के दुःखों को नष्ट कर देती हैं, थीं। सर्वप्रथम सरस्वती बोलीं—''हे देवाधिदेव ! तुमने प्राणों के समान पत्नी पायी अब अपनी प्यारी के मुख को तो देखो।'' लक्ष्मी ने कहा—''हे देवताओं के देवता ! अब समस्त लज्जा त्याग कर अपनी प्यारी को हृदय से लगा लो।'' फिर सावित्री बोलीं—''हे देव ! तुम स्वयं भोजन करके अपनी प्यारी को भोजन कराओ और उन्हें पान खिलाओ।'' तुलसी बोलीं—''हे शिव ! आपने तो स्त्री को छोड़कर कामदेव को भस्म कर दिया था तथा संसार से त्यागी एवं काम-रहित बन गये थे, फिर अरुन्धती को तुमने क्यों सिखाकर भेजा?'' स्वाहा ने कहा—''हे गिरिजापति ! स्त्री के वचन सुनकर लज्जित मत होना। यदि वह कोई ढिठाई से लाड़-प्यार की बातें कहें तो उसका बुरा मत मानना ; क्योंकि संसार की यही रीति है।'' इसके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:05 AM

पश्चात् शंखा ने सबसे कहा कि अब गिरिजा को शिव के साथ वहाँ भेज दो, जहाँ सुन्दर मन्दिर पुष्पों से सज्जित हों तथा रत्नदीप जलते हों।"

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! स्त्रियों की ऐसी हास्यपूर्ण बातें सुनकर शिवजी अत्यन्त लज्जित हुए तथा बोले—"हम आप सब को हाथ जोड़ते हैं तथा विनय करते हैं कि हमारे समक्ष ऐसी बातें मत कहो।" सब स्त्रियाँ शिवजी के यह वचन सुनकर लज्जित हो गयीं तथा चित्रलिखित-सी चुप होकर रह गयीं। उस समय शिवजी को प्रसन्न देखकर रति बोली—"हे शिवजी ! आपने तो अपनी स्त्री को ग्रहण कर प्रसन्नता प्राप्त की ; परन्तु मेरे पति को व्यर्थ ही जला दिया। अब मैं यह आशा लेकर आपसे विनय करती हूँ कि आप मेरे पति को जीवित कर दीजिये। इस समय मेरे अतिरिक्त सारा संसार आनन्दित है।" यह कहकर रति विलाप करने लगी, जिससे सभी दुखित हुए। फिर रति अपने पति की जली हुई भस्म को, जिसे वह बाँध कर लायी थी, खोलकर शिवजी के आगे खड़ी हो गयी। रति का रोना सुनकर सब स्त्रियाँ भी रोने लगीं। उस समय शिवजी ने रति एवं देव-पत्नियों का रुदन सुनकर एक बार अमृत दृष्टि से देखा जिससे उसी समय कामदेव अपनी भस्म से उत्पन्न हो गया। यह देखकर रति अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा कामदेव शिवजी की स्तुति करने लगा। शिवजी ने कहा—"हे कामदेव ! अब तुम शोक मत करो तथा बाहर बारात में जाकर बैठो।" कामदेव ने शिवजी के आदेशानुसार जनवासा में जाकर, मुझको एवं विष्णु जी को प्रणाम किया। मैंने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम शिव एवं गिरिजा के प्यारे हो। अस्तु, अब तुमको किसी प्रकार का भय नहीं करना चाहिए। यह सुनकर कामदेव वहीं बैठ गया।

हे नारद ! फिर स्त्रियाँ अत्यन्त प्रसन्नता के साथ शिवजी एवं गिरिजा को अनेक प्रकार की विचित्र वस्तुओं एवं रत्न आदि से भूषित मुख्य अन्तःपुर में ले गयीं। उस अन्तःपुर को विश्वकर्मा ने स्वयं अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हाथों से निर्मित किया था। चन्दन, कस्तूरी, अगरु आदि से मन्दिर में सब ओर सुगन्धि फैल रही थी। उसमें कहीं विष्णु लोक, ब्रह्म लोक, इन्द्रलोक तथा गोलोक, रासमण्डल आदि के चित्र थे और कहीं पर वह कैलाश पर्वत बना हुआ था, जहाँ वृद्धावस्था एवं मृत्यु का कोई भय नहीं है। शिवजी उन सुन्दर चित्रों को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। जब प्रभात हुआ तो चारों ओर से अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे तथा मुनि, देवता आदि जयकार का शब्द करने लगे। तब विष्णु जी ने धर्मराज से कहा कि तुम शिवजी के पास जाकर उन्हें किसी उपाय से निन्द्रा से जगाकर उठाओ। विष्णु जी के वचन सुनकर धर्मराज ने शिवजी के समीप जाकर कहा—"हे महाराज ! कृपा कर अब उठिये तथा जनवासा में चलकर सबको आनन्दित कीजिए।" धर्मराज की यह बात सुनकर शिवजी हँस कर बोले—"हे धर्मराज ! तुम चलो, मैं अभी आता हूँ। शिवजी बड़ों की आज्ञा पाकर, मन में हँसते हुए जनवासा की ओर चल दिए।"

साठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अन्तःपुर से उठकर जब शिवजी जनवासा में आए, तब हमें सब देवताओं आदि को बुला लिया।" विष्णु जी तथा मैंने, तुम्हें सप्तर्षियों को सम्बोधित करते हुए, इस प्रकार उच्च स्वर में कहा—"हे नारद ! एवं हे सप्तर्षियो ! तुमने बड़ी कृपा की। केवल तुम्हारी कृपा के फलस्वरूप ही यह विवाह सम्पन्न हुआ है।" फिर विष्णु जी तथा मैंने बहुत-सा दान देकर हिमाचल से विदा माँगी। हिमाचल बहुत-से लोगों के साथ आकर विनय करते हुए बोले—"हे देवताओ ! आप मुझे छोड़कर न जायें। यद्यपि मैं आप लोगों की भली प्रकार से सेवा न कर सका, सेवा तो क्या आपके चरण भी नहीं धो सका। मैं अत्यन्त लज्जित हूँ, यहाँ तक कि पुष्प भी आप लोगों को भेंट न कर सका। आशा है आप लोग उसका विचार न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

करके पुनः मेरे गृह को पवित्र करेंगे।"

हे नारद ! यह सुनकर मैंने, विष्णु जी ने तथा समस्त देवताओं ने हिमाचल से कहा—"हे पर्वतराज ! तुम तो धन्य हो। हमने ऐसा आनन्द कहीं प्राप्त नहीं किया। इस प्रकार का मनोहरी स्थान तथा भोजन कहीं प्राप्त नहीं हुआ। ऋद्धि-सिद्धि तुम्हारी चेली हैं। संसार में तुम्हारे समान और कौन है?" इसी प्रकार दोनों ओर से नम्रता के वचन कहे गये। इसके उपरान्त हिमाचल बारात को अपने घर भोजन कराने के लिए ले गये। वहाँ पहुँचकर वे बारात को भोजन कराने लगे और स्त्रियाँ शिवजी को सुनाकर गाली गाने लगीं, जिनका आशय यह था कि यद्यपि तुम अपनी सम्पूर्ण सामग्री अशुभ रखते हो, परन्तु अपने भक्तों को सब कुछ प्रदान करते हो। यह सुनकर शिवजी ने वरदान दिया कि जो इस वृत्तान्त को पढ़ेगा, वह सदैव प्रसन्न बना रहेगा।

इकसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इस प्रकार हिमाचल ने तीन दिन तक आग्रह एवं विनती करके बारात को नहीं जाने दिया। चौथे दिन मैंने स्वयं पश्चिम मुख से शिव-गिरिजा को बैठाकर होम कराया तथा जो रीतियाँ शेष रह गयी थीं, उन सब को पूर्ण कराया। तत्पश्चात् अभिषेक किया गया। सब ने शुभाशीर्वाद दिया। फिर सब बारात को भोजन कराया गया। प्रातःकाल जब हिमाचल से विदा माँगी तो हिमाचल अत्यन्त विनय के साथ बारात विदा की आज्ञा न देकर, उसे कई दिन तक वहीं ठहराये रहे। हिमाचल के प्रेम एवं शील के कारण किसी को भी ऐसी संगति छोड़ने की इच्छा न हुई। उस समय देवताओं ने हिमाचल की बहुत स्तुति की तथा समझाते हुए कहा—"हे राजन् ! शिवजी परब्रह्म हैं जिनके हम सब सेवक हैं। वे तुम्हारे घर आये, इसलिए संसार में तुम से अधिक भाग्यवान् कौन है?" यह कहकर सब देवता एवं मुनि अत्यन्त दुःखी होकर वहाँ से लौट आये तथा कोई

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

किसी से कुछ न कह सका। अन्त में निराश होकर हिमाचल ने लज्जा से एक सभा कर सबको यह सूचना दी कि शिवजी अब विदा होने वाले हैं। हिमाचल के मुख से ऐसे वचन सुनकर सबलोग अचेत तथा मूर्च्छित से हो गये, परन्तु फिर हिमाचल ने गुरु की आज्ञानुसार सब प्रकार की सामग्री उपस्थित कर, बारात को घर के भीतर बुला लिया।

हे नारद ! जब बारात के सब लोग आ गए, तब मैंने शिव एवं गिरिजा को मध्य में बैठा लिया। फिर गौरी-गणपति की पूजा कराकर, सब करने योग्य काम पूरे करा लिए। हिमाचल ने दहेज में पकवान, फल, हाथी, घोड़े, रथ, दास, दासी, गौ आदि इतने दिये जो असंख्य थे। इसके उपरान्त हिमाचल ने कहा—"मुझे पूर्ण आशा है कि जो अपराध मुझसे हुआ हो, उसे आप लोग क्षमा करेंगे।" हिमाचल के ऐसे वचन सुनकर सब देवता बोल उठे—"हे हिमाचल ! तुम मुक्त हो गये, क्योंकि शिवजी ने तुम पर दया की है। तुमने गिरिजा का विवाह शिवजी के साथ कर दिया, यह हम सब पर बड़ी कृपा हुई।"

बासठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इस प्रकार हिमाचल तथा मैना सहित समस्त परिवार बारम्बार शिवजी की स्तुति करने लगा। तत्पश्चात् सब बारात वहाँ से वास स्थान में लौट आयी। शिवजी हिमाचल के घर के भीतर गये ; जहाँ सब स्त्रियाँ एकत्र होकर शिवजी को विदा करने लगीं। शिवजी ने कहा—"सब बारात यहाँ से विदा हो गयी, अब मुझे भी विदा होने की आज्ञा दें।" यह सुनकर मैना ने बड़े स्नेह के साथ गिरिजा को शिवजी को सौंप दिया तथा बोली—"हे शंकर ! यह गिरिजा मुझे प्राणों से भी अधिक प्रिय है तथा अभी इसकी अवस्था छोटी ही है। यह अधिक कोमलांगी है। इसको संसार के रीति-रिवाज अब तक मालूम नहीं। यह बहुत ही सीधी है, इसलिए आप इसे प्रेम तथा कृपा से रखें। यह कहकर मैना शिवजी के चरण पकड़कर मोहित हो गयी।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

हे नारद ! यह सुनकर शिवजी बोले—"तुम और हिमाचल धन्य हो जिनकी संसार में सब लोग स्तुति करते हैं, तुम कुल एवं परिवार सहित मुक्ति प्राप्त करोगे। हमें भक्तजन वैर, भय, प्रीति, भक्ति एवं सम्बन्ध आदि द्वारा अनेक प्रकार से पाते हैं।" यह कह शिवजी मैना से विदा होकर हिमाचल के पास आए तथा हाथ जोड़कर खड़े होकर विदा माँगी। उस समय हिमाचल अत्यन्त प्रेम एवं भक्ति से आँसू बहाते हुए बोले—"हे प्रभु ! आप मेरे समस्त अपराधों को क्षमा करें तथा मुझे अपना सेवक समझकर सब दुःख दूर करते रहें। यह कहकर हिमाचल ने शिवजी को विदा किया। तब बारात बड़ी धूमधाम से चली उस समय सब प्रकार के बाजे बजने लगे।"

तिरसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इस प्रकार शिवजी वहाँ से विदा होकर नगर के बाहर ठहरे। उधर मुनियों ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा को भी विदा कीजिये। जब यह समाचर भीतर मैना के पास भेजा गया तो मैना सुनकर प्रेम-सागर में डूब गयी। नगर भर की स्त्रियों को बुलाया गया। वे सब वस्त्राभूषणों से सज्जित होकर गिरिजा को विदा करने के लिए आयीं। ब्राह्मण स्त्रियों ने गिरिजा को पातिव्रत धर्म की शिक्षा देते हुए कहा—"हे गिरिजे ! अपने पति की सेवा लोक में अत्यन्त आनन्द प्राप्त करने वाली है। तुम दिन-रात पति की सेवा में ही लगी रहना। स्त्री के लिए इसके समान कोई दूसरा तप नहीं है। संसार में चार वस्तुएं सुख देने वाली हैं—पहला प्रियतम, दूसरा धर्म, तीसरी स्त्री तथा चौथा सन्तोष; परन्तु इन चारों की परीक्षा विपत्ति के समय में ही हो सकती है। जो स्त्रियाँ अपने पति का सम्मान नहीं करतीं, उनकी सेवा नहीं करतीं, वे निःसन्देह नरक में जाती हैं। इसलिए स्त्री को सब कुछ त्यागकर, केवल अपने पति की ही सेवा करना उचित है। वेदों में चार प्रकार की स्त्रियाँ बतायी गयीं हैं। पहली उत्तम वह है, जो स्वप्न में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भी दूसरे पुरुष का मन में विचार न लावे। दूसरी मध्यम, जो अन्य पुरुष को पुत्र, पिता व भाई के समान समझे। तीसरी निकृष्ट, जो अपने धर्म का विचार करके पर-पुरुष की संगति से बची रहे। चौथी अति अधम, जो अपने पति व कुल के भय से दूसरे की संगति से बच जावे। समय से न डरना भी चौथी प्रकार की स्त्री में ही गिना गया है। पतिव्रता स्त्रियों की सभी प्रतिष्ठा करते हैं।''

''हे नारद ! ब्राह्मण स्त्रियाँ गिरिजा को इस प्रकार समझाती हुईं फिर बोलीं कि स्त्री से चाहे अनेक पाप हुए हों, परन्तु वह केवल अपने पतिव्रत धर्म से ही परम पद प्राप्त करती है। हे गिरिजा ! शिवजी जितनी स्त्रियों पर कृपा करते रहे हैं, उतनी और किसी पर नहीं। जो स्त्रियाँ अपने पति का विरोध करती हैं, वे निःसन्देह नारकीय हैं। उनकी पहचान यह है कि दूसरा जन्म धारण कर या तो युवावस्था में ही वैधव्य को प्राप्त करती हैं या पति सहित अनेक प्रकार के दुःखों को भोगती हैं। पतिव्रता स्त्रियों की वेद भी बड़ाई करते हैं। स्त्री को उचित है कि प्रथम अपने पति को भोजन कराकर, स्वयं पीछे खाए तथा प्रथम अपने पति को सुलाने के पश्चात् स्वयं सोए। पति जो आज्ञा दे, उसको बिना किसी हठ के पूरा करे। बुरी स्त्रियों से प्रेम तथा संगति न रखे। अपने मुख से कभी पति की निन्दा के शब्द न निकाले। एकान्तवास न करें। जहाँ अपने पति की प्रसन्नता तथा इच्छा देखे, वहाँ स्वयं भी अधिक प्रीति बढ़ावे तथा अपने पति को किसी समय भी न छोड़े। विपत्ति के समय में भी एक समान ही देखे। ऐसे नियम से चले, जिससे पति को अधिक परिश्रम न करना पड़े। जो स्त्री अपने पति की इच्छा के बिना व्रत आदि करती है, वह अपने पति की आयु को कम करती है, तथा स्वयं नरक में जाती है। स्त्री को यही उचित है कि वह पति से ऊँचे स्थान पर न बैठे और पति के सम्मुख किसी पर-स्त्री से बात न करे। झूठ एवं दुर्वचन मुख से न निकाले। सदैव लड़ाई-झगड़ों से दूर रहे। यदि किसी समय उसका पति मारपीट करे, तो स्त्री को क्रोध न करना चाहिए और न भागना चाहिए।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! ब्राह्मण स्त्रियाँ गिरिजा को पुनः समझाते हुए बोलीं—"हे गिरिजा ! देखो अत्रि ब्राह्मण की स्त्री अनुसूया ने इस धर्म से कितना आनन्द प्राप्त किया तथा वाराह मुनि को अपने तेज से जलाकर दूसरे एक ब्राह्मण को जीवित किया। पातिव्रत धर्म की एक कथा मुनि इस प्रकार कहते हैं कि एक तपस्वी तप करते थे। एक बगुली ने उनके सिर पर विष्ठा कर दी। जब तपस्वी ने ऊपर दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखा तो उसी समय बगुली जलकर भस्म हो गयी। यह देखकर तपस्वी ने अनुमान लगाया कि हमारा तप अब पूर्ण हो गया है। इसी विचार से वे तप को छोड़, चलते-फिरते एक पतिव्रता स्त्री के द्वार पर आये। उस स्त्री ने तपस्वी की बड़ी सेवा की तथा द्वारा पर तपस्वी को ठहराकर, स्वयं घर पर दान के लिए वस्त्र लेने गयी। संयोगवश उसके पति ने घर में उससे किसी काम के लिए कहा। वह उसी कार्य में लग गयी तथा तपस्वी की बात भूल गयी। उसको देख तपस्वी ने क्रोधित होकर शाप देने की इच्छा की। उस समय उस स्त्री ने तपस्वी को क्रोधित देखकर कहा—"हे तपस्वी ! मुझको किसी प्रकार का भय नहीं है। तुम इतना क्रोध क्यों करते हो? क्या मैं बगुली हूँ?" इतना सुनकर तपस्वी का अहंकार नष्ट हो गया। उसने उसकी बारम्बार प्रशंसा कर इस बात को समझा कि पातिव्रत धर्म सब धर्मों से बड़ा है। हे गिरिजे ! तुम विश्वास रखो कि संसार में पति से बढ़कर अन्य कोई देवता नहीं है।"

चौंसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मैना ने भी गिरिजा को इसी प्रकार बहुत-सी बातें समझायीं। फिर उनको विदा करने की इच्छा की। वे गिरिजा के वियोग का दुःख स्मरण कर अत्यन्त दुखी हुईं। वे गिरिजा को बारम्बार अपनी बाहों में लिपटा लेती थीं। इसी प्रकार शिवजी की सेवा के लिए बार-बार कहती हुई रोने लगीं। वे बोली—"हे पुत्री !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दूसरे के फन्दे में पड़कर कुछ आनन्द नहीं मिलता।'' गिरिजा भी प्रेम से मैना के चरणों पर गिर पड़ीं तथा मूर्च्छित हो गयीं। मैना ने उन्हें उठाकर अपनी छाती से लिपटा लिया। फिर गिरिजा की सखियाँ गिरिजा को मैना से अलग कर, ले चलीं। इसी प्रकार गिरिजा सबसे विदा होकर स्वयं रोती तथा दूसरों को रुलाती हुई चलीं। गिरिजा की बातों को सुनकर बड़े-बड़े धैर्यवान् भी अधीर हो उठते थे। यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी रोने लगे। हिमाचल को भी बहुत दुःख हो रहा था। उस समय कोई भी ऐसा पंडित, ज्ञानी शेष न रहा, जिसको रोने-पीटने के अतिरिक्त कुछ ज्ञान रहा हो। तब ब्राह्मणों ने हिमाचल तथा उनके मित्रों से कहा कि अब शीघ्रता करो, शुभ मुहूर्त्त समाप्त हुआ जाता है। यह सुन हिमाचल ने निरुपाय होकर गिरिजा को पालकी पर सवार कर, स्त्री-धर्म की शिक्षा दी। मैना आदि अन्य समस्त स्त्रियाँ तथा पुरुष एक साथ गिरिजा को आशीष देने लगे। हिमाचल ने गिरिजा को वे दासियाँ भी दे दीं, जिन्हें गिरिजा विशेष रूप से चाहती थीं। जितने तोता आदि मधुरवाणी के पक्षी थे, जिन्हें गिरिजा बहुत प्यार करती थीं, वे भी गिरिजा के साथ कर दिये। गिरिजा के चलने के समय मार्ग में शुभ-शकुन हुए। बाजे बजने लगे तथा चारों ओर प्रसन्नता की बातें दृष्टिगोचर होने लगीं।

हे नारद ! गिरिजा के विदा के समय बहुत-सा धन-द्रव्य लुटाया गया। चलने के समय हिमाचल ने अपने पुत्रों सहित देवताओं से प्रार्थना की कि हम कुछ दूर तक आपके साथ चलेंगे। कुछ दूर तक जाने के पश्चात् देवताओं ने हिमाचल को विदा किया। हिमाचल भी वहाँ से यह कहकर कि मुझे तीनों लोकों में बड़ाई प्राप्त हुई है, सब को प्रणाम कर विदा हुए। उन्होंने शिवजी से कहा कि आप मुझे कृपा करके अपनी भक्ति दीजिये। शिवजी ने प्रसन्न होकर हिमाचल की इच्छा पूरी की और उन्हें विदा किया। हिमाचल के यहाँ जितने अतिथि आये थे, उन सबको भी हिमाचल ने आदर सहित विदा किया। उस समय विन्धय पर्वत ने हिमाचल से कहा—''हे राजन् ! तुम शिवजी से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

सम्बंध स्थापित करके, हम सब से श्रेष्ठ हुए।'' अस्तु, जब शिवजी बारात के साथ कैलाश पर्वत पर पहुँचे, तब वहाँ हर प्रकार के आनन्द की सामग्री एकत्र हुई। बाजे बजने लगे तथा शिवजी की आरती उतारी गयी। तदुपरान्त शिव-गिरिजा ने शुभ लग्न में मन्दिर में प्रवेश किया।

पैंसठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शिव-गिरिजा के मन्दिर में प्रवेश करने के पश्चात् सब स्त्रियाँ एकत्र होकर उनकी आरती उतारने लगीं। विष्णु तथा हम सब ने दोनों का पूजन किया। उस समय हम सबको इस प्रकार आनन्द प्राप्त हुआ जिस प्रकार दरिद्री को धन, अन्धे को नेत्र तथा रोगी को अमृत प्राप्त होने से होता है। हम सब ने उनकी अलग-अलग स्तुति की, जिससे शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर वहाँ से विदा होने की आज्ञा माँगते हुए शिवजी से यह निवेदन किया—''हे कैलाशपति ! हम सबका जो मनोरथ है, उसे आप भली-भाँति जानते हैं, आप हम पर कृपा बनाये रहें और अब हमें जाने की आज्ञा दें।''

हे नारद ! इसके उपरान्त क्रमशः वहाँ से सब लोग विदा हुए। शिवजी ने विष्णु तथा मुझ से कहा—''मुझे तुमसे अधिक प्रिय कोई नहीं है। तुम्हारे कहने से ही मैंने गिरिजा से विवाह किया। अब तुम भी अपने लोक को लौट जाओ। तुम्हारे सब कार्य सम्पन्न होंगे। तारक दैत्य शीघ्र ही यमलोक में जायेगा।'' यह कहकर शिवजी हँस कर चुप हो गए। विष्णु जी तथा मैं भी हँसकर बड़ी प्रसन्नता से 'जय-जय श्रीशम्भु' कहते हुए, उनकी स्तुति करके वहाँ से चल दिये। सब बारात के चले जाने के पश्चात् शिव-गण उनकी सेवा करने लगे। शिवजी जगत् पिता तथा गिरिजा जगत् माता हैं। हम उनके श्रृंगार का किस प्रकार वर्णन करें? संसार में शिव के समान और कौन सहायक है। उन्होंने परब्रह्म होकर भी संसार का दुःख दूर करने को विवाह किया, जिससे उनकी वह लीला कह-सुनकर संसारी जीव मोक्ष प्राप्त करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

शिव-गिरिजा के विवाह की यह कथा अत्यन्त मंगल प्रदान करने वाली है। जो इसको न सुने, वह पशु के समान है। इस संसार में शिवजी के यशगान के अतिरिक्त मुक्ति प्राप्त करने की कोई सरल युक्ति नहीं है। यद्यपि उनका यश अपार है ; परन्तु जितना सुना जा सके, भलाई के लिए उतना ही बहुत है। जो इस कथा को प्रेमपूर्वक सुनेगा तथा दूसरों को सुनावेगा, वह शिवजी के समान हो जायेगा तथा आनन्द प्राप्त करेगा। जो कम से कम भी इस कथा का पाठ करेगा, वह भी धन्य होगा। चारों वर्ण के जो लोग इस कथा का पाठ करेंगे, उनके सब रोग दूर होंगे। सब कष्टों से छुटकारा मिलेगा तथा अन्त में मुक्ति प्राप्त करेंगे।''

इति श्री शिवपुराणे श्री शिवविलासे तीर्थखण्डे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां शिवगिरिजाविवाहवर्णननाम तृतीयोखण्डस्समाप्त।। ३॥

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

चौथा खण्ड

पहला अध्याय

इतनी कथा सुनकर शौनक जी बोले—"हे सूत जी ! नारद जी ने शिवजी के विवाह का वर्णन सुनकर ब्रह्मा जी से फिर क्या पूछा?" सूत जी ने कहा—"नारद जी ने ब्रह्मा जी से पूछा—"हे पिता ! मैं समस्त संसार में भ्रमण करता रहा, परन्तु शिवजी का तत्त्व भेद न जान सका। फिर विष्णु जी के कथनानुसार मैंने आपकी सेवा में पहुँचकर थोड़ा-सा शिवजी का चरित्र सुना तो मन को अच्छी तरह से धैर्य प्राप्त हुआ तथा इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि शिवजी का चरित्र संसार के लिए बहुत ही आनन्द एवं मंगलदायक है। इसीलिए अब मेरी इच्छा है कि आप मुझे यह बतायें कि जब शिवजी गिरिजा के साथ विवाह करके कैलाश पर्वत पर सुशोभित हुए, तब उन्होंने भक्तों को सुखदायक कौन-से चरित्र किये तथा हिमाचल से विदा होकर कौन-कौन से कार्य किये? आप मुझे तारक दैत्य का वध, कार्तवीर्य की उत्पत्ति तथा त्रिपुरासुर का प्रकट होना आदि सब कथा सुनाइये, क्योंकि तीनों लोकों में आप से अधिक कोई शैव नहीं है और न कोई शिवजी के चरित्र के विषय में जानने वाला है।" यह सुनकर ब्रह्मा जी अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा शिवजी के प्रेमानन्द में विभोर हो गये। कुछ देर के पश्चात् ब्रह्मा जी ने कहा—"हे पुत्र ! मुझे विश्वास है कि तुम्हारे हृदय में शिवजी विराजमान हैं। तुम्हें अब शिवजी के अन्य चरित्रों को सुनाता हूँ।"

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जब सदाशिव गिरिजा को विवाह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:06 AM

कर लाये, तब देवताओं का मनोरथ समझ उन्होंने ताराकासुर के वध की इच्छा की। मैं, विष्णु तथा समस्त देवता वहाँ से विदा होकर अपने घरों को गये। हमने शिवजी की कृपा का भरोसा रखा, परन्तु कोई बात प्रकट न हुई। एक दिन समस्त देवता, मुनि आदि एक स्थान पर एकत्र होकर सम्मति करके कहने लगे कि बड़े आश्चर्य का विषय है कि इतना समय व्यतीत हो गया, परन्तु अभी तक हमारा कार्य सिद्ध नहीं हुआ। फिर उन सबने तेज अर्थात् अग्नि से कहा कि तुम चतुरता से शिवजी के पास जाकर देखो कि वे क्या कर रहे हैं? अग्नि देवता यह आदेश पाकर वहाँ से विदा हो, कपोत का स्वरूप धारण कर, शिवजी के निवास स्थान पर पहुँचे। फिर मैं तथा विष्णु जी सब देवताओं के साथ कैलाश पर्वत पर गये। जब हम लोगों ने शिवजी को वट वृक्ष के नीचे नहीं देखा तो गणों से पूछा कि सदाशिवजी महाराज कहाँ हैं? उस समय गणों ने यह उत्तर दिया कि वे तो बहुत समय से घर के भीतर गिरिजा जी के पास हैं, अभी तक बाहर नहीं आये। यह सुनकर विष्णु जी, मैं तथा देवता आदि सदाशिवजी के भवन के द्वार पर गये तथा उच्च स्वर से उन्हें पुकारा। हमारी पुकार सुनते ही शिवजी तुरन्त गिरिजा को छोड़कर बाहर आये। उस समय हमारे मन में शिवजी के प्रति अत्यन्त प्रेम उमड़ पड़ा तथा प्रसन्नता से हम सबके नेत्रों में अश्रु छलक गये। हमने कहा—"हे सदाशिव ! हम अब आपकी शरण में हैं। आशा है आप कृपा करके हमारे दुःख को दूर करेंगे। आपके कृपा-कटाक्ष से हमारा कार्य सुधरता है। हम आपकी महिमा कहाँ तक वर्णन करें? आपकी महिमा नारद, शारद, शेष तथा वेद कहकर थक जाते हैं। आप भक्ति एवं तप के अधीन दया के सागर तथा समस्त संसार के स्वामी हैं। उसका वर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं। आप हमारी ओर दया दृष्टि क्यों नहीं करते? हम सब आपकी शरण में हैं। आप केवल हम भक्तों के उपकार के लिए सगुण स्वरूप धारण करते हैं।" मैं तथा विष्णु जी आदि इस प्रकार स्तुति करके शिवजी के आगे मस्तक झुकाकर खड़े हो गये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद ! देवताओं की स्तुति को सुनकर शिवजी ने प्रसन्नता एवं हर्ष से भरकर कहा—"हे देवताओ ! तुम लोग जिस कार्य के लिए आये हो, उसका विस्तारपूर्वक वर्णन करो।" शिवजी के वचन सुनकर सब देवताओं ने हाथ जोड़कर विनती की—"हे कैलाशपति ! आप अपना सब विहार तथा आनन्द त्यागकर देवताओं का कार्य पूरा करिये।" शिवजी बोले—"हे देवताओ ! हमारा वीर्य जाता है, जिसमें शक्ति हो, वह इसे धारण कर ले।" यह सुनकर विष्णु ने अग्नि को संकेत किया तथा शिवजी ने विष्णु की इच्छा जानकर उसे पृथ्वी पर डाल दिया। देवताओं की आज्ञा से अग्नि ने तुरन्त उस वीर्य को धारण कर लिया। फिर अग्नि कपोत का शरीर धारण कर अपनी चोंच से उस वीर्य को निगलकर अपने घर की ओर उड़ गये।

हे नारद ! जब शिवजी बहुत देर तक न लौटे तो गिरिजा चिन्तित होकर बाहर आयीं, जहाँ देवता लोग शिवजी के पास खड़े थे। वहाँ जाकर उन्होंने इतना क्रोध प्रकट किया कि सब देवता अत्यन्त भयभीत हुए। गिरिजा ने क्रोधावेश में होंठ चबाते हुए कहा—"हे देवताओ ! तुम सब अपने स्वार्थ के साथी हो। तुमने अपने स्वार्थ के लिए मुझ को बाँझ कर दिया। तुमने शिवजी को अपने पास बैठा रखा। तुमने हमारे विहार में विघ्न उत्पन्न किया है, इसलिए तुम्हारी सब स्त्रियाँ बाँझ होंगी।" गिरिजा ने देवताओं को यह शाप देकर अग्नि से कहा—"हे भाग्यहीन वह्नि ! तुम इतने दुष्ट हो कि तुमने भक्ष्य-अभक्ष्य का कुछ विचार न किया। अब तुम सब चीज़ें खाया करोगे ; क्योंकि तुमने शिवजी का वीर्य खा लिया है।" जिस समय गिरिजा ने अग्नि को यह शाप दिया, उस समय देवता आदि बहुत दुःखी हुए। फिर शिव एवं पार्वती अन्तःपुर में चले गये। उसी समय समस्त देवता आदि ने गर्भ धारण किया। तब अपने उदर को गर्भ से पूरित देख वे बहुत ही लज्जित और दुःखी हुए। सब देवता मिलकर शिवजी की शरण में गये

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

तथा स्तुति करते हुए बोले—"हे देवाधिदेव ! आप हमारे ऊपर कृपा करें। अब आप हमको मुक्त करें।" इस प्रकार बहुत-सी स्तुति सुनकर शिवजी फिर प्रकट हुए, जिनको देखकर देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा पुनः स्तुति करके बोले—"हे गिरिजापति ! आप हमारी सहायता करें तथा हमारे दुःखों को दूर करें। हम आपके सेवक हैं। जब से हमने गर्भ धारण किया है तब से हम महादुःखी हैं। हे प्रभो ! लोक में हमारी निन्दा हो रही है।"

हे नारद ! देवताओं की बातें सुनकर शिवजी हँस पड़े तथा बोले—"विष्णु तथा सब देवताओ ! तुम तुरन्त वीर्य को मुख के मार्ग से बाहर निकाल दो, जिससे हमें प्रसन्नता प्राप्त हो।" यह सुनकर देवताओं ने तुरन्त शिवजी के आदेश का पालन कर, वीर्य निकाल दिया। उस वीर्य का वर्ण स्वर्णवत् हो गया। इस प्रकार देवताओं को उस दुःख से छुटकारा मिला, परन्तु शिव ने अनल को यह आज्ञा न दी ; इससे उसको बहुत दुःख हुआ। अन्त में वह भी बहुत दुःखी होकर शिवजी की स्तुति करने लगा और बोला—"हे देवताओं के देवता ! अब आपको मेरी सहायता करनी चाहिए। आप ही बताइये कि मैं आपके चरण छोड़कर कहाँ जाऊँ? अब आप मुझे ऐसा उपाय बताइये जिससे मेरा यह दुःख दूर हो।" यह सुनकर शिवजी बोले—"हे अनल ! हमारे इस वीर्य को स्त्रियों को दे दो जिससे तुमको शान्ति मिले।" तब अग्नि ने धैर्य के साथ विनय की कि हे प्रभो ! आपके वीर्य के तेज को स्त्रियाँ कैसे धारण कर सकेंगी।"

हे नारद ! अग्नि के मुख से ऐसे वचन सुनकर, तुमने शिवजी की आज्ञा से उत्तर दिया—"हे वह्नि ! जो स्त्रियाँ माघ मास में अग्नि में तपती हों, उनके शरीर में तुम इस तेज को बाँट दो।" अग्नि यह सुनकर प्रसन्न हो प्रातःकाल उठ, नदी किनारे अग्नि जलाकर बैठ गये। उस समय अनेक स्त्रियाँ नदी में स्नान करने के लिए उस स्थान पर आयीं क्योंकि सर्दी ने उनको बहुत दुःख दिया था, इसलिए जलती हुई अग्नि देखकर उनकी इच्छा आग तापने की हुई परन्तु अरुन्धती ने इस रहस्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

को समझ कर स्त्रियों को आग तापने से मना किया। फिर भी अरुन्धती की बात को किसी ने न माना। वे सब आग के पास बैठकर तापने लगीं। तब वह वीर्य धीरे-धीरे निकलकर रोम के मार्ग से स्त्रियों के शरीर में प्रवेश करने लगा, जिससे अग्नि का बोझ हल्का हुआ। तब अग्नि अत्यन्त प्रसन्न होकर तेज़ को दूर हुआ देख, प्रसन्न हुआ तथा वे स्त्रियाँ तुरन्त गर्भवती हुईं। तब वे दुःखी होकर अपने घर लौट आयीं। यह दशा देखकर ऋषीश्वरों ने उन पर इतना क्रोध किया कि वे सब पक्षियों की भाँति उड़ने लगीं। उन्होंने अपनी यह अवस्था देख, अत्यन्त दुःखी हो वीर्य को हिमगिरि के ऊपर छोड़ दिया। वहाँ उस वीर्य का तेज स्वर्ण के समान झलकने लगा। फिर उन्होंने उसे उठाकर गंगा नदी में डाल दिया। जैसे ही वह वीर्य नदी में पड़ा, वैसे ही नदी काँप कर, बहना छोड़, स्थिर हो गयी तथा शिवजी के वीर्य को न सहकर दुःखी हो, बड़े ज़ोर से नाद करने लगी। फिर गंगा ने उस वीर्य को अपनी लहरों के द्वारा किनारे पर फेंक दिया। उस स्थान पर सरपत के बोझ पड़े हुए थे। वह वीर्य वहीं जाकर रुक गया तथा एक बालक स्वरूप में प्रकट हुआ। उस समय आकाश से जय-जय का घोष हुआ। उस लड़के का स्वरूप अत्यन्त सुन्दर था। मुख, नाक एवं हाथ बहुत ही सुडौल तथा वर्ण जलती हुई अग्नि के समान था। नख परम सुन्दर थे, चरण ऐसे थे जिनको देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित हो जाएं। उसी समय गिरिजा के दोनों स्तनों से दुग्ध की धारा बहने लगी, जिसको देख शिव तथा गिरिजा को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। तब गिरिजा ने शिवजी से पूछा—"हे नाथ ! हमारे स्तनों से दूध क्यों निकला है?" उस समय शिवजी ने मुस्कुराकर कोई उत्तर न दिया।"

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! उस समय समस्त देवता, सिद्ध मुनि एवं गण आदि एकत्र होकर, बड़ा आनन्द मनाते हुए तथा पुष्पों की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वृष्टि करते हुए कैलाश पर पहुँचे। गंधर्वों ने प्रसन्न होकर आनन्द के बाजे बजाये। इसी प्रकार बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया गया। तीनों लोकों में सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। उसी समय गाधिपुत्र विश्वामित्र जो प्रसिद्ध ब्राह्मण हैं, तुरन्त वहाँ आ उपस्थित हुए। उन्होंने उस लड़के की स्तुति कर, आदर किया। तब वह बालक विश्वामित्र की बनायी हुई स्तुति सुनकर प्रसन्न होकर कहने लगा—''हे मुने ! तुम हमारा संस्कार करो। तुम्हीं आज से हमारे पुरोहित हुए। तुम तीनों लोकों में सम्मान के योग्य होगे।'' यह सुनकर विश्वामित्र ने कुछ सोचकर विनयपूर्वक कहा—''मैं ब्राह्मण के घर उत्पन्न नहीं हुआ हूँ, जो आपका संस्कार करूँ। मैं तो गाधि नामक क्षत्रिय से उत्पन्न हूँ तथा मेरा नाम विश्वामित्र है। संस्कार आदि कार्य करना ब्राह्मण का धर्म है, इनके अतिरिक्त यदि अन्य कोई करावे तो वह दुःख पाता है। अस्तु, अब आप अपने विषय में बताइए कि आप इस प्रकार बालक रूप धारण किए हुए कौन हैं? आपके माता-पिता कौन हैं? वे दोनों आपको इस प्रकार अकेला छोड़कर कहाँ चले गये? मैं आपको यहाँ अकेला देख रहा हूँ। आपका तेज अद्भुत है। आप ब्रह्मचारी हैं या गृहस्थ हैं अथवा तीनों देवताओं में से कोई हैं? आप ब्रह्म हैं, जो बालरूप से प्रकट हुए हैं? मैंने आज तक ऐसा बालक नहीं देखा। आप तो उत्पन्न होते ही बातें करके आनन्द प्रदान करते हैं तथा अपने संस्कार के लिए मुझे आज्ञा देते हैं। कृपा करके मुझे सब कुछ स्पष्ट बतला दीजिए।''

हे नारद ! विश्वामित्र के ऐसे वचन सुनकर उस बालक ने हँसते हुए कहा—''हे विश्वामित्र ! हम गिरिजा एवं शिव के पुत्र हैं तथा दैत्यों को मारकर तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करने वाले हैं।'' यह कहकर उस बालक ने अपना प्रताप विस्तारपूर्वक कह सुनाया और कहा—''हे ऋषि ! तुम ब्रह्मर्षि होकर सब ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा प्राप्त करोगे ; यहाँ तक कि ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ भी तुमको ब्रह्मर्षि कहेंगे। यह हमारा वर है। अब तुम शिव और गिरिजा की लीला को अपार

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

समझकर हमारे संस्कार के विषय में विचार एवं विलम्ब न करो।'' यह सुनकर विश्वामित्र ने तुरन्त आज्ञा मानकर संस्कार किया। तब शिवजी के पुत्र ने विश्वामित्र को वर दिया और अपना पुरोहित बनाया। उसी समय अग्नि ने भी वहाँ पहुँचकर तथा शिवजी के पुत्र को देखकर आनन्द प्राप्त किया। फिर उस बालक को प्रणाम किया। विश्वामित्र ने जो बातें पूछीं, उनका ठीक-ठाक उत्तर उस बालक ने दिया। फिर उसने अपनी सब कथा अग्नि से कही। अग्नि तथा विश्वामित्र उस लड़के में पूर्ण बल एवं प्रताप देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। तदुपरान्त अग्नि ने उसे गोद में उठा, छाती से लगा दिया और उसका मुख चूमा। फिर अत्यन्त प्रेम के साथ उस लड़के को अपना पुत्र माना तथा अपने बहुत-से शस्त्र उसे दिए।

हे नारद ! शिवजी के पुत्र ने दोनों को वहाँ से विदा किया तथा स्वयं अग्नि की दी शक्ति हाथ में ले श्वेतगिरि पर चढ़कर अत्यन्त भयानक शब्द से नाद किया। उस शब्द को सुनकर ऐसा प्रतीत होता था जैसे प्रलय हुआ चाहता हो। फिर उसने देवताओं के मनोरथ पूर्ण करने के लिए अपनी शक्ति पर्वत के शिखर पर मारी जिससे तीनों लोकों में हाहाकार मच गया और पर्वत फटकर गिर पड़ा। उस समय महाबलवान् दस परम् राक्षस कालवश हुए, जो पहले वहाँ रहते थे तथा उन्हें मारने को दौड़े थे। फिर देवता और मुनि चिन्तित होकर कहने लगे कि यह क्या हुआ, परन्तु किसी की समझ में कुछ न आया। तब इन्द्रादि देवता उसे देखने के लिए चले। वहाँ आकर उन्होंने देखा कि वही लड़का पर्वत पर खड़ा है। उस समय उस पर्वत ने अपना रूप मनुष्यों के समान बनाकर इन्द्र से भेंट की तथा हाथ जोड़कर यह कहा—''हे इन्द्र ! आप तीनों लोकों के देवता हैं। इस समय मुझको महान् दुःख प्राप्त हुआ है। इस बालक ने मुझको शक्ति से मारकर ऐसा भयानक शब्द किया है कि सब जीवों को दुःख पहुँचा, धरती काँप उठी तथा सब पर्वत, वन, नदी भी काँप उठे हैं। असंख्य जीव मर गये, यह सब इसी बालक ने किया है, जो सामने खड़ा है। नहीं मालूम कि यह कौन है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

तथा किसका पुत्र है? इसने व्यर्थ ही मुझे इतना दुःख दिया है। हे इन्द्र ! आप शीघ्र ही इसका वध कर डालें नहीं तो यह प्रलय ही कर डालेगा।" इन्द्र ने यह सुनकर उस लड़के पर बहुत क्रोध किया तथा कुछ भेद न समझकर उस बालक को मार डालने की इच्छा की। परन्तु शिवजी की लीला अपार है। इन्द्र ने आक्रमण कर अपना वज्र उस लड़के की दाहिनी कोख में मारा जिससे उस स्थान से एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, जो बल एवं पराक्रम में उसी के बराबर था। उसका नाम शारव रखा। शारव ने उत्पन्न होते ही बड़ा भयानक शब्द किया। तब इन्द्र ने यह देख क्रोधित होकर, उसकी बायीं कोख में फिर अपना वज्र मार दिया। उससे एक दूसरा मनुष्य उत्पन्न हुआ, उसे भी शारव कहते हैं। दूसरा शारव भी उत्पन्न होकर घोर नाद करने लगा। इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र फिर मारा, परन्तु उसका कोई फल न निकला तथा एक व्यक्ति और प्रकट होकर खड़ा हो गया, उसे नैगमेय कहते हैं। वे तीनों पहले बालक के सहायक हो गये। वे चारों प्रलय की अग्नि के समान प्रकट हुए। तब उस बालक ने अपने तीनों गणों सहित इन्द्र के ऊपर आक्रमण कर दिया।

हे नारद ! इस प्रकार उनके आक्रमण से, रुद्र का प्रलय करने वाला तेज उनमें देखकर इन्द्र निर्बल होकर काँप उठे तथा हाथ जोड़कर उनकी शरण में आये। इन्द्र ने अपने सब शस्त्र फेंककर दंडवत् की। इन्द्र के साथ जो सेना थी, उसने भी उनका आदर सम्मान किया। तब उस बालक ने इन्द्र की यह दशा देखकर इन्द्र को ढाढ़स बँधाया तथा निर्भय किया। तब सब देवताओं सहित इन्द्र ने हाथ जोड़कर उसकी स्तुति की—"आप बालक नहीं, बालक के रूप में ब्रह्म हैं। हमने आपके प्रताप को नहीं पहचाना, इसी कारण अहंकार से हमारी यह दशा हुई। कृपा करके हमारे सब अपराध क्षमा कर दीजिये और हमको अपनी शरण में ले लीजिये। आपने किसी भक्त पर प्रसन्न होकर ही अवतार लिया है। आप सच-सच बताएं कि आप कौन हैं, किसके पुत्र हैं तथा कहाँ उत्पन्न हुए हैं?" इन्द्र के ऐसे वचन सुनकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बालक ने कहा—"हे इन्द्र ! अब तुम शीघ्रतापूर्वक यहाँ से जाओ और प्रसन्नतापूर्वक अपना राज्यकार्य करो।" यह कहकर उसने इन्द्र को वहाँ से विदा किया तथा कुछ भी भेद न बताया। इस प्रकार वहाँ से विदा होकर, इन्द्र अपने राज्य में जा पहुँचे।"

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! वही स्त्रियाँ, जिनके विषय में हम पहले बता चुके हैं उसी समय स्नान करने के लिए उस नदी के किनारे पर जा पहुँचीं। वे उस बालक को देख, निकट जा पहुँचीं तथा बालक को अत्यन्त सुन्दर पाकर प्रत्येक स्त्री का मन उसको लेने के लिए चाहने लगा। तब सब ने उसे उठा लेने की इच्छा की और बोलीं कि यह बालक मेरा है, मैं इसे लूँगी, यह मेरे गर्भ से उत्पन्न हुआ है। यों कहती कुई सब परस्पर झगड़ने लगीं। तब बालक ने सब के स्तनों से दूध पीकर उनके झगड़े को दूर किया। इस प्रकार वे सब माता के समान हो गयीं। पार्वती नन्दन, सैनानी, पावकभू स्कन्द, गंगासुत, सरजन्मा, षण्मुख, आदि बालक के नाम पड़े। इसके पश्चात् उन स्त्रियों ने बालक को अपने घर ले जाकर बड़ा उत्सव किया। बालक के जन्म का महीना कार्तिक तथा षष्ठी तिथि थी। इस प्रकार शुभ लग्न एवं शुभ मुहूर्त्त में उसने जन्म लिया था।

हे नारद ! एक दिन ब्रह्मा, विष्णु तथा इन्द्र आदि सब देवता इन्द्र की सभा में विराजमान् थे। तुमने उचित समय जानकर शिवजी का ध्यान करने के पश्चात् स्कन्द के जन्म का वृत्तान्त वर्णन किया। उसे सुनकर देवता बोले—"ज्ञात होता है कि शिवजी ने हम पर कृपा करके अपने लड़के को उत्पन्न किया है। अब हमारे सब कार्य पूरे हो गये।" इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि स्कन्द अपने साथियों के साथ खेलते-खेलते उस स्थान पर आ पहुँचे। मुनियों और देवताओं ने ऐसे तेजस्वी बालक को देखकर पूछा—"यह कौन है तथा किसका लड़का है?"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM 94

फिर सबने यही कहा—"इसको बुलाकर पूछना चाहिए, क्योंकि इस सुन्दर स्वरूप को देखकर नेत्र नहीं थकते।" तब उन्होंने उसी समय लड़के को बुलाकर पूछा कि तुम कौन हो? स्कन्द ने उत्तर दिया—"हम लड़के के रूप में शिवजी हैं। वही शिवजी, जिनका तुम सदैव ध्यान धरते हो तथा जो लोक के हित चाहने वाले हैं। हमको लोक गुरु कहते हैं।" यह सुनकर विष्णु जी ने कुछ सोचकर कहा—"यदि तुम शिवजी हो तो हमको विश्वास दिलाने के लिए अपना स्वरूप दिखलाओ।" स्कन्द ने यह सुनकर अपने भयानक शरीर में विराट् रूप प्रस्तुत किया, जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड, इन्द्र, उपेन्द्र आदि वर्तमान थे। उस समय समस्त सभा उसके रोम-रोम में ब्रह्माण्ड देखकर काँप उठी। विष्णु जी तथा मैंने घबराकर 'शरण-शरण' पुकारी तथा कहा—"वास्तव में आप शिवजी के रूप हैं, अब आप अपना वही रूप धारण कर लीजिये।" यह सुनकर स्कन्द ने तुरन्त अपना पहले वाला रूप धारण कर लिया।

हे नारद ! विष्णु जी ने हाथ जोड़कर स्कन्द की स्तुति की और बोले—"हे षणमुख ! हे शिव-गिरिजा के पुत्र ! अब तुम हम पर कृपा करो। तुम तो अनादि, निर्गुण तथा सगुण स्वरूप हो। इस समय तुमने स्कन्द अवतार धारण किया है।" इस प्रकार विष्णु जी ने स्तुति की, इसके उपरान्त विष्णु जी तथा मैं स्कन्द को विमान पर चढ़ाकर, देवताओं सहित शिवजी के मन्दिर की ओर चले। उस समय प्रत्येक के मुख से जय-जयकार का शब्द निकल रहा था। सब लोग आनन्द मनाते हुए कैलाश में जा पहुँचे। हमने स्कन्द को शिवजी के पास ले जाकर खड़ा किया। उसे देखकर शिवजी एवं गिरिजा को अपार आनन्द प्राप्त हुआ। गिरिजा के स्तनों से दूध निकल पड़ा तथा वही दशा हो गयी, जैसी कि पुत्र की उत्पत्ति के समय होती है। तब शिवजी ने पूछा कि यह किसका पुत्र है। तब हे नारद ! तुमने यह समझकर कि शिवजी यह चरित्र लीला के निमित्त करते हैं, उत्तर देकर, आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर शिवजी ने बड़े लाड़-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

प्यार से लड़के को लिया तथा गिरिजा ने गोद में लेकर दुग्ध पान कराया। इस प्रकार शिवजी तथा गिरिजा दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए। हम सबने शिवजी एवं गिरिजा की पूजा की। सर्वप्रथम विष्णु जी ने स्कन्द का नीराजन किया, फिर लक्ष्मी तथा फिर मैंने अपनी पत्नी सहित किया। इसके पश्चात् इन्द्र ने इन्द्रानी सहित किया। इस प्रकार समस्त देवता बराबर स्कन्द का नीराजन करते गये। उस समय बड़ा उत्सव हुआ। मुनीश्वर अपना मनोरथ पूर्ण होते देख जय-जयकार करने लगे। स्कन्द शिवजी की गोद में खेलने लगे। वे वासुकि नाग का गला अपने दोनों हाथों से जोर से पकड़, उसके साथ खेलते थे और वासुकि नाग स्कन्द के चरणों पर लोटता था। शिवजी ने स्कन्द जी का यह चरित्र तथा क्रीड़ा देखकर, हँसकर गिरिजा की ओर देखा। यह देख गिरिजा भी हँसने लगीं।''

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! सब देवता विनती करते हुए शिवजी से बोले—''हे सबके स्वामी, सबके दुःख दूर करने वाले ! देवताओं के लिए तो आपकी केवल कृपा-कटाक्ष ही बहुत है। हम आपकी शरण में आये हैं, आप हम पर दया कीजिये और हमको अपना सेवक जानकर कृपा की दृष्टि रखिये। आपका ध्यान विष्णु, ब्रह्मा तथा सनकादिक भी करते हैं ; परन्तु वे आपको प्राप्त नहीं कर पाते। हमारा यह सौभाग्य है कि हम इस कैलाश पर्वत पर आपके प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं। इस समय आपने जो शिशु के समान अपना रूप बनाया है, हम सबको उसे देखकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है। आपकी गति आपके सिवाय और कोई नहीं जानता।'' देवताओं ने इसी प्रकार अत्यन्त नम्रता से उनकी बहुत स्तुति की। फिर विष्णु जी ने विनय करते हुए कहा—''हे शिवजी ! हमें आनन्द पहुँचाने एवं तारक दैत्य का वध करने के लिए अब आप स्कन्द को आज्ञा दीजिये, क्योंकि ये इसी निमित्त अवतरित हुए हैं।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:07 AM

हे नारद ! विष्णु के ऐसे वचन सुनकर शिवजी ने हँसकर कहा— "हे विष्णु ! हमने तो इसी निमित्त गिरिजा से विवाह किया था। अब तुम जाकर अपना-अपना काम करो।" इसके पश्चात् शिवजी एवं गिरिजा ने स्कन्द को अच्छी तरह से प्यार किया तथा अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर देवताओं ने स्कन्द के लिए शिव की आज्ञा लेकर, कैलाश पर्वत के निकट त्वष्टापुर में एक बहुत ही उत्तम मन्दिर की स्थापना की। वह मन्दिर इतना सुन्दर था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उस मन्दिर में प्रत्येक स्थान को अच्छी-अच्छी सामग्रियों से सज्जित किया गया था। इस प्रकार के मन्दिर के पूरी तरह तैयार हो जाने पर विष्णु जी ने मुझ समेत सब मुनियों को बुलाकर उस मन्दिर में स्कन्द का अभिषेक किया तथा सिंहासन पर बैठाया। विष्णु तथा हम सबों ने स्कन्द को विश्व एवं अपना स्वामी मानकर राजतिलक किया और अनेक उपहारें दीं। उनकी अच्छी प्रकार से सेवा कर, अनेक प्रकार के शस्त्र भी भेंट किये। उसी समय शिव एवं गिरिजा भी वहाँ उपस्थित हुए। वे देवताओं की ऐसी सभा को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा उन्होंने अपनी समस्त सेना स्कन्द को दे दी। गिरिजा ने सब वस्त्रों पर पहनने का एक ऐसा कवच दिया, जो युद्ध में शत्रुओं के सब प्रकार के प्रहारों से रक्षा करे। विष्णु ने स्कन्द को वैजयन्ती माला देकर एक पुष्पहार अपने हाथ से बनाकर उनके कण्ठ में डाला। वरुण ने एक बकरा भेंट दिया। उस समय चारों ओर आनन्द ही आनन्द दिखाई देता था। मैं, विष्णु तथा सब देवता प्रसन्न होकर स्कन्द की स्तुति करने लगे।"

❀❀❀

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! ऐसे समय में एक नारद नाम के ब्राह्मण का, जो अजामेध करता था, यज्ञ में बलि देने के लिए एक बकरे की आवश्यकता हुई। तब स्कन्द का बकरा जो वरुण ने भेंट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

किया था, वह स्कन्द की इच्छा जानकर नारद ब्राह्मण की ओर भाग गया। नारद ने उस बकरे को यज्ञ के लिए सब प्रकार योग्य जानकर पकड़ लिया तथा यज्ञ की अन्य सब सामग्री एकत्र की। संयोगवश नारद किसी कार्य से किसी दूसरे गाँव में गया। तब बकरा ब्राह्मण के जाने के पश्चात् मंच उखाड़कर, अपने घर भाग गया। फिर वह सातों द्वीप तथा पृथ्वी को जीतकर, पृथ्वी के नीचे चला और शेष लोक के पश्चात् उसने पाताल लोक को भी जीत लिया। इसके पश्चात् वह फिर ऊपर के लोक को चला। प्रथम वह गले में रस्सी बाँधे हुए स्वर्ग लोक को गया, फिर आकाश पर भी उसने विजय प्राप्त की। फिर सम्पूर्ण ब्राह्मण्ड पर विजय प्राप्त कर वह विष्णुपुरी में जा पहुँचा। जब नारद ब्राह्मण उस गाँव से घर लौटा तो उसने देखा कि वहाँ बकरा नहीं है केवल रस्सी ही बँधी हुई है। उस समय आश्चर्यचकित होकर उसने सब से पूछा तब सब ने यह उत्तर दिया कि हमने उसे जाते हुए नहीं देखा, न जाने वह बकरा था या क्या था ; क्योंकि उसके शरीर में तेज दिखाई पड़ता था, मानो वह अग्नि का रूप हो। नारद ब्राह्मण बकरे के इस प्रकार चले जाने से अत्यन्त चिन्तित हुआ। फिर उसने विद्वान् पंडितों को बुलाकर आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह सुनाया तथा पूछा कि आप लोगों की क्या राय है? मेरा तो सब परिश्रम व्यर्थ हो गया। अब मैं क्या करूँ? स्कन्द का यह चरित्र जानकर सब ब्राह्मण कहने लगे—"ब्राह्मण ! तारक दैत्य के वध के लिए स्कन्द ने अवतार लिया है और उनको देवताओं ने अपने-अपने शस्त्र दिये हैं। अस्तु, अब यही उचित है कि तुम उन्हीं के पास जाकर अपना सब वृत्तान्त कहो।"

हे नारद ! विद्वान ब्राह्मणों के ऐसे वचन सुनकर नारद ब्राह्मण वहाँ से चल कर स्कन्द के द्वार पर पहुँचा तथा द्वारपालों से कहा कि तुम स्कन्द से कहो कि नारद नामक एक ब्राह्मण द्वार पर खड़ा है। द्वारपाल ने पूछा—"तुम्हारा क्या मनोरथ है?" तब नारद ने द्वारपाल को सब वृत्तान्त सुनाया। उसे सुनकर द्वारपाल स्कन्द के पास जा पहुँचा और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

विनती की कि हे स्वामी ! द्वार पर नारद नामक एक ब्राह्मण हठ से आपके दर्शनों के निमित्त खड़ा हुआ है। तब स्कन्द ने हँसकर उत्तर दिया—"नारद हमारा परम भक्त है, तुम उसे तुरन्त भीतर ले आओ।" अस्तु, नारद ने भीतर जाकर स्कन्द को प्रणाम किया, वेद के अनुसार स्तुति की तथा यह विनय की कि जो बकरा मैं यज्ञ के लिए लाया था, वह वहाँ से भाग गया है। बड़े आश्चर्य की बात है कि आपके राज्य में रहकर इस प्रकार यज्ञ अधूरा रह जाएगा। अस्तु, आप मेरे इस दुःख का निवारण कीजिये। हे नारद ! ब्राह्मण के यह वचन सुनकर स्कन्द ने अपने गण वीरबाहु को बुलाया तथा कहा कि तुम तुरन्त नारद के बकरे को ढूँढ़ कर दो। जहाँ कहीं भी तुमको वह बकरा मिले, उसे पकड़कर तुरन्त यहाँ ले आओ। स्कन्द की आज्ञा पाकर वीरबाहु अपनी सेना सहित बकरे की खोज में, उसी समय वहाँ से चला। उसने उस बकरे को तीनों भुवनों तथा नीचे के लोकों में ढूँढ़ने के पश्चात् विष्णु लोक में उत्पात मचाते हुए देखा। वीरबाहु उसके सींगों को पकड़कर घसीट लाया तथा स्कन्द को सौंप दिया। स्कन्द उस बकरे को देखकर हँसे और उस पर आरूढ़ हुए फिर उन्होंने अपने वाहन के बल को दिखलाने के लिए उसको इतना बल दिया कि वह मन के समान गति से अनायास तीनों भुवनों में घुमा तथा एक मुहूर्त्त भर में तीनों लोकों में घूमकर लौट आया। जब स्कन्द लौटकर घर पहुँचे तो प्रसन्न होकर, उससे उतर कर भीतर गये। तब नारद ब्राह्मण ने स्कन्द से कहा—"हे महाराज ! अब मेरे यज्ञ का समय आ गया है, सो आप बकरे को दे दीजिये।"

हे नारद ! ब्राह्मण नारद के इस प्रकार के वचन सुनकर स्कन्द ने कहा—"हे ब्राह्मण ! यह बकरा बलि के योग्य नहीं है, क्योंकि यह हमारा वाहन है। तुम जो फल यज्ञ करके प्राप्त करना चाहते हो, हम वह तुमको बिना यज्ञ के ही देते हैं।" नारद ब्राह्मण यह सुन, हाथ जोड़कर स्तुति करने लगा तथा स्कन्द जी का यशो गान करता हुआ अपने घर लौट गया। तब देवताओं तथा मुनियों आदि ने स्कन्द की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

स्तुति करने के पश्चात् निवेदन किया—"स्वामी ! हमारे ऊपर जो अनेक कष्ट हैं, आप उनको दूर कीजिये।" स्कन्द ने हँसकर उत्तर दिया—"हे देवताओ ! तुमको जिसने इतना दुःख पहुँचाया है, हम अपने गणों सहित जाकर उसका वध करेंगे तथा एक निमेष में ही दैत्यों की सेना नष्ट कर डालेंगे। तुमने शिवजी की जो सेवा की है, उसका फल हम तुम्हें अवश्य देंगे। अब तक जो कुछ भी हुआ है, उसे तुम शिवजी की लीला ही समझो। शिवजी अपने भक्तों को सदैव आनन्द प्रदान करते हैं, परन्तु दुष्टों के लिए वे बहुत भयानक हैं।" इस प्रकार स्कन्द के मुख से शिवजी की लीला का वर्णन सुनकर देवता लोग अत्यन्त प्रसन्न हो, जय-जयकार करने लगे।"

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! स्कन्द के मुख से यह वचन सुनकर विष्णु जी ने देवताओं सहित कहा—"हे स्कन्द ! आप शिवजी के पुत्र अर्थात् शिवजी हैं। आप असुर रूपी वन के लिए दावाग्नि के समान हैं।" इसी प्रकार सबने स्तुति की। उस समय गिरिजा, गंगा, बलि तथा मुनि-पत्नियाँ आदि स्कन्द की माताएँ अपने पुत्र की इतनी शक्ति देखकर परस्पर लड़ने लगीं और वे सब उनको अपना-अपना पुत्र कहने लगीं। हे नारद ! तब तुमने उन सबको जाकर समझाया। तुम्हीं ने शिवजी की इच्छानुसार स्कन्द के जन्म का ठीक-ठीक वर्णन किया तथा कहा कि ये शिवजी एवं गिरिजा के ही पुत्र हैं। इन्होंने देवताओं के मनोरथ पूर्ण करने के लिए ही अवतार लिया है। यह सुनकर गिरिजा के सिवाय सब अत्यन्त दुःखी हुईं। तब स्कन्द ने प्रसन्न होकर गंगा से कहा—"हे माता ! तुम तो संसार की माता हो तथा शिवजी की पत्नी हो। अस्तु, मैं तुम्हारा पुत्र सदैव कहलाऊँगा।" उसी प्रकार स्कन्द ने सबको समझा दिया। तत्पश्चात् स्कन्द ने विष्णु जी तथा ब्रह्मा जी से कहा—"हम दैत्यों का क्षण भर में नाश कर देंगे, आप लोग किसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

प्रकार की चिन्ता मत करें। आप सब लोग तत्पर होकर शिवजी की सेवा करो। जो भी कार्य या उत्सव करें, उसमें प्रसन्न होकर शिवजी का जय-जयकार करते रहें।'' यह आज्ञा पाकर समस्त देवता आदि एक साथ शिवजी का जय-जयकार करने लगे।

हे नारद ! इसके पश्चात् समस्त देवता आदि सेना सहित सज्जित होकर स्कन्द के साथ चले। शिवजी, गिरिजा एवं गणों के साथ कैलाश को चले गये। उस समय तारक ने यह सुनकर तथा देवताओं के सब उपाय का परिणाम जान कर, बड़े क्रोध से देवताओं पर आक्रमण किया तथा उनका सामना करने के लिए चतुरंगिणी सेना सजाकर, करोड़ों सैनिकों को अपने साथ लेकर चला। उस समय युद्ध के बाजे बजने लगे। हे नारद ! उस समय तुमने तारक के पास जाकर यह कहा—''हे असुरराज ! अब तुम्हारे लिए बड़ी विपत्ति आ पहुँची है, क्योंकि देवता आदि ने शिवजी की सेवा एवं भक्ति करके तुम्हें मार डालने का उपाय किया है।'' तुमने तारक को सब वृत्तान्त आदि से अन्त तक कह सुनाया कि शिवजी को कल्पवृक्ष के समान समझो। वे सबको समान दृष्टि से देखते हैं तथा भक्ति एवं सेवा के आधीन रहते हैं। इसलिए, अब तुमको यही उचित है कि तुम भी कोई उपाय करो, तदुपरान्त देवताओं के साथ युद्ध करो। यदि तुम विजय प्राप्त करना चाहते हो तो हमारा कहना मानो। यदि तुम हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा इसी समय अवश्य ही नाश हो जाएगा। हे नारद ! मृत्यु के वशीभूत होकर तारकासुर ने तुम्हारी इन बातों पर कोई ध्यान न दिया तथा हँसकर बोला—''हे नारद ! तुम विष्णु जी के पास जाकर कह दो कि तुम जिस प्रकार भी वीरतापूर्वक युद्ध कर सकते हो, करो, उसमें किसी प्रकार की कोई कमी न करना। तुम इस दूध पीते बच्चे को अपना अगुआ बनाकर लड़ाई करना चाहते हो, इससे मालूम होता है कि तुम इस युक्ति द्वारा अपनी मृत्यु चाहते हो। हमने तुम्हारी वीरता कई बार देखी है। तुम दूसरों पर भरोसा करते हो, परन्तु दूसरे के बल से विजय नहीं मिलती। एक मुचुकुन्द के बल से भी तुमने चाहा था कि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

हम पर प्रबल हो सको, सो हमने उसकी भी वीरता देख ली और सब देवताओं को उसके साथ ही बन्दी बना लिया। अब तुम इस छोटे से लड़के को साथ लेकर हमसे युद्ध करना चाहते हो, सो मैं तुम को दिक्पति सहित मारकर त्रिभुवन पर निष्कंटक राज्य करूँगा।''

हे नारद ! तारकासुर के ऐसे गर्वपूर्ण वाक्य सुनकर तुमने क्रोधित होकर उत्तर दिया—''हे तारक ! अहंकार सदैव दुःखदायी होता है। तुमने जिस मुचुकुन्द का वर्णन किया, वह शिवजी का परम भक्त है। शिवजी उसके सहायक हैं। जिसके ऊपर शिवजी कृपा करते हैं, वह देवताओं, मुनीश्वरों तथा मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली होता है। तुम जिसको दूध-पीता बालक समझते हो, वह तो प्रलयकारी शिव का ही स्वरूप है।'' तब तारक ने क्रोधित होकर तुमसे फिर कहा—''हे नारद ! तुम वीरों के बल के विषय में क्या जानते हो?'' तुम तारक के मुख से यह वचन सुनकर तुरन्त ही उसकी सभा से उठकर मेरे यहाँ चले आये तथा विष्णु जी और मुझसे यह सब बातें कहीं। तुमने यह भी कहा कि यह बालक तारकासुर पर अवश्य विजय प्राप्त करेगा तथा मेरा यह वचन सत्य है कि शिवजी का यह लड़का तीनों लोकों में निर्भय है। हे नारद ! तुम्हारे इस वचन को सुनकर हम सब अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा युद्ध की इच्छा से शिवजी का ध्यान कर उठ खड़े हुए। स्कन्द को सेनापति बनाकर इन्द्र के हाथी पर चढ़ाया तथा सब लोकपाल एकत्र हो गये। रणभेरी, दुन्दुभी, मृदंग, वीणा, बीन आदि युद्ध के बाजे बजने लगे तथा नृत्य-गायन होने लगा। स्कन्द इन्द्र को हाथी सौंपकर, स्वयं विमान पर सवार हुए। तब चारों ओर से शिवजी के पुत्र का जय-जयकार हुआ। वरुण, इन्द्र, अनल, यमराज, कुबेर, ईशान आदि आठों दिक्पति अपनी सेना सहित युद्ध के लिए तत्पर हो गये। विष्णु जी ने शिवजी का ध्यान कर आनन्द प्राप्त किया। उनकी सेना का वर्णन करना कठिन है, क्योंकि वे त्रिभुवन के स्वामी हैं। इसके पश्चात् पूरी सेना त्रिभुवनपति को सबसे आगे करके चली तथा स्कन्द पर्वत से नीचे उतरकर, अन्तवेद में स्थित हुई। फिर, उसके मध्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

भाग को जो 'हरविनया' के नाम से प्रसिद्ध हैं, युद्ध स्थल निश्चित कर तारकासुर को युद्ध का सन्देश भेजा गया।

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! तारकासुर भी एक अच्छे विमान में छत्र-चँवर के साथ आरूढ़ होकर अपनी विशाल सेना सहित रणभूमि में आ पहुँचा। इस प्रकार दोनों सेनाएँ अन्तवेद में आ पहुँचीं। दोनों ओर से गढ़ी बनायी गयी। पहली पंक्ति हाथियों की, दूसरी घोड़ों की, तीसरी रथों की तथा चौथी प्यादों की—इस प्रकार क्रम से सेना सजायी गयी। दोनों ओर के वीर साँग, शूल, परशु, पाश, कृपाण, भिण्डपाल, तोमर, मुग्दर, चक्र, भुशुण्डी, नारा आदि अस्त्र-शस्त्र लेकर युद्ध स्थल में अपनी वीरता दिखलाने के लिए आ पहुँचे। तभी दोनों ओर वीरों के बड़े वेग से युद्ध-रचना की। फिर देवता तथा दैत्यों का घोर युद्ध आरम्भ हुआ। दोनों ओर की चतुरंगिणी सेना नष्ट हुई। यहाँ तक कि थोड़ी ही देर में ही यह युद्ध स्थल सैनिकों के मृत-शरीरों से भरकर भयानक हो गया। अनेक वीर पृथ्वी पर गिरकर 'मार-मार' शब्द क उच्चारण करते थे। कोई तलवार से घायल, कोई मुग्दर तथा कोई गदा से मूर्च्छित था। रक्त की नदी बह चली। भूत, प्रेत, पिशाच आदि ने रक्त पीकर तृप्ति प्राप्त की। वैतालों ने आकर हाथियों के सिर उछाले। इसी प्रकार धीरे-धीरे देवता एवं दैत्य मरे ; परन्तु कुछ समय के पश्चात् युद्ध भूमि प्रलय के समान दिखाई देने लगी। तारक स्वयं इन्द्र से युद्ध करने लगा। अग्नि संह्रद परस्पर युद्ध करने लगे। यमराज के साथ जुम्भ ने युद्ध किया, निर्ऋति के साथ सम्बल, तथा पवन के साथ पवमान, धनपति के साथ बृहतसेन, उशना के साथ धननाद, सूर्य के साथ सुनाई तथा चन्द्रमा के साथ सुलग द्वन्द्व युद्ध करने लगे। इन सब ने घोर युद्ध किया। दोनों दल अपनी-अपनी विजय की इच्छा करते थे; परन्तु कोई भी परास्त न हुआ। उस समय युद्ध स्थल अग्नि से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

जले हुए वृक्षों के समान भयानक दिखाई देता था।

हे नारद ! युद्ध भूमि का ऐसा दृश्य देखकर तारकासुर ने बड़े वेग से इन्द्र के ऊपर आक्रमण किया तथा उनके हृदय में साँग मारी। साँग के आघात से इन्द्र हाथी से धरती पर गिर पड़े। इसी प्रकार दिक्पति भी दैत्यों से पराजित होकर भाग चले। कोई भी युद्ध में दैत्यों के सम्मुख खड़ा न रह सका। इस प्रकार देवताओं की पराजय देखकर मुचुकुन्द ने सोचा कि अब मुझे देवताओं की सहायता करनी चाहिए। मैं शिवजी का उपासक हूँ और वह मेरे सहायक हैं। यह सोचकर मुचकुन्द तारक दैत्य के सम्मुख आया। फिर बड़ी देर तक वे युद्ध करते रहे, परन्तु दोनों में से कोई किसी को परास्त न कर सका। अन्त में कोई उपाय न देख मुचुकुन्द ने तलवार हाथ में लेकर तारक दैत्य के हृदय पर प्रहार किया। यह देख तारक ने हँसकर कहा—''हे मुचुकुन्द ! तुम मनुष्य हो, मुझे तुम्हारे साथ युद्ध करने में लज्जा आती है। मुझे बड़ा खेद है कि तुमने मेरे ऊपर जिस शस्त्र का प्रहार किया, उसका मुझ पर कोई प्रभाव न पड़ा।'' तब मुचुकुन्द ने उत्तर दिया—''हे असुरराज ! मैं अब शिवजी की कृपा से तुझको जीवित नहीं छोड़ूँगा। ऐसा कौन सा दैत्य है जो मेरे सम्मुख खड़ा होकर मेरे प्रहार को सह सके?'' यह कहकर मुचुकुन्द ने तारक के ऊपर एक और असि मारी। अभी वह असि तारक के लगी तक न थी कि उसने तुरन्त साँग मारकर मुचुकुन्द को घायल कर पृथ्वी पर गिरा दिया। यह देख मुचुकुन्द ने पृथ्वी से उठ, अत्यन्त क्रोधित हो, तारक के वध का विचार कर, अपने धनुष को हाथ में लिया और ब्रह्मास्त्र चलाया।''

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! यह देखकर तुमने मुचुकुन्द को मना किया और समझाया कि यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा। इसकी मृत्यु मनुष्य के हाथ से नहीं है। इसको तो केवल स्कन्द ही मारेंगे। जहाँ अपना कोई वश न चले, वहाँ शान्त रहना ही उत्तम है।'' यह कहकर तुम सब देवताओं सहित स्कन्द जी की सेवा में पहुँचे तथा उनकी स्तुति एवं पूजा करने लगे। देवताओं को ऐसा करते देख, दैत्यों ने अत्यन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

क्रोधित होकर ; घोर नाद के साथ बाणों की वर्षा की। तब वीरभद्र क्रोधावेष में भरकर युद्ध भूमि में आ उपस्थित हुए।''

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! वीरभद्र अपने गणों को साथ लिये हुए युद्ध करने लगे। दोनों ओर से बड़े जोर से आक्रमण हुआ और नाना प्रकार के शस्त्र प्रयोग में लाये गये। वीरभद्र ने क्रोधित होकर त्रिशूल हाथ में लिया तथा उसको तारक के शरीर में मारकर, उसे धरती पर गिरा दिया। तारक उस आक्रमण से अचेत हो गया। कुछ समय पश्चात् जब उसे चेत हुआ, तब उसने वीरभद्र पर साँग से आक्रमण किया। वीरभद्र ने तारक पर पुनः त्रिशूल का वार किया। जब बहुत देर तक दोनों में से कोई परास्त न हुआ तो हे नारद ! तुमने वीरभद्र से जाकर यह कहा—''हे वीरभद्र ! तुम हमारी बात मानकर लड़ाई बन्द कर दो। तारक की मृत्यु तुम्हारे हाथों नहीं होगी। जब शिवजी स्वयं उसके साथ युद्ध करेंगे तभी इसकी मृत्यु होगी।'' वीरभद्र ने यह सुनकर तुम से क्रोधित होकर कहा—''हे नारद ! तुम युद्ध तथा वीरता की बात क्या जानो? तुम केवल तप करना ही जानते हो। मैं तुमको वीरों के विषय में बताता हूँ कि उनके चार धर्म होते हैं। जो स्वामी के बिना युद्ध करते हैं तथा अपने प्राणों का मोह न करके, भलीभाँति लड़ते हैं। वे प्रथम प्रकार के वीर हैं। जो स्वामी के साथ रणभूमि में संसार की लज्जा से मर जाते हैं, वे दूसरे प्रकार के हैं, उनको शूर कहते हैं। तीसरे जो अपने स्वामी के साथ युद्ध स्थल त्यागकर भाग जाते हैं, उन्हें क्रूर कहते हैं। चौथे वे हैं जो निकम्मे होकर घर में बैठे रहते हैं तथा उनका स्वामी युद्ध क्षेत्र में मारा जाता है। वे कायर हैं, उनको कहीं भी सुख नहीं मिलता। मैं सत्य कहता हूँ कि यदि शिवजी इस समय मेरे पास आकर मुझको तारक के वध से रोकें तब तो असमर्थता है, नहीं तो आज मैं तारक को पृथ्वी से नष्ट कर दूँगा।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:08 AM

यह कहकर वीरभद्र ने तारक के ऊपर अपने त्रिशूल का वार किया। दोनों फिर परस्पर युद्ध करने लगे। दोनों ओर की सेनाएँ भी आपस में भिड़ गयीं। इस बार दैत्यों को देवताओं ने बड़ी वीरता से परास्त किया तथा दैत्य अपनी बहुत-सी सेना मरी हुई देख, युद्ध स्थल से भाग चले।

हे नारद ! युद्ध भूमि की यह दशा देखकर तारक महाक्रोधित हुआ। वह एक करोड़ हाथ निकालकर, हाथी पर सवार हो, देवताओं के पकड़ने को उनकी सेना के भीतर घुस गया तथा उसने असंख्य देवताओं को मार डाला। उसने अपने हाथी को छोड़ दिया, जिसे देखकर सब हाथी भयभीत होकर इधर-उधर भागने लगे। इस प्रकार तारक ने देवताओं पर विजय प्राप्त की। उस समय तारक का तेज कोई न सह सका और सब लोग बड़े दुःखी हुए। उनके हाथी ने सब हाथी आदि को मार डाला। यह दशा देखकर विष्णु जी से न रहा गया। उन्होंने तुरन्त चक्र उठाकर तारक के साथ युद्ध कर, देवताओं को आनन्दित किया। विष्णु जी तथा तारक में घोर युद्ध हुआ, जिसमें दोनों ओर से अनेक लोग मारे गये। तारक ने अपने तीक्ष्ण बाणों की वर्षा से देवताओं को फिर भयभीत कर दिया। तब विष्णु जी ने देवताओं को इस प्रकार भयभीत देखकर, क्रोधित हो, तारक के ऊपर अपना चक्र चलाया। उस समय पृथ्वी काँप उठी ; परन्तु चक्र को तारक के शरीर पर जमने का कोई स्थान नहीं मिला। तारक ने अपने गुरु का स्मरण कर उन्हें प्रणाम किया तथा अनेक प्रकार की माया दिखलाई, अनेक राक्षस हाथियों के समान चिग्घाड़ते हुए उत्पन्न हुए। तारक की यह माया कोई न जान पाया। अतः वे युद्ध स्थल से भाग कर स्कन्द के पास जा पहुँचे तथा विनय के साथ भयभीत हो इस प्रकार बोले—"हे स्वामी ! हम आपकी शरण में आए हैं। आप अब शीघ्र ही तारक का वध कीजिये, क्योंकि आपका अवतार इसी निमित्त हुआ है। आपके बिना और कोई तारक को नहीं मार सकता है।"

हे नारद ! देवताओं को इस प्रकार भयभीत देखकर स्कन्द ने हँसकर कहा—"हे देवताओ ! मुझको अपना-पराया कुछ भी नहीं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पता है। मैं तो अभी लड़का हूँ। अभी तक मैं इस बात की परीक्षा करता रहा कि मैं किसके साथ युद्ध करूँ, यद्यपि मैं धनुर्विद्या बिल्कुल नहीं जानता।'' हे नारद ! तुमने स्कन्द के ऐसे वचन सुनकर कहा—''हे महाराज ! आप तो शिव से उत्पन्न हुए हैं। सृष्टि के रक्षक देवताओं को आप ही से सुख की प्राप्ति होगी। आप बालक, युवा या वृद्ध नहीं हैं। तारक ने देवताओं को जीतकर उन्हें बड़े-बड़े दुःख पहुँचाये हैं, इसलिए अब आपको तारक का वध शीघ्र कर डालना चाहिए।'' स्कन्द पहले तो हँसे, परन्तु बाद में क्रोधित हुए। तब वे विमान छोड़ अपनी शक्ति सहित तारक की ओर पैदल ही दौड़ पड़े। यह देखकर तारक ने हँसकर इस प्रकार कहा कि देवताओं ने इस बालक की आशा पर ही अपने बल को नष्ट कर दिया है। वास्तव में यह सब बुद्धिहीन हैं। मुझको निश्चय है कि मैं समस्त देवताओं को मारकर नष्ट कर डालूँगा। ऐसा कहकर तारक हाथ में शक्ति लिये हुए स्कन्द से युद्ध करने के लिए चला। वह देवताओं से बोला—''हे देवताओ ! तुमने इस बालक को युद्ध स्थल में अगुआ बनाया है। अब मैं तुमको इसका फल देता हूँ। तुम सब जिसकी आशा पर निर्भर करते हो, वह मेरे भय से यहाँ से भाग जायेगा। छोटा भाई (विष्णु) तो छल में अद्वितीय एवं माया दिखाने में विख्यात है। इसने बलि के साथ वामन रूप में बड़ा छल किया तथा मधुकैटभ का शीश छल करके काट डाला। फिर अमृत बाँटने के समय भी मोहिनी रूप में इसने छल किया। इसने वेद के विरुद्ध स्त्रियों को मार डाला तथा बालि के वध में भी रामचन्द्र रूप में इसने धर्म का कुछ विचार नहीं किया। रावण को जो ब्राह्मण जाति का था और जिसको मारना वेद में निषिद्ध है, इसी ने मार डाला तथा अपनी स्त्री सीता को निष्पाप त्याग दिया इसने कृष्ण रूप में पर-स्त्रियों के साथ भोग करके वेद की रीति को त्याग दिया और अनुचित रीति से विवाह कर, कलियुग की चाल चलकर बड़ा अधर्म किया। इसी प्रकार बुद्धि रूप में सब वेदों की निन्दा करके इस विष्णु ने कुछ भी विचार नहीं किया। मुझे आश्चर्य है कि ऐसे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

मनुष्य के बल पर तुम देवताओं ने युद्ध करने का प्रयत्न किया है।''

हे नारद ! इसके पश्चात् तारक इन्द्र की निन्दा करते हुए बोला—''हे देवताओ ! इन्द्र तो बहुत ही बुरा एवं अनाचारी है। उसने अपने पिता के लड़के को दिति के गर्भ से गिरा दिया तथा केवल सांसारिक आनन्द के निमित्त ऐसे कार्य करते हुए धर्म का ज्ञान विचार न किया। इसने गौतम की स्त्री से भोग किया तथा व्रत नामक ब्राह्मण का वध कर डाला। सांसारिक आनन्द के निमित्त इसने कौन-कौन से अधर्म नहीं किये? इस समय भी इसने इस छोटे-से लड़के को युद्ध भूमि में अगुआ बनाया है, जो अभी मेरे हाथों से मारा जायेगा। यह पाप भी इसी पर पड़ेगा अन्यथा यह लड़का भाग जायेगा।'' इस प्रकार देवताओं से उनकी निन्दा करते हुए तारक फिर स्कन्द से बोला—''हे बालक ! तुम व्यर्थ अहंकार मत करो। यहाँ तुम्हारी कुछ न चलेगी। जो मनुष्य ब्राह्मण का अपमान करता है। उसके धन, धर्म, बल आदि कुछ शेष नहीं रहते।'' यह कहकर उसने अपनी साँग उठायी।

हे नारद ! इस प्रकार कहते हुए तारक की शक्ति क्षीण हो गयी, क्योंकि बड़ों की निन्दा तथा उनके कर्म कहने में तुरन्त ही शक्ति क्षीण हो जाती है। हे नारद ! होता वही है, जो सदाशिव की इच्छा होती है। संसार में ऐसा कौन है, जिसकी बुद्धि शिवजी की माया के सम्मुख ठीक रह सकती है? निदान तारक ने अपने चुने हुए श्रेष्ठ वीरों को सेनाध्यक्ष बनाकर, सेना को पीछे रखा तथा वह स्वयं स्कन्द तथा इन्द्र के सम्मुख आ गया।''

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब इन्द्र ने तारक को ऐसी शक्ति दिखाते हुए देखा तो क्रोधित होकर अपने वज्र द्वारा उसको पृथ्वी पर गिरा दिया ; परन्तु तारक ने तुरन्त ही धरती से उठकर इन्द्र को साँग मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया। यह देखकर देवताओं की सेना में बड़ा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

हाहाकार मचा। तारक ने इन्द्र को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देख, उनके पेट को अपनी लात से दबाया और उनके हाथ से वज्र छीन लिया। फिर उसने उसी वज्र से इन्द्र पर आक्रमण किया। इन्द्र की यह दशा देख स्कन्द को क्रोध हो आया तथा उन्होंने अपना त्रिशूल उठाकर तारक पर मारा। तारक उस त्रिशूल की ताड़ना न सहकर, धरती से उठकर आकाश में खड़ा हो गया। फिर उसने स्कंन्द पर आक्रमण किया। उसके प्रहार से स्कन्द घायल होकर धरती पर गिर पड़े। उन्होंने पुनः त्रिशूल अपने हाथ में ले लिया। वह त्रिशूल विद्युत् भाँति चमक उठा तथा सब दिशाएँ प्रकाश में पूर्ण हो गयीं। तब तारक पुनः साँग लेकर स्कन्द के सम्मुख आ खड़ा हुआ। उस समय देवताओं ने हर्ष ध्वनि की। फिर तारक तथा स्कन्द परस्पर युद्ध करने लगे। उस समय घोर युद्ध हुआ। दोनों मस्तक, कण्ठ, कटि, जंघा, पीठ तथा हृदय में शस्त्र मारते थे। दोनों ओर की सेनाएँ ऐसा भयंकर युद्ध देखकर आश्चर्य में पड़ गयीं। उस समय देवताओं की आशा टूट गयी और वे निराश होकर सोचने लगे कि स्कन्द तारक को नहीं मार सकेंगे। उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि, ''हे देवताओं ! स्कन्द अभी तारक का वध करेंगे।''

हे नारद ! इस आकाशवाणी के पश्चात् ही स्कन्द ने अपनी साँग तारक की भुजाओं में मारी ; परन्तु तारक ने उस पर कुछ ध्यान न देकर अपनी साँग से स्कन्द को घायल कर पृथ्वी पर गिरा दिया। स्कन्द ने सचेत होकर पुनः तारक पर वार किया। इसी प्रकार दोनों युद्ध करने लगे। इस समय देवता चिन्तित होने लगे, सूर्य का प्रकाश क्षीण हुआ, वायु थम गयी, नदी-पर्वत तथा वनों से भयानक शब्द होने लगा, पृथ्वी काँपने लगी—जैसे भूकम्प आ गया है, तथा अग्नि-देवता शान्त हो गये। हिमगिरि, मेरु, श्वेतकोट, उदयाचल, अस्ताचल, मलयगिरि, कैलाश, गन्धमादन, मैनाक, विन्ध्याचल, महेंद्र, मन्दर तथा हिमाचल आदि पर्वत भी चिन्तित एवं दुःखी थे। तब सबको इस प्रकार चिन्तित तथा दुःखी देखकर स्कन्द बोले—''हे पर्वतो ! तुम कोई चिन्ता मत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

करो।'' इसी प्रकार स्कन्द ने सब देवताओं को सान्त्वना देकर शिव-गिरिजा का ध्यान किया तथा तारक का वध करने को साँग अपने हाथ से उठायी। उस साँग में श्री गिरिजा-शंकर ने असंख्य तेज एवं बल डाल दिया। स्कन्द ने क्रोधित होकर साँग तारक के हृदय में मारी। तब तारक उसके अघात से निर्जीव होकर भूमि पर गिर पड़ा। तारक के शरीर में शिवजी का जो तेज था, वह स्कन्द के शरीर में प्रवेश कर गया। तारक की समस्त सेना यह देखकर भागकर पाताल को चली गयी। इसी प्रकार दैत्यों का पूरी तरह से वध हुआ, जिससे देवताओं को अपार प्रसन्नता हुई। उस समय सब देवता, मुनि एवं गण अति प्रसन्न होकर स्कन्द की स्तुति करने लगे। गन्धर्व, किन्नर, अप्सरा आदि गाने-बजाने लगे। अनेक प्रकार के बाजे बजे तथा सब ने स्तुति करने के पश्चात् स्कन्द से यह प्रार्थना की कि, ''हे प्रभो ! हम सबकी प्रीति आप के चरणों में दिन-दिन बढ़े, हम आपसे यही वरदान माँगते हैं। देवताओं तथा पर्वतों की ऐसी स्तुति सुनकर स्कन्द ने कहा—''हमने तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न होकर तारक का वध किया है, भविष्य में भी हम तुम्हारे दु:खों में हर तरह से सहायता करेंगे।'' इसके पश्चात् स्कन्द पर्वतों से बोले—''हे पर्वतो ! तुम सब प्रतिष्ठा के योग्य हो, समस्त मुनि और तपस्वी तुम्हारी सेवा करेंगे। तुम्हारे देखने मात्र से ही मनुष्यों के कष्ट दूर होंगे। जो तीर्थ, मन्दिर तथा तपोभूमि तुम पर स्थित होगी, वह सब आनन्द एवं सुखदायक होगी। जो पर्वत हमारी माता के समान उत्पत्ति स्थान हैं वह तपस्वियों को श्रेष्ठ फल देकर सब पर्वतों का अधिपति होगा, अन्य पर्वत भी शिवलिंग के समान पापों को नष्ट किया करेंगे। स्कन्द के इस वरदान को सुनकर चारों ओर से 'धन्य-धन्य' तथा जय-जयकार का शब्द गूँजने लगा।''

ग्यारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें उन दैत्यों का वृत्तान्त सुनाता हूँ जो भागकर पाताल में छिप गये थे। उन दैत्यों में से एक वाण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

नामक दैत्यों का स्वामी युद्ध क्षेत्र से भाग गया था, वह वहाँ से क्रौञ्च द्वीप में जाकर नाना प्रकार के उपद्रव करने लगा। उसने क्रौञ्च के सिर में अपना एक पैर इस प्रकार मारा कि वह पर्वत घबरा कर स्कन्द के पास आया और यह कहने लगा कि इस समय आप ने तारक का वध करके तो संसार को दुःखों से मुक्त कर दिया है, परन्तु केवल मैं ही अकेला सृष्टि भर में दुःखी हूँ। उसने अपना सब वृत्तान्त आदि से अन्त तक स्कन्द को सुनाते हुए कहा—"हे प्रभो ! मुझको जिसने दुःख दिया है, उसके साथ आठ कोटि दैत्य हैं। यदि मैं आपकी शरण में मनुष्य रूप धारण करके न आता, तो न जाने वह क्या करता। आपके सिवाय अब मेरा इस संसार में कौन रक्षक है?" स्कन्द ने दैत्यराज की यह कथा तथा उसका उत्पात सुनकर, उसको मार डालने का विचार किया। तब उन्होंने साँग हाथ में लेकर शिवगिरिजा का ध्यान किया और वह साँग क्रोध में भरकर उस दैत्य की ओर चलायी। उस साँग के चलने से दशों दिशाओं में प्रकाश फैल गया। साँग ने क्षण भर में ही दैत्यों को, उनके अधिपति सहित जलाकर भस्म कर दिया। इस प्रकार उन सब को समाप्त करके, वह साँग फिर स्कन्द के पास लौट आयी।

हे नारद ! इस प्रकार उन दैत्यों को नष्ट करके स्कन्द ने पर्वत से कहा कि अब तुम अपने घर को लौट जाओ और किसी प्रकार की चिन्ता मत करो ; क्योंकि हमने उस दैत्य को सेना सहित मारकर नष्ट कर दिया है। यह सुनकर क्रौञ्च ने स्कन्द की बड़ी स्तुति की तथा अपने घर को लौट गया। फिर देवताओं ने खूब उत्सव किये। तदुपरान्त स्कन्द ने उसी स्थान पर तीन शिवलिंगों की स्थापना की। उन तीनों के नाम यह रखे—पहला प्रतिज्ञेश्वर हुआ—जो कोई उसकी पूजा करेगा, उसके सब मनोरथ पूर्ण होंगे। इसी प्रकार दूसरे का नाम कपालेश्वर तथा तीसरे का नाम कुमारेश्वर रखा। इन शिवलिंगों के लिये यह वरदान भी दिया कि इनकी पूजा से दोनों लोकों में सुख प्राप्त होगा। इसके पश्चात् उसी स्थान के निकट स्कन्द ने एक जय स्तम्भ स्थापित कर, एक और शिवलिंग स्तम्भेश्वर की भी स्थापना की,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

जिनकी पूजा करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त देवताओं तथा मुनिश्वरों ने एक और शिवलिंग की स्थापना की, जिसका नाम रामेश्वर रखा गया। उसकी पूजा से प्रजा की सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं।''

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जिस समय सब देवता तथा दैत्य लड़ाई में व्यस्त थे तथा दैत्य स्कन्द जी का तेज न सहकर चारों ओर भागे, उनमें से वाण दैत्य का वृत्तान्त तो हम कह चुके हैं, अब हम प्रलम्ब नामक दैत्य के विषय में और बताते हैं। वह दैत्य शेषजी के घर में जाकर दस कोटि सेना सहित बड़ा उपद्रव मचाने लगा। उसने अनेक मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। शेषजी के पुत्र ने प्रलम्ब का सामना किया, परन्तु अन्त में उसने पराजय स्वीकार कर ली। तदुपरान्त शेषजी के पुत्र कुमुद ने स्कन्द की शरण में आकर स्तुति की तथा प्रलम्ब के उपद्रवों की कथा विस्तारपूर्वक कह सुनायी। उसने विनय की कि हे स्वामी ! आप उसको मारकर हमारे कष्टों को दूर कीजिए। मेरे कहने पर शेषजी ने उस दैत्य को नष्ट करने के लिए स्कन्द से विनती की। स्कन्द ने यह सुनकर अपनी शक्ति को उठा लिया तथा शिवजी एवं गिरिजा का ध्यान कर दैत्य की ओर फेंक दिया। उस शक्ति के प्रकाश से सम्पूर्ण संसार प्रकाशित हो गया तब उसने सातों पाताल लाँघ कर शीघ्र ही दस करोड़ दैत्यों को प्रलम्ब सहित मार कर भस्म कर दिया। वह शक्ति उन सब का नाश करके, फिर उसी प्रकार स्कन्द के हाथ में आ गयी। तब स्कन्द ने कुमुद से कहा कि हमने अपनी शक्ति द्वारा प्रलम्ब का नाश कर दिया, अब तुम निर्भय हो कर अपने घर को जाओ। शेषजी स्वयं तो स्कन्द की सेवा में तत्पर रहे तथा कुमुद उनका आदेश पाकर वहाँ से लौट गये। तब देवताओं ने विविध प्रकार उत्सव किये। मैंने तथा समस्त देवताओं ने स्कन्द की स्तुति करते हुए कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

३५१

"हे महाराज ! आप तो अभी केवल सात दिन के बालक हैं तो भी दैत्यों का नाश करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है।" स्कन्द ने देवताओं सहित जिस स्थान पर युद्ध का विचार किया था, वह स्थान सप्ततीर्थ के नाम से बड़ा तीर्थ प्रसिद्ध हुआ तथा जिस मार्ग से कुमुदनाग धरती को फोड़कर पाताल में गया था, वह सिद्धकूल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जो वहाँ स्नान करते हैं, उनके सब क्लेश मिट जाते हैं तथा अन्त में वे कैलाश पर्वत पर स्थान प्राप्त करते हैं। स्कन्द जी के चरित्र अत्यन्त पवित्र हैं, उनके सुनने-सुनाने से मोक्ष प्राप्त होती है।"

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! स्कन्द ने इसी प्रकार के अनेक चरित्रों से संसार को सुख प्रदान किया। कुछ समय बाद देवताओं ने स्कन्द से कहा—"हे देव ! आप कैलाश पर्वत पर चलकर रहिए, क्योंकि अब सब ने अपना मनोरथ प्राप्त कर लिया है।" स्कन्द जी ने इस बात को मान लिया तथा विष्णु जी और मुझको शुभ मुहूर्त्त देखने की आज्ञा दी। मैंने मुहूर्त्त देखकर देवताओं सहित स्कन्द से विनती की कि अब शुभ मुहूर्त्त आ गया है। यह सुनकर स्कन्द प्रसन्न हो, अपने माता-पिता का ध्यान धर, कैलाश पर्वत को चले। उस समय चारों ओर से 'जय शिव-गिरिजा', का शब्द सुनाई देने लगा। स्कन्द एक उत्तम विमान पर आरूढ़ होकर अपनी स्तुति सुनते हुए चले। उनके पीछे इन्द्र ऐरावत हाथी पर छत्र लेकर सवार हुए। सब दिक्पाल, सूर्य, चन्द्रमा सहित आगे-आगे जय-जयकार करते हुए चले। सबने शिवजी के पास पहुँचकर, उन्हें दूर से ही नम्रतापूर्वक खड़े होकर प्रणाम किया। स्कन्द ने शिव के निकट जाकर दंडवत् की। तब शिवजी ने उन्हें गोद में लेकर उनको हृदय से लगाया। गिरिजा अपने पुत्र के आगमन का समाचार सुनकर अपनी सखियों सहित मन्दिर से बाहर निकल आयीं। उन्होंने तुरन्त ही अपने पुत्र को गोद में उठा लिया। शिव-पार्वती की यह लीला

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देखकर, सब देवता आदि अपने-अपने हाथ जोड़, सिर झुका, बड़ी स्तुति करते हुए बोले—"हे प्रभो ! आपने शिशु रूप से प्रकट होकर तारक का वध किया एवं वाण तथा प्रलम्ब भी अपनी समस्त सेना सहित मारे गये। इसी प्रकार उन्होंने गिरिजा एवं स्कन्द की अलग-अलग भी स्तुति की। फिर वे प्रणाम कर चुप हो गये।"

हे नारद ! शिवजी ने अपनी दया दृष्टि से सबको देखते हुए कहा—"मैंने केवल तुम्हारे लिए हर सगुण अवतार लेकर विवाह किया है। यह स्कन्द मुझे बहुत प्रिय है। इसने तारक का वध किया है। अब तुम अपने-अपने घरों में जाकर प्रसन्नतापूर्वक रहो। हम इसी प्रकार सदैव तुम्हारे आनन्द को चाहते रहेंगे, क्योंकि हम सदैव भक्ति के अधीन रहते हैं। तुम सब हमारा स्मरण करना नहीं भूलना। यह कहकर शिवजी ने सबको विदा किया। फिर स्कन्द ने कुशल-पूर्वक लौट आने के कारण उन्होंने ब्राह्मणों को बहुत दान दिया तथा बहुत उत्सव किया। यह देखकर भैरव आदि गण बहुत प्रसन्न हुए। देवता आदि सब अपने-अपने घरों में पहुँचकर आनन्द के बाजे बजाने लगे तथा अपने-अपने कार्य में पूर्ववत् संलग्न हो गये। हे नारद ! हमने स्कन्द का वृत्तान्त जितना कि हमें मालूम है, यह कह सुनाया। यह चरित्र सब दुःखों को दूर करने वाला तथा आनन्ददायक है। इसके सुनने ने सब दुःख तथा विपत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। इस चरित्र को सुनने तथा सुनाने वाले भी परलोक में शुभगति को प्राप्त करते हैं। इसके सुनने से सौभाग्य बढ़ता है तथा शिव का सामीप्य प्राप्त होता है। गिरिजा तो अपने भक्तों की सदा सहायक हैं। हे नारद ! अब तुम और क्या सुनना चाहते हो?"

चौदहवाँ अध्याय

नारद जी बोले—"हे ब्रह्मा जी ! स्कन्द का चरित्र सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई, अब आप शिव-गिरिजा के अन्य चरित्रों पर भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकाश डालिये। मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ, आशा है कि आप उसका प्रसन्नता से उत्तर देंगे। हे पिता! आप मुझे गणपति का चरित्र सुनाइए तथा यह बताइए कि वे किसके पुत्र हैं? पंचदेव के पूजन की जो आज्ञा दी गयी है, उसमें एक गणपति जी भी हैं। उनकी किस समय से पूजा की गयी, तीनों लोकों को उन्होंने किस प्रकार जीता तथा उन्होंने किस प्रकार इतनी ख्यति प्राप्ति की, यह आप मुझे बताइए। मैंने कई बार यह भी सुना है कि गणपति जी भी गिरिजा के पुत्र हैं, परन्तु उनके विषय में विशेष कुछ नहीं जानता। शिवजी के विवाह में आपने कहा था कि गणपति की पूजा की गयी तथा शिवजी ने उन्हें नमस्कार किया। मुझे इसमें बड़ा संशय है कि दोनों बातें एक साथ कैसे हो सकती हैं?" यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद! तुमने वास्तव में बहुत अच्छा प्रश्न किया है। हम तुम्हें गणपति की उत्पत्ति तथा उनके पद आदि से अवगत कराते हैं। गणपति विष्णु आदि के समान ही प्राचीन देवता हैं। वे अलग-अलग पाँचों देवताओं में बँटे हुए हैं।

हे नारद! जब शिवजी गिरिजा के साथ विवाह करके अन्तःपुर में विहार करने लगे तब शिव एवं गिरिजा में ऐसा प्रेम बढ़ा कि उन्हें रात-दिन व्यतीत होते हुए कुछ भी न जान पड़े। यह दशा देखकर सब देवता मेरे पास आये तब मैं भी चिन्तित होकर उन सब को साथ लेकर विष्णु जी के पास पहुँचा और स्तुति करने के पश्चात् सब वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया, कि शिवजी एक सहस्त्र दिव्य वर्षों से विहार कर रहे हैं, पता नहीं ऐसे विहार से कैसा पुत्र उत्पन्न होगा; अस्तु आप ही इसके विषय में कुछ बताएँ। विष्णु जी यह सुनकर बोले—"हे ब्रह्मन्! सब उचित तथा शुभ ही होगा। हमको ऐसी युक्ति करनी चाहिए कि शिवजी का वीर्य किसी प्रकार से पृथ्वी पर गिर पड़े, जिससे गिरिजा के पुत्र न उत्पन्न होने पावे, नहीं तो वह ब्राह्मण्ड भर को जलाकर भस्म कर देंगा।" यह सुनने के पश्चात् मैं तो अपने घर चला गया तथा अन्य देवता कैलाश पर्वत पर गए। देवताओं ने शिवजी के द्वार पर जाकर उन्हें आवाजें दीं, तब शिवजी बाहर निकल कर आये। उस समय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:09 AM

देवताओं ने प्रणाम करके स्तुति की और कहा—"हे प्रभु ! आप संसार को पवित्र करें।" शिवजी देवताओं का आशय समझकर कहने लगे—"मैंने तुम्हारे मनोरथ को अच्छी तरह समझ लिया है। तुमने व्यर्थ ही मेरे आनन्द में विघ्न डाला, यह बहुत ही बुरा हुआ। अब मेरा वीर्य सिर से नीचे की ओर आता है, उसको तुम में कौन लेता है?" यह कहकर उन्होंने अपना वीर्य पृथ्वी पर गिरा दिया, जिसके तेज से सब ओर प्रकाश हो गया। उस समय अग्नि कपोत का रूप धारण कर उस वीर्य को खा गये। फिर जब वे उड़कर आकाश की ओर चले तो उस वीर्य को धारण करने की शक्ति न पाकर, उन्होंने उसे पृथ्वी पर गिरा दिया। उसके गिरने से पहाड़ भी काँप उठा। इस प्रकार स्कन्द की उत्पत्ति हुई, जिसके विषय में हम पहले बता चुके हैं।

हे नारद ! अब हम तुम्हें गणपति के विषय में बतलाते हैं। इस घटना के घटते समय शिवजी ने सब देवताओं से कहा कि तुम लोग शीघ्र ही हमारे पास से भाग जाओ। ऐसा न हो कि गिरिजा इस बात को जानकर तुम पर क्रोध करें। यह सुनकर देवता वहाँ से भाग गये तथा शिवजी उनके भागने का चरित्र देखते रहे। उसी समय गिरिजा ने आकर देवताओं पर महाक्रोध किया, जिससे ऐसा प्रतीत होने लगा कि अभी प्रलय हो जायेगा। तदुपरान्त गिरिजा ने देवताओं को शाप दिया। शाप दे चुकने के पश्चात् भी उनका क्रोध शान्त न हुआ। उनका शरीर दुःख की अधिकता के कारण शिथिल हो गया शिवजी ने गिरिजा को इस प्रकार दुःखी देखकर गोद में उठा लिया तथा बहुत-सी प्रेम की बातें कीं। उन्होंने उन्हें समझाते हुए कहा—"हे गिरिजे ! तुम मुझ से इस प्रकार क्यों अप्रसन्न हो? मेरा कोई अपराध नहीं है। यदि अनजाने में कोई अपराध हो गया हो तो क्षमा करो। तुम्हारे बिना मानो हम अंगहीन हैं। तुम तो सब की माता हो। तुम्हारे अधीन तो तीनों लोकों के कार्य हैं। बिना तुम्हारे सब निर्बल हैं। अस्तु, अब प्रसन्न होकर तुम हमारे तथा सबके दुःख को दूर करो।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी के ऐसे वचन सुनकर गिरिजा बोली—"हे नाथ ! क्या आप मेरे दुःख को नहीं जानते? संसार में संतान-हीन होने के बराबर कोई दुःख नहीं है। मेरा पहला जन्म बिना सन्तान के ही व्यतीत हो गया, अब यह जन्म भी उसी प्रकार बीतना चाहता है। देवताओं ने मेरे साथ छल करके मुझे बाँझ बनाकर, बहुत दुःख पहुँचाया है। यदि पुत्र न हो तो संसार के सहस्त्रों ऐश्वर्यों पर धिक्कार है। जब गुणवान् पुत्र उत्पन्न होता है, तभी लोक में शुभ कर्मों का फल प्राप्त हुआ प्रतीत होता है।" यह कहकर गिरिजा बहुत रोईं। तब शिवजी ने गिरिजा को उठाकर हृदय से लगाते हुए कहा—"हे गिरिजे ! हम तुमको ऐसा उपाय बताते हैं, जिससे तीनों लोकों में सब कार्य पूर्ण होंगे। मैं, विष्णु तथा ब्रह्मा सब उसके वश में हैं। हम उनको अपना गुरु अर्थात् गणपति कहते हैं। वह हमारा मुख्य रूप है, जिसकी सेवा से समस्त दुःख दूर होकर सुख की प्राप्ति होती है। तुम एक वर्ष तक उनका व्रत करो तो तुम्हारा मनोरथ सफल हो जाएगा। उनका नाम ही समस्त कष्टों को दूर करने वाला तथा आनन्ददायक है। वह व्रत कृष्ण पक्ष की चौथ को किया जाता है। वह व्रत गणेश चौथ का व्रत कहलाता है। उस व्रत को रखकर, पवित्रतापूर्वक चन्द्रमा के उदय होते ही पूजा करे। वह व्रत समस्त व्रतों का राजा तथा प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करने वाला है। जिस प्रकार सब मन्त्रों में प्रणव, हमारे भक्तों में विष्णु, नदियों में गंगा, इन्द्रियों में मन, बड़ों में माता, पुरियों में काशी, सहायकों में भाई तथा पुत्र, नक्षत्रों में चन्द्रमा, मन्त्रगणों में पंचाक्षरी, बीजमन्त्रों में प्रणव, पुराणों में भारत तथा आश्रमों में संन्यास उत्तम हैं, उसी प्रकार सब देवताओं में शिव की भक्ति महान् है। इसी प्रकार गणेश चौथ का व्रत भी सब व्रतों में बड़ा है।"

हे नारद ! इस प्रकार शिवजी गिरिजा को गणेश चौथ की महानता का वर्णन करते हुए बोले—"हे गिरिजे ! कलियुग में राजा शेषसेन ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

इस व्रत को करके बड़ा आनन्द प्राप्त किया। मनु की स्त्री शतरूपा ने यही व्रत करके दो पुत्र प्राप्त किया। कद्रम की पत्नी ने भी इसी व्रत द्वारा कपिल नाम विष्णु अवतार को प्राप्त किया। वशिष्ठ की स्त्री ने भी यह व्रत करके शक्ति नामक पुत्र को उत्पन्न किया। इसी प्रकार इसी व्रत के प्रभाव से अनेक मनुष्यों ने पुत्र प्राप्त किये हैं। गिरिजे ! तुम भी इसी व्रत के प्रभाव से अवश्य पुत्र प्राप्त करोगी।'' गिरिजा ने शिवजी के मुख से गणेश चौथ के व्रत की महिमा को सुन, प्रसन्न होकर बोली—''हे स्वामी ! मैं अवश्य ही व्रत करूँगी ; परन्तु आप इस व्रत के सब नियम-क्रिया आदि विस्तारपूर्वक कहें।'' शिवजी बोले—हे देवि ! कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को शुद्ध हृदय से प्रातःकाल उठकर स्नान करें तथा जो कुछ करना उचित है, वह सब करे। इसके पश्चात् व्रत की दृढ़ इच्छा कर, यह संकल्प करें—''हे गणेश ! हमारा व्रत भली प्रकार से पूर्ण हो जाए और हमारे सब दुःख दूर हो जाएँ। तुम सबको जानते हो, सब फलों के दाता हो तथा वेदों ने तुमको विघ्नहर्ता कहा है।'' इस प्रकार हृदय में संकल्प करके चतुर्थी के दिन गणपति की वार्ता में ही दिन व्यतीत करें। सूर्यास्त के समय स्नान कर अपने स्थान पर बैठे और कथा-पूजा की सब सामग्री इकट्ठी करें, फिर गणेश जी की पूजा के लिए अच्छा स्थान तैयार करे, जिसके चारों ओर केले के खम्भे लगाए गए हों। जब आकाश में चन्द्रमा उदय हो, तब तुरन्त अर्घ्य और गणेश की मूर्ति सोना-चांदी, ताँबे या गोबर की, जैसी सामर्थ्य हो, बनवावें। उसको शुभ स्थान पर रखकर कलश स्थापित करे, जिसके ऊपर दीपक रखा हो, इसके पश्चात् ध्यान लगाकर षोडशोपचार से उसका पूजन करे तथा लाल फूल, वस्त्र, चन्दन, कुश, दूध तथा पूए आदि आगे रखकर आचमन करा दें। अच्छी स्तुति करके, प्रेम मग्न हो, उनको प्रणाम करें। तदुपरान्त वही पूआ पूजन कराने वाले ब्राह्मण को खिलाकर, दक्षिणा स्वरूप कुछ चाँदी दें, नहीं तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो चाहे सो दक्षिणा दें। तदुपरान्त स्वयं भी मीठा भोजन करे। इस प्रकार जो गणेश का व्रत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

करते हैं, उनकी मनोकांक्षा पूर्ण होती है। हे गिरिजे ! इसलिए तुम भी इसी व्रत को करो।"

⊛⊛⊛

सोहलवाँ अध्याय

शिवजी से यह सुनकर गिरिजा ने पूछा—"हे नाथ ! आपने गणपति के इस व्रत में चन्द्रमा को अर्घ्य देने का जो वर्णन किया है, उसका मुख्य कारण मेरी समझ में नहीं आता। इसलिए आप इस कथा को कहिए।" शिवजी बोले—"हे गिरिजे ! जब ब्रह्मा ने हमारी आज्ञा को मानकर स्वर्ग जाने की इच्छा की तथा गणपति का एकाग्र चित्त होकर पूजन किया, तब गणपति ने उनकी पूजा से प्रसन्न होकर उनसे वरदान माँगने को कहा। उस समय ब्रह्मा ने यह कहा कि हम सृष्टि उत्पन्न करना चाहते हैं तथा निर्विघ्न उसकी वृद्धि की इच्छा रखते हैं।" ब्रह्मा के वचन सुनकर गणपति ने कहा—"यही होगा।" ऐसा कहकर गणपति धीरे-धीरे आकाश की ओर चल दिए। जब गणपति चन्द्रमा के मन्दिर में पहुँचे तो वहाँ पाँव फिसल जाने के कारण गिर पड़े। उनका उदर बहुत बड़ा तथा शरीर स्थूल था। चन्द्रमा यह देखकर हँस पड़े। चन्द्रमा को हँसते हुए देख गणपति बहुत क्रोधित हुए और उनके नेत्र लाल हो गये। तब उन्होंने उसी समय चन्द्रमा को यह शाप दिया कि हे कलंकी चन्द्रमा ! तू अपनी सुन्दरता पर गर्व करता है। अब तुझको इसका फल तुरन्त प्राप्त होगा। जो कोई तुझको आज से देखेगा उसको अवश्य ही कुछ-न-कुछ कलंक लग जाएगा।

हे गिरजे ! इस प्रकार चन्द्रमा को शाप देकर गणपति अन्तर्धान हो गए तथा चन्द्रमा क्षीणांग होकर तेजहीन हो गया। उस समय सब देवता एवं इन्द्र दुःखी होकर ब्रह्मा के पास गए तथा उन्हें सब वृत्तान्त कह सुनाया। ब्रह्मा ने उनसे कहा—"हे देवताओ ! इसमें कोई बुरी बात नहीं है। चन्द्रमा ने जो कुछ किया उसने उसी का फल प्राप्त किया है। गणपति का शाप कभी झूठा नहीं हो सकता। इसलिए तुम सब लोग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गणपति की शरण में जाओ। निश्चय ही वे अपने शाप को शान्त करेंगे।'' तब देवताओं ने ब्रह्मा से विनय की—''हे ब्रह्मा जी ! आप हमको वह उपाय बताएँ, जिससे गणपति प्रसन्न होकर उस शाप को शान्त करें।'' यह सुनकर ब्रह्मा बोले—''हे देवताओ ! गणपति का व्रत कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को है। जो कोई उसको करता है, उस पर गणपति प्रसन्न होते हैं।'' ब्रह्मा के ऐसे वचन सुनकर देवताओं ने बृहस्पति को चन्द्रमा के पास भेजा तथा उसे गणेश चतुर्थी का व्रत करने के लिए कहा। तब चन्द्रमा ने बृहस्पति द्वारा बताई हुई रीति के अनुसार गणपति के व्रत को आरंभ किया। उस व्रत के प्रताप से गणपति चन्द्रमा को क्रीड़ा करते हुए शिशु रूप में दिखाई दिये। चन्द्रमा ने उन्हें देखकर प्रणाम करके, बहुत स्तुति की। तब गणपति ने प्रसन्न होकर कहा—''हे चन्द्रमा ! हम तुम से प्रसन्न हैं, तुम जो वरदान चाहो, हम से माँगो।'' उस समय चन्द्रमा ने यह निवेदन किया—''हे गणपित ! मैं केवल यही चाहता हूँ कि आपके शाप से मुक्ति पाकर सबके दर्शन के योग्य हो जाऊँ।'' गणपति बोले—''हे चन्द्रमा ! मैं तुमको इसका उपाय बताता हूँ, जिससे तुम्हारा शाप से उद्धार हो जाएगा। आज से प्रतिमास शुक्ल पक्ष की चौथ को हमारा शाप तुमको लगा रहेगा तथा अन्य तिथियों में तुम्हें देखने से किसी को कलंक नहीं लगेगा, परन्तु जो मनुष्य पहले दूज तथा तीज में तुमको देखेगा, उस पर कुछ चतुर्थी को देखने का भी प्रभाव न होगा, परन्तु साथ ही हम तुमसे यह भी कहते हैं कि हमारा पहला वचन भी झूठा न होगा अर्थात् जो मनुष्य भादों के शुक्ल पक्ष की चौथ को तुम्हारे दर्शन करेगा, उनको बराबर वर्ष भर कलंक लगा करेंगे।''

हे गिरिजे ! गणपति के मुख से ऐसे वचन सुनकर चन्द्रमा ने कहा—''हे गणपति ! अब मुझे इस शाप से भी दूर होने की कोई युक्ति बताइए?'' तब गणपति बोले—''हे चन्द्रमा ! जो मनुष्य प्रति मास की कृष्ण पक्ष की चौथ को तुम्हारे उदय होने के समय मेरी तथा रोहिणी सहित तुम्हारी पूजा करेगा, तुमको अर्घ्य देगा, हमारी कथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

सुनकर ब्रह्मभोज करेगा तथा स्वयं नमक आदि त्याग कर केवल मीठा ही भोजन करेगा, उसको चौथ का दोष जो वर्णन किया है, वह प्राप्त न होगा। जब भादों मास का आरम्भ हो, तो शुक्ल पक्ष की चौथ को हमारी पूजा करें। उस व्रत से सब प्रकार के क्लेश दूर हो जाएंगे, तथा उस मनुष्य को चौथ का कुछ कलंक नहीं लगेगा।'' चन्द्रमा से इतना कहकर गणपति अन्तर्धान हो गये और चन्द्रमा फिर अपना तेज प्राप्त कर प्रसन्न हुआ। हे गिरिजे ! इस कथा के सुनने से भी पाप समूल नष्ट हो जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस व्रत को करने से पुत्र के अतिरिक्त जो भी मनोरथ हों, वे प्राप्त होते हैं।''

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! शिवजी के ऐसे वचन सुनकर गिरिजा ने ब्राह्मणों को बुलाकर शुद्ध मन से नियमानुसार व्रत का आरम्भ किया तथा अनेक प्रकार की वस्तुएँ चढ़ाकर, पूए भी गणपति को भेंट किये। फिर उन्होंने उत्तम रीति से ब्रह्म भोज कर, स्वयं भी भोजन किया। इसी प्रकार गिरिजा प्रति मास व्रत रखकर, भली प्रकार दान-दक्षिणा देती रहीं। जब एक वर्ष पूरा हो गया तो उन्होंने दान-दक्षिणा आदि देकर एक वृहत् उत्सव का आयोजन किया जिसमें बहुत गाना-बजाना हुआ। व्रत पूर्ण होने के पश्चात् गिरिजा अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने शिवजी की ओर बारम्बार देखा, तब शिवजी ने उन्हें अपनी माया जानकर, अपने हृदय से लगा लिया। फिर गिरिजा का मनोरथ समझकर शिवजी ने चन्दन के एक वन में, जो उस पर्वत पर ही था और जहाँ सुख की सम्पूर्ण सामग्री उपलब्ध थी, जाकर गिरिजा के साथ विहार किया। तब गणपति उस स्थान पर ऐसा स्वरूप बनाकर आये कि वे बहुत भूखे-प्यासे, नंगे, दरिद्री, श्वेत, केश, मस्तक पर श्वेत तिलक लगाये, महादीन, कौए का शब्द बोलते हुए, दाँत मैले-कुचैले, हाथ में डण्डा लिये तथा बहुत ही दुर्बल थे। वे दुखियाते हुए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

शिवजी से बोले—"हे शिव ! तुम क्या करते हो? सात दिन से हमने कुछ नहीं खाया है सो हम बहुत भूखे हैं। हमें भोजन चाहिए। तुम हमें भोजन कराकर जल पिलाओ।" यह सुनकर शिवजी तुरन्त उठ खड़े हुए, जिससे उनका वीर्य उसी स्थान में गिर पड़ा। गिरिजा भी तुरन्त उठकर अपने वस्त्र पहन, शिवजी के साथ द्वार पर आयीं। उन्होंने ब्राह्मण को प्रणाम किया तथा बड़ी स्तुति की। शिवजी उससे इस प्रकार बोले—"हे ब्राह्मण ! तुम्हारा नाम क्या है? हमारा सौभाग्य है जो तुम यहाँ पधारे। इस समय तुम यहाँ अतिथि रूप में हमारे यहाँ आये हो। अतिथि की सेवा के सुख के बराबर अन्य कोई धर्म नहीं है।" गिरिजा ने भी कहा—"हे ब्राह्मण ! ऐसी धूप में तुम कहाँ से पधारे हो? जो गृहस्थ अतिथि के चरणों को जल से धोकर, उस चरणामृत को पीता है, उसे सब तीर्थों का फल प्राप्त होता है।" यह सुनकर उस ब्राह्मण ने कहा—"हे गिरिजे ! तुम धन्य हो, मैं बहुत ही भूखा-प्यासा हूँ। कृपा कर तुम मुझको भोजन तथा जल दो।" गिरिजा ने उसी समय ब्राह्मण को उत्तमोत्तम भोजन करायी। भोजन करने के पश्चात् ब्राह्मण ने तृप्त होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा—"हे गिरिजे ! तुम्हारी कामना पूर्ण हो, तुमको संसारी रीति के विरुद्ध ऐसे पुत्र की प्राप्ति हो, जो गर्भ से उत्पन्न न हुआ हो।" यह कहकर वह ब्राह्मण अन्तर्धान हो गया। तदुपरान्त वे गणपति शिव-गिरिजा की शैय्या में, जहाँ वीर्य पड़ा हुआ था, मुख्य रूप से प्रकट हुए। बालकों के समान, करोड़ों सूर्यों की ज्योति धारण किये, करोड़ों कामदेव के समान सुन्दर शरीर धारण किये, चम्पा के समान हाथ-पाँव तथा कमलवत् कोमल अंगों वाले शैय्या में इधर-उधर फिर रहे थे।

हे नारद ! जब शिव एवं गिरिजा ने देखा कि वह ब्राह्मण एकदम अन्तर्धान हो गया, तो वे दोनों उसे चारों ओर ढूँढने लगे। उन्हें अपने मन में बहुत दुःख तथा कष्ट हुआ, इतने में यह आकाशवाणी हुई—"हे गिरिजे ! तुम संसार की माता हो, वह ब्राह्मण रूपधारी स्वयं गणपति थे। वे तुम्हारे व्रत से प्रसन्न होकर अब शिशु के समान तुम्हारे बिछौने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पर पड़े हैं। तुम उन्हें जाकर देखो। योगी जिनका ध्यान करते हैं, वे तुम्हारे पुत्र हुए हैं। अब घर में जाकर आनन्द मनाओ।'' यह आकाशवाणी सुनकर गिरिजा प्रसन्न होकर मन्दिर में गयीं। वहाँ देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर बालक हँस-हँस कर शैय्या पर पड़ा खेल रहा है। गिरिजा ने तुरन्त ही यह सब वृत्तान्त शिवजी को जा सुनाया और कहा—''हे स्वामी ! आप शीघ्र चलकर देखें, गणपति के व्रत का फल प्राप्त हो गया है।'' यह सुनकर शिवजी ने भी अन्दर आकर उस बालक को देखा।

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! गिरिजा ने बालक को दूध पिलाया। जिस प्रकार एक दरिद्री अतुल सम्पत्ति पाकर प्रसन्न होता है, उससे कई लाख गुना अधिक आनन्द गिरिजा को प्राप्त हुआ।''

हे नारद ! जब गणपति दूध पी चुके, तब शिवजी ने उन्हें अपनी गोद में उठाकर, उनके सिर तथा हाथ चूमे और नाना प्रकार के आशीर्वाद दिये। फिर सब ब्राह्मणों को बुलाकर रत्न-मोती आदि दान किये। तदुपरान्त विष्णु जी तथा देवता, मुनि आदि सब शिव के उस पुत्र को देखने के लिए वहाँ गये। हिमाचल भी अत्यन्त प्रसन्नता के साथ रत्न आदि लिये हुए जा पहुँचे। एक लाख अमूल्य रत्न, पाँच लाख भर सोना, तीन लाख घोड़े, एक सहस्त्र हाथी तथा वस्त्र आभूषणों को दान में दिये। देवता, शेषनाग, गन्धर्व आदि ने भी एक सहस्त्र अच्छे बर्तन, एक सहस्त्रमणि, एक सहस्त्र माणिक्य, असंख्य अग्नि में न जलने वाले शुद्ध वस्त्र दान में दिये। लक्ष्मी ने कौस्तुभ मणि तथा सरस्वती ने हार ब्राह्मणों को दान दिये। विष्णु तथा मैंने लड़के को देखकर, प्रसन्नतापूर्वक अनेक आशीर्वाद दिये। उस समय विष्णु जी बोले—''हे बालक ! तुमने शिवजी को बहुत प्रसन्न किया है। तुम्हारा बल पवन के समान होगा और सब सिद्धियाँ तुम्हारे आधीन होंगी।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

मैंने आशीर्वाद दिया कि तुम्हें सब लोग पूजेंगे, तुम्हारा तेज एवं कीर्ति किसी समय कम न होगी, तुम तीक्ष्ण बुद्धि वाले तथा बड़े विद्वान् होगे। तुम हमारे समान सबका उपकार करोगे और तीनों भुवन के विघ्न तुम्हारे स्मरण मात्र से ही दूर हो जायेंगे।''

हे नारद ! मेरे इस प्रकार आशीर्वाद देने के पश्चात् लक्ष्मी ने कहा—''हे बालक ! तुम जहां पर रहोगे, हम भी वहाँ अवश्य ही होंगी। वहाँ ऋद्धि-सिद्धियाँ भी प्रेमपूर्वक स्थित रहेंगी।'' सरस्वती ने कहा—''तुम्हारी कविता में महान् शक्ति होगी। तुम्हारे स्मरण मात्र से ही कवित्व शक्ति शीघ्र प्राप्त होगी। सावित्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा—''हम सब वेदों की जननी हैं, हमारी कृपा से तुम सम्पूर्ण वेदों के ज्ञाता होगे।'' हिमाचल बोले—''तुमको शिव के चरणों में बड़ी भक्ति प्राप्त हो तथा तुम में विष्णु के समान अपार बल हो।'' मैनाक ने कहा—''हे गिरिजा पुत्र ! तुम कामदेव के समान सुन्दर, समुद्र के समान गंभीर तथा विष्णु एवं शिव के समान धर्म निष्ठ होंगे।'' वसुन्धरा ने कहा—''तुम्हारे आधीन समस्त पृथ्वी के रत्न एवं मणि रहेंगे। तुम्हारी कृपा द्वारा सब प्रकार के विघ्न नष्ट होंगे।'' पार्वती ने कहा—''हे पुत्र ! तुम सिद्धि को देने वाले, सिद्ध योगी के समान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाले, सबसे निराले तथा अपने पिता के समान होगे।'' शिवजी ने कहा—''तुम सबको आनन्द प्रदान करने वाले, सबकी पूजा के योग्य तथा मुझको बहुत प्रिय होगे।'' इस प्रकार सब ने मिल कर गणपति को आशीर्वाद दिये। हे नारद ! गणपति की इस उत्पत्ति कथा को जो कोई सुनेगा तथा कहेगा, उसके सब मनोरथ पूर्ण होंगे।''

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! गणपति के जन्म की प्रसन्नता में शिवजी ने बड़ा भारी उत्सव किया। वे स्वयं रत्न जड़ित आसन पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

बैठे, दाहिनी ओर विष्णु तथा बायीं ओर मैं स्वयं बैठा। विष्णु के पार्षद् चन्द्रमा, दिक्पति तथा धर्मराज आदि अपने-अपने स्थान पर बैठ गये। नृत्य-गायन का समारोह आरम्भ हुआ। उस समय वेद, पुराण, आगम, निगम ने शिवजी की स्तुति की तथा बाजे बजने लगे। इसी समय सूर्य के पुत्र शनिश्चर गणपति को देखने को आये। शिव, विष्णु, ब्रह्मा, धर्मराज तथा चन्द्रमा की स्तुति कर, उनसे आज्ञा ले शनिदेव मन्दिर के अन्दर गये तथा प्रथम द्वार पर पहुँचे। वहाँ द्वारपालों ने उन्हें जाने से रोक दिया। तब शनिश्चर ने द्वारपालों से कहा—"तुम हमको मत रोको, हम लड़के को देखने के लिए जाते हैं।" द्वारपालों ने उत्तर दिया—"हम गिरिजा की आज्ञा बिना तुम्हें अन्दर नहीं जाने देंगे। हमको शिवजी की शपथ है। अस्तु तुम यही खड़े हो। तब तक हम गिरिजा से आज्ञा लिये आते हैं।" यह कहकर एक द्वारपाल गिरिजा से आज्ञा लेने अन्दर गया। कुछ समय पश्चात् गिरिजा की आज्ञा से शनिश्चर अन्दर गये। शनिश्चर ने गिरिजा की स्तुति की तथा गिरिजा ने आशीर्वाद दिया और यह पूछा—"हे शनिश्चर ! इसका क्या कारण है कि तुम आधा सिर झुकाकर देखते हो, तुम लड़के को अच्छी तरह क्यों नहीं देखते? क्या तुमको हमारा यह आनन्द अच्छा नहीं लगा?"

हे नारद ! शनिश्चर ने गिरिजा के ऐसे वचन सुनकर कहा—"हे गिरिजे ! भाग्य अत्यन्त बलवान् है। सब मनुष्य संस्कार के आधीन हैं तथा शुभ-अशुभ कर्म दोनों लोकों से दूर नहीं किये जा सकते। स्वर्ग-नरक, जन्म-मरण, आकाश-पाताल, देवता-मनुष्य, आवागमन, धन की पूर्णता, दरिद्रता, कुल-अकुल, पुत्रहीन, सपुत्र आदि सब भाग्य के ही व्यवहार हैं। इसी प्रकार हम भी अपने भाग्य द्वारा आधे देखने वाले हो गये हैं। हम जिस कारण ऊपर दृष्टि नहीं कर सकते, उसकी कथा सुनिये। यद्यपि वह कथा इस योग्य नहीं है कि ढिठाई से सुनायी जाए, फिर भी आप मेरी माता हैं तथा मैं आपका पुत्र हूँ। मैं बचपन से ही शिवजी का भक्त होकर उन्हीं के ध्यान एवं तप में संलग्न रहकर, उन्हीं के नाम का जप करता था। जब मैं यौवनावस्था को प्राप्त हुआ, तब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:10 AM

मेरे पिता ने मेरा विवाह कर दिया। चित्ररथ की कन्या ने, जो मेरी पत्नी थी, मेरी बड़ी सेवा की। संयोग से ऋतु के दिनों से निश्चिंत होकर उसने स्नान तथा शृंगार किया और तिरछी चितवन किये, हँसती हुई मेरे पास आयी और बोली कि मुझको देखो और मेरी इच्छा की पूर्ति करो। मैंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया तथा उसी प्रकार शिवजी के ध्यान में लगा रहा। उस समय मैं बहुत बुद्धिहीन था। मैंने उसके गूढ़ शब्द को न सुना। जब उसने अपने मनोरथ को सिद्ध होता हुआ न देखा, तब उसने मुझे यह शाप दिया—"तुमने बुद्धिमान् होते हुए भी अपना धर्म न जानकर ऐसा भारी पाप किया है जो अपराध तुमने किया, उस पर विचार तक नहीं किया। इसलिए मैं तुमको शाप देती हूँ कि तुम शुभ न होगे। तुम जिसको नेत्रों से अच्छी तरह देखोगे, वह जड़-मूल से जलकर भस्म हो जाएगा।" यह कहकर वह मेरे पास खड़ी रही। तब मैंने शिवजी का ध्यान छोड़कर उसे उत्तर देते हुए कहा—"हे प्रिय ! मैं ऐसे शाप को सहन नहीं कर सकता।" यह वचन सुनकर मेरी पत्नी दुःख एवं नम्रता से अत्यन्त लज्जित हुई, परन्तु मेरे मन में किसी प्रकार का खेद न हुआ। मैंने यह शाप धारण कर लिया। मैं उसी दिन से किसी वस्तु को अच्छी प्रकार आँख उठाकर नहीं देखता; क्योंकि मुझे जीव के निर्जीव होने का भय हर समय बना रहता है?"

हे नारद ! शनिश्चर के यह वचन सुनकर गिरिजा अपनी सखियों सहित बहुत हँस कर बोली—"हे शनिश्चर ! तुम हमारे पुत्र को भली-भाँति देखो।" शनिश्चर यह सुनकर दुविधा में पड़े कि गिरिजा के पुत्र को देखूँ या न देखूँ ; यह विचार करते हुए उन्होंने दाहिने नेत्र के कोने से बालक की ओर देखा। उसी समय गिरिजा के पुत्र का सिर उड़ गया। पार्वती यह दशा देख रोने-बिलखने लगीं तथा शनिश्चर को बुरा-भला कहने लगीं। उन्होंने लड़के का शरीर हृदय से लगा लिया और मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। यह दशा देखकर सब स्त्रियाँ भी रोने लगीं। रोने-पीटने का यह शब्द सुनकर विष्णु आदि देवता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आश्चर्य के साथ मन्दिर के अन्दर गये तथा वहाँ सब दृश्य देखा। शिवजी भी संसारी मनुष्यों के समान रुदन करने लगे।"

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! गिरिजा चैतन्य होकर पुनः खेद एवं दुःख से मूर्च्छित हो गयीं। हम सबने उन्हें फिर किसी उपाय से सचेत किया। तब विष्णु तथा मैंने हर प्रकार से गिरिजा को समझाते हुए यह कहा कि संसार का सम्बन्ध ही क्या है? यह सब सम्बन्ध केवल मोह के ही कारण हैं।" यह सुनकर गिरिजा ने दुखित होकर कहा—"अब मेरा जीवित रहना कठिन है। मैंने देवताओं की युक्ति को कुछ भी न समझा। मैं अभी तीनों लोकों को जलाकर भस्म कर दूँगी, क्योंकि मेरे दुःखी रहते कोई सुखी नहीं रह सकता। यदि मेरा पुत्र सजीव होकर नहीं उठेगा तो संसार भर को सुख न मिलेगा।" यह कहकर गिरिजा पुनः पृथ्वी पर गिर पड़ीं तथा अचेत हो गयीं। उस समय सब चित्र लिखे के समान चुप हो गये तथा शिव के पास पहुँचकर बहुत ही लज्जा से बोले—"हे प्रभो ! यह क्या हुआ, जिससे हम सबको दुःख प्राप्त हुआ है? अब आप ऐसा कोई उपाय बताइए, जिससे बालक पुनः जीवित हो उठे तथा उससे तीनों लोकों को आनन्द प्राप्त हो।" यह सुनकर शिवजी बोले—"हे देवताओ ! जो होनहार है, वह रुक नहीं सकता।" फिर वे विष्णु से बोले—"हे विष्णु ! तुम हमारे मुख्य रूप हो। वेदों ने हमारी तुम्हारी समानता बतायी है। अब तुम किसी और का शीश काटकर बालक को लगा दो, तो बालक जीवित हो उठेगा।"

हे नारद ! शिवजी का आदेश पाकर विष्णु जी तुरन्त गरुड़ पर चढ़कर चले तथा उत्तर दिशा की ओर चक्र लिये हुए पहुँचे। उन्होंने पुष्पभद्रा नदी के तट पर वन में एक हाथी को हथिनी तथा बच्चों सहित देखा। हाथी अपने परिवार सहित उत्तर की ओर सिर किये सो रहा था। अस्तु, विष्णु ने तुरन्त ही उस हाथी का सिर चक्र से काट कर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

गरुड़ पर रख लिया। जब विष्णु जी ने वहां से चलना चाहा, तभी हथिनी जग पड़ी। उसने चिल्लाकर अपने बच्चों को जगाया तथा विलाप करने लगी। सबने जागकर विष्णु जी को चारों ओर से घेर लिया तथा उत्तम रीति से उनकी स्तुति करके कहा—"हे विष्णु ! यह आपने क्या किया? आप तो धर्म स्वरूप हैं। यदि आप हमारे स्वामी गजराज को जीवित नहीं करते तो हम सबके मारने का अपराध आप पर लगेगा।" तब विष्णु जी ने प्रसन्न होकर हाथी के धड़ से एक और शीश लगा कर उसे जीवित कर दिया और कहा—"तुम एक कल्प तक जीवित रहोगे।" इस प्रकार विष्णु जी वहाँ से हाथी का सिर लेकर लौटे तथा गिरिजा के पास जाकर वह सिर दे दिया। गिरिजा ने इस शिश को युक्तिपूर्वक गणेश जी के धड़ से जोड़ दिया तथा शिवजी ने अपनी दया दृष्टि से उन्हें जीवित कर दिया। यह देखकर गिरिजा अत्यन्त प्रसन्न हुईं। उन्होंने तुरन्त ही उस बालक को दूध पिलाया तथा बहुत प्यार करके विष्णु जी की प्रशंसा की। वे बोलीं—"हे विष्णु ! तुम शिव रूप तथा तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करने वाले हो।" तब विष्णु जी ने प्रसन्न होकर अपने गले की कौस्तुभ मणि निकाल कर उस लड़के को पहना दी। इसी प्रकार हिमाचल, देवता, मुनि आदि सब लोगों ने अनेक आशीर्वाद दिये। उस समय ऐसा बड़ा उत्सव किया गया, जिसे देखकर सारी सृष्टि प्रसन्न हो गयी। देवताओं ने दुन्दुभी बजायी। गिरिजा भी अपने लड़के को खिलाने तथा प्यार करने में मग्न होकर, आनन्द सागर में डूब गयीं।"

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शनिश्चर लज्जा के कारण चुपचाप चिन्तायुक्त एक कोने में बैठा था। संयोग से गिरिजा ने उसे देख लिया।" तब वे बोलीं—"हे शनिश्चर ! तुमने अपनी दृष्टि से हमारे पुत्र का सिर उड़ा दिया, इसलिए मैं तुमको यह शाप देती हूँ कि तुम भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

अंगहीन हो जाओगे।'' यह सुनकर सूर्य, कश्यप तथा यमराज को क्रोध आ गया। उन्होंने क्रोधावेश में गिरिजा को शाप देना चाहा। उसी समय विष्णु ने मुझसे तथा अन्य देवताओं से ये कहा कि तुम लोग इनकी सेवा करके, इन्हें शान्त करो। तब मैं अन्य देवताओं के साथ उनको समझाने का प्रयत्न करने लगा। उस समय कश्यप ने कहा—''मेरा पोता शनिश्चर निर्दोष है। गिरिजा ने इसके मना करने पर भी स्वयं अपने लड़के को दिखलाया था। इसमें शनिश्चर का क्या अपराध है? मैं भी अब गिरिजा को अपना ब्रह्म तेज़ दिखलाता हूँ, जिससे गिरिजा के पुत्र का अंग-भंग होगा।'' यमराज ने कहा—''शनिश्चर को गिरिजा ने किस अपराध में शापित किया है? हम भी गिरिजा को शाप देते हैं, क्योंकि शत्रु के मारने में कोई दोष नहीं।'' यह सुनकर मैंने यमराज को समझाते हुए कहा कि ऐसा मत करो। मेरे ऐसे वचन सुनकर यमराज का क्रोध शान्त हो गया। तब गिरिजा ने भी शान्त होकर शनिश्चर से कहा कि तुम सब ग्रहों के अधिपति होकर शिव के प्यारे तथा अमर हो जाओ। हमारे वर से तुम शिव के अनन्य भक्त होगे। यद्यपि हमारे अपराध से खण्डित अवश्य हो जाओगे, परन्तु तुमको कोई दुःख एवं कष्ट न होगा। यह कहकर गिरिजा भीतर चली गयीं।

हे नारद ! जब विष्णु ने गणेश के नया सिर लगा दिया और वे पुनः जीवित हो गये, उस समय आनन्द-मंगल तथा नृत्य-गायन होने लगे। सब ने गणपति को अपने भूषण दिये। तब तीनों देवता एक साथ बोले—''हे पुत्र ! सर्वप्रथम तुम्हारी ही पूजा हुआ करेगी, जिससे वह कार्य बिना किसी विघ्न-बाधा के पूर्ण होगा। तुमको ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा तथा तुम परम सिद्धि देने वाले होगे।'' हे नारद ! इस प्रकार हमने अति कृपा करके गणेश को अपने समान कर लिया। फिर समस्त देवताओं की सम्पत्ति से गणपति के ये नाम रखे गये। लम्बोदर, एकदन्त, विघ्नेश, शूपकर्ण, हेरम्ब, गणेश, गजवदन तथा विनायक। इस प्रकार उनके अनेक नाम हैं। फिर सबने गणेश जी को बहुत सी वस्तुएं भेंट कीं। शिवजी ने योग तथा ब्रह्म ज्ञान दिया, जो हर समय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

प्रसन्नता प्रदान करता है। विष्णु जी ने देवताओं सहित गणपति की बड़ी स्तुति की। इस कथा को जो मनुष्य त्रिकाल में पढ़े तो उस पर कभी भी किसी प्रकार की आपत्ति न पड़े, न उसे किसी समय भय प्राप्त हो और यदि विदेश यात्रा के समय पढ़े तो उसका उद्योग सफल हो और उसके सब कष्ट दूर हो जाएँ। यह कथा बड़ी फलदायक है।

हे नारद ! इसके पश्चात् शनिश्चर ने विष्णु जी से निवेदन किया कि आप गणपति के तेज के विषय में वर्णन करें। विष्णु ने शनिश्चर की यह विनती सुनकर गणपति का कवच कह सुनाया। हे नारद ! गणपति का यह कवच अत्यन्त गुप्त एवं सिद्ध है। फिर विष्णु जी तथा मैं दोनों वहाँ से विदा होकर घर को गये। इतनी कथा कहकर सूत जी बोले कि हे शौनक ! नारद जी ने यह कथा सुनकर सन्देह करते हुए कहा—"हे पिता ! मैंने गणपति की कथा और प्रकार से सुनी है तथा आपने और ही रीति से इसका वर्णन किया है। मैंने सुना था कि गणेश जी को गिरिजा ने अपने शरीर के मैल से उत्पन्न किया था तथा शिवजी ने स्वयं ही उनका सिर काट डाला था। अस्तु, आप मुझे यह बतावें कि यह कहाँ तक सत्य है?"

बाईसवाँ अध्याय

नारद की इस शंका को सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! कल्प भेद से दूसरी रीति से गणपति ने जिस प्रकार जन्म लिया, उस कथा को मैं तुम्हें सुनाता हूँ। जब शिव ने गिरिजा के साथ विवाह किया तथा उनको घर ले आये और दैत्यों का वध करने के पश्चात् विहार में संलग्न हुए, तब संयोग से एक दिन गिरिजा की सहेलियों ने उनसे यह कहा कि देखो शिवजी के असंख्य गण हैं ; परन्तु तुम्हारे एक भी नहीं है। यद्यपि शिवजी के गण तुम्हारे अधीन हैं ; परन्तु तुम भी कोई गण उत्पन्न कर, उनको अपने द्वार का द्वारपाल बनाओ, जिससे उस गण की रक्षा के द्वारा किसी अन्य गण का अन्दर आने-जाने का कोई भय

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

३६९

न रहे। तब गिरिजा ने प्रसन्न होकर यह कहा—"सखियो ! समय आने पर ऐसा ही होगा।" हे नारद ! एक बार गिरिजा नन्दी को द्वार पर रक्षा के निमित्त बैठा, आप स्नान करने गयीं। उस समय शिवजी लीला करके द्वार पर आये तथा इच्छी की कि हम अन्दर जाएं, परन्तु नन्दी ने उन्हें अन्दर जाने से रोक दिया। तब शिवजी नन्दी को धमकाकर अन्दर चले गये। गिरिजा शिवजी की ऐसी दशा देख अन्य स्त्रियों की भाँति अत्यन्त लज्जित हुईं तथा लज्जावश अपने शरीर को छिपाती हुई भाग गयीं। उस समय उन्होंने अपनी सहेलियों के वचन का स्मरण किया। फिर कई दिनों के पश्चात् गिरिजा ने इच्छा की कि एक ऐसा गण उत्पन्न होना चाहिए, जो मेरे अधीन हो तथा अत्यन्त बलवान्, पराक्रमी और शिव के गणों से भी अधिक तेजस्वी हो। यह विचार कर गिरिजा ने अपने शरीर से मैल निकाल, एक मूर्ति स्थापित की तथा उसे गणपति नाम देकर जीवन दान दिया। वह बालक अत्यन्त सुन्दर, रूप के सागर के समान उत्पन्न हुआ। उस समय गिरिजा अत्यन्त प्रसन्न होते हुए बोलीं कि तुम हमारे पुत्र तथा श्रेष्ठ गण हो। फिर उसके साथ लाड़-प्यार किया तथा अत्यन्त प्रसन्न होकर आभूषण एवं वस्त्र दिए। तब गणपति ने गिरिजा को प्रणाम करते हुए कहा—"हे माता ! आप जो काम मुझे सौंपेंगी, मैं उसे भली-भाँति पूरा करूँगा।" यह सुनकर गिरिजा ने कहा—"हे पुत्र ! तुम हमारे द्वारपाल हो जाओ। हमारी आज्ञा बिना कोई भी अन्दर न आने पावे।" इतना कहकर गिरिजा ने गणपति को हृदय से लगाकर द्वार पर बैठा दिया।

हे नारद ! गणेश जी गिरिजा के आदेशानुसार हाथ में डंडा लेकर द्वार पर बैठे। तदुपरान्त गिरिजा ने स्नान का विचार कर, सब सेवकों से सामग्री एकत्र करने को कहा तथा स्नान करने के लिए बैठीं। इतने में ही शिवजी गणों सहित वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने गणों को बाहर छोड़कर अन्दर जाने की इच्छा की ; परन्तु गणपति ने उनको रोकते हुए कहा कि अभी अन्दर जाने का समय नहीं है, क्योंकि इस समय मेरी माता स्नान कर रही हैं। यह कहकर उन्होंने अपने डंडे को आगे कर, शिवजी को आगे बढ़ने से रोक दिया। तब शिवजी ने उनसे कहा कि तुम कौन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

हो जो मुझे नहीं पहचानते तथा मुझको भीतर नहीं जाने देते। हम गिरिजा के पति शिव इस मन्दिर के स्वामी हैं। तुम किसके पुत्र हो? यह कहकर शिवजी अन्दर को चले। यह देखकर गणपति ने तुरन्त ही अपना डंडा शिवजी को मारा तथा कहा—"तुम कौन शिव हो और किस कार्य के लिए हमारी माता के पास जाते हो? हम बिना अपनी माता की आज्ञा के किसी को भी, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, अन्दर नहीं जाने देंगे।" परन्तु शिवजी इन शब्दों की कोई भी चिन्ता न कर कर अन्दर जाने लगे, तब गणपति ने पुनः उनको डंडा मारा। तब उन्होंने अपने सब गणों को बुलाया और कहा कि तुम जाकर इससे पूछो कि यह कौन है? शिवजी की आज्ञानुसार गणों ने आकर गणपति से पूछा तो गणपति ने उत्तर दिया कि हम गिरिजा के पुत्र हैं, तुम लोग कौन हो जो हमसे यह पूछने आये हो? यह सुनकर गणों ने शिवजी से सारा वृत्तान्त कहते हुए कहा—"हे प्रभो ! वह वहाँ से नहीं उठता।" तब शिवजी ने गणों को यह आज्ञा दी कि तुम इसे द्वार से हटा दो। उस समय गणों ने गणपति को उठाने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु वे न उठे। परस्पर झगड़ा होने लगे। इसी समय शिवजी वहाँ आ गये तथा भीतर से गिरिजा ने भी यह कोलाहल सुनकर अपनी सहेलियों को भेजते हुए कहा कि तुम बाहर जाकर देखो कि वहाँ क्या हो रहा है।"

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! वहाँ से लौटकर सहेलियों ने आँखों देखा सब हाल गिरिजा को सुना दिया और कहा—"न जाने शिवजी की क्या आदत है कि वे सदैव कुसमय आया करते हैं।" यह सुनकर गिरिजा ने अपनी सहेलियों से कहा कि तुम गणपति से जाकर कह दो कि शिव इस समय किसी प्रकार भी भीतर न आने पावें। सहेली ने तुरन्त ही यह आज्ञा गणपति को जाकर सुना दी। तब गणपति ने शिवजी के गणों से कहा कि मेरी आज्ञा के बिना बलपूर्वक तुम्हारा भीतर जाना असम्भव है, मैं सब तरह से तैयार हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वह करो। शिवजी के गण गणपति के ऐसे शब्द सुनकर दुःखी हुए तथा शिवजी के पास जाकर उन्होंने सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब शिवजी ने कहा कि वह तो अकेला और तुम इतने हो, सब एकत्र होकर उससे युद्ध क्यों नहीं करते? शिवजी इतना कहकर चुप हो गये।

हे नारद ! शिवजी की लीला कैसी अद्भुत है कि जो शिवजी केवल एक बाण द्वारा ही सम्पूर्ण सृष्टि को नष्ट कर सकते हैं, वही शिव अपने पुत्र के साथ लीला करके युद्ध की इच्छा रखते हैं। अस्तु, शिवजी की आज्ञा पाकर सब गण शस्त्र आदि लेकर गणपति के समीप पहुँचे और बोले—"हे बालक ! तू क्या चाहता है, अब तू जलकर भस्म हो जाएगा। अब तक हमने तेरी ढिठाई सहन की है, परन्तु अब सहन नहीं कर सकते।" यह सुनकर गणपति ने सहनशीलतापूर्वक उत्तर दिया—"तुम ऐसी बढ़-चढ़ कर बातें क्यों करते हो? तुम तो बड़े वीर मालूम होते हो, मैं तो एक अज्ञान बालक हूँ। मैंने कभी किसी युद्ध को आँखों से देखा तक नहीं है और तुम अनेक युद्धों में भाग ले चुके हो, फिर भी मैं युद्ध से मुख न मोड़ूँगा।" शिवजी गिरिजा-पुत्र के इस बल एवं धीरता को देखकर धन्य-धन्य कहने लगे, परन्तु शिव के गणों ने यह सुनकर गणपति पर आक्रमण कर दिया। दोनों ओर से घोर युद्ध होने लगा। शिवजी के गणों ने शूल, बाण आदि सब शस्त्र गणपति के ऊपर चलाये, परन्तु गणपति ने उन्हें अपने दंडे से ही काट डाला तथा सब को युद्ध भूमि से भगा दिया। शिवजी के गणों ने कहा—न जाने इस छोटे-से बालक ने यह वीरता कहाँ से प्राप्त की है? इसके पश्चात् उन सब ने गणपति को पुकारकर कहा कि अब तक तो हमने तुमको बच्चा समझकर छोड़ दिया, परन्तु अब नहीं छोड़ेंगे। यह कहकर उन्होंने गणपति पर अनेक शस्त्रों द्वारा आक्रमण किया। गणपति ने भी उनके आक्रमणों का उत्तर दिया। तब दोनों ओर से घोर युद्ध हुआ, परन्तु वे पराजित होकर वहाँ से भाग गये तथा गणपति उसी प्रकार द्वार पर बने रहे।"

❁ ❁ ❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चौबीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी ने ऐसी विचित्र लीला करके अपने गणों का गर्व दूर कर दिया तथा अपनी शक्ति प्रकट करके दिखायी कि तीनों भुवन उनकी शक्ति के आधीन हैं। हे नारद ! तब इसके पश्चात् जब तुमने यह हाल विष्णु लोक में जाकर विष्णु से कहा तो इस पर विष्णु जी आश्चर्य करने लगे। फिर मैं, देवता तथा विष्णु जी आदि ने शिवजी के समीप पहुँच कर उन्हें प्रणाम किया तथा विनय के साथ कहा—"हे सदाशिव ! इस समय आपने कौन-सी लीला कर रखी है?" तब शिवजी ने उत्तर दिया—"हमारे द्वार पर एक विकट बालक खड़ा है, वह प्रलय कर देगा। इसलिए तुम जाकर किसी प्रकार उसको प्रसन्न करो।" यह सुनकर हम सबने कहा—"हे प्रभो ! यह सब आपकी ही लीला है कि एक बालक इस प्रकार युद्ध कर रहा है।" यह कहकर सब लोग गणपति के पास गये। गणपति ने हम सबको आते हुए देख एक बाल उखाड़ लिया और उससे हमें मारने की इच्छा प्रकट की। यह देखकर हम लोगों ने उनके पास जाकर यह कहा कि आप हमें क्षमा कर दें, हम में से कोई भी आपसे युद्ध करने की इच्छा नहीं रखते। मैंने इतना ही कहा था कि गणपति ने तुरन्त अपने दंडे को सम्हाल लिया। उस समय हम सब लोग वहाँ से लौट कर शिवजी के पास गये। तब शिवजी ने क्रोधित होकर इन्द्रादि से कहा कि तुम जाकर उस बालक का वध करो, जिससे तुम्हें यश प्राप्त होगा। शिवजी की आज्ञा पाकर इन्द्र आदि देवताओं ने युद्ध के लिए तत्पर होकर गणपति के ऊपर बाण तथा अन्य शस्त्रों की वर्षा की। उसी समय शिव तथा गिरिजा ने दो शक्तियाँ उत्पन्न कीं ; जो तुरन्त युद्ध स्थल में पहुँचकर दोनों ओर के शस्त्र अपना मुँह खोलकर निगल जाती थीं। जिस प्रकार पर्वत समुद्र के बीच में स्थिर रहता है, उसी प्रकार अकेले गणपति ने समस्त सेना को दुःखी कर दिया। तब सब देवता निःशस्त्र हो, खाली हाथ युद्ध स्थल में खड़े रहे और बोले कि अब हम क्या करें, हमारे पास तो कोई शस्त्र भी नहीं रहा। उस समय केवल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

वीरभद्र को यह दिखाई देता था कि दोनों शक्तियों ने प्रकट हो कर देवताओं को इस प्रकार दुःखी किया है।

हे नारद ! अन्त में तुमने देवताओं सहित शिवजी के पास जाकर कहा—"हे प्रभो ! हमको ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब लीला आपकी ही है। यदि आप इस समय कुछ नहीं करते तो अवश्य ही प्रलय हो जाएगा।" तब शिवजी की आज्ञानुसार इन्द्र, वरुण, यमराज आदि ने पहुँचकर गणपति के ऊपर अपने शस्त्रों से आक्रमण किया ; परन्तु वे सब व्यर्थ हो गये। तब सब देवताओं ने वहाँ से भागकर शिवजी के चरणों में शरण पायी। हे नारद ! उस समय तुमने शिवजी से कहा—"हे शिवशंकर ! आप संसार को उत्पन्न करने वाले हैं। यदि गिरिजा का यह गण जीवित रहा तो प्रलय कर देगा। इसलिए आप इस गण का सिर काट लीजिए। यह कहकर तुम चुप हो गये तथा शिवजी यह सुनकर हँसने लगे।"

पच्चीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी तुम्हारे यह वचन सुनकर युद्ध के लिए अपने उत्तमोत्तम शस्त्र लेकर तैयार हुए। उन्होंने अत्यन्त क्रोधित होकर विष्णु तथा अन्य प्रसिद्ध गणों को साथ लेकर अपना डमरू बजा दिया। डमरू की ध्वनि सुनकर वे समस्त देवता, जो कई बार युद्ध भूमि से पराजित होकर भाग गए थे, पुनः वीरता से गर्जन करने लगे। विष्णु जी ने स्वयं भी गणेश से युद्ध किया। जो शस्त्र विष्णु ने गणपति के ऊपर प्रलय की अग्नि के समान चलाया, उसे गणेश जी ने अपने डंडे से दो खंडित कर डाला। तब विष्णु जी ने देर तक युद्ध करने के पश्चात् शिवजी से कहा—"हे प्रभो ! अब मैं इस गण का वध कर डालता हूँ।" शिवजी बोले—"बहुत अच्छा।" तब गणपति ने उस समय इतनी वीरता दिखायी कि सब देवता युद्ध भूमि से पीठ दिखाकर भाग गये। ये देखकर विष्णु जी ने अपने मुख से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

गणेश की प्रशंसा करते हुए कहा कि तुम्हें अनेक धन्यवाद हैं, क्योंकि आज तक कोई भी इतनी वीरता से हमारे साथ नहीं लड़ा है। विष्णु जी ने यह कह ही रहे थे कि गणपति ने अपना परिघ उठाकर मारा, परन्तु विष्णु जी ने अपने परिध से उसे काट डाला। फिर गणपति ने एक शस्त्र विष्णु जी के छाती में मारा, जिसको विष्णु जी सहन न कर सके तथा धरती पर अचेत होकर गिर पड़े। उस समय चारों ओर हाहाकार मच गया; परन्तु थोड़ी देर पश्चात् विष्णु जी शिवजी की कृपा से पुनः उठ खड़े हुए। इसी प्रकार बहुत देर तक दोनों में युद्ध होता रहा, परन्तु दोनों में से कोई किसी को परास्त न कर सका। निदान विष्णु जी ने गणपति पर एक साथ असंख्य बाणों की वर्षा की तथा अपनी विजय के विचार से अपना शंख बजाया। इनके शंख की ध्वनि सुनकर सब देवता लौटकर फिर युद्ध करने लगे। फिर एक साथ सब देवताओं ने गणपति पर आक्रमण कर दिया, परन्तु गणपति ने गिरिजा का स्मरण करके अपनी मुष्टिका द्वारा सब देवताओं के शस्त्र व्यर्थ कर डाले तथा इतने वेग से अपने शस्त्र चलाये, जो किसी को दिखाई न देते थे। उस समय समस्त देवता आश्चर्यचकित हुए, पृथ्वी काँपने लगी तथा पर्वत हिलने लगे। ऐसा प्रतीत होता था कि अब प्रलय होने ही वाला है। तब विष्णु जी सबको दुःखी देख तथा प्रलय के चिह्न देखकर तुरन्त गणपति पर कूद पड़े तथा वेग से दौड़कर गणपति का सिर चक्र से काट डाला। यह देखकर मैं तथा अन्य सभी देवता आदि निर्भय होकर अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा शिवजी की स्तुति करने लगे।''

छब्बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! तब तुमने युद्ध का विस्तार इस प्रकार से प्रकट कर कहा—''हे गिरिजे ! देवता कितने दुष्ट हैं कि उन्होंने आपके पुत्र का वध निर्दयता के साथ कर डाला है। उन्होंने आपके प्रताप एवं तेज का कोई विचार नहीं किया। अस्तु, आपको अब यही उचित है कि आप अपना तेज देवताओं को दिखा दें, जिससे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:11 AM

वे अपने कर्मों का फल पावें तथा आपकी भी कीर्ति बनी रहे।" यह कहकर तुम वहाँ से चले गये। अस्तु, गिरिजा तुम्हारे मुख से अपने गण की यह दुर्दशा सुन रो उठीं तथा शोकाकुल हो मूर्च्छित हो गयीं। फिर अपने शरीर से उन्होंने सौ शक्तियाँ उत्पन्न कीं और सोचा कि उन शक्तियों के द्वारा समस्त सेना को नष्ट कर डालें। उन शक्तियों का स्वरूप बहुत ही उग्र था, शरीर महाविकराल तथा अंग-वदन बहुत ही भयानक थे। उन्होंने हाथ जोड़कर गिरिजा से निवेदन किया कि आप हमें जो आज्ञा दें, हम उसे पूरा करेंगे। तब गिरिजा ने क्रोधावेश में उनसे कहा कि जितने देवता सेना में हैं, तुम उन सबको खा जाओ, एक भी शेष न बचने पावे, क्योंकि उन्होंने हमारे पुत्र को मारा है। अस्तु, गिरिजा के आदेशानुसार वे सब शक्तियाँ युद्ध स्थल में पहुँचकर देवताओं का भक्षण करने लगे। उस समय विष्णु जी, मैं तथा समस्त देवता दुःखी होकर कहने लगे कि वास्तव में प्रलय काल आ गया है अथवा शिवजी ने अपनी शक्ति प्रकट की है। यह कहकर हम सब ने शिवजी की ओर दृष्टिपात किया।

हे नारद ! उस समय तुमने शिवजी की आज्ञा से सब लोगों से यह कहा कि जब तक गिरिजा को प्रसन्न न किया जायेगा, तब तक यह प्रलय रूपी कष्ट किसी प्रकार भी दूर न होगा। यह सुनकर हम तथा सब देवता गिरिजा के समीप जाकर ; हाथ जोड़ मस्तक झुका; स्तुति करने लगे तथा यह निवेदन किया—"हे गिरिजे ! वास्तव में हम सब अपराधी हैं। अब आप हम सबको क्षमा करें।" यह सुनकर गिरिजा ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! यदि हमारा पुत्र जीवित हो जाए तथा समस्त देवता पहले उसकी पूजा करें तब हम प्रलय नहीं होने देंगे। यह सुनकर देवताओं ने यह हाल शिवजी से जाकर कहा। उसे सुनकर शिवजी ने गणपति के शरीर को अच्छी तरह धोकर कहा कि उत्तर की ओर जाओ और जो जीव सर्वप्रथम मिले, उसी का सिर काट कर इसके शरीर में जोड़ दो, तब यह जीवित हो जाएगा। शिवजी की आज्ञानुसार विष्णु जी ने जाकर प्रशूलभद्रा नदी के वन में एक हाथी को अपने बच्चे सहित हथिनी के साथ सोते हुए देखा। उन्होंने तुरन्त

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

हाथी का सिर काट लिया तथा अपने गरुड़ पर रखकर जैसे ही चलना चाहा, उसी समय हथिनी जाग उठी। उसने विष्णु जी की बहुत स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर विष्णु जी ने दूसरा सिर उत्पन्न कर उस हाथी के धड़ से जोड़ दिया, तब वह हाथी भी पुनः जीवित हो उठा। फिर विष्णु जी ने उसे आशीर्वाद दिया कि तुम एक कल्प तक जीवित रहोगे। इसके पश्चात् विष्णु जी हाथी के सिर को लेकर शिवजी के पास पहुँचे तथा उसे गणपति के धड़ से जोड़ दिया। उस समय शिवजी ने प्रसन्न होकर उन्हें जीवन दान दिया। इस प्रकार सबके दुःख दूर हो गये तथा आनन्द प्राप्त हुआ।''

सत्ताईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! गिरिजा ने अपने पुत्र को पुनः जीवित देखकर आनन्दोत्सव मनाया और उन्हें अनेक प्रकार के वस्त्र देकर कहा—''हे पुत्र ! इस समय हम तुम्हारे मस्तक पर सिन्दूर देखती हैं, इसलिए तुम्हारी पूजा सिन्दूर से हुआ करेगी। जो तुम्हारी पूजा करेगा, उसके पास सिद्धियाँ बनी रहेंगी।'' शिवजी ने भी अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा—''हे देवताओ ! यह हमारा ही पुत्र है, इसका नाम गणपति है।'' गणपति ने भी उठकर सबको प्रणाम किया तथा कहा—''हे देवताओ ! आप मेरा अपराध क्षमा करें।'' तब तीनों देवताओं ने प्रसन्न होकर कहा—''हे गणपति ! तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओं के समान ही होगी। जो सर्वप्रथम तुम्हारी पूजा न करेगा, उसको पूजा का कुछ भी फल प्राप्त न होगा।'' यह कहकर सबने प्रथम गणपति की पूजा की तथा प्रणाम कर यह वरदान दिया कि तुम भाद्र कृष्ण चतुर्थी को उत्पन्न हुए हो, इसलिए तुम्हारा व्रत चौथ को हुआ करेगा। तुम्हारा व्रत करने वाले भक्त सुखी एवं प्रसन्न रहेंगे। सबको तुम्हारी सेवा से आनन्द प्राप्त होगा और सबको तुम्हारी पूजा आदि करनी चाहिए। इसके पश्चात् विष्णु जी तथा अन्य सब देवताओं ने गणपति की अत्यन्त उत्तम एवं पवित्र स्तुति की।'' इतनी कथा सुनाकर सूत जी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

बोले—"हे मुनियो ! जब ब्रह्मा जी इतना कह चुके तो वे अत्यन्त आनन्द में मग्न हो गये। उसी आनन्द में उन्होंने गणेश की एक स्तुति बना कर नारद को सुनायी। फिर कहा—"हे नारद ! इसके पश्चात् शिवजी से विदा होकर समस्त देवता वहाँ से चले गये।"

अट्ठाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! गिरिजा के दोनों पुत्र स्कन्द तथा गणपति नित्य प्रातःकाल उठकर शिवजी तथा गिरिजा को प्रणाम करते थे। दोनों भाइयों का दिन-प्रतिदिन प्रेम बढ़ने लगा। एक दिन शिवजी गिरिजा से बोले—"हे गिरिजा ! हमारी यह प्रबल इच्छा है कि अब हमारे पुत्रों के विवाह हो जाएं। हमको स्कन्द एवं गणपति दोनों समान रूप से प्रिय हैं। अस्तु, पहले हम किसका विवाह करें?" उस समय माता-पिता से विवाह की चर्चा सुनकर स्कन्द एवं गणपति दोनों परस्पर झगड़ने लगे। स्कन्द कहने लगे कि पहले हमारा विवाह होना चाहिए और गणपति कहते थे कि पहले हमारा। यह देखकर शिव एवं गिरिजा ने दोनों को बुलाकर कहा कि तुम दोनों समवयस्क हो। हम तुमसे इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम दोनों में से जो सर्वप्रथम सम्पूर्ण पृथ्वी की परिक्रमा करके लौट आएगा, उसी का विवाह हम पहले कर देंगे। यह सुनकर दोनों भाई पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए चल दिये। तभी गणपति ने यह सोचा कि मुझ में इतनी शक्ति नहीं है कि मैं संसार भर की शीघ्र परिक्रमा कर सकूँ, तब मैं क्या करूँ? उसी समय उन्हें एक युक्ति सूझी। वे स्नान कर माता-पिता के सम्मुख खड़े हुए तथा विनती की कि हम आपकी पूजा करेंगे। अस्तु, आप पूजन के स्थान पर बैठिये। यह सुनकर शिवजी एवं गिरिजा दोनों पूजा के आसन पर बैठ गये। तब गणपति ने उनकी परिक्रमा कर, उन दोनों की यथा विधि पूजा की। उस समय माता-पिता ने कहा—"हे गणपति ! स्कन्द तो संसार की परिक्रमा करने के लिए जा चुके, अब तुम भी परिक्रमा के लिए जाओ।" यह सुनकर गणपति ने विनय की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

कि हे माता-पिता क्या मैंने पृथ्वी की परिक्रमा नहीं कर ली? आप धर्म मूर्ति होकर ऐसा क्यों कहते हैं। शिव-गिरिजा ने गणपति के मुख से ऐसे वचन सुनकर आश्चर्यचकित होकर कहा—"हे गणपति ! तुम संसार की परिक्रमा कब कर आये?" तब गणपति ने यह उत्तर दिया—"आपको वेद त्रिभुवन का रूप मानते हैं, सो मैंने आपकी परिक्रमा कर क्या तीनों लोकों की परिक्रमा नहीं की? इसके सिवाय वेद लिखते हैं कि जो मनुष्य माता या पिता की परिक्रमा करता है, उसको संसार भर की परिक्रमा का फल प्राप्त होता है। पुत्र के लिए माता-पिता के चरण ही सबसे बड़े तीर्थ हैं। अब आप या तो वेद के मार्ग को ही त्याग दें, नहीं तो मेरा विवाह कर दें।"

हे नारद ! शिव एवं गिरिजा गणेश के ऐसे चातुर्यपूर्ण वचन सुनकर अत्यन्त चिन्तित हुए तथा उनकी यह चतुराई देखकर प्रसन्नता भी हुई। तब उन्होंने कहा—"हे गणेश ! तुमको शुभ मति उत्पन्न हुई है, इसीलिए तुमने ऐसा धर्म का वाक्य कहा। हम तुमसे कहते हैं कि तुम्हारा यह कथन वेद, पुराण एवं शास्त्रों के समान विश्वास के योग्य प्रमाणित माना जायेगा। इसके अनुसार हम पहले तुम्हारा ही विवाह करेंगे।" तब शिवजी की इच्छा जानकर विश्व रूप ने अपनी दो पुत्रियों को, जिनका नाम सिद्धि एवं ऋद्धि था, गणपति के साथ विवाह किया। विवाह में उसी प्रकार सब बातें हुईं, जिस प्रकार शिवजी के विवाह में हिमाचल की ओर से हुई थीं। ऐसी सुन्दर तथा कुशल स्त्रियाँ पाकर गणपति अत्यन्त प्रसन्न हुए। कुछ समय के पश्चात् गणपति के दो पुत्र उत्पन्न हुए। सिद्धि से क्षेम तथा ऋद्धि से लाभ उत्पन्न हुए। समस्त संसार में उनके समान कोई पंडित तथा कलांकार न हुआ। इतने ही में स्कन्द भी सम्पूर्ण संसार की परिक्रमा पूरी कर लौट आये। हे नारद ! उस समय तुमने पहले स्कन्द को बहुत भड़काया तथा यह कहा—"हे स्कन्द ! देखो, तुमको माता-पिता ने बहकाकर तुम्हारे पीछे गणपति का विवाह कर दिया। गणपति ने दो स्त्रियों से दो पुत्र भी उत्पन्न किये हैं। मेरी समझ में तो उन्होंने यह काम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

उचित नहीं किया। जो माता-पिता स्वयं ही अपनी सन्तान को बेचें या विष दें या उसका राज्य, धन, द्रव्य आदि लूट लें, तब मनुष्य किसके पास जाकर अपना दुःख कहे? इसमें पुत्र को यही उत्तम है कि वह फिर ऐसे माता-पिता का मुँह न देखे।''

हे नारद ! इस प्रकार की बातें करने से तुम्हारा तेज घट गया। तब स्कन्द अपने माता-पिता के पास गया। वहाँ माता-पिता की स्तुति करने के पश्चात् वे अत्यन्त दुःखी होकर क्रौंच पर्वत पर चले गये। यद्यपि उन्हें वहाँ जाने से माता-पिता ने बहुत रोका, परन्तु स्कन्द जी नहीं लौटे। हे नारद ! शिवजी के चरित्र ऐसे आश्चर्यजनक हैं कि उनको कोई नहीं जान पाता। हे नारद ! स्कन्द जी क्रौंच पर्वत पर जब से स्थित हुए, तब से वहाँ की दशा ही बदल गयी। वह पर्वत यश में वृद्धि करने वाला, पापों को घटाने वाला तथा अत्यन्त आनन्ददायक हो गया। स्कन्द जी तब से उसी पर्वत पर वास करते हैं। उनके दर्शनों से समूल पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रत्येक मास की पूर्णमासी के दिन समस्त देवता एवं मुनि एक-साथ वहाँ जाकर स्कन्द के दर्शन करके कृतार्थ होते हैं। जो कोई उस दिन मल्लिकार्जुन के दर्शन करता है, उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। यद्यपि शिव एवं गिरिजा ने कई बार क्रौंच पर्वत पर जाकर स्कन्द को मनाकर लौट लाने का प्रयत्न किया, परन्तु स्कन्द जी वहाँ से लौटकर नहीं आए, वरन् शिवजी के आने का समाचार जानकर उन्होंने यही इच्छा की कि वहाँ से कहीं और दूर जाकर वास करें। इसीलिए वे वहाँ से तीन योजन दूर जाकर स्थित हुए। शिवजी वहाँ पर हर पूर्णमासी को जाते हैं। हे नारद ! हमने तुमको स्कन्द तथा गणपति का यह चरित्र सुनाया, जिसके सुनने एवं कहने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। मल्लिकार्जुन स्थान का यश वेद गाते हैं। गणपति के इस चरित्र को जो कोई सुनेगा, वह संसार में आनन्द तथा अन्त में शिवजी के धाम को प्राप्त करेगा।''

इति श्री शिवपुराणे ब्रह्मानारदसम्वादे भाषायां चतुर्थो खण्डस्समाप्तः ॥ ४ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

पाँचवां खण्ड (युद्ध खण्ड)

पहला अध्याय

सूत जी बोले—हे शौनक ! नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! अब आप मुझे यह बताइये कि सदाशिव जी ने दैत्यों का किस प्रकार नाश किया?" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जब स्कन्द ने तारकासुर का वध करके देवताओं को आनन्द प्रदान किया, उस समय तडिम्माली, तारकाक्ष तथा कमलाक्ष नाम तारक के तीनों पुत्र कठिन तपस्या में प्रवृत्त हो गये। वे मेरे ध्यान में पहले एक पाँव से खड़े रहे, फिर सौ वर्ष तक केवल जल पीकर तप करते रहे। एक सहस्त्र वर्ष तक वे अंगूठे के बल खड़े रहे। उस समय मैंने उनसे जाकर कहा—"हे तारक के पुत्रो ! मैं तुम्हारे तप से अत्यन्त प्रसन्न हूँ, तुम अपनी इच्छानुसार वर माँगो।" तब तीनों दैत्यों ने मुझसे यह कहा—"हे ब्रह्मन् ! यदि आप हमसे प्रसन्न हैं तो हमको यह वर दीजिये कि हम किसी के हाथ से न मारे जाएँ।" तब मैं उनसे बोला कि तुम मुझसे यह वरदान मत माँगो; इसके अतिरिक्त अपनी इच्छानुसार कोई भी वस्तु माँगो। यह सुनकर उन तीनों दैत्य-पुत्रों ने विचार कर कहा कि आपकी यदि यही इच्छा है तो इसी स्थान पर एक नगर की स्थापना हो, जहाँ आपकी मूर्ति स्थित हो। इसके अतिरिक्त हम तीनों के लिए अलग-अलग एक-एक नगर और तैयार हो जाए, जो एक-एक सहस्त्र कोस के अन्तर पर हो। वे तीनों नगर हर प्रकार से समान हों। जो कोई उन तीनों नगरों को एक ही बाण से नष्ट करे, वही हमारा वध करने में समर्थ हो। मैंने यह सुनकर कहा—"अच्छा, तुम्हारी इच्छानुसार यही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

होगा।" फिर मैंने उसी समय मयदानव को बुलाकर एक से तीन नगर निर्माण करने की आज्ञा दी और वहाँ से चला गया।

हे नारद ! मयदानव ने मेरी आज्ञानुसार तीनों नगरों का निर्माण किया। प्रत्येक नगर सौ-सौ योजन बड़ा था। उनमें स्वर्ग से भी अधिक आनन्द था। मैंने क्रम से तीनों भाइयों को तीनों नगर बाँट दिये। वे तीनों अपने-अपने नगर में आनन्दपूर्वक निवास करने लगे। तीनों लोकों में ऐसी कोई वस्तु न थी, जो उन लोगों को उपलब्ध न हो। उनके पास असंख्य सेना थी। प्रत्येक के घर में शिवालय बने हुए थे, जिनमें सब लोग शिवजी का पूजन करते थे। प्रतिदिन हवन एवं यज्ञ हुआ करते थे। वे तीनों दैत्य भी शिवजी के परम भक्त थे। वहाँ यह नियम था कि कोई भी व्यक्ति बिना शिवजी की पूजा किये भोजन नहीं कर सकता था, क्योंकि उन तीनों दैत्यों ने वहाँ इस बात की घोषणा करवा दी कि सब लोग नित्य नियम से शिवजी का पूजन करें। इसके अतिरिक्त उन नगरों में वेद, पुराण के मत के प्रतिकूल कभी कोई भी बात धर्म के विरुद्ध नहीं होने पाती थी। वहाँ ब्राह्मण रात-दिन शिव के नाम का जप किया करते थे। जब उन दैत्यों का तेज बढ़ने लगा, तब देवता लोग घबराकर बहुत दुःखी हुए। उनके शरीर में जैसे आग लग गयी। उस समय सब मिलकर मेरी शरण में आये तथा बोले—"हे ब्रह्मन् ! अब सब देवता त्रिपुर के तेज से जले जा रहे हैं।"

हे नारद ! मैंने देवताओं के ऐसे वचन सुनकर कहा—"हे देवताओ ! उन्होंने मेरी आराधना तथा कठोर तप करके मुझसे इस प्रकार का वरदान प्राप्त किया है। मैं उनको वेद के विरुद्ध कैसे मार सकता हूँ। वे शिवजी की कृपा द्वारा अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त करते हैं। शिवजी के भक्तों पर किसी भी शस्त्र का प्रभाव नहीं हो सकता। उनकी आराधना को त्यागने से प्रत्येक व्यक्ति नष्ट हो जाता है। मैं तुम लोगों को इसी वर्णन के अनुसार एक इतिहास सुनाता हूँ। हे देवताओ ! रावण तो शिवजी का परम भक्त हुआ है, उसका कोई भी वध न कर सका, विष्णु जी का चक्र भी कुंठित होकर रावण का सिर काटने में असमर्थ रहा, उस समय आकाशवाणी हुई कि हे विष्णु ! यदि रावण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

किसी कारणवश शिवजी की सेवा छोड़कर उनके विरुद्ध हो जाए, तो निःसन्देह शिवजी उसकी सहायता न करेंगे। इसलिए तुमको यही उचित है कि अवतार लेकर शिवजी का नाम जपो। जब शिवजी प्रसन्न होकर तुमको अपना बाण देंगे, तब उसी बाण से तुम्हारे हाथों रावण की मृत्यु होगी। यह सुनकर विष्णु जी ने शिवजी की बड़ी पूजा की। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर रावण की उत्तम बुद्धि को नष्ट कर दिया। उस समय विष्णु जी ने भी रामचन्द्र का अवतार लेकर शिवजी की तपस्या की तथा शिवजी से वह बाण प्राप्त किया, जो प्रलय करने वाला था। इस प्रकार उसी बाण द्वारा रावण का वध करके उन्होंने सीता को प्राप्त किया। इसका तात्पर्य यह है कि हम सब मिलकर शिवजी की शरण में चलें और उनके चरण पकड़कर उन्हें प्रसन्न करें तथा उनकी महिमा का वर्णन करें।" यह निश्चय कर मैं, समस्त देवताओं सहित शिवजी के पास पहुँचे। हम सबने पग-पग पर जय-जयकार तथा बड़ी स्तुति की और यह कहा—"हे प्रभो ! जब-जब देवताओं पर कोई संकट पड़ा है, तब-तब आपने ही उनका दुःख दूर किया है। अब आप हम पर पुनः दया-दृष्टि कीजिए।"

❂❂❂

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! देवताओं ने शिवजी से कहा—"हे सदाशिव ! आप हमारे दुःखों को दूर कीजिये। इस समय दैत्यों ने अत्यन्त बल एवं तेज प्राप्त कर, हम सबको बहुत दुःखी कर रखा है। अब हमसे यह कष्ट सहे नहीं जाते, इसीलिए हम आपकी शरण में आये हैं।" यह सुनकर शिवजी बोले—"हे देवताओ ! मुझे तुम्हारा सब दुःख कष्ट मालूम हो गया है ; परन्तु त्रिपुर का असुर बड़ा धर्मात्मा एवं दाता है। इन्हीं गुणों के कारण वे सब आनन्दापूर्वक रहते हैं। संसार में पुण्य के समान और कोई अन्य वस्तु इतनी आनन्ददायक नहीं है। जब तक उनका पुण्य वृद्धि पर है, तब तक वे मारे नहीं जायेंगे। हमको

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

यह उचित नहीं है कि हम अपने भक्तों को व्यर्थ ही नष्ट कर दें। इसके साथ ही हमसे तुम्हारा कष्ट भी नहीं देखा जाता; क्योंकि जो हमारी शरण में आता है, हम उसकी अवश्य ही रक्षा करते हैं। इससे तुमको अब यही उचित है कि तुम विष्णु के पास जाकर अपने सब दुःखों को कहो।

हे नारद ! यह सुनकर सब देवता शिवजी के आदेशानुसार विष्णु जी के पास गए। उन्होंने स्तुति करने के पश्चात् अपने दुःख उनसे कहे तथा हर प्रकार से विष्णु जी की पूजा में प्रवृत्त हुए। तब विष्णु जी ने देवताओं की विनती सुनकर वेद एवं शास्त्रों के अनुसार यह उत्तर दिया—"हे देवताओ ! सनातन से शिवजी की भक्ति एवं पूजा पुण्य प्रदान करने वाली है। शिवजी की पूजा होने वाले स्थान पर कोई दुःख या कष्ट नहीं रह सकता।" देवताओं ने यह सुनकर दुःखी हो, निवेदन किया—"हे देवताओं के स्वामी ! इस समय हम सब दुःखी तथा अधीर हैं। यह बात स्पष्ट है कि जब तक त्रिपुर के असुर जीवित रहेंगे, हमको कभी भी शान्ति नहीं मिलेगी। अब आप ही बताइये कि हम सब कहाँ जाएँ या तो आप हम सबको बिना मृत्यु के मार डालिए या त्रिपुर का नाश कीजिए। इन दोनों कामों में से एक काम करके आप हमारे कष्टों को दूर कीजिए, जिससे आपको भी प्रसन्नता हो। हम सब शिवजी के आदेशानुसार ही प्रसन्न होकर आपके पास आए थे।" यह कहकर सब देवता चुप हो गए। तब विष्णु जी ने शिवजी की आज्ञा का विचार कर सोचा कि किसी न किसी प्रकार इन देवताओं का दुःख अवश्य दूर करना चाहिए। फिर शिवजी का ध्यान धरकर उन्होंने यज्ञगणों का स्मरण किया। तब यज्ञ के भीतर से मखपति उत्पन्न होकर विष्णु जी स्तुति करने लगे। उस समय विष्णु जी देवताओं से बोले—"हे देवताओ ! अब तुम सब इनकी पूजा करो।" देवताओं ने उसी समय प्रसन्न होकर शंखनाद किया तथा मख अर्थात् यज्ञ करके मखपति का ध्यान धरते हुए उनकी पवित्र स्तुति की। तब मखपति प्रसन्न होकर विष्णु जी की स्तुति करने लगे। उस समय विष्णु जी ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

देवताओं से कहा—"हे देवताओ ! त्रिपुरासुर तुम्हारे ऐसे प्रयत्नों द्वारा नहीं मारे जा सकते।" जिनके दर्शनमात्र से ही पाप नष्ट हो जाते हैं, मखपति उनका क्या कर सकता है? वे शिवजी के वरदान द्वारा ही संसार में सबसे अधिक आनन्द भोग कर रहे हैं। हे देवताओ ! संसार में ऐसा कौन है, जो शिवजी के भक्त का नाश कर सके? शिवजी ने केवल संसार की भलाई के निमित्त ही अवतार लिया है। उनके एक ही अंश की पूजा के फलस्वरूप देवताओं ने कैसा पद प्राप्त किया है, इसे तुम जानते हो। ब्रह्मा ने भी उनकी सेवा करके ही यह पद पाया है तथा मुझको भी पालन करने की शक्ति तथा बड़ाई उन्होंने प्रसन्न होकर प्रदान की है। इसीलिए हम कहते हैं कि त्रिपुरासुर केवल शिवजी की पूजा करने से ही मारे जा सकते हैं।"

"हे नारद ! विष्णु जी ने यह कहकर समस्त देवताओं सहित शिवजी के पूजन का आयोजन किया। उसी समय एक करोड़ पार्थिव लिंग मिट्टी से बनाकर प्रथम प्राण प्रतिष्ठा एवं आवाहन करने के पश्चात् उनकी अक्षत, चन्दन, सुगन्ध, पुष्प एवं बेल-पत्रों से पूजा की। इस प्रकार विष्णु जी शिवजी के ध्यान में मग्न हुए। तब शिवजी के प्रसन्न होने से त्रिशूल, गदा आदि लिये हुए असंख्य भूत-प्रेतों की सेना प्रकट हुई। उस समय विष्णु जी ने उन्हें देखकर कहा कि तुम सब तुरन्त त्रिपुर का नाश कर दो अर्थात् तीनों नगरों को जलाकर भस्म कर डालो। इस प्रकार संसार में तुम्हारी कीर्ति फैलेगी। विष्णु जी का ऐसा आदेश सुनकर भूतों की सेना वायु वेग से चली तथा त्रिपुर में पहुँचकर चारों ओर फैल गयी; परन्तु जब वह नगर के भीतर पहुँची, तब शिवजी की लीला से जलकर तुरन्त भस्म हो गयी। हे नारद ! जिनके मन में शिवजी की दृढ़ भक्ति है, उनके निकट संकट आकर स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। देवताओं ने यह हाल देखकर विष्णु जी के पास जाकर सब वृत्तान्त सुनाया तथा वे यह सोचने लगे कि किस उपाय से त्रिपुर का नाश किया जाए ; क्योंकि अभिचार अर्थात् हठधर्मी से भी शिवजी के भक्तों को कोई कष्ट नहीं पहुँचाया जा सकता। वास्तव में शिव की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

भक्ति के ही कारण वे सब दैत्य बच गये हैं। यदि शिवजी हमारी सहायता करें, तब हम शत्रुओं के इन अत्याचारों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए हमें कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे ये दैत्य धर्म से भ्रष्ट हो जाएँ। उस स्थिति में शिवजी स्वयं ही उनको नष्ट कर देंगे। विष्णु जी ने यह विचारकर देवताओं से कहा—"हे देवताओ ! अब तुम सब लोग अपने घरों में जाकर शिवजी का नाम का जप करो तथा दिन-रात पार्थिव पूजन करके उनकी स्तुति करो।" विष्णु जी के ऐसे वचन सुनकर समस्त देवता अत्यन्त प्रसन्न हो, अपने-अपने घरों को गये।"

तीसरा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! देवताओं को विदा करने के पश्चात् विष्णु जी ने शिव-पूजन किया। फिर माया द्वारा अपने शरीर से एक ऐसा मनुष्य उत्पन्न किया, जिसका सिर मुड़ा हुआ था। वह मैले वस्त्र पहने तथा वस्त्र से अपने मुख को ढँके हुए धर्म-धर्म कहता हुआ विष्णु के सम्मुख आ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ अर्हण वचन बोला। उसने कहा—"मुझको क्या आज्ञा है?" तब विष्णु जी बोले—"तुम हमारे शरीर से उत्पन्न हुए हो, इसलिए हमारा काम भली-भाँति पूर्ण करो। तुम हमारे रूप हो।" विष्णु ने यह कहकर एक बहुत बड़ा ग्रंथ जिसमें सोलह सहस्त्र श्लोक थे, की रचना की। उसमें निम्नलिखित बातें थीं—

वह ग्रन्थ छल एवं झूठ से भरा हुआ था। उसमें कोई ठीक धर्म नहीं लिखा था। वह वेद, शास्त्र एवं पुराणों के विरुद्ध था, जिसको पढ़कर किसी प्रकार का आनन्द प्राप्त नहीं होता था। उसमें वेद, पुराण एंव शास्त्रों की बहुत ही निन्दा लिखी हुई थी। उसमें वर्णाश्रम धर्म का भी खूब खण्डन किया गया था, जिसके अनुसार चलने से नरक में स्थान मिलने में कुछ भी देर न लगे। उसमें सब बातें कुमति एवं संशय की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:12 AM

थीं। उसके मानने से शौच, तप आदि सब नष्ट हो जाते थे। विष्णु ने उस पुस्तक को उसे देकर कहा कि तुम त्रिपुर में जाकर सबको यह पुस्तक पढ़ा दो। वहाँ के निवासी वेद एवं पुराण के समान ही सब कार्य करते हैं। इसलिए तुम वहाँ जाकर इस मत का सबको उपदेश दो, जिससे वे सब धर्म भ्रष्ट होकर, शिवजी की पूजा करना छोड़ दें। जब तुम अपना यह काम पूर्ण कर लो, तब अपने शिष्यों सहित तब तक मरुस्थल में वास करो जब तक कि कलियुग न आए। तुम वहाँ गुप्त रूप से रहा करना। जब कलियुग शुरू हो जाए तब तुम मेरे इस उपदेश को भली-भाँति प्रचार करना। तुम्हारा पद निश्चय ही ऊँचा बना रहेगा।''

हे नारद ! मुण्डी ने विष्णु जी की यह आज्ञा प्राप्त कर अपने बहुत-से शिष्य किये। तब विष्णु जी ने कहा—''अब तुम वहाँ से विदा हो जाओ। हमारा एक नाम 'अर्हण' है, तुम उसका स्मरण करते रहना। फिर तुमको कोई भय न रहेगा।'' इस प्रकार विष्णु जी के आदेशानुसार मुण्डी अपने शिष्यों सहित वहाँ से चलकर त्रिपुर पहुँचा। वहाँ उसने अनेक चेटक दिखाकर बहुत-से लोगों को अपना शिष्य बना लिया। वहाँ ऐसा कोई भी न था जो मुण्डी के पास जाकर शिष्य बने बिना अपना पुराना धर्म-विश्वास लेकर घर लौट आए। हे नारद ! तुम भी शिवजी की लीला से मुण्डी के शिष्य हुए ; क्योंकि उसमें देवताओं का कार्य बनता था। फिर तुमने त्रिपुरासुर के पास जाकर मुण्डी की ऐसी प्रशंसा की कि त्रिपुर भी मुण्डी के शिष्य हो गये। मुण्डी ने त्रिपुरासुरों से यह प्रण करा लिया कि हमारी आज्ञा किसी दशा में भी अमान्य न की जाए। यह बात मान लेने के पश्चात् मुण्डी ने अपने मुख पर से वस्त्र हटाकर त्रिपुर को अपना शिष्य बनाया तथा मंत्र दिया। फिर अनेक प्रकार के कर्त्तव्य तथा अकर्त्तव्य कार्य बता दिये। त्रिपुरा के शिष्य बन जाने के पश्चात् फिर कोई ऐसा व्यक्ति न रहा, जो मुण्डी का शिष्य न बना हो।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! त्रिपुरा को चेला बनाने के पश्चात् मुण्डी ने उन्हें कई आदेश देते हुए कहा—"हे त्रिपुर ! हमारा मत सब मतों से उत्तम है, जिसको नारद ने भी माना है। इस मत के ये मार्ग हैं कि यह संसार असाध्य है, इसका आदि अन्त कुछ भी नहीं, न तो इसका कोई कर्त्ता ही है और न बोलने वाला ही। सनातन से यह इसी प्रकार चला आ रहा है। समय आने पर वह स्वयं ही प्रकट होता है तथा इसी प्रकार समयानुसार अदृश्य हो जाता है। समय पाकर ही अच्छा-बुरा कार्य हो जाता है। ब्रह्म से लेकर घास-मिट्टी तक, जितने प्राणी हैं, वे सब मृत्यु के समान हैं। जीव ही ईश्वर है, जो अपने इस शरीर में वर्तमान है। इसके अतिरिक्त संसार का और कोई स्वामी नहीं है। ब्रह्म आदि जो देवता बहुत प्राचीन हैं, वे भी अमर नहीं हैं। वे सब मृत्यु के वश में हैं। इनमें से कोई तो विलम्ब में तथा कोई शीघ्र मरता है, परन्तु सबकी मृत्यु निश्चत है। यह निश्चत है कि समस्त शरीरधारी नष्ट हो जाएंगे। वे दुःख-सुख भोगकर पुनः जन्म लेंगे। समस्त जीव एक ही समान बराबरी का पद रखते हैं। उनमें न तो कोई छोटा है, न कोई बड़ा। भोग एवं भोजन आदि समस्त कार्यों में सब समान हैं। सवारी चाहे किसी प्रकार की हो, समान है। जिस प्रकार हम मृत्यु का भय करते हैं, उसी प्रकार ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश को भी मृत्यु का भय है। समय के चक्र से कोई न बचेगा। इसलिए हे त्रिपुर ! तुम यह सत्य मानो कि हममें तथा उनमें कुछ बड़ाई-छोटाई नहीं है। हम सब ही समान हैं। इसी प्रकार जाति की बड़ाई-छोटाई का विवाद है। वेद एवं शास्त्र आदि सब झूठे तथा निष्फल हैं। केवल सब धर्मों से उत्तम धर्म हिंसा का त्याग कर अहिंसा को अपनाना है। उससे बढ़कर दूसरा कोई और धर्म नहीं है। दूसरों को दुःख पहुँचाने से बड़ा पाप संसार में कोई और नहीं है।"

हे त्रिपुर ! चार प्रकार के दान सब दानों से बड़े हैं। एक रोगी को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

औषध देना, दूसरा भयभीत को अपनी शरण में लेकर अभयदान देना, तीसरा भूखों को भोजन कराना और चौथा विद्यार्थी को विद्यादान देना। शरीर को उत्तम औषधियों से आरोग्य बनाये रखना चाहिए। नरक तथा स्वर्ग सब इसी संसार में हैं। जहाँ आनन्द प्राप्त होता है, वह सब स्वर्ग है तथा जहाँ दुःख मिलता है, वही नरक है। दुःखों से वासनारहित मुक्त हो जाना ही परम मोक्ष है। वेदों ने प्रवृत्ति एवं निवृत्ति के दो मार्ग कहे हैं। उनका तात्पर्य यह है कि जीवों को दुःख पहुँचाना प्रवृत्ति धर्म है तथा उन पर दया एवं कृपा रखना निवृत्ति धर्म है। जो जीवों को मारकर तथा तिल, यव एवं घृत अग्नि में डालकर स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा रखते हैं, वह उनकी सबसे बड़ी मूर्खता है।" हे नारद ! इस प्रकार मुण्डी ने त्रिपुर को अपने धर्म के विषय में बताया, जिसको त्रिपुरासुरों ने ठीक समझा। तब वे सब अपने नये गुरु की आज्ञानुसार पुराने मत को छोड़ नये मत में प्रवृत्त हुए। फिर मुण्डी ने अपने मत की आज्ञा सुनाते हुए कहा—"हे त्रिपुर ! जब तक मृत्यु न आवे, तब तक आनन्दपूर्वक खूब मौज से विहार करो। यदि कोई भिक्षुक या याचक कोई वस्तु माँगे तथा उसको वह वस्तु न दी जाए अथवा यदि कोई भिखारी अपना मनोरथ पूर्ण किये बिना लौट जाए तो उसे न देने वाले का सब धन द्रव्य नष्ट हो जाता है। अपने शरीर का, जो गीदड़ तथा कुत्ते आदि के ग्रास से अधिक नहीं, कोई भी लोभ या मोह नहीं करना चाहिए। मृत्यु के पश्चात् जिस शरीर को कीड़े आदि खा डालेंगे उसी शरीर के भोग के लिए इतनी सामग्री एकत्र करना व्यर्थ ही है। देखो, जब ब्रह्मा आदि ने परस्पर एक-दूसरे की सन्तान से विवाह कर लिया, तब तो उनका धर्म उसी प्रकार बना रहा ; परन्तु अन्य लोगों के लिए गोत्र में विवाह करना बहुत बड़ा पाप ठहराया गया है और चार वर्ण बनाकर भाइयों के अलग अलग वर्ण कहे गये हैं, यह बुद्धि के विरुद्ध बात है। तुमको यही उचित है कि सबके साथ बराबर का व्यवहार रखो।"

हे नारद ! सब असुर इसी प्रकार की अनेक बातें सुनकर वेद के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

विरुद्ध हो गये और सब स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म त्याग, स्वतन्त्र एवं कुपथगामिनी हो गयीं। जिसने जिसके साथ इच्छा की, भोग-विलास किया। सब कर्मों से अधिक चेटक ने प्रचार प्राप्त किया। किसी स्त्री को बाँझ से सन्तानवती कर दिया और किसी स्त्री के पति को जीवित कर दिया, किसी की आँखों में सिद्ध अञ्जन आदि लगाकर पृथ्वी के नीचे की सब वस्तुएँ दिखा दीं तथा कभी सिद्धों के देश को प्रकट करके दिखाया। इस प्रकार मुण्डी ने माया एवं छल द्वारा सब नर-नारियों को अपने वश में कर लिया। यहाँ तक कि त्रिपुर से लेकर छोटे-छोटे असुर तक प्राचीन धर्म का त्याग कर, अर्हण के धर्म को अपना धर्म समझने लगे। वे देव-पूजन तथा पितृ-कर्म सब कुछ भूल गये। केवल यही एक धर्म शेष रह गया कि सबने रात्रि को भोजन करना बन्द कर दिया।''

पाँचवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! इस प्रकार त्रिपुर में वेद के विरुद्ध नास्तिक मत स्थापित हो गया। इस कारण वहाँ के निवासियों से लक्ष्मी रुष्ट हो गयीं तथा चारों ओर दरिद्रता ही दरिद्रता फैल गयी। हे नारद ! इन सब बातों के मूल कारण तुम्हीं थे। उन तीनों भाइयों ने शिवजी की पूजा को छोड़ दिया, जिससे देश में उपद्रव होने लगे। सब देवताओं ने उन सबकी यह दशा देख, आनन्द में मग्न हो, इन्द्र को साथ ले, मेरे पास आकर सब वृत्तान्त कहा। तब मैं भी सब लोगों को लेकर विष्णु जी के निकट गया। वहाँ पहुँचकर स्तुति करने के पश्चात् उनसे यह कहा—''हे विष्णु जी ! आपके बताये हुए उपाय से बहुत लाभ हुआ अर्थात् आपके रूप अर्हण ने शिष्यों सहित त्रिपुर में जाकर, नारद को शिष्य बनाने के उपरान्त, सबको अपने मत में मिला लिया है। अब यह निश्चित है कि आप त्रिपुर को अवश्य जला देंगे।'' तब विष्णु जी बोले—''हे देवताओ ! शिवजी देवताओं के इस कार्य को अवश्य पूरा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

करेंगे।'' यह कहकर तथा हम सबको साथ लेकर विष्णु जी शिवजी के पास गये तथा देवताओं सहित उनकी स्तुति करने लगे। उन्होंने विनय की—''हे प्रभु ! अब आप देवताओं को आनन्द प्रदान कर, दैत्यों का विनाश करें।'' यह सुनकर शिवजी बोले—''हे देवताओ ! हम तुम्हारे कार्य को समझ गये हैं। अब त्रिपुर शीघ्र ही नष्ट हो जाएंगे। शिवजी के ऐसे आश्चर्यजनक वचन सुनकर देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए। हे नारद ! जो इस चरित्र का पाठ करेगा या सुनेगा, उसके भी सब मनोरथ पूर्ण होंगे।''

छठा अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! तब उसी समय गिरिजा अपने पुत्र को दिखाती हुई, जय-जय शिव, जय शम्भु स्तुति करती हुई, शिवजी के पास आयीं और बोलीं—''हे स्वामी ! अपने पुत्र षडानन का खेल देखिये।'' शिवजी ने गिरिजा से लेकर लड़के को गोद में बैठा लिया तथा प्रसन्न होकर नृत्य करने लगे। यहाँ तक कि सब देवता भी इतने मग्न हो गये कि वे शिवजी के साथ नृत्य करने लगे। इसके पश्चात् गिरिजा षडानन को साथ लिये हुए भीतर घर में चली गयीं। देवताओं ने अनेक प्रकार से स्तुति की तथा सब कष्ट कह सुनाये, परन्तु शिवजी ने कुछ न सुना। तब मैं तथा विष्णु जी आदि सब लोग शिवजी के द्वार पर बैठकर परस्पर कहने लगे कि हम क्या करें, कहाँ जाएँ और किससे कहें? अब हमारी नौका को कौन पार लगायेंगे? शिवजी से थोड़ी-सी आशा थी, परन्तु वे हमारे कष्टों पर कोई ध्यान न देकर घर में चले गये। शायद हमसे उनकी सेवा में कोई अपराध हो गया है। इसके पश्चात् देवताओं ने निश्चय किया कि हम लोग यहाँ से चलकर अपनी स्त्रियों सहित शिवजी के घर में चलें। शिवजी देवताओं का यह विचार जान गये। अस्तु, उन्होंने तुरन्त गणपति को वहाँ भेज दिया, उन्होंने डंडे से मारकर सब लोगों को बाहर निकाल दिया। यह देखकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

कश्यप मुनि ने धैर्यपूर्वक कहा कि शिवजी ने यह क्या किया जो दया को त्यागकर, हमें ऐसा दंड दिया है? फिर उन्होंने जाकर विष्णु जी से सब वृत्तान्त कहा कि हमारा मनोरथ किसी प्रकार पूरा न हुआ तथा अब तक का सब परिश्रम व्यर्थ ही गया। उस समय विष्णु जी ने यह कहा—"तुम सब लोग धैर्य रखो, शिवजी अवश्य ही तुम्हारे दुःखों को दूर करेंगे। तदुपरान्त विष्णु जी ने सबको शिवजी का एक मन्त्र, जिसमें दस सहस्त्र अक्षर हैं, बताकर कहा कि इसका चौदह करोड़ बार जाप करो। इससे शिवजी प्रसन्न होकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे।"

हे नारद ! सब देवता विष्णु जी से वह मन्त्र लेकर जप करने लगे तथा शिवजी के प्रकट होने की बाट देखने लगे। तब शिवजी देवताओं के उस जप से प्रसन्न होकर प्रकट हुए और बोले—"हे विष्णु एवं हे ब्रह्मा ! हम तुम्हारी दृढ़ता से प्रसन्न हैं। तुम अपनी इच्छानुसार हमसे वर माँगो।" तब सब ने प्रसन्न होकर शिवजी की स्तुति की तथा यह कहा—"हे सदाशिवजी ! आप त्रिपुरासुर के तीनों पुरों का नाश करें।" देवता यह कहकर पुनः स्तुति करने लगे। तब शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—"ऐसा ही होगा। तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी।" यों कहकर शिवजी ने असुरों पर कुपित होकर अपना बाण छोड़ दिया। उस बाण ने सूर्य के समान प्रकाशवान् होकर सब दैत्यों को नष्ट कर डाला, परन्तु जो शेष बचे, उन सबको त्रिपुरासुर ने अमृत कुण्ड में, जो वहाँ था, डाल दिया, जिससे वे पुनः जीवित हो उठे तथा लौह शरीर होकर बादल के समान गरजने एवं बिजली के समान चमकने लगे। तब शिवजी ने विष्णु से तथा मुझसे यह कहा कि तुम दोनों बछड़ों का रूप धारण कर, वहाँ जाकर सब अमृत को पी लो, दैत्य तुमको नहीं जान पाएंगे। शिवजी की ऐसी आज्ञा पाकर मैं तथा विष्णु बछड़े बन, दोपहर दिन चढ़े, वहाँ जा पहुँचे। वहाँ हमको किसी ने नहीं देखा। तब वहाँ से विष्णु तथा मैं दोनों लौटकर, शिवजी की स्तुति करने लगे उस समय सब असुर शिवजी की लीला से अन्धे हो गये। हमने शिवजी की स्तुति में उनका विराट् रूप का वर्णन किया। उस समय शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

बोले—"हे देवताओ ! अब तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। तुम शीघ्र ही सिद्धि को प्राप्त करोगे।"

हे नारद ! शिवजी यह कहकर चुप हो गये और हम लोग वहीं बने रहे। इतने ही में गणों के राजा नन्दी अपने गणों सहित वहाँ आये। देवताओं ने उन्हें वहाँ देखर अत्यन्त शुभ माना तथा उनसे विनय की—"हे शिलादि मुनि के पुत्र नन्दी ! तुम कोई ऐसा उपाय करो जिससे त्रिपुर एक में मिल जाएँ।" यह सुनकर नन्दी ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! शिवजी ने तुमको आज्ञा दी है कि तुरन्त एक रथ बनाओ तथा सारथी, बाण, धनुष आदि सब ठीक करके रखो। मुझको निश्चय है कि शिवजी अवश्य शीघ्र ही त्रिपुर का नाश करेंगे।" यह कहकर नन्दी अपने घर चले गये। तब देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्न होकर शिवजी का जय-जयकार किया। इन्द्र ने तुरन्त ही विश्वकर्मा को बुलाकर शिवजी की आज्ञा सुनायी। फिर विष्णु तथा मैंने विश्वकर्मा का आदर करते हुए कहा कि तुम शिवजी के सारथी होना। इसके अतिरिक्त तुम शीघ्र ही धनुष एवं बाण भी तैयार कर दो। विश्वकर्मा ने यह सुनकर सदाशिव जी का ध्यान किया तो उनके मन में रथ निर्माण करने की युक्ति बैठ गयी।"

सातवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! विश्वकर्मा द्वारा निर्मित उस रथ का विस्तार मानो सम्पूर्ण सृष्टि भर के समान था। उसमें सूर्य दाहिना चक्र तथा चन्द्रमा बायाँ चक्र इसी प्रकार बारहों सूर्य तथा सोलहों कला वर्तमान थीं। सभी पर्वत एवं वर्ष, मास, तिथि रथ के खण्ड बने। चारों वेद उस रथ के घोड़े तथा व्यास आदि घोड़ों को चलाने वाले हुए। धर्म-कर्म के शास्त्र, पुराण एवं न्याय शास्त्र ये सब उसके मुख हुए। आश्रम, वर्ण आदि उसके अंग हुए। गंगा आदि नदियाँ तथा चारों सागर चँवर लेकर रथ के चारों ओर खड़े हुए। लोकालोक पर्वत आदि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

उसकी सीढ़ियाँ हुए। प्रणव चाबुक, विष्णु जी बाण तथा हिमाचल धनुष हुए। यहाँ तक कि ब्रह्मा से लेकर तृण तक सब उस रथ में विद्यमान थे। इस प्रकार वह सब सामग्री पूर्णरूप से तैयार हो गयी, तब वह रथ शिवजी के द्वार पर ले जाकर खड़ा किया गया। उस समय शिवजी बाहर आये। उनको देखकर सबने विनती की—"हे महाराज ! अब आप रथ में आरूढ़ हों तथा त्रिपुर का नाश करके तीनों लोकों को आनन्द प्रदान करें।" तब शिवजी ने तुरन्त गणपति को बुलाकर उनकी पूजा की। फिर वे रथ पर आरूढ़ होकर आकाश एवं पृथ्वी को कँपाते हुए चल दिये। सब ने जय-जयकार किया। पृथ्वी उस रथ का भार न सहकर काँपने लगी। इस प्रकार शिवजी अपनी सेना सहित देवताओं को आनन्दित करते हुए वहाँ से चले। उस समय शिवजी के इस आश्चर्यजनक चरित्र से त्रिपुर एकत्र हुए। तब शिवजी ने उचित समय जानकर अपने धनुष में विष्णुपति अस्त्र को लगाकर तथा अपने तेज को उसी अस्त्र में स्थापित कर दिया, जिससे धनुष-बाण दोनों ही प्रकाशवान् हुए। सृष्टि भर में प्रकाश ही प्रकाश फैल गया। तब शिवजी ने उस समय मन में यह विचार किया कि मैं तीनों पुरों को जला दूँ। उस समय विलम्ब हुआ जानकर विष्णु जी, मैं तथा इन्द्र ने उनकी बहुत प्रकार से विनती की।"

आठवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—हे नारद ! तब देवताओं ने कहा—"हे शिवजी ! अब आप त्रिपुरों को नष्ट करने में विलम्ब मत कीजिये। आपके इस तेज से तीनों लोक जले जाते हैं।" यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो, तुरन्त वही अस्त्र त्रिपुर को लक्ष्य करके छोड़ दिया। उसके छोड़ने से भीषण शब्द हुआ। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे प्रलयकाल के बादल गरज रहे हों। उस अस्त्र में से निकली हुई अग्नि से तीनों लोक जलन लगे धरती काँपने लगी, पर्वत जल उठे, शेषनाग पृथ्वी को सिर पर न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

रख सके, नदियों का जल सूख गया, दिग्पाल एवं कूर्म—जो पृथ्वी का भार सँभाले हुए हैं, बलहीन हो गये तथा सब मुनि एवं सिद्ध ध्यान छोड़कर आश्चर्य चकित हुए। उसी समय शिवजी द्वारा छोड़े गये बाण के पहुँचते ही वे तीनों पुर जलकर भस्म हो गये। तदुपरान्त वह बाण उन सबको जलाकर, शिवजी के पास लौट आया। इस प्रकार बाण के उसी भीषण प्रहार से त्रिपुर में कोई प्राणी जीवित न रहा। सब दैत्य शिवजी के हाथ से मरकर मुक्ति पा गये। वे सभी शिवजी के गण हुए ; क्योंकि उनमें भक्ति का बीज शेष था और भक्ति का बीज कभी नष्ट नहीं होता। उस समय शिवजी का स्वरूप ऐसा भयानक था, जिसे देखकर प्रतीत होता था कि प्रलय होने में अब कोई देर नहीं है। मैं तथा विष्णु जी उस महातेज के कारण शिवजी को अच्छी प्रकार नहीं देख सकते थे। यह देख मैंने तथा विष्णु जी ने दूर से ही उनकी स्तुति की।

हे नारद ! सबसे पहले विष्णु जी ने शिवजी की स्तुति की तथा कहा—"हे शिवजी ! अब आप क्रोध को शान्त करें।" फिर मैंने भी उनकी स्तुति की। इसके पश्चात् लोकपाल, देवता, सिद्ध, नाग, मुनि तथा वेदों ने अपनी-अपनी स्तुति को युक्ति के अनुसार काव्य रूप में गाया तब ऐसी अनेक प्रकार की स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुए। इस प्रकार हम सब शिवजी को प्रसन्न पाकर, उनकी सेवा करने लगे।

नौवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! उस समय शिवजी हम सब पर अत्यंत प्रसन्न होकर बोले कि तुम सब लोग अपनी-अपनी इच्छानुसार वर माँग लो। तब देवताओं ने यह कहा—"हे महाराज ! आपने त्रिपुर को नष्ट करके हम सबको बड़ा आनन्द प्रदान किया। हम सब आपकी कृपा से कृतार्थ हो गये। हे शिवजी ! इसी प्रकार जब-जब हम पर कोई कष्ट पड़े, तब-तब आप उसे दूर किया कीजिए तथा अपनी भक्ति हम सबको प्रदान कीजिए। यह सुनकर शिवजी ने ॐ कहकर, हम सबको

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

प्रसन्न किया। उस समय नृत्य एवं गायन का बहुत बड़ा उत्सव हुआ। उसी समय अर्हण ने भी अपने चारों शिष्यों सहित वहाँ उपस्थित होकर शिवजी को प्रणाम किया तथा अन्य सब देवताओं को भी दंडवत् की। फिर नम्र होकर शिवजी से इस प्रकार कहा—"मैंने आपकी आज्ञानुसार ही बिना सोचे-विचारे इस मत का प्रचार किया, सो मुझ पर आप ऐसी कृपा करें, जिससे मुझे ऐसे दुष्कर्म का कोई पाप न लगे। अब आप मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं क्या करूँ, तथा किस स्थान पर वास करूँ। यह भी बताइये कि अपनी इस पुस्तक का, जिसमें कि सोलह सहस्त्र श्लोक हैं, क्या करूँ? मेरे शिष्यों के लिए आपकी क्या आज्ञा है?" यह सुनकर विष्णु जी ने शिवजी की आज्ञानुसार यह कहा—"हे अर्हण ! तुम शिष्यों सहित मरुस्थल में जाकर वास करो। कलियुग के आने तक अपना मत किसी पर प्रकट मत करना। तुमको कोई पाप नहीं लगेगा। जब कलियुग का आरम्भ हो, तब तुम इधर-उधर अपने मत का प्रचार करना तथा समस्त स्त्री-पुरषों का मन अपने अधीन करना; जिससे सब लोग महापापी हो जाएं। कलियुग पापों का बीज है, इसलिए तुम्हारा यह मत कलियुग में अच्छी प्रकार चलेगा और उस समय सबलोग सन्मार्ग त्याग कर, कुमार्ग पर चलने लगेंगे।" यह कहकर विष्णु जी ने शिष्यों सहित अर्हण को वहाँ से विदा किया।

हे नारद ! इस प्रकार जब कलियुग आएगा, तब अर्हण मरुस्थल से निकलकर अपने मत को प्रकट करेगा। हे नारद ! मयादानव भी यद्यपि त्रिपुर में था, परन्तु वह शिवजी की कृपा से जीवित ही बचा रहा। अस्तु, उसने भी शिवजी की स्तुति कर, हम सबको भी प्रणाम किया। तब शिवजी ने मयदानव की स्तुति सुनकर कहा—"हे मयदानव ! तुम निर्भय होकर रसातल में वास करो। शिवजी की आज्ञानुसार मयदानव वहाँ जाकर रहने लगा। सब देवता मयदानव पर शिवजी की यह कृपा देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। हे नारद ! जो मनुष्य इस चरित्र को सुनेगा या सुनाएगा, उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे।"

❀❀❀

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:13 AM

दसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी के मुख से त्रिपुर की कथा सुनने के पश्चात् नारद जी बोले—"हे ब्रह्मा जी ! अब आप कृपा करके यह बताइए कि मयदानव त्रिपुर के साथ क्यों नहीं जला?" यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! मयदानव शिवजी का परम भक्त था, इसीलिए वह इस अग्नि से न जलकर बचा रहा। अब मैं तुम्हें इसके विषय में बताता हूँ। कश्यप की स्त्रियों में एक दनु नाम की स्त्री थी। उसके गर्भ से साठ लड़के, जो बड़े वीर-धीर थे, उत्पन्न हुए। वे तीनों लोकों में बहुत ही बुद्धिमान् थे। उनमें से एक मय भी था। उसने शिवजी का भक्तिपूर्वक बड़ा तप किया तथा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर, पंचाक्षरी मंत्र का भली-भाँति ध्यानपूर्वक जाप किया। वह गर्मियों में अग्नि में तपकर, वर्षा में खुले वन में रहकर तथा शीतकाल में जल के भीतर बैठकर कठिन तपस्या करता रहा। उसने शिवजी की मृत्तिका की मूर्त्ति बनाकर उसकी पूजा की तथा उसी के प्रमाण चावल, बिल्वपत्र और प्रत्येक रंग के सुगन्धित पुष्प चढ़ाए। वह स्थिर होकर दृढ़ आसन एवं ध्यान से श्वास रोक कर बैठ गया। तब शिवजी ने प्रकट होकर उससे वर माँगने के लिए कहा; परन्तु उसने शिवजी के इस वचन को नहीं सुना। यह देखकर शिवजी ने अपनी मूर्त्ति को मय के ध्यान से खींच लिया। उस समय मय ने आश्चर्यचकित होकर नेत्र खोल दिये तो देखा कि सामने शिवजी खड़े हैं। उनका महागौर शरीर, भस्म लगाये, भाल पर चन्द्रमा विराजमान एवं अपने मुख्य स्वरूप तथा मुख्य लक्षणों से सुशोभित है। ऐसा सुन्दर स्वरूप देखकर मयदानव उठ खड़ा हुआ तथा सिर झुका, शिवजी को प्रणाम कर, स्तुति करते हुए बोला—"हे नाथ ! मैं क्या वरदान माँगूँ? आप तो स्वयं ही सब कुछ जानते हैं।"

हे नारद ! शिवजी ने मय के मुख से, ऐसे वचन सुनकर कहा—"हे मय ! हम तुमको तुम्हारे हृदय की इच्छानुसार ही यह वरदान देते हैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कि तुम सब दैत्यों के आचार्य होकर सदैव निर्दोष रहोगे। जिस प्रकार देवताओं में विश्वकर्मा हैं, उसी प्रकार दैत्यों में तुम होगे। तुमको जरा-मृत्यु प्राप्त न होगी। हम तुमको कभी नष्ट न करेंगे।" यह कहकर शिवजी ने मय के शरीर को स्पर्श किया जिससे उसे अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ। मय भी उनको प्रणाम कर अपने घर लौट आया। तब समस्त दैत्यों ने शिवजी के वरदान के कारण मय को अपना आचार्य बनाया। हे नारद ! मयदानव का यह चरित्र अत्यन्त पवित्र है। यह सुनने तथा सुनाने वाले को मय के समान ही कर देता है। उसकी बुद्धि कभी नष्ट नहीं होती। जो मनुष्य इसका पाठ करता है, उससे कभी कोई पाप नहीं होता तथा अन्त में वह मुक्ति प्राप्त करता है।"

ग्यारहवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर सूत जी बोले—हे शौनक ! इस चरित्र के सुनने के पश्चात् नारद ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! अब आप मुझे शिवजी के अन्य चरित्रों के विषय में बताइए।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! तुमको तथा तुम्हारी बुद्धि को धन्य है, जो तुम्हें शिवजी में इतनी भक्ति है। मैंने वेदों को बहुत ही छाना है तथा उनसे जो कुछ भी शिक्षा प्राप्त की है, उसका मूल तुमसे वर्णन करता हूँ। हे नारद ! पहले प्रत्येक मनुष्य असंख्य जन्म-पर्यन्त हमारी पूजा करके विष्णु जी की भक्ति प्राप्त करता है। फिर, बहुत जन्मों तक विष्णु जी की उपासना करने के पश्चात् शिवजी की प्रीति उत्पन्न होती है। तुम निःसन्देह शिवजी के परम भक्त हो। अब मैं तुम्हें शिवजी का चरित्र सुनाता हूँ। तुम ध्यानपूर्वक सुनो। किसी समय एक बार इन्द्र एवं समस्त देवताओं ने शिवजी के दर्शन के लिए एक सभा की। उसमें ग्यारह रुद्र, बारह सूर्य, आठ वसु, तेरह विश्वेदेवा, उनचास पवन, समस्त दिग्पाल तथा उपदेव आदि उपस्थित थे। ऐसे समाज को अपने साथ लेकर इन्द्र बड़े उत्सव के साथ, रजोगुण धारण किए हुए, शिवजी के दर्शनार्थ चले।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

उनको संसार में केवल शिवजी के दर्शन से ही यश प्राप्त करना स्वीकार था। उस समय शिवजी ने अपनी लीला द्वारा अपना भयंकर रूप बनाया तथा अवधूतों के समान होकर वे इन्द्र के नगर में प्रकट हुए। उन्हें देखकर इन्द्र ने कहा—"तुम कौन हो? ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे तुम शिवजी के सेवकों में से कोई हो। यदि यह सत्य है, तो तुम हम को शिवजी के निवास-स्थान का पता बताओ।" इस प्रकार इन्द्र ने कई बार पूछा परन्तु उन्हें कोई उत्तर न मिला। यह देखकर इन्द्र बहुत क्रोधित हुए तथा शिवजी को धमकाते हुए बोले—"अरे, तू भूत तो नहीं है, जो उत्तर नहीं देता? अब मैं तुझे वज्र से मार डालता हूँ।" यह कहकर इन्द्र ने अपना वज्र शिवजी पर चलाया, जो शिवजी की गर्दन में जा लगा। शिवजी वज्र की शक्ति एवं प्रभाव को स्थिर रखने के लिए नीलकंठ हो गए अर्थात् उन्होंने अपने कण्ठ में श्याम-चिह्न धारण कर लिया। उस समय वज्र भी जलकर भस्म हो गया तदुपरान्त शिवजी का तेज इतना भभक उठा कि चारों ओर दाह फैल गया और सब देवता स्त्रियों सहित जलने लगे। यह दशा देखकर सब कंपित हुए। तब बृहस्पति ने सदाशिव का ध्यान किया और पहचाना कि ये शिवजी ही हैं। उस समय वे शिवजी की स्तुति करते हुए इन्द्र से बोले—"हे इन्द्रदेव ! यह जो सम्मुख खड़े हैं, वे स्वयं सदाशिव ही हैं। तुम दंडवत् कर इनकी स्तुति करो।"

हे नारद ! तब इन्द्र, बृहस्पति तथा समस्त देवता शिवजी की स्तुति करते हुए इस प्रकार बोले—"हे महाराज ! आप हमारा यह अपराध क्षमा करें। हम तो आपके दर्शनों के लिए ही जा रहे थे, परन्तु आपने स्वयं कृपा करके गुप्त-रीति से, बिना किसी परिश्रम के हम सबको दर्शन दिये।" शिवजी ऐसी उत्तम एवं बृहत् स्तुति सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे देवताओ ! हम बहुत प्रसन्न हैं। अब तुम अपनी इच्छानुसार वरदान माँगो।" शिवजी के ऐसे वचन सुनकर देवगुरु ने कहा—"हे शिवजी ! अब आप क्रोध दूर करके इन्द्र की रक्षा करें तथा आपके भाल पर जो तेज रूप नेत्र है, उसकी तीक्ष्णता दूर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

हो जाए।" यह वचन सुनकर शिवजी बोले—"हे बृहस्पति ! उस अग्नि को जो हमारे नेत्र से निकल गयी है, अब हम किसी प्रकार अपने भाल में स्थान नहीं दे सकते। हम इस तेज को बहुत दूर फेंक देंगे, जिससे इन्द्र को कष्ट नहीं होगा। तुमने इन्द्र को जीवनदान दिया है, इसलिए आज से तुम्हारा नाम जीव प्रसिद्ध होगा।" यह सुनकर बृहस्पति एवं इन्द्र आदि अत्यन्त प्रसन्न हुए। तब शिवजी ने उस तेज को अपने हाथ से समुद्र में फेंक दिया तथा अन्तर्धान हो गए।

बारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जब शिवजी ने अपने नेत्र के तेज को दूर फेंक दिया, तब वह सुरनदी सागर में गिर पड़ा तथा एक बालक के रूप में प्रकट होकर अत्यनत भयानक रुदन करने लगा। उसके शब्द से पृथ्वी काँपने लगी। वह शब्द चारों ओर फैल गया। सब लोग आश्चर्य करने लगे। पर्वत चलायमान हुए तथा समुद्र सुख गए। तब सब देवता एवं मुनि आश्चर्यचकित हो, मेरे पास आकर बोले—"हे ब्रह्मन् ! यह कैसा शब्द है और कहाँ से आ रहा है? आप इसको दूर कर, देवताओं को आनन्द प्रदान कीजिये।" मैंने उनसे कहा—"हे देवताओ ! मैं स्वयं भी इस शब्द को सुनकर आश्चर्यचकित हूँ, तुम सब लोग अब अपने-अपने घर को जाओ। जहाँ से यह शब्द आता है, मैं वहाँ जाकर पता लगाता हूँ।" इस प्रकार समझाकर मैंने उन सबको विदा कर दिया तथा स्वयं उस शब्द को ढूँढते हुए समुद्र तट पर आया। वहाँ मैंने यह देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर बालक पड़ा हुआ है। उसे देखकर मैंने निश्चय किया कि वह शब्द अवश्य ही इस बालक का है। अस्तु, मुझको आते हुए देखकर सागर अपने उस पुत्र सहित मेरे पास आया तथा प्रणाम करने के पश्चात् उसने उस लड़के को मेरी गोद में डाल दिया और स्वयं खड़ा रहा। मैंने उससे पूछा—"हे सागर ! यह पुत्र किसका है?" सागर ने उत्तर दिया—"हे ब्रह्मन् ! यह बालक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

मुझमें उत्पन्न होने से मेरा ही है। अब आप इसका नामकरण संस्कार कीजिये।" हम दोनों में परस्पर यह वार्ता हो ही रही थी कि उस लड़के ने मेरी दाढ़ी पकड़ कर इस प्रकार खींचा कि मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े। तब मैंने समुद्र से कहा—"हे समुद्र! तेरा यह पुत्र अत्यन्त बलशाली होकर तेरे यश को समस्त संसार में फैलायेगा। इसने मेरी दाढ़ी को इतनी जोर से पकड़ा है कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे, इसलिए इसका नाम जलन्धर होगा। अब यह जहाँ से उत्पन्न हुआ है, वहीं चला जाए।"

हे नारद! यह कहकर मैंने शुक्र को बुलाया तथा एक बड़े उत्सव का आयोजन किया। फिर उसका राज्याभिषेक करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। जालन्धरी नगरी उसकी राजधानी हुई। उस समय समुद्र ने बड़ी धूमधाम से उत्सव की रीतियाँ पूर्ण कीं। इसके पश्चात् मैंने जलन्धर से कहा—"हे जलन्धर! तुम्हारे कुल के गुरु शुक्र होंगे।" इतना कहकर वहाँ से मैं अन्तर्धान हो गया। तब जलन्धर जालन्धरी नगरी को बसाकर वहीं निवास करने लगा। समुद्र उसे देखकर बहुत प्रसन्न था। अस्तु, उसने दैत्यों के राजा कालनेमि को बुलाकर अपने पुत्र की शक्ति का वर्णन किया। कालनेमि उसे सुनकर कुल सहित अत्यन्त प्रसन्न हुआ तथा अपनी पुत्री का विवाह जलन्धर के साथ करने की इच्छा की। तदुपरान्त शुक्र की सम्मति से दोनों का विवाह बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जलन्धर वैसे तो स्वयं ही बहुत बलवान् था, उस पर शुक्र की सहायता मिलने पर उसने सब लोकों को जीतकर आधीन कर लिया। उसने पुत्रवत् प्रजा का भली-भाँति पालन किया। जो दैत्य पाताल लोक में भाग गये थे, वह सब भी जलन्धर की आज्ञा पाकर निर्भय हो, उसके समीप आ पहुँचे। जलन्धर ऐसा राजा हुआ कि उसके राज्य में कभी कोई पाप नहीं होता था। तीनों लोकों में कभी किसी ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। उसने सब लोगों से अपने-अपने वर्ण के अनुसार धर्म-कर्म कराया, जिससे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कोई कुमार्ग पर अग्रसर न हुआ। इस प्रकार उसका प्रताप एवं तेज तीनों भुवनों में फैल गया।''

❁❁❁

तेरहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! एक बार जलन्धर अपनी सभा में बैठा हुआ था। सब वीर, दैत्यों के अधिपति तथा समस्त देवता आदि उसके चारों ओर अपने-अपने स्थान पर बैठे हुए थे, इतने में बिना शीश का राहु उस सभा में आ उपस्थित हुआ। उसको देखकर जलन्धर ने शुक्र से अत्यन्त आश्चर्य के साथ पूछा—''हे गुरु ! इसका सिर किसने काटा है?'' शुक्र बोले—''हे जलन्धर ! इसके विषय में, मैं तुम्हें एक पुरातन कथा सुनाता हूँ। जब देवता एवं दैत्यों ने परस्पर युद्ध किया तथा देवता परास्त हुए, उस समय दैत्यों के राजा बलि थे। राजा बलि शिवजी के अनन्य भक्त थे। उस समय सब देवता दैत्यों से हार कर, विष्णु जी की शरण में गये। विष्णु जी ने देवताओं पर कृपा करके यह कहा—''हे देवताओ ! तुम सब जाकर दैत्यों से मेल कर लो तथा समुद्र के दोनों किनारे का भली-भाँति मन्थन करो। जब उस समुद्र में से अमृत की उत्पत्ति होगी, तब ही अमृत को तुम सबको पिलाकर, दैत्यों के साथ छल करेंगे। इस प्रकार जब तुम अमृतपान कर लोगे तब दैत्यों पर प्रबल हो जाओगे।'' यह सुनकर देवताओं ने दैत्यों के राजा बलि के पास आकर मित्रता स्थापित की। तदुपरान्त दैत्य एवं देवता—दोनों मन्दर गिरि को उखाड़कर समुद्र तट पर ले गये। वहाँ वासुकि नाग को मन्दर गिरि में डालकर, मन्दर गिरि को मथानी बनाया गया। फिर वे सब समुद्र का मन्थन करने लगे। उस समय इन्द्र के परम हितैषी विष्णु जी ने एक उपाय किया। उन्होंने देवताओं को पहले वासुकि नाग के सिर की ओर खींचने के लिए कहा। उस समय दैत्यों ने विष्णु जी के मतलब को न समझकर कहा कि नहीं, हम सिर की ओर खीचेंगे, हम पूँछ की ओर क्यों लगें? तब सब दैत्य सिर की ओर तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

देवता पूँछ की ओर लगकर वासुकि नाग को मन्दर गिरि से लपेट कर, समुद्र-मन्थन करने लगे। विष्णु जी स्वयं भी देवताओं के साथ मथने लगे। दोनों पक्ष पहले गणपति की पूजा करना भूल गये थे, इसलिए सर्वप्रथम उस मन्थन से हलाहल विष निकला। उसके निकलने से सब लोग जलने लगे। यह देखकर देवता तथा दैत्य दुःखी होकर भाग चले। तब इन्द्र तथा विष्णु जी देवताओं सहित शिवजी की शरण में गये और उनकी स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया। तब शिवजी प्रकट होकर उस हलाहल विष को स्वयं पी गये, जिससे चारों ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

हे नारद ! इसके पश्चात् देवताओं तथा दैत्यों ने धीरे-धीरे मन्थन करके समुद्र से सब रत्न निकाल लिये। विष्णु जी ने कौशल से उत्तम-उत्तम रत्न देवताओं को दिये तथा वारुणी मद्य दैत्यों को देकर अमृत देवताओं को पिला दिया। उस समय राहु भी देवताओं के साथ बैठा हुआ था। वह उन सबको धोखा देकर अमृत पी गया। विष्णु जी ने यह देखकर उसका सिर अपने चक्र से काट डाला। इसके पश्चात् उस स्थान पर देवताओं और दैत्यों में भयानक युद्ध हुआ। उसमें करोड़ों दैत्यों के स्वामी मारे गये। जो शेष बचे, वे पाताल में भाग गये। उस समय से सभी दैत्य भयभीत थे; परन्तु अब जब से आपका अवतार हुआ है तथा आप राजा हुए हैं, तब से दैत्यों को पाताल से प्रकट होने का अवसर प्राप्त हुआ है।'' जलन्धर यह सुनकर कि उसके पिता समुद्र को देवताओं तथा दैत्यों ने मिलकर मथा था, अत्यन्त क्रोधित हुआ। वह अग्नि के समान प्रज्वलित होकर, नेत्र लाल कर, दाँतों से अपने ओठ चबाने लगा। फिर उसने घम्मर नामक दूत को बुलाकर यह कहा कि तुम इन्द्र के पास निर्भय हो जाओ और उससे यह कहो कि तुमने हमारे पिता समुद्र को क्यों मथा था? तुमने उसमें से सब रत्न क्यों निकाल लिये तथा स्वयं देवताओं सहित अमृत पानकर, दैत्यों को मद्यपान क्यों कराया? तुमने धोखे से दैत्यों को परास्त किया, यह अच्छा नहीं हुआ। अब तुम इसका फल अवश्य भोगोगे। जलन्धर की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

यह आज्ञा पाकर घम्मर दूत वहाँ से चलकर इन्द्र की सभा में जा पहुँचा। वहाँ उसने अहंकार में भरकर इन्द्र के सम्मुख अपना मस्तक नत नहीं किया तथा इस प्रकार कहने लगा—"हे इन्द्र ! समुद्र के पुत्र जलन्धर ने तुमको यह सन्देशा भेजा है कि तुमने समुद्र से जो रत्न निकाल लिये हैं, उन सबको हमें सौंप दो तो सब बात ठीक हो जायेगी; क्योंकि दिन का भूला हुआ यदि रात को लौट आवे तो वह भूला नहीं कहाता है। इसलिए तुम शीघ्र ही हमारी शरण में आओ। अन्यथा तुम इसका फल शीघ्र ही प्राप्त करोगे।" यह सन्देश सुनकर इन्द्र जलन्धर को बड़ा बलवान एवं पराक्रमी समझ, मन में भयभीत हुए, परन्तु ऊपर से क्रोधित होकर बोले—"हे दूत ! तुम हमारी ओर से जलन्धर को यह उत्तर देना कि पहले किसी समय पहाड़ों ने हमारे लोक में उड़कर उसको नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था तथा यहाँ के असंख्य निवासियों को मार डाला था। उस समय हमने पर्वतों के पंख काट डाले तथा जो शेष रह गये थे, वे डूबकर समुद्र में छिप गये थे। समुद्र ने शरण देकर उनकी रक्षा की थी। इसके अतिरिक्त समुद्र ने हमारे शत्रुओं को अनेक बार अपनी शरण दी है। दैत्यों को भी समुद्र ने ही छिपाया था। इसी अपराध के कारण हमने समुद्र का मन्थन किया तथा उसके रत्न निकाल लिए। पहले भी देवताओं का एक और शत्रु उत्पन्न हुआ था, जिसका नाम शंखासुर था। उसकी रक्षा समुद्र भी न कर सका। इसलिए जलन्धर को चाहिए कि वह इस प्रकार बुद्धिहीन होकर दुर्विचार में न पड़े। संसार में ऐसा कौन देवता या दैत्य है जो हमसे शत्रुता करके पार पावे? संभवतः उसने अभी हमारे बल एवं प्रताप के विषय में किसी से सुना नहीं है। हमने बड़े-बड़े अनेक दैत्यों को अपने छोटे भाई की सहायता से मार डाला है। यदि जलन्धर अपनी भलाई चाहे तो वह इतने हाथ-पैर न फैलावे। यदि वह इस बात को नहीं मानेगा तो उसके हाथ दुःख एवं लज्जा के अतिरिक्त और कुछ न लगेगा।"

हे नारद ! दूत ने इन्द्र के ऐसे वचन सुनकर कहा—"हे इन्द्र ! तुम व्यर्थ ही अहंकार मत करो, क्योंकि जलन्धर ने संसार भर का राज्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

प्राप्त किया है। अब तुमको उचित है कि गर्व त्यागकर, सब रत्न जलन्धर को अभी सौंप दो तथा स्वयं चलकर, जलन्धर की छाया में आनन्दपूर्वक रहो। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो तुमको बहुत ही कष्ट उठाना पड़ेगा।'' दूत के ऐसे वचन सुनकर इन्द्र ने क्रोधित होकर उत्तर दिया—''हे दूत ! हमने जो तुमसे पहले कहा है, तुम वही जाकर जलन्धर से कह दो फिर जो ईश्वर करेगा, उसे देखा जायेगा।'' इन्द्र ने यह कहकर दूत को वहाँ से विदा कर दिया तथा स्वयं क्रोध एवं भय की दशा में चिन्तारूपी समुद्र में डूब गये। उधर दूत ने जलन्धर के पास पहुँचकर इन्द्र के कहे हुए शब्द विस्तारपूर्वक कह सुनाये। उन्हें सुनकर जलन्धर क्रोधाग्नि से जल उठा तथा आवेश में उसके होंठ फड़कने लगे।''

चौदहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! अपने दूत द्वारा इन्द्र के वचन सुनकर, जलन्धर ने अत्यन्त क्रोधित होकर समस्त देवताओं को परास्त करने का उद्योग किया। उसने दैत्यों की एक विशाल सेना एकत्र की। उसमें राक्षस, दैत्य एवं दानव करोड़ों की संख्या में एकत्र हो गये। शुम्भ, निशुम्भ के समान उस वीरों की सेना में अनेक यूथप थे। कालनेमि भी अन्य यूथपों सहित उसमें सम्मिलित हुआ। ऐसी बलशाली अपार सेना लेकर जलन्धर देवलोक जीतने को चल दिया। उस समय पृथ्वी काँपने लगी। वे दैत्य मार्ग से गरजते हुए देवलोक में जा पहुँचे। उन्होंने देवलोक को चारों ओर से घेर लिया। जलन्धर नन्दन वन में जाकर ठहर गया। उस समय इन्द्र जलन्धर की उस विशाल सेना को देखकर अत्यन्त क्रोधित हुए। तदुपरान्त वे अपने गुरु बृहस्पति की आज्ञा लेकर, देवताओं की सेना लिये हुए नगर से बाहर निकल आए। तब दोनों सेनाओं में परस्पर युद्ध होने लगा, अनेक प्रकार के शस्त्र चलने लगे और देवता एवं दैत्य बड़े उत्साह के साथ एक दूसरे पर प्रहार करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

लगे। रक्त की नदियाँ बहने लगीं, दोनों ओर के बड़े-बड़े वीर योद्धा कट मरे, युद्ध स्थल में उनके शवों का ढेर लग गया। हाथी, घोड़े, रथ, प्यादे, देवता एवं दैत्य मरने लगे। देवताओं के हाथ से जिन दैत्यों की मृत्यु हुई, उनको असुर गुरु शुक्र जी अपनी मृतसंजीवनी विद्या की शक्ति द्वारा जीवित कर देते थे अर्थात् शुक्र मंत्र से जल पढ़कर मरे हुए दैत्यों के मस्तक पर छिड़कते थे जिससे वे जीवित हो उठते थे। इसी प्रकार बृहस्पति भी द्रोणाचल से जीवनदान देने वाली औषधि लाकर देवताओं को जीवित कर देते थे। निदान देवता तथा दैत्य पुनः युद्ध करने लगते थे। इस प्रकार कोई विजय प्राप्त नहीं कर सका। जब जलन्धर ने यह देखा कि देवता मरकर पुनः जीवित हो जाते हैं तो वह अत्यन्त क्रोधित हुआ। उसने शुक्राचार्य से बहुत विनती करके पूछा—''हे गुरु ! हमने अनेक देवताओं को मारा, परन्तु वे सब जीवित हो उठे। हम तो अब तक यही जानते थे कि संजीवनी विद्या का ज्ञान केवल आप ही रखते हैं, अन्य कोई नहीं जानता।'' यह सुनकर शुक्र ने कहा—''हे जलन्धर ! एक मृतकों को जीवित करने वाली परम औषधि द्रोणगिरि पर है। बृहस्पति उसे लाकर देवताओं को जीवित कर देते हैं। यदि तुमको विजय की इच्छा है, तो द्रोणगिरि को जड़ से उखाड़कर समुद्र में डलवा दो।'' यह सुनकर जलन्धर ने प्रसन्न होकर, द्रोणागिरि को जड़ से उखाड़कर समुद्र में डाल दिया। फिर युद्ध क्षेत्र में आकर घनघोर युद्ध करने लगा। उस समय उसने अपने हस्त कौशल एवं वीरता से शत्रुओं को परास्त कर दिया।

हे नारद ! इस प्रकार युद्ध में जो दैत्य मारे जाते थे, उनको शुक्र तुरन्त जीवित करने लगे ; परन्तु बृहस्पति जब देवताओं को मरा हुआ देखकर पुनः द्रोणगिरि पर औषधि लेने गये, जो वहाँ उन्होंने पर्वत को ही नहीं देखा। यह देखकर बृहस्पति ने अत्यन्त चिन्तित होकर समझा कि जलन्धर ने उस पर्वत को नष्ट कर दिया है। तब वे लौटकर देवताओं से बोले—''हे देवताओ ! अब तुम युद्ध करना बन्द कर दो। जलन्धर महापराक्रमी है। देखो, इसने द्रोणगिरि को मूल से खोद डाला

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

है। अब तुम समय को देखते रहो और इसकी अधीनता स्वीकार कर लो। गुरु के ऐसे वचन सुनकर समस्त देवता युद्ध स्थल से भाग चले। जिसको जहाँ स्थान मिला, वह वहीं जा छिपा। जब दैत्यों ने देवताओं को इस प्रकार भागते हुए देखा, तो प्रसन्नता से भरकर घोर सिंहनाद किया और विजय के बाजे बजने लगे। तदुपरान्त जलन्धर देवताओं के नगर में चला गया। यह देखकर इन्द्र आदि बड़े-बड़े देवता सिमटकर एक कुन्तल में जा छिपे, परन्तु वहाँ भी उनका भय दूर न हुआ। इस प्रकार उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाए। जलन्धर देवताओं को अपने वश में करने के पश्चात् आनन्दपूर्वक राज्य करने लगा। जिस स्थान पर कभी देवताओं की राजधानी थी, वहाँ सब दैत्यों की राजधानी बनायी। जलन्धर ने चन्द्र, अग्नि, यम, कुबेर, सूर्य, पवन आदि समस्त देवताओं के अलग-अलग पदों पर दैत्यों की नियुक्ति की। वह ऐसा प्रतापी एवं शक्तिशाली हुआ, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इसके पश्चात् वह शुम्भ आदि को राज्य कार्य सौंपकर, सेना सहित देवताओं की खोज करने के लिए सुमेरु पर्वत की ओर चल दिया।''

पन्द्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! देवताओं ने जब जलन्धर को आते हुए देखा तो उन सब ने घबराकर विष्णु जी का स्मरण किया। वे सब हाथ जोड़, नत-मस्तक हो, स्तुति करते हुए 'जय-विष्णु, जय-विष्णु' कहने लगे तथा इस प्रकार बोले—''हे विष्णु जी ! आप प्रकट होकर दैत्यों का नाश करें। हमारे सम्मुख जलन्धर चला आ रहा है, इसलिए आप जो उचित समझें, वही करें। आपने देवताओं को दुःखी देखकर मत्स्य अवतार लिया था तथा मुनियों के समस्त दुःखों को दूरकर प्रलय में विराजमान हुए थे। फिर आपने देवताओं के लिए कूर्मावतार लेकर पर्वत को अपनी पीठ पर उठाकर रखा। जब हिरण्याक्ष बहुत बलवान्

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

होकर देवताओं को कष्ट पहुँचाने लगा, उस समय भी आपने वाराह अवतार लेकर उसको नष्ट कर दिया था। जब उसके भाई हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद के साथ अन्याय किया, तब आपने नृसिंह का अवतार धारण कर उसका हृदय विदीर्ण किया था। आपने केवल देवताओं के कार्य को पूर्ण करने के लिए ही वामन अवतार लेकर बलि के साथ छल किया था तथा सम्पूर्ण पृथ्वी उससे निकालकर हम सबको दे दी थी। आप शिवजी की भक्ति में स्थित होकर समस्त संसार का उपकार करते रहे हैं। जिस समय रावण ने शिवजी के वरदान से ऊँची पदवी पर पहुँचकर सबको दुःख पहुँचाया। उस समय आपने रामचन्द्र के रूप में अवतरित होकर शिवजी से बाण प्राप्त किया था तथा उसी बाण द्वारा रावण को मार डाला था। फिर आपने कृष्ण अवतार लेकर पृथ्वी के भार को उतारा। हे विष्णु जी ! आप कलियुग में कल्कि अवतार लेकर सब म्लेच्छों को नष्ट करेंगे। इस समय अब आप हमें अपने पीत वसन की झलक क्यों नहीं दिखाते? आप शीघ्र ही हमारे दुःखों को दूर कीजिये, क्योंकि आप स्वयं कष्ट सहकर भक्तों को आनन्दित करते हैं।'' इसी प्रकार देवताओं ने विष्णु जी की बड़ी स्तुति की। जो कोई इस स्तुति को सुनता है वह कभी कष्ट नहीं पाता।''

हे नारद ! विष्णु जी ने देवताओं की ऐसी स्तुति सुनकर अब यह जाना कि देवताओं पर इस समय कुछ दुःख पड़ा है तो वे तुरन्त उठकर गरुड़ पर आरूढ़ हुए। उस समय लक्ष्मी ने विष्णु जी की ऐसी शीघ्रता देखकर पूछा—''हे नाथ ! इस समय इतनी शीघ्रता से आप कहाँ जा रहे हैं?'' तब विष्णु जी ने उन्हें यह उत्तर दिया—''हे लक्ष्मी ! तुम्हारे भाई जलन्धर ने देवताओं पर आक्रमण कर दिया है। इसलिए हम उनकी रक्षा तथा दैत्यों से युद्ध करने के लिए जा रहे हैं।'' लक्ष्मी ने यह सुनकर, जलन्धर के प्रेम के कारण कहा—''हे प्रभो ! आप मेरे भाई जलन्धर को किस प्रकार मारेंगे?'' विष्णु जी ने कहा—''जलन्धर बहुत बलवान् एवं पराक्रमी है, वह हमारे मारने से नहीं मारेगा। वह रुद्र का अंश है तथा ब्रह्मा के वरदान से देवताओं को कष्ट दे रहा है, परन्तु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:14 AM

इस समय यदि हम वहाँ नहीं जाएँ तो हमारा भक्त वत्सल नाम मिट जायेगा।'' यह कहकर विष्णु जी वहाँ से चल दिये। उन्होंने शंख, चक्र, गदा, असि एवं बाण धारण किये तथा गरुड़ को तैयार कर, शीघ्र ही वहाँ जा पहुँचे जहाँ जलन्धर था। उस समय गरुड़ ने अपने पैरों को इस प्रकार हिलाया, जैसे वायु मेघों को उड़ा देती है। उससे असंख्य दैत्य उड़ गये। तब जलन्धर ने वायु द्वारा दैत्यों को दुखी देखकर अत्यन्त क्रोध किया और सिंह के समान गरजता हुआ विष्णु जी के पास जा पहुँचा। अस्तु, विष्णु जी तथा जलन्धर में युद्ध आरम्भ हो गया। दोनों ओर से असंख्य बाण चले। वे बाण आकाश में इस प्रकार छा गये, जिससे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। विष्णु जी ने जलन्धर के रथ के घोड़े, छत्र, ध्वजा तथा धनुष को काटकर शंखध्वनि की और क्रोध में भरकर एक बाण जलन्धर के हृदय में मारा। यह देखकर जलन्धर ने अपनी गदा गरुड़ के सिर पर दे मारी। गरुड़ उस गदा की चोट न सह सके और धरती पर गिर पड़े। तब विष्णु जी ने निर्भय होकर अपनी असि द्वारा उस गदा को काट दिया। यह देखकर जलन्धर ने क्रोधित होकर विष्णु जी के हृदय पर अपने घूँसे का प्रहार किया। अनेक प्रकार के दाँव-पेंच हुए, परन्तु दोनों में से कोई भी नहीं हारा। तब विष्णु जी ने बादल के समान गरजते हुए कहा—''हे जलन्धर! हमने तेरे समान वीर तीनों लोकों में नहीं देखा। तेरे इस पराक्रम से हम अत्यन्त प्रसन्न हैं, इसलिए हम से इच्छानुसार वरदान माँग लें।''

हे नारद ! राजनीति का यही मुख्य तात्पर्य है कि किसी भी युक्ति से अपना मनोरथ पूर्ण किया जाए। अस्तु, जलन्धर यह सुनकर विष्णु जी से बोला—''हे विष्णु ! मैं आपसे यही वरदान माँगता हूँ कि आप मेरी बहन लक्ष्मी सहित मेरे घर में आकर रहें। इसी प्रकार समस्त देवता भी मेरे आधीन होकर मेरे घर में वास करें। जलन्धर का यह वर माँगना सुनकर विष्णु जी अत्यन्त दुःखी हुए तथा उसका कहना मानकर लक्ष्मी सहित उसके घर में निवास करने लगे।''

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

सोलहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जलन्धर ने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर, देवताओं के स्थान पर दैत्यों को नियुक्ति कर दिया तथा समस्त राजाओं को जीतकर अपने आधीन कर लिया। उसने संसार के सम्पूर्ण बहुमूल्य रत्न तथा अद्भुत वस्तुओं को अपने अधिकार में कर लिया। फिर उसने सब दिग्पालों को बुलाकर, अपने नगर में प्रजा के समान बसा दिया। उसने इन्द्र के ऐरावत हाथी छीन लिया तथा उच्चै:श्रवा अवश्य भी उसकी अश्वशाला में आ पहुँचा। कल्पवृक्ष भी उसके आँगन की शोभा बढ़ाने लगा। इस प्रकार जो मुख्य-मुख्य वस्तुएँ थीं, जैसे—वरुण का छत्र, प्रजापति का रथ तथा अनल का अंकुश उन सबको छीनकर, उसने अपने आधीन कर लिया। इसके पश्चात् उसने दया एवं धर्म पूर्वक सम्पूर्ण प्रजा का पुत्र के समान पालन किया। इसीलिए वह दैत्यों में अद्वितीय गिना गया। उसके राज्य में किसी को कोई कष्ट नहीं था। चारों वर्ण अपने-अपने धर्म तथा आश्रम में स्थित थे। कोई मनुष्य अधर्मी न था। किसी को तीनों प्रकार के दु:खों में से एक भी दु:ख न था। कोई मनुष्य अकाल मृत्यु नहीं पाता था और न वहाँ किसी मनुष्य के हृदय में पाप ही उत्पन्न होता था। स्त्रियाँ पतिव्रत धर्म का पूरी तरह से पालन करती थीं। ब्राह्मण धर्म कथाएँ कहते थे। कोई भी दरिद्र न था।"

हे नारद ! उस समय जलन्धर के राज्य में देवताओं के अतिरिक्त और किसी के मन में न तो किसी प्रकार का भय था और न कोई कष्ट ही। अस्तु, एक दिन सब देवता एकत्र होकर शिवजी का स्मरण एवं ध्यानकर स्तुति करने लगे। देवताओं ने कहा—"हे शिवजी ! आपकी ही कृपा होनी चाहिए। हमको विष्णु जी का बड़ा भरोसा था, परन्तु उन्होंने अपनी पत्नी लक्ष्मी सहित जलन्धर के घर में निवास कर लिया है। जब तक हमारा काम विष्णु जी से निकलता था, तब तक हम आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं देते थे।" तब देवताओं की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

प्रार्थना सुनकर शिवजी ने आकाशवाणी द्वारा कहा—"हे देवताओ ! तुम कुछ चिन्ता मत करो। हम तुम्हारी मनोकांक्षा अवश्य पूर्ण करेंगे।" देवताओं ने उस आकाशवाणी को सुनकर बड़ा आनन्द प्राप्त किया। हे नारद ! उस समय तुमने जलन्धर के राज्य में जाकर विष्णु जी आदि को देखा। जलन्धर ने तुम्हारी भली प्रकार अगवानी की तथा पूर्णरूप से पूजा की। कुशल-क्षेम के पश्चात् उसने तुम्हारे आगमन का कारण पूछा तथा यह कहा कि आपने संसार में जो कुछ आश्चर्यजनक चरित्र देखा हो तो उसका वर्णन कीजिए। तब तुमने जलन्धर को यह उत्तर दिया—"हे जलन्धर ! एक दिन हम कैलाश में गये जो सृष्टि भर में सबसे श्रेष्ठ है। शिवजी को स्तुति एवं प्रणाम करने के पश्चात् मैं वहाँ की सामग्री को देखकर आश्चर्य में पड़ गया तथा विचारने लगा कि इतनी असंख्य सामग्री किसी के यहाँ न होगी। इसलिए, अब मैं तुम्हारी सामग्री देखने को यहाँ आया हूँ।" जलन्धर ने तुम्हारी यह इच्छा जानकर अपनी सम्पूर्ण सामग्री दिखाते हुए पूछा—"हे नारद ! सत्य कहना कि दोनों स्थानों से कहाँ अधिक सामग्री है?" तब तुमने उसे यह उत्तर दिया—"हे जलन्धर ! वास्तव में तुम्हारे घर में बहुत सामग्री है, परन्तु एक दारा-रत्न की कमी है। शिवजी के घर में ऐसी स्त्री है, जिसके समान संसार में कोई अन्य स्त्री नहीं है। उसकी सुन्दरता पर ब्रह्मा तक मोहित हो गये थे। वह इतनी सुन्दर है कि उसने कामदेव के शत्रु शिवजी को भी अपने वश में कर लिया है। ब्रह्मा ने बहुत प्रयत्न किया कि वे शिवरानी के समान दूसरी स्त्री बनावें, परन्तु उन्हें सफलता नहीं मिल सकी।"

इतनी कथा कहकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! तुम जलन्धर से इतना कहकर वहाँ से चले गये। तुम्हारे जाने के पश्चात् जलन्धर काम-ज्वर में पीड़ित होकर रोगियों के समान दुःख-सागर में डूब गया तथा काम-वश हो, शिवजी को अन्य देवताओं के समान समझ, राहु को उनके पास भेज दिया। हे नारद ! उन्होंने जलन्धर की ऐसी भावना देखकर, उसके ज्ञान को खींच लिया था। अस्तु, अपने स्वामी जलन्धर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

की आज्ञानुसार राहु शिवजी के पास चल दिया। वह छः ड्योढ़ी तो पार कर गया, परन्तु जब सातवें द्वार पर पहुँचा, जहाँ गणों के राजा नन्दी द्वारपाल बनकर बैठे हुए थे, तब नन्दी ने उसको रोक दिया। तदुपरान्त वे शिवजी की आज्ञा लेकर उसे अपने साथ ही शिवजी के पास ले गये। उस समय शिवजी ने भौंह का संकेत करते हुए राहु से पूछा—''कहो, तुम क्या चाहते हो?'' राहु ने उत्तर दिया—''हे शिवजी ! जलन्धर जो सबसे श्रेष्ठ है तथा जिसके अधीन देवता एवं विष्णु जी भी हैं, उसने यह कहा है कि तुम तो तपस्वी, योगी, दिगम्बर और मरघटों में पड़े रहने वाले हो। तुम्हें भोग-विलास से कोई प्रयोजन नहीं है। अस्तु तुमको ऐसी कोमलांगी स्त्री से क्या प्रयोजन है? ऐसी सुन्दर स्त्री तो हमको चाहिए। इसलिए तुमको उचित है कि उस परम सुन्दर स्त्री को हमें दे दो।'' राहु के ऐसे वचन सुनकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित हुए। तब तुरन्त ही उनकी भौंहों से एक मनुष्य उत्पन्न होकर आगे आ खड़ा हुआ। उसका शरीर अत्यन्त भयानक तथा वज्र के समान दृढ़ था। उसका सिंह का-सा स्वरूप, तीक्ष्ण जिह्वा, जलती हुई अग्नि के समान नेत्र, सब बाल खड़े हुए तथा इसी प्रकार अत्यन्त भयानक डीलडौल था। वह विष्णु जी के चौथे अवतार नृसिंह के समान जान पड़ता था। अस्तु, वह शिवजी की इच्छा जानकर राहु को खाने के लिए आगे बढ़ा। यह देखकर राहु भयभीत हो वहाँ से भाग चला, परन्तु शिवजी के उस गण ने उसे न जाने दिया और वहीं पकड़ लिया। यह देखकर राहु अत्यन्त कम्पित होकर शिवजी से बोला—''हे शिवजी ! आप मुझको ब्राह्मण जानकर मेरी इसके द्वारा रक्षा कीजिये। यह मुझको खाये ही डालता है। शिवजी ने राहु के ऐसे विनयपूर्ण वचन सुनकर, उस गण से उसे छुड़वा दिया। उस समय गण ने राहु को छोड़, शिवजी के पास जाकर यह विनय की—''हे प्रभो ! मैं बहुत भूखा हूँ। अस्तु, आप मेरे लिए कुछ भोजन बतला दीजिए। मैं भूख की आग से जला जाता हूँ।'' यह सुनकर शिवजी ने कहा—''यदि तुम इतने ही भूखे हो तो अपने हाथ एवं पाँव को खा डालो। गण ने शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

की आज्ञानुसार यही कार्य किया। उसने अपने सिर के अतिरिक्त सब अंग खा डाले।

हे नारद ! यह दशा देखकर शिवजी आश्चर्यचकित हुए। तब उन्होंने अत्यन्त प्रसन्न होकर गण से कहा—"हम तुम्हारी आज्ञा-पालन से प्रसन्न होकर तुम्हारा नाम कीर्तिमुख रखते हैं। अब तुम्हीं हमारे द्वारपाल होगे। जो व्यक्ति पहले तुम्हारी पूजा न कर लेगा, उसको हम स्वप्न में भी दर्शन नहीं देंगे।" "हे नारद ! उस दिन से कीर्तिमुख गण शिवजी के द्वार पर द्वारपाल के रूप में रहते हैं। कीर्तिमुख की पूजा किए बिना शिवजी की सब पूजा व्यर्थ हो जाती है। अस्तु, राहु जब कीर्तिमुख के हाथ से छूटकर भागा तो वह कैलाश पर्वत के एक गड्ढ़े में ऐसा गिरा, जिससे उसका अंग-भंग हो गया। तदुपरान्त राहु ने जलन्धर के समीप पहुँचकर सब हाल कह सुनाया।"

सत्रहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! दूत के यह वचन सुनकर जलन्धर अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा उसने दैत्यों को आज्ञा दी कि सब एकत्र होकर इसी समय शिवजी के कैलाश पर्वत पर आक्रमण करें। यह सुनकर समस्त सरदार एवं सेनाध्यक्ष अपने-अपने शस्त्र लिए, चतुरंगिणी सेना के साथ चल दिए। उस सेना में एक करोड़ दैत्य, पाँच सौ कबन्ध तथा सौ कुलधूम्र चल ; कालक, ध्रुव, मुरज और कालनेमि आदि को आज्ञा देकर जलन्धर स्वयं भी घर से जलता-भुनता हुआ निकला। उस समय उसकी पत्नी ने उसे बहुत समझाया तथा हाथ जोड़कर उसे मना करते हुए यह कहा कि हे स्वामी ! शिवजी से युद्ध करके अब तक कोई नहीं जीता है। देवताओं के सब से बड़े सहायक विष्णु जी तुम्हारे घर में ही हैं, अतः तुम वहाँ न जाओ ; परन्तु जलन्धर ने मृत्यु के वशीभूत होने से उसकी एक भी बात नहीं मानी और वह उसी प्रकार क्रोध से भरा हुआ चल दिया।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

हे नारद ! जब मृत्यु आती है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जो मनुष्य चलने के समय स्त्री, ब्राह्मण आदि का आदर नहीं करता, वह फिर लौटकर नहीं आता। अस्तु, सब के आगे शुक्र, फिर जलन्धर तथा उसके पीछे समस्त सेना चली। पहले तो जलन्धर को राहु दिखाई दिया, फिर मुकुट सिर से गिर गया। शुम्भ-निशुम्भ दोनों को सेनापति नियुक्त किया गया तथा कालनेमि भी जलन्धर की आज्ञा पाकर सेना सहित चला। इसी प्रकार और भी अनेक दैत्यवंशी राजा कैलाश पर्वत पर चले। जब जलन्धर सेना सहित नगर से कुछ दूर बाहर पहुँचा तब विष्णु जी ने देवताओं को बुलाकर यह कहा कि अब हमारे कष्ट दूर होने का समय आ गया है, इसलिए तुम सब गुप्त रूप से शिवजी के पास जाकर, जलन्धर के आक्रमण का समाचार कहो। विष्णु जी के उस आदेशानुसार देवता छिपे-छिपते शिवजी के पास पहुँचे तथा स्तुति करने के उपरान्त उन्होंने शिवजी से जलन्धर के आक्रमण का समाचार पूरा-पूरा कह सुनाया तथा जलन्धर के वध की इच्छा प्रकट की। शिवजी ने सब देवताओं के मुख से यह समाचार सुना तो हँसते हुए कहा—''हे देवताओ ! अब तुम सब लोग धैर्य धारण करो। तुम्हें कोई कष्ट न होगा।'' यह कह उन्होंने विष्णु को बुलाकर पूछा—''हे विष्णु जी ! तुमने जलन्धर को क्यों नहीं मारा तथा वैकुण्ठ छोड़कर उसके घर में वास क्यों किया?'' शिवजी के ऐसे वचन सुनकर विष्णु जी ने उत्तर दिया—''हे शिवजी जलन्धर बहुत बलवान् है, वह कोटि यत्नों से भी नहीं मर सकता। वह आपका अंश है, इसलिए उस पर किसी भी शस्त्र का प्रभाव नहीं होता। मैंने उसके साथ बहुत युद्ध किया, परन्तु वह किसी प्रकार भी न मारा। उसकी मृत्यु आप ही के द्वारा होगी। अस्तु, अब आप ही कृपा करके उसको मारें। आप आकाश से लेकर पृथ्वी तक के स्वामी तथा तीनों गुणों से पूर्ण हैं।'' यह सुनकर शिवजी बोले—''हे विष्णु ! जलन्धर हमारे अंश से उत्पन्न हुआ है, इसलिए हम उस पर त्रिशूल नहीं चला सकते तथा त्रिशूल के अतिरिक्त जो भी हमारे पास अस्त्र हैं, उनका जलन्धर पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। इसलिए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

हमने एक उपाय सोचा है कि तुम सब अपना-अपना तेज हमको देते जाओ। उस तेज से हम एक शस्त्र का निर्माण करेंगे और उसी शस्त्र द्वारा जलन्धर को जलाकर भस्म कर देंगे।'' यह सुनकर मैंने, विष्णु जी ने, इन्द्र ने तथा समस्त देवताओं ने शिवजी को अपना-अपना तेज दे दिया। हम सबका वह तेज एकत्र होकर अत्यन्त प्रज्वलित हुआ। तब शिवजी ने उसमें से एक शस्त्र बनाया। उसका नाम सुदर्शन चक्र रक्खा। वह चक्र कोटि सूर्यों के समान प्रकाशवान् एवं अग्नि के समान प्रज्वलित था। सुदर्शन चक्र के बनाने से जो तेज शेष रह गया, उससे शिवजी ने वज्र बनाया। यह देखकर सभी देवता अत्यन्त प्रसन्न हुए।

हे नारद ! इतने में ही जलन्धर कैलाश पर्वत के समीप पहुँच गया। उसने पर्वत की एक कन्दरा में सेना सहित डेरा डाल दिया। तब सब देवता उसे देखकर छिपे-छिपे अपने स्थानों को, जहाँ वे पहले वास करते थे, चले गए। शिवजी के गणों ने दैत्यों की सेना के आगमन के पूर्व ही शिवजी को समाचार दे दिया था कि दैत्य-सेना अब आना ही चाहती है। इसलिए शिवजी ने अपने नन्दी, गणपति एवं वीरभद्र को यह आज्ञा दी कि तुम अन्य गणों सहित जाकर दैत्यों से भली-भाँति युद्ध करो। शिवजी के गण यह आज्ञा पाकर वहाँ से चल दिए तथा पर्वत के नीचे उतर आए।''

अठारहवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! शिवजी के गण उनकी आज्ञा पाकर 'जय-शिव, जय-मृत्युञ्जय' कहते हुए प्रसन्नतापूर्वक गाते-बजाते हुए दैत्य सेना से लड़ने को चल दिए। वहाँ पहुँचकर दोनों ओर से भयंकर मार-काट शुरू हो गयी, जिससे पृथ्वी काँपने लगी। दोनों ओर से हर प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग किया गया। युद्ध स्थल अस्थि, माँस तथा रुधिर से पूर्ण हो गया। जो दैत्य गणों के हाथ मारे गए,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:15 AM

उनको शुक्र ने पुनः जीवित कर दिया। जब गणों ने दैत्यों की सेना का वध किया तो शुक्र जी ने उन्हें फिर जिला दिया। इसी प्रकार गणों ने अनेक बार दैत्यों का वध किया, परन्तु शुक्र ने फिर-फिर उनको जीवित कर दिया। निदान गणों ने कोई उपाय न देख, दुःखी होकर शिवजी के पास जा सब वृत्तान्त कह सुनाया और बोले कि अब हम दैत्यों से युद्ध न करेंगे, क्योंकि हम दैत्यों को मारने में असमर्थ हैं। हे शिवजी ! यह काम आप स्वयं ही करें। गणों के मुख से ऐसे वचन सुनकर शिवजी क्रोधित होकर बोले—"यह कार्य शुक्र मृत्युंजय-मन्त्र पाकर कर रहा है।" अस्तु, उसी समय शिवजी के मुख से कृत्यानाम की एक स्त्री प्रकट हुई। उसका स्वरूप अत्यन्त भयानक था। उसकी दाढ़ें बड़ी भयंकर, पर्वत के समान थीं। ऐसे स्वरूप से प्रकट होकर वह शिवजी की सेना के साथ युद्ध स्थान में आयी। वह महा भयंकर नाद करती हुई दैत्यों का भक्षण करने लगी। तब दैत्य उसके स्वरूप को देखकर तथा उसके पराक्रम से भयभीत होकर भागने लगे। इसके पश्चात् कृत्या शुक्र को अपने गुप्त अंग में दबाकर उड़ गयी तथा सबके देखते-देखते आँखों से ओझल हो गयी शुक्र को कृत्या द्वारा उड़ा ले जाने पर, दैत्य लोग बड़े भयभीत हुए और उनकी सेना में हाहाकर मच गया। उस समय वे इधर-उधर भागने लगे।

हे नारद ! तब शिवजी के गण प्रसन्न होकर, दैत्यों को चारों ओर से घेर कर, सिंह के समान गर्जना करने लगे। दैत्य भागकर चारों ओर फैल गये। दैत्यों की यह दशा देखकर शुम्भ-निशुम्भ तथा कालनेमि तीनों सेनापति अत्यन्त दृढ़ता के साथ गणों का सामना करने लगे। अन्त में, उन तीनों ने शिवजी के गणों को बहुत बुरी तरह से मार कर दुःखी कर दिया, जिससे वह हार मानकर वहाँ से भाग चले। इतने में गणपति, नन्दी, वीरभद्र आदि ने सब गणों को रोककर धैर्य देकर बुला लिया फिर दोनों सेनाओं में युद्ध छिड़ गया। कालनेमि तथा नन्दीगण, गणपति तथा शुम्भ और वीरभद्र तथा निशुम्भ परस्पर लड़ने लगे। वे सभी युद्ध भूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करने लगे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वीरभद्र ने निशुम्भ के हृदय में तीक्ष्ण बाण मारा, जिससे निशुम्भ धरती पर गिर पड़ा। वीरभद्र ने ज्योंही ये चाहा कि उसे सांग से मार डालें, इतने ही में शुम्भ ने उठकर वीरभद्र पर बड़े क्रोध से अपनी सांग का आक्रमण किया जिससे वीरभद्र घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। नन्दी ने कालनेमि के शरीर पर सात बाण मारे, जिनके लगने से उसके रथ के पहिए, घोड़े तथा सारथी कट-कट कर गिर गये। तब कालनेमि ने क्रोधित होकर नन्दी के धनुष को काट डाला। उस समय नन्दी ने धनुष फेंक कर त्रिशूल चलाया जिसके प्रहार से कालनेमि मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब उसे चेत हुआ तब उसने नन्दी को उठाकर पर्वत के ऊपर फेंक दिया। अब गणपति तथा शुम्भ लड़ने लगे। अब गणपति तो मूषक पर चढ़े और शुम्भ रथ पर सवार हुआ। वे दोनों इतने लड़े कि कोई भी युद्ध से विमुख न हुआ। अन्त में गणपति ने एक बाण शुम्भ के हृदय में मारा तथा तीन बाणों से उसके सारथी को पृथ्वी पर गिरा दिय। तब शुम्भ ने क्रोधित होकर गणपति पर साठ बाण छोड़े और गणपति के मूषक वाहन का सिर धड़ से अलग कर दिया। तब वे बे-वाहन पैदल ही युद्ध करने लगे। उन्होंने अपनी सांग उठाकर शुम्भ के ऊपर चलायी। शुम्भ सांग के लगने से पृथ्वी पर गिर पड़ा और गणपति पुनः मूषक को जीवित कर उस पर सवार हुए। इस प्रकार गणपति विजयी हुए। तब चारों ओर विजय के बाजे बजने लगे और सब गण अत्यन्त प्रसन्न हो जय-जयकार करने लगे।

हे नारद ! यह देखकर वृन्द नामक शुम्भ का पितामह अत्यंत क्रोधित होकर गणपति के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगा। तब गणेश जी तुरन्त दौड़कर वृन्द के पास जा पहुँचे। उनके साथ असंख्य भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, पिशाच, भैरवगण, वैताल, शाकिनी, डाकिनी, योगिनी आदि किल-किल शब्द के अर्थात् सिंह एवं हाथियों के समान नाद कर रहे थे। उन्होंने वृन्द तथा शुम्भ को सेना सहित विकल कर दिया। वीरभद्र की सेना ने दैत्यों को अत्यन्त दुःखी किया। उन्होंने अनेक दैत्यों को खाकर उनका रक्तपान भी किया। इतने में नन्दी भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वहाँ आ गए तथा उन्होंने बाणों की ऐसी वर्षा की, कि वे दैत्यों की ओर सर्प की भाँति चले। उन्होंने दैत्यों की बहुत-सी सेना नष्ट कर दी। कुछ दैत्य तो खा लिये गए, कुछ मारे गये, कुछ मूर्च्छित हुए, कुछ भाग गये तथा कुछ गिर पड़े।"

❀❀❀

उन्नीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! जलन्धर अपनी सेना की ऐसी दुरदशा देख, क्रोध में भरकर, रथ पर आरूढ़ हो, कटक सहित, गणों की ओर चल दिया, तब दैत्यों की सेना पुनः संभलकर युद्ध करने के लिए तैयार हुई। युद्ध के बाजे बजने लगे और दोनों सेनाओं में फिर घमासान युद्ध होने लगा। जलन्धर ने आते ही बाणों की वर्षा की तथा पाँच-पाँच बाण गणपति और नन्दी के तथा बीस बाण वीरभद्र के शरीर में मारकर सिंहनाद किया। उस समय वीरभद्र ने एक सांग जलन्धर पर ऐसी चलायी कि उसके लगने से जलन्धर मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। फिर उसने उठकर, क्रोधित हो वीरभद्र के ऊपर अपनी गदा का प्रहार किया, जिससे वीरभद्र व्याकुल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। गणपति ने क्रोधित होकर अपनी सांग द्वारा जलन्धर की गदा को काट डाला तथा तीन बाण जलन्धर के हृदय में मारे। फिर सात बाण चलाकर उसके रथ के घोड़े, ध्वजा, पताका तथा छत्र आदि को काट दिया। यह देखकर जलन्धर ने अपनी सांग द्वारा गणपति को घायल कर दिया तथा दूसरे रथ पर चढ़कर, वीरभद्र के पास जा पहुँचा और उनसे युद्ध करने लगा। तब वीरभद्र ने जलन्धर का धनुष काटकर, उसके मस्तक पर परिघ से प्रहार किया। उस प्रहार से जलन्धर पृथ्वी पर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद उसने सचेत होकर वीरभद्र के ऊपर परिघ से ऐसा प्रहार किया कि वीरभद्र मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। वीरभद्र की ऐसी दशा देखकर सब गण वहाँ से भागकर शिवजी के पास पहुँचे तथा उन्हें सब वृत्तान्त सुनाकर बोले—" हे शिवजी ! दैत्यों ने अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

भीषण मारकाट से हम सबको व्याकुल कर दिया है।'' शिवजी गणों द्वारा यह समाचार सुनकर अपने बैल पर चढ़े तथा युद्ध क्षेत्र में पहुँच कर, त्रिशूल लेकर दैत्यों की सेना पर आक्रमण करने लगे। उस समय शिवजी ने अपना डमरू बजा दिया। जब गणों ने शिवजी को आते देखा, तब वे सब अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा पुनः लौटकर युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो गये।

हे नारद ! उन गणों ने दैत्यों के साथ घोर युद्ध किया। शिवजी ने ऐसा भयंकर रूप धारण किया कि जिसको देखकर दैत्यों की सेना में हाहाकार मच गया और वह मैदान छोड़कर भागने लगी। दैत्याधिपति जलन्धर ने अपनी सेना की यह दुरदशा देखकर, शिवजी पर अनेक बाण छोड़े। शुम्भ, निशुम्भ, कालनेमि, हयमुख, असिलोमा, बलाहक, प्रचण्ड आदि सब दानव एक साथ शिवजी पर आक्रमण करके बाण-वर्षा करने लगे। परन्तु शिवजी ने उन बाणों के जाल को पल भर में काट डाला तथा अपने बाणों से आकाश को भर दिया। इसके पश्चात् शिवजी ने परशु द्वारा असिलोमा का सिर काट डाला। फिर बलाहक का वध करके, घर भर को पाव से बाँध लिया। हे नारद ! तदुपरान्त शिवजी ने अपना बैल दैत्यों की सेना में छोड़ दिया। उसने अपने सींगों से असंख्य दैत्यों को मार गिराया, जो दैत्य शेष रहे, वे भयभीत होकर भाग गए। जिस प्रकार सिंह के प्रहार से हाथी विकल होकर भाग जाता है, वही दशा उस समय दैत्यों की हुई। यह देखकर जलन्धर ने शुम्भ, निशुम्भ तथा कालनेमि को सम्बोधित करते हुए कहा—''देखो, जो संसार में उत्पन्न होते हैं, उनकी मृत्यु अवश्य होती है। मृत्यु से बचने का कोई भी उपाय नहीं है। ऐसी मृत्यु किसे भली न लगेगी, जिससे दोनों लोकों में यश एवं कीर्ति बढ़े? लोक में दो प्रकार की मृत्यु प्राप्त करने वाले सूर्य मंडल को भेद कर स्वर्ग को जाते हैं। उनमें एक योगी होता है तथा दूसरा योद्धा जो युद्ध में निर्भय होकर वीरतापूर्वक मारा जाता है। इसलिए अब तुम मृत्यु का भय त्यागकर भली-भाँति सामने डटकर युद्ध करो।'' यद्यपि जलन्धर ने ऐसी बातें कह-कहकर उन्हें बहुत

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समझाया, पर उनकी समझ में कुछ भी न आया। तब जलन्धर ने उनको धिक्कारते हुए कहा—"तुमने इस पृथ्वी पर जन्म लेकर व्यर्थ ही अपनी माता को कष्ट दिया ; क्या तुमको युद्ध भूमि से इस प्रकार भागना उचित है? क्या तुम में से कोई भी मृत्यु के पंजे से बचा रहेगा?"

❁❁❁

बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! उस समय जलन्धर के शब्द से पृथ्वी काँप उठी तथा समुद्र और पर्वत थरथराने लगे। जो दैत्य पहले युद्ध-भूमि से डरकर भाग गये थे, वे सब जलन्धर का यह रूप देखकर पुनः लौट आए। उस समय जलन्धर ने शिवजी से कहा—"हे शिवजी ! मुझे प्रतीत हुआ कि तुम कुछ बल रखते हो, क्योंकि तुमने मेरे साथ युद्ध करने की इच्छा की है।" यह कहकर उसने शिवजी के ऊपर एक भयानक बाण चलाया। उसे शिवजी ने बीच ही में काट डाला फिर शिवजी ने सुगमतापूर्वक एक बाण चलाकर जलन्धर के रथ, सारथी, घोड़े, धनुष आदि सबको नष्ट कर डाला। तब जलन्धर ने शिवजी को मारने के लिए अपना घूंसा ताना तथा एक बाण छिपकर शिवजी को मारा। शिवजी ने यह देखकर अपने बाण से उसे एक कोस फेंक दिया। उस समय जलन्धर ने सोचा कि शिवजी वास्तव में बहुत बलवान् हैं। मैं उनसे इस प्रकार युद्ध करके विजय प्राप्त नहीं कर सकूँगा। अतः मुझे कोई ऐसी माया करनी चाहिए जिससे शिवजी मोहित हो जाएँ। शिवजी को नाद बहुत प्रिय है। अस्तु, उसी के द्वारा उनको मोहित किया जा सकता है। यह विचारकर जलन्धर ने ऐसी माया फैलायी, जिससे गन्धर्व, अप्सरा, किन्नर आदि प्रकट होकर मनुष्यों के समान अनेक प्रकार नृत्य गान करने लगे। अतः शिवजी के मन में संगीत सुनने की इच्छा उत्पन्न हुई और वे उस आनन्ददायक नाद में मग्न हो गए। जैसा कि नियम है कि नाद सुनने से बुद्धि जाती रहती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM 93

है, वही बात उनके साथ भी हुई। वास्तव में शिवजी ही ने राग की महिमा को प्रस्तुत किया। यह बात वेद भी कहते हैं कि शिवजी नाद के अतिरिक्त और किसी से मोहित नहीं किये जा सकते। उस समय शिवजी के हाथों से सब शस्त्र गिर पड़े। उन्होंने उस तुरीयावस्था में कुछ न जाना। उस समय जलन्धर ने कामवश शिवजी के समान अपना स्वरूप बनाया, जिसके दस भुजा, पाँच मुख तथा तीन नेत्र थे। फिर उसने अपनी माया से एक बैल बनाया और उस पर चढ़कर तथा शिवजी के जो-जो मुख्य चिह्न थे उन सबको धारण कर ; शुम्भ-निशुम्भ को युद्ध स्थल में छोड़कर, स्वयं गिरिजा के पास जा पहुँचा। गिरिजा ने भी पहले तो लोक-रीति से उसको शिवजी जाना, परन्तु जब वे सखियों के बीच में से उठीं और यह जाना कि यह छल से शिवजी का स्वरूप बनाकर आया है, तब वे वहाँ से तुरन्त अन्तर्धान हो गयीं।

हे नारद ! यह देखकर जलन्धर लज्जित होकर पुनः युद्ध स्थल को लौट आया। उस समय गिरिजा ने विष्णु जी का ध्यान किया, जिससे विष्णु जी तुरन्त प्रकट हुए। गिरिजा ने उनसे जलन्धर का सब वृत्तान्त कहा तथा पतिव्रत धर्म की बहुत कुछ प्रशंसा की। वे बोलीं—"हे विष्णु जी ! जलन्धर की स्त्री बड़ी पतिव्रता है, उसी के धर्म से जलन्धर आज तक जीवित बचा हुआ है, क्योंकि पतिव्रत स्त्री विधवा नहीं हो सकती। इससे तुमको यह उचित है कि अब तुम जलन्धर पुरी में जाकर उसकी स्त्री से पतिव्रत धर्म को नष्ट करो। वृन्दा जो जलन्धर की स्त्री है, उसके साथ तुम छल करो।" यह सुनकर विष्णु जी तुरन्त जलन्धर पुरी को गए। उधर जलन्धर ने युद्ध स्थल में लौटकर जब अपनी माया को दूर किया तो शिवजी ने चैतन्य होकर पुनः युद्ध का स्मरण किया। हे नारद ! यह सब भई शिवजी की माया थी, क्योंकि संसार में जो शिवजी के भक्त हैं, उनका भी माया कुछ नहीं कर सकती, तब शिवजी पर उसका क्या प्रभाव हो सकता था? निदान शिवजी अत्यन्त क्रोधित होकर जलन्धर के ऊपर दौड़े। उस समय जलन्धर ने भी बाण-वर्षा करके अपने बाणों से शिवजी को छिपा दिया। तब शिवजी ने भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अपने बाणों से उसके बाणों को काटकर उसे बहुत दुःखी किया। जो दैत्य शिवजी के हाथों से मारे गए, वे सब मुक्त हो गये। उन दैत्यों का परम सौभाग्य था जो शिवजी के सम्मुख देखते हुए अपने प्राण त्यागते थे। हे नारद ! यह लीला जिस प्रकार हमने विष्णु जी से सुनी थी, उसी प्रकार तुम्हें कह सुनायी।''

❁❁❁

इक्कीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! गिरिजा की आज्ञा पाकर विष्णु जी जलन्धर पुरी में पहुँचे तथा यह सोचने लगे कि मैं किस प्रकार जलन्धर की पत्नी वृन्दा का पतिव्रत धर्म नष्ट करूँ। जब उन्होंने शिवजी का ध्यान किया तो उस ध्यान के करते ही विष्णु जी को एक उपाय सूझ गया। तब वे तपस्वी का रूप धारण कर, एक शिष्य को साथ लेकर वृन्दा के उपवन में जा पहुँचे। वृन्दा ने उसी रात को यह स्वप्न में देखा था कि मेरा पति जलन्धर युद्ध में मारा गया है तथा यह भी देखा था कि मेरा पति जलन्धर तेल लगाए हुए, भैंसे पर सवार, नंगा तथा सिर के अशुभ बाल बनवाये, काले पुष्पों की माला पहने, राक्षसों से घिरा हुआ, यमपुरी को चला जा रहा है। जब वह यह स्वप्न देखकर उठी तो उसने सूर्य को उदय होते समय राहु-ग्रस्त तथा प्रकाशहीन देखा। ऐसे अपशकुनों को देखकर वह एकाएक रोने, कलपने तथा घबराहट से इधर-उधर घुमने लगी। वह अपनी दो सखियों को साथ लेकर जलन्धर के उद्यान को गयी, परन्तु उसे वहाँ फल-फूल देखकर सन्तोष न हुआ। उसे वहाँ दो राक्षस ऐसे दिखाई दिए जो अत्यन्त भयानक थे। उनको देखकर रानी वृन्दा वहाँ से भाग आयी। आगे जाकर उसने शिष्यों सहित एक तपस्वी को देखा, जो मौन साधे हुए बैठा था। वृन्दा उसी समय दौड़कर उस तपस्वी के पास गयी तथा अपने हाथ उसकी गर्दन में डालकर लिपट गयी और बोली—''हे तपस्वी ! आप मेरी रक्षा करो।'' उस समय तपस्वी ने अपने दोनों नेत्र खोलकर बड़ा क्रोध

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

किया तथा हुँकार दी जिससे वे दोनों राक्षस वहाँ से भाग गए। यह देखकर जलन्धर की स्त्री अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा प्रणाम करके उनके तपोवन की प्रशंसा करने लगी। फिर वह तपस्वी से इस प्रकार बोली—"हे प्रभो ! आप मेरे पति का, जो शिवजी से युद्ध करने के लिए गये हैं, वृत्तान्त कहिये।"

हे नारद ! यह सुनकर तपस्वी रूपधारी विष्णु जी ने हँसकर ऊपर की ओर देखा, जिससे तुरन्त ही दो बन्दर वहाँ आ उपस्थित हुए तथा उन्हें प्रणाम करके बैठ गए। फिर वे दोनों बन्दर गुप्त हो गए। तदुपरान्त एक क्षण भी नहीं बीता कि वे दोनों बन्दर पुनः पहले की भाँति आकर बैठ गए। इस बार उनके हाथ में जलन्धर का शीश एवं धड़ था। उसे उन्होंने योगी के सम्मुख रख दिया तथा स्वयं दुःखी होकर बैठे रहे। उस समय वृन्दा अपने पति का सिर देखकर व्याकुल हो, पृथ्वी पर गिर पड़ी। तब तपस्वी ने पानी आदि छिड़क कर वृन्दा को सचेत किया। वृन्दा पुनः रो-रोकर अपने पति का सिर अपने सिर से लगाकर व्यथित होने लगी बोली—"हे नाथ ! मैंने तो आपसे शिवजी के साथ युद्ध करने के लिए पहले ही मना किया था, परन्तु आपने मेरी बात नहीं मानी।" इसी प्रकार वह अनेक बातें कह-कहकर रोती रही। फिर तपस्वी से बोली—"हे महाराज ! आप मेरे ऊपर कृपा करके मेरे पति को जीवित कर दीजिए। मैं आपके प्रभाव को देख चुकी हूँ इसलिए मुझे विश्वास है कि आप इस योग्य हैं कि मेरे पति को जीवित कर देंगे।" यह सुनकर मुनिवेषधारी विष्णु जी ने कहा—"हे वृन्दा ! जो मनुष्य शिवजी की क्रोधाग्नि से मृत्यु को प्राप्त हुआ है, उसे हम जीवित नहीं कर सकते, परन्तु तुम्हारे दुःख को देखकर हम इसको जीवित करेंगे।" यह कहकर उन्होंने सिर को धड़ से जोड़ दिया तथा स्वयं अन्तर्धान होकर उस शरीर में प्रवेश कर गए और जलन्धर के समान उठकर बैठ गए। तदुपरान्त उन्होंने वृन्दा को गले लगाया, परन्तु वृन्दा यह सब कुछ न समझ सकी और उसने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उनके साथ सहवास करके अपना धर्म नष्ट कर दिया। जब वह उत्तम रीति से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

विहार कर चुकी तब विष्णु जी ने अपना शरीर प्रकट कर दिया, उसे देखकर वृन्दा ने उन्हें पहचान लिया। तब वह अपने कृत्य पर बहुत दु:खी हुई। उसे विष्णु जी के ऐसे छल पर बहुत क्रोध आया। वह बोली—"हे विष्णु ! तुमने वेद के विरुद्ध मेरे धर्म को नष्ट किया है। तुम मुनीश्वरों के समान स्वरूप धारण किये हुए बड़े अधर्मी हो।" यह कहकर वृन्दा ने विष्णु जी को यह शाप दिया कि "जो राक्षस तुमने मुझे दिखाये थे वे दोनों बड़े शक्तिशाली होकर तुम्हारी स्त्री को भगा ले जायेंगे, उस समय तुम दु:खी होकर वन-वन में फिरोगे और तुम्हें हर प्रकार के कष्ट प्राप्त होंगे तथा जो बन्दर तुमने मुझको दिखाए, वही तुम्हारे सहायक होंगे।" यह कहकर वृन्दा बहुत रोई तथा चिता बनाकर अपने पति के साथ सती होने की इच्छा करने लगी। यद्यपि विष्णु जी ने उसे बहुत समझाया, परन्तु उसने पतिव्रत धर्म दृढ़ करके कुछ नहीं माना। तदुपरान्त वह शिव-गिरिजा का ध्यान धरकर, सती हो गयी और उसका तेज सबके देखते-देखते गिरिजा के शरीर में प्रवेश कर गया।

हे नारद ! विष्णु जी यह दशा देखकर बारम्बार पछताते हुए, उसकी सुन्दरता के स्मरण में दु:खी हुए तथा उसकी चिता की भस्म को अपने शरीर में मलकर, उसी स्थान पर वास करने लगे। उनकी यह दशा देखकर देवता तथा सिद्ध उनके निकट जा पहुँचे और विष्णु जी को बड़े-बड़े इतिहास तथा दृष्टान्त सुनाकर समझाने लगे कि "आप तो स्वयं हर समय धर्म का पालन करने वाले रहे हैं। अब आप यहाँ से चलिये तथा अपने वैकुण्ठ लोक में विहार कीजिये। जो पाप आपसे दुर्भाग्यवश हुआ है, वह सब शिवजी की कृपा से नष्ट हो जाएगा। आप किसी प्रकार का दु:ख मत कीजिये तथा यहाँ से अपने स्थान को चलिये। आप हमें इन शब्दों के लिए क्षमा करें, क्योंकि हम तुच्छ आपको समझा रहे हैं।" उन लोगों के इस प्रकार समझाने पर भी विष्णु जी ने किसी को कोई उत्तर नहीं दिया तथा उसी प्रकार शोक में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

बैठे रहे। हे नारद ! शिवजी की माया बड़ी विचित्र है और सब उसी के आधीन रहते हैं।''

❁❁❁

बाईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उधर युद्ध क्षेत्र में शिवजी को चेत हुआ, तब देवता उन्हें देखकर बहुत आनन्दित हुए। उस समय शिवजी की वीरता एवं पराक्रम को देखकर जलन्धर ने यह विचार किया कि अब मुझे माया करनी चाहिए, जिससे मैं शिवरानी को प्राप्त करने में सफल हो सकूँ। यह विचार कर उसने अपनी माया से एक कृत्रिम गिरिजा बनायी तथा उसको अपने रथ में बैठाकर शिवजी के सम्मुख ले आया। शुम्भ-निशुम्भ दोनों भाई उसे मारते जाते थे तथा वह गिरिजा रोती हुई 'मेरी रक्षा करो' आदि कहती थी। उस समय जलन्धर ने उच्च स्वर से कहा—''हे सदाशिव ! तुम अपनी स्त्री को देखो यदि तुम्हें अपनी स्त्री बहुत प्रिय है तो समझ लो कि अब उसको मैं पकड़ लाया हूँ तथा उसकी ऐसी दुरदशा कर रहा हूँ। क्या तुमको नहीं दिखाई देता? तुमको सहस्त्रों धिक्कार है, जो तुम अपने को अब भी बड़ा समझते हो?'' शिवजी तो जलन्धर के यह वचन सुनकर तथा माया की गिरिजा को देखकर अत्यन्त दुःखी हुए और मौन साधकर बुद्धि को भूल बैठे। तब शिवजी ने भी लीला करके अपने को ऐसा शोकाकुल प्रदर्शित किया कि जलन्धर ने अपने धनुष को कानों तक खींचकर तीन बाण—एक शिवजी के सिर में, दूसरा वक्ष में तथा तीसरा उदर में मारे। उस समय शिवजी जलन्धर की माया को जानकर भयंकर रूप धारण कर अग्नि के समान प्रकट हुए। शुम्भ तथा निशुम्भ युद्ध से विमुख होकर भागे। जलन्धर की सारी माया उसी समय नष्ट हो गयी। तब शिवजी ने शुम्भ-निशुम्भ को यह शाप दिया कि तुमने छल करके गिरिजा को दुःख पहुँचाया है तथा युद्ध से मुख मोड़कर भागे जा रहे हो, इसलिए तुम्हारा धर्म नष्ट हो गया है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM 93

हे नारद ! जलन्धर ने शिवजी का यह रूप देखकर अत्यन्त क्रोधित हो, बाणों की वर्षा कर, शिवजी को ढँक दिया। यह देखकर शिवजी ने क्रोधित हो, अपने बाणों द्वारा जलन्धर के बाणों को काट डाला। इतने में जलन्धर ने एक परिघ बैल को मारा, जिसके कारण बैल धर्म को भूलकर, युद्ध क्षेत्र से भाग गया। यद्यपि शिवजी ने उसको बहुत रोका, पर वह युद्ध स्थल में न ठहर सका। यह देखकर शिवजी अत्यन्त क्रोधित हो, महाभयंकर हो गये। तब उन्होंने करोड़ों सूर्य के समान चमकते हुए सुदर्शन चक्र को अपने हाथ में उठा लिया और उसे जलन्धर के ऊपर छोड़ दिया। उस चक्र का तेज दसों दिशाओं में फैल गया। सम्पूर्ण पृथ्वी एवं आकाश उसके तेज से जलने लगे। चक्र ने जाकर जलन्धर का सिर धड़ से अलग कर दिया। उस समय बड़ा भारी शब्द हुआ। पृथ्वी थरथर काँपने लगी तथा पर्वत जलने लगे। जिस समय जलन्धर का तेज शिवजी के शरीर में प्रविष्ट हुआ, उस समय चारों ओर से जय-जय का नाद हुआ। हे नारद ! वे लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं ; जिनकी ऐसी दशा होती है, क्योंकि देवता, मुनि आदि बड़े-बड़े उपाय करके भी शिवजी को इतना प्रसन्न नहीं कर सकते और न इस गति को ही प्राप्त कर सकते हैं। उस समय मैं, मुनि तथा देवता आदि शिवजी की अत्यन्त प्रशंसा करने लगे।

हम ने कहा—"हे शिवजी ! आप हर प्रकार से भक्तों के दुःख दूर करने वाले हैं। आपको मन, वाणी तथा वेद आदि भी नहीं प्राप्त कर सके। आपके एक निमेष में करोड़ों इन्द्र तथा विष्णु जी बीत जाते हैं। आप किसी से बनाये नहीं गये, अपितु परब्रह्म हैं। आपने यदुवंशी को मुक्ति प्रदान की तथा उसकी पत्नी कलावती ने भी आपकी भक्ति द्वारा मुक्ति प्राप्त की। आपने दमयन्ती को मोक्षदान दिया तथा सौमुनि के पुत्र को श्रेष्ठ गति प्रदान की है। राजा तिमिरधन को आपने अपनाकर निरन्तर सात जन्मों तक आनन्दित किया। आपने चन्द्सेन का मान रखा तथा श्रीकर गोप को अपनी शरण में लेकर, अपना भक्त बनाया और उसे इतना द्रव्य प्रदान किया, जो देवताओं को भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

उपलब्ध नहीं होता है। आपही ने सत्यरथ के कष्टों को दूर कर उसे आनन्दित किया तथा धर्म गुप्त आपका ही व्रत करके दरिद्रता से मुक्त हो गये। आपही ने चित्रधर्म के दुःखों को दूर किया तथा उसकी लड़की के डूबते हुए पति राजा चन्द्रांगद के जीवन की रक्षा कर, बहुत सुख पहुँचाया। आपके बल से ही तक्षक को किसी प्रकार की हानि एवं भय नहीं होने पाया। आपने ही मद्रदेश के ब्राह्मण को मोक्ष प्रदान कर, उसकी स्त्री चंचला का उद्धार किया तथा आपही ने भद्रामुख गिरि के कष्टों को दूर किया। आपने पिंगला की इच्छानुसार उसको धन आनन्द एवं सुख प्रदान किया और अपने भक्त भद्रामुख की इच्छा पूर्ण की। आपने ऋषभ को हर प्रकार से अपने में ही लीन कर लिया और आपकी सेवा द्वारा ही कामदेव शुभगति को प्राप्त हुआ।

"हे सदाशिव जी ! आपने शबरी एवं शूकर को उत्तम गति प्रदान करके भक्ति का माहात्म्य प्रकट किया तथा भद्रसेन के पुत्र सुधर्मा एवं मित्र के पुत्र तारक को उत्तम गति देकर रुद्राक्ष की बड़ाई प्रकट की। आपही ने गंगा को, जिसका नाम महानन्दा था, तार दिया तथा आपकी भक्ति से सुश्रुमान् अधिक काल तक जीवित रहा। आपने शारदा के पति को जीवित कर, उसके सौभाग्य को स्थिर रखा तथा बन्दिक नामक पापी ब्राह्मण को उत्तम गति आपने ही प्रदान की। उसकी स्त्री बीजुका को भी जो पुंश्चली थी, मुक्ति प्रदान की। आपही ने दक्ष के यज्ञ को विध्वन्स कर, उसके गर्व को चूर किया तथा काम को भस्म कर, शिवरानी का गर्व दूर किया। आपने बालक का रूप धारणकर तारक दैत्य को मार डाला तथा गणपति को अपना बल देकर, समस्त गणों से प्रबल कर दिया। आपने ही त्रिशूल से उनका सिर काटकर पुनः जीवित कर दिया था। दैत्यों को देवताओं सहित जलते हुए देखकर आपने हलाहल विष का पान कर लिया था। आपने पहले त्रिशूल द्वारा अन्धक के सिर को काट डाला, फिर उस पर कृपा करके, अपने गणों में सम्मिलित कर लिया। आपने विष्णु जी एवं ब्रह्मा के मोह को दूर कर मन्त्र शास्त्र को कील डाला तथा नृसिंह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:16 AM

अवतार के गर्व का नाशकर शरभ का अवतार ग्रहण किया। आपने अत्रि के पुत्र होकर कामरूप का वध किया तथा हनुमान का स्वरूप धारणकर, राम-लक्ष्मण को दुःखों से मुक्त कर दिया। आप तीनों गुणों से परे तथा निर्गुण हैं। आपकी महिमा का वर्णन कहाँ तक किया जाए?''

हे नारद ! इस प्रकार सब देवताओं ने शिवजी की स्तुति की। जो कोई इस स्तुति को सुनेगा अथवा दूसरों को सुनाएगा, वह दोनों लोकों में प्रसन्न होकर आनन्द प्राप्त करेगा। उसे किसी प्रकार का कष्ट न होगा तथा अन्त में शिवजी के लोक को प्राप्त करेगा।''

तेईसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! देवताओं ने इस प्रकार स्तुति कर, शिवजी से विनती की—''हे शिवजी ! आपने जलन्धर को नष्ट करके हम लोगों के कष्टों को दूर करके अभयदान दिया है अब और कोई कंटक नहीं है ; परन्तु अचानक ही एक और दुःख हम लोगों को हुआ है अर्थात् विष्णु जी उस स्थान पर, जहाँ जलन्धर की स्त्री वृन्दा सती हो गयी है, भस्म लगाए लोट रहे हैं। आप ही कोई ऐसा उपाय कीजिए, जिससे विष्णु जी अपने हठ को छोड़कर पुनः पुराना मार्ग ग्रहण करें। शिवजी ने हँसते हुए यह कहा—''हे देवताओ ! यह सब हमारी माया का ही परिणाम है। विष्णु जी हमको अत्यन्त प्रिय हैं। इसलिए हमने इस लीला द्वारा उनके अहंकार को दूर कर दिया है। अब हम तुमको जो उपाय बताते हैं, वह तुम करो, उससे विष्णु जी का मोह दूर हो जाएगा। तुम सब लोग देवी की शरण में जाकर अपना दुःख सुनाओ, वे तुम्हारे सब कार्य सिद्ध करेंगी और विष्णु जी पुनः अपने मुख्य स्वरूप पर आ जायेंगे।''

हे नारद ! तब शिवजी के बताए हुए उपाय के अनुसार सब देवता गिरिजा की स्तुति करने लगे। वे बोले—''हे मातेश्वरी ! हम आपकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शरण में आए हैं। आप हमें इस दुःख से छुटकारा दिलाइये।'' देवता इस प्रकार स्तुति कर ही रहे थे कि उसी समय आकाश में एक अग्निकुण्ड दिखाई दिया तथा उस अग्निकुण्ड से यह शब्द निकला कि हे देवताओ ! हमने तीन रूपों से, अलग-अलग तीनों गुणों से अलंकृत होकर संसार में अवतार लिया है। वह रूप—एक गिरिजा, दूसरी—लक्ष्मी तथा तीसरी—सरस्वती का है। इसलिए हे देवताओ ! तुम हमारे इन तीनों स्वरूपों की शरण में जाओ, तुम्हारा मनोरथ सफल होगा। यह सुनकर देवता पुनः स्तुति करने लगे। उस स्तुति के प्रत्येक श्लोक में 'जय-जय' शब्द था। तब देवताओं की उस स्तुति से प्रसन्न होकर तीनों देवियाँ प्रकट हुईं। फिर उन्होंने तीन बीज देकर यह कहा—''हे देवताओ ! जहाँ पर विष्णु जी बैठे हैं, वहीं तुम इन बीजों को बो दो। इस प्रकार तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।'' देवियों के ऐसे वचन सुनकर देवता उन बीजों को लेकर वहाँ जा पहुँचे, जहाँ विष्णु जी बैठे हुए थे। उन्होंने उन बीजों को वहाँ बो दिया। उनसे तीन प्रकार की वनस्पति उपजीं। उनका नाम धात्री, मालती तथा तुलसी हुआ। हे नारद ! धात्री मेरी स्त्री का नाम है, अतः उससे धात्री, लक्ष्मी से मालती तथा गिरिजा से तुलसी की उत्पत्ति हुई। वे तीनों वनस्पतियाँ रज, सत्, तम् इन तीनों गुणों को धारण किए स्त्रियों के समान प्रकट होकर, वृन्दा से भी अधिक सुन्दर रूप रख, विष्णु जी के सम्मुख जा खड़ी हुईं। विष्णु जी उनको देखकर आश्चर्यचकित हुए।

हे नारद ! विष्णु जी को इस प्रकार कामवश होते देखकर धात्री तथा तुलसी ने तिरछी चितवन से विष्णु जी की ओर देखा। मालती उनकी यह दृष्टि सौतिया डाह से न सहकर अत्यन्त दुःखी हुई। इसीलिए वह शिवजी पर नहीं चढ़ायी जाती। अस्तु, विष्णु जी धात्री तथा तुलसी पर मोहित होकर, उन्हें अपने साथ लिए हुए वैकुण्ठ में लौट आये। वहाँ आकर उनका मोह दूर हो गया। हे नारद ! जो मनुष्य जलन्धर के वध की इस कथा का पाठ करता है अथवा सुनता है, वह शिवलोक में स्थान प्राप्त करता है।''

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

चौबीसवाँ अध्याय

सूत जी बोले कि—"हे ऋषियो ! इस कथा के सुनने के पश्चात् नारद जी ने ब्रह्मा जी से कहा—"हे पिता ! अब आप मुझे उस सुदर्शन चक्र के विषय में बताइये, जो विष्णु जी का प्रसिद्ध शस्त्र है। मैं नहीं जानता कि यह वही सुदर्शन चक्र है जो शिवजी ने सब देवताओं से तेज लेकर जलन्धर के वध के लिए बनाया था अथवा कोई दूसरा है।" नारद जी के ऐसे वचन सुनकर ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! सुदर्शन चक्र एक ही है, दूसरा नहीं। जब दैत्य अत्यन्त बल एवं द्रव्य प्राप्त कर देवताओं को दुःख पहुँचाने लगे तो विष्णु जी ने शिवजी की सेवा कर, उनसे सुदर्शन चक्र प्राप्त कर लिया। तब से वे उसी के द्वारा सब दैत्यों का वध करते हैं। कल्पभेद से शिव-चरित्र, लीला वर्णन, व्याख्यान, कथा तथा इतिहास में बहुत अन्तर है ; परन्तु बुद्धिमान् व्यक्ति को चाहिए कि उसके हृदय में जो सन्देह उत्पन्न हो उसे पूछ ले, जिससे वह सत्य मार्ग से न भटक जाए। अस्तु, जलन्धर के वध के पश्चात् दिति के लड़के दैत्य बहुत बली होकर उपद्रव मचाने लगे, जिससे संसार में मनुष्यों को बहुत दुःख प्राप्त हुआ। तप, योग, यज्ञ, देवताओं की पूजा, ध्यान वर्णाश्रम तथा सब धर्मों में विघ्न पड़ने लगे। तब सब देवता तथा मुनि दुःखी होकर मेरे पास आये। उन्होंने मेरी स्तुति कर अपने कष्टों का वर्णन किया। तब मैं उन सबको लेकर विष्णु जी के पास गया और उनकी स्तुति कर यह विनय की कि अब दानव तथा दैत्य बहुत दुःख पहुँचा रहे हैं, सो हम सब आपकी शरण में आये हैं। हमारी यह प्रार्थना सुनकर विष्णु जी ने कहा—"हे देवताओ ! तुम सब लोग अपने-अपने घर जाओ, हम स्वयं दैत्यों से युद्ध करेंगे।" यह कहकर वे दैत्यों के साथ युद्ध करने लगे परन्तु दैत्यों पर विजय प्राप्त न कर सके ; क्योंकि दैत्य महाबली थे। यह देखकर विष्णु जी ने सोचा कि शिवजी की सहायता के बिना हम दैत्यों पर विजय प्राप्त न कर पायेंगे। यह विचार कर विष्णु जी तुरन्त ही अन्तर्धान हो गए तथा कैलाश पर्वत के

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

निकट तपस्या करने के लिए बैठ गये। उन्होंने एक कुण्ड खोदकर उसमें एक अग्नि भरी तथा वहीं बैठकर कठिन तप करने लगे।

हे नारद ! इस प्रकार विष्णु जी ने पार्थिव पूजन, मन्त्र एवं ध्यान आदि से शिवजी का पूजन किया, परन्तु शिवजी प्रसन्न न हुए। यह देखकर विष्णु जी ने सोचा अब कि हम किस उपाय से शिवजी को प्रसन्न करें? अन्त में उन्हें यह विश्वास हुआ कि शिव सहस्त्र नाम का जप करने से ही शिवजी प्रसन्न होंगे। यह निश्चय कर, वे शिवजी के एक सहस्त्र नामों का जप करने लगे तथा कमल पुष्प चढ़ाने लगे। शिवजी ने परीक्षा के लिए सहस्त्र पुष्पों में से एक कमल का पुष्प अलक्षित कर दिया। अन्त में पूजा करते-करते जब एक फूल कम हुआ तो उनको बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि उस समय कमल-पुष्प प्राप्त होने की कोई आशा न थी। साथ ही पुष्प के बिना पूजन में भी अन्तर पड़ता था। इसी चिन्ता में जब उन्होंने शिवजी का ध्यान किया तो ऐसा ज्ञान हुआ कि उनके नेत्र भी कमल-पुष्प से किसी प्रकार कम नहीं हैं। अतः उन्होंने तुरन्त ही अपने एक नेत्र को निकालकर, प्रसन्नतापूर्वक शिवजी को अर्पण कर दिया। यह देखकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर प्रकट हुए। उन्होंने विष्णु जी को दर्शन दिया तथा आम्रडितम् मन्त्र का उच्चारण करते हुए कृपा दृष्टि से देखा। उस समय विष्णु जी ने शिवजो को प्रणाम किया। तब शिवजी मुस्कुराते हुए बोले—"हे विष्णु जी ! तुम्हारी इच्छा जो हो वह माँग लो।" तब शिवजी के आदेशानुसार विष्णु जी ने अत्यन्त पवित्र स्तुति करते हुए यह प्रार्थना की—"हे सदाशिव जी ! हम दैत्यों से पराजित हो गए हैं और उन पर किसी प्रकार भी विजय प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए आप कोई ऐसा यत्न कीजिये, जिससे वे मारे जायें।"

हे नारद ! यह सुनकर शिवजी ने कृपा कर, विष्णु जी को अपना सुदर्शन चक्र दिया और यह कहा—"हे विष्णु जी ! हमारे इस समय के रूप का ध्यान कर इस सहस्त्र नाम तथा सुदर्शन चक्र से, जो हम तुमको प्रदान करते हैं, तुम शत्रुओं एवं दैत्यों को मारकर, उन पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विजय प्राप्त कर लोगे। तुम्हें तीनों लोकों में कोई भी नहीं जीत सकेगा, परन्तु सुदर्शन चक्र का छोटे-छोटे कार्यों में प्रयोग मत करना। ब्राह्मणों के अतिरिक्त वह सबको जलाकर भस्म कर देगा।'' शिवजी यह कहकर अन्तर्धान हो गए तथा विष्णु जी सुदर्शन चक्र को लेकर प्रसन्नतापूर्वक लौट आये। वे दिन-रात सहस्त्र नाम का जप करते तथा अपने भक्तों को उसी की शिक्षा देते रहते थे। अब भी जो कोई शिव सहस्त्र नाम तथा विष्णु स्तुति का पाठ करता है, उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं। उसके शत्रुओं का विनाश होता है तथा वह दोनों लोकों में सुखी रहता है।''

❂❂❂

पच्चीसवाँ अध्याय

नारद जी बोले—''हे ब्रह्मा जी ! अब आप मुझे शिवजी के उन चरित्रों के विषय में बताइए, जिसमें उन्होंने दैत्यों को नष्ट किया।'' तब ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें शंखचूड़ के मारने का वृत्तान्त बताता हूँ। शिवजी ने जिस उपाय से शंखचूड़ को मारा, उसको सुनने से शिव-भक्ति अधिक उत्पन्न होती है। सबसे पहले मेरे पुत्र मरीचि से कश्यप उत्पन्न हुआ। उसको मेरे पुत्र दक्ष प्रजापति ने अपनी तेरह पुत्रियाँ ब्याह दीं, जिससे बहुत सन्तानें उत्पन्न हुईं। मैं तुम्हारे समक्ष उनमें से केवल एक मनुष्य का इतिहास सुनाता हूँ जो भक्ति की वृद्धि करता है तथा इच्छित फल को देना वाला है। कश्यप की पुत्री अत्यन्त सुन्दर एवं पतिव्रता थी। उसके चार पुत्र उत्पन्न हुए, जो दैत्य तथा महाशक्तिशाली थे। उनमें से एक पुत्र विप्रचिति बहुत ही वीर एवं बलवान था। उनका एक पुत्र दम्भ था जो विष्णु जी का परम भक्त एवं सेवक था। उसके कोई पुत्र उत्पन्न न होने से, वह अपने बड़ों की इच्छा एवं विष्णु जी की आज्ञानुसार पुष्कर में तप करने चला गया तथा एक लाख वर्षों तक इस हेतु कठिन तपस्या करता रहा, जिससे उसके कोई पुत्र उत्पन्न हो। विष्णु जी ने उसकी ऐसी आराधना देखकर दर्शन दिया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

तथा प्रसन्न होकर यह कहा कि तू हमसे कोई वरदान माँग ले। तब उसने कहा—"हे विष्णु जी ! मैं ऐसा पुत्र चाहता हूँ जो महावीर हो और मेरे आधीन हो। वह सारे संसार पर विजय प्राप्त करे तथा बहुत बुद्धिमान् हो।" विष्णु जी यह प्रार्थना स्वीकार कर उसे वरदान देकर अन्तर्धान हो गए। तब दम्भासुर अपने घर लौट आया तथा उसने सब हाल अपनी पत्नी से कहा सुनाया। पत्नी उसे सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई। उसने भिक्षुकों को बहुत दान दिया। थोड़े दिनों बाद वह गर्भवती हो गयी।

हे नारद ! सुदामा नामक कृष्ण जी एक भक्त, जो राधा जी के शाप से वैकुण्ठ अर्थात् गो-लोक में था, उसके गर्भ में आया। जब नौ-दस महीने व्यतीत हुए, तब शुभ-दिन एवं शुभ-नक्षत्र में उनका जन्म हुआ। उस समय दम्भासुर ने बड़ी धूमधाम से जात-कर्म करके अपने भाई-बन्धुओं की अनेक प्रकार से सेवा की और आनन्द प्राप्त किया। उसने अपने लड़के का नाम शंखचूड़ रखा। शंखचूड़ सर्वगुण-सम्पन्न तथा सब विद्याओं में पारंगत था। वह अपने माता-पिता को हर प्रकार से सुखी रखने लगा। तदुपरान्त वह जैगीषव्य से उपदेश लेकर, तपस्या करने वन में गया तथा मेरे पाठ-पूजन में ऐसा लीन रहा कि उसे देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इसलिए मैं उसे वरदान देने को प्रकट हुआ। उस समय शंखचूड़ ने मुझसे यह वरदान माँगा कि मैं देवताओं से कभी पराजित न होऊँ तथा तीनों लोकों में विजय प्राप्त कर, महावीर हो रहूँ। मैंने उसको मुँह माँगा वरदान देकर कृष्ण-कवच प्रदान किया। फिर उसे यह आज्ञा दी कि तुम बदरिकाश्रम में जाकर धर्मध्वज की पुत्री तुलसी से, जो तप कर रही है, अपना विवाह करो। यह वरदान देकर, मैं वहाँ से अन्तर्धान हो गया। शंखचूड़ ने कृष्ण कवच को सिद्ध कर अपने कंठ पर बाँध लिया तथा उस स्थान पर अर्थात् बदरिकाश्रम में, जहाँ तुलसी तपस्या करती थी, जा पहुँचा। वह तुलसी की सुन्दरता को देखकर मोहित हो गया तथा उससे बोला—"हे सुन्दरी ! तुम कौन हो? तुम किसकी कन्या हो और किसलिए ऐसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

तप कर रही हो? मैं तुम्हारा सेवक हूँ, इसलिए मुझसे सब बातें कहो।"
यह सुनकर तुलसी ने कहा—"मैं धर्मध्वज की पुत्री हूँ तथा तप करने के लिए यहाँ बैठी हूँ। तुम इस प्रकार मेरी परीक्षा लेने वाले कौन हो?"
यह सुनकर शंखचूड़ ने कहा—"हे सुन्दरी ! संसार में दो प्रकार के स्त्री-पुरुष होते हैं। एक तो बुरे तथा कामी, दूसरे भले और तपस्वी। मैं कामी और पापी नहीं हूँ, उसी प्रकार तुम भी इनसे रहित हो। मुझे यहाँ ब्रह्मा जी ने भेजा है। मैं तुम्हारे साथ गान्धर्व-विवाह करूँगा। मेरा नाम शंखचूड़ है, मैं तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने वाला तथा दम्भासुर का पुत्र हूँ।"

हे नारद ! शंखचूड़ के ऐसे वचन सुनकर तुलसी ने कहा—"तुम बहुत भले एवं लोभ तथा काम से रहित हो। जो मनुष्य स्त्री के आधीन नहीं, वह बहुत भाग्यवान् है ; परन्तु जो मनुष्य स्त्री के वश में है, उससे बढ़कर संसार में कोई बुरा नहीं है। समस्त देवता, मुनि एवं पितर आदि स्त्री से घृणा करते हैं। स्त्रियों द्वारा दिये हुए पिण्ड पितरों को नहीं पहुँचते तथा उनके चढ़ाये हुए पुष्प देवता आदि स्वीकार नहीं करते हैं। जिसका हृदय स्त्री के आधीन है, उसका पूजा पाठ सब कुछ मिथ्या है और उसका जन्म भी मिथ्या है।"

हे नारद ! इस प्रकार उन दोनों में बातें हो ही रही थीं कि मैं उस स्थान पर जा पहुँचा तथा शंखचूड़ से बोला—"हे शंखचूड़ ! तुम दोनों इस प्रकार वार्तालाप क्यों करते हो, शीघ्र ही गान्धर्व-विवाह क्यों नहीं करते? तुम दोनों एक ही वर्ण के हो।" यह कहकर मैंने तुलसी को उसके कुल एवं जप-तप का हाल कहकर शंखचूड़ से विवाह करने की आज्ञा दी तथा कहा कि शंखचूड़ विष्णु जी का परम भक्त है। इसके साथ विवाह करने से कृष्णा जी तुमको बहुत चाहेंगे तथा वैकुण्ठ प्रदान करेंगे। यह कहकर गान्धर्व विवाह कर लिया। फिर शंखचूड़ तुलसी को लेकर अपने घर जा पहुँचा। वहाँ पहुंचकर उसने अपने माता-पिता को प्रणाम किया और सब समाचार कह सुनाया। वे दोनों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

भी आनन्दित हुए। पश्चात् दम्भासुर शंखाचूड़ को राजकाज सौंपकर स्वयं तप करने चला गया।''

❁❁❁

छब्बीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! असुरों के गुरु शुक्राचार्य यह समाचार सुनकर अनेक दैत्यों सहित शंखचूड़ के पास आये। शंखचूड़ ने उनकी भली प्रकार से सेवा की। शुक्राचार्य जी ने आशीर्वाद तथा प्रशंसा के पश्चात् देवता एवं दैत्यों की कथा का वर्णन किया। तदुपरान्त उन्होंने वह शत्रुता, जो दोनों में बहुत समय से चली आ रही थी कही, तथा देवताओं की जीत, दैत्यों की हार, बृहस्पति की सहायता एवं देवताओं के चरित्र सुनाकर, शंखचूड़ को सब दैत्यों का राजा बनाया। दैत्यों ने बहुत प्रसन्न होकर अनेक प्रकार की भेट दीं। तब शंखचूड़ ने अत्यन्त प्रसन्न होकर, दैत्यों तथा वीरों की एक विशाल सेना एकत्र कर, इन्द्रलोक पर आक्रमण कर दिया और नगर को चारों ओर से घेर लिया। इन्द्र भी देवताओं की सेना लेकर उससे लड़ने आये। उस समय दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में देवताओं ने बड़ी वीरता से दैत्यों को पराजित कर दिया। शंखचूड़ ऐसी हार देखकर बहुत दुःखी हुआ, तब उसने अपने बड़े-बड़े वीरों को युद्ध के लिए भेजा। वे देवताओं से कुशलतापूर्वक लड़े। देवता उनकी वीरतापूर्वक लड़ाई देखकर भाग गये और तितर-बितर हो गये। तब दसों दिग्पति दैत्यों के सम्मुख युद्ध करने आये। दोनों ओर से महायुद्ध हुआ। इन्द्र-वृषपर्वा, अनल-गौ, श्रुति-संहार, यम-कालिम्बिका, वरुण-चंचल, पवन-कल केय, कुवेर-दम्भ, ईश-विप्रचिति, ऋभु-राहु, चन्द्रमा-कनकाक्ष, मंगल-शुक्र, ब्रह्मपति-कालासुर, काल-यम, विश्वकर्मा-शनिश्चर, रक्ताक्ष-वसुगण, प्रगेशबण-धूम्रलोचन, नलकूबर-रत्नसार, इन्द्रपुत्र-किविट, मन्मथ-दीप्तिमान्, अश्विनी कुमार, सब दिग्पति, ग्रह, देवता तथा दैत्य, बड़े-बड़े वीर द्वन्द्व युद्ध करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

लगे। अन्त में दैत्यों ने शुक्राचार्य जी का ध्यान किया तथा एक बार देवताओं के सम्मुख होकर एक साथ आक्रमण कर दिया। यह देखकर देवता वहाँ से भाग गये।

हे नारद ! देवताओं को इस प्रकार भागते हुए देखकर ग्यारहों रुद्र दैत्यों के सम्मुख आ पहुँचे तथा त्रिशूलों से उन पर आक्रमण कर दिया। सब दैत्य उनके इस आक्रमण से भयभीत होकर भाग गये। जब शंखचूड़ ने दैत्यों की यह दुरदशा देखी तो उसने अनेक बाण चलाये, जिससे देवता भाग गये। परन्तु ग्यारहों रुद्र वहीं युद्ध स्थल में खड़े रहे। उस समय से आकाशवाणी हुई—"हे देवताओ ! शंखचूड़ को ग्यारहों रुद्र किसी प्रकार परास्त न कर सकेंगे और न इसे मारने में ही सफल होंगे, क्योंकि ब्रह्मा जी के वरदान से यह सम्पूर्ण लोकों का राजा होगा। तुम लोग यहाँ से चले जाओ तथा अवसर की प्रतीक्षा करो।" देवताओं ने इस आकाशवाणी को सुनकर युद्ध बन्द कर दिया। इस प्रकार दैत्य विजयी होकर आनन्द के साथ अपने घर लौट गये। तब शंखचूड़ सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा हुआ। उसने देवताओं का द्रव्य दैत्यों को दे दिया। उसने इन्द्र के पद को धारण किया। उसके राज्य में किसी को कोई दुःख न हुआ। सब लोग अपने-अपने वर्ण, धर्म, कर्म तथा आश्रम में भली प्रकार स्थित रहे। शंखचूड़ कृष्ण जी का परम भक्त था। यद्यपि वह राधा जी के शाप से दैत्य रूप में उत्पन्न हुआ था, परन्तु दैत्यों के समान उसमें कोई लक्षण न था।"

सत्ताईसवाँ अध्याय

नारद जी बोले—"हे पिता ! शंखचूड़ को राधिका जी ने किस बात से रुष्ट होकर शाप दिया था, वह मुझे बताइये।" ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! कृष्ण जी गो-लोक में निवास करते हैं। वहाँ कृष्ण जी के परम मित्र सुदामा रहते थे। राधा जी ने उनका अनाचार देखकर ही उन्हें शाप दिया, जिससे उन्होंने दैत्य का शरीर धारण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

किया।'' नारद जी बोले—''हे पिता ! गो-लोक कहाँ है? क्या उसी को गो-लोक कहते हैं, जहाँ श्री कृष्ण जी विराजमान हैं?'' ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया—''हे पुत्र ! प्रथम मेरा लोक है, जहाँ मैं शिवजी के ध्यान में सदैव मग्न रहता हूँ। उसके ऊपर वैकुण्ठ है, जहाँ विष्णु भगवान् विराजमान् हैं। उसके ऊपर शिवजी का शासन है, जहाँ शिवजी के भक्त रहते हैं। उन्हें शिवजी के भजने से किसी प्रकार का खेद तथा शोक नहीं होता। उसके ऊपर वीरभद्र का लोक है, जहाँ स्कन्द अर्थात् स्वामी कार्तिकेय रहते हैं। उसके ऊपर उमा-लोक है, जहाँ शिवरानी विराजमान् हैं। उसके ऊपर शिव-लोक है, जहाँ शिवजी परब्रह्म, जगत् के स्वामी, अन्तर्यामी विराजमान हैं। उसको आनन्द वन तथा काशी भी कहते हैं। वहाँ के राजा शिवजी हैं, जो तीनों देवताओं को उत्पन्न करने वाले हैं। मैंने इस प्रकार के शिवलोक का जो वर्णन किया है, उसी के निकट गो-लोक है। वहाँ श्री कृष्ण जी विराजमान् हैं अर्थात् जहाँ शिवजी की गौ रहती है, वहाँ कृष्ण जी का स्थान है जिससे वे उनका पालन करें। वह गो-लोक ही कृष्ण-लोक कहलाता है। प्रथम उसे शिवजी ने विष्णु जी को दिया था ; परन्तु जब विष्णु जी ने कृष्ण जी का और लक्ष्मी जी ने राधा जी का अवतार लिया, तब शिवजी ने उनका अभिषेक करके उन्हें ब्रह्माण्ड का राज्य दिया तथा उन्हें सबसे बड़ी पदवी दी। उस समय शिवजी ने यह कहा—''हे कृष्ण जी ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो, तुम वैसा ही करना। तुम्हारी महिमा तथा बड़ाई विष्णु जी से अधिक होगी। तुम गोपियों के साथ विहार किया करना।'' इसी कारण श्री कृष्ण जी राधा जी को लेकर गोपियों के नगर में आए तथा गौओं का पालन करने लगे। एक दिन श्रीकृष्ण जी ने राधा जी को कहीं भेज दिया तथा स्वयं विरजा के साथ विहार करने लगे। राधा जी से यह बात किसी सखी ने कह दी। राधा जी यह सुनकर अत्यन्त क्रोधित हो, इस चरित्र को देखने के लिए आयी। वे विरजा के घर जाकर रथ से उतरीं और चाहा कि भीतर जाएँ, परन्तु सुदामा, जो एक लक्ष गोपों के साथ द्वार पर बैठा था, उसने राधा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:17 AM

जी को अन्दर जाने नहीं दिया। जब बहुत चिल्लाहट हुई, तब कृष्ण जी ने जाना कि राधा आयी हैं। इसलिए वे भयभीत होकर स्वयं तो वहाँ से अन्तर्धान हो गए तथा विरजा ने अपने शरीर को नदी बना लिया, जो चारों ओर मीठे जल से बह निकली। जब राधिका जी ने अन्दर जाकर दोनों में से किसी को न पाया, तब उन्होंने कृष्ण जी पर बहुत क्रोध किया।

"हे नारद ! राधा जी विरजा को नदी देखकर बहुत रोयीं। तदुपरान्त विरजा श्रीशिवजी की आज्ञानुसार कृष्ण जी के वियोग दुःख को देखकर प्रकट हुई। तब कृष्ण जी ने फिर राधा जी को भुला दिया और विरजा के साथ विहार करने लगे। जब राधा जी ने फिर यह सुना तो वे कोपभवन में गयीं और वस्त्र एवं गहने आदि शरीर से उतारकर, भूमि पर लोटने लगीं। यह सुनकर श्री कृष्ण जी कोपभवन में राधा जी के निकट आये तथा सुदामा भी उसी प्रकार एक लाख गोपों की सेना लेकर द्वार पर खड़ा रहा। राधा जी ने कृष्ण जी को अपने पास आता हुए देखकर कहा—"हे कृष्ण जी ! तुम यहाँ क्यों आये हो? तुम परस्त्री से सम्भोग करते हो तथा उसी में मग्न रहते हो। अस्तु, तुम यहाँ से चले जाओ और जहाँ भी चाहे, वहाँ रहो। मेरे जाने से विरजा नदी हो गयी थी, अब तुमको भी यही उचित है कि तुम नद होकर परस्पर मिलो तथा भोग-विलास करो। तुम्हारे सब कार्य मनुष्यों के समान हैं, इससे मैं तुमको शाप देती हूँ कि तुम भी मनुष्य रूप धारण कर, भरतखण्ड में निवास करोगे।" राधा जी ने ऐसा शाप देकर अपनी सखियों को आज्ञा दी कि इनको इस स्थान से निकाल दो। तब कृष्ण जी राधा जी के आदेश पर वहाँ से निकाल दिये गये, परन्तु वे गुप्त होकर वहीं बने रहे। जब सुदामा ने अपने स्वामी की ऐसी दशा देखी तो वे राधा जी से बोले—"हे राधा ! तुमने कृष्ण जी को शाप क्यों दिया? तुम सब गोपियाँ तो कृष्ण जी के आधीन हो।" यह सुनकर राधा जी ने क्रोध में भरकर कहा—"हे मूर्ख सुदामा ! तू नहीं जानता कि कृष्ण जी मेरे सेवक हैं। इसलिए मैं तुझ को भी यह शाप देती हूँ कि तू दानव का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

जन्म ले। तूने कृष्ण जी का दैत्यों के समान मान किया तथा मेरा अपमान किया है। मेरे बिना तेरी कोई रक्षा न करेगा।''

हे नारद ! राधा जी का ऐसा शाप सुनकर सुदामा ने उत्तर दिया— ''हे राधे ! अब तुम्हारी बुद्धि मनुष्यों के समान हो गयी है, इसलिए तुम भी मनुष्यों का शरीर प्राप्त कर, कलंकित हो गयी और कोई गोप तुम्हारे साथ विवाह नहीं करेगा। तुम कृष्ण जी को फिर पाकर सौ वर्ष तक दुःख भोगोगी।'' हे नारद ! शिवजी ने इस प्रकार के चरित्र किये, तदुपरान्त अपनी माया को खींच लिया। उस समय विष्णु भगवान् वहाँ उपस्थित हुए। उस समय दोनों को रुदन करते देखकर विष्णु जी ने सुदामा से यह कहा—''हे सुदामा ! तुम किसी प्रकार का दुःख मत करो तथा दानव होकर संसार का राज्य करो। शिवजी के अतिरिक्त तुम्हें कोई नहीं जीत सकेगा। तुम उन्हीं के हाथ से मरोगे तथा फिर यहाँ चले आओगे। मैं तथा राधा भी अवतार लेकर मनुष्यों के समान लीला करेंगे।'' यह कहकर विष्णु जी राधा जी को लेकर गो-लोक में रहने लगे तथा सुदामा दानव हुए। मैंने तुम्हें यह पुरातन कथा सुनायी है। अब बताओ तुम और क्या सुनना चाहते हो?''

❁❁❁

अट्ठाईसवाँ अध्याय

नारद जी बोले—''हे पिता ! अब आप मुझे यह बताइए कि शिवजी ने शंखचूड़ को किस प्रकार मारा?'' यह सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे पुत्र ! शंखचूड़ ने सब देवताओं को निकाल दिया तथा अच्छी प्रकार राज्य करने लगा। तब सब देवता चिन्तामग्न होकर इन्द्र के पास गए तथा उनको आगे करके मुनीश्वरों सहित मेरे पास आए और शोकाकुल होकर शंखचूड़ का सब वृत्तान्त सुनाने लगे। उनकी यह दशा देखकर मैं सबको विष्णु जी के पास लेकर गया तथा स्तुति कर, शंखचूड़ का सम्पूर्ण वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया।

हे नारद ! तब विष्णु जी ने प्रसन्न होकर यह कहा—''हे देवताओ !

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

शंखचूड़ हमारा परम भक्त है, इसलिए वह त्रिशूल के अतिरिक्त और किसी शस्त्र से नहीं मरेगा।'' यह कहकर विष्णु जी हम सबको साथ लेकर शिव-लोक गये। वहाँ ड्योढ़ी पर पहुँचकर हम सब लोग शिवजी की आज्ञानुसार अन्दर गये तथा उनकी स्तुति करते हुए बोले—''हे सदाशिव जी ! हम दैत्यों के हाथ से मारे जाते हैं।'' यह दशा देखकर शिवजी हम पर दयालु हुए।''

उन्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—''हे देवताओ ! तुम निर्भय रहो। तुम्हारा सब प्रकार कल्याण होगा। शंखचूड़ ने अपने पहले जन्म में कृष्ण जी की पूजा की थी, परन्तु शाप राधा जी से पाया था।'' इस प्रकार शिवजी आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कह ही रहे थे कि उसी समय श्री कृष्ण जी राधिका जी सहित वहाँ जा पहुँचे और स्तुति करने के पश्चात् बोले—''हे शिवजी ! आपकी माया में फँसकर तथा स्वयं को भूलकर हमने ऐसा शाप पाया। अब आप हमें क्षमा करें।'' यह सुनकर शिवजी ने कहा—''हे कृष्ण जी ! तुम्हारा अहंकार समाप्त करने के लिए ही हमने यह चरित्र किया था। अब तुम अपने घर जाओ तथा आनन्दपूर्वक रहो। जब तुम दोनों क्रीड़ाकल्प में मनुष्य का शरीर धारण कर अवतरित होगे, तब तुम्हारा पाप नष्ट हो जाएगा। तुम्हारा मित्र सुदामा दानव होकर इस समय शंखचूड़ कहलाता है। उसने देवताओं को बहुत दुःखी किया है। हम उनका भी दुःख दूर करेंगे।'' कृष्ण जी से यह कहकर शिवजी ने देवताओं की ओर देखा तथा कहा—''हे देवताओ ! तुम कैलाश पर्वत पर जाकर, रुद्र से, जो कि अवतार हैं, सब वृत्तान्त कहो। वे तुम्हारे सब दुःख दूर करेंगे। वे केवल देवताओं के लिए ही अलग रूप धारण किये हैं। हमारा वहाँ सगुण रूप उपस्थित रहता है जो हम तथा रुद्र में भेद समझता है, वह कष्ट पाता है।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

हे नारद ! यह सुनकर हम सब अत्यन्त प्रसन्न हुए। जब राधा जी तथा कृष्ण जी गोप सहित वहाँ से चले गये, तब मैं भी इन्द्र आदि देवताओं सहित कैलाश पर्वत पर गया और रुद्र को प्रणाम करने के पश्चात् यह प्रार्थना की—"हे गिरिजापति ! हम सब आपकी शरण में आये हैं। आप हमारे दुःखों को दूर कीजिये।" रुद्र ने उत्तर दिया—"हे देवताओ ! तुम अपना कार्य सिद्ध समझो तथा अपने-अपने घर लौट जाओ। हम शंखचूड़ को सभी दैत्यों सहित मारकर, तुम्हारे मनोरथ को पूरा करेंगे।" शिवजी की ऐसी अमृतमयी वाणी सुनकर हम सब उन्हें प्रणाम करके अपने-अपने घर लौट आये।"

तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी ने शंखचूड़ को मारने का उपाय सोचकर अपने भक्त पुष्पदन्त को बुलाया तथा यह कहा—"हे पुष्पदन्त ! तुम गन्धर्वों के राजा हो इसलिए शंखचूड़ के पास जाकर यह कहो कि तुमने देवताओं का राज्य छीन कर ठीक नहीं किया है। तुम माया के कारण अभिमानी एवं अहंकारी हो गये हो। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। अस्तु, तुमको यही उचित है कि देवताओं का राज्य उनको लौटा दो तथा व्यर्थ का कोई झगड़ा न करो। यदि तुम अपनी मृत्यु नहीं चाहते हो तो पाताल में चले जाओ और वहाँ का राज्य करो ; अन्यथा हम तुम्हें तुरन्त ही मार डालेंगे।" पुष्पदन्त यह सुनकर शंखचूड़ के पास गया। उस समय वह एक ऊँची अटारी पर बैठा हुआ था तथा तीन करोड़ दैत्य उसकी सेवा कर रहे थे। ऐसी सेना देखकर पुष्पदन्त आश्चर्यचकित हुआ। अन्त में शंखचूड़ के पास बैठ गया। उस समय शंखचूड़ ने उससे यह पूछा—"तुम किसके दूत हो तथा इस प्रकार निडर क्यों बैठे हुए हो? तुम्हारे कर्म सेवकों के से दिखाई नहीं देते। अस्तु, तुम जिस काम के लिए आये हो, उसे तुरन्त कहो।" यह सुनकर पुष्पदन्त ने सब वृत्तान्त जो शिवजी ने उससे कहा था, शंखचूड़

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

को कह सुनाया तथा अपनी ओर से यह भी कहा कि या तो तुम देवताओं का राज्य लौटा दो अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।

हे नारद ! यह सुनकर शंखचूड़ ने कहा—"हे दूत ! हम शिवजी के भय के कारण देवताओं को राज्य नहीं देंगे। हम यह भली प्रकार जानते हैं कि पृथ्वी का यह राज्य दैत्यों तथा वीरों के लिए है। हम युद्ध करेंगे। हमें तो यह आश्चर्य है कि शिवजी ऐसे निःस्वार्थ महात्मा होकर भी देवताओं की रक्षा करते हैं। हम प्रातःकाल कैलाश पर्वत आयेंगे। तब शिवजी जो उचित समझें, वह करें।" यह सुनकर पुष्पदन्त ने मुस्कुराकर कहा—"हे शंखचूड़ ! शिवजी परम श्रेष्ठ हैं। तुम इतना अहंकार मत करो। उनसे युद्ध करके तुम मृत्यु को प्राप्त होगे। पहले तुम उनके गणों से ही लड़कर देख लो। उनका सामना करना तो बहुत ही कठिन है।" पुष्पदन्त ऐसे वचन कहकर चुप हो गया। तब शंखचूड़ ने कहा—"मैं शिवजी से लड़े बिना दुःखी रहूँगा। यह सम्पूर्ण सृष्टि काल से उत्पन्न होती है तथा काल से ही नष्ट हो जाती है। हे पुष्पदन्त ! तुम यह सारा वृत्तान्त जैसा कि मैंने तुमसे कहा है, शिवजी से कह देना।" यह सुनकर पुष्पदन्त वहाँ से उठकर शिवजी के पास आए तथा उन्हें सारा हाल कह सुनाया।"

❁❁❁

इकतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी पुष्पदन्त द्वारा शंखचूड़ के ऐसे कठोर वचन सुनकर, क्रोधित हुए तथा अपने गणों को आज्ञा दी कि तुम सब तैयार हो जाओ। फिर वे वीरभद्र, नन्दीगण, भृंगी, क्षेत्रपाल, भैरव तथा मुनिभद्र आदि को पुकार-पुकार कर बोले कि तुम सब लोग शस्त्र आदि लेकर चलो। शिवजी की ऐसी आज्ञा सुनकर सब लोग प्रसन्न हो, बाजे बजाने लगे तथा सेना सहित बाहर निकल आए। तब शिवजी ने यह कहा कि समस्त सेना तथा सेनापति हमारे साथ चलें, परन्तु गणपति अपनी सेना सहित यहाँ रह जाएँ। इतना

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM 93

कहकर शिवजी शस्त्र आदि लेकर बैल पर चढ़कर चल दिए तथा कैलाश पर्वत के बाहर पहुँचकर ठहर गए। बड़े-बड़े सेनापति, गण, वीरभद्र, नन्दी, महाकाल, बाण, सुभद्रक विकृत, पिंगलाक्ष, मणिभद्र, विरूपाक्ष, विशालाक्ष, वाष्कल, गतिहूत, वृष, दृष्टिदंष्ट्र, कालंजर, दुर्गम, विद्रुम, बलभद्र, कपिल, कूटाम्बर, ताम्रनयन, विकर्ण, कीचर, बितवल, सन्तद्रन, अभिलाषी, आठो भैरव, ग्यारहों रुद्र और क्षेत्रपाल आदि गणों के स्वामी तथा राजा भी शिवजी के सेना के साथ हुए।

हे नारद ! इतनी विशाल सेना के स्वामी वीरभद्र हुए। वीरभद्र की रक्षा के लिए भवानी सहस्त्र भुजा धारण किए, विमान पर चढ़कर आयीं। उनके वस्त्र लाल थे तथा वे मुण्डों की माला पहने थीं। उनके हाथ में खप्पर था तथा अनेक प्रकार के शस्त्र थे। उनके पीछे देवता आदि की सेना थी जिसमें इन्द्र, वरुण, कुबेर, पवन, सूर्य, चन्द्रमा आदि नवग्रह वसुकर्मा, अश्विनी कुमार, बृहस्पति, धर्म, आठों बसु आदि समस्त देवता थे। ये सभी शिवजी की सेना के साथ हुए। शिवजी ने सबको अलग-अलग बैठाया तथा कृपा दृष्टि से सबकी ओर देखा, जिससे उनको बड़ी शक्ति प्राप्त हुई। तदुपरान्त शिवजी विन्ध्यभागा नदीं के तटपट एक बरगद के वृक्ष के नीचे विराजमान हुए।''

बत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब पुष्पदन्त शंखचूड़ के पास चले आए, तब शंखचूड़ अपनी रानी के पास गया और प्रातःकाल शिवजी से युद्ध करने का वृत्तान्त उसे कह सुनाया। उसे सुनकर रानी शोकाकुल होकर रोने लगी तथा बोली—''हे नाथ ! शिवजी के सब आधीन हैं, आप उनसे युद्ध करते हैं। आपको यह उचित नहीं कि आप उनसे वैर करें।'' इस प्रकार शिवजी की महिमा का वर्णन करके वह बोली—''हे स्वामी ! कल रात्रि को मैंने एक बुरा स्वप्न देखा है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

अर्थात् मेरा बायाँ अंग फड़का है। यह अपशकुन देखकर आपको शिवजी से युद्ध नहीं करना चाहिए।'' शंखचूड़ ने उसकी बातों पर कोई ध्यान न देते हुए कहा—''हे प्रिये ! दुःख की बात कोई नहीं है। तीनों लोकों में सब कार्य समयानुसार ही होते हैं। समय पर ही अच्छी तथा बुरी बातें, सुख-दुःख, वृक्षों एवं पुष्पों का फलना-फूलना, देवताओं तथा सृष्टि की उत्पत्ति, संसार का जीवन-मरण तथा अन्तकाल आदि सभी कार्य होते हैं।''

हे नारद ! शंखचूड़ ने इस प्रकार अपनी स्त्री को समझाकर उसके साथ सम्भोग किया और अपने धर्म को भूल गया। उसकी स्त्री को यह भोग करना अच्छा न लगा ; क्योंकि वह सदाशिव जी के साथ युद्ध करने जा रहा था, परन्तु शंखचूड़ उसे बहुत कुछ समझाकर भोग-विलास करता रहा। प्रातःकाल उठकर उसने अपने पुत्र को तिलक दे दिया। फिर अपनी रानी को रोते हुए देखकर, अपने पुत्र को उपदेश दिया तथा स्त्री को उसे सौंपकर, शिवजी के साथ युद्ध करने के लिए चल दिया। उसने सेनापति को बुलाकर कहा—''आप हमारी परीक्षा का दिन है, इसलिए तुम अपनी सम्पूर्ण सेना साथ ले चलो। शिवजी देवताओं को राज्य देने तथा मुझे अपने आधीन करने की इच्छा रखते हैं। इसलिए चलकर भली-भाँति युद्ध करो। छियासी कुल कम्बुदैत्य, पचास कुल असुर बन्दर, एक कोटि वीर्य तथा सात कुल दानव धौम्र—ये सब शस्त्र आदि लेकर चले तथा कालक भी अपनी सेना को साथ लेकर चले।'' यह आज्ञा देकर शंखचूड़ घर से निकला तथा सोने-चाँदी के विमान पर चढ़कर शिवजी के साथ युद्ध करने चल दिया। उस समय युद्ध के बाजे बजने लगे। सब सेना तथा सेनापति प्रसन्नतापूर्वक चले जा रहे थे। शंखचूड़ उस स्थान पर आ गया, जहाँ शिवजी विराजमान थे। वहाँ पहुँचकर वह राजनीति का स्मरण कर, शिवजी की सेना से कुछ दूर पर ही ठहर गया।''

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

तैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शंखचूड़ ने एक दूत भेजा। वह दूत वहाँ से शिवजी के पास चला, क्षिप्रा नदी के पास, जहाँ शिवजी विराजमान थे, पहुँचकर उसने शिवजी को प्रणाम किया और कहा—"शंखचूड़ ने यह पूछा है कि आपकी क्या इच्छा है?" शिवजी ने उत्तर दिया—"तुम शंखचूड़ से हमारी ओर से जाकर कह देना कि तुम मुरज के वंशज हो तथा सुदामा तुम्हारा नाम था। पिछले जन्म में तुम श्री कृष्ण जी के मित्र थे, परन्तु राधा जी के शाप से इस जन्म में दैत्य हुए हो। इसलिए तुमको उचित है कि पूर्व जन्म एवं धर्म का स्मरण कर, देवताओं के साथ शत्रुता न रखो। तुम योग्यतापूर्वक राज्य करो तथा देवताओं को हर प्रकार से सुख पहुँचाओ। तुम तथा समस्त देवता कश्यप मुनि द्वारा उत्पन्न किये हुए हो, इसलिए तुममें किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। सब से बड़ा पाप अपने बन्धु-बान्धवों से शत्रुता रखना है। हम किसी की ओर नहीं हैं, परन्तु हम सेवा से प्रसन्न रहते हैं और अपने सेवक की सदैव रक्षा करते हैं।" शिवजी ने इसी प्रकार बहुत से उपदेश देकर वेद तथा धर्म शास्त्र की नीति आदि का दूत से वर्णन किया।

हे नारद ! उसे सुनकर दूत ने उत्तर दिया—"हे शिवजी ! आपने जो यह कहा कि परस्पर की शत्रुता दुखदायी होती है, यह सत्य है, परन्तु विष्णु जी ने राजा बलि के साथ छल करके उसका नगर एवं राज्य छीन लिया तथा उनको पाताल भेज दिया। क्या उन्होंने यह उचित किया था? क्या उनको यह भी उचित था जो उन्होंने बलि के पिता को मार डाला? फिर जब देवताओं एवं दैत्यों ने सागर-मन्थन किया, तब देवताओं को अमृत क्यों मिला? महिषासुर को देवी जी ने बिना किसी दोष के क्यों मार डाला? फिर तारक तथा त्रिपुर भी मारे गये इसी प्रकार अन्धक, गज एवं जलन्धर आदि की मृत्यु हुई। क्या देवता बुद्धिहीन थे जो उन्हें यह नहीं मालूम था कि अपने भाइयों के साथ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

शत्रुता करना पाप है? क्या आप इसको जाति-द्रोह नहीं कहेंगे? हे शिवजी ! आपको उचित है कि देवताओं तथा दैत्यों के युद्ध में आप ईश्वर होकर पक्षपात न करें, शत्रुता एवं मित्रता समान लोगों से होती है। आप जैसे ईश्वर तथा स्वामी को यह उचित नहीं है कि आप हमारे साथ युद्ध करें। क्या आपको ऐसे कार्य पर लज्जा नहीं आती?''

हे नारद ! दूत की ऐसी बातें सुनकर शिवजी ने हँसते हुए कहा—''हे दूत ! हम किसी का पक्षपात नहीं करते। अब हमारी उपस्थित होने का कारण यह है कि इन्द्र आदि देवता हमारी शरण में आये हैं। तुम शंखचूड़ से यह कहना कि तुम सब दैत्यों से बड़े हो तथा कृष्ण रूपी विष्णु जी के परम भक्त हो, इसलिए तुम भी उनके समान तथा परमोत्तम हो। इसलिए तुमसे युद्ध करते समय हम लज्जित नहीं हैं।'' तुमसे अधिक कहना व्यर्थ है। तुम देवताओं का राज्य उन्हें लौटा दो तथा स्वयं पाताल में जाकर राज्य करो। यदि तुम मेरे इन वचनों से असंतुष्ट एवं अप्रसन्न हो तो युद्ध स्थल में आकर हमारे साथ युद्ध करो। हे दूत ! तुम यह सब बातें अपने स्वामी शंखचूड़ से कह देना। फिर उसकी जो भी इच्छा हो, वह करे। हम देवताओं का मनोरथ अवश्य पूर्ण करेंगे।'' इसके पश्चात् दूत वहाँ से उठकर चला आया तथा उसने शंखचूड़ से सब वृत्तान्त कह सुनाया।''

चौंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! दूत के मुख से ऐसी बातें सुनकर शंखचूड़ अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा उसने युद्ध करना ही उत्तम समझा। फिर वह देवताओं से सन्धि न कर, युद्ध की तैयारी में लग गया। उसने अपनी सेना सजाकर तैयार की और युद्ध के बाजे बजवाये। तदुपरान्त वह युद्ध स्थल में जा खड़ा हुआ। उधर से शिवजी भी अपनी सेना सहित युद्ध स्थल में आ उपस्थित हुए। इस प्रकार देवता एवं दैत्यों में युद्ध होने लगा। इन्द्र पुरुष प्रिय के साथ, शुक्र

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

बृहस्पति के साथ तथा मृत्यु पुष्कर के साथ ; इसी प्रकार दोनों ओर के प्रसिद्ध सेनापति परस्पर युद्ध करने लगे। उस युद्ध में अनेक प्रकार के शस्त्रों का प्रयोग किया गया, जिनके आघात से अनेक देवता, दैत्य तथा हाथी-घोड़े मारे गए। इसी प्रकार वह युद्ध बहुत दिनों तक चलता रहा। न किसी की विजय हुई और न किसी की हार ही। अन्त में, दैत्यों ने देवताओं पर बड़े ज़ोर का आक्रमण किया, जिससे भयभीत होकर देवता भागकर तितर-बितर हो गए। यह देखकर वीरभद्र तथा नंदी आदि शिवजी के गण युद्ध क्षेत्र में आ उपस्थित हुए। वीरभद्र ने अपने त्रिशूल द्वारा सब दैत्यों को कुरूप बना दिया। उस समय दैत्य भी युद्ध स्थल छोड़कर भागने लगे। शंखचूड़ ने जब अपनी सेना को इस प्रकार भागते हुए देखा, तो उसने अपनी भागती हुई सेना को साहस बँधाया तथा स्वयं युद्ध करने चला। फिर उसने ऐसी भीषण बाण-वर्षा की, जिससे शिवजी के सब गण भयभीत होकर भाग गये। केवल नन्दी तथा वीरभद्र, जो शिवजी के अंश से उत्पन्न हुए हैं, युद्ध स्थल में खड़े रहे तथा शंखचूड़ ने नन्दी को भी बाण मारकर उन्हें धरती पर गिरा दिया। परन्तु कुछ समय पश्चात् ही नन्दी पुनः उठकर युद्ध करने लगे। फिर शंखचूड़ के ऊपर वीरभद्र ने अपने त्रिशूल से आक्रमण किया, परन्तु शंखचूड़ ने उसे काट डाला तथा अपने शस्त्र से वीरभद्र पर ऐसा आक्रमण किया, जिससे वीरभद्र घायल होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। थोड़ी देर बाद ही वीरभद्र तुरन्त उठ बैठे तथा क्षेत्रपाल दैत्य से युद्ध करने लगे। फिर भैरव ने शंखचूड़ को अपने त्रिशूल से मारा, जिससे वह अचेत होकर गिर पड़ा। उस समय बड़ा भयानक युद्ध हुआ। तभी भैरव को यह आकाशवाणी सुनाई दी कि शंखचूड़ शिवजी के अतिरिक्त और किसी से नहीं मरेगा, इसलिए तुम लोग शिवजी के निकट जाओ और उनसे निवेदन करो कि वे शंखचूड़ को मार डालें। इस आकाशवाणी को सुनकर भैरव तथा अन्य सब गण शिवजी के पास गये तथा उन्हें युद्ध का सब पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:18 AM

पैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी के गणों द्वारा देवताओं की पराजय तथा अपने गणों की दुर्गति का समाचार सुनकर, वीरभद्र को दैत्यों से युद्ध करने का आदेश दिया। वीरभद्र तुरन्त ही शिवजी की आज्ञानुसार सेना सहित युद्ध स्थल में गये। वहाँ पहुँचकर वीरभद्र ने शिवजी के समान शंख बजाया तथा क्रोध प्रकट किया। उस शंख की ध्वनि को सुनकर तथा वीरभद्र के क्रोध को देखकर दैत्य काँप गये। तदुपरान्त वीरभद्र ने अपने भयानक आक्रमण से एक अक्षौहिणी दैत्य सेना का नाश कर दिया। उस समय युद्ध क्षेत्र रक्त से लाल हो उठा। सहस्त्रों कबन्ध इधर-उधर फिरने लगे। फिर वीरभद्र ने भी क्रोधित होकर एक करोड़ दैत्यों को मार डाला। अन्त में विप्रचिति, वृषपर्वा, जृम्भासुर तथा वीर विकम्पन—ये चारों महाबली दैत्य वीरभद्र के सम्मुख हुए तथा अलग-अलग युद्ध करने लगे। यह देखकर महामारी ने जाकर दैत्यों को नष्ट कर दिया। फिर भैरव ने दैत्यों को खाना शुरू किया। उस समय सब दैत्य पराजित हो गये।

हे नारद ! अपनी सेना की इस प्रकार हार देखकर शंखचूड़ अपने कवच को कंठ में पहन, विमार पर चढ़, बहुत बड़ी सेना साथ ले, मारू बाजे बजवाता हुआ, युद्ध स्थल में आ पहुँचा तथा अपनी भागी हुई सेना को एकत्र किया। फिर उसने अपने धनुष को तानकर ऐसी बाण-वर्षा की जिससे आकाश बाणों से भर गया और चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा छा गया। तब अनेक देवता हार मानकर भाग गये। अकेले वीरभद्र ही वहाँ खड़े रहे। तब शंखचूड़ ने अपनी माया से पर्वत,सर्प, अग्नि आदि को उत्पन्न किया तथा इनकी वर्षा आरम्भ कर दी, जिसमें वीरभद्र इस प्रकार छिप गया, जैसे सूर्य बदली में छिप जाता है। यह देखकर वीरभद्र ने आश्चर्यचकित हो शिवजी का स्मरण किया तथा महाशक्ति को छोड़ा। उस शक्ति ने दैत्यों की इस माया को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बिलकुल नष्ट कर दिया। तब शंखचूड़ ने क्रोधित होकर वीरभद्र के रथ तथा धनुष को अपने अत्यन्त पवित्र बाण से काट डाला। वीरभद्र के रथ के घोड़े मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। तब शंखचूड़ ने दूसरा बाण वीरभद्र पर छोड़ा, जिससे वीरभद्र मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। जब वीरभद्र को चेतन हुआ, तब दूसरे रथ पर चढ़कर शंखचूड़ से युद्ध करने लगे। उन्होंने उसके रथ, सन्नाह, घोड़े, शक्ति आदि को काट कर पृथ्वी पर गिरा दिया। फिर उसके सारथी को मारकर, अपनी शक्ति से शंखचूड़ को भी अचेत कर दिया। थोड़े समय के पश्चात् जब शंखचूड़ सचेत होकर उठा तथा गर्जन करने लगा, तब वीरभद्र ने उसे पुनः अपनी शक्ति से गिरा दिया। इसी प्रकार वीरभद्र ने कई बार उसे अचेत करके गिराया ; परन्तु शंखचूड़ ने उठकर अन्त में अपनी सांग से वीरभद्र पर आक्रमण कर ही दिया। वीरभद्र उसके प्रहार से पृथ्वी पर गिरकर मर गये।

हे नारद ! तब मृतक-वीरभद्र को महाकाली ने उठाकर शिवजी के पास ले जाकर रख दिया और सब वृत्तान्त विस्तारपूर्वक कह सुनाया। उस समय शिवजी ने वीरभद्र को स्पर्श किया, जिससे वे पुनः जीवित हो उठे। पुनः जीवित होते ही वीरभद्र चिल्लाने लगे तथा फिर से युद्ध स्थल में जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने त्रिशूल से शंखचूड़ पर आक्रमण किया तब शंखचूड़ उसके आघात से पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब वह सचेत हुआ, तब उसने वीरभद्र पर बाण-वर्षा की ; परन्तु वीरभद्र पर उन बाणों का कोई प्रभाव न हुआ। अन्त में, उसने अपनी बरछी वीरभद्र के हृदय में मारी, जिससे वे पृथ्वी पर गिर पड़े। परन्तु शंखचूड़ ने वीरभद्र को पुनः अपने त्रिशूल से मारना चाहा। उस समय महाकाली तथा समस्त गणों ने आकर उनकी रक्षा की। दैत्यों ने भी अपनी भागी हुई सेना को फिर एकत्र किया। अस्तु, दोनों सेनाएँ पुनः रणक्षेत्र में आ डटीं। अतः युद्ध पुनः आरम्भ हो गया।"

❁❁❁

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

छत्तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इस बार युद्ध बहुत भयानक हुआ, जिससे दिन रात के समान दिखाई देने लगा। काली जी ने ऐसा भयंकर शब्द किया जिससे सब दैत्य अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े। फिर काली जी ने महामद का पानकर नृत्य करना आरम्भ कर दिया। यह देखकर दैत्यों को अत्यन्त दुःख एवं शोक हुआ ; परन्तु देवता प्रसन्न थे। तब शंखचूड़ फिर सब दैत्यों को एकत्र करके रणक्षेत्र में खड़ा हो, वीरभद्र से युद्ध करने लगा। लड़ते-लड़ते दोनों वीरों के शरीर इस प्रकार घायल हो गये, जिस प्रकार फूले हुए ढाक के वृक्ष हों। जब शंखचूड़ ने अग्नि बाण चलाकर चारों ओर अग्नि फैला दी, तब वीरभद्र ने वरुणास्त्र छोड़कर उस अग्नि को बुझा दिया। इसी प्रकार शंखचूड़ ने अनेक प्रकार के बाण छोड़े परन्तु वीरभद्र ने सबको अपने बाणों द्वारा नष्ट कर दिया। अन्त में, शंखचूड़ ने अपने बाणों का कोई प्रभाव न देख, नारायण बाण छोड़ा, परन्तु वीरभद्र ने उसको भी पाशुपात अस्त्र से दूर कर दिया। तब शंखचूड़ ने चक्र छोड़ा, उसे महाकाली ने तुरन्त निगल लिया तथा शंखचूड़ को किसी प्रकार विजय प्राप्त न करने दी। फिर काली जी ने अपने धनुष, जिसका शब्द अन्तकाल से कम न था, खींचकर अग्नि बाण छोड़ा परन्तु शंखचूड़ ने वैष्णवास्त्र द्वारा उसे दूर कर दिया। तब काली जी ने नारायणास्त्र छोड़ा, परन्तु शंखचूड़ ने अपने रथ से उतरकर उसे दंडवत् की, जिससे वह निष्फल होकर दूर हो गया। फिर शंखचूड़ ने दिव्यास्त्र शक्ति आदि काली जी पर चलाये, परन्तु वे सब भी निष्फल रहे। इसी प्रकार बहुत दिनों तक दोनों पक्ष लड़ते रहे। अन्त में, काली जी ने पाशुपत अस्त्र के छोड़ने का विचार किया, परन्तु उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि हे काली ! तुम यह अस्त्र किस लिए छोड़ती हो? यह शंखचूड़ तुमसे न मरेगा; क्योंकि यह कृष्ण जी का परम भक्त है।

हे नारद ! महाकाली ने उस आकाशवाणी को सुनकर, अस्त्र को न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छोड़ा। शंखचूड़ ने अपने खड्ग को छोड़ा परन्तु काली जी ने उसे खा लिया तथा मुख खोलकर शंखचूड़ को खाने के लिए चलीं, परन्तु वह अपनी माया से गुप्त हो गया। काली जी ने उसके रथ तथा सारथी को नष्ट कर डाला। तब शंखचूड़ फिर प्रकट हुआ। काली जी ने उसे उठा तथा घुमाकर आकाश की ओर फेंक दिया तथा एक करोड़ दैत्यों को मारकर रक्तपान किया। तब शंखचूड़ ने उठकर काली जी को प्रणाम किया तथा विमान पर चढ़कर, निर्भय हो, पुनः युद्ध करने लगा। महाकाली ने शंखचूड़ में ऐसा धैर्य देखकर, अपना महाभयंकर शरीर बनाया तथा रुद्र महाधनुष हाथ में लेकर सोचा कि अब इससे प्रलय करें, परन्तु तभी यह आकाशवाणी हुई कि हे काली ! इसकी मृत्यु तुम्हारे हाथ से नहीं होगी, तुम व्यर्थ ही युद्ध करती हो। तुम शिवजी के निकट जाओ, वे इसे मारेंगे।''

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! महाकाली जी युद्ध स्थल से हटकर शिवजी के पास गयीं तथा सेना को साथ ले जाकर, शिवजी को सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर शिवजी अत्यन्त चिन्तित हुए। फिर उन्होंने अपनी माया का स्मरण किया तथा शंखचूड़ के पहले जन्म का वृत्तान्त कहा। इसके पश्चात् शिवजी अपने गणों सहित बैल पर चढ़कर युद्ध क्षेत्र को चल दिए। क्षेत्रपाल, वीरभद्र, भैरव तथा नन्दीश्वर की ओर उन्होंने एक बार दृष्टिपात किया, जिससे उन सबको महाशक्ति प्राप्त हुई। तब वे सब अस्त्र-शस्त्र लिये तथा भयंकर रूप धारण किए, युद्ध स्थल में आ गये। दैत्यों ने उनको रुद्र कालान्तक के रूप में देखा तथा भयभीत हो गये। उस समय शंखचूड़ ने शिवजी को देखकर रथ से उतरकर प्रणाम किया। फिर वह शिवजी की आज्ञा के अनुसार, धनुष एवं बाण लेकर शिवजी से लड़ने लगा। सौ वर्ष तक वे दोनों लड़ते रहे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

हे नारद ! उस समय मैं अपने कुल सहित सभी वैकुण्ठ वासी आकाश में स्थित होकर इस युद्ध कौतुक को देखते रहे। शंखचूड़ ने जो बाण छोड़े, वे सब शिवजी ने तुरन्त काट डाले तथा जो शस्त्र शिवजी ने मारे, वे शंखचूड़ ने काट डाले। अन्त में शंखचूड़ ने क्रोधित होकर शिवजी को चक्र मारा। शिवजी ने उस चक्र को अपने घूँसे से चूर-चूर कर पृथ्वी पर फेंक दिया तथा शंखचूड़ को भी घायल कर पृथ्वी पर गिरा दिया। जब उसकी मूर्च्छा दूर हुई, तब वह पुनः रथ पर चढ़कर शिवजी के सम्मुख आया। उस समय शिवजी ने शंखचूड़ को आते हुए देखकर डमरू बजाया तथा श्रृंगीनाद करके अपना धनुष टंकारा, जिससे यह प्रतीत होता था कि अब अन्तकाल आ गया है। चारों दिशाओं में शिवगण गर्जना करने लगे। उस समय शंखचूड़ ने अपनी शक्ति चलायी जिसे क्षेत्रपाल ने तुरन्त निगल लिया। शिवजी तथा शंखचूड़ परस्पर इतने लड़े कि उस युद्ध को देखकर सब डर गये। अन्त में शिवजी ने उसकी समस्त भुजाएँ काट डालीं तब शंखचूड़ शिवजी की ओर झपटा। शिवजी ने तुरन्त त्रिशूल से शंखचूड़ के हृदय को फाड़ दिया। उदर के फटते ही उसमें से एक मनुष्य 'तिष्ठ-तिष्ठ' कहता हुआ निकला। शिवजी ने अपने अस्त्र से उसका भी सिर काट डाला। वह फिर कट कर काँपने लगा तथा भयंकर रूप धारण कर देवताओं को बहुत दुःख पहुँचाने लगा। तब सदाशिव जी की आज्ञा के अनुसार काली जी दैत्यों की सेना में घुस गयीं और दैत्यों को खाने लगीं। इस प्रकार उन्होंने अनेक पक्षियों आदि को खा डाला। महामारी ने भी सेना का ग्रास किया। क्षेत्रपाल, भैरव, नन्दी तथा वीरभद्र ने भी बहुत-से दैत्यों को खाया तथा अनेक को नष्ट कर दिया। शिवजी के सारे सेनापति दैत्यों को मारकर नष्ट करने लगे। योगिनी गण दैत्यों को खाने लगीं। ज्वर ने भी शरीर धारण कर दैत्यों को मार डाला। उस समय सब दैत्य ऐसी दुर्गति देखकर, वहाँ से भाग गये, क्योंकि सन्निपात ने भी अनेक दैत्यों को दुःखी किया था तथा नन्दी ने भी दैत्यों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

को मार डाला था। अन्त में, इस प्रकार दैत्यों पर विजय प्राप्त करके शिवजी भी परम आनन्दित हुए।"

❁❁❁

अड़तीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! शंखचूड़ ने इस प्रकार अपनी सेना की दुर्गति देखकर भयंकर क्रोध किया तथा शिवगणों को डाँट-डपट कर बोला—"तुम लोग मेरे सम्मुख आकर लड़ो, इस प्रकार दैत्यों को मारने से क्या लाभ है? वीर निर्बलों से नहीं लड़ा करते।" यह कहकर उसने शिवजी पर तीक्ष्ण बाण मारे, परन्तु शिवजी ने उन सबको काट डाला। तब शंखचूड़ ने एक माया को उत्पन्न किया, जिसको शिवजी ने महादिव्य बाणों से दूर कर दिया। तदुपरान्त शंखचूड़ पृथ्वी में लुप्त हो गया। उस समय मैंने तथा विष्णु जी ने शिवजी का जय-जयकार किया। तब शिवजी ने क्रोध करके यह चाहा कि शंखचूड़ को मार डालें। अस्तु, उन्होंने अपना त्रिशूल उठा लिया। उसी समय आकाशवाणी हुई—"हे शिवजी ! जब तक शंखचूड़ कृष्ण-कवच पहने रहेगा तथा इसकी पत्नी तुलसी पतिव्रता रहेगी, यह नहीं मरेगा, क्योंकि ब्रह्मा जी का ऐसा वरदान है।"

हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर शिवजी ने अपना त्रिशूल नहीं छोड़ा। उस समय विष्णु जी शिवजी की अभिलाषा जानकर उपस्थित हुए और बोले—"हे शिवजी ! आपकी जो आज्ञा हो बताइये, मैं उसे पूरा करूँगा। तब शिवजी ने यह कहा—"हे विष्णु ! तुम किसी प्रकार से शंखचूड़ के कंठ से कृष्ण-कवच उतार लो तथा उसकी स्त्री का पतिव्रत धर्म नष्ट कर डालो।" शिवजी की ऐसी आज्ञा सुनकर विष्णु जी ब्राह्मण के रूप में शंखचूड़ के पास गये। शंखचूड़ ने उन ब्राह्मण रूपधारी विष्णु जी को प्रणाम किया। तब ब्राह्मण ने उसे आशीर्वाद देकर कहा—"हे शंखचूड़ ! तुम मुझे पानी पिलाओ।" शंखचूड़ ने अत्यन्त आदर के साथ उस ब्राह्मण को पानी पिलवाया।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

तब ब्राह्मण ने कहा—"हे शंखचूड़ ! तुम हमको कृष्ण-कवच दे दो।" यद्यपि कृष्ण-कवच शंखचूड़ को अत्यन्त प्रिय था, फिर भी उसने उसे ब्राह्मण को दे दिया। हे नारद ! यदि शत्रु ब्राह्मण बन कर कोई वस्तु माँगे तो उसे निशंक दान कर दे दिया। चाहे प्राण भले ही चले जाएँ ; परन्तु ब्राह्मण विमुख न जाए। फिर, जिसके पास विष्णु जी भिक्षुक-ब्राह्मण बन कर जाएँ, उससे अधिक भाग्यशाली कौन होगा? जिसके यहाँ से भिक्षुक निराश होकर न लौटे, उसके धन्य भाग्य हैं। इसी उदारता पर राजा बलि, दधीचि, जरासन्ध, सांख्य आदि अत्यन्त कीर्तिवान हुए हैं। इसके पश्चात् विष्णु जी शंखचूड़ के रूप में उसके घर गये तथा बड़े चरित्रों से उसकी स्त्री का धर्म नष्ट किया। फिर उन्होंने लौट कर शिवजी से सब वृत्तान्त कहा। शिवजी ने उसे सुनकर अपने विजय-त्रिशूल को उठा लिया, जिसमें पृथ्वी एवं आकाश सब दिखाई देते थे। वह मध्याह्न-काल के सूर्य के समान तेजस्वी था। उसमें सब शस्त्र थे। फिर शिवजी ने उस त्रिशूल को छोड़ा, जिससे शंखचूड़ तुरन्त जलकर भस्म हो गया। त्रिशूल अपना काम करके पुनः शिवजी के पास लौट आया।

हे नारद ! शिवजी द्वारा शंखचूड़ का वध तथा दैत्यों पर अपनी विजय देखकर देवता बड़े प्रसन्न हुए। अस्तु, शंखचूड़ मरकर गो लोक में जा पहुँचा तथा शाप से छूटकर पूर्व के समान हो गया। उसकी हड्डियों के शंख बने, जो विष्णु जी को अत्यन्त प्रिय हैं। देवता एवं मुनि जो विष्णु जी के परिवार में हैं उन सबको भी शंख बहुत प्यारे लगते हैं, परन्तु वह शंख शिवजी को प्यारा नहीं है। उस समय मैं, इन्द्र तथा समस्त देवता शिवजी के पास गये और उनकी बहुत स्तुति कर बारम्बार प्रणाम एवं दंडवत् की। फिर शिवजी की आज्ञा पाकर सब देवता अपने-अपने घर चले गये। उस समय सब के दुःख दूर हो गये तथा सम्पूर्ण संसार में आनन्द छा गया। इसके पश्चात् शिवजी अपने गणों सहित कैलाश पर गये। जो मनुष्य शिवजी के इस चरित्र को सुने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

अथवा पढ़ेगा, उसको किसी प्रकार का दुःख न होगा। सब के दुःख इस इतिहास को सुनकर भस्म हो जायेंगे।''

❁❁❁

उन्तालीसवाँ अध्याय

नारद जी बोले—''हे पिता ! अब आप मुझे यह बताइए कि विष्णु जी ने किस प्रकार तुलसी का पतिव्रत धर्म नष्ट किया था?'' यह सुनकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! यह चरित्र शिवजी एवं विष्णु जी की भक्ति को अधिक बढ़ाता है, इसलिए तुम इसको मन लगाकर सुनो। विष्णु जी शंखचूड़ का वेष धारण कर तुलसी के घर गये तथा उसके द्वार पर पहुँचकर, अपनी विजय के बाजे बजवा दिये। यह देखकर तुलसी अत्यन्त प्रसन्न हुई तथा उसने बहुत-सा धन आदि भिक्षुकों एवं ब्राह्मणों को दान में दिया। फिर वह अपना शृंगार करके पति के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी। तब विष्णु जी शंखचूड़ के रूप में ही अन्दर घर में गये। तुलसी ने उनके चरण धोकर स्तुति की तथा चाँदी की चौकी पर बैठाकर ताम्बूल दिये। फिर हाथ जोड़कर बोलीं—''हे स्वामी ! मेरा धन्य भाग्य है जो आप विजय प्राप्त करके आये हैं।'' फिर तुलसी ने शिवजी की स्तुति करके पूछा कि आपने उन पर किस प्रकार विजय प्राप्त की? तब विष्णु जी ने कहा—''हे तुलसी ! हमने युद्ध स्थल में जाकर बहुत लड़ाई की। देवता हमारे पराक्रम से भयभीत होकर भाग गये। उस समय ब्रह्मा जी ने हम दोनों में सुलह करवा दी तथा हमने भी ब्रह्मा जी की आज्ञानुसार देवताओं को कुछ दे दिया। तदुपरान्त शिवजी अपने घर चले गये तथा देवता आदि भी अपने-अपने लोकों को लौट गये।''

हे नारद ! तुलसी को यह वृत्तान्त सुनाकर विष्णु जी सेज को सजा हुआ देखकर, तुलसी के साथ भोग-विलास करने लगे, परन्तु तभी तुलसी को कुछ सन्देह उत्पन्न हुआ। उसने सोचा कि कहीं यह मेरे पति के रूप में कोई अन्य मनुष्य न हो। यह सोचकर तुलसी ने विष्णु जी से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

कहा—"तुम शंखचूड़ नहीं हो तुमने मेरे साथ छल किया है तथा मेरे पतिव्रत धर्म को नष्ट किया है। अब सत्य-सत्य बताओ कि तुम कौन हो?" तब विष्णु जी ने डरकर कहा—"हे तुलसी ! हम विष्णु हैं। हमने यह कार्य देवताओं की भलाई के लिए ही किया है।" यह कहकर विष्णु जी ने उसे अपने स्वरूप में दर्शन दिये। जब तुलसी ने विष्णु जी को इस प्रकार देखा तो वह क्रोधित होकर बोली—"हे विष्णु जी ! तुमने मेरे पतिव्रत धर्म को छल से नष्ट कर दिया तथा इसी प्रकार छल से मेरे स्वामी को मरवा डाला। इसलिए मैं तुम्हे शाप देती हूँ कि तुम पत्थर हो जाओ। जो लोग तुमको दया-सिन्धु कहते हैं, वे मूर्ख हैं।" यह कहकर तुलसी रोने लगी। यह देखकर विष्णु जी डरे तथा उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। उस समय शिवजी ने तुलसी को दर्शन दिया तथा बोले—"हे तुलसी ! सब लोग अपने-अपने कर्मों का फल भोगते हैं। संसार में दुःख एवं सुख कोई वस्तु नहीं है। यह संसार समुद्र के समान है, जिसमें दोनों प्रकार का जल है। तृष्णा उसकी लहर है और बिना धर्म के कोई इसे पार नहीं कर सकता। तुम दोनों से हम यही कहते हैं कि तुमने प्रथम जो योग तथा तप किया था, वह किसी प्रकार निष्फल न होगा। तुम दोनों हमारे भक्त हो। तुम्हारा पति कृष्ण जी का मित्र सुदामा था। उसे राधिका जी ने शाप दिया था, इसीलिए वह यहाँ आ कर उत्पन्न हुआ। अब वह मारा गया तथा इस शरीर को त्यागकर, फिर वैसा ही शरीर धारण किया है। तुम भी इस शरीर का त्याग करो तथा विष्णु जी के साथ विहार करो। देवताओं की भलाई के लिए हमने तुम्हारे पति का वध किया था, इस पर क्रोध न करना। अब तुम नदी होकर गण्डकी नदी के नाम से प्रसिद्ध होगी तथा समुद्र, जो विष्णु जी के अंश से है, उसकी स्त्री होकर विहार किया करोगी। इसके अतिरिक्त तुम दोनों एक और रीति से इकट्ठे रहोगे अर्थात् तुम पृथ्वी में इसी नाम अर्थात् तुलसी के नाम से प्रसिद्ध होकर उत्पन्न होगी तथा विष्णु के शरीर पर चढ़ा करोगी, जिससे विष्णु अपने कर्मों का फल पावेंगे। विष्णु तुम्हारे शाप से पत्थर बनकर, गण्डकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:19 AM

नदी के तीर पर स्थित रहेंगे। उस जगह बड़े-बड़े तीक्ष्ण दाँतों वाले भयानक जीव उत्पन्न होकर पत्थर को काटकर बहुत-से गोल सीधे टुकड़े बनाया करेंगे, वे टुकड़े शालिग्राम के नाम से प्रसिद्ध होंगे तथा जो टूटे-फूटे टुकड़े होंगे केवल पत्थर कहलायेंगे।

हे तुलसी ! वेद ने चक्र के भेद से शालिग्राम-शिला का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। तुम्हारी भेंट उस शालिग्राम-शिला के साथ सदैव हुआ करेगी, जो पुण्य को बढ़ाने वाली तथा पापों को नष्ट करने वाली समझी जायेगी। तुम शंखचूड़ की स्त्री हो तथा तुमने बहुत समय तक उससे विहार किया है, इससे तुम्हारा संयोग शंख के साथ भी हुआ करेगा।'' शिवजी तुलसी से यह बातें कहकर अन्तर्धान हो गये। तब तुलसी भी प्रसन्न हो, अपना शरीर त्याग, वैकुण्ठ को चली गयी। वह सुन्दर स्वरूप धारण कर विष्णु जी के साथ विमान पर चढ़ी। उस समय उसको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हुआ। तुलसी के प्रथम शरीर से गण्डकी नदी उत्पन्न होकर ऐसी तेजवती हुई कि जो कोई मनुष्य उसके जल को देखता तथा स्पर्श करता है तो उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। उसके तट पर विष्णु जी पर्वत के आकार में स्थित हुए, जिनके दर्शन मात्र से ही समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। वहाँ बड़े-बड़े कठोर दाँत वाले कीड़े इकट्ठे होकर शिलाओं में बड़े-बड़े छेद किया करते हैं। उनसे जो टुकड़े होकर गण्डकी नदी में गिरा करते हैं वही शालग्राम की मूर्तियां हैं, जो अत्यन्त पवित्र तथा दुःख दूर करने वाली हैं। उनमें जो चक्र सहित हों, वे पूजने के योग्य हैं। उनके लक्ष्मी नारायण आदि अनेक प्रकार हैं। जो टुकड़े नदी से बाहर मिलते हैं, वे पिंगलादि नामों से प्रसिद्ध हैं तथा गृहस्थ के पूजने योग्य नहीं हैं। जो मनुष्य चारों वर्णों के बाहर हैं, वे भी उन्हें पूजने के योग्य हैं। वे मूर्तियाँ दो प्रकार की हैं—एक तो आनन्द देती हैं तथा दूसरी दुःख प्रदान करने वाली हैं। यह शालिग्राम-शिला शूद्र वर्ण के पूजने योग्य नहीं है। शालिग्राम-शिला की बहुत बड़ी बड़ाई है, जैसी कि नर्मदा के पत्थरों की महिमा है। शालिग्राम तथा नर्मदा की मूर्तियाँ स्वयं विष्णु जी एवं शिवजी का स्वरूप हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! शालिग्राम-शिला को तुलसी पत्र अत्यन्त प्रिय हैं। कदाचित् यदि तुलसी पत्र से अलग शालिग्राम की मूर्ति रखी जाए तो बहुत ही दुःख प्राप्त होता है एवं स्त्री का वियोग होता है। इसी प्रकार शालिग्राम को शंख का वियोग भी अत्यन्त दुखदायी है। जब तुलसी, शंख, शालिग्राम एकत्र करें तथा एक ही स्थान पर रखे तो दोनों लोकों का सुख प्राप्त होता है। हे नारद ! विष्णु जी की यह कथा मुक्ति प्रदान करने वाली है। इसको सुनने अथवा सुनाने से आनन्द मिलता है। शंखचूड़ वध तथा शिवजी का चरित्र सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करने वाला है। इस कथा में विष्णु जी का यश भी कहा गया है, इसलिए यह और भी आनन्ददायक है। यह भक्तों को अधीन करने वाली हैं। शिवजी भक्तों के अधीन रहकर ऐसी ही अद्भुत लीलाएँ करते हैं।''

❁❁❁

चालीसवाँ अध्याय

नारद जी बोले—''हे पिता ! अब मेरी अभिलाषा शिवजी द्वारा अन्धकासुर के वध की कथा सुनने की है। अस्तु, आप कृपा करके जिस प्रकार शिवजी ने अन्धकासुर का वध किया, उसका वर्णन कीजिए।'' यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! जब विष्णु जी ने नृसिंह तथा वाराह अवतार लेकर दिति के पुत्रों को मारा, तब दिति ने बड़ा विलाप किया तथा कश्यप की शरण में जाकर उनकी सेवा करने लगी। वह अपने पति कश्यप को प्रसन्न करने के लिए सब श्रृंगार छोड़, ब्रह्मचर्य धारण कर रहने लगी। वह केवल कश्यप की इच्छा के अनुसार ही मीठे वचन कहती तथा अधिक बातचीत नहीं करती थी। तब एक दिन कश्यप ने प्रसन्न होकर यह कहा—''हे दिति ! हम तुम्हारी सेवा से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं, अतः तुम हमसे कोई वरदान माँगो।'' इसके पश्चात् उन्होंने पतिव्रत धर्म का वर्णन करते हुए कहा—''हे दिति ! ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जिसको हम शिवजी की कृपा से नहीं दे सकें।'' अपने पति को इस प्रकार प्रसन्न देखकर दिति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ने कहा—"हे स्वामी ! देवताओं ने मेरे साथ शत्रुता करके विष्णु जी के द्वारा मेरे दोनों पुत्रों को मरवा डाला है तथा अनेक दैत्यों का वध करवा दिया है। मुझे इस बात का बहुत दुःख है, इसलिए मैं आपकी शरण में आयी हूँ। अब कृपा करके मुझे ऐसा पुत्र दीजिये, जो देवताओं के हाथ से न मर सके।"

हे नारद ! कश्यप ने दिति की बातों को सुनकर उसे वरदान देते हुए कहा—"हे दिति ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। मृत्युञ्जय जो रुद्र हैं, उनके समान संसार में कोई दैत्य अथवा देवता नहीं है। उसके सामने विष्णु तथा ब्रह्मा की भी कुछ नहीं चलती। इसलिए जब तुम्हारे पुत्र उत्पन्न हो, तब तुम उसे यह भली-भांति समझा देना कि वह किसी प्रकार मृत्यञ्जय को क्रोधित न होने दे, क्योंकि शिवजी के क्रोधित होने पर फिर और कोई रक्षा करने वाला नहीं है।" इतना कहकर कश्यप चुप हो गए। तदुपरान्त दिति कश्यप के तेज से गर्भवती हुई। दिति का तेज इतना बढ़ा कि कोई मनुष्य उसके तेज के कारण उसकी ओर देख भी नहीं सकता था। दसवें मास में दिति के एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका विचित्र स्वरूप था अर्थात् उसके एक सहस्त्र सिर, दो सहस्त्र आँखें, दो सहस्त्र पाँव तथा दो सहस्त्र भुजाएँ थीं। वह बहुत ही सुन्दर, तेजस्वी एवं हृष्ट-पुष्ट था। उसको यदि सब मुनि तथा देवता भी मिलकर उठावें तो भी वह नहीं उठ सकता था। वह अन्धों के समान इधर-उधर झुककर चलता था, इसलिए उसका नाम अन्धक रखा गया। जैसा उसका अन्धक नाम था, उसी प्रकार उसने सब कार्य भी किये। अन्धकासुर ने संसार में अनेक उपद्रव मचाये तथा देवताओं से समस्त रत्न आदि लात मारकर छीन लिए।

हे नारद ! इसी प्रकार अन्धक अन्य दैत्यों को अपने साथ लिये हुए तीनों लोकों में अनेक प्रकार के उपद्रव करता रहा। वह इन्द्र की सभा में जाकर इन्द्रासन पर बैठ, केवल देवताओं को ही नहीं, अपितु इन्द्र को भी आज्ञा प्रदान करता था। देवताओं को तो वह सेवकों के ही समान समझता था। एक दिन दैत्यों के अधिपति ने उसके पास आकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रणाम करने के पश्चात् कहा—"हे अन्धक ! संसार में जितने देवता तथा मुनि हैं, वे तुम्हारे शत्रु हैं। उन्होंने बड़े छल-कपट से दैत्यों का वध किया है। इन्द्र भी दैत्यों का घोर शत्रु है। उसने पहले दैत्य को, जो सर्वप्रथम उत्पन्न हुआ था मार डाला तथा देवताओं ने मुनीश्वरों की सम्मति से हम दैत्यों का बहुत बड़ा वन जला डाला। इसलिए तुम पुरानी शत्रुता का विचार करके देवताओं को पराजित करो और तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करो।" दैत्याधिपति की ऐसी बातें सुनकर अन्धक तुरन्त ही तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने के लिए तैयार हो गया। उसने एक बहुत बड़ी सेना एकत्र की। यह देखकर देवता तथा मुनि सब अत्यन्त दुःखी हुए। तब इन्द्र ने स्वयं कश्यप के पास जाकर, अत्यन्त विनयपूर्वक यह कहा—"हे पिता ! आपने देवताओं को बड़े आनन्द से रखा, परन्तु अब अन्धक सबको निकाले देता है। आप देवता तथा मुनियों के ऐसे दुःख को क्यों नहीं देखते? वह क्षण-क्षण पर हमको आज्ञा दिया करता है तथा हम से छोटा होते हुए भी हमें बड़ा नहीं मानता। हे पिता ! इस प्रकार का कार्य करने से बड़ा उपद्रव होगा तथा तीनों लोकों का काम बिगड़ जाएगा।"

इकतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इन्द्र के मुख से ऐसे दुःख पूर्ण वचन सुनकर कश्यप अत्यन्त आश्चर्य करते हुए बोले—"हे इन्द्र ! अन्धक ने जो दुःख तुम लोगों को पहुँचाया है, उससे कुछ भय मत करो। हम तुम्हारे सब दुःखों को दूर कर देंगे।" यह कहकर कश्यप ने इन्द्र को वहाँ से विदा कर, अन्धक को बुलाया और कहा—"हे अन्धक ! अदिति तथा दिति हमारी स्त्री हैं, तथा उन्हीं से सब देवता और दैत्य उत्पन्न हुए हैं। वे बराबर हमारी सेवा करते हैं। हमें दोनों ही प्यारे हैं। अस्तु, तुम तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करने का विचार त्याग दो, क्योंकि यह बड़ा दुःखदायी होगा। तुम और इन्द्र राज्य को आधा-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आधा बाँट कर शत्रुता दूर करो तथा एक ही मत से सुख एवं कुशलतापूर्वक राज्य करो। तुम देवताओं को इस प्रकार दुःखी बना कर मुझे तंग मत करो, नहीं तो तुम बड़ा दुःख पाओगे।'' यह कह कश्यप ने अन्धक को विदा किया।

हे नारद ! कश्यप के इस प्रकार समझाने पर अन्धक कुछ दिन तक तो शान्त बैठा रहा, परन्तु थोड़े दिनों के पश्चात् वह पुनः दैत्यों की संगति से उपद्रव मचाने लगा और देवताओं को दुःख पहुँचाने वाली बातें करने लगा। वास्तव में संगति का प्रभाव बहुत शीघ्र ही पड़ता है। अपने पुत्र की यह दशा देखकर दिति को बड़ी प्रसन्नता हुई। फिर उसने एक दिन अन्धक को बुलाकर इस प्रकार समझाया—''हे अन्धक ! तेरे कर्म देखकर मुझे बहुत दुःख मिलता है। मैं तुझे एक बात समझाती हूँ, तू उसी पर ध्यान धरकर काम कर।'' यह कहकर, उसने पहले कश्यप ने जो कही थी, वहीं बातें विचार कर कहा—''हे पुत्र ! तुम शिवजी की सेवा करो और उनसे किसी प्रकार की शत्रुता मत रखो ; क्योंकि उनसे शत्रुता रख कर कोई सुखी नहीं रहता।'' फिर शिवजी की बड़ी स्तुति करके वह बोली—''हे पुत्र ! तुम नित्य शिवजी की उपासना किया करो।'' तब अन्धक ने माता की आज्ञा मानकर, सब दैत्यों की संगति छोड़ दी तथा इन्द्रियों पर विजय पाकर कठिन तप करने लगा। उसने सर्वप्रथम वन और जल में बैठकर तप किया, फिर केवल वन के फल खाकर ही शिवजी की सेवा करने लगा। ऐसा करने से अन्धक के तेज में वृद्धि हुई। उस तेज के कारण उसकी ओर देखा भी नहीं जाता था। ऐसा कठिन तप करते हुए देखकर सब देवता भयभीत होकर मेरी शरण में आये। तब मैं उन सबको साथ लेकर विष्णु जी के पास गया और विष्णु जी सब हाल सुनकर हम सब को साथ लिये हुए, शिवजी के पास जा पहुँचे। वहाँ हम सबने उनकी पवित्र स्तुति की।''

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

बयालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी की स्तुति करने के उपरान्त सब देवता शान्त खड़े रहे। तब शिवजी बोले—"हे विष्णु, ब्रह्मा तथा समस्त देवताओ ! तुम लोगों की जो इच्छा हो, वह हम से कहो। हम तुम सबको वरदान देने के लिए तैयार हैं।" यह सुनकर देवताओं ने कहा—"हे शिवजी ! हम लोग अन्धक के कठोर तप से अत्यन्त भयभीत हैं, इसलिए आप जाकर अन्धक को वरदान दें ; जिससे हमारे दुःख दूर हों। यद्यपि वह आपसे वरदान पाने के पश्चात् देवताओं का पूर्ण रूप से शत्रु हो जाएगा। हम सबकी इच्छा है कि इस समय कृपा करके आप अन्धक के कठिन तप की अग्नि को शीघ्र ही शान्त करें। तदुपरान्त हमारे लिए भिषक् के समान होकर, हमारी चिकित्सा कीजिएगा।" यह सुनकर शिवजी अन्धक को वरदान देने के लिए चल दिये। वे अपने वाहन गिरिजा तथा गणों सहित वहाँ जा पहुँचे और बोले—"हे अन्धक ! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं, तुम हमसे वर माँगो।" तब अन्धक ने प्रणाम एवं स्तुति करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! मैं आपसे केवल यही वरदान माँगता हूँ कि अपने पिता के वरदान के अनुसार मैं आपके अतिरिक्त किसी के हाथ से न मारा जाऊँ। आप कोई उपाय कीजिये, जिससे मेरे पिता का वचन सत्य हो।" यह सुनकर शिवजी बोले—"अच्छा, हम तुमको यही वरदान देते हैं, परन्तु यदि तुम तीनों लोकों के राजा होकर अपना धर्म त्याग कर कुकर्मी हो जाओगे, तो तुम निःसन्देह तुम पर बड़ा क्रोध करेंगे ; जिससे तुम्हारे सब पुण्य नष्ट हो जायेंगे। ऐसी दशा में भी हम तुम पर दया करेंगे, जिससे तुम्हारा श्रम निष्फल न जाएगा।" शिवजी इस प्रकार अन्धक को वरदान देकर वहाँ से अन्तर्धान हो गये। तब अन्धक ने प्रसन्नतापूर्वक अपने घर आकर अपने माता-पिता को वर प्राप्त करने का हाल कह सुनाया।

हे नारद ! जब देवताओं ने यह सुना कि शिवजी ने अन्धक को ऐसा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

वरदान दिया है तो सब बहुत घबराये। फिर उन्होंने इन्द्र के पास जाकर अन्धक के वरदान पाने का सब हाल कह सुनाया। जिस समय सब देवता इन्द्र के पास जाकर सब हाल कह रहे थे, उसी समय चारों ओर से दैत्यों ने अन्धक के पास जाकर देवता तथा दैत्यों की पुरानी शत्रुता की कहानी कह सुनायी, परन्तु अन्धक ने कुछ नहीं कहा। वह केवल इन्द्रपुरी को देखने के लिए रथ पर चल दिया तथा कुछ समय के पश्चात् इन्द्रपुरी में पहुँच गया। अन्धक को वहाँ आते हुए देखकर अन्य देवताओं के साथ इन्द्र भी बहुत भयभीत हुए। उस समय इन्द्र ने तुरन्त उठकर अन्धक को बराबर एक ही आसन पर बैठाया। तदुपरान्त इन्द्र ने मन में दुःखी होकर अन्धक से आने का कारण पूछा तथा यह कहा कि आपने यहाँ आकर बड़ी कृपा की है। अब जो आज्ञा आप हमें देंगे, हम उसका पालन करेंगे। यह सुनकर अन्धक ने अहंकार से भरकर उत्तर दिया—"हे इन्द्र ! तुम केवल मुझे अपनी सब सम्पत्ति दिखला दो। मुझे किसी वस्तु को लेने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे पास जो ऐरावत हाथी तथा उच्चैःश्रवा घोड़ा आदि उत्तम रत्न एवं उर्वशी आदि महास्वरूपवती स्त्रियाँ हैं, उन सबको मुझे दिखा दो। मैं उनको देखने मात्र से ही प्रसन्न हो जाऊँगा।" तब इन्द्र ने निरुपाय होकर अपनी समस्त सम्पत्ति उसे दिखा दी। इन्द्र की सम्पत्ति को देखकर अन्धक आश्चर्यचकित हो इन्द्र के आसन पर बैठ गया। उस समय अन्धक ने यह आज्ञा दी कि नृत्य आरम्भ किया जाए। इन्द्र ने यह सुनकर भयभीत हो, सब सेविकाओं, गन्धर्व और अप्सराओं से कहा कि तुम सब लोग अपने सुन्दर नृत्यों द्वारा अन्धक को प्रसन्न करो।"

हे नारद ! हर प्रकार के बाजे ताल-स्वर सहित बजने लगे। सातों स्वर, इक्कीस मूर्च्छना तथा तीन ग्राम के साथ गान होने लगा। अन्धक ने उस नृत्य गान से मोहित होकर यह चाहा कि मैं अप्सराओं को अपने वश में करूँ, परन्तु देवताओं ने यह स्वीकार नहीं किया। अन्धक ने जब देवताओं की ऐसी अवज्ञा देखी तो वह अत्यन्त क्रोधित होकर सिंहनाद करने लगा। उस समय इन्द्र ने देवताओं से कहा—"हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

देवताओ ! उठो, ईश्वर को स्मरण कर भली प्रकार निर्भय होकर युद्ध करो, क्योंकि अपनी स्त्रियों के देने से तो लड़कर मर जाना ही उत्तम है।'' इन्द्र की यह आज्ञा पाकर देवता तुरन्त लड़ने को तैयार हो गये, उस समय अन्धक भी पाँच सौ धनुष अपने हज़ार हाथों में लेकर तथा प्रत्येक धनुष में अनेक बाण चढ़ाकर युद्ध करने लगा। जब इन्द्र ने सम्मुख आकर वज्र से अन्धक को मारा, तब अन्धक ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल, गदा आदि नाना प्रकार के शस्त्रों से प्रहार किया। उस समय देवताओं सहित इन्द्र युद्ध स्थल छोड़कर भाग गये। इसके पश्चात् अन्धक अपनी माता दिति को भी वहीं बुलाकर राज्य करने लगा तथा यह ढिंढ़ोड़ा पिटवा दी कि हमारे राज्य में सब प्रजा आनन्दपूर्वक रहे और किसी प्रकार का सन्देह न करे। इन्द्र का राज्य अब समाप्त हो गया। सब वर्ण अपने धर्म में स्थिर रहकर हमारी आज्ञा का पालन करें। जो कोई हमारी आज्ञा के विरुद्ध कार्य करेगा, वह हमारे हाथों से मारा जाएगा। इस प्रकार आज्ञा प्रसारित कर, अन्धक स्वयं इन्द्रपुरी पर शासन करने लगा।''

तैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! देवता अत्यन्त दुःखी हो मेरे पास आये और मुझसे सब वृत्तान्त कह सुनाया। उन्होंने यह भी कहा कि देवता अब अन्धक के भय से यज्ञ में भी भाग नहीं ले सकते। इधर-उधर छिपे रहते हैं। यह कहकर देवताओं ने मेरी बड़ी स्तुति की। तब मैंने उनसे यह कहा—''हे देवताओ ! तुम सब किसी प्रकार का दुःख मत करो, तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे।'' इस प्रकार अनेक पुरातन इतिहास कहकर सबको साथ लिये हुए मैं विष्णु जी के पास गया तथा बहुत स्तुति कर, उनसे अन्धक के अन्याय का वर्णन किया। उस समय विष्णु जी बोले तुम सब अपने-अपने घरों को लौट जाओ। हम शीघ्र ही दैत्यों के पास पहुँचकर उनको नष्ट कर देंगे।'' यह सुनकर देवता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

अपने-अपने घरों को लौट गये। तब विष्णु जी तुरन्त गरुड़ पर सवार होकर अपने शस्त्रों सहित अन्धक के पास पहुँचे। विष्णु जी बड़े-बड़े अस्त्र अन्धक पर चलाते रहे तथा अन्धक उनको नष्ट करता रहा। जब अन्धक ने विष्णु जी को अपने शस्त्रों से दुःखी कर दिया तो विष्णु जी ने क्रोधित होकर सुदर्शन चक्र को अपने हाथ से छोड़ा जिससे संसार जलने लगा। उस समय ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे प्रलय हो रहा हो। अन्धक भी दैत्यों सहित भयभीत हो गया। तब उसने शिवजी का ध्यान धरकर, अपना त्रिशूल चलाकर सुदर्शन को व्यर्थ कर दिया। उस समय विष्णु जी ने शिवजी का ध्यान करके मन में स्तुति करते हुए कहा—"हे शिवजी ! मैं देवताओं के मनोरथ किस प्रकार पूर्ण करूँ? आप मुझे आज्ञा दीजिए।"

हे नारद ! शिवजी ने विष्णु जी के ऐसे दुःख पूर्ण वचन सुनकर कहा—"हे विष्णु जी ! मुझे तुम्हारे समान और कोई भी प्यारा नहीं है। जो मनुष्य, मेरी भक्ति चाहता है, उसे पहले तुम्हारी भक्ति करनी चाहिए। परन्तु इस समय तुम स्वयं ही कुरीति से देवताओं के पक्ष में उद्यत हुए हो। जब तक अन्धक ब्राह्मणों से शत्रुता न करेगा, तब तक मैं उसके ऊपर क्रोध न करूँगा; क्योंकि ब्राह्मण मुझको गिरिजा से भी अधिक प्रिय हैं। इसलिए तुम कोई ऐसा उपाय करो कि अन्धक मेरी आराधना-भक्ति त्याग कर ब्राह्मणों से शत्रुता करे।" यह आज्ञा पाकर विष्णु जी ने अन्धक से कहा—"हे अन्धक ! तुम्हारी वीरता तथा बल देखकर हम अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। तुम हमसे वरदान माँगो।" यह सुनकर अन्धक ने गर्व में भरकर कहा—"हे विष्णु ! वरदान लेना छोटे मनुष्यों का कर्त्तव्य है। हमको किस बात की कमी है, जो हम तुमसे वरदान माँगें? तुमको जो इच्छा हो, वह तुम हमसे माँगो, हम तुमको देंगे।" विष्णु जी ने अन्धक के ऐसे गर्व पूर्ण वचन सुनकर, प्रसन्नता से कहा—"हे अन्धक ! हम तुमसे यह वरदान मांगते हैं कि तुम शिवजी की भक्ति छोड़कर, स्वयं शिव बनकर विहार किया करो।" अन्धक ने यह सुनकर विष्णु जी की माया में भूल, कहा—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"ऐसा ही होगा।" इसके पश्चात् विष्णु जी तथा अन्धक अपने-अपने स्थान को चले गये। तब अन्धक ने स्वयं अपने को शिव ठहरा कर तीनों लोकों को वश में कर लिया, जिससे सबको दुःख पहुँचा। उसने ब्राह्मणों के मान को भी स्थिर न रखा तथा स्वयं अपने को परब्रह्म सिद्ध किया। दैत्यों की सब रीतियाँ उसने चलायीं।"

❁ ❁ ❁

चौवालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! उस समय देवताओं की दशा अत्यन्त खराब थी। वे सब दैत्यों के भय से इधर-उधर भागे फिरते थे, जब देवता तथा ब्राह्मण बहुत दुःखी होकर शाप देने लगे, तब अन्धक का तेज क्षीण हो गया। अस्तु, एक दिन सब देवताओं ने एकत्र होकर कहा कि अब तो अन्धक हमको कोई धर्म नहीं करने देता, न हम विष्णु जी तथा शिवजी की पूजा ही करने पाते हैं। सब प्रकार का दुःख हम लोगों को है। भला, वह किस उपाय से मारा जा सकता है? यह सुनकर बृहस्पति ने कहा—"हे देवताओ ! अन्धक शिवजी के अतिरिक्त संसार भर से अवध्य है। जब शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे वर दिया था उस समय यह भी कहा था कि जब तुम पाप करने लगोगे, तब हम ऐसा क्रोध करेंगे, जिससे तुम्हारा तेज घट जाएगा। शिवजी ने सर्वप्रथम ब्राह्मणों को दुःख देने का निषेध किया था। हे देवताओ ! अब वह समय आ गया है हम सब चलकर शिवजी की सेवा करें। वे हमारे समस्त दुःखों को दूर करेंगे।"

हे नारद ! तब देवताओं ने यह वृत्तान्त कहने के लिए तुम्हें शिवजी के पास भेजा। तुम वहाँ से चलकर शिवजी को मन्दार के वन में देखकर, स्तुति करने लगे। शिवजी तुम्हारी स्तुति सुनकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—"हे नारद ! तुम हमारे यहाँ किस कार्य से आये हो?" शिवजी की ऐसी इच्छा जानकर, तुमने अन्धक के अन्याय का सब हाल उनको कह सुनाया। उसे सुनकर शिवजी बोले—"हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

नारद ! तुम मन्दार के पुष्पों की माला पहनकर अन्धक के पास जाकर हमारी प्रशंसा करना तथा ऐसा उपाय करना जिससे वह क्रोधित होकर हमारे पास आवे।'' यह सुनकर तुम विदा हो, वन से मन्दार के पुष्प तोड़, उनकी माला कंठ में पहन, अन्धक के समीप पहुँचे। उस समय अन्धक सहित सभी दैत्यों को तुम्हारी माला को, जो अत्यन्त सुगन्धित थी, देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। तब अन्धक बोला—''हे नारद ! ये पुष्प कहाँ उत्पन्न होते हैं? उस उद्यान का कौन रक्षक है? मैं यह पुष्प अपने बाहुबल से प्राप्त करना चाहता हूँ।'' तब तुमने यह उत्तर दिया—''हे अन्धक ! मन्दराचल में वीरकाम्यक नामक एक वन है। उसमें यह पुष्प उत्पन्न होते हैं। वहाँ शिवजी के गण वन की रक्षा करते हैं। वे गण अत्यन्त बलवान् हैं। शिवजी अपनी पत्नी सहित उसी वन में विहार करते हैं। उनको जीतने वाला सृष्टि में कौन है, परन्तु उनकी सेवा करने से यह पुष्प प्राप्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त उस वन में और भी अनेक प्रकार के पुष्प हैं। बहुतों में इनसे भी अधिक सुगन्ध है। कई वृक्षों से रत्न तथा कुछ वृक्षों से चारों प्रकार का अन्न प्राप्त होता है। वहाँ किसी को किसी प्रकार का दुःख प्राप्त नहीं होता, न किसी को भूख, प्यास, चिन्ता तथा खेद प्राप्त होता है। उन शिवजी की कृपा से मनुष्य इन्द्र पर भी विजय प्राप्त कर लेता है।'' अन्धक से ऐसे उपदेश पूर्ण वचन कहकर, तुम वहाँ से विदा हुए। तब अन्धक ने दैत्यों की सभा बुलाकर मन्दार के पुष्पों की प्रशंसा करते हुए यह कहा—''तुम सब लोग तैयार होकर मेरे साथ मन्दार पुष्प लेने चलो, यहाँ कोई न रहे।'' यह कहकर अन्धक सेना सहित चल दिया तथा शिवजी की महिमा भूल गया।''

पैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! वहाँ से चलकर अन्धक मन्दारचल पर्वत पर जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि वह पर्वत अनेक प्रकार की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

औषधि तथा जड़ी-बूटियों से सुशोभित है। सिद्ध, मुनीश्वर, देवता तथा गण उसकी रक्षा करते थे। चन्दन, अगरु, शाल, चम्पर, बेल तथा रुद्राक्ष आदि अनेक प्रकार के वृक्ष वहाँ वर्तमान थे। वहाँ गन्धर्व, किन्नर, अप्सरा आदि नृत्य करते थे। हंस, चकोर, सिंह, बाघ आदि जीवों से वह स्थान भरा हुआ था। उस आनन्ददायक स्थान पर जब अन्धक ने देवताओं को देखा तो बड़े क्रोध से यह कहा—"हे मन्दराचल ! तुम मुझको भली-भाँति जानते हो। मैं अपने समान संसार में किसी को नहीं समझता हूँ तथा मुझे कोई भी नहीं मार सकता है। संसार भर मेरे वश में है। तुम भी मेरी प्रजा तथा मेरे अधीन हो। अस्तु, तुम मेरी आज्ञा को सुनो। आज से मैं तुम्हारे निकट के इस वन को अपने विहार तथा भोग-विलास के लिए नियत करता हूँ। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन न करोगे, तो बहुत दुःख उठाओगे।"

हे नारद ! इसी प्रकार अन्धक ने चारों प्रकार की राजनीति के वचन कहे, परन्तु शिवजी का वह मन्दराचल पर्वत बिल्कुल ही भयभीत न हुआ और वहाँ से उसी समय अन्तर्धान हो गया। अन्धक ने मन्दराचल को इस प्रकार अन्तर्धान होते हुए देखकर क्रोध से कहा—"आज मैं तुझे अपने क्रोध से भस्म किये देता हूँ।" यह कहकर उसने पर्वत को जड़ से उखाड़ कर मिट्टी के समान पीस डाला तथा उसे बहुत योजन की दूरी पर फेंक दिया। उस समय उस वन के रहने वाले सब प्राणी थर-थर काँपने लगे। तब वह पर्वत उठते-बैठते, काँपते भागते हुए शिवजी के समीप जा पहुँचा। हे नारद ! शिवजी उस समय गिरिजा के पास थे। गिरिजा ने जब पर्वत को काँपते हुए देखा तो यह कहा—"तू आज इस प्रकार क्यों काँप रहा है तथा पृथ्वी आकाश और पाताल भी क्यों काँप रहे हैं? भला आज किसने इतना क्रोध किया है?" तब शिवजी ने कहा—"हे गिरिजे ! तुम नहीं जानती की यह उपद्रव किसने मचाया है। देखें, आज कौन यमलोक को जाता है? यह कहकर शिवजी ने पर्वत को प्रसन्न किया। इसके पश्चात् उन्होंने अपनी कृपा से पर्वत के टुकड़ों को जो टूट-टूट कर इधर-उधर गिर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

पड़े थे, दैत्यों की सेना पर गिराना आरम्भ कर दिया। यह देखकर दैत्यों में हलचल मच गई। उस समय अन्धक क्रोधित होकर कहने लगा— "हे पर्वत ! मुझको नहीं जानता कि मैं परब्रह्म हूँ। तू मुझसे ऐसा छल क्यों करता है, प्रकट होकर क्यों नहीं लड़ता?" अन्धक के यह शब्द सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया। इतने में, मैं स्वयं, इन्द्र तथा अन्य देवता आदि शिवजी की स्तुति करते हुए उनके पास जा पहुँचे। हे नारद ! शिवजी की वह स्तुति ऐसी है, जिसको सुनने तथा सुनाने से दोनों लोकों में मुक्ति मिलती है।"

छियालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! शिवजी ने जब इस प्रकार स्तुति सुनी तो उन्होंने अन्धक पर अत्यन्त क्रोध प्रकट करते हुए अपने गणों से कहा कि तुम जाकर दैत्यों को नष्ट करो। उस समय समस्त गण शिवजी की आज्ञा प्राप्त कर नन्दी के सेनापतित्व में अन्धक से युद्ध करने चल दिये। युद्ध स्थल में पहुँचते ही घनघोर युद्ध होने लगा। गणों ने अनेक दैत्यों का नाना प्रकार के शस्त्रों से वध कर डाला। नन्दी ने हुण्ड, थुण्ड जृम्भासुर, कुञ्जासुर, पाकहारीत, मदन-मद्रन आदि दैत्यों के अधिपों को मारा, जिससे सब दैत्यों को बड़ा दु:ख पहुँचा। अन्धक यह देखकर अत्यन्त शोकाकुल हो, भयभीत हुआ। फिर अपने गुरु शुक्र के पास जाकर स्तुति कर कहने लगा—"हे गुरुदेव ! आपने अनेक बार दैत्यों के दु:खों को दूर किया है। मैं इस समय आपकी शरण में आया हूँ। आपकी सेवा के बल पर दैत्य पर्वत के समान युद्ध क्षेत्र में स्थिर रहते हैं। हे भृगु ! इस समय शिलादि के पुत्र नन्दीगण ने असंख्य दैत्यों को युद्ध क्षेत्र में मार डाला है। हुण्ड, थुण्ड आदि अच्छे-अच्छे दैत्यों को उन्होंने मारकर पृथ्वी पर लिटा दिया है। अब आप जैसा उचित समझें वह उपाय करें। आपने जो विद्या प्राप्त की है, उसको प्रयोग में लाने का यही समय है। आप दैत्यों को जीवित करिये,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जिससे संसार में आपके यश की वृद्धि हो।"

हे नारद ! अन्धक के ऐसे वचन सुनकर भृगु ने हँसकर कहा—"हे अन्धक ! सहस्त्र वर्षों तक हमने केवल धान की भूसी का धुँआ पीकर जो विद्या प्राप्त की है, अब तुम उसकी सिद्धि देखो। हम मरे हुए दैत्यों को मृत्यु निद्रा से जगाते हैं तथा जिस प्रकार सूखे धानों को पानी हरा कर देता है, उसी प्रकार उस विद्या द्वारा दैत्यों को जीवन-दान देते हैं। यह कहकर भृगु ने अपना मंत्र पढ़ा, जिससे मरे हुए दैत्य तुरन्त जीवित हो गये और उस समय अन्धक अपने साथियों को जीवित देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। शिवजी के गणों ने नंदी से जब भृगु की इस सिद्धि की बात जाकर कही, तब नन्दी ने तुरन्त ही शिवजी के पास पहुँच कर यह विनय की—"हे शिवजी ! जो दैत्य हमारे हाथों से मारे जाते हैं, उनको भृगु बार-बार जीवित कर देते हैं। इस प्रकार हमारी विजय कैसे होगी?" यह सुनकर शिवजी का रूप अत्यन्त भयंकर हो गया। वे क्रोधित होकर नन्दी से बोले—"हे नन्दी ! ब्राह्मणों में जो अत्यन्त नीच भृगु है उसको तुम शीघ्र ही हमारे पास पकड़ कर ले आओ।" नन्दी यह सुनकर निर्भय हो, दैत्यों की सेना में प्रवेश कर गये। उन्होंने देखा कि भृगु की रक्षा अनेक दैत्य कर रहे हैं, फिर भी नन्दी ने सबको मोहित कर, भृगु को पकड़ लिया तथा उन्हें घसीटते हुए ले चले। यद्यपि भृगु ने शस्त्र चलाकर नन्दी से मुक्ति प्राप्त करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु नन्दी ने अपने शरीर से अग्नि उत्पन्न कर सभी शस्त्रों को जला दिया और शिवजी के पास उन्हें पकड़ कर ले गये। फिर उन्होंने भृगु को शिवजी के सम्मुख खड़ा करके कहा—"हे महाराज ! भृगु आपके सम्मुख खड़ा है। अब आप जो उचित समझें, वह करें।" शिवजी ने उत्तर में कुछ न कहा तथा भृगु को अपने उदर में डाल लिया। यह देखकर दैत्यों को अत्यन्त दुःख हुआ तथा उन्हें अपनी विजय की कोई आशा न रही। जब अन्धक ने यह हाल सुना तो वह दैत्यों को धिक्कारने लगा और बोला—"आज मैं नन्दी का वध अवश्य कर डालूँगा। भृगु तो योग शास्त्र में निपुण हैं, इसलिए उनके

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:20 AM

मरने का मुझे भय नहीं है।" यह कहकर वह पुनः गणों से युद्ध करने लगा। तब नन्दी ने गणों सहित ऐसा युद्ध किया कि दैत्यों की सेना पल भर में छिन्न-भिन्न होकर भागने लगी।"

सैंतालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! इस प्रकार अपनी सेना को युद्ध क्षेत्र से भागते हुए देखकर अन्धक स्वयं रथ पर आरूढ़ हो, युद्ध स्थल में आ पहुँचा। तब बलभद्र, शाख, विशाख, गणेश, सोम तथा नंदीश्वर आदि शिवगण ने अन्धक के ऊपर एक साथ आक्रमण कर दिया। उधर भृगु ने शिवजी के उदर में पूरा ब्रह्माण्ड देखा। इसी प्रकार वे सौ वर्ष तक शिवजी के उदर में भ्रमण करते रहे, परन्तु उसमें से निकलने के लिए उन्हें कोई स्थान नहीं मिला। तब वे शिवजी की वन्दना करके उनके लिंग के छिद्र द्वारा, प्रकट होकर, शिवजी की स्तुति करने लगे। शिवजी भृगु की ऐसी चतुराई देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे भृगु ! तुम शुक्र के मार्ग से प्रकट हुए हो इसलिए तुम्हारा नाम 'शुक्र' होगा। तुम हमारे पुत्र हो। अब अपने घर सुखपूर्वक चले जाओ।" यह सुनकर शुक्र वहाँ से दैत्यों की सेना में लौट आये। उन्हें पुनः देखकर दैत्य अत्यन्त हर्षित हुए। तब अन्धक सावधानी के साथ शुक्र की रक्षा का पूरा प्रबन्ध करके, किसी सुरक्षित स्थान पर उन्हें बैठाकर, स्वयं युद्ध करने लगा। उसने अपने भीषण प्रहारों से गणों को दुःखी कर दिया। यहाँ तक कि सभी गण युद्ध स्थल से भागकर शिवजी के पास जा पहुँचे तथा लज्जापूर्वक बोले—"हे शिवजी ! हमको दैत्यों की सेना मार डालती है, हम अत्यन्त दुःखी हैं।" यह सुनकर शिवजी ने कहा—"तुम तुरन्त ही हमारा रथ सजाओ।" तब उनकी आज्ञानुसार शीघ्र ही इस प्रकार, जैसा कि त्रिपुर का वध करने के लिए सजाया गया था, रथ तैयार किया गया। तदुपरान्त शिवजी अपने गणों के दुःख का स्मरण कर, क्रोधित हो उस रथ पर आरूढ़

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हुए तथा रण-भूमि में पहुँचकर अन्धक से युद्ध करने लगे। अन्धक जो भी बाण एवं शस्त्र चलाता था, उनको शिवजी अपने तीक्ष्ण-बाणों तथा अन्य उत्तम शस्त्रों से काट देते थे तथा शिवजी जो शस्त्र छोड़ते थे, उनको अन्धक नष्ट कर देता था। अन्त में, अन्धक ने शिवजी पर अपनी मुष्टिका का प्रहार किया। शिवजी ने भी उत्तम स्वरूप प्रहार करके उसे पृथ्वी पर मूर्च्छित करके गिरा दिया। उस समय शिवजी की इच्छानुसार चामुण्डा देवी, जो दुर्गा का स्वरूप हैं, प्रकट हुईं। उनका शब्द घनगर्जन के समान महाभयंकर था। दाढ़ें विकराल, स्वरूप महाकठोर, लाल-लाल आँखें, लाल-लाल होंठ बहुत ही लम्बा कान, काली आँखें, ऐसे स्वरूप से चामुण्डा देवी दैत्य सेना में प्रवेश कर दैत्यों को विदीर्ण करने लगीं तथा अपने केशों को बिखराकर, रणभूमि में नृत्य करने लगीं।

हे नारद ! अन्धक ने चामुण्डा का ऐसा विकराल स्वरूप तथा दैत्यों को भयभीत देख, क्रोधित होकर अपना शूल चण्डी के सम्मुख कर दिया। उस समय शिवजी ने अन्धक की ऐसी ढिठाई देखकर बड़ा क्रोध किया तथा अपने त्रिशूल से अन्धक को छेद दिया ; जिससे रक्त की नदी बह निकली। केवल अन्धक के अस्थि तथा चर्म ही त्रिशूल पर रह गये, शेष रक्त निकल गया। वह कमल के समान त्रिशूल पर रह गया। उस समय शिवजी ने सब शत्रुता भुलाकर अन्धक को उत्तम बुद्धि प्रदान की, जिससे वह सतोगुण धारण कर, दैत्य भाव से छूट गया तथा शिवजी की स्तुति करने लगा।''

अड़तालीसवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उस समय अन्धक ने शिवजी की बहुत स्तुति करने के पश्चात् कहा—''हे शिवजी ! मैं आपकी शरणागत हूँ आप मेरी ओर दया दृष्टि कीजिये।'' अन्धक की यह स्तुति सुनकर शिवजी ने उसकी ओर दया की दृष्टि से देखा तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

अत्यंत प्रशंसा करते हुए कहा—''हे अन्धक ! तुम धन्य हो। हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वरदान हमसे माँग लो।'' यह सुनकर अन्धक ने कहा—''हे शिवजी ! आप मुझको अपना गण करके, अपने निकट ही रखें तथा वीरभद्र के समान ही समझें।'' यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—''हे अन्धक ! तुम्हारी यह इच्छा अवश्य पूर्ण होगी।'' हे नारद ! इस प्रकार शिवजी ने अन्धक को अपना गण बनाकर मुक्त किया तथा उसे अपने साथ ले जाकर कैलाश पर्वत पर वास करने लगे।'' इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! उस समय विष्णु जी ने, मैंने तथा देवताओं ने कैलाश में पहुँचकर शिव शंकर को प्रणाम किया तथा सबने अलग-अलग स्तुति की। जो कोई उस स्तुति तथा चरित्र को सुनेगा अथवा सुनाएगा, वह अपने कुल सहित प्रसन्न रहेगा। परलोक में उसे शिवजी का सामीप्य प्राप्त होगा। स्तुति के पश्चात् देवता एवं शिवजी यथास्थान चले गये।''

❁❁❁

उन्चासवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी बोले—''हे पिता ! इस चरित्र के सुनने से वास्तव में मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। अब आप सदाशिव जी का अन्य चरित्र कहें।'' नारद जी की ऐसी लालसा देखकर ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब हम तुम्हें शिवजी तथा विष्णु जी के युद्ध का वर्णन सुनाते हैं। मेरे पुत्र मरीचि के द्वारा कश्यप उत्पन्न हुए ; वे शिवजी के परम भक्त हैं। उनके तेरह पत्नियाँ थीं, जिनसे अनेक सन्तानें उत्पन्न हुईं। उनकी सबसे बड़ी पत्नी का नाम दिति था। दिति के गर्भ से बड़े वीर दैत्य उत्पन्न हुए। उनमें से दो का नाम हिरण्यकशिपु तथा हिरण्याक्ष था। वे बहुत समय तक तप करते रहे। हिरण्यकशिपु के चार पुत्र हुए। उनमें प्रह्लाद सबसे छोटा था। प्रह्लाद से विरोचन उत्पन्न हुआ जो शिवजी का अनन्य भक्त था। विरोचन से बलि उत्पन्न हुआ। बलि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

शिवजी का भक्त, बड़ा उदार तथा देवताओं के साथ युद्ध करने में अत्यन्त बलवान् था। उसका एक पुत्र बाण नाम का उत्पन्न हुआ। बाण भी शिवजी का बड़ा भक्त था। वह सन्तों का मित्र, अपने नियम तथा व्रत में अत्यन्त दृढ़, निरहंकार तथा सहस्त्रबाहु था। उसने अत्यन्त उदारता के साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर राज्य किया। उसने अपनी राजधानी शोणितपुर में स्थापित कर, बड़ी धूमधाम के साथ राज्य किया। उसके राज्य में कोई भी दु:खी न था।

हे नारद ! एक दिन बाण शिवजी की भक्ति एवं प्रेम में मग्न होकर, अपनी सहस्त्रबाहुओं से बाजा बजा कर, शिवजी के सम्मुख ताण्डव-गति से नृत्य करने लगा। यह देखकर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे बाण ! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। तुम हमसे अपनी इच्छानुसार वरदान माँगो।" यह सुनकर बाणासुर ने विनती की "हे प्रभो ! सदैव मेरे सहायक रहा करें तथा मेरे दु:ख दूर किया करें।" शिवजी बाणासुर की यह बात मानकर, अपने कुल सहित बाणासुर के घर में निवास करने लगे तथा अपनी सम्पूर्ण शक्ति सहित बाणासुर की रक्षा करने लगे। एक दिन समस्त देवताओं के राजा शिवजी देवताओं सहित नर्मदा नदी के तट पर एक उत्सव-विहार करने लगे। सब देवता, सिद्ध आदि शिवजी के उस उत्सव को देखने के लिए वहाँ आये। उस समय वहाँ नृत्य गायन तथा अनेक प्रकार की आनन्द की बातें होने लगीं। उससे शत्रुओं को दु:ख तथा भक्तों को सुख प्राप्त हुआ। उस समय तीनों प्रकार की वायु बहने लगी, नाना प्रकार के पुष्प खिल उठे, पक्षी मधुर-वाणी में बोल उठे, मानो वे भी गायक बनकर गाने लगे हों तथा सम्पूर्ण वन फूल उठा। ऐसे समय में शिवजी ने इच्छानुसार विहार किया। फिरते-फिरते उन्होंने काम के वश हो नन्दीगण को बुलाकर यह कहा कि तुम तुरन्त कैलाश में जाकर गिरिजा को अपने साथ ले आओ। नन्दी ने यह सुनकर तुरन्त ही गिरिजा की सेवा में पहुँचकर, शिवजी का समाचार कह सुनाया। गिरिजा ने उत्तर दिया कि तुम चलो, हम शृंगार करके पीछे आती हैं। नन्दी यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM 93

सुनकर वहाँ से चला गया तथा गिरिजा शृंगार करने लगीं। तब नन्दी ने यह सुनकर शिवजी के निकट पहुँचकर कहा कि गिरिजा पीछे आ रही हैं। यह सुनकर शिवजी बोले—"तुम फिर शीघ्र जाकर, उन्हें अपने साथ ले आओ।" नन्दी फिर गिरिजा के पास जा पहुँचे तथा उनसे शीघ्र चलने के लिए कहा। तब गिरिजा ने कहा—"अच्छा मैं अभी चलती हूँ तुम बैठो।" यह कहकर उन्होंने शृंगार करने में अपना बहुत समय लगाया। उधर शिवजी अप्सराओं के नृत्य तथा रंग को देखकर बहुत ही कामवश हो गये। जब गिरिजा ने आने में बहुत देर की तब सभा की स्त्रियों ने यह निश्चित किया कि हम सब स्त्रियाँ अपना-अपना और ही प्रकार का पवित्र रूप धारण करें। यह निश्चत कर सब स्त्रियाँ अपना-अपना अन्य स्वरूप धारण करने लगीं। उन्होंने यह सोचा था कि ऐसा करने से शिवजी किसी प्रकार भुलावे में आ जायेंगे। अस्तु, नन्दी ने उर्वशी का रूप, सुकेशी ने लक्ष्मी का स्वरूप, घृताची ने काली का स्वरूप, विश्वाची ने चण्डी का स्वरूप, प्रेमगोत्रा ने सावित्री का रूप, मैना ने गायत्री का रूप, पद्मावती ने विजय स्थला का रूप तथा जया ने सहजन्या का स्वरूप धारण किया।

हे नारद ! उषा ने, जो बाणासुर की कन्या थी, गिरिजा का स्वरूप धारण कर लिया। फिर उन्होंने यह निश्चय किया कि इस समय हम शिवजी को अपने वश में करके उनके साथ भली प्रकार भोग-विलास करें। जब शिवजी ने उषा को बुलाया तभी वहाँ गिरिजा आ पहुँचीं तथा हँसकर इस प्रकार कहा—"हे उषा ! तुमने काम-वश हो हमारा स्वरूप धारण किया है, इसलिए हमारा वचन सुनो। मधुमास की शुक्ल द्वादशी को सोते समय एक मनुष्य तुम्हें मिलेगा, तुम उसके साथ जी भरकर भोग-विलास करना। वही तुम्हारा पति होगा।" यह कहकर गिरिजा अत्यन्त प्रसन्नता के साथ शिवजी के पास जा पहुँची। शिवजी यह लीला करके अपनी सम्पूर्ण सभा सहित अन्तर्धान हो गये।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

पचासवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! एक दिन बाणासुर ने अपने ताण्डव नृत्य से शिवजी को अत्यन्त प्रसन्न करके उनसे यह विनती की—''हे शिवजी ! मैं आपकी कृपा से अत्यन्त बलवान् हुआ हूँ, परन्तु आपने मुझे जो सहस्त्र भुजाएँ देने की कृपा की है, वे मेरे शरीर पर भार के समान हैं, क्योंकि उनके बल से आज तक मैंने कोई कार्य नहीं किया है। अब तीनों लोकों में कोई युद्ध भी मुझसे नहीं हुआ। मैं इस समय तीनों लोकों में केवल युद्ध के निमित्त फिरता हूँ। हे शिवजी ! मेरी भुजाएँ बल की अधिकता से खुजलाया करती हैं। सो अब आप ही कृपा करके मेरी यह खुजली दूर करें। मैंने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को जीत कर, सबको अपने अधीन कर लिया है, परन्तु मुझे युद्ध की अभी भी बहुत बड़ी इच्छा है। अस्तु, या तो कोई मेरी भुजाएँ काट डाले या मैं उसकी भुजाएँ काट दूँ।''

हे नारद ! शिवजी ने बाणासुर के मुख से ऐसे वचन सुनकर कहा—''हे बाणासुर ! मुझे धिक्कार है, जो तुझे अपने ऊपर इतना गर्व है। तू दैत्यों के कुल में महाअधम है। तू बलि का पुत्र तथा हमारा भक्त होकर भी ऐसी व्यर्थ की बातें करता है? यह तेरा अभिमान शीघ्र ही मिट जाएगा। हमारे समान ही एक मनुष्य तेरे पास आएगा वह तेरी अभिलाषा को भली-भाँति पूर्ण कर देगा। उस समय केवल हमारी कृपा द्वारा ही तेरे प्राणों की रक्षा होगी। हम तुझको वह समय भी बताते हैं, जब यह सब बातें प्रकट होंगी। जब तेरा यह ध्वज, जिसका सिर मनुष्य के सिर के समान तथा नीचे मोर का आकार है, बिना पवन के ही पृथ्वी पर गिर पड़े तथा नाना प्रकार के अपशकुन प्रकट हों, तब तुम यह निश्चय समझना कि अब वही समय आया है।'' ये शब्द शिवजी ने प्रकट में क्रोध तथा भीतर से प्रसन्न होकर कहे।

हे नारद ! शिवजी के ऐसे वचन सुनकर बाणासुर अत्यन्त प्रसन्न हुआ था उसने शिवजी की बड़ी पूजा की। फिर उसने घर जाकर अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

स्त्री से सब हाल कहा। उसकी स्त्री का नाम कन्दला था। जब उसने यह समाचार सुना तो वह अत्यन्त चिन्तित हुई और बोली—"हे नाथ ! यह क्या आनन्द की बात है? यह तो बहुत बुरी बात हुई है। शिवजी सदैव अहंकार को नष्ट करते हैं। इस पर आपकी सब भुजाएँ कट जायेंगी। अब तक आप पराजित नहीं हुए थे, परन्तु अब अवश्य ही आपको पराजय मिलेगी। शिवजी ने आपको यह शाप दिया है, वरदान नहीं। इससे तो उत्तम है कि आप अब भी शिवजी को भली प्रकार प्रसन्न करके, उनकी ऐसी सेवा करें जिससे आपका भला हो।" कन्दला यह कहकर अत्यन्त दुःख के साथ शिवजी का स्मरण कर, बाणासुर के चरणों पर गिर पड़ी। तब यह आकाशवाणी हुई "हे कन्दला ! तुम अपने मन में किसी प्रकार का दुःख मत करो। उस समय शिवजी ही तुम्हारे सहायक होंगे तथा बाणासुर का गर्व नष्ट करके उस पर कृपा करेंगे।" कन्दला इस आकाशवाणी को सुनकर कुछ प्रसन्न हुई ; परन्तु इस बात को बाणासुर ने नहीं जाना। तदुपरन्त वह घर से निकलकर बाहर आया और अपने सभासदों को एकत्र कर युद्ध की सलाह करने लगा।"

❁❁❁

इक्यावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी बोले—"हे नारद ! अब हम तुमको बाणासुर की पुत्री उषा का चरित्र सुनाते हैं, जो उस युद्ध का मूल है जिसमें बाणासुर की भुजाएँ कट गयी थीं। यह सब लीला भी तुम शिवजी की ही जानो। बाणासुर की कन्या उषा, जिसे गिरिजा ने यह वर दिया था कि तुमको रात्रि में पति मिलेगा, एक दिन वैशाख शुक्ल द्वादशी को जब, शिवजी की पूजा कर, अर्धरात्रि को सोने लगी, तब गिरिजा की इच्छा से श्री कृष्ण जी के पोते अनिरुद्ध ने वहाँ पहुँच कर उसके साथ भोग किया। उस समय उषा कुछ सकुचाई, परन्तु अनिरुद्ध गिरिजा की कृपा से तुरन्त कृतकार्य हो, अपने घर चला आया। तब उषा मृतक के समान

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

शिथिल होकर बहुत रोई। फिर उसने अपनी सखियों से सब हाल कह सुनाया। उसने अनिरुद्ध को पुनः प्राप्त करने की इच्छा करके, अपनी सखियों से उसकी बड़ी प्रशंसा की तथा गिरिजा का ध्यान किया। उस समय कुम्भाण्ड की पुत्री चित्रलेखा ने जो उषा की सखी थी, उषा को बहुत समझाया तथा उसे पहले जन्म का सब हाल कह सुनाया। उसे सुनकर उषा अत्यन्त प्रसन्न हुई। तब उसने अत्यन्त विनय के साथ चित्रलेखा से कहा—"हे सखी ! जिस पति को गिरिजा ने मुझे रात्रि के समय दिखाया है, उसे तुम किसी प्रकार छिपाकर मेरे पास ले आओ तथा मुझसे भेंट करा दो। यह बात तुम्हारे लिए कुछ तो कठिन नहीं है।" इतना कहकर उषा फिर बोली—"तुम सब सखियाँ इस बात को सत्य समझ लो कि जिस मनुष्य के मिलने से रात्रि के समय मुझको बहुत सुख प्राप्त हुआ है, वह मनुष्य यदि फिर न मिला तो मेरी मृत्यु निश्चित है।" यह सुनकर चित्रलेखा ने हँसकर कहा—"हे सखी ! मैं तुम्हारे सब दुःख दूर कर दूँगी, जिससे तुम्हें परम आनन्द प्राप्त होगा। यदि वह मनुष्य तीनों भुवनों में कहीं होगा, तो उसे तुरन्त ही तुमसे मिला दूँगी।" यह कहकर चित्रलेखा कपड़े के ऊपर सब प्राणियों के स्वरूप खींचने लगी। उसने आदि से अन्त तक, जितने भी देवता आदि आकाश के निवासी थे, सबके रूप बनाए, परन्तु उषा ने उनमें से किसी को नहीं पहचाना। तब वह मनुष्यों के चित्र बना-बना कर दिखलाने लगी।

हे नारद ! जब मेरा चित्रलेखा यदुवंश को चित्रित करने लगी, तब उसने क्रमशः वसुदेव, राम, कृष्ण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध के चित्र बनाकर उषा को दिखाये। उषा ने अनिरुद्ध के स्वरूप को देखकर पहचान लिया तथा यह कहा कि यही व्यक्ति वह है, जिसने मेरा मन चुराया है। तब चित्रलेखा यह जानकर कि उषा कृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध पर मोहित है, शिवजी का ध्यान कर, योग माया के बल से ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्दशी को कृष्ण जी के भवन में गयी। वहाँ उसने यह देखा कि अनिरुद्ध अपनी पत्नी के साथ मद्यपान कर रहे हैं। उनकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

किशोरावस्था, श्याम रंग तथा अत्यन्त सुन्दर स्वरूप को देखकर, चित्रलेखा ने तामसयोग को प्रकट कर, चारों ओर अँधेरा कर दिया तदुपरान्त वह उस शैय्या को जिस पर अनिरुद्ध बैठे हुए थे, अपने मस्तक पर रखकर योग-बल से उड़ चली और उसे उषा के पास लाकर रख दिया। उस समय उषा ने आश्चर्यचकित होकर अनिरुद्ध को देखा। तदुपरान्त अत्यन्त गुप्त रूप से भीतर ले जाकर यह इच्छा की कि मैं इनके साथ भोग-विलास करूँ। उस समय का यह हाल द्वारपालों तथा रक्षकों ने जान लिया। वे अत्यन्त आश्चर्य करके उषा के अपकर्म तथा छल पर पश्चात्ताप करने लगे। फिर जब उन्होंने उषा के घर जाकर अनिरुद्ध को इस प्रकार देखा कि वह भोग-विलास में लिप्त हैं, तो उन्होंने तुरन्त ही बाणासुर के पास जा, स्तुति करते हुए, यहा कहा—"हे स्वामी ! आप तीनों लोकों के ऐसे राजा हैं, जिनसे ब्रह्मा भी डरते हैं। प्रभो ! इस समय आपकी पुत्री के घर में एक अकेला मनुष्य बैठा है। आप स्वयं ही चलकर उसे देख लें तथा जो उचित समझे, करें।" यह सुनकर बाणासुर अत्यन्त दुःखी एवं क्रोधित हुआ। उसने वहाँ जाकर अनिरुद्ध को देखा तथा मन में विचार किया कि यह मनुष्य कोई बड़ा वीर, युद्ध करने वाला तथा प्रण का दृढ़ है। इसने मेरे कुल-धर्म को नष्ट कर दिया है। यह विचार कर बाणासुर ने अपने वीरों को आज्ञा दी कि इसको तुरन्त मार डालो।

हे नारद ! बाणासुर ने अपने सेवकों को यह आज्ञा देकर अनिरुद्ध को देखा। उस समय उनका तेजस्वी स्वरूप देखकर, उसे बहुत सन्देह हुआ। इसलिए दस सहस्त्र सेना अनिरुद्ध को मारने के लिए तैयार हुई। यह देखकर अनिरुद्ध भी निर्भय हो, उठ खड़े हुए। वे अपने एक हाथ में परिघ उठाकर, तुरन्त ही द्वार की ओर चले तथा उस सेना पर इस प्रकार आक्रमण किया कि एक भी सैनिक जीवित न बचा। इसके पश्चात् अनिरुद्ध से युद्ध करने के लिए जो और सेना आयी, उसको भी उन्होंने बुरी तरह मारा। फिर एक लाख वीर आकर अनिरुद्ध से लड़ने लगे। अनिरुद्ध ने उनको भी मारकर वहाँ से भगा दिया। जब

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

बाणासुर को युद्ध का समाचार मिला, तब वह स्वयं अपने रथ पर सवार होकर युद्ध करने के लिए चला। उसके रथ पर कुम्भाण्ड नामक मन्त्री सारथी के स्थान पर बैठा हुआ था। उस समय अनिरुद्ध ने अपनी तलवार द्वारा सारथी सहित बाणासुर को घायल कर दिया। तब बाणासुर ने अनिरुद्ध पर अपनी सांग चलायी। अनिरुद्ध ने बाणासुर के हाथ से सांग छीन ली और उसी से बाणासुर के ऊपर आक्रमण किया। उस युद्ध को देखकर दैत्य एवं देवता अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए। तब बाणासुर अनिरुद्ध को अत्यन्त बलशाली समझकर, वहाँ से अन्तर्धान हो गया और माया युद्ध करके अनिरुद्ध को अपार कष्ट दिया। कुम्भाण्ड ने बाणासुर को अनेक प्रकार से समझाया तथा उसका क्रोध शान्त किया। फिर उसने अनिरुद्ध को अच्छे-अच्छे उपदेश देकर, भली प्रकार समझाते हुए कहा—"हे अनिरुद्ध ! अब तुम बाणासुर को हाथ जोड़कर, कहो कि हम तुमसे हार गये। अस्तु, तुम हमको प्राण दान दो।" यह सुनकर अनिरुद्ध ने कहा—"हे मूर्ख ! तू क्षत्रिय धर्म नहीं जानता। क्षत्रियों को युद्ध में सम्मुख होकर मरना अत्यन्त आनन्ददायी तथा मोक्ष प्रदान करने वाला होता है। जब धर्म ही न रहा तो जीना किस काम का ऐसा मनुष्य दोनों लोकों में आनन्द नहीं उठा सकता।" ऐसे वचन सुनकर बाणासुर अत्यन्त क्रोधित हुआ तथा उसने चाहा कि अनिरुद्ध का वध कर डालें। अस्तु, इस इच्छा से ज्योंही उसने अपना त्रिशूल उठाया, तभी आकाशवाणी हुई। उस आकाशवाणी को अनिरुद्ध सहित सबने सुना। वह यह थी—"हे बाणासुर ! तू ऐसा पाप क्यों करता है? तू बलि का पुत्र और शिव भक्त है। अस्तु, यह काम अच्छा नहीं। यह बालक मार डालने के योग्य नहीं है, इसके शिवजी रक्षक हैं। शिवजी सबके स्वामी हैं, जिनके आधीन तीनों लोक हैं। वह शिवजी सबका पालन करने वाले तथा प्रलय करने वाले हैं। तुझको यही उचित है कि तू ऐसे शिवजी की पूजा किया करे। जब शिवजी तेरे ऊपर कृपा करेंगे, उस समय तेरा गर्व नष्ट हो जाएगा।"

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

हे नारद ! इस आकाशवाणी को सुनकर, बाणासुर उस स्थान से उठकर अपने घर चला गया तब अनिरुद्ध ने भी देवी का स्मरण किया तथा मन में बड़ी स्तुति की, जिससे श्री महाकाली जी अत्यन्त प्रसन्न हुईं। वह महाकाली गिरिजा का ही एक रूप हैं, उन्होंने अनिरुद्ध को आनन्द दिया तथा स्वयं अन्तर्धान हो गयीं। तब अनिरुद्ध फिर उषा के पास चले गये।''

बावनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जिस समय चित्रलेखा अनिरुद्ध को लेकर आकाश को चली थी, उस समय अनिरुद्ध की पत्नी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी थी। उसके रुदन को सुनकर तथा अनिरुद्ध को न देखकर, कृष्ण-बलराम सहित समस्त यदुवंशियों को अत्यन्त चिन्ता हुई। उन सबने अनिरुद्ध को चारों ओर ढूँढा, परन्तु किसी भी प्रकार पता न चला। इसी प्रकार चार महीने व्यतीत हो गये और कोई यह न जान सका कि अनिरुद्ध को कौन ले गया है? हे नारद ! तब भगवान् सदाशिव की आज्ञा पाकर एक दिन तुम श्री कृष्ण जी के पास पहुँचे और उन्हें आदि से अन्त तक का सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय गरुड़ भी श्री कृष्ण जी की सहायता के निमित्त उनके पास जा पहुँचे। शोणितपुर पहुँच कर श्री कृष्ण जी ने अपनी सेना द्वारा नगर के चारों ओर से घेर लिया। और यह देखकर बाणासुर युद्ध करने की इच्छा से श्रीकृष्ण जी के सामने आया तथा उसके संरक्षक भगवान् रुद्र भी युद्ध क्षेत्र में आ पहुँचे।

हे नारद ! उस समय दोनों सेनाओं में घोर युद्ध होने लगा। रुद्र ने श्री कृष्णचन्द्र जी के साथ युद्ध ठाना, वीरभद्र प्रद्युम्न के साथ लड़ने लगे तथा कोपकर्ण और कुम्भाण्ड बलराम जी के साथ युद्ध करने लगे। बाणासुर के पुत्र ने साम्ब का सामना किया तथा शिवजी के वाहन नन्दीश्वर गरुड़ के साथ युद्ध करने लगे। इस प्रकार सभी योद्धा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

अपना-अपना जोड़ देखकर एक-दूसरे से भिड़ गये। स्वयं बाणासुर अपने हाथ में साँग लेकर श्री कृष्ण जी की सेना से युद्ध करने लगा। उस महायुद्ध को देखने के लिए मैं तथा अन्य सब देवता युद्ध क्षेत्र में जा पहुँचे। शिवजी के गणों ने यदुवंशियों के साथ युद्ध छेड़ रक्खा था। इस प्रकार उस युद्ध में एक ओर तो श्री कृष्णचन्द्र जी थे और दूसरी ओर भगवान् सदाशिव जी थे। उस युद्ध का वर्णन किस प्रकार किया जाए? कोई भी योद्धा अपने स्थान से तनिक भी विचलित नहीं होता था। जिस समय श्री कृष्ण जी और बलराम जी ने अपनी शस्त्र-वर्षा द्वारा दैत्यों तथा शिवगणों का मुँह फेर दिया, उस समय शिवजी ने भी अत्यन्त क्रुद्ध होकर अपनी घोर-गर्जना द्वारा यदुवंशियों की सेना को भयभीत कर दिया, जिसके कारण वे लोग भी युद्ध क्षेत्र से भागने लगे। तब श्री कृष्णचन्द्र जी ने बहुत क्रोध करके शिवजी के ऊपर अपने पैने बाणों का प्रहार किया, परन्तु शिवजी ने उन सब बाणों को पंल भर में ही काट डाला। तब श्री कृष्णचन्द्र जी ने क्रुद्ध होकर शिवजी के ऊपर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। उस ब्रह्मास्त्र को भी शिवजी ने अपने ब्रह्मास्त्र से निष्फल कर दिया। इस प्रकार श्री कृष्ण जी ने शिवजी के ऊपर जितने भी अस्त्र-शस्त्र चलाये, वे सब निष्फल हो गये। यह देखकर श्री कृष्णचन्द्र जी ने कोप में भरकर शिवजी के ऊपर शीत ज्वर का प्रयोग किया, जिसके कारण शिवजी की सेना के सभी योद्धा थर-थर करके काँपने लगे। तब शिवजी ने पित्त ज्वर को छोड़ा, जिसने शीत ज्वर को निष्फल कर दिया और वह शिवजी की स्तुति करता हुआ उनकी शरण में जा पहुँचा। उस समय शिवजी ने दोनों ज्वरों को यह आज्ञा दी कि तुम दोनों हमारे भक्तों को कभी न सताना। हम तुम्हें आज से अपना सेवक बनाये लेते हैं। अस्तु, अब तुम प्रसन्न होकर अपने घर को जाओ। यह सुनकर शीत ज्वर तथा पित्तज्वर अपने-अपने स्थान को चले गये।

हे नारद ! शिवजी के इस चरित्र को देखकर श्री कृष्ण जी को बहुत दुःख हुआ। अस्तु, वीरभद्र ने प्रद्युम्न के ऊपर उस शक्ति का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

प्रयोग किया, जिसके द्वारा तारक का संहार किया था। उस शक्ति को आते देख प्रद्युम्न अत्यन्त व्याकुल हो युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े हुए। इसी प्रकार बलभद्र आदि सम्पूर्ण यदुवंशी योद्धा भी क्षेत्र को छोड़कर भाग गये। यह देखकर गरुड़ ने अपने पंखों को फैलाकर उपद्रव मचाना आरम्भ किया, तब नन्दीश्वर ने अपने सींगों द्वारा गरुड़ के पंखों को छेद किया और उन्हें उलझा लिया। उस समय गरुड़ बड़ी कठिनता से नन्दी के पंजे से निकलकर भाग खड़े हुए। जब श्री कृष्णचन्द्र जी ने अपनी सेना की यह दुरदशा देखी तो उन्हें अत्यन्त चिन्ता हुई। उस समय उन्होंने अपने सारथी दारुक से यह कहा—"हे दारुक ! देखो, यह कैसा आश्चर्य है कि शिवजी ने बाणासुर को यह शाप दिया था कि कृष्णचन्द्र जी तेरी भुजाओं को काटेंगे और उसी शाप के कारण हम बाणासुर की भुजाएँ काटने के लिए आ खड़े हुए हैं और शिवजी अपने वचन को मिथ्या सिद्ध कर रहे हैं। शिवजी के ऐसे व्यवहार से हमारी प्रतिष्ठा कम हो रही है। अस्तु हम शिवजी से मिलकर कुछ बातें करना चाहते हैं। तुम हमारा रथ उनके समीप ले चलो, जिससे हम बाणासुर के शाप की बात स्मरण करा सकें और यह कह सकें कि आप बाणासुर की सहायता करना बन्द कर दें।"

हे नारद ! श्री कृष्ण जी की यह आज्ञा सुनकर दारुक रथ को शिवजी के पास ले पहुँचा। तब श्री कृष्ण जी ने शिवजी के चरणों में प्रणाम कर, हाथ जोड़ स्तुति करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! आप ही की आज्ञानुसार मैं बाणासुर की भुजाएँ काटने के लिए यहाँ आया था, क्योंकि आपने उसे यह शाप दिया था कि तेरी भुजाओं को कृष्णचन्द्र काट डालेंगे। हे नाथ ! आप बाणासुर की रक्षा करना छोड़ दीजिये जिससे युद्ध में मुझे विजय प्राप्त हो और आपका वचन सत्य सिद्ध हो।" श्री कृष्ण जी के मुख से यह वचन सुनकर शिवजी बोले—"हे कृष्ण ! तुम सबसे बड़े, सबसे श्रेष्ठ तथा हमारे भक्त हो। तुम साक्षात् विष्णु के अवतार हो। इस समय तुम जो कुछ कह रहे हो, वह भी पूर्ण सत्य है, परन्तु तुम यह भी स्मरण रखो कि हम भक्ति के आधीन रहते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:21 AM

हैं। जब हम यहाँ रक्षक बनकर उपस्थित हैं, तब हमारे देखते हुए बाणासुर की भुजाएँ नहीं कट सकतीं। इसलिए हम तुम्हें एक उपाय बताते हैं, उसके करने से तुम्हें अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। वह उपाय यह है कि तुम हमारे ऊपर जृम्भणास्त्र का प्रयोग करो। उस अस्त्र के लगने पर निद्रा के वशीभूत हो सो जायेंगे। उस समय तुम अपनी मनोभिलाषा पूर्ण करना और संसार में यश प्राप्त करना।'' शिवजी की यह आज्ञा सुनकर श्री कृष्ण जी अपने स्थान पर लौट आये। तदुपरान्त उन्होंने जृम्भणास्त्र का प्रयोग करके शिवजी को सुला दिया।''

तिरपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! जब बाणासुर ने अपनी सेना के बल में कमी देखी तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और सिंहनाद करता हुआ श्री कृष्ण जी के सामने आकर घोर युद्ध करने लगा। श्री श्यामसुन्दर ने अपने धनुष पर अनेक बाण चढ़ाकर बाणासुर के ऊपर चलाये, परन्तु बाणासुर ने भी उनके सब बाणों को काटते हुए अपने बाणों द्वारा उन्हें चारों ओर से ढक दिया। जिस समय कुम्भाण्ड ने अपने प्रहारों द्वारा यदुवंशी सेना को विचलित कर दिया, उस समय बलराम जी ने अपने हल-मूसल द्वारा कुम्भाण्ड के मस्तक को हिलाने की चेष्टा की। यह देखकर कुम्भाण्ड ने बलराम जी के हृदय पर अपने त्रिशूल का प्रहार किया और उन्हें मूर्च्छित करके पृथ्वी पर डाल दिया।

हे नारद ! गरुड़ जी भी रणक्षेत्र में लड़ने लगे। इनके पंख-प्रहारों से व्याकुल होकर दैत्यों की सेना युद्ध क्षेत्र से भागने लगी यह देखकर बाणासुर ने अपने त्रिशूल द्वारा गरुड़ को मूर्च्छित करके पृथ्वी पर गिरा दिया। कुछ देर पश्चात् जब गरुड़ की मूर्च्छा टूटी तो फिर वे युद्ध क्षेत्र से भाग गये। तदुपरान्त बाणासुर व श्री कृष्ण जी में इस प्रकार का घोर युद्ध होने लगा कि सम्पूर्ण संसार में हाहाकार मच गया। उस युद्ध में दोनों ओर से इतने बाण चले कि उनसे सम्पूर्ण आकाश भर गया।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

हे नारद ! तदुपरान्त बाणासुर ने श्री कृष्ण जी के साथ घोर युद्ध आरम्भ किया। तब श्री कृष्णचन्द्र जी ने अपनी बाण-वर्षा द्वारा बाणासुर के रथ के घोड़ों को मार गिराया। फिर उन्होंने एक बाण ऐसा छोड़ा कि उसके लगते ही बाणासुर घायल हो पृथ्वी पर गिर गया और मूर्च्छित हो गया। कुछ देर बाद जब उसे होश हुआ, तब वह त्रिशूल हाथ में लेकर श्री कृष्ण जी से फिर युद्ध करने लगा। उसने अपने त्रिशूल द्वारा श्री कृष्ण जी को बहुत दुःख पहुँचाया। तब श्री कृष्ण जी ने अपने बाणों से उसके त्रिशूल एवं गदा को काट दिया तथा उसके अन्य शस्त्रों को भी बेकार कर दिया। यह देखकर बाणासुर ने श्री कृष्ण जी के धनुष को काट डाला। तब श्री कृष्ण जी ने शिवजी के शाप का स्मरण करते हुए बाणासुर को पकड़ लिया और अपने चक्र द्वारा उसकी सम्पूर्ण भुजाओं को काट डाला, केवल चार भुजाएँ शेष रहने दीं। शिवजी की कृपा से बाणासुर को भुजाओं के कटने का दुःख नहीं हुआ और उसके सभी घाव तुरन्त भर गये।

हे नारद ! उस समय श्री कृष्ण जी का क्रोध इतना बढ़ा कि उन्होंने बाणासुर के मस्तक को काट डालने की इच्छा प्रकट की। यह जानते ही श्री शिवजी जो एक ओर सोये पड़े थे, तुरन्त जग पड़े और श्री कृष्ण जी की ओर क्रोध पूर्वक देखते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे कृष्ण ! हमने जो आज्ञा दी थी, उसे तुम पूरी कर चुके ; अब बाणासुर के मस्तक को मत काटो। तुम्हें ज्ञात होगा कि तारक तथा रावण पर जब तुमने यह चक्र चलाया था, उस समय यह निष्फल सिद्ध हुआ था, क्योंकि वे दोनों हमारे भक्त थे। इसलिए हमारे भक्त बाणासुर पर तुम इतना क्रोध मत दिखाओ और इसके साथ प्रेम-संबंध स्थापित करके उषा सहित अनिरुद्ध को अपने घर ले जाओ तथा हमारा स्मरण करते रहो। शिवजी की इस आज्ञा को श्री कृष्ण जी ने स्वीकार कर लिया। तब शिवजी ने बाणासुर तथा श्री कृष्ण जी में मित्रता स्थापित करा दी। तदुपरान्त बाणासुर ने अनिरुद्ध के साथ उषा का विवाह करा दिया और श्री कृष्ण-बलराम आदि सभी लोगों को दान-मान से सन्तुष्ट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

किया। सब रीतियाँ सम्पन्न हो जाने पर श्री कृष्ण जी अनिरुद्ध और उषा को साथ ले, बाणासुर से विदा हो, अपने नगर में जा पहुँचे। बाणासुर भी शिवजी का गण बनकर दैत्य पद त्याग, देवता हुआ।''

चौवनवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनकर नारद जी ने कहा—''हे पिता ! जब श्री कृष्ण जी अनिरुद्ध और उषा को साथ लेकर द्वारका को चले गये, तब बाणासुर ने क्या किया, वह आप मुझे बताने की कृपा करें? शिवजी ने बाणासुर को अपना गण किस प्रकार बनाया वह वृत्तान्त भी मुझसे विस्तारपूर्वक कहिये।'' यह सुनकर ब्रह्मा जी बोले—''हे पुत्र ! श्री कृष्ण चन्द्र के चले जाने के पश्चात् बाणासुर अपनी मूर्खता पर अत्यन्त लज्जित हुआ तथा अपने अहंकार को धिक्कारने लगा। उस समय नन्दीश्वर ने बाणासुर के पास पहुँचकर उसे समझाते हुए कहा—''हे बाणासुर ! तुमने शिवजी के सम्मुख अपने अहंकार का प्रदर्शन किया था, उसी का यह फल तुम्हें प्राप्त हुआ है। अब तुम शिवजी की शरण में जाओ। शिवजी की इच्छा से जो कार्य हो, तुम उसी में प्रसन्न रहा करो और सम्पूर्ण अहंकार को त्याग करके उन्हीं की सेवा में लगे रहो। तुम ताण्डव नृत्य द्वारा शिवजी को रिझाओ। तब वे प्रसन्न होकर तुम्हारी चिन्ताओं को नष्ट कर देंगे।''

हे नारद ! यह सुनकर बाणासुर अत्यन्त प्रसन्न हो, शिवजी के समीप जाकर रोने लगा और अपने अपराध की क्षमा माँगते हुए स्तुति करने लगा। तदुपरान्त उसने शिवजी के सम्मुख तांडव नृत्य करना आरम्भ किया। उस नृत्य में उसने पदगति, प्रत्यालीढ़, प्रमुखगति, मदनबाणगति तथा सरकंपा आदि सब प्रकार की गतियों एवं भावों का प्रदर्शन किया। उस नृत्य को देखकर शिवजी ने अत्यन्त प्रसन्न होकर बाणासुर से यह कहा—''हे बाणासुर ! तेरे नृत्य एवं गायन द्वारा हम अत्यन्त प्रसन्न हैं। तू हमें अत्यन्त प्रिय है। इसलिए हमने अपनी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

लीला द्वारा तेरे अहंकार तो नष्ट कर दिया है। अब तू जो चाहे, वरदान माँग ले।'' यह सुनकर बाणासुर ने उत्तर दिया। ''हे प्रभो ! आप मेरे ऊपर यही कृपा कीजिये कि मेरा शरीर दैत्यभाव से छूट जाए और मैं आपके गणों में स्थान प्राप्त करूँ। इसके साथ ही आप मुझे यह वरदान भी दीजिये कि मेरी पुत्री उषा द्वारा जिस बालक की उत्पत्ति हो, वही शोणितपुर का राज्य प्राप्त करें। वह बालक देवताओं से कभी भी शत्रुता न करें तथा मेरे वंश से दैत्य भाव सदा के लिए नष्ट हो जाए। मैं यह भी चाहता हूँ कि मुझे आपकी नवधा भक्ति की प्राप्ति हो और मैं आपके भक्तों से विशेष स्नेह रखूँ।''

हे नारद ! इतना कहकर बाणासुर शिवजी के चरणों पर गिर पड़ा। स्नेह की अधिकता के कारण उसके नेत्रों से अश्रु-धार बह निकली और कंठ गद्‌गद्‌ हो गया। यह दशा देखकर, शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हो, बाणासुर को अपने हाथों से उठा कर हृदय से लगाते हुए बोले— ''हे बाणासुर ! तुम हमारे परम भक्त हो। तुमने हमसे जो वरदान मांगते हैं, हम उन सबको तुम्हें देते हैं। तुम हमारे गणों के स्वामी होकर महाकाल नाम से प्रसिद्ध होगे। तुम युद्ध में कभी भी किसी से परास्त न होगे और हमारी कृपा से सभी देवता तुम्हारे सेवक बने रहेंगे।''

इतना कह शिवजी ने बाणासुर को अत्यन्त स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा और उसके मस्तक पर अपना हाथ फेरने लगे। उस समय बाणासुर भी अत्यन्त प्रसन्न हुआ तथा महाकाल होकर शिवजी की सेवा में रहने लगा।''

पचपनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब हम तुम्हें नागासुर अर्थात् गज के संहार का वृत्तान्त सुनाते हैं। जिस प्रकार शिवजी ने अपने त्रिशूल द्वारा उसका वध करके, उसे अपना गण बनाया था, वह कथा सुनो। जब भगवती जगदम्बा ने विष्णु जी तथा मुझ पर कृपा करते हुए

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

भगवान् सदाशिव की आज्ञानुसार देवताओं एवं ऋषि-मुनियों का उपकार करने के हेतु महिषासुर का संहार किया, तब उसका पुत्र गजासुर अत्यन्त दुःखी हो, अपने पिता के वध का स्मरण कर, देवताओं से बदला लेने की इच्छा करने लगा। इसी उद्देश्य से उसने वन में जाकर अत्यन्त परिश्रम पूर्वक हमारा तप करना आरम्भ किया। उसकी अभिलाषा यह थी कि जो स्त्री-पुरुष कामदेव से नहीं जीत पाये हैं, उनमें से कोई भी मेरा संहार न कर सके। अस्तु, वह हिमाचल के शिखर पर अँगूठे के बल खड़ा हो, आकाश की ओर आँखें उठाये, अपनी दोनों भुजाओं को ऊँचा किये, बहुत वर्षों तक तपस्या करता रहा।

हे नारद ! उसकी तपस्या के तेज के सम्मुख सूर्य का तेज भी मलिन पड़ गया। जब उसका तप पूर्णता को प्राप्त करने के निकट पहुँचा, उस समय उसके शरीर से अग्नि की ऐसी ज्वाला उठी कि वह अपने तेज द्वारा सम्पूर्ण संसार को भस्म करने लगी। उस समय सब देवता, ऋषि, मुनि आदि अत्यन्त दुःखी होकर मेरे पास आये और गजासुर के तप का वर्णन करते हुए कहने लगे—"हे प्रभो ! आप कृपा करके गजासुर के पास जाइये और उसे वरदान देकर सन्तुष्ट कीजिये, अन्यथा हमारा दुःख बढ़ता ही चला जाएगा। देवताओं की यह प्रार्थना सुनकर मैं, भृगु तथा दक्ष आदि अपने पुत्रों को साथ ले गजासुर के पास पहुँचे। वहाँ उसे उग्र तप करते हुए देखकर मैं अत्यन्त आश्चर्य में भरकर बोला—"हे गजासुर ! हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हैं। तुम जो वरदान चाहो, माँग लो।"

हे नारद ! मेरे मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर गजासुर ने अपने नेत्र खोलकर मुझे प्रणाम किया। तदुपरान्त बहुत प्रकार से स्तुति करते हुए इस प्रकार बोला—"हे प्रभो ! मैं यह चाहता हूँ कि जो स्त्री-पुरुष कामदेव के आधीन रहते हैं, उनमें से कोई भी, मुझे किसी दशा में नहीं मार सके तथा मेरे ऊपर किसी भी शस्त्र का प्रहार अपना प्रभाव न डाल सके।" गजासुर की यह इच्छा सुनकर मैं 'एवमस्तु' कहकर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

अपने स्थान को लौट आया। तब गजासुर भी अपने घर लौट गया। वहाँ जाकर उसने बहुत-सी सेनाएँ इकट्ठी कीं और तीनों भुवनों को अपने पराक्रम से जीत लिया। फिर वह अच्छी तरह से प्रजा का पालन करता हुआ निष्कंटक राज्य करने लगा। इस प्रकार कुछ समय तक तो उसने धर्मपूर्वक राज्य किया, परन्तु जब उसे राज्य-पद का अहंकार हुआ और यह विश्वास हो गया कि उसे कोई भी नहीं जीत सकता, तब वह अधर्म करने पर उतर आया। उस समय उसने ब्राह्मणों को अनेक प्रकार के कष्ट देने आरम्भ कर दिये तथा तपस्वियों एवं धर्मात्माओं को भी सताने लगा। एक दिन वह अहंकार में भर, शिवजी की राजधानी आनन्दवन अर्थात् काशी जा पहुँचा।

हे नारद ! उसके उत्पातों से भयभीत होकर आनन्दन वन अर्थात् काशी के निवासी शिवजी के समीप जा, हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगे—"हे प्रभो ! तीनों लोकों को जीतने के पश्चात् गजासुर अब काशीपुरी में भी आ पहुँचा है। उसने अपने अत्याचारों से सब लोगों को दुःख पहुँचाया है। जिस समय वह हाथी के समान चाल से चलता है, उस समय पर्वत हिल उठते हैं तथा वृक्ष टूटकर गिर पड़ते हैं। बादल उसकी आज्ञा पाकर भी आकाश में उड़ सकते हैं तथा उसके भय से समुद्र भी सूख जाते हैं। इस समय वाराणसी क्षेत्र में जाकर उसने अपने भक्तों को बहुत दुःख पहुँचाया है। आपके अतिरिक्त उसे जीतने वाला अन्य कोई नहीं है। अतः आप उसका संहार करके सब लोगों को प्रसन्न कीजिए।"

हे नारद ! काशीवासियों की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी अपने हाथ में त्रिशूल लेकर काशी में जा पहुँचे। वहाँ गजासुर के सम्मुख पहुँचकर उन्होंने ऐसा भयानक नाद किया कि उसे सुनकर दैत्यों की सेना में हाहाकार मच गया। जिस समय गजासुर ने शिवजी को त्रिशूल लेकर अपनी ओर आते हुए देखा, उस समय वह भी गर्जन करता हुआ, उनके सम्मुख युद्ध करने के लिए चला आया। देखते-देखते शिवजी तथा गजासुर परस्पर घोर युद्ध करने लगे। उस समय शिवजी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

ने गजासुर के सभी शस्त्रों को काटकर, उसकी सेना को विचलित कर दिया। यह दशा देखकर गजासुर अपने हाथ में नंगी तलवार लेकर, शिवजी को मारने के लिए दौड़ा और उन्हें ललकारते हुआ इस प्रकार कहने लगा—"हे शिव ! आज मैं तुम्हें जीवित नहीं छोड़ूँगा।" इतना कहकर उसने सभी गणों को अपने शस्त्रों की चोट से व्याकुल कर दिया। यह देखकर शिवजी ने अपने मन में निश्चित किया कि अब बिना विलम्ब किये, मुझे इसका वध कर डालना चाहिए। अस्तु, शिवजी ने अपना त्रिशूल गजासुर के ऊपर छोड़ दिया। उस त्रिशूल का स्पर्श पाते ही गजासुर पवित्र हो गया तथा उसका दैत्यभाव नष्ट हो गया। उस समय वह अत्यन्त प्रसन्न हो, शिवजी की स्तुति करते हुए इस प्रकार कहने लगा—"धन्य भाग्य हैं, जो मुझे आपके द्वारा मृत्यु प्राप्त हुई। अब मेरी यह प्रार्थना है कि आप मुझे परम पद प्रदान करने की कृपा करें। संसार में जो जन्म लेता है, उसे एक न एक दिन अवश्य मरना पड़ता है, परन्तु मुझे जो मृत्यु मिली है, उसे वेद भी अत्यन्त दुर्लभ कहते हैं।"

हे नारद ! गजासुर के ऐसे भक्तिपूर्ण वचन सुनकर, शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा—"हे गजासुर ! तेरे अत्यन्त भक्तिपूर्ण वचन सुनकर, हम अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं। अब तेरी जो इच्छा हो, वह वर माँग ले। शिवजी के श्रीमुख से निकले हुए इन वचनों को सुनकर गजासुर बोला—"हे प्रभो ! यदि आप मुझ पर इतने प्रसन्न हैं तो मुझे यह सौभाग्य प्रदान कीजिये कि आप मेरे शरीर के चमड़े को हर समय धारण किये रहें और आपके त्रिशूल से मेरे शरीर का प्रतिदिन स्पर्श हुआ करें। इसके साथ ही आप कृत्तिवासा के नाम से प्रसिद्ध हों। जो मनुष्य आपके इस नाम को मुख पर लावें, वे अपना सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त करें।"

हे नारद ! गजासुर की यह प्रार्थना सुनकर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा। फिर इस प्रकार बोले—"हे गजासुर ! तेरा यह शरीर हमारा लिंग होकर कृत्तिवासेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा तथा जो इस लिंग

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

का दर्शन करेंगे, उनके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाएंगे। काशी में हमारे जितने भी लिंग हैं, उनमें इसे सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त होगा।'' यह कहकर शिवजी ने गजासुर को परमपद प्रदान किया। हम सब देवता भी उस स्थान पर जा पहुँचे और कृत्तिवासेश्वर का पूजन करके आनन्द मग्न हुए। हे नारद ! शिवजी का यह चरित्र आवागमन से छुड़ाने वाला है। जो व्यक्ति इस चरित्र को सुनता-सुनाता है, उसके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।''

छप्पनवाँ अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! अब मैं तुम्हें दुन्दुभि के संहार की कथा सुनाता हूँ। जिस प्रकार विष्णु जी ने नृसिंह का अवतार धारण कर देवताओं को आनन्द प्रदान करने के लिए दिति के दोनों पुत्रों को मारा था, वह अद्‌भुत वृत्तान्त तुम जानते ही हो। अब आगे की कथा सुनो। जब विष्णु जी ने नृसिंह तथा वाराह रूप धारण कर दिति के दोनों पुत्रों का संहार कर दिया, उस समय दिति ने अत्यन्त विलाप किया। तब दिति के भाई दुन्दुभि ने उसे समझाते हुए यह कहा कि तुम किसी प्रकार का शोक मत करो। परन्तु दिति का शोक दूर न हुआ। यह देखकर दुन्दुभि ने अपने मन में विचार किया कि देवताओं ने विष्णु के हाथ से मेरे बहनोई को अनायास मरवा डाला है, इसलिए मुझे उन्हें कष्ट पहुँचाना चाहिए। सबसे पहले मुझे यह पता लगाना चाहिए कि वे किस कारण अमर हैं और किसके बल का भरोसा रखते हैं तथा किस उपाय द्वारा उन्हें दुःख पहुँचाया जा सकता है। अस्तु, बहुत सोच-विचार करने के उपरान्त वह इस निश्चय पर पहुँचा कि ब्राह्मण, वेद द्वारा अपनी रक्षा करते हैं और देवता, ब्राह्मणों द्वारा पलते हैं। यदि ब्राह्मण नष्ट हो जाएँ तो वेद भी नष्ट हो जायेंगे और जब वेद नष्ट हो जायेंगे, तब देवता भी दुर्बल हो जायेंगे। इस प्रकार जब देवता दुर्बल हो जायेंगे, तब मैं उन्हें जीतकर उन पर राज्य करूँगा और आनन्द

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

को प्राप्त होऊँगा। अस्तु जिस प्रकार ब्राह्मण संसार में सबसे बड़े हैं और वेद के मार्ग पर चलते हैं, उसी प्रकार काशी ब्राह्मणों का सबसे बड़ा घर है। इसलिए मुझे सर्वप्रथम काशी में पहुँच कर ब्राह्मणों को मारना चाहिए, तदुपरान्त अन्य स्थानों में जाकर ब्राह्मणों को नष्ट करना चाहिए।

हे नारद ! यह विचार कर दुन्दुभि काशी में जा पहुँचा। वहाँ उसने सहस्त्रों ब्राह्मणों का वध कर डाला। जब ब्राह्मण उसके भय से भयभीत हो, अपने प्राणों की रक्षा करने के हेतु वन में भागने लगे, तब वह वन में जाकर उन सबको मारने लगा। वह अनेक प्रकार की माया करना जानता था, इसलिए कभी वन में जाकर पशु बन जाता, कभी जल में पहुँचकर मगर बन जाता और कभी पृथ्वी पर रहकर राक्षस रूप द्वारा ब्राह्मणों को खा लेता था। एक दिन की बात है कि रात्रि के समय एक शिवभक्त शिवजी के मन्दिर में बैठकर पूजा कर रहा था। उस समय दुन्दुभि ने उसे देखकर यह विचार किया कि मैं सिंह का स्वरूप धारण कर, इसे मार डालूँ ; परन्तु जब उसने यह देखा कि सिंह का रूप धारण करके मैं उसे नहीं खा सकता हूँ तब वह पर्वत के समान विशाल स्वरूप धारण कर, उसे स्पर्श करने में भी असमर्थ रहा। उसका यह अनाचार देखकर, शिवजी भक्त की रक्षा हेतु उसी क्षण व्याघ्र के रूप में प्रकट हो गये।

हे नारद ! जब उसने वहाँ शिवजी को उपस्थित देखा तो यह इच्छा प्रकट की कि मैं शिवजी को भी निगल जाऊँ। यह विचारकर वह जैसे ही शिवजी की ओर बढ़ा, वैसे ही शिवजी ने अत्यन्त क्रोध में भरकर उसे पकड़ लिया और अपनी मुष्टिका द्वारा उसे मार डाला। इस प्रकार शिव-भक्त के प्राण बच गये। दुन्दुभि के मारे जाने पर जो घोर-शब्द हुआ था, उसे सुनकर शिव भक्त की आँखें खुल गयीं। तब उसने शिवजी की अत्यन्त प्रशंसा की। उस समय सभी काशी वासी उस स्थान पर आकर एकत्र हो गये तथा दुन्दुभि को मरा हुआ देखकर अत्यन्त प्रसन्न हो, शिवजी की स्तुति करने लगे। उन्होंने शिवजी को

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

प्रणाम करने के उपरान्त कहा—"हे प्रभो ! आप अब इसी स्वरूप में यहीं स्थित रहें तथा 'व्याघ्र' नाम से प्रसिद्ध होकर अपनी काशी नगरी की रक्षा करें। हम सब लोग आपके दर्शनों से अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं।"

हे नारद ! उनकी प्रार्थना को सुनकर शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा तदुपरान्त बोले—"हे भक्तो ! जो व्यक्ति निश्चयपूर्वक एवं विश्वासपूर्वक मेरे स्वरूप का ध्यान धरेगा, मैं उसके सम्पूर्ण दुःखों को दूर किया करूँगा। जो व्यक्ति मेरे इस चरित्र का स्मरण करके युद्ध करने के लिए जायेगा, उसे अवश्य ही विजय प्राप्त होगी।" शिवजी के मुख से यह वचन सुनकर सब लोगों को अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उसी समय मैं तथा विष्णु जी भी सब देवताओं सहित वहाँ जा पहुँचे और शिवजी की स्तुति करते हुए कहने लगे—"हे प्रभो ! दुन्दुभि को मारकर आपने तीनों लोकों तथा हमारी रक्षा की है। हम सब आपके सेवक हैं और आप हमारे स्वामी हैं।" यह सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो, हम लोगों को अभयदान दिया। तदुपरान्त वे अपने उसी लिंग में, जो 'व्याघ्रेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है, प्रवेश करके अन्तर्धान हो गये। तब मैं, विष्णु जी तथा सभी देवता अपने-अपने लोक को लौट आये और काशीवासी भी अपने-अपने घर चले गये।"

सत्तावनवाँ अध्याय

इतनी कथा सुनाकर ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! एक उत्पल एवं विदल नामक दो महा बलवान् दैत्य उत्पन्न हुए। वे दोनों वन में पहुँचकर बहुत वर्षों तक उग्र तपस्या करते रहे। उन्होंने मेरा ध्यान धरते हुए, एक पाँव से खड़े होकर बहुत समय व्यतीत किया। उस समय मैं प्रसन्न होकर, वरदान देने के लिए बोला—"हे भक्तो ! मैं तुम्हारी तपस्या से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अब तुम मुझसे इच्छित वरदान माँग लो।" यह सुनकर उन दोनों भाइयों ने कहा—"हे ब्रह्मन् ! आप हमें यह वरदान दीजिये कि हम किसी भी पुरुष के हाथ से न मारे जायँ।" यह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:22 AM

सुनकर मैंने शिवजी का ध्यान धरते हुए "एवमस्तु" कहा तथा अपने स्थान को लौट आया। मुझसे वरदान प्राप्त कर लेने के कारण वे महाबली अजेय हो गये। अस्तु, उन्होंने अपने बल द्वारा तीनों लोकों को जीत लिया और देवताओं को बहुत दुःख दिया। उन्होंने देवताओं के अधिकार, धन एवं सब प्रकार की वस्तुओं को छीन लिया और निर्भय होकर तीनों लोकों पर अपना शासन करने लगे। जब उनके अत्याचार बहुत अधिक बढ़ गये, तब सब देवता और मुनि अत्यन्त दुःखी होकर मेरी शरण में आये और मुझसे यह कहने लगे कि "हे ब्रह्मन् ! आप इन दुष्टों के हाथों से हमारी रक्षा करें अन्यथा हम लोग कहीं के भी नहीं रहेंगे।" यह सुनकर मैंने उन्हें उत्तर दिया—"हे देवताओ ! वे दोनों दैत्य मेरे वरदान के कारण अजेय हैं। केवल शिवजी के द्वारा ही मृत्यु को प्राप्त हो सकते हैं। अस्तु, तुम लोग शिवजी का ध्यान धरो।"

हे नारद ! यह सुनकर सब देवता आदि अपने स्थान को चले गये। तदुपरान्त एक दिन तुम उन दैत्यों के पास जा पहुँचे तुमने उनकी बहुत प्रशंसा की और यह कहा कि गिरिजा परम सुन्दरी हैं, जब तक वे तुम्हें प्राप्त नहीं हो जातीं, तब तक तुम्हारा राज्य, कोष आदि सब कुछ निष्फल है। इतना कहकर तुम तो वहाँ से चले गये और उन दैत्यों ने यह विचार किया कि किसी-न-किसी प्रकार हम गिरिजी को अवश्य छीन लावें। बहुत समय तक वे यही विचार करते रहे कि हम किस उपाय का आश्रय लें, जिससे गिरिजा हमारे हाथ आ जाएँ। उनकी इस मनोभिलाषा को शिवजी भी जान गये। तब उन्होंने एक विचित्र लीला ऐसी रच दी, जिसके अनुसार उन दोनों दैत्यों की मृत्यु हो गयी। वह लीला यह थी कि एक दिन शिवजी अपने गणों के साथ कोई खेल खेलने लगे और गिरजा भी अपनी सखियों के साथ गेंद का खेल खेलने लगीं। उसी समय भाग्यवश वे दोनों दैत्य भी गिरिजा को प्राप्त करने की इच्छा से आकाश मार्ग द्वारा उस स्थान पर जा पहुँचे। वहाँ जाकर उन्होंने अपना स्वरूप शिवगणों जैसा बनाया और गिरिजा के समीप पहुँच कर, यह इच्छा प्रकट की कि उन्हें वहाँ से भगा ले जाएं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे नारद ! उनकी इच्छा को जानकर, शिवजी ने संकेत द्वारा गिरिजा से यह कहा कि ये दोनों हमारे गण नहीं हैं। अपितु दैत्य हैं। ये किसी पुरुष द्वारा नहीं मारे जायेंगे, अतः तुम्हीं इनका संहार कर डालो। शिवजी के उस संकेत को समझकर गिरिजा ने उन दोनों को मारने का निश्चय किया और अपनी गेंद को उन दोनों के ऊपर फेंक दिया। गेंद के लगते ही वे दोनों दैत्य चक्कर खाते हुए पृथ्वी पर गिर पड़े और मृत्यु को प्राप्त हो गये। उस समय विष्णु जी, मैं तथा अन्य सब देवता उस स्थान पर पहुँच गये, जहाँ ज्येष्ठेश्वर उपलिंग है। वहाँ हमने शिवजी तथा गिरिजा जी की स्तुति करते हुए कहा—"हे संसार के माता-पिता ! आप अपने भक्तों के निमित्त अनेक प्रकार की लीलाएँ किया करते हैं। इस समय भी यह 'गयन्दकेश' नामक आपका लिंग प्रकट हुआ है। आप सदैव इसी प्रकार हम लोगों पर कृपा बनाये रहें तथा दुष्टों का संहार करते रहें।" इस प्रकार प्रार्थना कर सब देवता अपने स्थानों को लौट गये और शिवजी का वह लिंग उसी स्थान पर स्थित रहा। हे नारद ! उस शिवलिंग की सेवा करने से दोनों लोकों में अपार आनन्द मिलता है। वह लिंग 'पुण्डलेश' के नाम से भी प्रसिद्ध है। शिवजी के इस चरित्र को जो कोई सुनता अथवा सुनाता है, उसे दोनों लोकों में अत्यन्त आनन्द प्राप्त होता है। जो लोग शिवजी के चरणों का ध्यान धरते हुए, उनकी लीलाओं को भक्तिपूर्वक सुनते हैं, उनकी तीनों व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं और उन्हें अपार धन की प्राप्ति होती है।"

इति श्रीशिवपुराणे श्रीशिवविलासे ब्रह्मा-नारद-सम्वादे दीक्षितकृत भाषायां पंचमो खण्ड समाप्तः ॥ ५॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव महापुराण

(सरल भाषा)

छठा खण्ड

पहला अध्याय

इतनी कथा सुना कर श्री सूत जी ने कहा—"हे शौनकादि ऋषियो ! जब ब्रह्मा जी यह वृत्तान्त कह चुके तो नारद जी ने सन्देह से युक्त हो कर कहा—"हे पिता ! आपने अन्धकासुर की कथा मुझे सुनायी, परन्तु मुझे उसमें कुछ सन्देह उत्पन्न हुआ है। अस्तु आप उसे दूर करने की कृपा करें। हे ब्रह्मन् ! आप मुझे यह बतावें की शिवजी कैलाश छोड़ कर मन्दराचल को कब गये?" नारद के मुख से यह शब्द सुन कर ब्रह्मा जी ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा—"हे नारद ! प्राचीन काल में एक दिन श्री शिवजी तथा श्री गिरिजा जी अपने गणों के साथ काशीपुर गये। उस समय मैं, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवता ऋषि-मुनि तथा सिद्धजन आदि भी अपने परिवार एवं गणों सहित शिवजी की सेवा करने के लिए वहाँ जा पहुँचे। वहाँ सब के पहुँच जाने पर, शिवजी की जो सभा विराजमान हुई, उसकी सुन्दरता का किसी भी प्रकार वर्णन नहीं किया जा सकता।

हे नारद ! सर्वप्रथम हम लोगों ने मणिकर्णिका में स्नान किया, तदुपरान्त भगवान् विश्वनाथ का पूजन कर उनकी अनेक प्रकार से स्तुति-प्रशंसा की। तत्पश्चात् शिवजी के गणों ने भी बहुत प्रकार से पूजा-स्तुति की। कैलाशपति शिवजी ने भी जब हम लोगों के साथ भगवान् विश्वनाथ की पूजा की, उस समय काशीपति विश्वनाथ ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर अपनी दोनों भुजाएँ फैला कर गिरिजापति से भेंट करते हुए कहा—"हे कैलाशपति ! चन्द्रभाल, हम और आप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

एक ही स्वरूप हैं। आप में और मुझ में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। मैं यहाँ पर मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित हूँ और आप संसार का उपकार करने के हेतु सगुण रूप धारण कर, गिरिजा के साथ कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं। आप ने यह बड़ी कृपा की, जो आप सब देवताओं के साथ यहाँ पधारे।''

हे नारद ! काशीवासी भगवान् विश्वनाथ के मुख से यह वचन सुन कर, कैलाशपति शिवजी ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा—''हे काशीपति ! वास्तव में मुझ में और आप में किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है। आप मुझे कैलाश पर्वत पर जाने की आज्ञा दीजिये, क्योंकि मैं यहाँ केवल आप के दर्शनों के निमित्त ही आया था।'' यह सुन कर श्री विश्वनाथ जी ने हँस कर कहा—''हे कैलाशपति ! मेरी इच्छा है कि अब आप देवताओं तथा मुनीश्वरों के साथ कुछ दिनों तक इसी काशी नगरी को अपनी राजधानी बना कर, गिरिजा एवं गणों सहित यहीं निवास करें तथा भरत खण्ड पर अनुग्रह करके संसार के मनुष्यों को कृतार्थ करें। जिस प्रकार आप कैलाश पर्वत को प्रिय समझते हैं, उसी प्रकार इस स्थान को भी प्रिय जान कर, यहीं स्थित हों। इस काशीपुरी में जो मनुष्य रहें आप उन्हें मोक्ष प्रदान किया करें। हे कैलाशपति ! तीनों लोक आपकी आज्ञा में रहते हैं। आप सबसे श्रेष्ठ और सब के स्वामी हैं। ब्रह्मा तथा विष्णु भी आपके अधीन हैं। आप ही उनकी रक्षा करते हैं और आपकी सेवा करके ही उन्होंने अत्यन्त उच्च पद को प्राप्त किया है। ब्रह्मा सृष्टि को उत्पन्न करते हैं और विष्णु उसका पालन करते हैं। इन दोनों की आज्ञा पा कर देवराज इन्द्र राज्य किया करते हैं। अस्तु, आप संसार का उपकार करने के निमित्त इन सब के ऊपर अपनी कृपा बनाये रहें।''

हे नारद ! काशीपति भगवान् विश्वनाथ जी के ऐसे वचन सुन कर कैलाशपति शिवजी ने कहा—''हे देवताओं के स्वामी ! यद्यपि मुझे कैलाश पर्वत अत्यन्त प्रिय है, क्योंकि वहाँ मेरे भक्त निवास करते हैं, फिर भी मैं काशी को उससे भी अधिक प्रिय जान कर आपकी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

आज्ञानुसार यहीं निवास करूँगा।'' कैलाशपति शिवजी के मुख से यह वचन सुन कर भगवान् विश्वनाथ अन्तर्धान हो गये तथा कैलाशपति शिवजी भगवान् विश्वनाथ के उसी स्थान पर अपने पूर्णांश द्वारा गुप्त हो कर निवास करने लगे। इस प्रकार काशी परम सिद्धपीठ के रूप में प्रसिद्ध हुई। भगवान् कैलाशपति के साथ गिरिजा जी भी वहीं निवास करने लगीं।

हे नारद ! उस काशीपुरी की महिमा ऐसी है कि जो मनुष्य वहाँ मरता है उसे श्री शिवजी तारक मन्त्र देकर मुक्ति प्रदान करने की कृपा करते हैं। वह काशी तीनों लोकों में सबसे श्रेष्ठ, सबसे पवित्र तथा प्रज्ञान क्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। अब मैं तुम्हें वह कथा सुनाता हूँ, जिस प्रकार भगवान् विश्वनाथ की आज्ञा पा कर गिरिजापति शिवजी ने काशी में राज्य किया और मनुष्यों के कष्टों को दूर किया। जब शिवजी ने काशी को अपनी राजधानी बनायी, तो भगवती गिरिजा भी वहीं रह कर अन्नपूर्णेश्वरी देवी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। उन्हीं की कृपा से काशी में कोई जीव भूखा नहीं रहता है। वे अपनी प्रजा के सम्पूर्ण मनोरथों को पूरा करती हैं।

हे नारद ! यह कथा मैं तुम्हें पहले सुना चुका हूँ कि शिवजी ने अपने अंश से एक मूर्ति को उत्पन्न किया था, जिसका नाम भैरव था। उन भैरव ने मेरे पाँचवें मस्तक को त्रिशूल द्वारा काट डाला था, क्योंकि मैंने उस मुख से शिवजी की निन्दा की थी। मेरा मस्तक काट डालने के कारण भैरव को ब्रह्म हत्या का पाप लगा। अस्तु, उसे दूर करने के हेतु वे संसार में भ्रमण कर रहे थे। जब वे सब स्थानों में भ्रमण करते हुए काशीपुरी में पहुँचे तो उनकी हत्या का पाप तुरन्त नष्ट हो गया। जिस स्थान पर मेरा मस्तक गिरा था उस स्थान पर शिवजी ने बड़ा नृत्य किया था, अस्तु वह स्थान एक पवित्र तीर्थ के रूप में कपालमोचन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह तीर्थ सम्पूर्ण पापों को नष्ट करने वाला है। हे नारद ! तुम्हें यह जान लेना चाहिए कि भैरव और कोई नहीं, अपितु शिवजी के ही एक स्वरूप हैं। अस्तु, काशी में निवास करने पर शिवजी ने भैरव को कोटिपाल का पद दिया और यह कहा कि ''हे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

भैरव ! तुम्हारा सम्पूर्ण पाप अब नष्ट हो चुका है। अब तुम यहीं हमारे पास रह कर काशी जी की रक्षा किया करो तथा पापियों को दंड देते हुए, सब प्रजा को कृतार्थ करते रहो।''

दूसरा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—''हे नारद ! एक दिन भगवान् गिरिजापति अपने गणों को साथ ले कर गिरिजा जी सहित नन्दी पर सवार हो, आनन्द वन देखने के लिए चले। आनन्द वन में पहुँच कर उन्होंने गिरिजा से उस क्षेत्र की अत्यन्त प्रशंसा की। वहाँ मन्दार, कनेर, केतकी, अनार, चमेली, कुन्द, मौलश्री, मालती, जुही, कमल आदि अनेक प्रकार के सुगन्धित पुष्प खिले हुए थे। श्रेष्ठ ताल-तमाल आदि के वृक्षों पर पक्षी बैठे हुए मधुर-स्वरों में गान करते थे तथा तीनों प्रकार की वायु हर समय चलती रहती थी। वहाँ ऋषि, मुनि, सिद्धजन आदि नदी किनारे बैठ कर अपने यम, नियम आदि का स्वच्छन्दतापूर्वक पालन किया करते थे। इस प्रकार वहाँ सर्वत्र आनन्द ही आनन्द था।

हे नारद ! उस उत्तम वन को देख कर भगवान् गिरिजापति ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर माली को बुलाया और उसे पारितोषिक आदि दे कर कृतार्थ कर दिया। तदुपरान्त वे वन के भीतर जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने गिरिजा से कहा—''हे प्रिये ! जिस प्रकार तुम हमें अत्यन्त प्रिय हो, उसी प्रकार यह काशी तथा आनन्द वन भी हमें अत्यन्त पसन्द है। जो व्यक्ति यहाँ आ कर मृत्यु प्राप्त करता है, उसे हम मोक्ष प्रदान करते हैं। यहाँ के रहने वाले सदैव प्रसन्न रहते हैं और हम उनके ऊपर अपनी विशेष कृपा बनाये रहते हैं।''

हे नारद ! यह कह कर शिवजी गिरिजा के साथ कुछ आगे चले तो उन्होंने यह देखा कि हरिकेश जी एक अशोक वृक्ष के नीचे बैठे हुए अत्यन्त प्रेमपूर्वक तपस्या कर रहे हैं और अपने मुख से विश्वनाथ का उच्चारण कर रहे हैं। उनके शरीर में केवल हड्डियाँ और नसें ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

दिखाई दे रही थीं। सिंह, सर्प आदि भयानक जीव अपने स्वाभाविक हिंसक भाव को त्याग कर उनकी रक्षा करने के लिए, उन्हें चारों ओर से घेरे खड़े थे। हरिकेश की यह दशा देख कर गिरिजा ने अत्यन्त दयालु हो कर शिवजी से कहा—"हे प्रभो ! यह आपका परम भक्त है और आपके भरोसे पर ही जीवित है, अतः यह जो भी वर माँगे, उसे देने की कृपा करें। आप इसके मस्तक पर अपना कर-कमल रखिये, जिससे यह चैतन्य हो!"

हे नारद ! गिरिजा के यह वचन सुन कर शिवजी ने बैल से उतर कर हरिकेश के शरीर को स्पर्श किया और उसे अपनी कृपा द्वारा कृतार्थ कर दिया। उस स्पर्श को पाते ही हरिकेश ने अपने नेत्र खोल दिये। उस समय उन्होंने यह देखा कि करोड़ों सूर्य की प्रभा के समान प्रकाशवान्, अपने शरीर पर भस्म रमाये हुए, पंचमुख, त्रिनेत्र, दस भुजाधारी भगवान् सदाशिव, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजमान है और वाम भाग में गिरिजा जी सुशोभित हैं, उनके नेत्रों के सम्मुख खड़े हुए हैं। भगवान् सदाशिव के उस स्वरूप को देख कर यक्षपति हरिकेश अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न हुए। तब वे शिवजी को प्रणाम करके उनकी स्तुति करते हुए बोले—"हे प्रभो ! आपने जो मेरे शरीर का स्पर्श किया, उससे मैं पूर्ण स्वस्थ हो चुका हूँ और मेरे सम्पूर्ण कष्ट पल भर में ही नष्ट हो गये हैं। हे नाथ ! मैं आपकी शरण में आया हूँ सो आप मेरे ऊपर कृपा कीजिये।"

हे नारद ! हरिकेश की इस प्रार्थना को सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हो, उसके बिना माँगे ही वरदान देने लगे। वे बोले—"हे हरिकेश ! तुम हमारे परम भक्त हो, अतः तुम्हें सब प्रकार का आनन्द प्राप्त होगा। यह काशीपुरी हमें अत्यन्त प्रिय है, अतः हम यह चाहते हैं कि तुम इसकी रक्षा का भार स्वीकार करो। तुम शत्रुओं को दंड देना और हमारे भक्तों को पालना। दंडधर और दंडकर होने के कारण तुम दंडपाणि के नाम से संसार में प्रसिद्ध होगे। हम तुम्हें संभ्रम तथा उद्भ्रम नामक दो गण, तुम्हारी आज्ञा का पालन करने के निमित्त देते

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

हैं। वे तुम्हारी आज्ञा पा कर पापियों को भली-भाँति दंड दिया करेंगे। हम तुम्हें यह भी आज्ञा देते हैं कि काशी में हमारे भक्तों के अतिरिक्त और किसी को मत रहने दो। तुम इस नगरी में रहने वालों को अन्न देने वाले, प्राण देने वाले, ज्ञान देने वाले तथा हमारी आज्ञा से मुक्ति प्रदान करने वाले भी होगे। जो मनुष्य तुम्हारी सेवा करके हमारी पूजा करेगा, वह मुक्ति को प्राप्त होगा। जिस मनुष्य को मोक्ष की अभिलाषा हो, उसे उचित है कि वह सर्व प्रथम तुम्हारी पूजा करे, तदुपरान्त इसी स्थान पर आ कर हमारी सेवा करे। तुम हमारे गणों में सर्वश्रेष्ठ हो।'' इतना कह कर शिवजी पार्वती सहित, अपने स्थान को चले गये।

हे नारद ! उसी दिन से दंडपाणि अथवा दंडविनायक काशी निवासियों को आनन्द प्रदान करते हुए वहाँ स्थित रहते हैं। वे दुष्टों के लिए अत्यन्त भयानक हैं तथा शिव-भक्तों के सम्पूर्ण दुःख दूर करने वाले हैं। संभ्रम तथा उद्‌भ्रम नामक उनके दोनों गण शिवजी के शत्रुओं को दंड तथा शिक्षा देते हैं। वे दंडपाणि शिवजी की इच्छानुसार ही सब कार्य करते हैं। वीरभद्र ने दंडपाणि का आदर नहीं किया, इसलिए उन्हें अप्रसन्न हो कर दूसरे स्थान पर रहना पड़ा अर्थात् दंडपाणि की सेवा न करने के कारण वीरभद्र को काशीवास प्राप्त न हो सका। अगस्त्य मुनि भी इसी कारण काशी में न रह सके। उनको भी दंडपाणि की सेवा न करने के कारण काशी त्याग देनी पड़ी।

हे नारद ! धनंजय नामक एक वैश्य बहुत धनवान् था। वह शिवजी की सेवा में कुछ भी ध्यान नहीं देता था, इसी प्रकार उसकी माता भी शिवजी के प्रति प्रेम नहीं रखती थी। अस्तु, जब धनंजय की माता मर गयी तो धनंजय उसकी हड्डियों को काशी में ले आया। यद्यपि उसे शिवजी से प्रेम नहीं था, फिर भी वह अपनी माता की मुक्ति की कामना करता था। यह देख कर दंडपाणि ने शिवजी की इच्छा से यह चरित्र किया कि धनंजय की माता की हड्डियों को उनके एक गण ने देख लिया, जिसके कारण वे तुरन्त ही अदृश्य हो गयीं। इस प्रकार जब वे हड्डियाँ गुप्त हो गयीं, तब धनंजय निरुपाय हो, अपने घर लौट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

आया। अस्तु, काशी में पहुँच कर जो मनुष्य दंडपाणि की सेवा नहीं करता, उसे बड़े-बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं और वह अधिक समय तक नहीं रहने पाता। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि यदि वह काशी में रहने की इच्छा रखे तो दंडपाणि की पूजा अवश्य करे और शिवजी की भक्ति द्वारा मुक्ति पद प्राप्त करे।''

तीसरा अध्याय

नारद जी ने कहा—''हे पिता ! हरिकेश का आदि से अन्त तक सम्पूर्ण वृत्तान्त आप मुझे सुनाने की कृपा करें।'' ब्रह्मा जी बोले—''हे नारद ! किसी समय में रत्नभद्र मुनि नामक यक्षपति गन्धमादन पर्वत पर रहा करता था। उसका परिवार बहुत बड़ा था तथा सभी सुख-सामग्रियाँ उसके घर में उपस्थित थीं। वह सब यक्षों का राजा था। वह परम सुन्दर तथा महा तेजस्वी था। वह शिवजी की भक्ति में सदैव संलग्न रहता था। उसकी पत्नी परम पवित्र, परम पतिव्रता थी। रत्नभद्र भी उससे बहुत स्नेह करता था। दोनों पति-पत्नी संसार की भलाई के निमित्त शुभ-कार्य करते थे और उससे शिवजी को प्रसन्न रखते थे। वे साधु-संतों को शिवजी के समान समझ कर, उनकी सब प्रकार से सेवा किया करते थे। वे प्रतिदिन पार्थिव-पूजन करते, भस्म लगाते, रुद्राक्ष की माला धारण करते तथा शिवजी का भजन करते रहते थे।

हे नारद ! उनके पूर्णभद्र नामक एक पुत्र था। वह भी अपने माता-पिता के समान गुणी एवं शिवभक्त था। माता-पिता उसकी सेवा एवं शुभ-कर्मों से सदैव प्रसन्न रहा करते थे। जब रत्नभद्र मुनि और उसकी पत्नी को मृत्यु प्राप्त हुई, तो वे दोनों मुक्त हो कर शिवपुरी में जा पहुँचे। पूर्णभद्र ने उनका यथाविधि दाह संस्कार किया। फिर वह अपनी चतुरंगिनी सेना सहित आनन्दपूर्वक राज्य करने लगा। हे नारद ! भाग्यवश पूर्णभद्र के कोई सन्तान नहीं हुई। तब एक दिन उसने अपने मन में यह विचार किया कि पुत्र दोनों लोकों में आनन्द प्रदान करने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

वाला होता है, गृहस्थाश्रम की शोभा उसी से है। वही अपने माता-पिता को स्वर्ग में पहुँचाता है और वही दुःख सागर में डूबे हुए माता-पिता को नाव के समान होता है। बिना पुत्र के किसी भी उपाय द्वारा वंश नहीं चलता। अस्तु, जब तक पुत्र की प्राप्ति न हो, तब तक मेरा जीवन व्यर्थ है।

हे नारद ! इस प्रकार पुत्र की चिन्ता में पड़ने से उसका सम्पूर्ण आनन्द दुःख में बदल गया और उसे सभी पदार्थ अशुभ तथा व्यर्थ से प्रतीत होने लगे। पूर्णभद्र की पत्नी कनक कन्दला पतिव्रता, शिव भक्तिनी तथा परम धर्मात्मा थी। एक दिन पूर्णभद्र ने उसे अपने समीप बुला कर कहा—"हे प्रिये ! घर में संसार की सम्पूर्ण वस्तुएँ उपस्थित हैं, परन्तु पुत्र के बिना वे सब मुझे अच्छी नहीं लगतीं। मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ और किस प्रकार अपने दुःख को दूर करूँ, यह समझ में नहीं आता।" उस समय उसकी स्त्री ने धैर्य बँधाते हुए यह कहा—"हे स्वामी ! आप बुद्धिमान् हो कर भी इस प्रकार दुःख क्यों कर रहे हैं? उपाय करने से कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रहती। मैं आपको एक उपाय बताती हूँ। जो लोग भगवान् सदाशिव के भक्त हैं, उन्हें संसार में कोई वस्तु अप्राप्य नहीं रहती। अस्तु, आप अपने मनोरथ को पूर्ण करने के निमित्त श्री शिवजी की शरण में जाइये। शिवजी की भक्ति द्वारा ही विष्णु जी ने संसार के पालनकर्त्ता का पद प्राप्त किया है। शिवजी की भक्ति से ही इन्द्र आदि दिक्पाल तथा शिलादि मुनि ने, जिसका नाम मृत्युंजय और नन्दीश्वर प्रसिद्ध है तथा श्वेतकेतु, उपमन्यु आदि ने उच्च पद प्राप्त किया है। इस प्रकार जिसने भी शिवजी की सेवा की, उसी ने अपनी मनोभिलाषा को सब प्रकार से प्राप्त किया। हे स्वामी ! वेद और पुराण कहते हैं कि शिवजी अपने भक्तों पर शीघ्र ही प्रसन्न हो कर उन्हें इच्छित वरदान देते हैं। अस्तु, आप भी निश्चयपूर्वक उन्हीं श्री शिवजी की शरण में जाएं।"

हे नारद ! अपनी पत्नी की बात सुन कर पूर्णभद्र अत्यन्त आनन्दित हुआ। तब वह शिव भक्ति में संलग्न हो, शिवजी के समीप काशीपुरी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

में जा पहुँचा। वह नादविद्या में अत्यन्त प्रवीण था। अस्तु, उसने भली-भाँति गाना गा कर शिवजी को प्रसन्न किया। उसने इक्कीस मूर्च्छना, पाँच सौ इक्यावन तानें तथा अनेक शाखाओं से युक्त बारह श्रुतिवेद शिवजी को सुनाये। उसके गायन को सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और बोले—"हे पूर्णभद्र ! हम तुम पर बहुत प्रसन्न हैं। अब तुम्हारी जो इच्छा हो, वह वरदान हमसे माँग लो।" यह सुन कर पूर्णभद्र शिवजी के चरणों का ध्यान धर कर, उनकी स्तुति प्रशंसा करने लगा।"

❀❀❀

चौथा अध्याय

ब्रह्मा जी ने कहा—"हे नारद ! जब पूर्णभद्र की स्तुति सुन कर शिवजी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उन्होंने उससे वरदान माँगने के लिए कहा, उस समय पूर्णभद्र ने प्रार्थना करते हुए यह कहा—"हे प्रभो ! यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो आप मुझे सन्तान दीजिये।" शिवजी यह सुन कर 'एवमस्तु' कहने के उपरान्त अन्तर्धान हो गये। तब पूर्णभद्र भी प्रसन्न हो कर अपने घर लौट आया और अपनी स्त्री से वर पाने का सब हाल कह सुनाया। कुछ समय बाद पूर्णभद्र की पत्नी गर्भवती हुई और उचित अवसर आने पर उसने एक पुत्र को जन्म दिया। उस बालक का नाम हरिकेश रखा गया। जब बालक की आयु आठ वर्ष की हुई, तभी से उसने अपना मन शिवजी के चरणों में लगा दिया। वह बालकों के साथ खेलते हुए मिट्टी का शिवलिंग बना कर, उत्तमोत्तम पुष्पों द्वारा उसका पूजन करता और अपने साथी अन्य बालकों से भी पूजन कराता। वह स्वयं शिव नाम का उच्चारण करता और दूसरों से भी कराता। शिव-चरित्र के अतिरिक्त अन्य किसी बात पर वह ध्यान ही नहीं देता था। वह शिवजी के पूजन में तथा उसके पाँव शिव तीर्थों की यात्रा में लगे रहे। इस प्रकार वह रात-दिन शिवजी का ही ध्यान करता, उन्हीं को देखता और उन्हीं के यश का गान किया करता था। वह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

9:23 AM

अपने शरीर में भस्म लगाये रहता और रुद्राक्ष की माला पहने, हर समय शिव-नाम का जप किया करता था।

हे नारद ! उसकी इस अवस्था को देख कर पूर्णभद्र ने एक दिन यह कहा—"हे पुत्र ! तुम शिवजी की कठिन तपस्या द्वारा मेरे घर में उत्पन्न हुए हो, अतः तुमको उचित है कि तपस्वियों के मार्ग को छोड़कर गृहस्थ बनो। मेरे घर में सब प्रकार के रत्न तथा सुख के साधन उपस्थित हैं, अतः उनमें अपना मन लगा कर, राजनीति को सीखो; जिससे भविष्य में प्रजा का भली-भाँति पालन कर सको। तुमने जिस मार्ग को अपनाया है, वह दरिद्रियों का मार्ग है।"

हे नारद ! पिता की आज्ञा का पालन करने में असमर्थ होने के कारण, हरिकेश अपने घर को छोड़ कर भाग गया। जिस समय वह अपने नगर से बाहर निकल कर आया तो उसे दिशाभ्रम हो गया। उस समय वह अत्यन्त पछता कर इस प्रकार सोचने लगा कि अब मैं कहाँ जाऊँ? मुझे यह दुःख अपने पूर्व जन्मों के पापों से ही प्राप्त हुआ है। हाँ, एक बार मैंने अपने पिता के समीप आये हुए संत लोगों से यह अवश्य सुना था कि जिनको माता-पिता छोड़ देते हैं अथवा जिनका कोई सहायक नहीं होता तथा जो लोग अधर्मी, भयभीत, दुःखी तथा शरणहीन होते हैं, उन्हें शिवजी सहायता प्रदान करते हैं और ऐसे अनाथ मनुष्यों को शिवजी की पुरी काशी में जा कर निवास करना चाहिए।

हे नारद ! इस विचार के आते ही वह लोगों से काशी का मार्ग पूछता हुआ वहाँ जा पहुँचा। काशी में पहुँच कर उसने सर्वप्रथम मणिकर्णिका में स्नान किया, तदुपरान्त भगवान् विश्वनाथ की पूजा की। इसके पश्चात् वह आनन्द वन में जा कर दृढ़तापूर्वक कठिन तपस्या करने लगा। वहाँ कुछ समय बाद गिरिजा सहित शिवजी ने पहुँच कर उसे जो वरदान दिया, उसका वर्णन पहले किया जा चुका है। शिवजी की भक्ति द्वारा हरिकेश ने अपने सम्पूर्ण कुल को तार दिया और उसके माता-पिता भी काशीवासी हो गये। हे नारद ! शिव-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

परस्पृष्टा च वै नारी या स्पृहां कुरुते परम्।
साऽपि दुष्टा परित्याज्या चेत्याह कमलोद्भवः॥११६॥
तस्मान्नारी परैर्यत्नाददृष्टा कृतिभिः कृता।
असूर्यंपश्या या दाराः शुद्धास्ताश्च पतिव्रताः॥११७॥

व्यभिचारिणी स्त्रियां क्षणकालिक सुख की लालसा के वश में होकर, पापिनी होकर परलोक में ऐसी दशा भोगती हैं। अन्य पुरुष द्वारा स्पर्श की गई नारी अथवा परपुरुष की कामना करने वाली नारी, ये दोनों ही दुष्टा एवं त्याज्य हैं। यह ब्रह्मा का कथन है। इसीलिये विद्वानों ने प्रयत्नतः स्त्रियों के लिये यह नियम बनाया है कि अन्य उसे न देख सकें। जो नारी परदे में रहने के कारण सूर्य को भी न देख सके, वही शुद्धा तथा पतिव्रता है।।११५-११७।।

स्वच्छन्दगामिनी या च स्वतन्त्रा सूकरीसमा।

अन्तर्दुष्टा सदा सैव निश्चितं परगामिनी॥११८॥
स्वामिसाध्या च या नारी कुलधर्मभिया स्थिता।
कान्तेन सार्धं सा कान्ता वैकुण्ठं याति निश्चितम्॥११९॥
यात यूयं च पृथिवीं मानुषीं योनिमीप्सिताम्।
कृष्णदर्शनमात्रेण गोलोकं यास्यथ ध्रुवम्॥१२०॥

जो स्वेच्छाचारिणी तथा स्वतन्त्र नारी है, वह तो शूकरी के समान है। परगामिनी नारी अन्दर से (मन से) सदा दुष्टा होती है। जा कुलधर्म से भयभीत होकर पति के वशीभूत रहती है, वह नारी पति सहित वैकुण्ठधाम जाती है। यह निश्चित है। अब तुम सभी धरती पर मनुष्य योनि में जन्म लेकर श्रीकृष्ण के दर्शन मात्र से गोलोक जाओगी।।११७-१२०।।

7:26 PM 4G 61

शौचमृद्वार्यभिरतो गृहस्थोऽपि हि मुच्यते ॥ १३१ ॥

जो मनुष्य वेदके पढनेमें तत्पर, क्षमाशील और धर्मशास्त्रको विचारकर उसके उपदेशके अनुसार शौच और आचारका पालन करते हैं, वह गृहस्थी होनेपर भी मुक्तिको प्राप्त करते हैं ॥ १३१ ॥

उक्तमेतद्द्विजातीनां महर्षे श्रूयतामिति ॥
अतः परं प्रवक्ष्यामि स्त्रीशूद्रपतनानि च ॥ १३२ ॥

इसं प्रकारसे यह द्विजातियोंका धर्म कहा, इसके आगे स्त्री शूद्र जिन कारणोंसे पतित होते हैं उसका वर्णन करता हूं, हे महर्षिगण ! तुम श्रवण करो ॥ १३२ ॥

जपस्तपस्तीर्थयात्रा प्रव्रज्या मंत्रसाधनम् ॥
देवताराधनं चैव स्त्रीशूद्रपतनानि षट् ॥ १३३ ॥

जप, तपस्या, तीर्थयात्रा, संन्यास, मन्त्रसाधन, देवताओंकी आराधना यह छैः कर्म स्त्री शूद्रोंको पतित करनेवाले हैं ॥ १३३ ॥

जीवद्भर्तरि या नारी उपोष्य व्रतचारिणी ॥
आयुष्यं हरते भर्तुः सा नारी नरकं व्रजेत् ॥ १३४ ॥

जो स्त्री स्वामीके जीवित रहतेहुए उपवास करके व्रत धारण करती है, वह स्त्री अपने स्वामीकी आयुको हरण करती है; और अन्तमें वह नरकको जाती है ॥ १३४ ॥

तीर्थस्नानार्थिनी नारी पतिपादोदकं पिबेत् ॥
शंकरस्यापि विष्णोर्वा प्रयाति परमं पदम् ॥ १३५ ॥

यदि स्त्रीको तीर्थके स्नान करनेकी इच्छा है तो वह अपने पतिके चरणोदकका पान करै, तब वह स्त्री शिव या विष्णुभगवान्के परम पद (कैलास वा वैकुण्ठ) को प्राप्त कर सकैगी ॥ १३५ ॥

जीवद्भर्तरि वामांगी मृते वापि सुदक्षिणे ॥
श्राद्धे यज्ञे विवाहे च पत्नी दक्षिणतः सदा ॥ १३६ ॥

स्वामीकी जीवित अवस्थामें वा मृत्युकी अवस्थामें स्त्री वामांगी है और पुरुष दाहिनी ओरका भागी है । परन्तु श्राद्ध, यज्ञ और विवाहके समयमें स्त्री दाहिनी ओरको ही बैठती है ॥ १३६ ॥

सोमः शौचं ददौ तासां गंधर्वाश्च तथांगिराः ॥
पावकः सर्वमेध्यत्वं मेध्यत्वं योषितां सदा ॥ १३७ ॥

चन्द्रमा गंधर्व और अङ्गिरा (बृहस्पति) ने इन स्त्रियोंको शुद्धता दान की है और अग्निने भी सम्पूर्ण शुद्धता दी है; इस कारण स्त्री सर्वदा ही पवित्र है ॥ १३७ ॥

जन्मना ब्राह्मणो ज्ञेयः संस्कारैर्द्विज उच्यते ॥
विद्यया याति विप्रत्वं श्रोत्रियस्त्रिभिरेव च ॥ १३८ ॥
वेदशास्त्राण्यधीते यः शास्त्रार्थं च निबोधयेत् ॥
तदासौ वेदविस्प्रोक्तो वचनं तस्य पावनम् ॥ १३९ ॥
एकोऽपि वेदविद्धर्मं यं व्यवस्येद्द्विजोत्तमः ॥
स ज्ञेयः परमो धर्मो नाज्ञानामयुतायुतैः ॥ १४० ॥

ब्राह्मणके वंशमें जन्म लेनेसे ब्राह्मण होता है, और जब उसका संस्कार होता है (उपनयन होता है) तब उसको द्विज कहते हैं, विद्यासे विप्रत्व प्राप्त होता है और उक्त जन्म, संस्कार और विद्या इन तीनोंसे "श्रोत्रिय" पदका वाच्य होता हैं ॥ १३८॥ जो ब्रा-

6:48 PM

वृद्धि को प्राप्त होकर शिवजी में ही लय हो जाते हैं ।।११।। ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु, चन्द्रमा, देवता, दैत्य, सर्प, गन्धर्व, मनुष्यों के तथा और सबों के भी ।।१२।। बन्धु, मित्र, आचार्य, रक्षक, नेता तथा अर्थ बतानेवाले गुरु, कल्पवृक्ष व भ्राता, माता, पिता शिवजी ही हैं ।।१३।। शिवजी ही पुरुषों में सर्वान्तर्यामी, स्वयंवेद्य, पर से भी पर, जो वाणी से कहने में असमर्थ तथा पर अनुपर हैं ।।१४।। हे मुने! उनकी परम दिव्य माया सर्वत्र व्याप्त हो रही है, देवता, दैत्य, मनुष्यों सहित सम्पूर्ण जगत् उनकी माया के आधीन है ।।१५।। उनके सहाय प्रबल मन से उत्पन्न होनेवाले कामदेव ने वीर विष्णुजी आदि प्रबल देवताओं को भी वशीभूत किया ।।१६।। हे मुनीश्वर! शिवजी की माया के प्रभाव से भगवान् विष्णुजी ने काम में मोहित होकर अनेक बार परस्त्री प्रसंग किया ।।१७।। इन्द्र देवताओं का स्वामी होकर गौतमजी की स्त्री पर मोहित होकर पाप करने लगे, तो उस दुष्टात्मा को गौतम मुनि ने शाप दिया ।।१८।। जगत् में श्रेष्ठ अग्नि भी शिवजी की माया से मोहित होकर गर्व से काम के वशीभूत हुए और फिर शिवजी ने ही उनका उद्धार किया ।।१९।। हे व्यासजी! जगत् के प्राण विष्णुजी भी शिवजी की माया से मोहित होने से काम के वशीभूत होने से परस्त्री में प्रेम करने लगे ।।२०।। तीव्र किरणोंवाले सूर्य भी शिवजी की माया से मोहित होकर काम में व्याकुल होकर घोड़ी को देखकर शीघ्र ही घोड़े का रूप धारण करनेवाले हुए ।।२१।। शिवजी की माया से मोहित हुए काम से व्याकुल चन्द्रमा ने भी गुरुपत्नी का हरण किया और शिवजी ने ही उनका उद्धार किया ।।२२।। पहले घोर तप में प्रवृत्त हुए मित्र और वरुण नामक दो मुनि भी शिवजी की माया से मोहित होकर ।।२३।। तरुण (युवती) उर्वशी अप्सरा को देखकर वे दोनों काम से पीड़ित हुए, तब मित्र ने घड़े में अपना वीर्य छोड़ा और वरुण ने जल में छोड़ा ।।२४।। तब उस कुम्भ से मित्र के पुत्र वशिष्ठजी उत्पन्न हुए, वरुण से वडवानल के समान कान्तिवाले अगस्तजी उत्पन्न हुए ।।२५।। शिवजी की माया से मोहित हुए ब्रह्माजी के पुत्र दक्ष भी अपने भाइयों सहित वाणी के साथ भोग करने की इच्छावाले हुए ।।२६।। और ब्रह्माजी ने अनेक बार शिवजी की माया से मोहित होकर आसक्त हुई अपनी पुत्रियों से भोग करने की इच्छा की ।।२७।। शिवमाया से मोहित हुए महायोगी च्यवन ऋषि ने भी काम में आसक्त होकर अपनी कन्या में आसक्ति की ।।२८।। शिवमाया से मुग्ध होकर कश्यपजी ने भी काम के वश में होकर अज्ञान से धन्वा राजा की कन्या मांगी ।।२९।। मुग्ध हुए गरुड़ ने शाण्डिली की कन्या को लेने की इच्छा की, फिर उस कन्या के ज्ञात होने पर उनके पक्ष भस्म हो गये ।।३०।। विभाण्डक मुनि भी स्त्री को देखकर काम के वशीभूत हुए, ऋष्यशृंग का पुत्र शिवजी की आज्ञा से हिरनी में पैदा हुआ ।।३१।। शम्भुजी की माया से मुग्ध हुए गौतम मुनि ने भी शारद्वती को नग्न देखकर काम से व्याकुल होकर उसके साथ रमण किया ।।३२।। फिर तपस्वी ने निकले हुए

अपने वीर्य को दोने में रखा, तो उस कलश से शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्यजी उत्पन्न हुए ।।३३।। शिवजी की माया से मोहित हुए महायोगी पराशरजी ने दास की कन्या कुमारी मत्स्योदरी से विहार किया* ।।३४।। विश्वामित्र मुनि ने भी शिवजी की माया से मोहित होकर काम के वश में होने से वन में मेनका के साथ विहार किया ।।३५।। चेतना रहित होकर उन्होंने वसिष्ठजी से विरोध किया, फिर वह शिवजी के प्रसाद से ब्राह्मण हुए ।।३६।। शिवमाया के वश में रावण वैश्रवा ने कामी होकर कुबुद्धि से सीता को हरण किया और वह मृत्यु को प्राप्त हुआ ।।३७।। शंकरजी की माया से मोहित हुए मुनिश्रेष्ठ बृहस्पतिजी ने कामवश होकर भ्राता की स्त्री से रमण किया, उससे भरद्वाजजी उत्पन्न हुए ।।३८।। हे व्यासजी! मैंने यह महात्मा शिवजी की माया का प्रभाव वर्णन किया। अब और क्या सुनने की इच्छा है ।।३९।।

इति श्रीशिवमहापुराणे भाषायां पंचम्यामुमासंहितायां

[redacted]

सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥
पंचबटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा॥

शूर्पणखा नामक रावणकी एक बहिन थी, जो नागिनके समान भयानक और दुष्ट हृदयकी थी। वह एक बार पञ्चवटीमें गयी और दोनों राजकुमारोंको देखकर विकल (कामसे पीड़ित) हो गयी॥ २॥

भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरुष मनोहर निरखत नारी॥
होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबिमनि द्रव रबिहि बिलोकी॥

(काकभुशुण्डिजी कहते हैं—) हे गरुड़जी! (शूर्पणखा-जैसी राक्षसी, धर्मज्ञानशून्य कामान्ध) स्त्री मनोहर पुरुषको देखकर, चाहे वह भाई, पिता, पुत्र ही हो, विकल हो जाती है और मनको नहीं रोक सकती। जैसे सूर्यकान्तमणि सूर्यको देखकर द्रवित हो जाती है (ज्वालासे पिघल जाती है)॥ ३॥

रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई॥
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी। यह सँजोग बिधि रचा बिचारी॥

वह सुन्दर रूप धरकर प्रभुके पास जाकर और बहुत मुसकराकर वचन बोली—न तो तुम्हारे समान कोई पुरुष है, न मेरे समान स्त्री! विधाताने यह संयोग (जोड़ा) बहुत विचारकर रचा है॥ ४॥

मम अनुरूप पुरुष जग माहीं। देखेउँ खोजि लोक तिहु नाहीं॥
तातें अब लगि रहिउँ कुमारी। मनु माना कछु तुम्हहि निहारी॥

मेरे योग्य पुरुष (वर) जगत्‌भरमें नहीं है, मैंने तीनों लोकोंको खोज देखा। इसीसे मैं अबतक कुमारी (अविवाहित) रही। अब तुमको देखकर कुछ मन माना (चित्त ठहरा) है॥ ५॥

सीतहि चितइ कही प्रभु बाता। अहइ कुआर मोर लघु भ्राता॥
गइ लछिमन रिपु भगिनी जानी। प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी॥

सीताजीकी ओर देखकर प्रभु श्रीरामचन्द्रजीने यह बात कही कि मेरा छोटा भाई कुमार है। तब वह लक्ष्मणजीके पास गयी। लक्ष्मणजी उसे शत्रुकी बहिन समझकर और प्रभुकी ओर देखकर कोमल वाणीसे बोले—॥ ६॥

सुंदरि सुनु मैं उन्ह कर दासा। पराधीन नहिं तोर सुपासा॥
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा। जो कछु करहिं उनहि सब छाजा॥

हे सुन्दरी! सुन, मैं तो उनका दास हूँ। मैं पराधीन हूँ, अतः तुम्हें सुभीता (सुख) न होगा। प्रभु समर्थ हैं, कोसलपुरके राजा हैं, वे जो कुछ करें, उन्हें सब फबता है॥ ७॥

सेवक सुख चह मान भिखारी। ब्यसनी धन सुभ गति बिभिचारी॥
लोभी जसु चह चार गुमानी। नभ दुहि दूध चहत ए प्रानी॥

सेवक सुख चाहे, भिखारी सम्मान चाहे, व्यसनी (जिसे जूए, शराब आदिका व्यसन हो) धन और व्यभिचारी शुभगति चाहे, लोभी यश चाहे और अभिमानी चारों फल—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चाहे, तो ये सब प्राणी आकाशको दुहकर दूध लेना चाहते हैं (अर्थात् असम्भव बातको सम्भव करना चाहते हैं)॥ ८॥

पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहिं बहुरि पठाई॥
लछिमन कहा तोहि सो बरई। जो तृन तोरि लाज परिहरई॥

[redacted]

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः ।
नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचनाः ।। २५ ।।

अग्नि कभी ईंधनसे तृप्त नहीं होती, समुद्र कभी नदियोंसे तृप्त नहीं होता, मृत्यु समस्त प्राणियोंको एक साथ पा जाय तो भी उनसे तृप्त नहीं होती; इसी प्रकार सुन्दर नेत्रोंवाली युवतियाँ पुरुषोंसे कभी तृप्त नहीं होतीं ।। २५ ।।

इदमन्यच्च देवर्षे रहस्यं सर्वयोषिताम् ।
दृष्ट्वैव पुरुषं हृद्यं योनिः प्रक्लिद्यते स्त्रियाः ।। २६ ।।

देवर्षे! सम्पूर्ण रमणियोंके सम्बन्धमें दूसरी भी रहस्यकी बात यह है कि किसी मनोरम पुरुषको देखते ही स्त्रीकी योनि गीली हो जाती है ।। २६ ।।

कामानामपि दातारं कर्तारं मनसां प्रियम् ।
रक्षितारं न मृष्यन्ति स्वभर्तारमलं स्त्रियः ।। २७ ।।

सम्पूर्ण कामनाओंके दाता तथा मनचाही करनेवाला पति भी यदि उनकी रक्षामें तत्पर रहनेवाला हो तो वे अपने पतिके शासनको भी सहन नहीं कर सकतीं ।। २७ ।।

न कामभोगान् विपुलान् नालंकारान् न संश्रयान् ।
तथैव बहु मन्यन्ते यथा रत्यामनुग्रहम् ।। २८ ।।

वे न तो काम-भोगकी प्रचुर सामग्रीको, न अच्छे-अच्छे गहनोंको और न उत्तम घरोंको ही उतना अधिक महत्त्व देती हैं, जैसा कि रतिके लिये किये गये अनुग्रहको ।। २८ ।।

अन्तकः पवनो मृत्युः पातालं वडवामुखम् ।
क्षुरधारा विषं सर्पो वह्निरित्येकतः स्त्रियः ।। २९ ।।

यमराज, वायु, मृत्यु, पाताल, बड़वानल, धुरेकी धार, विष, सर्प और अग्नि—ये सब विनाशके हेतु एक तरफ और स्त्रियाँ अकेली एक तरफ बराबर हैं ।। २९ ।।

यतश्च भूतानि महान्ति पञ्च
यतश्च लोका विहिता विधात्रा ।
यतः पुमांसः प्रमदाश्च निर्मिता-
स्तदैव दोषाः प्रमदासु नारद ।। ३० ।।

नारद! जहाँसे पाँचों महाभूत उत्पन्न हुए हैं, जहाँसे विधाताने सम्पूर्ण लोकोंकी सृष्टि की है तथा जहाँसे पुरुषों और स्त्रियोंका निर्माण हुआ है, वहींसे स्त्रियोंमें ये दोष भी रचे ग (अर्थात् ये स्त्रियोंके स्वाभाविक दोष हैं) ।। ३० ।।

इति श्रीमहाभारते अनुशासनपर्वणि दानधर्मपर्वणि पञ्चचूडानारदसंवादे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ।। ३८ ।।

[redacted]

समांसैर्भोजनैः स्निग्धैर्मद्यैर्गन्धविलेपनैः।
वस्त्रैर्मनोरमैर्माल्यैः कामः स्त्रीषु विजृम्भते॥३५॥

दुर्जन, शिल्पी, दास, दुष्ट व्यक्ति, ढक्का वाद्य तथा स्त्री, ताड़न से ही ये नम्र होते हैं। ये सत्कार के भागी नहीं होते। किसी काम के लिये लगाये जाने पर भृत्य का स्वभाव पता चलता है। दुःख काल में बन्धुओं की परीक्षा होती है। आपत्ति में मित्र का स्वभाव पता चलता है। सम्पत्ति नाश होने पर पत्नी के भाव का ज्ञान होता है। स्त्री पुरुष से दूना भोजन करती है। उनकी बुद्धि चौगुनी होती है। उनमें काम वासना पुरुष से आठ गुनी अधिक होती है। निद्रा द्वारा निद्रा पर विजय नहीं मिलती। काम क्रीड़ा से स्त्री पर विजय नहीं होती। काठ द्वारा कोई अग्नि को नहीं जीत सकता। मद्य पीने से कोई तृष्णा को नहीं जीत सकेगा। मांसादि स्निग्ध आहार, कई तरह की मदिरा, मनोहर अच्छे वस्त्र तथा उत्तम माला से स्त्री में काम भाव प्रकट होता है॥३१-३५॥

ब्रह्मचर्य्येऽपि वक्तव्यं प्राप्तं मन्मथचेष्टितम्।
हृद्यं हि पुरुषं दृष्ट्वा योनिः प्रक्लिद्यते स्त्रियाः॥३६॥
सुवेशं पुरुषं दृष्ट्वा भ्रातरं यदि वा सुतम्।
योनिः क्लिद्यति नारीणां सत्यं सत्यं हि शौनक॥३७॥
नद्यश्च नार्य्यश्च समस्वभावाः स्वतन्त्रभावे गमनादिकञ्च।
तोयैश्च दोषैश्च निपातयन्ति नद्यो हि कूलानि कुलानि नार्य्यः॥३८॥
नदी पातयते कूलं नारी पातयते कुलम्।
नारीणाञ्च नदीनाञ्च स्वच्छन्दा ललिता गतिः॥३९॥

ब्रह्मचर्य स्थिति में पुरुष का कामभाव उभरता है। मनोहर व्यक्ति को देख कर स्त्रियों की योनि से स्राव होने लगता है। पिता प्रभृति गुरुजन, किसी भिक्षुक अथवा उत्तम पोशाक वाले धनी को देखकर स्त्रियों की कामभावना दीप्त हो उठती है। हे शौनक! मेरा यह वचन सत्य है। नदी तथा नारी का स्वभाव एक तरह का होता है। नदी (कूल) किनारे को गिरा देती है। नारी कुल को नष्ट कर देती है। दोनों की ही यह स्वच्छन्द तथा ललित गति है॥३६-३९॥

नाग्निस्तृप्यति काष्ठानां नापगानां महोदधिः।
नान्तकः सर्वभूतानां न पुंसां वामलोचना॥४०॥

अग्नि में चाहे कितनी ही लकड़ी छोड़ी जाय, अग्नि की तृप्ति नहीं होती, उसे और भी लकड़ी को भस्म करने की कामना बनी रहती है। समुद्र में चाहे जितनी नदियां गिरें, वह तृप्त नहीं होता। यम सभी प्राणियों का संहार करके भी तृप्त नहीं होते। नारियों की आकांक्षा अनेक पुरुषों के संभोग से भी तृप्त नहीं होती!॥४०॥

न तृप्तिरस्ति शिष्टानामिष्टानां प्रियवादिनाम्।
सुखानाञ्च सुतानाञ्च जीवितस्य वरस्य च॥४१॥
राजा न तृप्तो धनसञ्चयेन न सागरस्तृप्तिमगाज्जलेन।
न पण्डितस्तृप्यति भाषितेन तृप्तं न चक्षुनृपदर्शनेन॥४२॥
स्वकर्मधर्मार्जितजीवितानां शास्त्रेषु दारेषु सदा रतानाम्।
जितेन्द्रियाणामतिथिप्रियाणां गृहेऽपि मोक्षः पुरुषोत्तमानाम्॥४३॥

शिष्ट पुरुष से बातें करके कोई भी वितृष्ण नहीं होता, साधु व्यक्ति से जितनी भी बात करिये बात करने की इच्छा बलवती होती जाती है। वांछित सुख से किसी की तृप्ति नहीं होती। प्रिय वाणी वाले पुत्र से कोई तृप्त नहीं होता। अपने जीवन से किसी की तृप्ति नहीं होती (वह और भी जीते रहना चाहता है)। राजा धन से, महासमुद्र जल से, पण्डित विद्वान् सत्कथा से, नेत्र नृप दर्शन से कभी तृप्त नहीं होते। अपने धर्म-कर्म के प्रति तत्पर, शास्त्र में तथा केवल अपनी पत्नी में रत, इन्द्रियजित-अतिथिप्रिय लोग ही श्रेष्ठतम मनुष्य होते हैं। वे गृही रहकर भी मोक्ष पाते हैं॥४१-४३॥

मनोऽनुकूलाः प्रमदा रूपवत्यः स्वलङ्कृताः।
वासः प्रासादपृष्ठेषु स्वर्गः स्याच्छुभकर्मणः॥४४॥
न दानेन न मानेन नार्जवेन न सेवया। न शास्त्रेण न शस्त्रेण सर्वथा विषमाः स्त्रियः॥४५॥

सत्कर्म करने वाले व्यक्ति अनुकूला मनोहर अलंकारों से सजी पत्नी को पाकर अट्टालिका में रहकर स्वर्गसुख भोगते हैं। स्त्रियां सर्वदा विषम बुद्धि होती हैं। उनको कोई भी दान-सम्मान से सन्तुष्ट नहीं कर पाता। उनको सरल व्यवहार तथा सेवा से भी वशीभूत नहीं कर सकते। अस्त्र से डराकर तथा शास्त्रोपदेश से भी उन पर नियन्त्रण नहीं हो पाता॥४४-४५॥

शनैर्विद्या शनैरर्थाः शनैः पर्वतमारुहेत्। शनैः कामञ्च धर्मञ्च पञ्चैतानि शनैः शनैः॥४६॥

मुझे वतलाइये ॥१७॥ देवी ने कहा— निस्सन्देह स्त्रियों का मन सदैव पुरुषों में लगा रहता है, इस मनुष्य योनि में चाहे वह उचित हो या अनुचित ॥१८॥ हे नारद ! सुन्दर वेष वाले पुरुष, भाई तथा पुत्र को भी देखकर स्त्रियों की योनि में क्लेदन होने लगता है ॥१९॥ हे नारद ! व्यभिचारयोग्य स्थान, समय तथा प्रार्थयिता के अभाव में ही स्त्रियों का सतीत्व सुरक्षित रह सकता है ॥२०॥ नारी घी के घड़े के समान है और पुरुष तप्त अंगार के समान होता है, इसीलिए घृत के समान नारी को तथा अग्नि के समान पुरुष को एकत्र न रखे ॥२१॥ जिसरह मदमत हाथी को अंकुश और मुग्दर के द्वारा वश में रखा जाता है उसीतरह स्त्री को नियामक तथा श्रेष्ठ रक्षक ही अपने वश में रख सकते हैं ॥२२॥ स्त्री की कुमार्यावस्था में पिता, यौवनावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करता है। अतएव स्त्री को स्वतन्त्रता नहीं देना चाहिए ॥२३॥ इसीलिए स्वतन्त्र होने पर अपनी इच्छानुसार सुन्दर स्त्रियाँ किसी भी पुरुष के द्वारा प्रार्थना करने पर उसकी इच्छा के अनुसार आचरण करने लगती हैं ॥२४॥ जिसतरह रक्षा के अभाव में तैयार भोजन को कुत्ते तथा कौए खा लेते हैं, उसीतरह स्वच्छन्द होने पर नारी दुष्टों की सङ्गति कर लेती है ॥२५॥ उसके संसर्ग के कारण वंश दूषित हो जाता है, दूसरे वीर्य से उत्पन्न होने वाला वर्णसङ्कर कहलाता है ॥२६॥ जारज (पर पुरुष से उत्पन्न) पापी सङ्कर (दोगला) नरकगामी होता है। उसके बाद वह पृथिवी पर सभी कीट योनियों में जन्म लेता है ॥२७॥ हे ब्राह्मण ! उसके बाद दुष्टा नारी के कारण पूरा वंश ही म्लेच्छ जाति का हो जाता है, अतएव दुष्टा नारी को कभी स्वीकार करना चाहिए ॥२८॥ इस तरह स्त्रियों के दोष को जानकर भी जो उसे क्षमा कर देता है वह

प्रकार से वह धृष्ट हो जाती है । वह कुछ धन लेकर स्वतन्त्र बन जाती है ॥२१॥ वह जिसके साथ व्यवहार करती है वह उसको मारकर उसके द्रव्य को लेकर उसको कहीं फेंक देता है । यदि पहले पति मर जाता है तो अग्नि में प्रवेश नहीं करती है ॥२२॥ वह सोचती है कि विधवा हो जाने पर सारा मेरा धन धर्मार्थ हो जायेगा । विधवा हो जाने पर इस तरह से मन में निश्चित करके वह दिन अथवा रात में योनि रूपी कुण्ड को प्राप्त करके वह दिन अथवा रात्रि में एकान्त में जाकर अपने वस्त्र तथा योनि को खोलकर॥२३-२४॥ योनि पर हाथ रखकर दुःखी होकर कहती है कि अरे योनि तुमने कैसा कर्म किया है ? तुमने भयङ्कर पाप किया है ॥२५॥ क्योंकि तुमने दूसरे शिश्न को अपने भीतर प्रवेश कराया है । इस पाप कार्य को करने वाले ने मेरी सेवा भी नहीं की ॥२६॥ इतना होने पर भी यदि उसकी योनि में खुजली पैदा होती है तो वह अपनी अङ्गुलि को अपनी योनि में डाल देती है और वह खुजली की बुद्धि से विचित्र प्रकार के चेष्टायें करती हैं ॥२७॥ वह योनि को दोनों हाथों से फैलाकार उसको रगड़ती है । अत्यन्त दुःखी होकर वह अपने मुख को खोलकर बार-बार अपने दोनों पैरों को पटकती है ॥२८॥ वह काठ अथवा खाट को पकड़ कर अपनी इच्छा भर स्तनों को दवाती है । उसके पश्चात् चित्त में विकार आ जाने पर वह व्यभिचारिणी हो जाती है ॥२९॥ अथवा दिन में किसी पुरुष के साथ बातें करती है, घर में रात्रि में या संध्या के समय, या विशिखाओं (गलियों) में अपना दूसरा वेष बदलकर जिस किसी व्यक्ति के द्वारा उपभोग की जाती

हो गया ।२५। हे नृप ! मद्य पान के कारण स्मृति नष्ट हो जाने से तथा अल्प सत्व के नाते स्वभावतः उनकी जाँघे भीग गईं। पुराणों में यह बात प्रसिद्ध है कि ब्रह्मचारिणी होती हुई सती स्त्रियों की भी योनि, अत्यन्त मनोहर पुरुष को देखकर (मैथुन के लिए) तर (रसपूर्ण) होने लगती हैं।२६-२८। लोक में देखा भी जाता है कि अत्यन्त मद्य पान करने के नाते लज्जाशील स्त्रियाँ अपनी लाज छोड़ कर निर्भय हो जाती हैं। क्योंकि मांस भोजन, उत्तम आसव का पान एव सुगन्धपूर्ण उत्तम वस्त्रों का धारण करना ये सभी स्त्रियों के कामोत्पादक बताये गये हैं।२९-३०। लोगों के कल्याणार्थ शुक्राचार्य ने भी कहा है कि—विद्वानों को अत्यन्त मद्य पान न करना चाहिए।३१। पश्चात् साम्ब को वहाँ भेजकर नारद भी उसके पीछे ही शीघ्र वहाँ पहुँचे।३२। उत्तम एवं प्रिय नारद ऋषि को वहाँ आये हुए देखकर वे स्त्रियाँ जो (मद्य) पान से विह्वल (नशे में चूर) हो रही थीं, (प्रणामार्थ) शीघ्र उठकर खड़ी हो गईं।३३। खड़ी होने पर उनके स्खलित वीर्य का बूँद वस्त्रों से चूकर नीचे पत्तों पर गिर पड़ा। उसे देखकर कृष्ण ने क्रुद्ध होकर उन्हें शाप दिया कि—मुझे त्याग कर तुम्हारे मन औरों में आसक्त हुए इसलिए तुम्हें पतिलोक एवं स्वर्गमार्ग की प्राप्ति अंत में हो सकेगी। और पतिलोक तथा स्वर्ग से भ्रष्ट होकर उस समय अनाथ होने के नाते तुम्हें चोरों के अधीन रहना पड़ेगा।३४-३७

सूमन्तु बोले—कृष्ण के स्वर्ग प्रस्थान करने के पश्चात् उन स्त्रियों का शापवश अर्जुन के देखते ही

9:28 PM

जैसे स्वभाववाली हैं, सो सब विदित है।।१०।। हे देवर्षे! मुझे ऐसे प्रश्न में प्रवृत्त करने को योग्य नहीं हो, ऐसा कहने पर वह सुन्दर अप्सरा मौन हो गई।।११।। तब देवर्षि श्रेष्ठ नारदजी उसका वह उत्तम वचन को सुनकर लोकों के हित की कामना से फिर उससे बोले।।१२।। नारदजी बोले– हे सुमध्यमे! झूंठ बोलने में दोष होता है, सत्य में दोष नहीं होता है, ऐसा तू जान, इस कारण सत्य–सत्य कह।।१३।। सनत्कुमारजी बोले– ऐसा कहने पर वह निश्चितबुद्धि, सुन्दर हास्य करनेवाली अप्सरा वेग से सनातन स्त्रीदोषों को सत्य–सत्य कहने लगी।।१४।। पंचचूडा बोली– हे नारदजी! कुलीन, नाथवाली, रूपवाली स्त्रियां भी मर्यादा में नहीं रहती हैं, यह स्त्रियों में दोष है।।१५।। स्त्रियों से अधिक पापी और कोई नहीं, स्त्रियां पापों का मूल हैं, ऐसा आप जानिये।।१६।। स्त्रियां जाने हुए धनवाले, प्रत्येक रूपवाले यथेप्सित यतियों (संन्यासियों) के समीप प्राप्त होकर भी प्रतीक्षा करने में समर्थ नहीं होती।।१७।। हे प्रभो! हम स्त्रियों का यह बड़ा बुरा धर्म है, कि पापी मनुष्यों को भी लज्जा का त्याग करके भजती हैं।।१८।। जो मनुष्य स्त्री को चाहता है तथा उनके समीप जाता है, थोड़ी भी सेवा करता है, स्त्रियां उसी को चाहती हैं।।१९।। मनुष्यों के बिना अर्थी होने से तथा पतियों के डर से बिना मर्यादावाली स्त्रियां स्वामी की मर्यादा में ठहरती हैं।।२०।। इन स्त्रियों को कोई अमान्य नहीं और इनमें अवस्था का निश्चय नहीं है, सुरूप वा कुरूप मनुष्य को भोगती हैं।।२१।। न तो भय से, न चिल्लाने से अथवा न अर्थ के निमित्त तथा न ज्ञाति, कुल सम्बन्ध से पति की मर्यादा में स्थित रहती हैं।।२२।। कुलीन स्त्रियां यौवन में वर्तमान हुईं यथेच्छित आभूषण, वस्त्र पानेवाली व्यभिचारिणी स्त्रियों की संगति की अभिलाषा करती हैं।।२३।। जो नित्य बहुत मानी हुईं प्रिय स्त्रियां रक्षा की जाती हैं, वे स्त्रियां भी कुब्जे, अन्धे, जड, बौने, लंगडे मनुष्यों में आसक्त होती हैं।।२४।। हे देवर्षे! हे मुने! और भी जो कुत्सित मनुष्य हैं, उनमें आसक्त हो जाती हैं, इससे संसार में स्त्रियों को कोई अगम्य नहीं है।।२५।। हे ब्रह्मन्! यदि किसी प्रकार मनुष्यों की गति नहीं होवे, तो स्त्रियां परस्पर आसक्त हो जाती हैं, अपने पतियों में प्रवृत्त नहीं होती हैं।।२६।। पुरुषों के न मिलने से, कुटुम्ब के भय से तथा वध और बन्धन के भय से स्त्री हताश रहती हैं।।२७।। चंचल स्वभाववाली, दुश्चेष्टावाली स्त्रियां उस प्रकार भाव से दुग्राह्य होती हैं, जैसे बुद्धिमान् पुरुष के रति के ग्रहण करने से वश में होती हैं।।२८।। काष्ठों से अग्नि नहीं लिप्त होती है, नदियों से समुद्र नहीं तृप्त होता तथा काल सब प्राणियों से नहीं तृप्त होता और स्त्रियां पुरुषों से तृप्त नहीं होती हैं।।२९।। हे देवर्षे! सम्पूर्ण स्त्रियों का यह और भी रहस्य है, कि मनुष्य को देखकर शीघ्र ही स्त्री की योनि गीली हो जाती है।।३०।। अच्छी प्रकार

स्नान किये तथा सुगन्धि युक्त निर्मल मनुष्य को देखकर फूटे बर्तन से जल के समान स्त्रियों की योनि बहने लगती है।।३१।। स्त्रियां शरीर को सुख देनेवाले मान और शान्ति के करनेवाले, परम रक्षा करनेवाले स्वामी को भी सहन नहीं करती हैं।।३२।। न काम भोग से तथा न अलंकार धन के संचय करने से उस प्रकार का हित मानती हैं, जिस प्रकार रति परिग्रह से हित मानती हैं।।३३।। काल शान्त करनेवाला मृत्यु, पाताल, बडवानल, अग्नि, क्षुरधारा, विष, सर्प, अग्नि यह एक ओर तथा एक तरफ स्त्री है।।३४।। हे नारदजी! ब्रह्माजी ने जहां से पंचमहाभूत उत्पन्न किये तथा जहां से लोक उत्पन्न किये, जहां से पुरुष तथा स्त्री निर्माण की, परन्तु वहां स्त्रियों में सदा दोष ही विधान किये हैं।।३५।। सनत्कुमारजी बोले– ऐसा उसका वचन सुन नारदजी सन्तुष्ट चित्त होकर, सब सत्य मानकर स्त्रियों में विरक्त हो गये।।३६।। हे व्यासजी! इस प्रकार पंचचूडा ने कहा हुआ स्त्री स्वभाव आपसे आदर से कह दिया, क्या कुछ वैराग्य का कारण सुनना चाहते हो?।।३७।।

इति श्रीशिवमहापुराणे भाषायां पंचम्यामुमासंहितायां
स्त्रीस्वभाववर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ।। २४ ।।

*****

समान माना गया है। चौथे प्रकारके पुत्रकी पौनर्भव[2] संज्ञा है, जो दूसरी बार ब्याही हुई स्त्रीसे उत्पन्न हुआ हो। पाँचवें प्रकारके पुत्रकी कानीन संज्ञा है (विवाहसे पहले ही कि... कन्याको इस शर्तके साथ दिया जाता है कि इसके गर्भसे उत्पन्न होनेवाला पुत्र मेर... समझा जायगा उस कन्याके पुत्रको 'कानीन' कहते हैं)[3]। जो बहनका पुत्र (भानजा) है, वह छठा कहा गया है ।। ३३ ।।

दत्तः क्रीतः कृत्रिमश्च उपगच्छेत् स्वयं च यः ।
सहोढो ज्ञातिरेताश्च हीनयोनिधृतश्च यः ।। ३४ ।।

'अब छः प्रकारके अबन्धुदायाद पुत्र कहे जाते हैं—दत्त (जिसे माता-पिताने स्वयं समर्पित कर दिया हो), क्रीत (जिसे धन आदि देकर खरीद लिया गया हो), कृत्रिम—जो स्वयं मैं आपका पुत्र हूँ, यों कहकर समीप आया हो, सहोढ (जो कन्यावस्थामें ही गर्भवती होकर ब्याही गयी हो, उसके गर्भसे उत्पन्न पुत्र सहोढ कहलाता है), ज्ञातिरेता (अपने कुलका पुत्र) तथा अपनेसे हीन जातिकी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र। ये सभी अबन्धुदायाद हैं ।। ३४ ।।

पूर्वपूर्वतमाभावं मत्वा लिप्सेत वै सुतम् ।
उत्तमादवराः पुंसः काङ्क्षन्ते पुत्रमापदि ।। ३५ ।।

'इनमेंसे पूर्व-पूर्वके अभावमें ही दूसरे-दूसरे पुत्रकी अभिलाषा करे। आपत्तिकालमें नीची जातिके पुरुष श्रेष्ठ पुरुषसे भी पुत्रोत्पत्तिकी इच्छा कर सकते हैं ।। ३५ ।।

अपत्यं धर्मफलदं श्रेष्ठं विन्दन्ति मानवाः ।
आत्मशुक्रादपि पृथे मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ।। ३६ ।।

'पृथे! अपने वीर्यके बिना भी मनुष्य किसी श्रेष्ठ पुरुषके सम्बन्धसे श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त कर लेते हैं और वह धर्मका फल देनेवाला होता है, यह बात स्वायम्भुव मनुने कही है ।। ३६ ।।

तस्मात् प्रहेष्याम्यद्य त्वां हीनः प्रजननात् स्वयम् ।
सदृशाच्छ्रेयसो वा त्वं विद्ध्यपत्यं यशस्विनि ।। ३७ ।।

'अतः यशस्विनी कुन्ती! मैं स्वयं संतानोत्पादनकी शक्तिसे रहित होनेके कारण तुम्हें आज दूसरेके पास भेजूँगा। तुम मेरे सदृश अथवा मेरी अपेक्षा भी श्रेष्ठ पुरुषसे संतान प्राप्त करो' ।। ३७ ।।

इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि सम्भवपर्वणि पाण्डुपृथासंवादे
ऊनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ।। ११९ ।।

इस प्रकार श्रीमहाभारत आदिपर्वके अन्तर्गत सम्भवपर्वमें पाण्डु-पृथा-संवादविषयक एक सौ उन्नीसवाँ अध्याय पूरा हुआ ।। ११९ ।।

---

१. बन्धु शब्दका अर्थ संस्कृत-शब्दार्थकौस्तुभमें आत्मबन्धु, पितृबन्धु, मातृबन्धु माना गया है, इसलिये बन्धुका अर्थ कुटुम्बी किया है। दायादका अर्थ उसी कोषमें 'उत्तराधिकारी' है। इसीलिये बन्धुदायादका अर्थ 'कुटुम्बी' होनेसे 'उत्तराधिकारी' किया है। इसके विपरीत, अबन्धुदायादका अर्थ अबन्धु यानी कुटुम्बी न होनेपर उत्तराधिकारी किया है।

२. 'पौनर्भव'का अर्थ पद्मचन्द्रकोषके अनुसार दूसरी बार ब्याही हुई स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र लिया गया है।

३. कानीन—यह अर्थ नीलकण्ठजीने अपनी टीकामें किया है।

7:56 PM

Draw 53

प्रचार करनेवाला और शूद्रके समान माना गया है ।।

यस्य वेदश्रुतिर्नष्टा कर्षकश्चापि यो द्विजः ।
विकर्मसेवी कौन्तेय स वै वृषल उच्यते ।।

कुन्तीनन्दन! जिसने वैदिक श्रुतियोंको भुला दिया है तथा जो खेतमें हल जोतता है, अपने वर्णके विरुद्ध काम करनेवाला वह ब्राह्मण वृषल माना गया है ।।

वृषो हि धर्मो विज्ञेयस्तस्य यः कुरुते लयम् ।
वृषलं तं विदुर्देवा निकृष्टं श्वपचादपि ।।

वृष शब्दका अर्थ है धर्म; उसका जो लय करता है, उसको देवतालोग वृषल मानते हैं। वह चाण्डालसे भी नीच होता है ।।

स्तुतिभिर्ब्रह्मगीताभिर्यः शूद्रं स्तौति मानवः ।
न तु मां स्तौति पापात्मा स तु चण्डालतः समः ।।

जो पापात्मा मनुष्य ब्रह्मगीता आदिके द्वारा मेरी स्तुति न करके किसी शूद्रका स्तवन करता है, वह चाण्डालके समान है ।।

श्वदृतौ तु यथा क्षीरं ब्रह्म वै वृषले तथा ।
दुष्टतामेति तत् सर्वं शुना लीढं हविर्यथा ।।

जैसे कुत्तेकी खालमें रखा हुआ दूध और कुत्तेका चाटा हुआ हविष्य अशुद्ध होता है, उसी प्रकार वृषल मनुष्यकी बुद्धिमें स्थित वेद भी दूषित हो जाता है ।।

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।
धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश ।।

चार वेद, छः अंग, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण—ये चौदह विद्याएँ हैं ।।

यान्युक्तानि मया सम्यग् विद्यास्थानानि भारत ।
उत्पन्नानि पवित्राणि भुवनार्थं तथैव च ।।
तस्मात् तानि न शूद्रस्य स्प्रष्टव्यानि युधिष्ठिर ।
सर्वं च शूद्रसंस्पृष्टमपवित्रं न संशयः ।।

भरतनन्दन! मैंने जो विद्याके चौदह पवित्र स्थान पूर्णतया बताये हैं, वे तीनों लोकोंके कल्याणके लिये प्रकट हुए हैं। अतः शूद्रको इनका स्पर्श नहीं करना चाहिये। युधिष्ठिर! शूद्रके सम्पर्कमें आनेवाली सभी वस्तुएँ अपवित्र हो जाती हैं, इसमें संशय नहीं है ।।

लोके त्रीण्यपवित्राणि पञ्चामेध्यानि भारत ।
श्वा च शूद्रः श्वपाकश्च अपवित्राणि पाण्डव ।।

भारत! इस संसारमें तीन अपवित्र और पाँच अमेध्य हैं। पाण्डुनन्दन! कुत्ता, शूद्र और श्वपाक (चाण्डाल)—ये तीन अपवित्र होते हैं ।।

गायकः कुक्कुटो यूपो ह्युदक्या वृषलीपतिः ।
पञ्चैते स्युरमेध्याश्च स्प्रष्टव्या न कदाचन ।
स्पृष्ट्वैतानष्ट वै विप्रः सचैलो जलमाविशेत् ।।

तथा अश्लील गायक, मुर्गा, जिसमें वध करनेके लिये पशुओंको बाँधा जाय वह ख… रजस्वला स्त्री और वृषल जातिकी स्त्रीसे ब्याह करनेवाला द्विज—ये पाँच अमेध्य माने … हैं; इनका कभी भी स्पर्श नहीं करना चाहिये। यदि ब्राह्मण इन आठोंमेंसे किसीका स्पर्श कर … श करके स्नान करे ।।

15097 / 15433

…ादवमन्यन्ति ये नराः ।
नरकेष्वेव तिष्ठन्ति वर्षकोटिं नराधमाः ।।